

THE LATE  
SHETH DEVCHAND LALBHAI JAVERI.

BORN 1853 A D SURAT

DIED 13TH JANUARY 1906 A D, BOMBAY



श्रेष्ठी देवचन्द लालभाई जहवेरी.

जन्म १९०९ घंटासादे  
कार्निव नुवले कादद्या (देवडीपायलीदिने)  
मयंपुरे.

नियोगम् १९६० त्रिमासे  
पारकान्तुनीययाम (मकरसकान्तिया)  
महामांगयाम्

इदं पुस्तकं सूर्यपुरे श्रेष्ठि-देवचन्दलालभाई जै. ७  
 अथैतनिककार्यवाहक-मोतीचंद्र मगनभाई चोकणी नेनस  
 गोपीपुरा, मुद्रणमन्दिरे बालुभाई-हीरालाल लालनद्वारा ८

अस्य पुनर्मुद्रणायाः सर्वेऽधिकारा एतद्भाण्डागारकार्यवाह-

All Rights Reserved By The Trustees of 1

Printed By -

Balubhai Hiralal Lalan at the 'Saraswati Mudran'ya

Published By Sheth -Devchand Lalbhai Jain  
 Fund, At Sheth Devchand Lalbhai Jain Board  
 Shri Ratansagarji Jain Boarding Balekhan C  
Surat. By the Hon. Managing Trustee, Mot  
 Choksi

Sheth Devchand Lalbhai Pustakodhar Fund Series No 101

# Shree Alpaparichit Saidhantik Shabda - Kosh

FIRST PART

[ A To AOU ]

--: Author :--

**Agmoddharak Acharya Shree Anandsagarsurishwarji**

: Editor -

Agmoddharak Shree Anandsagarsurishwarji 's Sishyo

Muni Kanchanvijay and Muni Kshemankarsagar

Collected:-

SHREE GUNSAGARJI

SHREE ANANDSAGARSURISHWARJI'S ANTEWASI

- Publisher :

Motichand Maganbhai Choksi

Managing Trustee For :-

Sheth DEVCHAND LALBHAJAIN PUSTAKODDHAR FUND

First Edition

Copies 500



Vikram Samvat 2010.

Christation Era 1954.

## The Board of Trustees:

Nemchand Gulabchand	Devchand Zaveri
Talakchand Motichand	"
Babubhai Premchand	"
Amichand Zaverchand	"
Keshrichand Hirachand	"
Motichand Maganbhai	Choksi
Hon. Managing Trustee.	



### संस्थानुं ट्रस्टी मंडळः—

श्री नेमचंद गुलाबचंद देवचंद झवेरी	
" तलकचंद मोतीचंद	"
" यासुभाई प्रेमचंद	"
" अमीचंद झवेरचंद	"
" केशरीचंद हीराचंद	"
" मोतीचंद मगनभाई	चोकसी
होन. मैनेजिंग ट्रस्टी	

# अल्पपरिचितसैद्धांतिकशब्दकोषः

प्रथमो विभागः

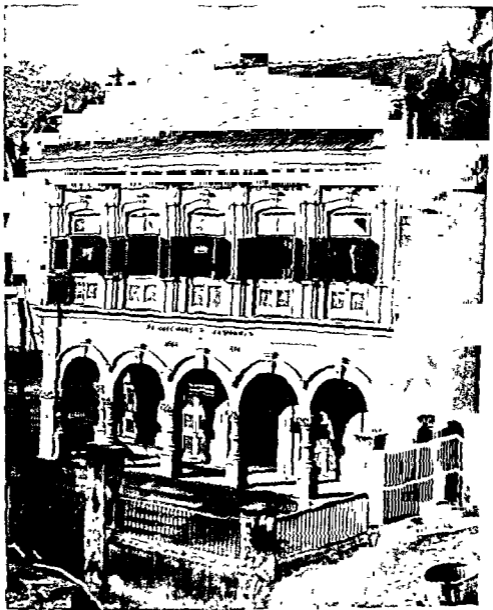


संपादयिता  
श्रीमान्मोक्षरश्मि श्यामाय्य  
श्रीमान्मदनमोहनमूर्तिशर्माजी

प्रकाशक —  
श्रीमद् देवराज् शास्त्रिकर्तृ विनयुक्तराजान्  
कलकत्ता  
श्रीमान्  
श्रीमान्मोक्षरश्मि श्यामाय्य

विषय परिचय —  
श्रीमान्मदनमोहनमूर्तिशर्माजी  
(१) श्री विद्यालय  
(२) श्री शास्त्रिकर्तृ विद्यालय  
(३) श्री विद्यालय

# शेठ-देवचंद-लालभाई-जैनविद्यार्थी भुवन



जमां

शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोपधार फंड तरफर्धी  
पुस्तकालय अने  
प्रासिद्धतां पुस्तकानां संग्रह अने बेचाणु थाय हें.

गोपीपुरा, वेदग्यानां चक्रलो, सुरत.

# प्रकाशकीय

५

आ अत्रसर्विणी कालना दृष्यमान आरामा चरमजायतपति धमज भगवान् मन्त्रीर स्वामीना  
 शासनमा शासनना पुण्य प्रताप ते ते समये आचार्य भगवतोऽत्र आगत्य योगे साहित्यो उद्धार,  
 पुनरुद्धार करीने आ कलिकालमा योगीनी मदीमा ज विद्यमान राग्युं छे ते भाष्य अंगमाय छे  
 तेथी तेवा साहित्यने प्रकाशन करवा माटे अमागी आ मन्था म १०६२मा प पू आगमोद्धारक  
 गुम्देवधीना उपदेशथी रथपाई हती आ मन्था माग्वन अमे आज सुर्वा १०० प्रथो प्रकाशीत  
 करी चूषया छीने अने अमे १०१मा प्रथोद तीरेवं श्रीअभ्यगिजिावहान्तिवराधकोपना नामे  
 आ प्रथने सहर्ष प्रगट करीअे छीअे

तारक आगमोद्धारक गुम्देवधीव आ कलिकालना विषय वातावरणमा आगमोो योग्य  
 बुवधि न यई जाय ते हेतुअे आगमोद्यममितिनी र्णान्ना करानी अने आगमयानना भाषणां  
 कयुं तेथी ते समितिअ आगमो छापणानु काय शरू कयुं तेमप आ मन्थाप पण अनुयोगद्धार  
 वगेरे आगमो छापया ते वगते अने पछीथी आगमोद्धारक गुम्देवधीय आगमोना नृप रथा  
 विषयो तारयता आगमयोगे पण अरू विषय तारयो हतो अने कोप छापणो हतो आ विगो  
 अति आजथी पाओस वर्ष पहिला थई हति प ना गुम्देवधीना मन्तुपदशायी नीनेना मन्तुहस्यो  
 तरफथी नीचेनी ररुओ अमाती रुस्थाने मळी हती ते आ प्रमाणे

- १ अमदावादिनिवासी शा डाहाभाई पीतायन्दाव रु १००
- २ सुरतनिवासी शत्रेरी स्वाभावद सुरवंद रु १००
- ३ सुरतनिवासी शत्रेरी साकळचद सुरवंद रु १००

आचार्य देवने विहाय माळरा, वगाळ तरक लयायो योग्यथी ते कार्य करी मुन्त  
 सुधी पडी रणु हतु त ( छापणानु कार्य ) अमे आगमोद्धारकगुम्देवधीनी समतिथी शरू कयुं  
 आ नीणय म २००४मा थयो

आथी प ता गुम्देवधीनी आना अनुसार पू मुगिमहागव श्रीगुणसागरना वामेधी  
 श्रीअल्पपरिचितसेद्धातिकशास्त्रकोषनु प्रम मेटर अमे मेटरु ते श्रीमन्मतीमुद्राणात्य,  
 सुरतमा छापणना माटे भाष्य अने तेनु मगादन करवा माटे मुनिमन्तरात्र श्रीरुनवितयनी  
 तथा श्रीशमकरसागरजीने चिन्ति करी तेओधीअ आगमोद्धारकगुम्देवधीना अनन्य पट्टर,  
 विद्यायासनी धृतस्थरि आचार्य महाराज श्रीमालिक्यसागरसूरीश्वरनी मन्तवतनो मयोत  
 मल्यो त्या सुधि पूष धवापरा पूर्वक अन ते पठोथी स्वतप्रणे ( ने मुनिवधिअि ) आ मगादन कार्य  
 कयुं तेथी अमो आ अद्वितीय आगमनल्पशीमाना, आगामनत्र पाठभ्या, आगमयोगेतिने  
 शासनव्यक्षणरुद्धक तरंगिरोमणि आगमाभ्युत्थिकर शिवात्राप्रपत्रोनीगांगमन्सागव  
 गर्भीरानेकप्रन्थप्रणेता अन्यममये पयापधि अर्थव्यवसायनन्यायी ध्यानव्यवर्ग

आगमोद्धारक आचार्यवर्य श्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजे 'संकलित' करेलो श्री-अल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोपनो 'संपूर्ण स्वर' सुधीनो पहेलो भाग सहर्ष प्रकाशित करीप छीप.

आ संस्थाना प्रथम पुस्तकना संपादक<sup>१</sup> तरीके पण आचार्यदेव श्रीआणंदसागरसूरीश्वरजी म हता अने बीजा सेंकडानी शुरुआतना प्रथम पुस्तक तरीके पण तेओधीनो संकलीत अमूल्य कोप प्रसिद्ध करीप छीप.

कोपनी विशिष्टता अंगे संपादकिय निवेदनमां सणु कह्लुं छे, छतां अमारी संस्थाए आना प्रकाशनमां वधारे रस लीधो तेनु मुख्य कारण ए छे, के आज सुधी छपायेला प्राकृतकोपोमां अभिधानराजेन्द्रकोप, पाइयसहमहण्णवो आदि केटलाक कोपो छे पण तेमां न्यूनाधिकरूपे विचार करतां उपयोगितामां बाध आवे छे—जेमके अभिधान राजेन्द्र कोप प्रमाणमां पटलो यधो मोटो छे के तेमांथी कोइ शब्द शोधवा माटे वधारे परिश्रम पडे अने छपाईमां के सम्पादनमां त्रुटी रहेवाने लीधे सूत्रो अने ते ते प्रकरणो घणा परिश्रम पडी पण जडतां नथी पाइयसहमहण्णवोमां जैनसैद्धान्तिक शब्दो उपर वधारे भार मूक्यो होय तेम जणातुं नथी. पण प्रस्तुत ग्रन्थमां कोई पण जैन के जेनेतर विद्वान् प्रचलित जन पारिभासिक शब्दोनो यथार्थ परिचय टूंकर्मा अने सहलाइथी प्राप्त करी शके परी तक छे, तथा मुनिराजो पण ग्रन्थ सम्पादनना कार्योमां सहायता लइ शके तेम पण छे.

अमे इच्छीप छीप के आना प्रकाशनने विद्वज्जनेो योग्य आदर करखे ज.

आ कोपने अंगे सहाओनी समजणो तथा ते ते ग्रन्थोनां पानांओनी सूची पण संपादक पू. महाराजोप आपी छे. ते अंगे 'संपादकीय' वांचरा वांचक वर्गने अमारी विनंति छे

आ ग्रन्थना सकलनाकार ए पू. आगमोद्धारक गुरुदेवध्रीनुं स्तोत्र सुमनोहर गूथी ग्रंथने अलंकृत करनार सदा ज्ञानोद्यमीव्याकरण-साहित्य-न्यायविसारद × × × × नो उपकार मानीप छीप

अमारा प्रकाशन कार्योमां जे जे महाशयोप अमने मदद करी छे ते ते महाशयोना अमे ऋणी छीप.

वि. सं. २०१०  
आशो सुद १५ विजयादशमि  
ता ७-९-१९५४

लि० भवदीय  
मोतीचंद मगनभाई चौकसी  
दिनेरे ट्रस्टीओ

१ तेओधीनो सुरत उपर तो अन्हद उपहार छे. तेओधीने सवत १९७४ ना वैशाख एद १० ना सु तमज 'आचार्य' पदवी अगद हती. श्रीजिनानंदपुरतनालय, श्रीवर्षमानजैनताम्रनागममंदिर बगैरे सुरतमा ज छ. अने त. २००६ ना वैशाख वद ५ मे 'स्वर्गवास' एण सुरतमा ज थयो छे. तओधीनो अगिनतरहार पण सुरत शरैरनी मन्थरर्त्ती गोपीपुरामा आगमनमंदिरना रामे जूनीअदालतथी ओळसाती जमीनमा थयो हतो. बडी तेज जग्गा उपर गुरद्वेधीनो स्मरण तरीके सपूर्ण इतिहासने जणवनाह 'श्रीआगमोद्धारकगुरदमंदिर' बंधावधाना आशु छे.

२. तेओधीनु मुख्य कार्यसेन सुरत ज रहु हतु. तेनी प्रतिक्रमरीके अनेक ज्ञान विवानी मस्याओ स्वागद हति.

(१) सेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकीद्वार फड.

(२) सेठ नगोनभाई मजुभाई जैन साहित्योद्वार फड.

(३) श्रीरत्नासागरजीजैननीडलानुत्र (विद्याशाला) कायमि फड

(४) श्रीजैन तल्पबोध बोध पाठशाळा बंगिरे अनेक सत्याओ तथोना उपदेदनु ज परिणाम छे.



## संपादकीय वक्तव्य

५

“ॐ णमो चउधीसाण तित्थयराण उसभाईमहावीर पज्जसाणाण । णमो गोयमाईमहामुणीणं । इकारस अंगाइ वारसुवंगा पइलगा दस य । छया छ चऊ मूला, नंदी अणुभोगा णमंनमि । ॥१॥”

साहित्यमां ऊंडा ऊतरेला रसिकोने विविध विषयोना बोधनी आश्चर्यकता रहे छे. जे विषयनो बोध जे मनुष्यने होयो जोइभे ते बोध सिवायनो मनुष्य ते विषयने प्रहण करवा जाय तो अज्ञानी वांदरानी जेम “मने पकडयो मने पकडयो” जेवी अनी दशा थाय तेथी ते विषयनाबोध माटे ते विषयना शब्दना ज्ञाननी, अर्थना ज्ञाननी अने तेना भाषार्थना ज्ञाननी, अर्थात् ते पदार्थना शब्दार्थ, भाषार्थ अने धेदुंपर्यानी जरूर छे जो ते समझ्या सिवाय प्रभृति कताय तो भोजन करवा घेठेलो ‘सैंधव’ मंगावे अने ‘घोडो’ लावे तेना जेवु थाय

शब्दना बोधने करनारू जे साहित्य होय तेने ‘शब्दकोष’ आदि शब्दधी संशोधी शक्याय. एवा ‘शब्दकोषो’नी उत्पत्ति कां तो आगमोमां आवेला पर्यायो रूपे खापी होय कां तो नियण्टु जेवा ‘शब्दकोषो’ रूपे होय, अथवा बीजा घणाभे ‘शब्दकोषो’ रूपे होय. आधी दरेक भाषाजार अनेक शब्दकोषो’ योजाया छे अने योजाय छे.

जैन दर्शन माटे तो ते शब्दोना अर्थ टीकाकारोण प्रकरणना आधारे जं रीते मजुर कयां छे ते रीते ज लेवा योग्य छे शब्दो-योगिक, रूढ अने मिश्र पम साहित्यकारोप मान्या छे, ते यथार्थ छे. आधी जैन दर्शनमां ऊंडा ऊतरवावाळाने पण ते बोधनी जरूर तो छे ज, तेथी तेवा प्रकाग्ना ‘शब्दकोष’नी जरूरियात् मानयींज पडे. आ उद्देश लक्ष्यमां लक्ष्युं तो जैन दर्शनमां आवता शब्दोना अर्थवाला अनेक कोषो होवा छतां पण आ नया कोष माटे स्थान छे न.

संकलनाकार—ग्रन्थकार स्वतंत्र लेखिनीधी जे ग्रन्थ करे तेमनी ज कृति कहेवाय छे परंतु बीजा ग्रन्थोमाधी अेरुत्रित करेनु होय तो आ यधुं बीजा ज ग्रन्थोमालु छे, पम जणायरा माटे पोते संकलना करी छे पम जणावे छे तेथी महत्त्वपूर्ण अनेक जैन ग्रन्थोना संपादक अने संशोधक, तेमज सस्कृत, पाठ्य अने गुजरातीमां विविध विषयोनी कृतिओ रचनारा,<sup>१</sup> आगमोद्धारक<sup>२</sup> आचार्य आभातन्द्सागरस्वरीश्वरजी महाराजे सैद्धान्तिक शब्दोनी आ कोषमां संकलना करी छे, आथी आ ग्रन्थना ‘संकलनाकार’ प. ता आगमोद्धारकगुणदेयथी छे

(१) मण्डाचरण तरीके आपेलु समग्र जवमागधी छेला अेठ बन्दने छाडीने ‘शिलारक्षीण आगमो’नी पीठिकान्तु छे जुआ—आगमरत्नमूषा शिला न १,१.

(२) जुओ अमासी सारादन बरेली पुस्तिका—(१) प्रशमरणि अने सबकारिका, परि ३ थी ८ ‘आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा’, (२) उपदेशलेखर (आचार्य) पृ १९-२० ‘आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा’, (३) आचाराण्ण्ड ५ २५०-२१६ ‘आगमोद्धारकनी साहित्यसेवा’, (४) आनंदमुधासिन्धु भा. २ परि ४ ‘आगमोद्धारकना व्यवपन’नी मूनी तश ‘अगमोद्धारकना चैतन्यदनादि’, (५) आराधनासाग भा. १ पृ २२-२३ ‘आगमोद्धारकना चैतन्यदनादि.

(३) आ सबचना जुआ—‘आगमोद्धारकविद’ अे नामना प्रा. हीगणक २ कारियिनां लुवु लेव अे लेव गुरना ‘प्रभाकरना ता १४-१-५०ना अफमा छायां छे

आगमोक्तं मुद्रण-वाचना—आ कलिकालमां विक्रमनी वीसमी सद्रीमां एवो पण एक समय आदेशे के ज्यां शाखीय बोध ओछो थवा लाग्यो अने हस्तलिखित प्रतो वांचवानी तेमज वांचवा माटे प्रतो मेळववानी पण मुद्केलीओ ऊपो थीई. आधी जो लपान टापेलु मळी जाय अने तेनो जो बोध अपाय तो ते हितावह निवडे. आ हेतुथी आगमो<sup>४</sup> छपावया अने तेगी वाचनाओ आपवी पम प पू. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीनी प्रेरणाथी नक्की थयु. अने संपादनतुं कार्य अने वाचनतुं कार्य आगमज्योतिर्वर, अप्रमाटी आगमोद्धारकश्रीने ज करवातुं थयु. आधी जेम जेम आगमो छपाता तेम तेम पाटण<sup>५</sup> आदि स्थलोप 'वाचनाओ' अपाई अने तेनो सेकडो सायुसोपीओप लाभ लीघो.

आगमो रूपी सागर अने तेमां भावता त्रिपयो पण ए सागरना उपसागरो जेग छे. परंतु ते अखात रूपे छूटा छूटा पडया होय तो उपसागर रूपे देग्याय, तेथी ने वधा प्रवाहो एकत्र करी जुदा जुदा उपसागरो वनाववा. आ मुद्दाए जेम आगमो छपाता गया तेम तेम वर्तमान झुतना ज्ञाता आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीए आगमोमां जुदा जुदा विषयोने जणावनारा त्रेपत (५३) अंको पाड्या अने 'शब्दकोप' माटेना शब्दो अंगे पण 'फूल'तुं परु निशान कर्युं. ए निशानो पयां हतां के—अंकोमां वया शब्दथी ज्यां सुधीनो भाग लेवानो छे ते जणावया माटे आदिमां अने अंतमां निशाननी साथे अंक मूकवामां आवतो हतो. ज्यारे आ कोपना शब्दोने अंगे फूलतुं निशान मूकवामां आवतुं हतुं तेमां पण रूयी करवामां आवती हती के—जो शब्द एक अक्षरनो होय तो एकनी नीचे, वेनो होय तो वेनी वच्चे, यावत् जेटला अक्षरनो होय तेना मध्य बिन्दुए निशान मूकवामां आवतुं हतुं आवी रीते शब्दोनी संकलना थीई आ वया विषयो अने शब्दो लहिया द्वारा उताराईने एकत्रित करावता हता.

नाम—आ कोपतुं नाम 'श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोप' राखवामां आव्यु छे कारण ए छे के—आ कोपमां आगमोमां वपरायेला तमाम शब्दो नवी, परंतु जे शब्दो परिचय अल्प

४ आगमो छपावया माटे भोजणीतीर्थमां स १९७१ना महा सुद १० ने सोमवार २५-१-१९९५ना दिवसे श्रीआगमोदयसमितीनी स्थापना वई आला अमेतु आगमोद्धारकजुत 'आगमसमितीस्थापनास्त' अमाग नमदित आचारंगमून (भाग १) (व्या म) मा छगातु छे

पन	स्थळ	दि न	वाचना आपेल प्रयोगा नाम
१	पाटण	१९७१	श्रीदशवैशालिक, श्रीसुत्रजसोगमून, श्रीप्रतिज्ञाशा.
२	वपटवणन	१९७०	श्रीगणितसिद्धा, श्रीयोगगणितसमुच्चय, श्रीअनुयागद्वारगमून १/२, श्रीजावश्यकमून १/४, श्रीउत्तराध्ययनमून १/३।
३	अमदावाद	१९७३	श्रीशिक्षेवाशकमून ८/४, श्रीस्थानगमून १/०।
४	सूरत	१९७३	श्रीशिक्षेवाशकमून १/३, श्रीस्थानीगमून १/०, श्रीजीव्यतिरमून श्रीउत्तराध्ययनमून ३/३, श्रीजाचारंगमून १/२।
५	सूरत	१९७५	श्रीभारतशकमून १, ४, जाचारंगमून १/०, श्रीअनुयं श्द्वारगमून १/०, श्रीगन्दीमून।
६	पार्थीवाणा	१९७५	श्रीआधुनिक, श्रीगिःनियुक्ति, श्रीभगवतमून ८/४१
७	स्तगम (माठग)	१९७७	श्र प्रपावगमून ३३/३६। श्रीभगवतीमून ३३ १९, श्र प्रपावगमून ३/३६, श्रीमतायागमून

છે, તેવા આગમગત-સૈદ્ધાન્તિક શાસ્ત્રોનો આમાં સંપ્રદ કરવામાં આવેલો છે. આ 'ધોધવ્યારિનિત લેદ્ધાન્તિકશબ્દકોષ' માટે હવે પછી 'અ સે શ' પર્થી સંજ્ઞાનો ઉપયોગ કરાશે

શબ્દ અને તેના અર્થો—અ. મે શ માં જે શાસ્ત્રો અણાવ્યા છે તે શાસ્ત્રો અને માગે તો જેવા છે તેવા જ રાગવામાં આવ્યા છે. અર્થાન્ અક્ષર અને ઘોષા અક્ષર મિયાવના થાની થયા શાસ્ત્રો જે મૂલના છે તે અર્થમાગથીમાં છે અને ટીકાકારોવ ટીકામા આપેલા જે શાસ્ત્રો જે માગમાં છે તે જ માગમાં મોટે માગે કાયમ રાખ્યા છે પટલે વે અક્ષર અને ઘોષા આક્ષરમાં આવેલા હંદરત શાસ્ત્રો અર્થમાગથીમાં પણ આવ્યા છે

શાસ્ત્રોના શુદ્ધશુન ટીકાકારોવ મિન્ન મિન્ન ટીકાઓમાં મિન્ન મિન્ન અર્થો કર્યાં છે, તેઓ મિન્ન મિન્ન સ્થાનોમાંથી તે તે અર્થો લઈને તે તે ટીકાકારોના અર્થોને કાયમ રાખ્યા છે. આ કારણથી આ અ સે શ મા છેદના થવના જ શાસ્ત્રો લેવામાં આવ્યા છે તેમજ શુદ્ધકરવ જેવા કોઈકમાં આગમોદ્ધારવશુદ્ધેવધીના હાથના કુતારેલા શાસ્ત્રો છે તેમાં ટીકાકારોના માધારે અર્થોનું ટુંકાવયા વળું પણ છે

૬ તારવેના ૫૩ અક્ષરોનાં નામો—

( વાધા વાતની વુટનાટ )

૧ વિવયાનુક્રમ *	૧૪ ઇ રાવિચાર	૨૭ મગરનાથ	૪૦ વૈષ્ણવ
૨ અધિકરાનુક્રમ	૧૫ અકલાગ	૨૮ વાદાન્તરાણી	૪૧ મગ
૩ વિવેકોવ્યાધિના વિવયા	૧૬ વ્યાયા	૨૯ પ્રમ્લાવના	૪૨ ધ્યાનગાનિ
૪ વિશિષ્ટ	૧૭ સાનિધૂવપ્રવ્યા	૩૦ મૂલાવકારાણિકમ	૪૩ મિતિ
૫ સાતિયાઠાનામહારાદિકમ	૧૮ ડાહાદાન પ્રસમ્નન	૩૧ શુદ્ધાવનાધાનાનિ	૪૪ મહા વદનાદા
૬ વારા	૧૯ આવાવનામાનિ	૩૨ ક્ષાણિવ્યાય	૪૫ અનુવ્યાવમ
૭ લક્ષણશુવાળાધિકાર	૨૦ પ્રાચિનમનાનિ	૩૩ શુભાવિતાનિ	૪૬ અનુમનાનિ
૮ વિદ્યાવનામાનિ	૨૧ મનાનો મમાધાનાનિ	૩૪ િક્ષેરનો મમ્દ	૪૭ મહુવન
૯ દ્વિનિહામ	૨૨ મૂલાવતિ	૩૫ વાવુરુષિ	૪૮ શ્રદ્ધવશુદ્ધમાનિ
૧૦ મૂલાલ	૨૩ રાજકીયીમાગ	૩૬ સમાનવરદાનો વર્ણવ	૪૯ વિગાદા
૧૧ ડ્યનિષ્ક	૨૪ પ્રમ્લાવમ્	૩૭ મગા વદનાવ્યાય	૫૦ મમ્લાવકા
૧૨ પ્રવચિતમનાનિ	૨૫ માર્કાલિકમમ્દ	૩૮ દહનતા	૫૧ શ્રદ્ધવિદેશ
૧૩ શ્વાકરણવિચાર	૨૬ વ્યાવચનાન્તરાણી	૩૯ મમ્લાવયા	૫૨ શમુદિકમ

૫૩ નિશીથવકારાવુકન નિશ થમાયગાપાવદ નિ જ

\* તરી આદિ ૨૭ના વિવયાનુક્રમ અને મૂલાદિ અઠારાદિ અગેર હયાથી છે, તેનાં નીચે પ્રમ્લાવના અક્ષર શુદ્ધોને અપાયા છે—

- ૧ નન્દી, ૨ અનુવગદાર, ૩ આવશ્યક, ૪ અધનિવુક્તિ, ૫ દરવૈકાલિક, ૬ વિદ્વિનિવુક્તિ, ૭ અભ્યાવ્યવન,
- ૮ આવાચાર, ૯ શુદ્ધવત્તક, ૧૦ સ્થાનાક, ૧૧ સમવાચ, ૧૨ મગરની, ૧૩ ક્ષાણવકેકયા, ૧૪ ડાહાલક,
- ૧૫ અન્તશુદ્ધા, ૧૬ અનુમતીવ્યવિશદવ, ૧૭ વિશવશુન, ૧૮ પ્રમ્લાવકરણ, ૧૯ ઔદવનિક, ૨૦ રાજવ્રમ્લાવ,
- ૨૧ શીવાજીવામિગમ, ૨૨ પ્રમ્લાવ, ૨૩-૨૪ શુરવન્દ્રવદ્વિનિવુક્તિ, ૨૫ અમ્લાવવ્રમ્લાવ ૨૬ નિરવપલિકા અને
- ૨૭ પ્રકીણકદસકા.

( ૫૩ મનાવના ન. ૨૩, ૨૪, ૩૩ અને ૫૦ અવનાવમૂલાવર્તના નમે હયાયા છે )

आ अ. सै. श. मां भिन्न भिन्न शब्दो व्याकरणना प्रयोगो रूपे, कोई तेवां नामो रूपे, कोई इतिहास तरीके, कोई भूगोल तरीके तथा कोई पर्यायो तरीके पण आव्या छे.

काचो खरडो—शुरूआतमां लहियो पकेक आगम लईने कापलीमां ते शब्दने उतारतो अने टीकाकारनो घतवेल अर्थ लक्ष्यमां आवे तो ते अर्थ लखतो. आधी रीते उतारेली छूटी कापलीओने प. पू आगमोद्धारकगुरुदेवधीना विनयगुणसंपन्न, तीक्ष्णबुद्धि, स्वर्गस्थ मुनिराज श्रीमहेन्द्रसागरजीए अकारादि क्रममां गोठवी कागलमां सलग चोटाडीने तैयार करी ते उपरथी ए लक्षण लहिया आदि द्वारा लपावीने तेमज तेओथ्रीए (श्रीमहेन्द्रसागरजीए) पोते पण लखीने काचो खरडो तैयार कर्यो.

प्रकाशननी तैयारी—आ अ. सै. श ने छपाववानी प. ता आगमोद्धारकगुरुदेवधीनी घणी इच्छा हती. तेथी लगभग त्रण दशका उपर सदगृहस्थो पासेथी अ. सै. श. ना प्रकाशनने अंगे रूपिया षोड देवचन्द्र लालभाई पुस्तकोद्धारककं.डने अपाव्या हता. ते पछी वि. सं. २००४ मां ते संस्थाए आ अ. सै. श. छपाववा माटे ठराव कर्यो. आथो मुद्रणालयपुस्तिका करवानुं कार्य पू स्व. मुनिश्री महेन्द्रसागरजीना शिष्य मुनिश्रीसौभाग्यसागरजीने (तेओथ्रीना लघुबन्धुने) सोंपयुं. तेथी तेओ दरेक आगमनां ते ते पत्रमां ते ते शब्दो मेळवता अने तेना अर्थोनि पण मेळता. तेमज ज्यां टीकाकारना शब्दो लेधाना हता त्यां प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवधी पासेथी तेना मूळ शब्दो वनाधी लेता अने जे शब्दोना अर्थ टीकाकारे न आप्या होय तेना अर्थो पण पूछी लेता. आधी रीते तेमणे लगभग बार फार्म सुधीनुं मेटर तैयार कर्युं.

उपर जणावेली संस्था (दे + ला) ना टुस्टीओने प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवधीनी जीवन पर्यंत सेवा करनार मुनिराज धीगुणसागरजी महाराज पासेथी आ कोपीनुं लटाण मेळयुं अने छपाववा माटे प्रबंध कर्यो तेमज अमने संपादन माटे विज्ञप्ति करी. तेथी अमे आ संपादननुं कार्य शरू कर्युं. साथोसाथ मेटर पण तैयार करवा मांड्युं.

संपादन पद्धति—दरेके दरेक शब्द ते ते आगमनी साथे मेळवयो अने तेमां जणावेल अर्थ मेळवी लेयो. ते रीते कार्य करतां केटलाक आगमोना अंगे शब्दोना प्रज्ञो ऊभा थया. तेमां शीष्यवहारासूत्रना बीजा उद्देशाना शब्दो हता पण ते सिवायना बाकीना उद्देशाना शब्दो न हता. तेथी प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवधीए व्यवहारनी आखी प्रतमां निशानो करी आप्यां आथी तेनी कापलीओ उतारी तेना शब्दोना उमेरो कर्यो आगळ जतां बीजा पण आगमोना शब्दो नथी पम देखायुं, तेनी तपास करतां-नदी, अतगड. अगुत्तरोववाइय, उपासकदसा, रायपसेणीय, अने निरयावलिना शब्दो न हता. तेथी तेना शब्दो पण उतायां. अने ते शब्दो धीरे धीरे मेळववामां आव्या. आगळ चालतां नायाधम्मकहाना शब्दो बिलकुल नथी पम मालम पड्यु. नायाधम्मकहानी प्रत तो प. ता आगमोद्धारकगुरुदेवधीनी निशानवाळी प्राप्त न थई, तेमज जे समये शब्दो नथी तेवी शंका थई ते समये तो अमारु पुण्य पण न हनु के पू गुरुदेवधी 'विद्यमान' होय. आथी अमे अमारी भंद्मति अनुसारे आ आगमनी सटीक प्रतमां निशानो कर्यो, शब्दो तारख्या अने ते तारवेला शब्दोने कोशमां स्थान आप्युं

आ अ. सै. श. मां अग्यात अग, वार उपांग, त्रण<sup>०</sup> (वृद्धकल्प, व्यवहार अने निशीथ) छेदसूत्र, चार मूल, ओषधिनियुक्ति, विशेषपावदपक, नंदी, अनुयोगद्वार, अने दशवैकालिकचूर्णिना शब्दोना संग्रह

७. विस्तारथी चूर्णि वगैरे जेना पर नदी तेना जीतारव, पंचरत्न, दशाधुतारव, अने महानितीधन शब्दो तीना नथी

करवामां आवेल छे. तेमज दशाश्रुतस्कन्ध, दशप्रकीर्णक, पडमचरिय, उपदेशमाला, अने तरवार्य-सूचना केटलाक शब्दो पण लेवामां आवेल छे.

संज्ञा पत्रक—अ. से. श. मां जे शब्दोनो संग्रह करवामां आव्यो छे अने तेमां आगमो-शास्त्रो वगैरेनी जे संज्ञाओ आपवामां आवेलीं छे, ते संज्ञाओना स्पष्टीकरण माटे तेमज लीधेलीं प्रत-टीका वगैरे दोनी छे ते जणाववा अने तेना संपादक तथा प्रकाशक जणाववा एक संज्ञापत्रक नामधी प्रकरण राख्युं छे. तेमज वीजी वीजी प्रतोनो साथे पण शब्दो मेळववानुं शक्य बने ते उद्देशधी पत्राङ्कसूचा नामधी एक प्रकरण आप्युं छे.

वर्णक्रम—अ. से. श. मां अनुस्वारने पहिलुं स्थान आपवामां आव्युं छे. कारण के शरूआतमा प. ता. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीप आ रीते शरू करवानुं जणाव्युं हतुं, आथी प पद्धति कायम राखी छे. पण आनो हेतु हमे जाणी शक्या नथी, तेथी अत्रे हेतु आप्यो नथी.

विद्भज्जनो प्रत्ये—सुह विद्भज्जनो ! अमो गूर्तर भाषाना संपादनना कार्यमां अनुभव मेळवतां संपादनमां आगळ बध्या छीर. ते रीते संस्कृत अने प्राकृतना संपादनमां प्रवेश करता थया पया समयमां प. ता. गुरुदेवश्रीनी सेवाना प्रतापे भमने 'अ. से. श.' संपादन व्युं. आथी अमे ते कार्यमां रस लीधो ने संपादन कार्य शरू कर्युं. आथी पंडितोनी अपेक्षाप के विद्यानोनी अपेक्षाप अमारा आ संपादनना अंगे जे सूचनाओ करवी उचित छे ते अमे विद्भज्जनोनी समक्ष रजू करीप छीप.—

१. मूळ शब्दो विभक्तियाला तेम विभक्ति वगरना अेम वन्ने प्रकारना छे. तेथी ते जे लिंगनो जे शब्द होय ते शब्द तेवी तेवी विभक्तियो ते ते लिंगमां समजी लेवो. जेमके-अंकुर (पृ. १, २), अंकुसयं (पृ. १, २) इत्यादि (कोईक शब्दकोशमां विभक्ति सहित शब्दो नथी तेलु पण प्राये अमारा जणवामां छे
२. जो के शब्दो बधा अेक जातना विभक्ति विगार अगर अेक विभक्तियो मेगा लेवा जोईअे, परंतु आमां भिन्न भिन्न लेवाया छे. जेमके-अंकावइ (पृ. १, २), अंकावइओ (पृ. १, १) इत्यादि.
३. वैकल्पिक शब्दोना विकल्पने साचवया माटे अर्थात् तेवा प्रयोगीने साचवी राखवा माटे आमां भिन्न लेवाया छे जेमके-अंकवडैसर (पृ. १, १), अंकावडैसर (पृ. १, १) इत्यादि.
४. टीकाकार महाराजे जे शब्दोना प्रयोगो टीकांमां कयां छे ने ते शब्दो मूळमां नथी तेवा शब्दोनुं प्राकृत जे कांसमां अपाय छे ते प. आगमोद्धारक गुरुदेवश्रीने पूछीने मुनिश्रीसौभाग्यसागरजीअे आपेलुं छे. वळी तेवा शब्दो कोई वखत शरूआतमां अपाया छे. अने कोई वखत संस्कृत-शब्दनी पळी पण अयाया छे. तेनी वन्ने वानुअे वनतांसुपी कांस आव्यो छे. जेमके (अंकीह)नर्तकः (पृ. १, १), अंगारः (इंगालः) (पृ. २, २) इत्यादि.
५. शरूआतमां तो शब्दोना अर्थी अने शब्दोना संग्रहनी शंलि नियमित रही नथी, पण जेम जेम अनुभव थतो गयो अने तेना अभ्यासमां वधारो थतो गयो तेम तेम पद्धतिमां सुधारो थतो गयो छे. छतां अेटलुं फहेवानी जरूर छे के पहिला भाग करतां थोजा भागमां पद्धति इत्यादिनो सुधारो मळला अनुभव प्रमाणे करी शकीनुं अेवी आशा छे.
६. (१) अध्यायन, (२) विशेषनाम, (३) वनस्पतिना नामना अंगे तेनी साथे अर्थना रूपमां संस्कृतमां अपाय छे जेमके (१) अंडे-विपाकअताचश्रुत० (पृ. २, २), (२) अंगारवई-अंगारवती सर्वेगोदाहरणे० (पृ. २, २), (३) अंकीह वृक्षविशेषः (पृ. २, १) इत्यादि.
७. टीकाकारोप शब्दोना जे जगो पर अर्थे नथी कयां तेवा शब्दो पण अत्रे अर्थे वगर अपाया छे. जेमके ओहो (पृ. २२१, २), उबट्टगा (पृ. २०७, २) इत्यादि. वळी आ शब्दोना अर्थो जो कदाच मेळवी शकीनुं तो परिशिष्टमां आपवा विचार छे.

८. देशी शब्दोना अंगे 'देशीय' अगर 'देशी' एवं कौंसमां लखायुं छे. अर्थात् टीकाकारे आपेलुं कायम राखुं छे. जेमके-उत्तुड (देशी०)-गर्धे (पृ. १८७, १).
९. चूर्णिकार महाराज चूर्णिनी अंदर प्राकृत अने संस्कृत अेम वन्ने भाषाना प्रयोगो करे छे, तेथी चूर्णिना शब्दोना अर्थोमां प्राकृतना अने संस्कृतना वन्नेना प्रयोगो छे. परंतु बहुधा तो प्राकृत ज होय छे.
१०. आ 'अ. सै. श. मां एवा पण शब्दो छे कं जे अभिधानराजेन्द्र के पाइयसहमहणयोमां न होय.

अ सं. श. तुं संपादन कार्य शुरू यतां सुरतमां इता त्यां सुधी एक वचतनुं मुफ जोई आपवा प. ता. आगमोद्धारकगुरुदेवश्रीना एकैव पट्टधर, श्रुतवारिधि, शास्त्रतत्त्वदर्शी, गच्छनायक, आचार्यश्रीमांणिन्यसागरसूरीश्वरजी महाराजे कृपा करी हती.

ए रीते संपादननुं कार्य चालतुं हतुं, तेमां प्रथम भागनुं पंदर आनी काम थई गया पछी सुरतथी दक्षिण तरफ विहार थवाना कारणे अने प्रेस आदिना प्रतिकूल संयोगोमां अमारी अनिच्छाय पण नहि जेवा कार्यमां वर्णोनां वर्णो वीती गया बाद अजे आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिक-शब्दकोपनी 'प्रथम भाग' विद्वानोना करकमळमां उपस्थित करी शक्या छीय.

आ प्रथम भागमां 'संपूर्ण स्वरु' आपवामां आवेला छे स्वरोमां तेमज थीजा रही गयेला 'शब्दो' तथा देशीनाममालाना शब्दो श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोप पूर्ण थतां 'परिशिष्ट' तरीके आपवा विचार छे.

प. पू. आगमयाचनादाता, देवसूरतपांगच्छसामाचारिसंरक्षणकटियन्द्र, अनेक ग्रन्थोना प्रणेता, वादीमानमर्दक, चरमशासनपति महावीर परमात्माना शासनमां आगममंदिरोना संस्थापक, जैनआनन्दपुस्तकालयादि संस्थापक, शैलानानरेप्रतिबोधक, युगप्रधानसदश, वर्तमान श्रुतना हाता, स्वअराधनये आराधनामार्ग करनारा, मौनपणे रही अर्धपद्मासने स्वर्गे संचरनार, प. पू. आगमोद्धारक \*आचार्यवैद्यश्रीआनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजनी पुनित सेवाना प्रतापे जे कई बोध-शक्ति मेळवेल छे, ते आधारे अमे अमारी बुद्धि केळवीने काळजीपूर्वक आ श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोपुं संपादन करुं छे

मुनिराज श्रीअभयसागजी महाराजे संजोग मळतां आमां मार्ग थताव्यो छे. तेओश्राने तेमज प्रो. हिरालाल र. कापडीयाने पण हमे अवे भूलता नथी.

आमां जे अनुब्धिओ जणायी छे तेनुं शुद्धिकरण पण आप्नुं छे, छतां विद्वज्जनोप्रति अमारी प्रार्थना छे के शक्ति देयाय दो जणाववा उदारता दाखवे.

वीरस्त. २८८०, वि. सं. २०१०  
ज्येष्ठ पुर्णिमा  
हिंगनघाट  
(मध्यप्रदेश)

आगमोद्धारकउपसंपदाप्राप्त शिष्यगण  
कंचनविजय  
तथा  
आगमोद्धारक शिष्यलय  
क्षे. करसागर

## संज्ञापत्रकम् ।

क्रमा- ङ्क	संज्ञा	सूत्रनाम	सम्पादकः	प्रकाशकः
१	अनु.	महृधारगच्छीयश्रीहेमचन्द्राचार्यविरचितवृत्तियुक्तं श्रीअनुयोगडारसूत्रम् ।	आगमोडागकः	दे. ला. जे
२	अनुत्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअनुत्तरोपपातिरुद्रशाङ्गम् ।	"	आ. स
३	अन्त.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्यभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीअन्तःरुद्रशाङ्गम् ।	"	आ. स.
४	आउ.	श्रीआतुरप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	"	आ. स.
५	आचा.	निर्युक्तिकलितशीलाङ्गाचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीआचारा- ङ्गसूत्रम् ।	"	आ. स.
६	आव.	निर्युक्तियुतभाष्यकलितश्रीभवविग्रहहरिभद्रसूरिविहित- वृत्तियुतं श्रीआवश्यकसूत्रम् ।	"	आ स.
७	उत्त.	निर्युक्तियुतानि श्यादिवेतालश्रीशान्तिसूरिसूत्रितवृत्ति युतानि श्रीउत्तराध्ययनानि ।	"	दे. ला. जे.
८	उप मा गा.	श्रीघमंदासगणिविधा श्रीउपदेशमाला ( गाथा ) ।	"	
९	उपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीउपासकद्रशाङ्गम् ।	"	आ. स.
१०	ओघ.	भाष्ययुता श्रीद्रोणाचार्यसूत्रितवृत्तिसिम्भृपिता श्रीओघनिर्मुक्ति	"	आ. स.
११	ओप	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीओपपातिकोपाङ्गम् ।	"	आ. स.
१२	ग	श्रीगच्छाचारप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	"	आ. स.
१३	गणि	श्रीगणिविधाप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	"	आ. स
१४	चउ.	श्रीचतु शरणप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	"	आ स.
१५	जं प्र.	उपाध्यायश्रीशान्तचन्द्रविहितवृत्तियुतं श्रीजम्बूठीप- प्रशङ्कयुपाङ्गम् ।	"	दे ला. जे.
१६	जीवा	श्रीमलगियाचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीजीवाजीवा- भिगमोपाङ्गम् ।	"	दे ला. जे.
१७	ज्ञाता.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीज्ञाताधर्मरुद्रशाङ्गम् ।	"	आ स.
१८	ठाणा.	श्रीचान्द्रकुलीनाभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीस्थानाङ्गसूत्रम् ।	"	आ स.
१९	तं.	श्रीतन्दुलवैचारिकप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	"	आ स. आ स.

१ दे. ला. जे. = श्रीदेवचन्द्रलाञ्छनसूत्रितयुक्तकोशाङ्कः ।

२ आ. स. = श्रीआगमोदयमिति ।

२०	तत्त्वा-	भाष्योपेतं धीतत्त्वार्थसूत्रम् (अध्यायः, सूत्रम्)।	आगमोद्धारकः	क. के.
२१	दश.	निर्युक्तिभाष्योपेतं श्रीभक्तविरहहरिभद्रसूरिविरचित-	"	दे. ल. जे.
२२	दशचू.	विवरणयुतं श्रीदशवैकालिकसूत्रम्।	हस्तपोथी	जे. पु. नं. १६७३
२३	दशाष्ट.	श्रीदशाष्टनस्कन्धः	"	"
२४	देव.	श्रीदेवेन्द्रस्तवप्रकीर्णकम्।	आगमोद्धारकः	आ. स.
२५	नंदा.	श्रीमलगिरिचार्यविहितवृत्तियुतं श्रीनन्दीसूत्रम्।	"	आ. स.
२६	निरय.	श्रीचन्द्रसूरिविरचितवृत्तियुतं श्रीनिरयावलिकापंचकम्।	श्रीदानविजयगणी	वीर. <sup>५</sup>
२७	नि. चू. प्र.	भाष्यचूर्णुपेतस्य श्रीनिशीथसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जे. पु. नं. ४८३
२८	नि. चू. द्वि.	" " द्वितीयो "	"	जे. पु. नं. ४८४
२९	नि. चू. तृ.	" " तृतीयो "	"	ज. पु. नं. ४८५
३०	पड.	श्रीविमलाचार्यविरचितं 'पउमचरियं' (उल्लासः)	मो. हर्मन जेकोवी	जे. घ.
३१	पिण्ड } पिण्ड }	भाष्यश्रीमलयगिरिचार्यविहितवृत्तियुता पिण्डनिर्युक्तिः	आगमोद्धारकः	दे. ला. जे.
३२	प्रज्ञा.	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम्।	"	आ. स.
३३	प्रश्न.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्यभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीप्रश्नव्याकरणोपाङ्गम्।	"	आ. स.
३४	चू. प्र.	निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीवृहत्कहरसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोथी	जे. पु. नं. ३०३
३५	चू. द्वि.	" " द्वितीयो "	"	जे. पु. नं. ३०४
३६	चू. तृ.	" " तृतीयो "	"	ज. पु. नं. ३०५
३७	भक्त.	श्रीभक्तपरिज्ञापप्रकीर्णकम् (गाथा)।	आगमोद्धारकः	आ. स.
३८	भग.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीभगवतीसूत्रम् (श्रीव्याख्याप्रशस्तिः)।	"	आ. स.
३९	मर. } मरण. }	श्रीमरणसमाधिप्रकीर्णकम् (गाथा)।	"	आ. स.
४०	महा. } महाप्र. }	श्रीमहाप्रत्याख्यानप्रकीर्णकम् (गाथा)।	"	आ. स.

३ क. के. = श्रीचक्रप्रमदेवजीकेशरीमन्त्री, रत्नाम

४ जे. पु. नं. = श्रीजैनानन्दपुस्तकालय, मुरान, हस्तपोथी नम्बर

५ वीर. = श्रीनिरमला, अमदावाद.

६ सूत्र. = निर्वर्णिके अने भाष्यगाथानां माय प्रतीक छे.

७ जे. घ. = श्रीदिनधर्मप्रसारक गभा, भयनगर.




४१	राज.	श्रीमलयगिर्याचार्यसूत्रितविवरणयुतं श्रीराजप्रश्नीयोपाङ्गम	आगमोद्धारकः	आ. स.
४२	विपा.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीविपाकथताङ्गम ।	"	आ. स.
४३	विशे.	मह्यारित्रीहेमचन्द्रसूरिविरचितवृहद्वसियुतं श्रीविशेषावश्यकभाष्यम् ।	पं हरगोवनदासः	१य जं.
४४	व्य. प्र.	निर्युक्तिभाष्यटीकोपेतस्य श्रीव्यवहारसूत्रस्य प्रथमो विभागः	हस्तपोषी	जै. पु. नं. ४८७
४५	व्य. द्वि.	" " " द्वितीयो "	"	जै. पु. नं. २६६
४६	सं.	श्रीसंस्तारकप्रकीर्णकम् ( गाथा ) ।	आगमोद्धारकः	आ. स.
४७	सम.	श्रीचान्द्रकुलीनाचार्याभयदेवसूरिसूत्रितविवरणयुतं श्रीसमवायाङ्गम ।	"	आ. स.
४८	सूत्र.	निर्युक्तिभाष्यशीलाङ्ग।चार्यविरचितविवरण यु श्रीसूत्रकृताङ्गम ।	"	आ. स.
४९	स्य	श्रीमलयगिरिसूरिविहितविवरणयुतं श्रीसूर्यप्रणप्त्युपाङ्गम ।	"	आ. स.

१ य. जै. = श्रीयशोविजयजीवनप्रन्यमाला.

२ सूत्रादिनां मात्र प्रतिक ज छे.

## पत्राङ्क सूचा

श्रीआचाराङ्गम् प्रथम धृतस्कंध अध्ययनानि आपत्र		अध्ययनानि आपत्र		अध्ययनानि आपत्र		शतकानि आपत्र		श्रीसातावर्मकथाङ्गम् प्रथम धृतस्कंध अध्ययनानि आपत्र	
१	८१	४	१२१	७	४१५	१६	७१९	१	७७
२	१४८	५	१४१	८	४४३	१७	७३१	२	९०
३	१७४	६	१५३	९	४२९	१८	७६०	३	९६
४	१९५	७	१६५	१०	५२८	१९	७७३	४	९९
५	२३१	८	१७५	श्रीसमवायाङ्गम्		२०	८००	५	११३
६	२५८	९	१८६	आरिपय आपत्र		२१	८००	६	११४
८	२९६	१०	१९५	सागभोवस- कोटाकोटी १०५		२२	८०४	७	१२०
९	३१७	११	२०७	गणिविदक १३३		२३	८०५	८	१५५
द्वितीय धृतस्कंध चूला-१		१२	२२९	अवसरपिणि १५२		२४	८५१	९	१६९
		१३	२४०	निगमनम् १६०		२५	९२८	१०	१७०
१	३५८	१४	२५२	श्रीभगवतीजी		२६	९२७	११	१७३
२	३७४	१५	२६०	शतकानि आपत्र		२७	९३८	१२	१७७
३	३८४	१६	२६६	१	१०८	२८	९३९	१३	१८०
४	३९१	१७	२७३	२	१०२	२९	९४६	१४	१९२
५	३९८	१८	२७२	३	२०२	३०	९४८	१५	१९५
६	४०१	१९	३६०	४	२०६	३१	९५०	१६	१९६
७	४०६	२०	३७०	५	२४९	३२	९६४	१७	२३४
चूला-२	४२७	२१	३८५	६	२८६	३३	९७०	१८	२४२
३	४२९	२२	४०५	७	३०७	३४	९७१	१९	२४५
४	४३२	२३	४०७	८	४२४	३५	९७१	२०	२४४
श्रीसूत्ररत्नाङ्गम्		श्रीस्थानङ्गम्		९	४९०	३७	९७१	२१	२४४
प्रथम धृतस्कंध		१	३८	१०	५०८	३८	९७१	श्रीउपासमदशाङ्गम्	
अध्ययनानि आपत्र		२	१०१	११	५०७	३९	९७१	१-१०	५४
१	५३	३	१७९	१२	५९०	४०	९७०	श्रीअन्तरदशाङ्गम्	
२	७७	४	२८९	१३	६२९	४१	९८१	१०	आपत्र
३	१०१	५	३२०	१४	६०८	४२	९८६	१-८	३२

अमुत्तरोपपातिक दशाङ्गम्		श्रीराजप्रश्नीयं		पदानि		श्रीजम्बूठीपत्रमन्त्रि रामरकारा	
वर्ग	आपत्र	आविषय	आपत्र	पदानि	आपत्र	पदानि	आपत्र
१-३	८	सूर्यम	१७	४	१७८	३०	५३५
		यानविमानादि	४४	५	२०३	३३	५४०
<b>श्रीप्रश्न्याकरणाङ्गम्</b>		दुर्गाकारहृदयन्त	५९	६	२१८	३४	५५०
अध्ययनानि	आपत्र	स्नानपूजादि	११३	७	२२०	३५	५६८
१	२५	मोक्षरण	१००	८	२२३	३६	६११
२	४१			९	२२७		
३	६४			१०	२४५	<b>श्रीसूर्यप्रज्ञप्ति</b>	
४	९०			११	२६८	प्राभूतमानि आपत्र	
५	९८			१२	२८३	१	४४
६	११३			१३	२८८	२	६०
७	१२१			१४	२९२	३	६६
८	१२९	<b>श्रीजीवाजीवाभिगमं</b>		१५	३१६	४	७१
९	१६१	प्रतिपत्तय	आपत्र	१६	३२९	५	७८
१०	१६१	१	५१	१७	३७३	६	८०
		२	८८	१८	३९४	७	८३
<b>श्रीविपाकशुक्लाङ्गम्</b>		३	४०७	१९	३९५	८	९१
प्रथम	धृतस्कध	४	४०९	२०	४०७	९	९९
१	{ ३३त ४४	५	४२६	२१	४३४	१०	१०६
२-१०	८८	६	४२८	२२	४५२	११	२०१
		७	४३१	२३	४९१	१२	२३३
		८	४३२	२४	४९३	१३	२४३
१-१०	९६	९	४६७	२५	४९४	१४	२४४
<b>श्रीभौपपातिकसूत्रम्</b>				२६	४९६	१५	२५५
आविषय	आपत्र	<b>श्रीप्रज्ञापनोपाङ्गम्</b>		२७	४९७	१६	२५६
राजधान्य दि	२४	पदानि	आपत्र	२८	५२४	१७	२५७
साधुगुणा	४८	१	७०	२९	५०७	१८	२६७
पद्मनिर्गम	७७	२	११०	३०	५३१	१९	२८४
सिद्धवर्णन	११९	३	१६७	३१	५३४	२०	२९७



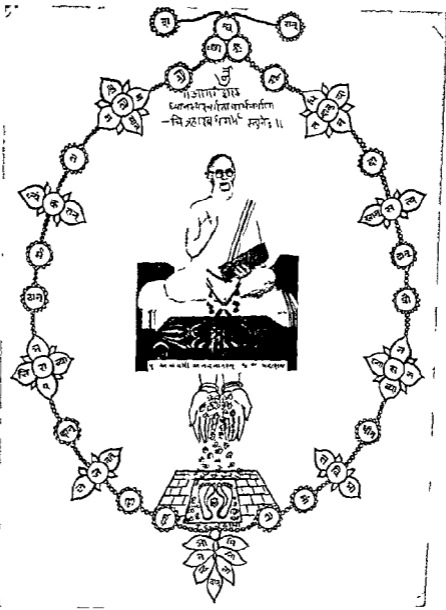
श्रीनिशीथसूत्रम् हस्तपोथी लीथोप्रिन्ट				श्रीमृहत्कल्पसूत्रम् हस्तपोथी			श्रीव्यवहारसूत्रम् हस्तपोथी मुद्रितः						
भागः	उद्देशकः	भापत्रं	भागः	आपत्रं	भागः	उद्देशकः	आपत्रं	आगाथा	भागः	उद्देशकः	भापत्रं	उद्देशकः	भापत्रं
१	१	१२९	१	२०२	१	१	७७	५००	१	१	१७४	१	१-६१
	२	१८२	२	३०८			१६६	१०००			०		१-६९
	३	१९४		३३४			२३५	१५००			०		१-३७०
	४	२२२		३०४			३१७	२१३०	२	२१९	२	१-८७	
	५	२४७		४४५	२		१११	३०००	३	२५८	३	१-७३	
	६	२५३	३	४६३			१५५	३२९२	२	४	११०	४	१-१०४
	७	२५७		४७८		२	२०३	४६४		५	१३५	५	१-३९
	८	२७०		५०५		३	२९३	७२८		६	१९९	६	१-७१
	९	२७७		५३३	३		६४	११९२		७	२८३	७	१-०५
	१०	३६१		६१५		४	१६८	८०५		८	३३६	८	१-६०
२	११	५८	४	७७३		५	२१२	२७५		९	३५५	९	१-३३
	१२	८२		८३२		६	२६७	४३०		१०	४५८	१०	१-११४
	१३	१०३		८७५									
	१४	१२३		९१६									
	१५	२७३	५	१००८	१	१	२५४	८०५					
३	१६	५६		११४१	२		६१०	३१२४					
	१७	६२		११६०	३		९६१	३२८९					
	१८	६५	६	११६७	४	२	१०२२	३६७२					
	१९	८६		१२१२	३		१३०६	४८७६					
	२०	१७२		१३३८	५	४	१५०२	५६८१					
				+२		५	१५९९	६०५९					
				+३५	६	६	१७१२	६४९०					

—: मुद्रितः :—

धीभायदयकम्प्रम		धौदभायकालिकम्				धीउत्तराण्ययनानि			
आविषय	आयस्र	टीका		मू. १.		धीउत्तराण्ययनानि			
		मु. १.	हमो. १.	मु. १.	मु. १.	आयस्र	आयस्र	आयस्र	आयस्र
विटिका	५०	१	८१	३०	३०	१	३०	१०	६६०
प्रथमवर्षिका	१३६	२	९९	६१	६०	२	१६०	३०	६६१
द्वितीयवर्षिका	१८८	३	११०	९३	११०	३	१८०	३१	६६२
तृतीयवर्षिका	२४०	४	१२०	१२०	१२०	४	२२०	३२	६६३
चतुर्थवर्षिका	३००	५	१३०	१६०	१६०	५	२६०	३३	६६४
पञ्चमवर्षिका	३६०	६	१४०	१९०	१९०	६	३००	३४	६६५
षष्ठवर्षिका	४२०	७	१५०	२२०	२२०	७	३४०	३५	६६६
सप्तमवर्षिका	४८०	८	१६०	२५०	२५०	८	३८०	३६	६६७
अष्टमवर्षिका	५४०	९	१७०	२८०	२८०	९	४२०	३७	६६८
नवमवर्षिका	६००	१०	१८०	३१०	३१०	१०	४६०	३८	६६९
दशमवर्षिका	६६०	११	१९०	३४०	३४०	११	५००	३९	६७०
धौदभायदयकम्						१३	३००	३१	६७०
धौदभायदयकम्						१६	६११	३२	६७०
षुटं आविषय	आयस्र	आविषय	आयस्र			१०	६११	३३	६६८
आभिनिवाधिषुटं	२६९	विश्वविद्यालयम्	२८			१६	६३०	३६	६६३
केवलमन	२६९	उत्तरादिशाखा	११०			१२	६३६	३०	६६८
उत्तरादिशाखा	६६०	उत्तरादिशाखा	१६६			१८	६६६	३६	६७६
तृतीयवर्षिका	८३६	प्रथमवर्षिका	१०८						
चतुर्थवर्षिका	१०६४								
पञ्चमवर्षिका	१२६०								
षष्ठवर्षिका	१४५०								
प्रथमवर्षिका	१३६०								
धीभोधनियुक्ति									
आविषय	आयस्र	आविषय	आयस्र			आविषय	आयस्र		
प्रथमवर्षिका	१३०	विश्वविद्यालयम्	१०१			आविषय	आयस्र		
द्वितीयवर्षिका	२००	उत्तरादिशाखा	१२०			आविषय	आयस्र		
तृतीयवर्षिका	२७०	उत्तरादिशाखा	१४०			आविषय	आयस्र		
चतुर्थवर्षिका	३४०	उत्तरादिशाखा	१६०			आविषय	आयस्र		
पञ्चमवर्षिका	४१०	उत्तरादिशाखा	१८०			आविषय	आयस्र		

## शुद्धि पत्रकम्

पृष्ठ	विभाग	पक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठ	विभाग	पक्ति	अशुद्धम्	शुद्धम्
५	१	९	विपत्रु०	विपयत्रु०	८७	०	२९	द्वार	द्वार
५	१	३४	दशसंश्रय०	दशसंश्रय०	८९	१	१	अर्द्रा०	अर्द्रा० प्रवालान्श्रवा
७	१	७	अन्त०	आन्त०					वराणा वा आत्मेन
१५	०	३५	शब्दो-प०	शब्दोप०					परस्मै चोपकाराय
१८	१	३							द्विमाध्यदण्ड ,
१८	१	१८	०त्	०त्तुण	९६	१	२८	६दिवान०	०दिवान०
२०	०	७	०नक्षत्र०	०नक्षत्रगान०	११५	१	७	आवाय	आवाय
२१	१	१६	०ष्टपदिप्यु०	०ष्टपुगदिष्ट०	११९	०	०	०पुष्पमा०	०पुष्पमा०
२१	१	३३	०सा	०सा वा	१२१	०	१३	समा०	समा०
२४	१	९	क्षिपते	क्षिपन्त	१२८	१	१२	निशुन्या०	सुप्रव्याख्यान निशु
२५	०	१७	०त्	०द् अजीवयाद् पित्री					रस्या० रुवि -
०७	१	९	आचमम्	फ नी - रागद्वैपवक-					ध्रुवानम्
				त्ववर्णितस्य सामा	१३६	१	२६	०रेव	०रेव
				विश्रुतं चम भावो	१३९	१	०	०इति	०इति आदान
				वा आर्जव मरर	१३९	१	९	०नति	०नति आदान
				द्वयथ तस्य स्था	१४८	१	२१	०देवाना०	०देवता०
				नानि-भेदा आन	१४८	१	८	०मरा	०मरा
				वस्थानानि	१६३	१	१	०तीर्थ०	०तीर्थ०
३६	२	२५	प्रसा	प्रसा	१७१	२	४	उक्त्	उररु०
३९	१	१७	धर०	धर०	१७२	२	७	उत्ति०	उत्ति०
४१	१	१९	अनिश्रवण	अनिश्रवण	१८९	१	१५	पनाश	पनाश
४३	०	५	०न०	०नु०	२०४	२	२२	०शास्त्र	०शास्त्र
५३	१	३३	०भागी	०भागी	२०९	१	२६	०विपय०	०विपयि०
५६	१-	३५, १	अध्वं गच्छत इति	अध्वं गच्छत इति अध	२११	१	२७	नादवा०	नादवा०
५८	१	६	अप०	आप०	२७	१	४	अश्रय	अश्रय
६१	१	१९	द्वये	द्वये	२७७	१	११	०वचयि	०वचयि
६७	१	१०	आमि	आमि	२८८	२	३७	रुद्र०	रुद्र०
६७	०	५	०धाम	०धाम	२९०	१	२३	आशाश०	आशाश०
६७	०	१३	०ति-प्रि०	०तिप्रि०	२९१	०	२८	०घरा	०घरा
७२	१	२७	०षट्पदा	०षट्पदा	३३३	०	१०	अभट्टिया	अभट्टिया
७८	१	९	०गर्ध	०गर्ध प्रजु-वार	३३३	०	२७	इति-प्रि-रु०	इति-प्रि-रु०



### चित्रहारवन्ध :

[ छन्द - शार्दूलविकीर्तित ]

शश्वच्छान्तिप्रयान महामतिमत कल्पद्रुपान कर्मठान,  
भक्त्यापत्तिभरापहान जलजयज्जन्तुभ्य आनन्ददान ।

दान्तान नीमिवसा विभावितविधीन व्याख्यानमज्यामनान्,  
प्रीदान् सत्यमग्नान सदा नमिधिया ऽऽनन्दाभिर्मरीश्वरान् ॥ १२८ ॥

# समर्पण



आगमोद्धार आचार्य

श्री आनन्दसागरसूरीश्वरजी महाराजना

चरणमलमा समर्पण



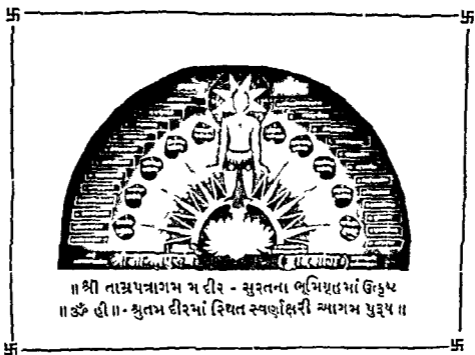
जेओए अमारा

शहेर सूर्यपुर अने संस्थाना

सर्वोदय माटे अहोनीश अमोघउपदेशोद्वारा  
कृपा वरसाची उत्कर्ष सधाव्यो छे. अमारी संस्थाना  
बीजा सेंकडानु प्रथम पुष्प प्रतिक पण तेओने ज  
समर्पण करवामां अमो अमारी कर्तव्यता  
अनुभवीशुं. आ ग्रन्थ तेओश्रीना आगमोद्धारना  
दोहन रूपे जीवनकार्य  
गणाशे

— प्रकाशको





मवलनाकार



आगमाहारकं श्वा आतन्वसागरमरीश्वरजो

॥ गीतार्थसूत्रे नमः ॥

## ॐ श्रीआगमोद्धारक-स्तवः ॐ

[ अनुष्टुप्छन्दः ]

श्रीमत्पार्थ १ सदापार्थ, न तथा प्वात्वा च सद्गुणम् ।  
प्रकुर्वे भक्तिप्रदोऽद्मनागमोद्धारकस्तवम् ॥ १ ॥

[ उपजातिछन्दः ]

सद्भिः प्रशस्येन सुधर्मसाजा, जैनागमज्योतिसमर्थते स्मत् ।  
कृतं २ सदारान्ध्रुतेन येन, जीयात्स 'मानन्दसूरीश्वरेन्दु' ॥ २ ॥  
[ वसन्ततिलकाछन्दः ]

शैलाणराजमनसि श्रुतधर्मतुष्या,  
३ हिंसानिषेधविधिना कृतधर्मपुष्टिम् ।

गीतार्थहेमनिकरं श्रुतस्मारमुष्टि-

'मानन्दसागरगुहं' श्रुत मुक्तरुष्टिम् ॥ ३ ॥

[ मन्दाकास्ताछन्दः ]

स्वस्तिङ्काराद्विबुधमहिताध्यात्मतत्त्वात्मकृते,  
६ धर्मार्थश्रीन्द्रियसुराधरे 'भारते' भारतेऽस्मिन् ।  
७ जैनेन्द्रान्ताऽप्रहतविधया राजमानो वदान्य,  
श्रीधीप्राज्य प्रथितमहिमा 'गूर्जरा'ल्पदेश ॥ ४ ॥

तन्यापाऽचेऽधरितधनदश्रेष्ठिधमिच्छकीर्णं,  
शोभाभासे सुगुणबहुले मण्डले खेटकारये ।  
८ धर्मज्ञप्तौ सुविशदमतेर्लब्धतन्व्यप्रतिष्ठं,  
सर्वोत्कृष्टं 'कपडवणजं' राजते पूर्गरिष्टम् ॥ ५ ॥

यशोत्तुङ्गं नवजिनगृहं 'पाश्वनाथादि'मुष्यं,  
यद्वास्त्वयाः बहुभवभयाः टीक्षिताः नैकभज्याः  
पट्टावस्था ९ 'अभयमुनिप'-स्वर्गभूमिः सुगीता,  
'वाणिज्या'र्यं 'कपड'सहितं तन्नु वण्यत केन ? ॥ ६ ॥

१ मथमादलोपिसमातोऽनर्होय । २ सन्-मन्थन् आराद् ध्रुवं येनेति निम्नः । ३ अस्मिन्पट्टाशेषकोऽयं शब्दः ।  
४ सारसव्यापारः सोऽयं शब्दः । ५ जोषवानी शब्दोऽयम् । ६ फलेत्वायं श्री. इन्द्रियाणि सुवमरुध यस्य (देवस्य) इति  
विशोऽयं शब्दः । ७ जैने द्राजाया अग्रहततत्त्वप्रकारेण्यर्थः । ८ धर्मवशोपे । ९ नवगीतीतिः शारदाश्रमभयदेवमूर्तीश्रमस्यैवार्थः ।

तस्योत्तंसे कलिमलहरे वर्य'दालालपाटे,'  
 'मीडाभ्रातु' भयभयमथोपाश्रयस्योपरुण्डम् ।  
 एपातं रम्यं जन्तिततिहरं 'वासुपूज्य'स्य चेतयं,  
 तत्सान्निध्ये विद्वितकुशल 'भाइचन्द्रो'हवात्सीत् ॥ ७ ॥  
 तस्यासीद्रे सुकृतकचिरा सुहृ'मन्त्रा'र्यपत्नी,  
 शीलोदात्ता सुगुणसदना धर्मतत्त्वे प्रवीणा ।  
 धर्मावाधं समनुभवतो १ पुण्यसातं तयोर्धं,  
 'ताराचन्द्रा'नुज'मगनलाला'ल्यपुत्रो बभूव ॥ ८ ॥  
 २ य पूर्वाराधितसुचरणशान्तवैराग्यसारात्,  
 ३ सारूप्याप्तेर्वर'धनगिरेः' कालवैषम्यवारी ।  
 शाखाभ्यासाद् तनुभवतिस्त्वाधुभासस्पृहाङ्गु-  
 'धंजस्वामे'जनक इव यो जानरामाह्वमान ॥ ९ ॥  
 यद्द भोगान् किल 'धनगिरि'मैन्धमानो ६ विद्यातारु,  
 ७ वाग्दानार्थं सुबहु यतत शुद्धबुद्धिः समाहृत ।  
 दीक्षां लास्ये सपदि सुततं कार्यमालोच्य धार्य-  
 मैतच्छ्रुत्वा चक्रिनमनसः श्रेष्ठिनो मौनमासुः ॥ १० ॥  
 तद्दगाढ शमितमनसा 'मग्नलाले'न कन्या-  
 ८ दाताहृदेष्वप्रभवतलया श्रेष्ठिनोऽकारि मोघा ।  
 किन्तुमथादेस्तमधिकमुदः मानस तोषयन् धं,  
 औपाथंस्नाति'गति'यमुना'स्यां १० कणेत्य कन्याम् ॥ ११ ॥  
 मोहाहते जगति सुतरामुन्मनीभूय सम्पुत्र-  
 सप्तारीयां कृतिशुश्रूतां व्यस्य विध्यास्य सवां १ ।  
 कालच्छिद्राधिगतिमुदित मविज्ञानोऽप्रदीप्त-  
 सार्थं दीक्षां सुमुक्तिमिधे भावशुद्धिप्रकारां ॥ १२ ॥

किन्त्यज्ञानाहितमतिभराः 'मग्नलाल'स्य स्वीयाः,

दीक्षाच्यावां प्रचुरविधयाऽकार्पुर्जस्विचेष्टाम् ।

शञ्ज्ञाचानैरचलप्रतिमं नैकविघ्नैश्च मत्या,

राजद्वारेऽसदभियुजनात् कार्यसिद्धिं प्रचक्रुः ॥ १३ ॥

एवं दैवाद् त्वयमभवके चारके ३ यद्धरूपात्,

भोगान् भव्यान् प्रचलविधिना भुञ्जमानादकामम् ।

लेभे पत्युः सुभग'यमुना'देस्तथा पुत्ररत्नं,

शुक्तिमुक्तां लभति हि यथा स्यातिजाद् वारिवपात् ॥ १४ ॥

१ ३ १ १

ऊर्वाग्रिहाग्रहशशधराव्दे सदापाठमासे,

४ दशाष्टिपाहे ५ विदितमहस. धुर्यस्वप्नात्सुतस्य ।

६ सञ्चन्द्रार्कशश्रुगुसहिते कर्मलग्ने सुखये,

जातास्वाधु मुदितपितरो 'हेमचन्द्रे'ति सधाम् ॥ १५ ॥

यो व वास्ये धृतिमतिथुत ७ मार्गदीपश्य भङ्गे

नाभिव्येजे पुलिससधिषे लज्जतां सत्यनिष्ठ ।

धर्माभ्यासं व्यवहृतिक्लां द्राग् समभ्यस्य चित्रं,

वाचां पत्युः सुमतिलघुता स्त्रीययुद्धया हि व्येजे ॥ १६ ॥

जनाचारे स्वपितुरनिशं प्रेरणाहृन्धनिष्ठ-

स्तत्त्वज्ञानाद् विमलमनसा भोगवैगुण्यमानी ।

आत्मोन्नत्यै प्रगुणमतिक मोहभूपं जिर्गापु

सञ्चारित्रग्रहणपरतां व्येज उद्वाहकाले ॥ १७ ॥

६ पृथ्व्यर्वाणा जन्मवृण्डलिनेयम् ।

१ व्यवहारे ह्यन्यदभावात् 'धमात्र-तोफान'शब्देन न्यज्यत । २ लम्बविधान-

(कायदो)स्यासदालम्बनेनासदारोपहेतुकाधिरण (दासो-केस)प्रयोगेनेत्यर्थ । ३

यद्दसदशदिति भाव । ४ अमावास्यायामित्यर्थ । ५ श्रवणस्वप्नादिति भाव ।

७ 'शुनित्तिव लिटीकानस' इत्यनेनोऽयमशब्द ।

	५	च	३
६	शु	४ बु	२
४		सु	
	७ गु.		१
८ म	१० श		११
	९		

किन्तु प्रेम्णा परवंशघियां १ कन्धुनां विघ्नरूपा  
 २ सन्निकन्धा चरणमलनाच्छन्दतस्मिन्धमातुः ।  
 मन्वानो वै परिणयविधिं ३ चारकापत्तिरूपां,  
 'माणिका'दशां कुलजसुकनीं ४ पर्यगैर्पीडितेताः ॥ १८ ॥

मोहान्ध्यादये जगति विषमं ५ अस्तरूपोऽपि दुखा-  
 म्ब्युत्तापाद्यैः ६ प्रकृतिमजहन् 'हेमचन्द्र'शुद्धः ।  
 ज्येष्ठभ्रातुः सुमुनिभयनाच्चरेणाद् भूरि ७ वधतुः  
 छित्वा मोहं समयमिपतः प्राग्ज'हेमचन्द्रः' ॥ १९ ॥

८ किन्तुमुखाच्छयशुरजननिस्वीयकैश्यान्ध्यवृत्तै-  
 न्यायान्तरे १० परिणयविधेः व्यजतो ११ राघितं वै ।  
 न्यायाध्यक्षं चकितमममं धैर्यसारैस्सदुक्तं ;  
 शृत्याऽप्याप्तद् दिग्गुणचरणान्कर्मणा च्यावितोऽसौ ॥ २० ॥

१२ तन्धाद्रादिप्रकृतिजहनात्कर्मणोऽपूर्वशक्ते-  
 मोहात्क्रान्तोऽपि १४ जनरुसुचोद्यात् स्त्रियो भूगणार्धम् ।  
 १५ आहम्मये पुरि शुभविषैर्जगुषो जम्बुरासान्,  
 दीक्षोत्कोऽगाजजनकमहगो 'निम्बपुषो' 'सुराष्ट्रे' ॥ २१ ॥

'अद्वैत'श्रीं न कुमलतिमिगेऽजासकान दिव्यधाम्न,  
 निश्रयेतिथृतिनिधिधिधीं माघशुभ्रेपुष्ये ।  
 प्रमज्या'नन्दयुतजलधि'हेमचन्द्रो' यभूच,  
 तुष्टो वपना निजसुतहितश्रेष्ठोनिममेधात् ॥ २२ ॥

१ किन्तुनादयदाप्रदादियः । २ सन्निकन्धा चरणमलनाच्छन्दतस्मिन्धमातुः, अत्र 'द्वि' इतरा परस्मिन्तु हेतुः । ३ चारकापत्तिरूपा-  
 मित्यर्थः । ४ विमन्त्रक इत्यर्थः । ५ प्राग्मशशाऽर्थाः आराः । ६ प्रकृतिमजहन् विपश्यन्निष्कानाच्छयान्ध्यावृत्तादि-  
 भित्तिवैः । ७ शिशुरित्यर्थः । ८ प्रारंभेण मोहादीनां इत्यर्थः । ९ हेमचन्द्राचार्यो हि लोकभाषायां 'पवित्र' इति शब्देन  
 व्यतरेत । १० समविधान (बायदो) इत्यर्थः । ११ लोके हि 'परिणय कर्म' इति शब्दोऽस्ति । १२ अन्ध्यादयथाके भाषायां -  
 हेमचन्द्रो हि वपना निस्वीयकैश्यान्ध्यवृत्तैः किन्तुमुखाच्छयशुरजननिस्वीयकैश्यान्ध्यवृत्तैः (हेतुः स चारकापत्तिरूपीयं सात्त्विकभावात्तद्विद्यु-  
 र्भाविनः इति । १३ (शुभे'राश्यां साकाशं भावो) अदिनेषाः शुभाकार्थेण प्रकृते । १४ भाषायां चक्रे (सुत-परिभ्रम-  
 निष्ठायां) साकाशं विघ्नः इदं च 'वर्ण' इत्यर्थः शिष्यम् । १५ दिग्गुणशुभ्रेपुष्ये । १६ अन्ध्यादयथाके भाषायां -  
 नन्दे इत्यर्थः ।

वर्षान्ते 'चात्तर'जननां बोधयित्वा<sup>१</sup>र्षतरः,

'छाणीग्रामे'<sup>१</sup>ऽवसद्विमितं वृष्टिकालं सुधीर ।  
मूर्त्तिन्हावाजिनमतरिपून् दुण्डकात् जोषमाऽऽस्य,

'कल्लोलाख्ये'पुरि विहरता येन दीप्तं सुचारं ॥ २२ ॥

शास्त्र-पालयाचकितसुबुध<sup>२</sup>'मृतम्भने' यो<sup>३</sup> हाकार्यी-

च्चानुमांसं<sup>३</sup> वसुमितमथो<sup>३</sup> ऋतधर्मप्रचारं ।

प्रजोत्कार्याजिनमतहितात् पार्थ्व्यचन्द्रा-यतीश्वरान्,

कृत्वा वादे प्रतिहतधियो भासिता जैनदृष्टि ॥ २० ॥

वर्षान्ते<sup>४</sup> पडरियुतभविक<sup>५</sup> सङ्गमादाय भयं,

यात्रां कृत्वा विनलगिरिसत्तीर्थराजस्य सम्यक् ।

भन्योद्बोध सुविधिविचरन वर्ष साणं<sup>६</sup>'पुर्या',

चानुमांस नयममवसच्छास्त्रनत्वप्रकाशी ॥ २१ ॥

चानुमांसत्रय<sup>७</sup>महमदावाद्<sup>८</sup>माथित्य लब्धा.

शान्दे न्याये रचिरपटुता येन विहरसुमान्या ।

कृत्वा रम्यां सुविधिं तभसां नोदिकां तीर्थयात्रां,

दुष्कालात्तो सहकृतिनिधि कारिता 'पटुणे' ये ॥ २२ ॥

नागाक्षा<sup>९</sup>इन्दुमितशरदो माघराकाहिरम्ये.

प्रायच्छड्ढर्मजजरणल्लोडाय दीक्षां सुदिक्षाम् ।

साद्यं शिष्यं<sup>१०</sup> विजयसहितं सागरान्त विधाय,

वर्षां<sup>१०</sup> ब्रह्मपुनिधिकुभवा<sup>१०</sup> 'भारपुर्या'भरात्सीन् ॥ २३ ॥

१ साममम् । २ मूर्त्तिपराशरिण । ३ ऊष्टमम् । ४ एष दि शब्द भाषाया 'छणीग्रामो सुव'  
इत्युच्यते । ५ व्याकरणे इत्यर्थे । ६ वासनासिद्धये । ७ 'सहायकृती पड' इति भावः । ८ शूर्पे (देवीयाण्डिहपुराण्य  
मन्त्रे इति भावः । ९ (पेट्टरादायन्ते) प म च स भिने रण्डा इदामात्र यमदीराणां निवास भव्यदेवयः ।  
१० भासगरे इत्यर्थः ।

शास्त्रोपग्रं हितमुपदिशन भूरिभव्यप्रवीर्यं,

वर्षाकालं मनुमितमथो 'राजपुर्यामुवास ।

सत्रा श्री'नेमिसुनिपति'नोदूह्य मिद्धान्तयोगान्,

'पन्थासारयं' पद्मलभत ज्येष्ठशुक्ले दशम्याम् ॥ ३४ ॥

वर्षा नीत्वा 'कण्डवणजे' धर्मकृत्यैस्तुरम्यै-

यात'स्तोरान्द्र'मथ विचरन् देशनादानदक्षः ।

कृत्वेतस्तारणवरगिरेस्पर्शनां धर्मवाचा,

प्रीतैः 'पेथापुर'परिपदो योजकेस्त्वत्कृतोऽभूत् ॥ ३५ ॥

मज्जद्भव्यान् भवजलनिधौ रक्षिता जैनवाग्भि-

र्विषं नीत्वाऽऽगमविधियुते 'भावराजान्यपुर्यां' ।

'सूर्यद्रुक्के' विविधसुमहैस्त्वत्कृतस्सूरतीये-

श्चातुर्मासी 'सुरतनगरे' यापयास रम्याम् ॥ ३६ ॥

चेत्यान सर्वांश्च विधि 'सुरते'श्राद्धसङ्घेन तत्त्वा,

गत्वा 'मुभ्यापुरि' भविजनैः प्रार्थित. 'लालघानो' ।

गौराङ्गाणां 'समितशिखरे' हर्म्यस्त्विमिमिमीपां,

धर्म्यात् सत्ताभियमगणय रश्नवान् यः क्षणेन ॥ ३७ ॥

'दि'ल्ल. श्रातु'निधिमपि वरं स्थापयिष्वोपदेशा-

दारेभे सङ्घिव्यवचितप्रन्थरन्तप्रकाशम् ।

सङ्गं नीत्वा'ऽभयविषु'मुग्रं 'चान्तरीश्राहतीर्थं,'

यात्रां चक्रे रस्वरिनिर्गतैः श्राद्धवर्धैस्समेतः ॥ ३८ ॥

षाष्टर्थं नग्नैस्सुवहृ विहितं तत्र पूजाप्रसङ्गे,

मिथ्याभ्याख्यानमपि च ततो न्यायगोहे प्रयुक्तम् ।

जित्वाऽकार्णुं जगिति सुरवस्तत्यतत्त्वप्रयोगा-

दाङ्गलन्यायाधिपतिहृदये जैनधर्मप्रकाशम् ॥ ३९ ॥

१ चतुर्दशममित्यर्थः । २ राजनगरे-अहमदाबादपुरे । ३ तारान्तीर्थस्येत्यर्थः । ४ पेथापुरीयप्रान्तिरपरिपदि शुद्धवरस्य  
जानमत्कृतैस्सूक्तोऽयथादः । ५ चातुर्मासद्वयमित्यर्थः । ६ भावनगरे-राजनगरे । ७ अभयवन्दनवेरिणसमघपतिपदेन  
जिनोक्तिमिदमित्यर्थः । ८ 'ठगी पालता सच' इतिभार. । ९ दिगम्बरमित्यर्थः ।

<sup>५</sup> ६ ९ १ १  
 वाणार्थेन्दुमितसमसि प्रावृषं 'येवलायां,'  
 स्थित्वोद्गाह्य प्रथममुपधानत्रतं श्रावकाणाम् ।  
 'सूर्यद्रङ्गे' जलदसमयो यापितौ धर्मकृत्यै-  
 दीक्षित्वैतर्हितनगणपं 'भाणिङ्कं' चान्यभय्यान ॥ ४० ॥

धर्मक्रान्तिच्छलमुपदधन लालनार्यो द्वि विहन-  
 मन्य'स्सिद्धाचल'भुवि तदाऽपूजयत्ये शिवायैः ।  
 पावण्डं तत् भृशमपगतं कर्तुंकारैर्गणीन्द्रे-  
 मन्दश्रीः कान्तिविजयपुरैस्सहचरः कृतस्स- ॥ ४१ ॥

<sup>५</sup> ६  
 स्थित्वा वर्षे विपयजिनमो 'स्तम्भतीर्थे' च'छाण्वां,'  
 ज्येष्ठभ्रात्रे 'विजयमणये' वर्षपट्यासभूषाम् ।  
 दस्या तीर्थणि सविधि नमन 'पत्तनं चाणहिलं,'  
 मन्यश्रोतृन् जिनमतसुधां पाययन्नाप रम्यम् ॥ ४२ ॥

<sup>५</sup>  
 तत्रायाप्य श्रुतवरमुदाप्यायिनीं भव्यवर्षां,  
<sup>६</sup> ९ १० ११  
 सहस्थिन्यां तपसि धयले दिक्तिथौ महितीर्थे ।  
<sup>१२</sup>  
 अज्ञानान्धं तमममथनायागमोद्धारकश्रीं.  
 श्रोत्र्यां संस्थाप्य समितिमथो हर्षयामास भग्यान ॥ ४३ ॥

जाग्रन्तं य'स्त्वगुरु'जयवीरा'भिधैरागमाना-  
 मुद्धारार्थे चरमसमये' पालितुं तद् यथेष्टम् ।  
 यदायासेन च गणिवरस्तापुमहोपकृत्यै,  
 प्रारभे मुद्रणमथ महत् स्वार्थयेणागमानाम् ॥ ४४ ॥

१ वर्षे । २ वर्तमानकालीनगण्डात्रिपतिमिति भावः । ३ शिवतीर्थेवहीमभूमिति । ४ प्रवृत्तकृपाति-  
 विजयमहाराजमुन्यै हरिभिरित्यप्याहार्यम् । ५ चतुर्मासद्वयम् । ६ प्रशोचिचति-चतुर्भिरातितमन्त्रि-  
 वरमुद-संस्थाप्यायिनी-वोषिद्धा । ७ चतुर्विधमपस्योपस्थित्मूचकमिद पदम् । ८ वैशागमासे । ९ दशम्याम् ।  
 ११ भोयर्षातीर्थे । १२ भागमोदयवर्षितिसूचकोऽयं वाद ।



वर्षायां 'पाटण'मुपगतैर्वाचनाऽद्या ह्यकारि,  
 निर्ग्रन्थानां चरमतिमताभागमाभ्यासवृद्धयै ।  
 तस्यां श्री'सूयगडदशवैकालपट्टत्रिशिकादी'न,  
 व्याख्यायाऽपुः 'कपडवणजे' वाचनायै गणीशाः ॥ ४५ ॥

तत्र व्याख्याय पट्ट<sup>१</sup> 'ललितावदयकादी'न सुयत्नं  
 जग्मुर्वैपर्यथै<sup>२</sup> 'महमदपुर्यां' स्वधर्माभिवृद्धयै ।  
 तत्र<sup>३</sup>'स्थानाङ्ग'मथ सविशेषाकरं वाचयित्वा,  
 षण्णमस्यात् 'सुरतनगरे' भासयन् जैनधर्मम् ॥ ४६ ॥

तत्राकार्पुर्णुगशरमिते वाचने<sup>४</sup> 'चानुयोग-  
 श्रीनन्द्याचारमुखमहदावश्यकाद्या'गमानाम् ।  
 षण्णकारात्<sup>५</sup> सुयतिसमजे कालदोपात्प्रहीणं,  
 सच्छास्त्राणां विततपठनं संततं वृद्धिमाप ॥ ४७ ॥

'आनन्दाध्वेः' प्रवरगणिनस्तत्त्वनिष्ठागरिष्टी,  
 भक्तयुत्साहौ धृतजिनमतस्फीतिकायपु हृष्टौ ।  
 षण्णोऽयाभिग्रहतनुमते राधशुक्ले<sup>६</sup> दशम्या-  
 माच र्यत्वं 'कमलविजया'स्सूरयः 'सूरते'ऽपुः ॥ ४८ ॥

स्वर्णे माणिक्यमिव खचितं योग्यसाम् च सूरे-  
 र्दीक्ष्य प्रीतस्तुमहमकरोत्<sup>७</sup>'सूर्यपुर्यां'स्तुसह ।  
 न्यायागारेः<sup>८</sup>ललनविषयानिष्टवाद् विजित्य,  
 धर्मभ्राजी मुनिपतिरथो 'मोहमय्यां' समेतः ॥ ४९ ॥

१ ललिताविस्तरा-आवदयकसूत्र-अनुयोगद्वारसूत्र-योगदृष्टिसमुच्चय-उत्तराध्ययनसूत्र-मुन्यानिर्णयः । २ अमदाबादनगरे ।  
 ३ विशेषावदयकमाप्युसद्धितमित्यर्थः । ४ चतुर्थी-पचमो चेति भावः । ५ ललितविस्तरा-योगदृष्टि-अनुयोग-३-आव-  
 दयक-१-उत्तराध्ययन-१-विशेषावदयक-०-स्थानांग-३-सूत्राणामित्यर्थः । ६ साधुसह इति भावः । ७ वैशाखशुक्ले । ८ लालन-  
 शिवजीप्रकरणे न्यायागारेऽपि विजित्येत्यर्थः ।

(२८) १  
 लब्धयद्भ्रातृपि वृषमहिम्नोऽर्जको नैककार्यै-  
 दुर्मिक्षार्त्तीयनिधिकरणेऽप्रेरयद् दानशौण्डान् ।  
 'कीकाभ्रातु'र्भवनमुपितस्सूरिराह् ' भायखलु,  
 स्वागःश्चान्त्ये विहितचिनयः प्राथितो लालनेन ॥ ५० ॥

(५) (७) (९) (१)  
 चातुर्मासे शरमुनिनवेन्दो श्रुतप्रोकरीत्या,  
 देवस्वोत्सर्पणधिवदने वाद्गल्भान् विजेतुः ।  
 सूरेस्सङ्गापितनिखिलसद्ग्रन्थरत्नानि सङ्गो  
 'जैतानन्दश्रुतवरगृहे'ऽस्थापय'सूरतीयः' ॥ ५१ ॥

'सिद्धाद्रेर्जीवणनवलचन्द्रो' हि यत्प्रेरणातो,  
 याश्रासङ्गं विविधसुमहैः पादचारं निनाय ।  
 कृत्वा यात्रां सह सुभविकैस्सूरिवर्यश्चकार,  
 'पालीताणे' गुहमुखमितां वाचनां साधुसङ्गे ॥ ५२ ॥

'पिण्ड-प्रज्ञापन-भगवतीनो' धनियुक्तिका'ञ्च,  
 व्याख्यायो ह्य शुभमुपधानव्रतं भाविकानाम् ।  
 विज्ञप्ति'मालववसिमतां' मानयित्वा च सूरि-  
 दिशष्यै साकं किल 'रतिललामाख्यपुर्या' समेत ॥ ५३ ॥

धर्मोन्नत्या 'श्रमसहितां' केशीमल्लनाम्नी,  
 संस्थां' तत्राखिलजिनमतोद्भासिकां स्थापयित्वा ।  
 'व्याख्याप्रश्रुतिसमवयस्त्वादिप्रज्ञापना'नां,  
 चक्रे व्याख्यां कुलगिरिमितां वाचनां क्लृप्तकामः ॥ ५४ ॥

'शैलाणारयं' पुरप्रथ यतीन्द्रो हि सद्गाग्रहेण,  
 चातुर्मासार्थमुपगमितो धर्ममुद्धार प्रयोद्धुम् ।  
 मत्वा धन्यं नृपतिरपि गृच्छाहवाचो निशम्या-  
 मार्युद्द्यो दयितहृदयरसीरराज्ये चकार ॥ ५५ ॥

१ धर्मप्रभावनाया इत्यर्थः । २ उत्सर्पण(बोली)प्रयाशास्त्रीयताया देवश्रवणस्य च चर्चावृत्तकमेतदम् । ३ श्रीजैतानन्द-  
 पुत्रकालये इत्यर्थः । ४ पशुमित्र्यर्थः । ५ रत्नोन्नतनगरे इत्यर्थः । ६ गिरिशब्दो हि विद्यापत्यर्थयोऽतोऽत्र निर्दिष्टतया  
 जिनमतस्वोद्भासकारिणीमित्यर्थो नैवः । ७ छन्दोभागमिषा विहितः श्रीधर्मरायाहृत्प्राये एतत्प्रशादप्रयोगः मर्पणीयः  
 धीर्भनेः विद्वद्भिः । ८ साम्प्रम् ।

पूर्णं<sup>१</sup> शैलाननूपविपये' ह्यष्टमीरुद्रदर्श-  
 ऽऽख्याताह.पर्युपणदिवसे मारीचारं न्यपैधीन् ।  
 प्राच्यं वृत्तं ह्यकररचिबोधु. स्मृति 'हीरसूरे'-  
 रानीयायाद्विविधनिगमान् पावयन् 'रत्नपुर्याम' ॥ ५६ ॥

प्रेमज्ञप्त्या धृतवरतपस्सम्यगुद्वाह्य चान्यैः-  
 पुण्यै. कृत्यैर्जलदसभये भ्राजयित्वा सुधर्मम् ।  
<sup>३</sup> 'माण्डूतीर्थे'प्रचलितविधौ<sup>४</sup> याधकं 'धारभूषं,'  
 हस्तदेशोन्निरसविधयेऽवोधयत्तत्र गत्वा ॥ ५७ ॥

'माण्डू-भोपावर'लसितसञ्चेत्ययोस्स्वोपदेशा-  
 ऽजीर्णोद्धारं प्रवरभविक्कैः कारयित्वा यतीन्द्र. ।  
 बोधं'पञ्चेडपुरपतये' 'सेमलीठकुराय,'  
 प्रादात्ताभ्यां निजभुवि ततो मारयो वारिता वै ॥ ५८ ॥

वर्षाकाले जिनमतविभां वर्द्धयन् 'रत्नपुर्यां,'  
 शास्त्रेषुचि यतिपविजयं त्रिस्तुतीयं व्यजेयीत् ।  
 सहस्राभ्यर्धनमथनिशम्योपधानं सुवाह्य,  
 'सम्मेताद्रिप्रजितुमभियङ्कं' प्रतस्थे मुनीन्द्रः ॥ ५९ ॥

मध्ये मार्गं निजप्रतिभया धर्मभासं वितन्वन्,  
 लोकं नानाविधमुपदिशान् 'कालिकाता'मयासीत् ।  
 (४) (३)  
 चातुर्मासे युगगुणमिते तत्र चेत्यादिधर्म्य-

स्थानस्थित्यै यदुत्तरनिधिः कारितो देशनातः ॥ ६० ॥

१ अष्टम्यमेकादशममावास्याया पर्युपणसु चैत्यर्थः । २ रत्नलामनगरे । ३ भाद्रवगर्हापरकमिद पदम् । ४ धारसंस्थाना-  
 पीशमिति भावः । ५ उत्कण्ठेण निरसनार्थमित्यर्थः । ६ हिंसः । ७ श्रीयनीन्द्रविजयाहमितिभावः ।

(०) (२)

तीर्थेशानां खयमलमितानां सुनिर्वाणभूमि-

'स्सम्मेताद्रेः' प्रथितयशसः पुण्ययात्रामकार्पात् ।

राहो 'दुद्धेडियविजभासिंह'स्य भक्त्या विहृत्य,

वर्षाहितोऽस्सुमुनिपतयोऽजीमगजे' न्यवात्सुः ॥ ६१ ॥

वावृलोकं विषयजसुखास्वादलीनें विबोधय,

सवेगापूरितसुवचनैर्धर्ममागं न्ययुञ्क्त ।

दीक्षाग्रहप्रव्रतविधियुतानुत्सवान् कारयित्वा,

पाव पावं विविधनिगमान् 'सादडी'ग्राममागुः ॥ ६२ ॥

पावं पावं जितमतसुधीर्भ्रियलोकं यतीन्द्रः,

प्रागवाटानां मरुजसहजं वैमनस्यं चिरत्नम् ।

कृत्या दूरे श्रुततपविधिं सोत्सवं कारयित्वा,

धोद्धु धम शिथिलकृतिकान् 'मेदपाटं' विजहे ॥ ६३ ॥

(१) (३)

नीत्वा चर्पा'मुद्गयनगरे' सम्मितां धातुत्थै-

जंग्मुस्सङ्गेन सह गुरवः 'किशरीया'ख्यतीर्थम् ।

तत्रोद्दण्ड्यं क्षपणककृतं स्वीयवुद्ध्या व्यपास्या-

ध्यारोप्योच्चैस्सितपटयशोऽवर्धयन् सद्भुजं वै ॥ ६४ ॥

नगनाटीयैः प्रतिहतमयो धर्मतेजो विवद्धयं,

न्यागगगारेऽधिगतविजया आयुर्गूर्ङ्गरत्रान्' ।

चातुमांसं सुमुनिस्सहिता इम्मदायादपुर्पां,

तस्थुर्भध्यान् विविधममलं जैनतरं दिशन्तः ॥ ६५ ॥

'माकुभ्रातु'विनतिवशगा 'आग्निर्नो सेद्धचर्त्री-

मोली' दिव्यां नवपदमहो बोधिकां कारयन्त ।

३ संस्थां संस्थाप्य च नवपदाराधिकां स्वोपदेशा-

४ षंग्मेन्नोमापट्टिचिनयत्तंष्ट्रयुरास्तिव्यतत्यम् ॥ ६६ ॥

१ उदयपुरे । २ दिगवरिहितम् । ३ धीनपदभारावकसकाप्रत्यागनाका । एवक शेष पादः । ४ विद्यानाल(श्रीश्रीवाङ्मानी  
पद) ५ धर्म भाषितक-नास्ति क चर्पां श्लोकरस्यप्रसिद्ध्यान्वयान्तरात् एवशोध्यं पादः ।

तद्व्याख्यानात् धुभितमतिक्रान्तिं शिक्षितानां शास्त्रपाठे

स्सन्तोव्यायं धनप्रितगणोचित्यनरं विशेष्य ।

यानां 'श्रीदेशविरतिसमाज' ततस्थ्यापयित्वा,

'श्रीभोयपय'मतिशुभमहेराद्यतन्मेलनाय ॥ ६७ ॥

वयांयाम निविगुणमितं यायितुं 'जामपुषां'

यान्तो मागः ऽहमदनगरे' 'तीर्थसिद्धाचलस्य' ।

रक्षाहेतोस्तप्यदि निधये प्रेरयित्वा सुभयान,

लक्षाधिकस्यं द्रविणचयनं कात्यायामसुरासु ॥ ६८ ॥

स्थाने स्थाने जिनमतमहं वर्द्धयन्तो गणोन्द्रा-

स्थित्या ययां 'नवलनगर' चास्याग्निस्त्वरीये ।

सत्रचामाभ्यगृहमथ चास्यापयन् छात्रगेह

दान्ता पूज्ये धृतिमनिबलात् धाल्यीशाचिरुद्धा ॥ ६९ ॥

पश्चादेता स्सुरतनगरे जैनसाहित्यपुदि

सत्तोशार्थं धनिकुंनगिनं मनुपुत्रं व्यरोधन ।

'मुर्शादायादपविजयसिद्ध'स्समेतोऽत्र सुरे-

भन्ति यनीकरणपटुको भावतो दर्शनाय ॥ ७० ॥

आमीन्दी 'देशविरतिसमाजस्य' पर्येतसुरस्या,

वृत्ता तस्या भविरुद्धितदा देशना मारगमां ।

रस्ताम्भोधे 'पठनसदनस्थायि' कोश विपद्ध्यं,

हृद्या 'तत्रप्रसारणकरी' योद्यमालाव्यमस्या ॥ ७१ ॥

१ अश्वत्थिशास्त्रमावेतात् नवपुराणमित्यय । २ धनस्य एव दानं वा तत्र तत्र 'वचनमित्यय', 'पदि' एतिसुं मनस्य नान प्रब न इती भौतिकवादसमर्थककल पीतायक-रौं-१ हादसूत्र-वाग्नि-गारीनां विताहितकालमनसा सूत्रक पदमभि । ३ आदेशविरतिसमाजस्य प्रथमाधिकशनायत्यय । ४ जननगरे । ५ पत्निस्य वि श्यकाना वादिक दत्ता तीर्थनामिदमित्यय स्वतुत्याय आनिदाबलस्यागपपगप्रतृत्तरेत लकोक प्रदशितारित । ६ जाननगरमित्यय । ७ सत्र=भोवनशाया, वानास्त्वपुत्र=भाषितदासु । ८ व दिग लदिसाभिद्धमिति भाव । ९ निष्कलप्रतृ तनत हृता इत्यय । १० जैनसाहि 'द्वाराक- पडमाय । ११ नगीनमाइ नतुमाइ प्रेदेनमित्यय । १२ भविरुद्धनमित्यय । १३ आ लनामर'नैतवाग्नि'गस्याधिकपड मिति भाव ।

प्रवाभ्यानेकभविकजनान् पावयन्त स्सुराप्सून्<sup>१</sup>,

प्रावृट्कालं शुभकृतिभरैस्स्तम्भतीर्थे<sup>२</sup> व्यतीयुः ।

संस्थाप्याहम्मदपुर<sup>३</sup>मितास्तत्रसंस्थाय वर्षां,

श्रुत्वोद्यच्छन्न<sup>४</sup> 'घटपुरनुपाज्ञां सुदीक्षाविरुद्धाय ॥ ७२ ॥

सूरेऽशाखाभ्यसनमुदिता जङ्गमज्ञानशाले-

त्येवं चाशंसदतिविदुषीं<sup>५</sup> जार्भनी काउज्ञाख्या<sup>६</sup> ।

(२) (४) २  
नेत्राभोगिधिप्रमितजलमुक्काललाभस्पृहावन-

मुन्वापुषां<sup>७</sup> गतभविजनप्रार्थनातो विजह्रे ॥ ७३ ॥

शास्त्रव्याख्याप्रथितयशसो 'लालघाने' हि सूरे

दीक्षापुष्टि प्रयचनविधेः<sup>८</sup> क्षुब्धयूनां प्रचारैः ।

व्यामूढाया ऋजुजनततेर्मोहहृत्पै<sup>९</sup> समित्या,

पत्रं संस्थाप्रथनजनितं चालितं 'सिद्धचक्रम्' ॥ ७४ ॥

'माणेकाम्भोनिधि'<sup>१०</sup>सदुपदेशात्प्रकृतोपधाने,

मालारोपोत्सवमुपगता<sup>११</sup> 'घटकाहे पुरे' वै ।

दशाख्यानैस्सैस्तमयसहितैस्संयमायोग्यसूचि-

नाट्यं रुद्धा युवजनमतं भासितं शीसनं हि ॥ ७५ ॥

पश्चाद्याता<sup>१२</sup>'स्सुरतनगरं' शिष्यवृन्दैस्समेता-

स्संवत्सयांस्तिथिगतविसंवाद्मुन्मुद्य शास्त्रैः ।

भान्युत्सूत्राध्वगविपमता याज्ञसा व्यञ्जिता सा,

किन्नाऽद्यापि प्रकटविदिता वर्त्तते पर्वतिथ्याः ? ॥ ७६ ॥

१ बहोदराज्यदीक्षाप्रतिबन्धकज्ञायदाभेपरकमेतत्पदम् । २ बागुर्मासवाची अयं शब्दः । ३ श्रीसिद्धचक्रादित्यप्रवारक-  
समितेः स्थापने सिद्धचक्राख्यप्राक्षिकप्रारंभवेत्यर्थः । ४ घाटकोपरे इत्यर्थः । ५ दीक्षाया अयोग्यताप्रदर्शकं युववयंप्रेरितं  
नाटकमित्यर्थः ।

नानाप्रश्नोत्थितमतिगतध्रान्तिशान्द्यं सुप॑र्णत्,

सह्यासात् सितपटमतालम्बिनां सद्यतीनाम् ।

• (९)(९)(९) २  
'आकाशाङ्गाङ्गशशिसद्विते यत्सरे राजपुर्यां',

जाता यस्यां यतिपतिवरास्तस्यगामन्त्रिता धै ॥ ७७ ॥

शङ्कापङ्कं भविकमनसो क्षालितुं दत्तचित्ताः,

गत्वा तत्र सकमतिभराच्छास्त्रपाटैश्च सर्वान् ।

सन्तोष्येता भविकविनयाग्रीरद्वैस्सारुमेवा-

सेक्तुं सांसारिकजनगणं सूरयो 'मिहसाणाम्' ॥ ७८ ॥

३ मध्ये वर्षे सुबहु विद्वितद्शासनोवायिकार्यै-

४ रत्नःक्षेत्रे सुभविकनृणां धर्मपीयुषसेकः ।

यूरोपीयः श्रुतिपटपुटं'प्रांउन.' सूरिशंसां,

पीत्याऽत्रतो हामृतवचनेर्थातद्वृक्' शशंस ॥ ७९ ॥

काले काले पुनरपि पुनः सूर्य' पालितेभ्यः,

शिक्षा-दीक्षा-वितरणमपि प्रायशो योग्यमेव ।

तस्मात् पादार्पणकरुणया पावयन्त्वेषमोऽस्मा-

नेयंसह्याङ्गरभरभृतः संययुः' पालिताणाम् ॥ ८० ॥

चानुमांसे गतवति यथा भ्राजते शारदी श्री,

पद्मन्याजैस्सरसि सरसा सन्ततं तद्वदेव ।

सञ्ज्ञानधीरपि गुरुवराणां च सन्तन्प्रमाना,

नानारूपैर्नैववचमदैर्धर्मकृत्यैश्च रेजे ॥ ८१ ॥

१ संमेलनमित्यर्थः । २ राजनगरे-अहमदाबादे । ३ चानुमांसमध्ये इत्यर्थः । ४ शास्त्रप्रभावककारिणिति भावः ।  
५ अन्तःकरणरूपक्षेत्रे इति भावः । ६ आता नदि ।

१  
 'श्रीमाणिन्य' 'कमुदविजय' श्रेत्युपाध्यायवर्षो,  
 पन्थासो द्वौ बहुगुणयुतौ 'भक्ति'ते-पद्माभिधौ च ।  
 अत्युत्साहैस्सह शुभरुपासिन्धुवद्भ्यो भवद्भ्यो  
 लब्धाऽऽचायांहयमुपदर्षीं धर्मभ्राजो विरेजु ॥ ८२ ॥

'श्रानन्दस्याम्बुनिधि'रिति यद् धत्ते नाम सत्यं,  
 प्रत्यक्षन्तत् भुवि विद्धती किं न जेती प्रजाऽभूत् ।  
 तस्मात् सूरीन इगिति 'नगरे जामपूर्वे'ऽपि सह,  
 प्रार्थं प्रार्थं कथमपि चतुर्मासवासाय नित्ये ॥ ८३ ॥

अन्न कैश्चित् श्रुतकथितसिद्धान्तवाचा विन्दं,  
 प्रोक्त वृद्धिक्षयविषयक पर्वतिथ्याः मत यत् ।  
 उत्र तत्पण्डनमथ कृतं शास्त्रदृष्टथापि लोकं  
 बोधि साऽरं नवमतवतो लज्जितास्यान् प्रचरु ॥ ८४ ॥

तत्रैवाग्र जलदसमये स्थापितो 'देववाग-  
 लक्ष्म्या'नाम्नाऽऽश्रमवर उपादिश्य लोक सुखेन ।  
 पश्चाद् भक्तो 'नगरधनपः पोपट्टाह'स्तुभक्त्या,  
 सौराष्ट्रीयाखिलजिनपसत्तीर्थसंस्पर्शनाय ॥ ८५ ॥

सहं नीत्वाचरणचलनं पङ्क्तिरिसपालनोत्क,  
 १  
 सानन्दोऽमात्, सकलमपि तद्वर्णन चागरीत्या ।  
 २  
 'तीर्थाः सौराष्ट्रविययमवा सप्तयात्रा च' नाम्ना-  
 ३  
 स्यान्त ग्रन्थे लसति तदिमाऽऽयोक्तुमापेतयन्तु ॥ ८६ ॥  
 (मदानितम्)

१ श्रीमणिकामाचार्याय २ कमुदविजयोपाध्याय-श्रीमणिकविजय-संवाग-३ पण्डितवर्य मेभ्य आचार्यैः प्रशंसितुं प्रार्थयामि ४ जमानरः । ५ अन्नरुमानाम्बुनीश्वरल ६ ८ ३ य । ६ 'सौराष्ट्रना तीर्थो भवत्पद्मा' ६ २ ८ १ म ये ७ १ १ १ १ ।



(c) (४)

पर्वं यस्वधिमितमथ ये वृष्टियासं जनानां,  
पुण्याहथानामतिविनयतः<sup>१</sup>सिद्धक्षेत्रे हि कृत्वा ।

‘खात्तारम्मं चरमजिनपस्याह्वया ह्यागमातां,  
रक्षागेहस्य च’ सुभविकैः कारयामासुरत्र ॥ ८७ ॥

अन्यत्तत्र श्रमणनिकरग्रन्थसंप्राप्तिं सङ्गं,  
संस्थाप्यारं शुभं महमदावाहपुर्यां<sup>२</sup> यतीन्द्रा ।

भक्तश्रीमोहन<sup>३</sup> इति महच्छ्रेष्ठिना सद्भवतानां,  
रम्ये ह्युद्यापनविधिमखेऽभ्यर्थ्यमाना- प्रजम्भु ॥ ८८ ॥

सिद्धं शास्त्रैरुपश्रुतिकरं लक्षशो रूप्यरैस्तं,  
सम्पाद्योद्यापनविधिमलं ‘हाम्पडापोल’ मध्ये ।

तत्रावात्सु शरनवनवेकाञ्चितेऽब्देऽब्दकाले,  
चान्यां वीथ्यां सुगुरुचरणा ‘नागजिद् भूधराणाम्’ ॥ ८९ ॥

पश्चादेता क्षरणसमयं यापयित्वाऽऽगमाना-  
मागारस्य प्रचलितविधिं वीक्षितुं ‘पालीताणाम्’ ।

साङ्गोपाङ्गं त्रुटिविरहितं सत्यमारब्धकृत्य,  
त्यक्तवा सर्वस्वमपि सततं साध्यन्त्येषु सन्त ॥ ९० ॥

कृत्वा लोकोत्तरसुचरितं ये तरन्तीह लोकं,  
धन्यास्ते वै सफलजनना भूमरा सन्ति चान्ये ।

सत्यामेतां भण्णितीमथ ते कर्तुकामा यतीन्द्रा-  
स्त्रप्रतिष्ठनं धरसलिलदाऽऽसेककालत्रयीं ते ॥ ९१ ॥

१ श्रीवर्धमानजैनागमभट्टिरस्य खातमुहूर्तमिति भावः । २ धमणस्यपुस्तकालयाध्ययनालयस्थापनामित्यर्थः । ३ श्रेष्ठिवर्य-  
श्रीमोहनलाल छोटालाल इति भावः । ४ त्रुटिकाले । ५ पोलवाची अथ शब्दो हैयः । ६ चातुर्मासमिति भावः ।  
७ शिलोत्कीर्णागमभट्टिरस्येत्यर्थः । ८ चातुर्मासत्रयमित्यर्थः ।

दीर्घायासैर्गणधरवरप्रोक्तज्ञेनागमानां,

पाठं शुद्धं ह्यदुदरगं शिल्पविद्याप्रवीणैः ।

कारं कारं किमु न कलितं सूरिभिः कर्म चित्रं,

यस्माज्जातो ह्यपलनिकरोऽप्यागमज्ञः (भ्राट्) परे के ? ॥ ९२ ॥

रम्योपाध्यायकपदमद्भुः 'श्रीक्षमासागरेभ्यः,

श्रीमच्चन्द्रेभ्य उचितपदं चारु पन्न्यासकाहम् ।

वर्षे चाग्रे गणधरगृहं सिद्धचक्राहपूर्व<sup>१</sup>,

संस्थाप्यैव जिनमतविभासकं सत्समाजम् ॥ ९३ ॥

(९)(९)(९) १)

अङ्काङ्काङ्कजमितशरदि ह्यागमानां गृहस्य,

सत्सं पूर्त्तावभिनवप्रतिष्ठाविधिं माघमासे ।

पञ्चम्यामञ्जनशुभशालाकोत्सवेनापि सत्रां,

सन्मूर्त्तानां धृतविधियुतं कारयामासुरत्र ॥ ९४ ॥

सम्पाद्यैवं 'कपडवणजध्रेष्ठिचीमन्त्राल-

डाह्याभाईत्यभिधपरमश्रावकरार्थेनातः ।

निध्यायां सूरिवरसुगुतोद्याय संयोजिताया

पताश्रैव्या नवपदसमाराधनायाः सुसिद्धयै<sup>२</sup> ॥ ९५ ॥

चातुर्मासं भविकदितरुषापि तथैव कृत्वा,

श्रीसहस्रयानुनयसहितप्रार्थना'न्मोहमप्याः' ।

धर्मोद्गातं विद्वत्प्रमलां कुपेतां भक्तगृन्द-

स्थाने स्थाने मुदितमनसा स्यागतं सुपुं चक्रे ॥ ९६ ॥

शामं शामं चिरसमयजं सद्विदुः पिपासां,  
 ध्यात्वानैः स्वैरपि च जनता अभ्यपिञ्चन् प्रकामम ।  
 सम्प्राप्ता. 'श्रीसुरतनगरं' यत्र चाभूत्पूर्वं,  
 भयं भव्यं कृतमत्तितमां स्वागतं भासमानम् ॥ ९७ ॥

अर्धकोशादपि चलसमारोह आसीद् दधीयान,  
 यस्मिन् केतुप्रवरलसितप्राग्रहस्ताश्च केचित् ।  
 सुप्रेष्ठास्संवरगुणगिता. वेणुवाधीयसङ्घा. (।)  
 वादं वादं शुभततधनानज्जयाद्यान विरेजुः ॥ ९८ ॥

लक्षाधिक्या नगरजनता राजमार्गेऽभिस्फुरि,  
 शीर्षाण्युच्चैर्गुणरतिभरान्नप्रयन्ती बभूव ।  
 मार्गे मार्गे वसन-कुसुम-स्वर्ण रुप्यादिपानै,  
 थालं धाराण्यति चिरचितान्यार्थं सद्भक्तिभावे ॥ ९९ ॥

गिघ्रीमुक्ताप्रभृतिसमुद्घैश्च रत्नैर्गङ्गुली,  
 बह्वज्जातशुचिगुणलसद् रागदाण्डगोद् यतीशे ।  
 स्वर्णैः रौप्यैर्वरसुमभरैस्सत्यमुक्तासुलोजैः  
 प्रोद्यद्भङ्गं विविधसुमहैस्सकृत् 'सुरतीये' ॥ १०० ॥

(७) (५)  
 साम्प्रेलानांभयशरमितानां मुदापादिदीप्ति,  
 सुरैर्नानासुगुणमहिमाव्यायकास्तासुवादाः ।  
 रीत्या चैव प्रचुरनिरावर्णितुञ्जाप्यक्या,  
 ग्रन्थाञ्ज्ञेया प्रविशानक्या 'सागरस्वागता'-रयात् ॥ १०१ ॥

वक्त्राणीयाकुलजसुजने. क्षत्रियैः मीलैर्पथं,  
 एकाहिं विंशतिमियसहराधिकं रार्णयित्वा ।  
 सुरै पादारपणमुदितया कारयित्वा सुभक्त्या,  
 पायं पायं जिनमतसुधां सूर्यिस्त्राज्जहर्षुः ॥ १०२ ॥

१ स्वागतयात्रा (साम्ये) २ झडा-निशानधारिण । ३ उतमाः । ४ धेठकुसुमसमूहैः । ५ सयमुक्ताफलनां वर्णानैरितिभावः ।  
 ६ न्यवदारे हि एतच्छब्दाय. "साश्न बौधे" इतिपदेन कथ्यते । ७ अन्याल्यपरतिरिति ।

सत्रा सहेन च विधियुता <sup>१</sup>र्चत्ययात्रा सुरम्या-  
 ऽकार्यास्ते यद् समविवरणं मुद्रितं <sup>२</sup>पुस्तके वै ।  
 सोत्साहं चिंशतिमणमितान् मोदकान् संवितीर्य,  
 धन्या जाता 'सुरत'-जनता देशनादर्शनाभ्याम् ॥ १०३ ॥

चानुमांसं तदनु विहितं <sup>३</sup>'मोहमग्ना' प्रशस्तं,  
 यस्मिन् धर्मोन्नतिततिष्टती. कारयित्वा सुवह्न्यः ।  
 भूयोऽप्येतास्सुरतनगरं श्रावकाभ्यर्थनात्  
 स्तत्राभूषणं गचिरचरनाः वृष्टिवासाश्च पञ्च ॥ १०४ ॥

इया-काशाभ्रद्विमितशरदो <sup>४</sup>माघवे मासि शुद्धे,  
 छेकादद्या शुभशनिदिने <sup>५</sup>श्रावकेभ्यः सुशस्ता ।  
 संस्थाऽस्थायि प्रयतमनसा ताम्रपत्रागमानां,  
 भव्यादर्शस्थितिकरमहन्मन्दिरस्थापनाये ॥ १०५ ॥

यै चाग्नेऽहमद्वरपू श्रेष्ठिनो माहुनाम्न  
 हस्ताभ्यामागमवरगृहस्यादिमं सातकर्म ।  
 तस्कार्यारं तदनु च शिलारोपण वाडोलाले-  
 त्पार्यश्रेष्ठिप्रवरकरत कारित मोदपूर्वम् ॥ १०६ ॥

यै रद्रा क्ष ख ख-मियुने ह्याभिवने शुक्लपक्षे,  
 आशातिथ्या सुजिनप्रतिमा<sup>११</sup> पालिताणात् इद्धा ।  
 सद्द्विशत्युत्तरशतमिता आगमागारहेतो-  
 रानाभ्याकारि च सुविधिना तत्र भव्यप्रवेश ॥ १०७ ॥

'तुर्योर्द्वै-इयध नयन-मिते द्वायने माघशुक्ले,  
 शुक्ले श्रेष्ठे क्षणनिधियुते सन्मुहूर्ते समासाम् ।  
 सन्मूर्त्तानामपरिगणितोत्साहयुक्ते र्जनीय  
 रम्ये तस्मिन् श्रुतवरगृहे कारिता सुप्रतिष्ठा ॥ १०८ ॥

१ वैश्वरिणीतीर्थम् । २ 'शुक्लपुरतु स्वागत' इत्याह इति शेष । ३ मुगादीनगरे । ४ धर्मस्योन्नतिविस्तार  
 कारिकायांणीत्यर्थम् । ५ वैशाखे इत्यर्थम् । ६ श्रावणशरेत्यर्थम् । ७ २००३ वर्षे इत्यर्थम् । ८ अमदावादनगरात्तिव  
 इत्यर्थम् । ९ मोक्षमार्ग्यभिधया प्रसिद्धस्य मार्गकपाल-मनमुद्यलालायश्रेष्ठिन इत्यर्थम् । १० मुगापुरीयत्वात्तत्रागारि  
 र्धीवादीलाल चतुर्भुजादश्रेष्ठिकरत इत्यर्थम् । ११ दशमीदिने । १२ १२० स्यात्का । १३ शणश-इत्यर्थम् । कात्यायिनस्य  
 हेतु, कालस्य च भूतवतमानमाविश्वेण प्रविष्यत्य विदिततान् तृतीयायामिथर्यां बोध्यम् ।

संवत्सर्पास्तिथिवरसमाराधनायाः प्रसङ्गे-

ऽस्मिन्नेवान्दे समुद्रितविसंवादन्यांसकार्यैः।

नैकेष्वपिः प्रचलितविधेयै श्रुतप्रोक्ततां वै;

संसाध्यान्यानपि जिनपथः पोषणोत्कान् प्रचक्रुः ॥ १०९ ॥

काले गच्छत्यविरतमितो ह्यग्निमे पौषमासे,

कृष्णे पक्षे शरतिथिगतेऽचिन्तितो वायुरोगः।

वृद्धिं यातो बटुतरचिकित्साविधिज्ञैः सुयत्नात्,

सञ्जाः जातास्समुपचरिताः किन्तु शान्तो न जातः ॥ ११० ॥

सैवाऽपूर्वा स्थितिरथ तदाऽऽसीन्नचाल्याप्यशान्ति-

श्रेतोऽप्राक्षीज्जिनपतिपदेऽभूदपूर्वाऽऽगुरागः।

स्थित्यां तस्यामपि नयनग्रन्थोकनिर्माणकार्यं,

ज्ञानध्यानादिकमपि मनाद् नावरुद्धं कदाचित् ॥ १११ ॥

६ ० ० २ २  
पङ्-खा-काश द्वि-मितपरवाणौ पुनर्वायुवेगो

चारंयारं प्रवलरभसा पीडयामास देहम्।

मध्ये यस्य स्थितिपरवशाच्छ्रोत्रमस्कारमन्त्र-

स्यायातोऽभूदहह! सततं श्रावणस्य प्रसङ्गः ॥ ११२ ॥

आदेः स्वभ्यस्तमथ च तथा देहास्थन्यादि सम्यग्

दाह्यै येनेतरजनगणासहारोगेऽपि शान्त्या।

ये स्तम्प्राद्याश्रयविरहिताश्चाह पद्मासनेन,

म्बेष्टस्मृत्यामथ निजमनो योजयामासुरारात् ॥ ११३ ॥

हृद्गुऽऽश्रयं भृशमुपगता ऊन्टरा अप्ययोचन्,

धन्या पते यदिह विपमस्येऽपि रोगे सुशान्ता।

अन्यः कश्चिद् यदि गवहतोऽस्यां स्थितो स्यात्तदा तु,

सान्तर्भतः स खलु सहस्राण्यां दशामेव यायात् ॥ ११४ ॥

एवं रुग्णां स्थितिमथ निजां वीक्ष्य विश्वाय चास्या-

१  
ऽनित्यत्वं वै सपदि धपुपो माधवे शुक्लपट्टयाम ।  
सर्वांनाहय च निजशरीरं ततो व्युत्सृजन्तो-  
ऽस्मार्पुर्मक्त्या जिनपतिवरान् ह्यर्धपद्मासनस्था ॥ ११५ ॥

एकादश्यां निशि कविदिनेऽप्येकवारं त्वतीव-  
वेगादाक्रान्तिरभवद्दाहा ! येन सर्वेऽप्यचेष्टा ।  
सन्त्यक्ताशाः जिनवरवच. ध्रावयामासुराशु,  
२  
सत्पुण्यानामतियलतया किन्त्वितं दुर्दिनं तत् ॥ ११६ ॥

३  
वैशाखस्यासितदलगते पञ्चमेऽह्न्यस्तकाले,  
सूर्यस्याभूत् त्रिदशनिलये श्रीगुरुणां प्रयाणम् ।  
हन्ताकस्माद् सुरतजनताऽचिन्त्यदम्भोलिपाताद्,  
भीता व्यग्रा प्रकृतिविधुरा कृत्यशून्या बभूव ॥ ११७ ॥

सङ्घेनोच्चैस्तरशिश्वरिता चारु दोला ह्यकारि,  
प्रासादस्यानुकरणकरी सत्कलाभिश्च युक्ता ।  
४  
विगुत्पन्नैरधिगतसमाचारवन्तश्च भक्ता

५  
प्रामाद्ग्रामाद्ग्रमुपगता अन्त्ययानार्थमाशु ॥ ११८ ॥

दोलोत्थानाय च कृतसहस्रादिमुद्रापणा वै,  
भक्ताः स्वीयं मनुजजननं सार्धकीचकुरेव ।  
अन्ये प्रादुर्द्विणनिचयं बद्धिसंस्कारकार्ये,  
भवथा यात्रा नितिलनगरे भ्रामिता भक्तिभारै ॥ ११९ ॥

पश्चाद्गोपीपुरपरिसरे स्नागमौकःसमीप,  
संस्थित्यां चापरिमितजनानां गुरुणां तुभव्यम् ।  
नानाकाष्ठैर्मलयगिरिजैर्दाहसंस्कारकृत्यं,  
नाभूत् पूर्वं न च परमितो भावि तादृग् दभूव ॥ १२० ॥

१ वैशाख मासे । २ किमु इत = गतम् इति पदच्छेदोऽप्य बोध्य । ३ गुजरदेशीयपट्टवेद क्षेत्र, पूर्णमा-तमाग (शास्त्रीय) पट्टया तु ज्येष्ठरथेति बोध्यम् । ४ तात्-देविप्रामाद्यापुनिकमौद्रगवेचावदपत्रैरित्यर्थ । ५ आरम=शीघ्रम् । ६ गुदरागममदिरा<sup>४</sup> ।

शिष्याः पादोत्तरशतमिताः <sup>१२५</sup> अष्टत्रिंशत् <sup>३८</sup> सुमंस्थाः,  
 ज्ञानागारा <sup>१२</sup> मुनिमितमताः सन्ति यत्कीर्त्तिदीपाः।  
 यैश्चाकारि श्रुतहितकरीर्वाचनाः सप्त यासु,  
 ग्रन्थाः <sup>१</sup> लक्षद्वयधिकगणितश्लोकमात्रा ह्यवानि ॥ १२१ ॥

<sup>२</sup> सप्तत्रिंशत्सुरपनयनाङ्गाधिकाना नवीन-  
 श्लोकानां ते भुवि रचयितारः कथं स्युर्न नम्या ।  
 जनाशीत्युत्तरगतशतग्रन्थसम्पादकास्ते,  
 ग्रन्थाः <sup>५०</sup> पञ्चाशदधिकशुभग्रन्थसङ्ग्राहकाश्च ॥ १२२ ॥

व्याप्यातानामपि कतिपये ग्रन्थयथाः प्रसिद्धाः,  
 येषां नन्ति प्रथितविभवा <sup>३</sup> भूमिका प्राथमिक्यः।  
 द्व्यनाशीतिप्रमितरुचिरग्रन्थरत्नेषु <sup>७८</sup> येषां,  
 मार्गं लोकान् जनिद्वितकरं बोधयन्त्यो लसन्ति ॥ १२३ ॥

<sup>१२</sup> आदित्याङ्गा- सुनतमुपधानवताः कारिता ये,  
 शोधं शोधं सकलसुजिनोकागमानां सुपाठान्।  
 सहस्रकानामुपकृतिद्वितं मन्त्रु मुद्रापयित्वा,  
 नैकान् योग्यानभ्यसकृतिनोऽधीतयेऽप्युज्जंश्च ॥ १२४ ॥

एवं नानाव्रतजपतपोध्यानदीक्षाप्रतिष्ठा-  
 यात्रास्नात्रादिकवहुविधोद्यापनैश्चोपधानैः।  
 भव्यान् जीवान् जिनपगदिते रम्यमार्गं नियुज्य,  
 त्यरम्या देहं सुरपतिगृहं संययुः सूरिवयां ॥ १२५ ॥

येषां कीर्ति विमलविमलामश्मताभ्रागमाना-  
 भागारस्था दिशि दिशि दिशन्त्य पताका नितान्तम्  
 यावच्चन्द्रारणकिरणधन्तो द्विवि द्योतमानौ,  
 गायं गायं तदवधि मुदा रञ्जयिष्यन्ति लोकरुम् ॥ १२६ ॥

॥ अन्त्यमंगलम् ॥

(शिखरिणी)

कृतं यैलोकानामुपकृतिहितं वाचनिकया,  
 श्रुतानामभ्यासस्तुटिविरहितः सम्प्रचलितः ।  
 सुपूज्योस्तान् श्रीसागर<sup>१</sup> इति शुभाख्याप्रथितकान्,  
 नमामः सूरिन्द्रान् श्रुतधरसमुद्धारनिरतान् ॥ १२७ ॥

चित्र-द्वार-बन्ध

(शाङ्खलविक्रीडितम्)

शश्वच्छान्तिमयान् महामतिमतः कल्पङ्कारान् कर्मठान्,  
 भग्यापत्तिभरापहान् जलजवज्जन्तुभ्य आनन्ददान् ।  
 दान्तान् नोमितमा विभाषितविधीन् व्याख्यानसन्ध्यासनान्  
 प्रौढान् सत्यसपान् सदा नतधियाऽऽनन्दाब्धिसूरी<sup>२</sup>धरान् ॥ १२८ ॥

(स्वधराछन्द)

धन्या धान्या वदान्या गुणिगणगणनास्वप्रगण्या महान्तो,  
 गिद्धगोष्ठीगरिष्ठा<sup>३</sup> जिनपतिचरणेन्दीवरेन्दिन्द्राश्च ।  
 वादीन्द्रा देशकेन्द्रा अविकलनिगमज्ञाततत्त्वा महिष्ठा,  
 'आचार्यान्न्दव्या'<sup>४</sup> प्रथितगुणगणा 'सागरान्ता'<sup>५</sup> जयन्ति ॥ १२९ ॥

॥ आगमपर्यालोचनप्राण आगमोपजीवी च ध्रमण  
 ध्रामण्यस्मरमगन्तोति लभते च निर्द्वैतम् ॥

॥ जीयासुरागमोद्धारकाः सद्गुरुवः ।

१ यावच्चन्द्रार्कमित्यर्थः । २ कल्पयन्तौ द्वि कल्पयानापरपर्यायभद्राचक्रस्ततः भद्रद्वारमित्यर्थोऽत्र ह्यव । ३ क्विया-  
 पुत्रादान् । ४ व्याख्यानग्रन्थप्रतिष्ठाणित्यर्थः । ५ तीर्थचरणात्मकप्रभारा इत्यर्थः । ६ शास्त्रापरपर्यायाऽयम् । ७ पूज्या ।

\* नय द्वि श्लोक आधुनिकभूषणपरिभाषया नेकलेखे-गायं स्वर्णमयरत्नद्वारद्वेषेण सयाजिताऽद्वि-केन प्रतिद्वि-  
 रण्यस्मिन्नेव श्रेयं मुदिताऽऽख्यन्त्यम् ।



॥ ॐ अर्हम् ॥

णमोऽस्तु णं समणस्स भगवभो महावीरस्स ।

श्रेष्ठ देवचन्द्रलालभाइ-जैन-पुस्तकोद्धार-ग्रन्थाङ्क-१०१

आगमोद्धारक-आचार्यश्रीआनन्दसागरसूरिसङ्कलितः-

## अल्पपरिचितसैद्धांतिकशब्दकोषः

### अकारः

अक-लाञ्छनम् । जीवा० पृष्ठ २७० । अक, उत्पत्ति । ओष० १४३ । रत्नविशेष । ज० प्र० २३ ।  
अकफरेलुग-शाकविशेष । आचा० ३४८ ।  
अकण-अङ्गनं, तत्साय शलाकादिना चिह्नकरणम् । प्रथ० २२ ।  
लाञ्छनम् श्वश्रुगालचरणविधि । आच० ५८८ ।  
अकघाती-अकघातु, धानीदोषे । नि० चू० द्वि० १३आ ।  
(अकपतित)-दासी । उक्त० २६२ ।  
अकमुहसठिया-अङ्गमुलसंस्थिता, पद्माननोपविष्टोत्सगमुप  
वत् अर्धवलयकार । सूर्य० ७१ ।  
अकलिथी-लिपिविशेष । प्रज्ञा० ५६ ।  
अकचडेसप-ईशानकल्पपूर्वदिगावतमक । भग० २०३ ।  
अकविधा-(अकविद्या) गणितम् । ज० प्र० १३६ ।  
अकहरो-अकधर चन्द्रमा । जीवा० २७० ।  
अकाचह-अडावती, वक्षस्कारपर्वत । ज० प्र० ३५७ ।  
अकाचह-अडावती रम्यविशेषे राक्षसानी नाम । ज० प्र०  
३१२ । शीतोदादक्षिणवृत्ते वक्षस्कार । ठाणा० ८० ।  
दक्षिणवती वक्षस्कार । ठाणा० ३२६ ।  
अकाचह-ओ-महाविशेहे विचयराजधानी । ठाणा० ८० ।  
अकाचहिसप-अडावतमक, ईशानश्च पूर्वस्यामवतमक ।  
जीवा० ३९१ ।  
अकितो-अङ्गिन, विहित । आव० ८२२ ।  
(अकिल)-नक्षत्र । औप० ३ ।  
(अकडिओ)-अकटिक, नागदन्तक, । ज० प्र० ५० ।  
जीवा० २०५ ।

अकुर-अरुर, प्रवाल । ज० प्र० ३०१ ।  
अंकुर-अरुर, शाखादिवीजसूचि । भग० ३०६ । ज०  
प्र० १६८ ।  
अकुल-अडोठ । श्वश्रुविशेष । प्रज्ञा० ३१ ।  
अकुस-महाशुके विमानविशेष । सम० ३२ । अकुस,  
येन रजोहरणमङ्गशवरकरद्वयेन, एहीत्वा तद्वत् तत् ।  
हृदिकर्मणि पददोष । आव० ५४३ ।  
अकुस-अरुरा सुगि । प्रथ० २३ ।  
अकुसपलय-महाशुके विमानविशेष । सम० ३२ ।  
अकुसय-अरुराकम्, तरुपल्लवप्रहणार्थमङ्गशाहृति । भग०  
११३ ।  
अकुसये-अरुरा, देवाचनार्थपृथक्पञ्चकार्णार्थम् । औप०  
९५ ।  
अकुसो-अरुरा । अरुराकारो मुक्तादामावम्बनाभयभूत  
। जीवा० २१० ।  
अक्रे-अरुराण्ड खरकाण्डे चतुर्दश काण्डम् । जीवा० ८९ ।  
अक, । प्रज्ञा० २७ । उत्तमम् । ज० प्र० ३८ । मणिभेद  
उक्त० ६८९ । श्वेतरत्नविशेष । प्रज्ञा० ३६१ । रत्नविशेष  
। जीवा० २३ ।  
अक्रेलुण-अक्रेण, तर्जनकविशेष । ज० प्र० २३५ ।  
अको-अङ्ग, पृथिवीभेद । आचा० २९ । रत्नविशेष । भग०  
४७९ । एकोरमेयुर्न । नि० चू० प्र० २५५ । अङ्गिगम्य,  
शशकानिविशेष । प्रथ० ३४ । रत्नविशेष । जीवा० १८०,  
१९१ । पद्माननोपविष्टोत्सगमुपवत् । सूर्य० ७१ ।  
ज० प्र० ५५४ ।  
अकोल-गुणविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अंकोल-रूपविशेषः । भग० ८०३ ।  
 अंकोल्लोपं-शुल्भविशेषः । भग० ८०३ ।  
 अंगं-अङ्गम्, अङ्गविषयम् । आव० ६६० । कारणमवयवः ।  
 । ठाणा० ३ । कारणम् । प्रश्न० १०३ । शरीरावयवप्रमाण-  
 स्पन्दितादिविकारकलोद्भवकं शास्त्रम् । सम० ४९ ।  
 समं वपुः । जीवा० २७० । कारणम् । जं० प्र० ९९ ।  
 अज्यते व्यक्तीक्रियतेऽस्मिन्नित्यङ्गम् । आचा० ५ । मेदः-  
 कारणं वा । दश० ९० । शिरःप्रभृतिः । दश० २३७ ।  
 आंगं-अक्षिबाहुस्फुरणादिकम् । सूत्र० ३१८ । शिरःस्फुरणादि-  
 । ठाणा० ४२७ ।  
 अंग-अङ्गानि । शिक्षावैनि पदज्ञानि । भग० ११४ ।  
 अंगश्रो-अङ्कः, भद्रप्रकृतिरुः । आव० ७०४ ।  
 अंगचूलिया-अंगचूलिका, अंगानामुपासकदशाप्रभृतीनां  
 पंचानां चूलिका-तिरयावलिक्का । व्य० द्वि० ४५४आ ।  
 अंगणं-मंडवघणं । नि० चू० प्र० १९२अ । अजिरम् ।  
 प्रश्न० १३८ । अङ्ग-य स्थूलडिभूमिस्थानम् । औप० २०० ।  
 अंगशेत्रिका-हस्तमालक आमरणविशेषः । औप० ५५ ।  
 अंगदं-बाहुशीर्षाभरणविशेषः । जीवा० १६२ । केयूरम् ।  
 । जं० प्र० १०६ ।  
 अंगदं-केयूरे । ठाणा० ४२१ । अङ्गनिका । उक्त० ७८ ।  
 अंगनाम-शिरउरःशृष्टबाहूदरपादनामानि । तत्त्वा० ८ ।  
 अंगपट्टहारिणि-अन्तःपुरप्रतिहारिणी । आव० ७०० ।  
 अंगपविष्टे-गणधरकृतं मातृकापदत्रयप्रभवं वा ध्रुवधृतं वा ।  
 । ठाणा० ४९ । अङ्गप्रविष्टम् । ठाणा० २०० ।  
 अंगप्रचिष्टं-गणधरदक्षमाचार्यादि । तत्त्वा० १-२४ ।  
 अंगवाहिरे-अङ्गबाणम्, स्वरिक्तं मातृकापदत्रयव्यतिरिक्त-  
 द्यकारणनिबद्धमध्रुवधृतं वा उत्तरावयवनादि । ठाणा० ५१ ।  
 अंगमंगं-अङ्गमङ्गम्, गात्रम् । औप० ११ ।  
 अंगमंगो-अङ्गमङ्गम्, अङ्गप्रत्यङ्गम् । जीवा० २७७ ।  
 अंगमंदिरंमि-चंपावैलामिधानम् । भग० ६७५ ।  
 अंगमदियाओ-अंगशल्पमर्दनकारिकाः । भग० ५४८ ।  
 अंगयं-अङ्गदं, बाह्याभरणविशेषः । जीवा० २५३ । प्रश्न०  
 ७१ । बाहुशीर्षाभरणविशेषरूपम् । प्रज्ञा० ८८ ।  
 अंगय-अङ्गके, मूर्दादी । जं० प्र० २६५ । अङ्गदम्, बाह्या-  
 भरणविशेषः । भग० १३२ ।  
 अंगरिती-अङ्गरि, आर्जुनोदाहरणे भद्रक-कौशिकार्यज्ये-

ष्टरिष्यः । आव० ७०४ । येनोपशमे सत्यार्थं सामायिकम् ।  
 । आव० ३४७ ।  
 अंगलोअं-अङ्गलोकं, म्लेच्छजातीयजनाध्यस्थानम् । जं०  
 प्र० २२० ।  
 अंगवंसो-अङ्गवंशः, अङ्गाराजसन्तानस्य सम्बन्धिनः कस-  
 सतिराजानः प्रवृत्तिताः । सम० ८५ ।  
 अंगविहारं-अङ्गविकारः, शिरःस्फुरणादिस्तच्छुभाशुभसूचकं  
 शास्त्रमपि । उ० ४१७ ।  
 अंगविज्ञं-अङ्गविद्याम्, शिरःप्रमह्यंगारस्फुरणतः शुभाशुभ-  
 सूचिकां विद्याम् । उक्त० ३९५ ।  
 अंगविज्ञा-अङ्गविद्या, अङ्ग-पादं विद्या-प्राज्ञादपातनात्मिका  
 (सत्कारपुरस्कारपरिग्रहे दृष्टांतपदम्) । उक्त० १०५ ।  
 अंगहारिका-वृष्यकलाद्वितीयमेदः । सम० ८४ ।  
 अंगा-अगा, जनपदविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।  
 अंगारं-अगानि, शिरःप्रभृतीनि । प्रज्ञा० ४६९ । एकादशोपानि  
 प्रज्ञा० ५६ । अवयवाः । ठाणा० १७० । शिरःप्रभृतीनि,  
 । उक्त० ४२८ ।  
 अंगार्णं-देशविशेषः । भग० ६८० ।  
 अंगादाणं-मेदूम् । नि० चू० प्र० ११६अ ।  
 अंगादानं-मेहनम् । नि० चू० द्वि० ३०आ ।  
 अंगारः-(इंगल), विगतज्वालोऽग्निः, भग० १२९ ।  
 विगतधूमज्वालो दहमानेन्यनात्मकः । उक्त० ६९४ ।  
 कृष्णवर्णवस्तु । आचा० २९ ।  
 अंगारओ-अंगारकः, महाप्रहः । जीवा० ३३६, ३३७ ।  
 अंगारकारिका-(इंगलकारिया), अमिश्रकटिका । भग०  
 ६९७ ।  
 अंगारदोषः-(इंगलदोष), आहारामागदादपानस्य  
 चारिणांरगत्वापादनाद् । आचा० ३५१ ।  
 अंगारमर्दकः-(अंगारमर्द) द्रव्यप्रवृत्तः । दश० ११५ ।  
 उक्त० ५९६ । विशेषे १०६४ ।  
 अंगारय-अंगारकः, मंगलः । औप० ५२ ।  
 अंगारयई-अंगारवती, सुवेगोदाहरणे शिष्टमारपुरपति-  
 पुत्रुभारदुहिता धारिका । आव० ७०९ ।  
 अंगारयई प०-अंगारवती प्र० । आव० ६७ ।  
 अंगारशकटिका-(इंगलकारिया) । आचा० ३०९ ।  
 अंगारं-(इंगल), लघुतरामिक्काः । ठाणा० ४२० ।

अंगारियं-अंगारकित, निवर्णामृतम् । आचा० ३४९ ।  
 अंगिरसा-गौतमगोत्रोत्तरमेद । ठाण० ३९० ।  
 अंगुष्ठे-अंगुष्ठम् । आव० ८४५ ।  
 अंगुष्ठपसिणा-विशविशेष । नि० चू० प्र० १७७अ ।  
 अंगुष्ठि-घालम् । नि० चू० प्र० १९१आ ।  
 अंगुष्ठी-अंगुष्ठी, शिरोऽङ्गुष्ठनम् । आव० ९५ ।  
 अंगुलपुहुत्तिया-अंगुलपृथक्त्वम् । जीवा० ३९ ।  
 अंगुलभावो-अंगुलभाव, शुभाशुभपदार्थ । निशे० ८७६ ।  
 अंगुलि-अंगुलि, करदाखा । आचा० ३८ ।  
 अंगुलिको-वर्ममयोपकरणम् । नि० चू० प्र० १३७अ ।  
 नखभंगादिरकलदा । नि० चू० द्वि० १८अ । अंगुलिशोष, धृक्प्रमयो दाहप्रमयो वंशमयो वा येनाङ्गुलिसलमेन तन्नी आहृत्यते स । जीवा० १९५ । अंगुलिकोशक, राक्षसाद-  
 दन्तादिमयः । जं० प्र० ४० ।  
 अंगुलिजं-अंगुलीयकम्, अगुल्याभरणविशेष । औप० ५५ ।  
 अंगुलिज्जग-अंगुलीयकम्, मुद्रिका । जं० प्र० १०६ ।  
 अंगुलिज्जयं-अंगुलीयकम् । आव० १७० ।  
 अंगुलिधनुहो-अंगुलपत्र । आव० ४८४ ।  
 अंगुलिभमुहा-कार्योत्सर्गदोष । आव० ७९८ ।  
 अंगुलिस्तथय-दाहकोशविशेष । नि० चू० द्वि० १८अ ।  
 अंगुलीयकं-अंगुलीयकं, भूषणविधिविशेष । जीवा० २६९ ।  
 अंगुले-प्रमाणमेद । भग० २७५ । अंगुष्ठ-प्रश्नमेद । ठाण० ३०१ । अंगुष्ठप्रश्न, शुभाशुभसूचक प्रश्न । उत० ४४६ ।  
 अंगोवैगाहं-अंगोपांगानि । प्रज्ञा० ४६९ ।  
 अंगोहलि-अंगरक्षणम्, देशस्नानम् । आव० ४१७ ।  
 व्य० द्वि० ४०५अ ।  
 अंचह-अचति, उत्पाटयति । जं० प्र० ४२१ । जीवा० २५५ ।  
 अचिर्भ-अचित, नृत्यविशेष । जं० प्र० ४१२ ।  
 अचिर्अचिर्भ-उत्पत्तियुक्ता पार्श्वतः क्वेति । ठाण० ५२२ ।  
 अचिभो-अभित, प्याप्त । आव० १६७ । अभितनामा पर्वविशतितमो नाट्यविधि । जीवा० २४७ ।  
 अचितरिभितं-अचितरिभितनामा सप्तविशतितमो नाट्य विधि । जीवा० २४७ ।  
 अचितांचि-पमागम । भग० ६८३ ।  
 अचिन्ते-नष्टदत्ते । भग० ६८३ ।

अञ्जियं-दुर्मिथ । नि० चू० प्र० १४८आ । दाप्रमयी । नि० चू० प्र० १८३आ । नाट्यमेद । नि० चू० तृ० १अ ।  
 अचितं, नाट्यम् । जं० प्र० ४१७ । आव० ३९९ ।  
 अंचेह-आजुययति । औप० २५ ।  
 अंचेति-आकर्षित । निशे० ३८३ । आव० ४८ ।  
 अंचणं-पण्डपहिरणं । नि० चू० प्र० १९१आ । अगुन्या लित्तम्य रंगितस्य । औप० १४४ । आरूपी-गमारणम् ।  
 औप० १४४ ।  
 अंचमाणानं-आकर्षिताम् । आव० ४८ ।  
 अंचयिद्येष्टियं-आरूपीविकर्षम् । आव० ८३० ।  
 अंचिऊण-आहृष्य । आव० ४२७ ।  
 अंचित्ता-अपह्रियतां माया । व्य० द्वि० ८७आ ।  
 अंचिय-आहृष्यते, प्रथान्यते । चू० प्र० ८१अ ।  
 अंचियनयना-आहृष्येना । प्रश्न० २१ । (जिम्भिन्दियं-  
 छिय) आच्छितम्-आहृष्यम् (आहृष्यजिदेन्द्रिया) । प्रश्न० ६० ।  
 अंचिया-आवृण । आव० ७७७ ।  
 अंजणं-आगतकपे विमानविशेष । मम० ३५ । मौवीरा-  
 जनादि । चू० द्वि० १२अ । मौवीर्य रसंतर्ण वा । नि० चू० प्र० २९८आ । अञ्जनम्, मौवीरादि । आव० ५३० ।  
 अंजण-अञ्जन, तप्ताय शलाक्या नैत्रयो स्रक्षणम् वा देहस्य धार तैलादिना । मम० १७६ । अञ्जनं, मौवीराप्रनादि ।  
 प्रज्ञा० २७ । मौवीराचनम् । जं० प्र० ६० । अचना, अञ्जनरत्नमयत्वान् । जं० प्र० १६३ ।  
 अजणहं-वर्णविशेष । प्रज्ञा० ३७ ।  
 अजणाप्-अञ्जनक, वनस्पतिविशेष । औप० १० ।  
 अजणकैसिया-अचनकैशिया, वनस्पतिविशेष । जं० प्र० ३३ ।  
 अजणकैसियाकुसुम-अचनकैशिकाकुसुमम्, वनस्पति विशेषपुष्पम् । प्रज्ञा० ३६१ ।  
 अजणक-अञ्जनक, पर्वतविशेष । आव० ८२७ ।  
 अजणरापञ्चय-अञ्जनरपर्वत । आव० ३८९ । मम० ९० ।  
 अजणगा-अचनका, नन्दीधरन्कचालम्प्यवर्तित पर्वता । प्रज्ञा० ९६ । ठाण० ४८० ।  
 अजणगिरि-अचनगिरि । जं० प्र० १९६ ।  
 अजणपञ्चय-अचनपर्वत, नन्दीधरन्कचाले पर्वतविशेष । जीवा० ३७८ ।

अंजणपुल्य-अंजनपुलककाण्डम्, एकादशे, अंजनपुलाकानां विधिषो भूभागः । जीवा० ८९ ।

अंजणपुष्पा-अंजनप्रभा, पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३६० ।

अंजणमयो-अंजनमयः, अंजनरसात्मकः । जीवा० ३५८ ।

अंजणसमुगार्थ-अंजनसमुद्रकम् । जीवा० २३४ ।

(अंजणसिद्ध)-अंजनसिद्धः । दश० १२८ ।

अंजणा-पर्वतविशेषः । ठाणा० ८० । अंजना, पुष्करिणीनाम । जं० प्र० ३३५ । जं० प्र० ३६० ।

अंजणागिरि-अंजनागिरिः, दिग्दक्षिणकूटनाम । जं० प्र० ३६० ।

अंजणिका-अंजनिका, कजलाधारभूता नलिका । सूत्र० ११७ ।

अंजणे-अंजनैर्लोकपालः । ठाणा० १९८ । सीता-दक्षिणवर्ती तृतीयवधस्कारः । ठाणा० ३२६ । अंजनः, वैकुण्ठमिषानवायुकुमारराजस्य लोकपालः, वरुणस्य पुत्रस्थानीयो देवः । भग० ३९८ । राहप्रलापीमते कृष्णपुद्गलविशेषः । सूर्य० २८७ । अंजनकाण्डं दशमं, अंजनानां विधिषो भूभागः । जीवा० ८९ । कर्मजीवमादिन्ये हेतुत्वात् । जं० प्र० १४८ । अंजने वधस्कारः । जं० प्र० ३५२ । सौवीरा-ज्जनं रत्नविशेषो वा । प्रजा० ३६१ । रमाजनादि । दश० १७० ।

अंजणेद-अंजनं, सौवीराज्जनं रत्नविशेषो वा । जं० प्र० ३२१ ।

अंजने, कृष्णरत्नविशेषः । ठाणा० २३२ । अंजनं सौवीराज-नादि । जीवा० २३ । कजलम् । उत० ६५२ । समीरकम् उत० ६८९ । रजोमेदः । आचा० ३४२ ।

अंजणपच्य-अंजनपच्यैतः । सम० ९० ।

अंजलि-अञ्जलिः, हस्त्यासविशेषः । सूर्य० ६ । भग० १४ । अञ्जलि, मुकुलितकमलाकारकद्रव्यकणम् । जं० प्र० १८७ ।

अंजली-अञ्जलिः, हस्त्यस्त्रो । द० चू० १२९ । नि० चू० प्र० ७३ । अञ्जलिः, हयोर्हस्तयोर्न्योऽन्यान्नरितगुणिकयोः सम्युत्पत्तया यदेकप्रमीलनं सा । जीवा० २४३ । संयुतह-स्तसुरारिषोः । जं० प्र० १७ । प्रस्तुतिद्रवम् । नि० चू० डि० १२०आ ।

अंजु-कजुः, भद्रजोः-संघमस्यानुष्ठानात् । आचा० ३०३ । मायाप्रचरहितत्वावचकः । सूत्र०, १७७ ।

अंजुया-शान्तिजिनप्रवर्तिनीनाम । सम० १५२ । अंजुया, शम्भुदेवेन्द्रस्याप्रमहिषी । जीवा० ३६५ ।

अंजुल-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०२ ।

अंजु-प्रणोऽव्यभिचारी । सूत्र० ५१ । अंजु, व्यक्तम्, प्रणुणेन न्यायेन खरसप्रश्चरया वा । सूत्र० २९६ । अंजुः, 'इयंका', 'निर्दोषत्वात्प्रकटः, (कजुवो) वरुकेनान्तपरिवासागद्वदिलः । सूत्र० ३९३ । अंजुः, मार्धवाहसुता । विपा० ३५ । अञ्जुः, धनेदेयमार्धवाहसुता । विपा० २८ । शकस्याप्रमहिषीनाम । जं० प्र० १५९ । भग० ५०५ ।

अंजुष-शशाप्रमहिषीराजधानी । ठाणा० २३१ ।

अंजु-अण्डम्, काष्ठनिधितो जीवविशेषः । आचा० ५५ ।

अंजु-अण्डजः, हंमादिः ममायमित्युद्देशेन वा प्रतिश्लिष्यः, अण्डजै-पट्टसूत्रकम् । ठाणा० ४६५ । हंमादिः मयूरण्डकादिः वा अण्डजः, पशूी कौशिकारकौटाण्डकप्रभवं वलं वा । औप० ३६ ।

अंजु-अण्डकः, जन्तुयोनिविशेषः । प्रश्न० ३३ ।

अंजु-अण्डकम्, आहारः । भग० २९२ । मुखं । च्च० डि० ३३३आ । अण्डजाः, अण्डाज्जाताः । ठाणा० ११४ ।

अंजु-अण्डजः, हंमादिः । भग० ३०३ । अण्डजाः, पक्षि-गृहकोकिलादयः । दश० १४१ ।

अंजु-अण्डकम्, मक्षिकाकीटिकागृहकोकिलिकाराहणी-मुकलाशाण्डम् । दश० २३० । अण्डकम्, मक्षिका-कीटिकागृहकोकिलाराहणीकृत्वास्याण्डकमिति । ठाणा० ४३० ।

अंजु-अण्ड, अण्डुकं वाद्यमयं लोहमयं वा हस्तयोः पादयोर्वा । औप० ८७ ।

अंजु-विपाकधृतास्युत्तरकंधतृतीयाध्ययनम् । ठाणा० ५०७ । ज्ञातायां तृतीयाध्ययनम् । आव० ६५३ । सम० ३६ ।

अण्डम्, पद्यो गृहीतं ज्ञातम् । उत० ६१४ ।

अन्तःकरणम्-भनः । आव० ५८५ ।

अन्तःशल्यः-(अंतोशल्यं), अन्तः-मध्ये मनसौत्स्यः, शल्य-मिव शल्यमपराधपदं यस्य सो अन्तःशल्यो-लज्जामि-मानादिभिरनालोचितातिचारः । सम० ३४ ।

अन्तः-अन्तः शब्दो मध्यवचनः । विरो० १९७ । परिजीर्णम् । चू० डि० १७५आ । वलस्य दशांशम् । चू० डि० २३५अ । अन्त्यम्, अन्ते भवम्, जपन्यधायम् । औप० ४० । अन्त्य-सुरीपत् । प्रश्न० ८ । पुन्नापादितम् । चू० प्र० २२०आ ।

(अंतचरे)-आन्तम्-अन्ते भवं-आन्तम्-मुत्पाद्यदोषं वज्रादि (तचरति) । ठाणा० २०८ ।

अन्तयो-अचलयो । भग० ४७७ । भूभाग । भग० १२२ ।  
अपरानम् । पत्ता० ३९७ । भूमिभाग । भग० ३२३ ।  
ठाणा० १३९ । समीपम् । जं० प्र० ४४५ । पञ्चणसादि ।  
प्रध० १०६ । समीप । ठाणा० ११७ । अधिकरणप्रधान-  
मध्ययम् । उक्त० २६१ । (अन्तरे)-आन्तम्, अन्ते भवे  
आन्तम्, भुक्तावशेषेणसादि ( तथारति ) । ठाणा० २९८ ।  
अन्तर्त-पर्युपितं वदन्नणसादि । औप० १८८ ।

अन्त-अन्त, निधय । भग० २९० । परिच्छेद । ठाणा० १७४ ।  
अन्तयो-अन्तक, विपुल्युष्णया पर्यन्तवती । मूत्र० २५९ ।  
अन्तकम्, पर्यन्तम् । उक्त० ६२८ ।  
अन्तकडे-अन्तकृत् । भग० १११ । अन्तो भवस्य कृतो येन  
स अन्तकृत । ठाणा० ३६ ।

अन्तकर्म-अन्तकर्म, अन्तकर्म वा म लक्षणम् । औप०  
५५ । अन्तकर्मणि, अन्तकर्मयोर्वा न लक्षणानि । जं० प्र०  
२५५ । अन्तकर्म, अन्तकर्मयोर्वा न लक्षणम् । जीवा० २५३ ।  
अन्तकर्म-अन्तकर्मा, प्रान्त । औप० ११ ।  
अन्तकरे-अन्तकर, भवच्छेदकर । भग० २१९ ।  
अन्तकरो-अन्तकर, प्रशान्तभावकरविशेष, कर्मण समारम्भ  
वा अन्तकर । आव० ४९९ ।

अन्तकिरिष्वा-अन्तक्रिया, निर्वाणलक्षणः । आव० १३५ ।  
अन्तकिरिय-अन्त(न्त)क्रिया, अन्त्या च सा पर्यन्त-  
गतनी क्रिया चान्यक्रिया । अन्त्यस्य वा कर्मान्तस्य  
क्रिया अन्तक्रिया । कृत्स्नकर्मैक्यलक्षणं मोक्षप्राप्तितम् ।  
भग० ४९१ ।

अन्तकिरिया-अन्तक्रिया, अन्त-कर्मणाभवमानं तस्य  
क्रिया-करणम्, कर्मान्तकरणं मोक्ष इति । प्रज्ञा० ३९६ ।  
निर्वाणम् । भग० ९१ । प्रज्ञापनाया विज्ञानिने परम् । प्रज्ञा-  
६ । मोक्ष । मम० ११८ । अवस्थाान्तरकरणम् ।  
ठाणा० १८० ।

अन्तकुल्लगि-अन्तकुल्लानि-वर्णकम्पकारीनाम् । ठाणा०  
४२० ।

अन्तकखरिया-लिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।

अन्तगङ्गसा-अन्तवृक्षा, अन्तो-भवान्त कृतो विहितो  
वैस्तेऽन्तकता, तद्वक्तव्यताप्रतिबद्धा दग्ना-दशाप्यन्यरूपा  
मन्थपद्मव इति । अन्त- १ ।

अन्तगङ्गो-अन्तकृत्, ज्ञानावरणीयादिबन्धनकृत् । अन्त-  
१६३ । तैव भवेति । आर० ११७ । अन्तकृत्-  
तीर्थस्त्रादय । मम० १०१ ।

अन्तगताधि- (अंगनावकी)-आमान्तगतः, शरीरान्त-  
गतः, अवशिष्टेयान्तगत ( पुर दृश्याधि ) । प्रज्ञा० ५२० ।

अन्तगो-अन्तक, विनाशकारी, आत्मनि वा गच्छति,  
आन्तर-आत्मगो वा । सूत्र० १७८ । अन्तग, अन्त-  
गच्छति, दुष्परिचयः । मूत्र० १७८ ।

अन्तचारी-अन्तचारी, पार्थचारीति । ठाणा० ३४२ ।  
अन्तरीरग-गर्वेहि अभियवज्ज्ञान अमज्जपगामी भोज्या ।  
दग० चू० १६३ ।

अन्तरीपकम्-प्रायुषेण्यपि गमन्य । रिशे० ३३० ।

अन्तज्ञाणं-अन्तर्य । नि० चू० प्र० ७६ अ ।

अन्तज्ञाणविशे-अप्यान् अन्तरहितं करेण जो विशे गेहति  
सो अन्तज्ञाणविशे भज्जति । नि० चू० द्वि० १०० अ ।

अन्तरं-उचवागो । नि० चू० प्र० १७८ आ । अन्तरं प्राप्ति ।  
विशे० २४७ । मज्जे । नि० चू० मू० १२० अ । ममुद्रमण्यम् ।  
उक्त० ७८० । उत्तरम् । आर० ४४२ । विशेष । उक्त०  
२१७ । अवसर । आवा० १०७ । अवकाश । प्रज्ञा०  
६९ । मय । जीवा० ४६ । शैशान्तरम्-कन्दरान्तरम्,  
वनान्तरम् वा आधयरूपः । प्रज्ञा० ६९ । अन्तरालम् ।  
आव० ३३ । विशेषा रूपनिष्कर्षादिभि । ठाणा०  
२०३ । पूर्वत्यागापरव्यादानकाले-प्रतिमाविशेषः । नि०  
चू० द्वि० १६३ आ । पार्थक्यम् । जं० प्र० ३८७ ।  
व्यपधानम् । जीवा० १०० । अन्तरायम् । औप०  
१७६ । उपवाम । आव० २०३ । राजगमनस्यान्तरम् ।  
विपा० ५३ । अवसर । विपा० ७३ । अगान्त-  
रालम् । सूत्रे० ४९ । अवसर । प्रध० ४३ ।  
पामादीनामर्थेषु । प्रध० ५० । वृष्टिदरयोरन्तरार्धं  
पार्थ इति । जीवा० २०३ । विचान्तं । व्य० प्र० १२८ अ ।

अन्तरजिया-अन्तरविषा, नगरी यत्र शैरादिशकटिप्रत्यक्षा,  
बलशैराज्यभागी । उक्त० १६८ । पुरी यत्र शैरादिकनिबन्धन्य  
रक्षित्यक्षा । आव० ३१८ । नगरी । रिशे० ९८१ ।

अन्तरैत-अन्तरतो नाम अमहा मूषा । व्य० द्वि० १० आ ।

अन्तरैतगो-गिलागो । नि० चू० प्र० १०८ अ ।

अंतर-ब्रह्मपणभेदः । आचा० २७७ । अन्तरक्षन्दी मध्य-  
वाची । प्रज्ञा० ५० । अन्तरे, वृष्टीदरयोन्तराले, पार्श्वे ।  
जं० प्र० ११७ । अंतराणि-पार्श्वदेशः । प्रज्ञा० ८३ ।

अंतरकंदे-अन्तरकन्दः । जलजवनस्पतिविशेषकन्दः । प्रज्ञा०  
३७ ।

अंतरकरणं-औपशमिककालः । प्रज्ञा० ३८७ ।

अंतरगण-अन्तरगतः, संस्पर्शी । सूर्ये० ७९ ।

अंतरगाम्मिन्-अपान्तराल एव यो ग्रामस्तास्मिन् ।  
ओष० ७७ ।

अंतरगिरिपरिरओ-अन्तर्गिरिपरिरयः, गिरेरन्तः परिक्षेपः ।  
जीवा० ३४३ ।

अंतरजातम्-भावभाषाजातः तृतीयो भेदः । अन्तरे  
भाषाद्वयमिधमं । आचा० ३८५ ।

अन्तरेणो-ग्रामदेशेसंतरेषु हन्ती । नि० चू० द्वि० ३८ अ ।

अन्तर्दीप-अन्तरद्वीपः । भग० ४२५ ।

अन्तर्दीपगा-अन्तरद्वीपगा, अन्तरे लवणसमुद्रस्य मध्ये  
द्वीपा अन्तरद्वीपाः, तद्गता अन्तरद्वीपगाः । प्रज्ञा० ५० ।

अन्तर्दीपगो-अन्तरद्वीपः, लवणसमुद्रमध्ये अन्तरेऽन्तरे  
द्वीपः । जीवा० १४४ ।

अन्तर्दीपिगा-आन्तरद्वीपजाः । टाणा ११५ ।

अन्तरद्वान्-अन्तर्दानम्, श्रेयः । आच० ८२७ ।

अन्तरद्वार्य-अन्तरकालेऽर्षसद्विखिले देहे । आचा० २९१ ।

अन्तरद्वीपजाः-अन्तरम्, इह समुद्रमध्ये तस्मिन्  
द्वीपारतेषु । उच्य० ७०० । अन्तरद्वीपजाः, सम० १३५ ।

अन्तरद्वीपा, अन्तरम् । इह समुद्रमध्ये तस्मिन् द्वीपाः ।  
उच्य० ७०० ।

अन्तरपल्ली-अन्तरपल्लिकाष्टयमग्रामयोन्तरालम् । छू० प्र०  
३०५ ।

अन्तरपल्ली-बहिःसखिवेशः । नि० चू० प्र० ३३६ अ । मूल-  
ग्रामादधत्तृतीयमन्यूनान्तर्गतो ग्रामः । हू० तू० १२१ अ ।  
तस्याद्ग्रामात्परतो योऽन्य आसन्नग्रामः । ओष० १०४ ।

अन्तरभासिद्ध-अन्तरभाषित, अन्तरभाषावान्, गुरवचन-  
पान्तराल एव स्वाभिमताभाषकः । उच्य० ५५९ ।

अन्तरभासा-अन्तरभाषा, आचार्यस्य भाषमाणद्वयान्त-  
व्युत्पत्तेः सा । आच० ७९९ ।

अन्तरवीहिअं-अन्तरवीथी, अवान्तरमार्गः । जं० प्र० १८८ ।

अन्तरा-अच्छ्रुतितीप्ता । जीव० १९९ ।

अन्तरायदोसो-अन्तरायिकदोषः, अन्तर्भेदो दोषः ।  
आच० ८३८ ।

अन्तराय-अन्तरायः, शक्त्यभावः । सूत्र० १८४ । अन्तरा-  
यिकः ( मध्यभव ) । आचा० ३४० ।

अन्तराणि-उत्तरार्धकपर्षिमकविशेषरूपाणि निवामभूतानि  
वा गिरिकन्दरविवरारीनि । उच्य० ७०१ ।

अन्तराण्डे-अन्तराण्डाः, अन्तरालकर्मणः । भग० ११६ ।

अन्तरार्य-अन्तरार्यः, अलङ्कृतवाद्याध्यायादिभिः । आच०  
५८० ।

अन्तरालं-अन्तरालं, अन्तरम् । उच्य० ३८१ । आच० ३३ ।

अन्तरावर्ण-अन्तरावर्णः । उच्य० २२२ । आवर्णान्तरम् ।  
उच्य० २०९ । राजमार्गमध्यभागवर्तिहृद्म । विषा० ५८ ।

अन्तरावासं-द्व्येतरवसरः, वर्षाकालश्च । भग० ९६ ।

अन्तरिण-लव्यन्तररूपाः । जं० प्र० ४५ ।

अन्तरिओ-अन्तरितः, । आच० ४२९ ।

अन्तरिका-अन्तरस्य-विच्छेदस्य करणमन्तरिका । जं० प्र०  
१५० ।

अन्तरिखलं-अन्तरिक्षं, आकाशप्रभमहद्गुहमेतद्विभावपल-  
निचेदवशास्त्रम् । सम० ४९ ।

अन्तरिखलो-मेहो । दश० चू० ११४ ।

अन्तरिच्छा-अन्तरेच्छा, अन्तरा-मध्ये इच्छा-अभिमता-  
वस्तुभिलाषः । उच्य० ४७४ ।

अन्तरिजं-अन्तरिजं पाम पाउरणं अथवा जे सिजाण  
हें डुल्लयापाते । नि० चू० द्वि० १६३ अ ।

अन्तरिया-अन्तरिया । सूर्ये० १४१ । लव्यन्तररूपा ।  
जीवा० २०४ । विच्छेदकरणम् । भग० २२० ।

अन्तरीयं-परिधानं । चू० प्र० ५८ अ ।

अन्तरुच्छुअं-इच्छुपर्वमध्यम् । आचा० ३५४ ।

अन्तरे-पथः । ओष० ६६ । मध्ये परपरविभागः । टाणा-  
२९७ । अन्तरे, अन्तराले । उच्य० ३८९ । अन्तरे, अदमरः ।  
भग० ३८१ ।

अन्तरो-अन्तरः, अवसरः । आच० ४२१ ।

अन्तरोद्गमणं-अन्तरोद्गमणम्, जलान्तर्गतमित्येतद्विशेष-  
णाम् । जं० प्र० २७७ ।

अंतमुहूर्त्तम्-सुहृत्स्यन्तरं, सुहृत्स्यपि न्यूनम् । उक्तं ६९७ । भिक्षुमुहूर्त्तम् । जीवा० १३० ।

अंतर्हित-(अंतर्दिशे) अदृश्य । ठाणा० ५१३ ।  
अंतर्लिप्यखं-अन्तरिक्ष, ग्रहमेवादिसिपयम् । आव० ६६० ।  
अंतर्लिप्यख-अन्तरिक्षम्, नभ । दश० २२३ । अमोपादिकम् । सूत्र० ३१८ ।

अंतर्लिप्यखं-अन्तरिक्षम्-गंधर्वनगरादि । ठाणा० ४२७ ।  
अंतर्पाले-अन्तपाल, अन्त-त्वदादिदशसम्बन्धिनं पालयति-रक्षयति उपद्रवादिभ्य इति । ज० प्र० २०३ ।

अंतसो-अन्तस, निरवशेषत । सूत्र० १७१ ।  
अंताः-अवयवा । उक्तं ४५९ । उक्तं ५८५ ।  
अता-अते ठिता, ण अता अणता । नि० चू० प्र० २५५ आ ।

अंताक्षरिका-(अतकग्रिया) क्रीडाविशेष । उक्तं ४७ ।  
अंतिप-अन्तिके, समीपे । भग० ९० । उक्तं २७७ ।  
अतिमघनं-अतिमे-अस्थाने परिमाणं । व्य० प्र० ७६ ।

अंतिमराइयसि-रात्रेरवसाने । ठाणा० ५०२ । भग० ७११ ।  
अतिमसरीर-अन्तिमसरीरम्, नरमसरीरम् । भग० २१९ ।  
अतिर्यं-समीपम् । भग० ६५९ । अत्यन्तमरणं, मरणस्य तृतीयो भेद । उक्तं २३० । अन्तिकं, मामीप्यम् । आव० २६७ ।

अतिर्य-अन्तिकम्, आमसम् । भग० २१७ । अत्यन्तमरणम् । उक्तं २३० ।

अतिर्या-आन्तिकी समीपाभ्युपगता । उपा० १५ ।  
अते-अन्त, पर्यन्त, अतिदूर वा । सूत्र० २०४ । अन्ते, अग्रे । उक्तं ६०१ । परिममासि । वृ० द्वि० १९९ आ ।  
अतेउदे-(आत पुरिती), आतुरस्य नाम रूहीया आत्मनोऽयमप्रार्जयति-आतुरथ प्रगुणो जायते । व्य० द्वि० १३३ आ ।

अतेण-मागण । नि० चू० प्र० ६ आ ।  
अतेणं-आन्तेण । ठाणा० ५०२ ।

अतेवास्ति-भर्तृज्जुवा । नि० चू० प्र० २५० आ ।  
अतेवामी-शिल्पि । ज० प्र० १५ । भग० ११ ।  
अतेहि-अरमतया सर्वेषाम्यान्तवर्तिभिवं चणः । भग० ४८४ । रागद्वेषौ । आचा० १५८ । आचा० १६६ ।

अंतो-अन्तो, विभाग । भग० ३९३ । विभाग । ठाणा० ३८० । अन्त, परिच्छेद । प्रज्ञा० ५३० । मार्ग । आव०

४०२ । अन्त नियेशनस्या आ० ७४५ । अन्तो, रोग, भद्र, विनाश । विभे० १३०७ । अन्न, मध्यभागे । जीवा० २०१ । मार्ग । आव० ६८६ । विभाग । ज० प्र० ४५९ । भिन्नम् । आव० ५८४ । मार्ग । आव० ४८५ । आ० १८९ । मणे । प्रज्ञा० ४७ । इन्द्रियाननुसूल आश्रय । प्रध० १३८ । गण्यकरणम् । आव० ५८३ । चतुर्दशमेदान्तरमन्थ । उक्तं २६१ ।

अंतोजलगयपञ्चय-जलान्तर्गतपर्वत । उक्तं २६४ ।  
अंतोधूम-अन्तर्धूमम् । आन० ६६२ ।  
अंतोनार्य-अन्तोनाद, हृदये मनु समारगन् । आव० ६६१ ।  
अंतोनियंसणी-निर्मप्युपकरणविशेष । ओप० २०९ ।  
अंतोमुहूर्त्त-अन्तर्मुहूर्त्तम्, भिक्षुमुहूर्त्तम् । भग० २९ । उक्तं ६९७ ।

अंतोघणीते-आहरणतद्दोषविशेष । ठाणा० २५३ ।  
अंतोवाहिणी-अन्तर्वाहिनी नदी । ज० प्र० ३७७ । ठाणा ८० ।

अंतोवेद्या-प्रतिश्रेयसादोष । नि० चू० प्र० १८३ आ ।  
अंतोसुनुकावद्वार-गोवरविडेमणाए कमेण नि, तस्य गोपरातिमे अभिगमहविशेषनां जायियव्या । नि० चू० वृ० १२ आ ।  
अंतोसल्लु-अन्त शल्यमरणम् । मरणस्य षष्ठी भेद । उक्तं २३० ।

अंतोसल्लुमरणे-अन्त शल्यमरणम्, अन्त शल्यस्य द्रव्यतोऽनुद्गन्तोमरादे, भावत गातिचारस्य यन्मरणे तत् । भग० १२० । सम० ३३ ।

अंतोहितो-ग्रहादेर्मध्यादृष्टिन्यन्त । ठाणा० ३५३ ।  
अंत्य-आनुपूर्व्यन्यपक्ष्यता । सूत्र० १० । विनेपम् । ठाणा० ३९१ ।

अंतुकम्-हस्तिवन्धनप्रियेय । उक्तं ४११ ।  
अंदिरे-गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३० ।  
अंदोलगा-पक्ष्यन्दोलकाद्य तत्र यन्नागय ० मनुष्या आत्मानमन्दोलयन्ति । ज० प्र० ४४ ।

अंदोलगो-आन्दोलक यन्नागय मनुष्या आत्मानमन्दोलयति स । जीवा० २०० ।  
अंध-अन्ध, अज्ञान । भग० ३९३ ।

अंधकण्टकीयम्-अतर्किनसम्भवो न्यायविशेष । आचा० १८ ।

अंधकारे-अन्धकारम्, तमोरूपम् । भग० २७० ।  
 अंधकारेति-तमस्कायनाम । टाणा० २१७ ।  
 अंधगवण्डिणो-अंधिपा-वृक्षास्तेषां बह्वयस्तदाश्रयकेलेत्यं-  
 द्विपवहयो वायुस्तेजस्कायिकाः । भग० ७४६ ।  
 अंधगवण्डी-अन्धकण्ठिः, द्वारवत्यां राजा यादवविशेषः ।  
 अन्त० २ । दश० ९७ ।  
 अंधतमसं-अन्यतमसम् । आच० ३६६ ।  
 अंधपुत्रं-नगरविशेषः । वृ० वृ० १०८ आ० । नि० चू०  
 द्वि० ४२आ ।  
 अंधप्रदीप्तपालायनम्-(अंधपलितपालणं) । दश० १५८ ।  
 अंधमूर्द्धि-अविमर्शकारिता । आच० ६२ ।  
 अंधयं-अन्धकम्, नयनयोरदित एवानिष्पत्तेः, कुतिसताह्नम् ।  
 विपा० ३६ ।  
 अंधलीभूय-अन्धीभूतः । आच० ६८८ ।  
 अंधिय-चतुर्दिग्दिव्यविशेषः । प्रसा० ४२ ।  
 अंधिया-चतुर्दिग्दिव्यजीवमेदः । उच० ६९६ । चतुर्दिग्दिव्य-  
 जन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।  
 अंधिहृगो-अन्धिहृकः, जाल्यन्धः । प्रथ० १६२ ।  
 अंधीयताम्-अन्धीभवतु । दश० १०६ ।  
 अंधो-अन्धः, चिलातदेशनिवासी म्लेच्छविशेषः । प्रथ० १४ ।  
 अंधोपलः-(अंधोवल), अन्धपापाणः । दश० ४० ।  
 अंधोपलादिः-छायारहितपापाणः । विशेष० ११८ ।  
 अंध्र-(अंध), अंध्रदिदेशोद्भवा म्लेच्छप्राजा, आर्यभाषामज-  
 नाना । द्य० द्वि० २८अ ।  
 अंध्री-(अंधी), अन्ध्रदेशीया स्त्री, उडहरूपा । आच० ५८१ ।  
 अंध-अन्धवचनयोगाद् परुषवचनध्ववहारः । द्य० प्र० २५६ ।  
 अंध-आप्त । प्रसा० ३१ ।  
 अंध-आप्तम् । प्रसा० ३२८ । फलविशेषः । प्रसा० ३६४ ।  
 अंधं ऊर्ध्वं अंधं भङ्गति । नि० चू० द्वि० १२४आ ।  
 अंधय-अप्रमत्तविशेषः । चू० प्र० १४३आ ।  
 अंधकंजिय-गुणविकाशियम् । औप० १९० ।  
 अंधकुञ्ज-पादतलमध्यम् । चू० द्वि० २२३ आ ।  
 अंधकृष्णय-आप्तमिषकम् । भग० ६८१ ।  
 अंधकृष्णगदन्धगण-आप्तलक्ष्मणतः । भग० ६८४ ।  
 अंधकृष्णलर्ग-अन्धगतम् । आच० ३५३ ।

अंधकुञ्ज-आप्तकुञ्जः, आप्तफलवत् कुञ्जो वक्रः । भग०  
 ६० । पादतलमध्यम् । चू० द्वि० २२३ आ । तं०  
 अंधगपाणां-पानकविशेषः । आच० ३४७ ।  
 अंधगपिंडी-आप्तपिंडी । आच० ६९७ ।  
 अंधचौयय-आप्तवक् । भग० ६८१ ।  
 अंधचौयगं- ,, आप्तछल्ली । आच० ४०५ ।  
 अंधकुञ्ज-पादतलमध्यम् । नि० चू० प्र० १३७ अ ।  
 अंधकृ-अन्धकृः, ब्रह्मपुरुरेण वैश्यस्त्रिणां जातो वर्णः ।  
 आच० ८ ।  
 अंधकृ-अन्धकृः, ब्राह्मणेन वैश्यायां जातः । उच० १६२ ।  
 अंधके-अन्धकः, माहृणपरिवाजकमेदः । औप० ९१ ।  
 (अंमडः) परिवाजकविद्याधरधमणोपासकः । टाणा० ४५७ ।  
 अन्धकः । सम० १५४ ।  
 अंधके-अन्धकः, अमुडदृष्टिबोदाहरणे लौकिकशक्तिः ।  
 दश० १०२ । सुलसाधविकापरीक्षकपरिवाजकः । म्य०  
 प्र० १८ आ । म्लेच्छविशेषः । प्रसा० ५५ । अन्धउपरि-  
 वाजकः । प्रसा० ६१ ।  
 अंधपलंयं-फलविशेषः । आच० ३४८ ।  
 अंधपेमी-आप्तपाली । आच० ४०५ ।  
 अंधप्यहारो-प्रहारार्थः । उच० १९३ ।  
 अंधमित्तयं-आप्तार्थम् । आच० ४०५ ।  
 अंधय-आप्तः । आच० ४१७ ।  
 अंधयदभस्ते-अष्टादशजिनचैत्यशुद्धः । सम० १५२ ।  
 अन्धरतलम्-(गमनयत्) । सूर्य० २६४ ।  
 अंधरवर्धं-अन्धवर्धं, स्वच्छन्दमाऽऽकाशकल्पम् । जै०  
 प्र० ४०६ । स्वच्छन्दमाऽऽकाशकल्पवचनम् । भग० १७४ ।  
 अंधरसे-अन्धा-पूर्वोक्तुल्या जले तद्गो रमो यस्मात् तजि-  
 क्तिनोऽन्धरसम् । भग० ७७६ ।  
 अंधरिह्य-अन्धरीयः, द्वितीयः परमाधार्मिकः । भग० १९८ ।  
 अंधरिह्यी-नारकान् कल्पनिवादिः गण्डवाः कल्पयि-  
 त्वाद्भूपायवोपायं करोति । सम० २८ । अन्धरिह्यः, द्वितीयः  
 परमाधार्मिकः । मू० १२८ । पयदनात् परमाधार्मिकेणु  
 द्वितीयः । उच० ६१४ । नरकं द्वितीयः परमाधार्मिकः ।  
 आच० ६०० । विनयवर्धने उन्मत्तयो ब्रह्मणः धारकः ।  
 आच० ७०८ ।



अंगरिसे-अम्बरीय, कोष्क । जीवा० १०६ । अम्बरीयम्-  
 भाष्यम् । प्रथ०, १७ । अम्बरीया-प्रायश्चित्त आख्यायानि ।  
 टाणा० ४१५ ।  
 अंशले-अभ्यर्गादि । वृ० टि० २८३ अ ।  
 अंशलाखण्ड-आमसालवर्ग, आमसकल्पानवर्गा वनवि-  
 शेष । उत० १-२ । चयविशेष । आ० ७०७ ।  
 आमसालवर्गम् । आ० ३१४ ।  
 अंश-विद्याविशेष । आ० ४११ । जलम् । भग० ७७६ ।  
 अंशपट्टम्-अम्बालकम्, पत्रविशेष । अनुत्त० ६ । अंशपट्ट-  
 पत्रविशेष, अर्धांगनिमित्त । प्रमा० ३२८ ।  
 अंशपट्टम्-बहुशीजको वृक्ष । भग० ८०३ । अंशपट्ट-  
 बहुशीजविशेष । प्रमा० ३२ । आसालक-वापोतलेयवारी ।  
 प्रमा० ३६४ ।  
 अंशपट्टमपल्लव-पत्रविशेष । आ० ३४८ ।  
 अंशपट्टपाणवर्ग-पानविशेष । आ० ३४७ ।  
 अंशपट्टिओ-तिरस्कृत । वृ० प्र० ३०भा । तिरस्कृत ।  
 आ० ११ । तर्जित । आ० १८७ । उपाखण्ड ।  
 आ० ३९८ ।  
 अंशपट्टिय-निर्मलिन । आ० ३०६ ।  
 अंशपट्टिया-तिरस्कृत । आ० २०५ ।  
 अंशपट्टिह-तिरस्वरते । उत० १४७ । उपपट्टते । आ०  
 २२३ । नि० वृ० प्र० २११ आ ।  
 अंशपाण-गंधादि, आम । वृ० प्र० १४३भा ।  
 अंशपट्टिह-अम्बालेवनी, व्यन्तरीविशेष । आ० ६११ ।  
 अंशपट्टिली-वल्लीविशेष । प्रमा० ३२ ।  
 अंशियपहातो-प्रहारार्थ । आ० ६६६ ।  
 अंशिया-प्रासा मनेपितलरुपा वा । वृ० टि० ८०३ अ ।  
 अंशिल-अम्बम् । आ० २०० । अम्बम्, तकात्ता-  
 लारि । दश० १८० । आचाम्बम्-अवद्यानम् ।  
 आ० ३४६ ।  
 अंशिल-परिवहनहाति । भग० ८०३ । अम्बोऽम्बिका  
 याचित । वृ० प्र० १७४ । हस्तिविशेष । प्रमा० ३३ ।  
 रत्ना । वृ० प्र० ३९अ ।  
 अंशिलजवाग्-अम्बलवाग् । आ० ११ ।  
 अंशिला-आसिका । ओप० २१५ ।

अंशिलि-आम्बभ्रातृन्तम्, विविदिहापारि । आ० ६२४ ।  
 रत्ना । वृ० प्र० २८भा ।  
 अंशिलिरीये-अम्बलाकोष्कम्, विविदिहापारिम् । आ०  
 ६२४ ।  
 अंशिलोद्व-आम्बोद्वम्, अनीरुवभावा वृक्षमन्तरीणम् ।  
 जीवा० २० । आम्बोद्वम्, मन्मान दृक्कलादि मं-  
 वाधिकपट । प्रमा० २८ ।  
 अंशुलुओ-आम्बुलु । आ० ६४८ ।  
 अंशु-आम्ब । नि० वृ० प्र० ३०६ अ । प्रथमपत्ता  
 धारिण । म० २८ । अम्ब, नरके प्रथम परमाधा-  
 सिव । आ० ६५० । पत्रमन्तम् परमाधारिकम् प्रथम ।  
 उत० ६१४ । अम्ब, प्रथम परमाधारिकम् । मृ० १२४ ।  
 अंशुल्ली- ( रत्ना ) । आ० ७१ ।  
 अंशु-आम्बम्, मातुके कृष्ण । ओप० २३३ ।  
 अंशिया-प्रासा । नि० वृ० टि० १० भा ।  
 अंशु-आम्बम् । नि० वृ० प्र० २०२ अ ।  
 अंशुदेनि-प्रासा । नि० वृ० प्र० २११ भा ।  
 अंशु-अग्नि, पर्यहातपारिष्यम् जानुनाम्नम्, आमन्तम्  
 उपायोपरिभागम् चाम्बम्, त्रिपत्तम्बम् चाम्बजानु-  
 चाम्बम्, चाम्बम्बम् दक्षिणजानुचाम्बम् । चतुर्विम्ब-  
 भागोपल्लवम् शरीगवयो वा । म० ११ । अंशु-  
 कोणपु । ज० प्र० ११५ । अंश, मन्मयोद्वे शब्द ।  
 उत० ५८९ ।  
 अंशुलग-अंगण । म० ।  
 अंशुहर-अंगणरा, अंग-दक्षिणार्धविन्ध्यमार्ग पार-  
 यन्नि-मृत्तुला नीचमाने रक्षन्ति । उत० ३८८ । अंग-  
 दृक्कलाग्म्नं हस्ति अपतयन्ति ये ते । उत० ३८९ ।  
 अंशुतो- ( रत्ना ) । टाणा० २३६ ।  
 अंशिया-अम्बकोष्क । वृ० टि० १९९ अ । आम-  
 तान्यभागदि । नि० वृ० टि० ७०भा । अंशु-अम्ब-  
 आमस्यार्थ, आदिगच्छन्ति विभागो वा चतुर्भागे वा मन्मा-  
 स्थित वा आमस्यार्थम् अंशु । वृ० प्र० १८१ आ ।  
 अंशियालव-अम्बालये । दश० ३७ ।  
 अंशु-अग्नि, चतुर्विम्बकोष्कलपित शरीगवयो ।  
 जीवा० ४२ । प्रमा० ४१० । ( अर्जा ) शीगमिद्वे ।  
 नि० वृ० प्र० १८९ अ ।

अंसुप-अक्षरपङ्कः । वृ० द्वि० २०१ आ ।  
 अंसुर्य-वक्ष्रम् । नि० चू० प्र० २५४ आ । दुबल-  
 विशेषरूपम् । जीवा० २६९ ।  
 अंसुय-अक्षरपङ्कः । टाणा० ३३८ ।  
 अंसुयाणि-अंशुकाणि, वखाणि । आचा० ३९३ ।  
 अंसो-अंशः, मेदः । विशेष० २५१ । अक्षिः, चतुर्दिग्वि-  
 भागोपलक्षितः । सूर्य० ४ । अक्षिः, पर्यङ्गतनोपविष्टस्य  
 जानुनोरन्तरं १, आसनस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम् २,  
 दक्षिणस्कन्धस्य वामजानुनधान्तरम् ३, वामस्कन्धस्य  
 दक्षिणजानुनधान्तरं ४ । सूर्य० ४ । अंशः-मेदः ।  
 प्रज्ञा० ६०१ । अंशः-भागः । उक्त० १८८ । भागः ।  
 आचा० १७७ ।  
 अहं-अमुना । वृ० द्वि० २१३ अ ।  
 अहंताणं-अतियतां-आगच्छतां । व्य० द्वि० ३६६ आ ।  
 अहंति-प्रविसन्ति । ओष० ६७ । आगच्छन्ति । प्रश्न० १२० ।  
 अहंतु-प्रविसन्तु । ओष० ७१ ।  
 अहंते-प्रविसति । वृ० द्वि० ६०अ ।  
 अहंती-आगच्छन् । आव० २६५ ।  
 अह-अधि, आमन्त्रणे । उक्त० ३५४ ।  
 अहअथ-अतिगत्य, अत्येत्यातिक्रम्य । आचा० २४१ ।  
 अविगण्य । आचा० ३०३ ।  
 अहमारो-अतिचारः, पापम् । आव० ७७८ । अतिक्रमः ।  
 आव० ५७५ । स्फुरन्ता । ओष० ३८ ।  
 अहकाय-अतिकायः, दक्षिणनिकाये सामो ध्यन्तरेन्द्रः ।  
 भग० १५८ ।  
 अहकाय-अतिकायः, महोरगेन्द्रः । जीवा० १७४ ।  
 अहकुं-हियं-अतिबाधितम् । आव० ५७४ ।  
 अहकोह्महृद्यर्थं-अतिक्रमपहमहरणम्, अतीवोक्त्-  
 रोपमहाभिभूतम् । आव० ५८८ ।  
 अहकृतं-अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणार् । आव० ८४० ।  
 अहकृत-अतिक्रान्तम्, अतिक्रान्तकरणार्दतिक्रान्तम् । भग०  
 २९९ ।  
 अहकृता-अतिक्रान्ता, जाता । उक्त० ३१५ । अनीताः ।  
 आषा० १७८ ।  
 अहकृतो-अतिक्रान्तः, पर्यन्तवर्ती । प्रज्ञा० ९१ ।

अहकृमओ-अतिक्रमः, अनानुपूर्वी भवनम् । विशेष० १७४ ।  
 अहकृमे-अतिक्रमेत्, प्रविशेत् । उक्त० ६० ।  
 अहकृमो-अतिक्रमः, आधाकर्मनिम्नत्रणे प्रतिशृण्वति साधु-  
 क्रियोलङ्घनरूपः दोषविशेषः, यावदुपयोगकरणम् । आव०  
 ५७६ । अतिलङ्घनम् । आव० ८२३ । पीडात्मको महा-  
 प्रतातिक्रमो वा मनोऽववृष्टयया परतिरस्कारं वा ।  
 सूत्र० १७३ ।  
 अहगच्छिहिति-अतिगमिष्यति । आव० ३६९ ।  
 अहगतो-पविष्टो । नि० चू० वृ० १३ आ । अतिगनः ।  
 आव० ३४९ ।  
 अहगमणं-अतिगमनम्, अतिगमनकथा, राश आगमन-  
 सम्बन्धी विचारः, राजवधाया द्वितीयमेदः । आव० ५८१ ।  
 उत्तरायणम् । भग० १४७ ।  
 अहगया-अतिगता । ओष० १५८ ।  
 अहगुयिलगद्वरा-अतिगुयिलगद्वरा । आष० ३८४ ।  
 अहचारो-अतिचारः, स्फुरन्ता । ओष० ३८ । मिथ्यात्व-  
 मोहनीयवमौदयादात्मनोऽनुभः परिणामविशेषः । आव०  
 ८१३ । अतिचरणानि-चारित्रविराधनाविशेषाः । विशेष० ५५० ।  
 अहचिरायिओ-अतिचिरायितः । आव० ५१२ ।  
 अहच्छ-अतीच्छा, अदाने मर्यादतिगच्छेति वचनम् ।  
 आव० ४७८ ।  
 अहच्छओ-अतिक्रामन्, भिन्दानः । वृ० प्र० १७ आ ।  
 अहर्णः-आर्क्षणीम्, मन्वलोमो आचरद् । नि० चू० प्र०  
 २७४ अ ।  
 अहणा-गोरमिगारिणे । नि० चू० प्र० ३५५ अ ।  
 अहनिर्द्धं-अतिस्निग्धम्, हृदिः प्रचुरम् । आव० ५६८ ।  
 अहपंडुकंयलसिलो-अतिपाण्डुकम्बलसिला । आव० १२४ ।  
 अहपडागा-अतिपतागा, एकां पताकामतिप्रभ्य या  
 पताका सा । औप० ५ । पताकोपरिपरितीनी । भग० ४७९ ।  
 अह(गु)परियदृष्टि-अति(गु)परिपर्य, गामम्येन परि-  
 ध्राम्य । प्रज्ञा० ६०० ।  
 अहपहाय-अतिप्रगाते । आव० ९४१ ।  
 अहप्ययं-अतिप्रमत्ते । ओष० ९८ ।  
 अहप्यले-भागामिन्यः पयमो हरिः । भग० १५४ । अतिबल -  
 भरतमोताने गृहीयः । टाणा० ४३० ।

अहमदा-अतिभद्रा, प्रभावमाता । आच० २५५ ।

अहमारे-अतिभार, प्रभूतपूजकल्दे रक्त्वाशुष्कारिणा-  
रोपणम् । आच० ८१८ ।

अहभूमि-अतिभूमि, गृहस्थैरनुज्ञाता यत्रान्ये भिक्षाचरा न  
यान्ति । दश० १६८ ।

अहमत्तं-अतिमात्र, अतिरिक्तम्, अतिक्रान्तमर्थादम् ।  
उत्त० ४२९ ।

अहमत्ते-अतिमात्रे, गृहप्रमाणे । ओप० १०० ।

अहमुत्तम-दुष्परिज्ञेय । नि० सू० प्र० ११८ आ ।

अहमुत्तमचंद्रसंठाणासंठिते-अतिमुक्त्वाचन्द्रमरधान  
परिषत्तम्, प्राणेश्वर्यसंरक्षणम् । प्रज्ञा० २९३ ।

अहमुत्तमगणा-यत्कीविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अहमुत्तय-लताविशेष । प्रज्ञा० ३८२ ।

अहमुत्ते-अतिमुक्त, महावीरस्यामिन पुमारधमण शिष्य ।  
भग० २१९ । अन्तश्चदानार्थं यद्युष्यंलपञ्चदशाभ्ययनम् ।  
अन्त० १८ ।

अहयंचिय-अतित्रम्य । ठाणा० ३०० ।

अहयातो-अतिचार, गृहीते आभाकर्मणि दोषविशेष, याव-  
द्गतिं मत्स्यैर्यथप्रतिप्रमणाशुक्तकालं लम्बनोन्नेय ।  
आच० ५०६ । अतिचर०-चारिप्ररम्भनाविशेष । आच०  
५८ । अपराधम् । उत्त० २३३ ।

अहर-अचिरा, क्षान्तिमाता । आच० १६१ ।

अहरत्त-अतिरात्र, अपिहरितं, दिनशुद्धि । ठाणा० ३५० ।

अहरत्तकंयलसिलाओ-मेहमस्तकशिला । ठाणा० ८० ।

अहरा-अचिरा, क्षान्तिजिनमाता । आच० १६० ।  
सम० १५२ । सम० १५१ ।

अहरित्तसिद्धासासपिण-अतिरिक्तस्यामनिक, चतुर्थम  
समापिस्थानम् । आच० ६५३ ।

अहरेगो-अतिरेक, अतिघाविता । जीवा० २०४ । अति-  
शय । जीवा० २६७ ।

अहपत्तियं-पालकापतिवातिकं, निर्दोषम् । आचा० ३०५ ।

अहपाहल-अतिपातयो, व्यपेत । आचा० १२८ ।

अहपार्यमि-अतिपाते । ठाणा० ३२९ ।

अहपाय-द्वादशशतके प्राणानिपातादिविषय पञ्चमोद्देशक ।

भग० ५०२ । अतिगत, द्विगारिदोष । ओप० ३६ ।  
यथ । भग० २८९ ।

अहपालेग-अत्रापालक, पात्रकविशेष । सू० सू० १०५ ।

अहपेल्लं-अतिरेक, रक्षाप्यायतिशयानिष्येय । उत्त० ११० ।  
अतिशेष अन्वयमयातिशयिनी मर्षादा ममात्मा ।  
उत्त० ११० ।

अहसंधणपरो-अतिगन्धानपट, परममनाप्राप्त । आच०  
५८९ ।

अहसंधणभोगो-अतिगन्धप्रयोग, गार्थम् । सू० ३१९ ।

अहसय-अतिशय, आमर्षीव्यापि । सम० १०४ । अर्ष  
विशेष । सू० प्र० १९३ आ ।

अहस्तुद्रुमं-अतिगुह्यम् । आच० ५३६ ।

अहस्तेस-अतिशय, अतिशयने, अत्राभ्यादिन्यथे ज्ञानं ।  
ओप० १४ । अतिशयी-अत्राभ्यादिमानयुक्त । दश० १०३ ।  
सूत्रार्थमावाचारीविद्यायोग्यप्रतिशय । सू० प्र०  
२०३ आ ।

अहस्तेसी-अतिशयिनी, शिन्धमपुरद्वयानि । सू० प्र०  
२४६ आ ।

अहस्तेसो-अतिशय, अतिशयी । जीवा० २०१ । शिष्याणि-  
मयादिचतुर्भूतानादीनि अतिक्रान्तं-मर्षावशोपाणिशुद्धि-  
द्वयमनिशयव-केतम् । ठाणा० २१३ ।

अह्द-अतीति, आगच्छति, प्रविशति । आच० २३२ ।

अह्दंता-अतिशेषा-चतुर्दशरात्रिनाम । ज० प्र० ४०१ ।

अह्दया-अतीता, अतिक्रान्ता । आचा० १३८ ।

अह्द-अतिशयी । आच० १०३ ।

अउअगाति-अनुतांगानि, मन्त्रादिगण्य । ठाणा० ८६ ।

स्यं ९१ । भग० ८८८ ।

अउअति-अनुतानि मन्त्रादिगण्य । ठाणा० ८६ । स्यं०

९१ । भग० ८८८ । भग० २९० । भग० २७५ ।

अउअज-अयोधम्, अत्रनिमवनीयम् । ज० प्र० २१२ ।

अउअहा-अयोध्यानि, पर्यौद्धमहाकवानि । प्रज्ञा० ८६ ।

अउअहाओ-नगरविशेष । ठाणा० ८० ।

अए-अत्र, यत्र । प्रज्ञा० २५२ । उत्त० २७५ ।

अमोक्षा-अयोध्या, राजधानी । ज० प्र० ३०७ । अत्रि-  
तस्य प्रथमपारण्डभानम्, आच० १४६ ।

अओमुहृदीवे-अतरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।  
 अओमुहो-अयोमुख, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।  
 अकंटक-अकण्ठक, कण्ठकरहित । तीवा० १८८ ।  
 अकंठगमणार्ह-अकण्ठगमनादि, कण्ठेन भक्तवचने नोप  
 क्रामति । ओष० ८० ।  
 अकण्डूयते-अकण्डूयक, न कण्डूयत इति । ठाणा० २९९ ।  
 अकंत-सरोपभणितम् । नि० सू० प्र० ७७८ अ ।  
 अकंतता-अकान्तता, अकर्मनीयता । भग० २३ ।  
 असुन्दरता । भग० २५३ । अकान्तता । प्रज्ञा० ५०४ ।  
 अकंतदुफली-अनभिप्रेताज्ञातावेदनीया । आच० ४३० ।  
 अकंता-अकान्ता, अकर्मनीया । भग० ७२ ।  
 अकंपिप-अकम्पित, अप्रमगणधर । आव० २४० ।  
 अकण्डस-अकण्डसम्, सुसम् । भग० ३०५ ।  
 अकञ्ज-अकार्यम्-मैथुनादेवाकण्डम् । व्य० प्र० २०५ आ ।  
 अकडजोगी-यतनया योगमदृढवान् । व्य० प्र० २५१ ।  
 अकडसामायारी-सामायारि जो न करति सो अकड  
 सामायारी । नि० सू० तृ० ८१३ ।  
 अकण्ठा-अकर्मनामा अतरहाषा । प्रज्ञा० ५० ।  
 अकण्ठी-अकण, अतरद्वीपविशेष । जीवा० १४४ ।  
 अकति-अगहस्याता अनन्ता वा । ठाणा० १०५ ।  
 अकतिसञ्चिता-अगहस्याता, एकैकगमये तपसा कृत  
 रतथं गनितारते । ठाणा० १८७ ।  
 अकतिस्त्रय-कतिविधा न वे । भग० ७९६ ।  
 अकण्डीवे-अकण्डीप, अतरद्वीपविशेष । ठाणा० २२६ ।  
 अकण्य-अकण्य, शिष्यकलापनाकण्यारि । द्वा० १९६ ।  
 अकण्य-अकण्ये कर्त्तव्यम् । व्य० द्वि० १३ अ ।  
 अकण्यदृष्टणा-अयोग्यनिर्दिष्टवर्जम् । नि० सू० प्र०  
 २४२ अ ।  
 अकण्यणारमणा-अकण्यणारमणम् । मरु० ।  
 अकण्य-गामादिशर्मण, अश्विनकण्ययतुर्वामिणो वा ।  
 १० गू० १२५ अ ।  
 अकण्यो-अकण्य, आव० ७७८ । अकण्यम् । आव० ७६१ ।  
 अकण्यतुराण-अकण्यतुराण । नि० सू० ८८ ।  
 अकण्यो-अकण्य । अ० ७७८ ।

अकम्मस्वो-अकर्मता, असा-कर्मणोऽवयवास्तेऽपगत  
 यत् स । उत० २५७ ।  
 अकम्म-आकम्म, बलाकारेण । आव० ६६२ ।  
 अकम्मग-अकर्मक, अविद्यमानदुष्यितम् । मम० ५२ ।  
 अकम्मभूमगा-अकर्मभूमका, अकर्म-यथोक्तकर्मविकला  
 भूमियेवा ते अकर्मभूमा, ते एव अकर्मभूमका । प्रज्ञा०  
 ५० । मम० १३५ ।  
 अकम्मभूमि-अकर्मभूमि, हेमवतादिकभोगभूमि । प्रश०  
 ९६ । ठाणा० ११५ ।  
 अकम्मय-अकर्मक, अप्रमादम् । सूत्र० १६९ । उत० ७०० ।  
 अकम्मयारो-अकर्मकारी, स्वभूमिकानुचितवर्माकारी । प्रश०  
 ३६ ।  
 अकम्मा-अकर्म, न विद्यते कर्माऽस्त्विति, वीर्यातराय  
 धयजनितं जीवन्म सद्वै जीर्यम् । सूत्र० १६८ ।  
 अकम्हा-अकस्मात्, बाधनिमित्तानपेभम् । आव० ६४६ ।  
 अकम्हा विद्या, अकस्माद्यकरणम्, क्रियावाधतुषो भेद ।  
 आव० ६४८ ।  
 अकम्हाद्वे-अकस्मात् । मम० २५ ।  
 अकम्हाभये-अकम्हाद्रयम्, बाधनिमित्तानपेस एतादृशेषु  
 वस्थितस्य रात्यादी यद्रयम् । आव० ६४६ । मम०  
 १३ । ठाणा० ३८९ ।  
 अकयवरणो-अहतवरण, अनभ्यस्तपि । आव०  
 ७०३ । अहतकरण । आव० ३४४ ।  
 अकयकिरिप-अहतयोगेद्रहन । नि० सू० प्र० २०९ अ ।  
 अकयपरलोपसंयलो-अहतपरलोपसंयल । आव० ३९७ ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य । आव० ३९७ ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य । उत० ३२० ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य अविशिष्टावनिगोऽप्यपुण्यविना  
 मुदाया । प्रज्ञा० ७८ ।  
 अकयमुहो-अहतात्मकामुह । वृ० गू० ३५ अ ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य । नि० सू० द्वि० ८० अ ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य । अ० ३९७ ।  
 अकयपुण्यो-अहतपुण्य, अहतात्मकामुह । वृ० गू० ३५ अ ।  
 अ० ३९७ ।

अकरंद्भुयं-अवियमानपृष्ठाध्वस्त्रियम् । प्रथ० ८१ ।  
 अकरंद्भुय-अकरण्डक, अनुपलक्ष्यपृष्ठास्त्रियम् । प्रथ० ८४ ।  
 अकरणं-मैथुनम् । व्य० प्र० २५१ अ ।  
 अकरण-अलेख्यस्य नैवलिन कृत्स्नयोर्ग्रहयोरर्थयो वेवर्त्त  
 ज्ञानं दर्शनं चोपयुक्तानस्य योऽसावपरिस्पन्दोऽप्रतिषो  
 धीर्भविशेषः स । टाण० १०६ । भग० ५७ ।  
 अकरणतयैव-अक्रिययैव मयमातुष्टानमन्तरेण । आचा०  
 १४९ ।  
 अकरणयाह-अकरणेन, अपूर्वानुपार्जनेन । उक्त० ५८७ ।  
 अकरणयाप-अद्यापारतया । आचा० ३०५ ।  
 अकरणजिञ्ज-अकृत्यम्, अंत्यमं मन्दधर्माणं । आव०  
 ५३६ ।  
 अकरणिज्जो-अकरणीय । आव० ७७८ ।  
 अकरितो-अकुर्वन् । आव० ५०९ ।  
 अकलिज्जंता-अज्ञायमाना । ओष० १६० ।  
 अकलुसे-अकल्प, द्वैपवर्जिते । अन्त० २२ ।  
 अकलेयरसेणि-अकडेवरध्रेणि, कलेवरं-शरीरं अवियमानं  
 कडेवरसेषामकडेवरा सिद्धास्तेषां श्रेणिरिव श्रेणि क्षयकश्रेणि-  
 रिति । उक्त० ३४१ ।  
 अकल्पम् (अकल्पं)-अममर्थं । आचा० १०६ ।  
 अकविल-अकपिशा, दयामा । जं० प्र० ११५ ।  
 अकसिणपञ्चसो-अकृत्स्नप्रवर्तकः । आव० ४९३ ।  
 अकसिण्य-आचाटप्रकल्पस्य अणविरासितमो भेदः । सम०  
 ४७ । अकृत्स्ना-यत्र किञ्चित् श्लोष्यते । व्य० प्र० १२४ आ ।  
 अकसिणो-अकृत्स्न । विशेषे ४२४ ।  
 अकस्मात्-(आकस्मिक) नियुक्तिक । आचा० २६६ ।  
 अकस्मात्-वस्मादिति हेतुर्न वस्माद् अस्मात् । आचा०  
 २६७ ।  
 अकस्माद्दण्ड-अनभिसन्धिना दण्डः । प्रथ० १४३ ।  
 अकस्माद्भ्रयम्-बाधनिमित्तानपेक्षम् । प्रथ० १४३ ।  
 बाधनिमित्तान्तरेणहेतुकं भयम् । आव० ४७२ ।  
 अकहा-अकथा मिथ्यात्वमोहवीर्यं कर्म वेदयन् विपक्षेन यं  
 कान्तिवद्गानी कथं कथयति सा । दश० ११५ ।  
 अकांडे-अकाले । वृ० प्र० १५५ अ ।  
 अकाऊण-अकृत्वा, अभणित्वा । ओष० १५५ ।  
 अकाम-अकाम, मोक्ष । उक्त० ४१४ । अकाम, उप

रोधशीलता । दश० १७७ । निरभिप्राय । भग० ३६ ।  
 निर्वरायनभिलापी । भग० ३६ ।  
 अकामकामे-अकामराम, कामान्-इच्छाकाममदनकाम-  
 भेदान् कामयते-प्रार्थयते य म कामकामो न तथा  
 अकामकाम, अकामो-मोक्षस्तम् यत्र शक्तिपनिहृतेन  
 कामयते य न तथा । उक्त० ४१४ ।  
 अकामणिज्जराप-अकामनिर्जरा । आय० ९७ ।  
 अकामतण्हा-अकामतृणा । औष० ८६ ।  
 अकामनिकरणं-अकामनिकरणम्, अकामो वेदानुभावेऽ  
 निच्छासनस्त्वान् न एव निकरणं-कारणं यत्र तच्छाम  
 निकरणं-अज्ञानप्रययं, अनिच्छाप्रत्ययम् । भग० ३१२ ।  
 अकामनिर्जरा-पराधीनतयाऽनुरोपाचात्तुल्यहृत्तरादारा  
 दितितोषधः । तरवा० ६-२० ।  
 अकाममरणम्-कालमरणाद्यमप्रसक्तम् । उक्त० २४१ ।  
 अकाममरणं-उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्ययनम् । उक्त० ९ ।  
 अकाममरणिञ्जं-उत्तराध्ययनेषु पञ्चमाध्ययनम् । सम० ६४ ।  
 अकारण-अकारक, अरोचक । विषा० ४० ।  
 अकारकम्-अपच्यम् । ओष० १३९ । ओष० १८३ ।  
 शीतलम् । ओष० १७६ ।  
 अकारिजणो-अकारिजन । आव० १०६ ।  
 अकारिणो-अकारिण आमोवाचविधायिन । उक्त० ३१३ ।  
 अकाल-अवर्षा । टाण० ३९९ ।  
 अकालपट्टियोधी-रातो चैव पट्टियुज्जानि । नि० चू०  
 वृ० ४३ अ । एषां न कथिदपर्यन्तकाऽ । आचा० ३७७ ।  
 अकालपरिमोषी-रातो मन्वादेण भुञ्जति । नि० चू०  
 वृ० ४३ अ । एषां न कथिदभोजनकाल । आचा० ३७७ ।  
 अकालपरिहीण-अविलम्बेन । भग० ७३८ । निर्विलम्बम् ।  
 जं० प्र० ३९७ ।  
 अकालसज्ज्ञायकारण-अकालस्वाध्यायकारकं । सम० ३७ ।  
 अकालसज्ज्ञायकारी-अकालस्वाध्यायकारी, य कालिक  
 ध्रुवमुद्घाटपांश्या पठति, चतुर्दशमसमाप्तिस्थानम् । आव०  
 ६५४ । अकालस्वाध्यायकरणम्, पञ्चदशमसमाप्तिस्थानम् ।  
 प्रथ० १४४ ।  
 अकालिचरिया-अकालचर्या, रात्रौ पचि यमनम् । व्य०  
 प्र० १९ अ ।

अकालियं-आकालिकं, यथास्थित्युपरमादवगिव । उत०  
६३० ।

अकाले-अकाल, मध्याह्नादि । विपा० ६९ ।

अकाहल-अमन्मनाक्षरम् । प्रथ० १२० ।

अकिञ्चणे-अकिञ्चन, न विद्यते किमप्यत्येत्कियन,  
'निष्परिग्रह' । आचा० ४०३ । अकिञ्चनं-निष्परिग्रहत्वम् ।  
उत० ५९० ।

अकिञ्चं-अकृत्यम्, अकरणीयम्, प्राणवपस्य पद्म  
पर्याय । प्रथ० ५ । मेहुष । नि० चू० प्र० ७९ आ ।  
अनिर्वर्तनीयम् । भग० १०४ ।

अकिञ्चे-अकृष, अक्रियो वा, अविलसित, अवाधितो  
'निर्वैक्यमिति वा' । भग० १८० ।

अकिञ्चिम-अकृत्रिम, कमाह्ननखानिसम्भूताशुप्तसम्भूते  
, रूपशोभित । प्र० प्र० ७० ।

अकिञ्ची-अवर्णवादमापणम् । वृ० वृ० ९९ आ ।

अकिरियं-अत्रिया, नारितवाद् । आच० ७६२ ।

अकिरियवादी-अत्रियावादी, क्रिया-जीवादिपदार्थो नास्ती  
त्यादिका वदिते शील यस्य स । सूत्र० २०८ ।

अकिरिया-अक्रिया । आच० ३६८ । योगनिरोध । भग०  
१४१ । अत्रिया । आच० ४१२ । अवर्ण । आच०  
४२९ । आच० ४१२ ।

अकिरिया-दुष्क्रिया मिथ्यावाद्युपहृतस्यामोक्षसाधकमशुभा  
नम् । ठाण० १५३ । योगनिरोध । ठाण० १५७ ।  
योगनिरोधलक्षणा नास्तित्वत्वं चा । सम० ५ । अत्रिय  
मानकिके, दुष्परतक्रियास्य दुरुद्धानचतुर्भेद । उत०  
५८६ ।

अकिरियाओ-अकल्पपडिसेषण । नि० चू० वृ० २०अ ।

अकिरियावाद्-क्रियाभाववादिन, आत्माभाववादिन,  
चित्तशुद्धिवादिन । भग० ९४४ ।

अकिरियावाती-एकात्मकवायादयोऽष्टौ । ठाण० ४२५ ।  
नास्तिका । ठाण० २६८ ।

अकीयकड-अनीतकृत, न नीयते-न मन्वेण साधये  
कृत । प्रथ० १०८ ।

अकिञ्ची-अकीर्ति, एकदिग्गमियप्रतीति । ठाण० ४१८ ।  
भग० ४९० ।

वदु ऊहले-अनुवहल, बुद्ध्वादिष्वकौतुकवात् । उत०  
६५१ ।

अकुओभय-अनुतोभय, सयम, अप्पायलोको वा ।  
आचा० ४४ ।

अकुफकुय-अनुककुच, अशिष्टचेणरहित । उत० १०९ ।  
अनुकुच, बुद्ध्यवादिभिराधनाभावत्कर्मबन्धहेतुत्वेन वृत्तित  
हस्तपादादिभिरस्वन्दमान । उत० १०९ । अकौकुच-  
मुक्तविकारादिरहित । आचा० ३१५ ।

अकुफकुय-अनुककुचे, अस्वन्दमानम् । उत० ५८ ।

अकुफकुय-वृत्तित वृजति-पीडित सञ्चानन्दति वृत्तौ न  
तथेत्युक्त्वा । उत० ४८६ ।

अकुचो-निधल । नि० चू० प्र० १६७ अ ।

अकुचिले-अहि । दश० चू० १५१ ।

अकुट्टो (अकुट्ट) । जाजातोतिवपण । नि० । चू०  
प्र० २९६ अ ।

अकुसल-अनुसल, अनिपुण स्थूलमतिधरकादि । दश०  
६४ ।

अकुसलो-अप्रधान वन्धाय ससाराय । नि० चू० प्र०  
२५ आ ।

अकुहय-बुहय-ददबालावी त न करेइति वाह्णादि वा ।  
दश० चू० १४० ।

अकेह्ला-राजस्तोत्रपाठका । नि० चू० प्र० २७७ अ ।

अकोवणिजो-अकप्यो अदमणिजोपि पुत भवति । नि०  
चू० द्वि० १३६ अ ।

अकोसापत-विकारीभवत् । औप० २० ।

अकोहणे-अकोभन अपराधिन्यनपराधनि वा न वधचिन्  
कुष्यति । उत० ३४५ ।

अकोह-अकोष, स्वल्पकोषेण । जै० प्र० १४८ ।

अकडे-अकाले (आउ०)

अकता-आनन्ता । आच० ५०४ । अवष्टभ्या । आचा०  
२५७ ।

अकतितो-अडाणए बला हर्तो । नि० चू० द्वि०  
३८ आ ।

अकृतिया-न वृत्तोऽपि विन्ध्यति ये स्तेना । वृ० द्वि०  
११८ अ ।

अक्षते-अचित्तस्य प्रथमो भेदः । शोष० १३३ । आक्रान्ते-  
पादादिना भूतलादौ यो भवति सः । ठाणा० ३३६ ।  
अक्षतो-आक्रान्तः । आव० २२७ ।  
अक्षदण-आक्रमनम्, महता शब्देन विरयणम् । आय०  
५८७ ।  
अक्ष- ( अर्कतुलम् ) । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।  
अक्षवोदी-वल्लीविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।  
अक्षवोदीर्ण-वल्लीविशेषः । भग० ८०३ ।  
अक्षम-आक्रमः, तदुच्छेद इत्यावात् । आव० ६० ।  
अक्षमण-आक्रमणम् । विशेषे ४८६ । आक्रमण-पादेन  
पीडनं । आव० ५७३ ।  
अक्षमद्-आक्रामति, अवप्रभ्नाति । उक्त० १३४ ।  
अक्षमिच्छा-इत्वा । भग० ६३७ । आक्रम्य-मिश्रीकृत्य ।  
शोष० १९५ ।  
अक्षिट्टा-अक्षिष्टः, स्वशरीरोत्थकेशवर्जिता । जं० प्र०  
१२६ ।  
अक्षिट्टो-अक्षिष्टः, स्वशरीरोत्थकेशरहितः । जीवा० २८४ ।  
अक्षोडियाओ-प्रवेशिताः । वृ० प्र० ३० आ ।  
अक्षोस-आक्रोशः, अनिष्टवचनम्, द्वादशः परीपहः ।  
आव० ६५६ । यकारादिभिः । दश० २६७ । दुर्वचन-  
परीपहः । सम० ४१ ।  
अक्षोसेज्ज-आक्रोशेत्, तिरस्तुयत् । उक्त० १११ ।  
अक्षोसो-आक्रोशः, अमन्यभाषणम् । उक्त० ६२ ।  
आक्रोशनं, असभ्यभाषात्मकं । उक्त० ८३ । भ्रियस्वेत्यादि  
वचनम् । प्रथ० १६० ।  
अक्ष्व-अक्षम्, यन्दनकम् । आय० ७६७ । अक्ष्वकम् ।  
आव० ३४४ । वराटकाः । आव० ८८ । आत्मा । ठाणा०  
४९ । इन्द्रियम् । प्रज्ञा० ८८ । अक्षीते नवमीतादिकमिल्य-  
क्षो-धूः । उक्त० २७७ ।  
अक्ष्व-अक्षः, अक्षोपाह्वानवचोति साधोऽपमानम् । दश०  
१८ । जीवः इन्द्रियं वा । भग० २२२ । संत्यागियप्पदोन्ने  
अणत्तरं बुद्धियजायं वा । नि० चू० प्र० २५५-अ । अक्ष-  
चक्रनामिक्षेप्यकाष्ठम् । जं० प्र० १७१ ।  
अक्ष्वए-अक्षयम्, अविनाशी । भग० ११९ । सदामावेन,  
अवयविद्व्यापेक्षया अक्षतो वा परिपूर्णत्वात् । ठाणा० ३३३ ।

अक्ष्वश्रोदए-अक्षयोदकः, अक्षयसम्पन्नायोदकः ।  
अक्षतोदयः, अक्षत उदयः प्रादुर्भावो वा । उक्त० ३५३ ।  
अक्षणिक- ( अक्ष्वणिप ), ध्यमः । शोष० १७५ ।  
अक्ष्वणिषो-अक्षणिकः, निर्व्यापारः । दश० चू० ५८ ।  
अक्ष्वति-भाष्येति ( गणि० ) ।  
अक्ष्वपडिय-अक्षपतितः, अक्षपातनिका । आव० ४५३ ।  
अक्ष्वपाडओ-अक्षपाटकः । जीवा० २५७ । चतुरस्रकारः  
पाटकः । जीवा० २२८ ।  
अक्ष्वपाद-हेतुसत्थं । नि० चू० तृ० ३० आ ।  
अक्ष्वमाते-अक्षमाय-अयुक्तवाय । ठाणा० १४९ । अनु-  
चित्तवाय अममर्थत्वाय वा । ठाणा० २९२ । अनङ्गतवाय  
अक्षान्त्यै वा । ठाणा० ३५८ ।  
अक्ष्वयं-अक्षयम्, साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात् ततो नाश-  
रहितः, महावीरः । भग० ७ । विनाशकारणाभावात् ।  
जीवा० २५६ । अक्षयाः, अवयविद्व्यस्यापरिहाणे । जं०  
प्र० २५७ । अपुनरावृत्तिकं । सम० १२० ।  
अनाश-साद्यपर्यवसितस्थितिकत्वात्, अक्षतं वा परिपूर्ण-  
त्वात् । सम० ५ ।  
अक्ष्वयणिहि-अक्षयनिधिः, देवभागङ्गारम् । विषा० ७७ ।  
अक्ष्वयणिही-अक्षयनिधिः । आव० ३६० ।  
अक्ष्वया-अक्षया, अक्षयत्वात् । जीवा० ९९ । न विद्यते  
क्षयो यथोक्तस्वरूपाकारपरिभ्रंशो यस्याः सा । जं० प्र० २७ ।  
अक्ष्वयायाचरित्तो-अक्षताचारचारित्री, अक्षताचार  
एव चारित्रं तद्वान् । आव० ७६३ ।  
अक्ष्वर-अक्षरम्, निरक्तिविधिर्नामकारलोपादक्षरम्, अथवा  
धीयत इति क्षरं न क्षरमक्षरम्, अन्यान्यवर्णसंयोगेऽ-  
नन्तानर्थान् प्रतिपादयति, न च स्वयं धीयते येन  
तेनाक्षरमिति भावः । विशेषे २५५ । अविशुद्धनयामि-  
प्रायेण सर्वमपि ज्ञानमक्षरम्, तथा सर्वेऽपि भावा अक्ष-  
रास्तायापि स्वरिवाद्गणं एवेहाक्षरं भण्यन्ते । विशेषे २५४ ।  
' अक्षरं सो य चेयणामात्रो ' अक्षरं, क्षर-सघटने, न  
क्षरति न चलति-अनुपयोगेऽपि न प्रच्यवत इत्यक्षरम् ।  
विशेषे २५३ । अक्षरम् । आव० ७९३ ।  
अक्ष्वर-अक्षरम्, न क्षरति न विनश्यति । विशेषे  
१११६ । अक्षराणां ' स्तृ ' शब्दो-पतापर्ययोः अक्षराणां  
व्यञ्जनात् स्वरणेन सशब्देनेन स्वरा अकारादयः प्रोच्यन्ते,

अथवा अक्षरस्य चैतन्यस्य स्वरणात् संशब्दान्तरस्वराः ।  
 विश्वे २५५ । न धरतीत्यक्षरे, तत्र ज्ञानं चेतनेत्यर्थः ।  
 आव० २४ ।  
 अक्षरडियत्ति-अक्षरडितम् । टाण० ३८६ ।  
 अक्षरपुट्टिया-लिपिविशेषः । प्रज्ञा० ५६ ।  
 अक्षरसंज्ञिवाति-अक्षरसंज्ञिवातः, अकारादिसंयोगः ।  
 टाण० १७५ ।  
 अक्षरसमं-तत्र दीर्घं अक्षरे दीर्घः स्वरः क्रियते, इत्वे  
 ह्रस्वः, प्लुते प्लुतः, साधुनासिके साधुनासिकः तदक्षररुमम् ।  
 टाण० ३९६ ।  
 अक्षरराणि-लिपिज्ञानम् । वृ० दि० १६३ अ ।  
 अक्षरवाड-अक्षपादः । विश्वे० ६४५ । विश्वे० ६४८ ।  
 अक्षरसोय-अक्षधोतः, चक्रधुरः प्रवेशरन्ध्रम् । भग०  
 ३०५ ।  
 अक्षरा-अक्षाः, बंदनकाः । नि० चू० प्र० १०६ अ ।  
 अनुयोगे भङ्गचारणोपकरणम् । वृ० दि० २५३ आ ।  
 आख्या, शब्दप्रका । प्रज्ञा० ६०० ।  
 अक्षराहं-अज्ञाणि, इन्द्रियाणि । प्रज्ञा० ६०० ।  
 अक्षराह-आख्याति प्रथमतो धाच्यसात्रकथनेन । जै० प्र०  
 ५४० ।  
 अक्षराहउचयंसाहया-आख्यायिकोपाख्यायिका । सम०  
 ११९ ।  
 अक्षराहयं-आख्यातिकम्, नामिकादिपंचसु पदेषु चतुर्थं ।  
 आव० ३७५ ।  
 अक्षराहयाणिस्त्रिया-आख्यायिकानि.युता, यत्कपाल-  
 संभाष्याभिधानम् । प्रज्ञा० ३५६ ।  
 अक्षराहया-आख्यायिका । सम० ११९ ।  
 अक्षराहो-आख्यायिका, कथानकर । सम० ११९ ।  
 अक्षराह-म्लेच्छविशेषः । प्रज्ञा० ५५ ।  
 अक्षराहप-अज्ञाटकः, मद्युद्धस्थानम् । पि० १२९ ।  
 अक्षराहगा-आज्ञाटकः, प्रेक्षाकारिकरत्नभूतः । टाण०  
 ३३० ।  
 अक्षराहगो-आज्ञाटकः, प्रेक्षास्थाने आगतनिक्षेपलक्षणः ।  
 भग० २५१ ।  
 अक्षराहगो-चतुरग्रः । टाण० १४५ ।

अक्षराणं-आख्यानं, स्वामिसुख्येन वाऽऽदरेण वा । विश्वे०  
 १३९८ । समवसरणस्य । आव० २६८ ।  
 अक्षराणय-आख्यायकम् । नि० चू० दि० ७१ अ ।  
 अक्षराणयं-आख्यानकं । नि० चू० प्र० ३४६ आ ।  
 अक्षरातित-आख्यायिकानिधितं तत्प्रतिबन्धोऽस्यप्रकाशः ।  
 टाण० ४८९ ।  
 अक्षराय-आख्यातं, सकलजन्तुभाषाभिध्यापया कथितम् ।  
 उ० ८० ।  
 अक्षराय-आख्यातम्, केवलज्ञानेनोपलभ्यावेदितम् । दश०  
 १३६ ।  
 अक्षरायगो-आख्यायकः, यः शुभाद्युभमाख्याति सः ।  
 जीवा० २८१ ।  
 अक्षरायपयं-आख्यातपदम्, साध्यायिकापदम् । प्रज्ञा०  
 ११७ ।  
 अक्षरासुर्यं-आख्यायुतम्, आख्यायकप्रतिबन्धयुतम् ।  
 प्रश्न० १०८ ।  
 अक्षिरसंति-आख्यायान्ति । नि० चू० प्र० ३५० आ ।  
 अक्षिरत्त-आक्षिप्तम्, आवर्जितम् । दश० ११४ ।  
 अक्षिरत्तनियंस्त्रणा-आक्षिप्तनिवसना, आकृष्टपरिधानवर्ति ।  
 प्रश्न० ५६ ।  
 अक्षिरत्ते-ठिता । नि० चू० प्र० १८६ अ ।  
 अक्षिरत्तो-आक्षिप्तः । आव० १७५ ।  
 अक्षिरवर्ण-आक्षेपणम्, विज्ञाप्यमत्तापादनम् । प्रश्न० ४३ ।  
 अक्षिणी-अक्षिण, अक्षीणायुष्कमभासुकम् । भग० ३७२ ।  
 अक्षिणीशुद्धाय-अक्षिणीशुद्धः, अक्षीणवस्त्रहः । आव० ६६१ ।  
 अक्षिणीमहाराणसितो-अक्षिणीमहाराणसितः । उ० ३३२ ।  
 अक्षिणीमहाराणसियं-अक्षिणीमहाराणसियम् । आव० २९१ ।  
 टाण० ३३२ ।  
 अक्षिणीमहाराणी-अक्षिणीमहाराणी, अयुद्धितमिक्षालक्ष-  
 भोजनवान् । औप० २८ ।  
 अक्षुडिय-आक्षयितः, ररलितः । आव० ५५५ ।  
 अक्षुडिर-चरितः । नि० चू० दि० १२४ अ ।  
 अक्षुडिर-भाषुणि, विरहितः । वृ० दि० ६६ अ ।  
 अक्षुडिर-अनर्तितः । वृ० दि० ७८ अ ।  
 अक्षुडिर-अधः, साधुपयविशेषः । भग० ३७७ । भग०  
 ९८ । आक्षया-प्रतिदि । जै० प्र० ६२ ।



अपखेद इ-पण्यवतिरहगुणानि एकोऽक्ष । ज० प्र० १४ ।  
अपखेद्य-आक्षेप, प्रश्न । भग० ११४ । आव० १७ ।  
उत्त० ५२४ ।

अपखेद्यणि-आक्षेपणी, धर्मकथाया प्रथमो भेद, आक्षि-  
प्यन्ते मोहात्तत्त्वं प्रलनया भव्यप्रणिनि इति । दश० ११० ।  
धर्मकथामेद । आचा० १४५ ।

अपखेद्यणी-आक्षिप्यते-मोहात् तत्त्वं प्रलाहृष्यते श्रोताऽ-  
नयेत्याक्षेपणी । ठाणा० २१० । आक्षिप्यते-मोहात्तत्त्वं  
प्रलाहृष्यते श्रोता यकामिरिति । औप० ४६ ।

अपखेदी-आक्षेपी, आक्षिपति यशीकरणादिना य स ततो  
मुष्णाति स । प्रश्न० ४६ ।

अपखेदो-आक्षेप, आक्षेपणम्, आशङ्का । आव० ३७७ ।  
पूर्वपक्ष । वृ० तृ० १२५ अ । परद्रव्यस्य, अधर्मद्वारस्वैकी-  
विनातितमं नाम । प्रश्न० ४३ ।

अपखो-अक्ष, द्युतामस । आव० ५०२ । फलविशेष,  
अनुप० ६ ।

अपखोडगा-क्रियाविशेष । नि० वृ० प्र० १८२ अ ।

अपखोडगं परिहरणा-आस्तोत्रञ्चमद्रपरिहरणा, आस्तो-  
त्रज्ञानां यो भङ्गस्तस्य प्रतिरेखनादिविधिविराधनापरि-  
हरणा । आय० ५५२ ।

अपखोडगं-अक्षोडकम्, अक्षोडकसफलम् । प्रज्ञा० ३६४ ।

अपखोमे-अक्षोभ, अन्तकृद्गाना प्रथमवर्गस्थाष्टमा-  
ध्ययनम् । अन्त० १ । अन्तकृद्गानां द्वितीयवर्गस्य  
प्रथमाध्ययनम् । अन्त० ३ ।

अपखोलं-फलविशेष । प्रज्ञा० ३२८ ।

अपखोद्युर्गं-चक्रौजर्ग । तण्डि० ।

अपखोद्युज्जण-अक्षोपासनम्, तत्रतृपुत्रक्षणम् । भग० २९५ ।

अभ्रियावादिन-क्रिया-अस्तीतिरूपा सकलपदार्थगर्भस्या-  
पिनी मेवायथावस्तुविययतया बुद्धिमता, अक्रिया नभ  
पुरसार्धत्वात्तामक्रियां यदन्तीत्येवं शीघ्रं अक्रियावादिन,  
यथावस्थितं हि बसवनेकान्तात्मकं तन्नास्त्येकान्तात्मकमेव  
चास्तीति प्रतिपत्तिमन्त इत्यर्थः । ठाणा० ४२५ ।

(अभिरियावार्द)-नियतकृष्णप्राप्तिका । दशाधु० १६ ।

अक्ष-विभीतक । प्रज्ञा० ३१ ।

अक्षर-मोलना स्वरविशेष । जीषा० १९५ ।

अक्षरद्वयी-अक्षरद्वयेन । विशे० ८३० ।

अक्षरकोविदपरिपद्-(विदितपरिपद्) । भाचा० १४६ ।  
अक्षरश्रुतम्-शानं इन्द्रियमनोनिमित्तं द्युतप्रणालुगारि तदा-  
वरणक्षयोपदामो वा । आव० २४ ।

अक्षि-नेत्रम् । आचा० ३७ ।

अक्षीणमहानसीलधि-येनाऽऽनीन शैक्ष षडुनिरप्य-  
न्यैर्मुक्तं न क्षीयते किन्तु स्वयमेव भुञ्जं निशी याति ।  
विशे० ३८५ ।

अक्षीपाङ्गन्याय-(अकपुत्रंज)-चक्रौजर्ग । दश० १८० ।  
अरुण्ड-अगण्ड, सम्पूर्णवयम् । आव० २३९ । अगण्डम्-  
अस्तुदितम् । दश० १९५ ।

अखमे-अक्षमा, परकृतापरारक्ष्यागदने । मग० ५७२ ।

अखिचं-इन्द्रवीलादियुतं प्रामादि । वृ० तृ० ३६ अ ।

अखुण्णा-अमरिंता । नि० वृ० प्र० ३३५ अ ।

अखिचं-जं टिष्णमदव । नि० वृ० प्र० ३४१ आ । मवि-  
त्पृथ्यादिमदस्याजिडलम् । वृ० द्वि० १४० आ ।

अर्धयिमा-कयलआ मरदृष्टविसुमे फलाण कयलक्षपमाणाभो  
पेन्वीओ एवमे डले बहुकोओ भवन्ति ताणि फलाणि मंदा-  
खीकयाणि । नि० वृ० तृ० ३९ अ ।

अर्धांधण-अगन्धन, मानी सर्प । दश० ३७ ।

अर्धांधणा-अगन्धना, सर्पजातिविशेष । उत्त० ४९५ ।

अर्धांधि-दुर्गाधि । वृ० तृ० ९९ अ ।

अर्धाचरमे-अगतचरम, नगतचरम । प्रज्ञा० २४५ ।

अर्धाड-वृष । वृ० प्र० १०९ आ । अवट सज्ञा ।  
आव० ६९१ । आव० २०४ । वृष । भग० २३८ । जं०  
प्र० १२३ ।

अर्धाडदो-अगडदत्त, अमोपरपरिचरुद्र । उत्त०  
२१३ । रक्षकविशेष । द्य० द्वि० १७० आ ।

अर्धाडमहेसु-वृषमहेसु । आचा० ३२८ ।

अर्धाडाति-अवग-वृषा । ठाणा० ८६ ।

अर्धाडेसु-अवटेसु, वृषेसु । प्रज्ञा० ७२ ।

अर्धाडो-वृष । नि० वृ० प्र० ४३ अ । अवट, वृष ।  
प्रज्ञा० २६७ ।

अगणि-अग्नि, इन्धनस्य प्लोपक्रियाविसिद्धपरस्तथा विद्यु-  
दुल्लागानिसहस्रं समुत्थितं सूर्यमग्निमधुतादिरूपम् । आचा०  
४९ । आव० ६२१ । अगणिटादुगत । दश० २२८ ।  
दश० १५४ । अग्निमयाद-प्रदीपनमयात् । औष० ११८ ।

अंगणिज्ज्ञामिय-अभिध्यामितम्, वहिना ध्यामिते, दशमी-  
कृतम् । भग० २१३ ।  
अंगणि-झूसिए-सेवितः, क्षपितः । भग० ६८३ ।  
अंगणिज्झूसिय-अमिता शोपितः, पूर्ववभावक्षपणत्, 'अमिता सेविते वा । भग० २१३ ।  
अंगणिपरिणामिय-अभिपरिणामितम्, मञ्जाताभिपरिणा-  
मम् । भग० २१३ ।  
अगणी-अभिः । ओष० १५६ । चतुर्दशशतके पत्रमोद्देशकः ।  
भग० ६३० ।  
अगतं-नकुलाज्जादि । नि० चू० प्र० ७६ अ ।  
अगतो-अगदः, औपधिः । आष० ८२५ ।  
अगत्थिओ-गृहविशेषः । अनुत्त० ५ ।  
अगत्थिगुम्मा-अगस्त्यगुल्माः । जं० प्र० १८ ।  
अगत्थी-अगरितः, प्रहविशेषः । जं० प्र० ५३५ । ठाणा० ७९ ।  
अगदो-अगेगदवेहि । नि० चू० द्वि० १८ आ ।  
अगमा-गृक्षाः । वृ० द्वि० १८३ आ । नि० चू० प्र० १५२  
आ, १८३ अ ।  
अगमेत्त-शात्वा, आसापयेदात्मानमनासेवनयेति । आषा०  
२१९ ।  
अगम्मगामी-अगम्यगामी, भगिन्याद्यभिगन्ता । प्रश्न० ३६ ।  
अगर-अगुरुः-दाहविशेषः । प्रश्न० १६२ ।  
अगरला-गुविभक्ताक्षरता । औष० ७८ ।  
अगरिहिअं-अगर्हणीयम्, सामायिकनवमपर्यायः । आष०  
४७४ ।  
अगलदत्तो-अगडदत्तः । उक्त० ३१५ ।  
अगहणे-अग्रहणे-अकरणे । ओष० १४९ ।  
अगा-गृक्षाः । नि० चू० तृ० १४० अ ।  
अगामितं-अगामिकं, अकामिक-अनभिलाषणीय । ठाणा०  
३१४ ।  
अगामियं-अगामिकां, अकामिकां वा-अनभिलाषविषय-  
भूताम् । भग० ६७२ ।  
अगारं-अगैः कृतं गृहम् । नि० चू० तृ० १४० अ । गेहम् ।  
प्रश्न० ८ । गृहम् । आष० ३२९ । अगारः, गृहस्थः । आष०  
३२९ ।  
अगार-अगारम्, गृहम् । दश० ६२ ।

अगारंष्टिय-अगारस्थितभाषा-गृहस्थभाषा । ध्य० प्र०  
५४ आ ।  
अगारधम्मं-अगारधर्मम्, गृहाचारं गार्हस्थ्यम् । उक्त० ५७८ ।  
अगारबंधणं-गृहापाशं पुत्रकलत्रधनधान्यादिरूपम् । आषा०  
४२९ ।  
अगारस्थेभ्यः-( गारस्थेहि ), अनुमतिवर्जमवोत्तमदेशविरति-  
प्राप्तेभ्यः । उक्त० २५० ।  
अगार-अगाराः, गृहिणः । ठाणा० ५३ ।  
अगाराओ-गृहावासात् । जं० प्र० १४५ ।  
अगारिसामाहयङ्गाहं-अगारिणो-गृहिणः सामायिकं-मम्य-  
त्वधृतदेशविरतिरूपं तस्याज्ञानि-नि शङ्कताकालाभ्ययनाण-  
प्रतादिरूपाणि अगारिसामायिकाङ्गानि । उक्त० २५१ ।  
अगारी-अगारी, क्षत्रियादिक । सूत्र० १४३ । गृही, अर्ध-  
यतः । ठाणा० १८१ । जं० प्र० १४५ ।  
अगारो-अगारः, गृहस्थस्त्वदेशमगारिकं, देशचारित्सामा-  
यिकं देशविरतिसामायिकम् । विशेष० १०६३ ।  
अगालिणो-अगारिणः । वृ० द्वि० २८२ अ ।  
अगाहा-अगाधा, अपरिमितजला । आष० ८१९ । प्रायोधं-  
मीरम् । दश० २७० ।  
अगिण्हियव्यं-अग्रहीतव्यम्, अनुपादेयं, हेयम् । दश०  
८० ।  
अगिला-अगलिनिः । नि० चू० प्र० १७ आ । अग्लानः-  
उचितकर्तव्यसहिष्णु । आषा० २८१ ।  
अगिलाए-अग्लान्या, अविन्नतया बहुमानेनेत्यर्थः । ठाणा०  
२९९ । विशेष० ८७५ ।  
अगिलायउ-अग्लान्यैव, शरीरभ्रममविचिन्त्यैव । उक्त०  
५३६ ।  
अगीयथं-अपरीणामग, अतिपरिणामगाय । नि० चू० प्र०  
४५ आ ।  
अगीयथस्त-अगीतार्थत्वम् । आष० ५२ ।  
अगीयथो-जेण आवस्मगादीयाण अत्थो ण सुतो । नि० चू०  
तृ० २५ अ ।  
अगुण-अगुणः, अविश्रमानगुणः । दश० २६३ ।  
अगुणगुणे-वक्तव्यः । आषा० ८६ ।  
अगुणरिणं-अगुणा एव अगंतगुणार्थं अर्णति वा रिणति  
वा एगट्ठा तं च । दश० चू० ८९ ।

अगुणा-अगुणाः, मिथ्यात्वादयो दोषाः। उक्त० ४३१।  
अगुत्ती-अगुत्तिः, इच्छाया अगोचरम्। परिग्रहस्य त्रयो-  
विंशतितमं नाम। प्रश्न० १२।

अगुरु-अगुरुः, सुगन्धिद्रव्यः। आव० १०१। काष्ठविशेषः।  
जीवा० १३६।

अगुरुलह-अगुरुकलधुकम्, अत्यन्तसूक्ष्मं भाषामनः-  
कर्मद्रव्यादि। ठाणा० ४७५।

अगुरुलघु-यदुदयात् प्राणिनां शरीराणि न गुरुणि नापि  
लघूनि तत्। प्रश्ना० ४७३। सूक्ष्मपुद्गलद्रव्याणि। जं० प्र०  
१३०।

अगुरुलघुफासपरिणामे-स्पर्शविशेषः। सम० ४१।

अगोहि-अगुहिः-भोजनादिषु परिभोगकाले अनासक्तिः। भग०  
१७।

अगो-अगः, विपाककालेऽपि जीवविपाकितया शरीरपुद्गला-  
दिषु बहिःप्रवृत्तिरहितः, अनन्तावुच्यन्त्यादिः। उक्त० ११५।

अगाधे-(गाधे), पदप्रचारालङ्घनीये। विशेषे ५७६।

अगम-अग्रम्, अपरिसुक्म्। जीवा० २५४। अम्यम्, प्रधा-  
नम्। प्रश्न० १३६। अन्तः। भग० ३५। मूर्धा। प्रश्ना०  
१०८। परिणामः। सूर्य० २८०। आलम्बनम्, आव०।  
२६५। परिमाणम्। भग० ३५। संयमतपसी मोक्षो वा।  
आचा० १६०। भवोपप्राहिकर्ममन्त्रतुष्टयं। आचा० १६०।  
प्रमाणम्। ठाणा० ४६२। कोटिः। उक्त० २८३। अग्रं, वरं  
प्रधानं अटया जं पठमम्। नि० चू० प्र० १४२ अ।

अग्ना-निर्वाणस्थानम्। आव० १४८। द्रव्यावगाहनाद्यप्रये।  
आचा० ३१८।

अग्गकूरमंडी-अग्रकूरमण्डी, शोदनस्योपरिभागः। आव०  
५७५।

अग्गकोडीणं-अग्रकोटयः, प्रकृष्टा विभागाः। जं० प्र० १५।

अग्गजायाणि-अग्रजातानि, वनस्पतिविशेषः। आचा०  
३४५।

अग्गजिम्भा-अग्रजिह्वा, जिह्वायं। ठाणा० ३९५।

अग्गतावसगोत्ते-अग्रतापसमोत्रम्। सूर्य० १५०।

अग्गपल्लयं-आभातकफलं। चू० प्र० १४३ आ। तलादि-  
प्रलेवा। नि० चू० द्वि० १२४ आ।

अग्गपिंडो-जइ दिग्गे २ दाहिग्गे, अग्गपिंडो अग्गपूरो।  
नि० चू० द्वि० १० आ। अग्रपिण्डम्-निष्पन्नस्य प्राण्यो-  
दनादेराहारस्य देवतायर्थं स्तोकस्तोत्रोदारां। आचा० ३३६।  
काकपिण्ड्यां। आचा० ३४०। शाल्योदनादेः प्रथममुद्धृत्य  
मिक्षार्थं व्यवस्थाप्यते। आचा० ३२६। अग्रवृत्ते परिवेषणे  
आदावेव यो युध्यते। ठाणा० ५१५।

अग्गवीथ-अग्रवीथः, अग्रे वीथं येषामुत्पद्यते ते तलताली-  
सहकारादयः शाल्यादयो वा, अप्राप्येतेरेतत्तौ कारणतां  
प्रतिपद्यन्ते येषां कोरण्यादीनां ते वा। सूत्र० ३५०।

अग्गवीथ-अग्रवीथः, कोरण्याकादयः। दश० १३१। आचा०  
५८। श्रोत्रादयः। ठाणा १८६। जपाकुसुमादि। आचा०  
३४५।

अग्गभावे-अग्रभावम्, धनिष्ठा शोत्रम्। जं० प्र० ५००।  
अग्गमहिस्ती-अग्रमहिषी, पहराजी। जीवा० १६२। ठाणा०  
११७।

अग्गरसो-अम्यः रसश्च, प्रधानो मधुरादिकश्च, अम्यो  
रसः शूत्रादारिकः। उक्त० ४०५।

अग्गल-अर्गलम्, शोपुरकपाटादिसम्बन्धि। दश० १८४।

अग्गल-अर्गलः, पङ्कतीतिमग्रहनाम। जं० प्र० ५३५।

अग्गलपासाया-अर्गलाप्रासादाः, यत्रार्गला नियम्यन्ते।  
जं० प्र० ४८। जीवा० २०४।

अग्गला-गोवाढादीहारेषु भवति। दश० चू० ८५। अर्गला,  
प्रतीता। जीवा० २०४। जीवा० ३५९। अधिकं। उक्त०  
७, ६६०।

अग्गलापासाय-अर्गलाप्रासादः, प्रासादे यत्रार्गला प्रविशति  
सः। जीवा० ३५९।

अग्गवपूरओ-परिधानविशेषः। चू० चू० १०२ अ।

अग्गविडव-अग्रविटपम्, शास्त्रामध्यभागार्थं, विल्लारार्थं  
वा। प्रश्न० १२।

अग्रशिरः-(अग्गशिरः), उष्णीयलक्षणम्। जं० प्र० ११३।

अग्गसिग्ग-अग्रशृङ्गम्। आव० १७४।

अग्गहण-अनादरः। ज्ञेय० ९४। चू० प्र० २४५ अ।

अग्गहत्था-अग्रहस्ता, बाहोरग्रभूताः शयाः। अनुत्त० ६।

अग्रहस्ती, सुज्जी। प्रश्ना० ९१।

अग्गहत्थो-अग्रहस्तः, बाह्वग्रभागवती हस्ताः। जीवा० २७५।

अग्गाई-अम्याणि, मयस्कानि। जं० प्र० २१८।

अग्गास्त्रे कूरं-अप्रासनम्, प्रतिग्रहं सदर्शिणं भोजनम् ।

। आव० ६७९ ।

अग्गाहारो-अप्रासनम् । आव० ३०० ।

अग्गित्थेण-अभ्यन्तेन, अभिमार्गेण । आव० ७१ ।

अग्गि-तीर्थकरविशेषादिबिका । सम० १५१ ।

अग्गिउत्तं-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः । सम० १५३ ।

अग्गिओ-अग्गिकः, उत्तन्नबंशजो दारकः । आव० ३९१ ।

अग्गिकुमार-अग्गिकुमारः, सोमस्यान्नोपपातवचननिर्देश-  
वर्तिनो देवाः । भग० १९५ । भवनपतिमेदविशेषः । प्रहा०  
६९ ।

अग्गिकुमारीओ-अग्गिकुमार्यः, सोमस्यान्नोपपातवचननिर्देश-  
वर्तिन्यो देव्यः । भग० १९५ ।

अग्गिघरं-अग्गिग्रहम् । आव० २९५ ।

अग्गिष्ठा-कौशिकगोत्रभेदः । ठाणा० ३९० । सुप्रतिष्ठाभ-  
विमानवासी अष्टमो लोकान्तिकदेवः । भग० २७१ ।  
ठाणा० ४३२ ।

अग्गिष्ठाओ-कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमानम् ।  
ठाणा० ४३२ । सम० १४ ।

अग्गिष्ठी-अग्गिः, मरुत् । आव० १३५ ।

अग्गिज्जोओ-अग्गियोतः, पुष्पमित्रजीवः । आव० १७१ ।

अग्गित्तरोगी-अग्गिकरोगी । आव० २७४ ।

अग्गिभोरु-अग्गिभीरुः, प्रयोतस्य रयः, द्वितीयं रत्नम् ।  
आव० ६७३ ।

अग्गिभूर्ह-अग्गिभूतिः, अग्गियोतजीवः । आव० १७२ ।  
द्वितीयगणधरः । आव० २४० । धीवीरस्य द्वितीयगणधरः ।  
भग० १५३ । सम० ८४ ।

अग्गिमाणव-अग्गिमानवः, उत्तरनिकाये पञ्चम इन्द्रः ।  
भग० १५७ ।

अग्गिमाणवे-अग्गिमाणवः, उत्तरदिग्बर्तिनामग्गिभारणा-  
मधिपतिः । प्रहा० ९४ । ठाणा० ८४ । जीवा० १७० ।

अग्गिमेह-अग्गिमेपाः, अग्गिवहादकारिजला मेपाः । भग०  
३०६ ।

अग्गिमो-प्रथमः । ओष० ३३ ।

अग्गिय-म्यापिद्विशेषः । नि० नू० द्वि० ६० अ ।

अग्गियप्-अग्गिः, तितिक्षोदाहरणे प्रथमो दासचेतः । आव०  
७०२ । अग्गिकः, भस्मकामिधानो वायुविकारः । विपा०  
४२ ।

अग्गियओ-अग्गिः, दासचेतः । आव० ३४३ ।

अग्गियतो-अग्गिकः, इन्द्रदत्ताराजस्य दासचेतः । उत्त० १४८ ।

अग्गिल्लप्-ग्रहविशेषः । ठाणा० ७९ ।

अग्गिवेससगोते-वृत्तिकानधत्तनाम । सूर्य० १५० ।

अग्गिवेसाणं-अग्गिवेसाणपर्यं वृद्धं अग्गिवेस्यो 'गर्भादिश्यं'-  
जिति यन् प्रत्ययः तस्याप्यपत्यमग्गिवेसाणमग्गिः नदी० ४८ ।

अग्गिवेसायणे-गोशालविधापरः । भग० ६५१ ।

अग्गिवेसे-अग्गिवेस्यः, शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम । सूर्य०  
१४७ । द्वाविंशतिमुहूर्तनाम । सूर्य० १४६ । जं० प्र० ४९१ ।  
अग्गिवेस-शास्त्रीयचतुर्दशदिवसनाम । जं० प्र० ४९० । अग्गि-  
वेस्यं-कृतिकागोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।

अग्गिसिहा-अग्गिसिखम्, वनविशेषः । दश० १०३ ।

अग्गिसिहे-अग्गिसिंहः, दत्तवासुदेवपिता । आव० १६३ ।

अग्गिसिहो-विष्णुविशेषपिता । सम० १५२ ।

अग्गिसिहो-अग्गिसिंहः, दक्षिणदिग्बर्तिनामग्गिभारणा-  
मधिपतिः । जीवा० १७० । ठाणा० ८४ । प्रहा० ९४ ।  
पञ्चमो दक्षिणनिकायैन्द्रः । भग० १५७ ।

अग्गिसेणं-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः । सम० १५३ ।

अग्गिहोत्त-अग्गिहोत्रः, अग्गिकारिका । उत्त० ५२५ ।

अग्गिहोत्तसाला-अग्गिहोत्रसाला । आव० २२५ ।

अग्गी-अग्गिः, ग्रहविशेषः । जं० प्र० ५३५ । बहिः ।  
आवा० ३३ । आव० २७३ ।

अग्गीत्थेण-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः । सम० १५३ ।

अग्गुज्जाणं-अग्गोचानम्, अग्गुचानम् । आव० १९० ।

अग्गो-दक्षिकापर्यन्ते । ओष० २३४ ।

अग्गोर्ह-आग्नेयी, पूर्वदिक्कणमध्यवर्तिदिक् । आव० २१५ ।

अग्गोउज्ज-आग्नेयः, मण्डलकोणः । सूर्य० २२ ।

अग्गोणियं-द्वितीयपूर्वम् । सम० २६ ।

अग्गोणीयं-अप्रायणीयम्, द्वितीयपूर्वनाम । ठाणा० १९९ ।

अग्गोया-वत्सगोचानन्तर्गतं भोजनम् । ठाणा० ३९० ।

अग्गोयी-अग्गिकोणः । भग० ४९३ । ठाणा० १३३ ।

अग्गोययंकरेति । नि० नू० द्वि० ३५ अ ।

अग्नोदयं-अग्नीदकम्, देशोनयोजनार्थजलादुपरि पदमान जलम् । जीवा० ३०९ । षोडशमहस्रोत्प्लुताया वेलाया यदुपरि गन्धूतद्वयमानं त्रिद्विहानिस्वभावं तदग्नीदकम् । सम० ७५ ।

अग्नें-अर्घम् । आव० ३०० । महार्घ्यम् । आव० ८२७ । आव० २९५ । अर्घ्यम्-गूयम् । आव० ८२६ ।

अग्नेति-अर्घन्ति, महार्घन्ति । आव० ८२५ ।

अग्निविष्ट-अर्घितम्, हृतमूल्यम् । दश० ६१ ।

अग्निघ्न-गुच्छाविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अग्निघ्ना-आघ्राता, आहृता । विशेषे ९६० ।

अग्निघ्नं-बहुमोलं । नि० चू० प्र० १३९ अ ।

अग्नेह-अर्हति । उक्त० १४२ ।

अग्नेऊर्ण-अर्षिवा । आव० २६१ ।

अग्नी-आर्षे, मत्स्यकच्छपविशेष । जीवा० ३२१ ।

अग्निमानघ-भवनपतीन्द्रविशेष । टाणा० २०५ ।

अग्निशर्मा-यो मिथ्याहृष्टपदिष्टपुतपगाऽपि अनन्त काल सत्तारे पर्याग्तु । सूत्र० ५७ ।

अग्निशिख-भवनपतीन्द्रविशेष । टाणा० २०५ ।

अग्निष्टोम-यागविशेष । दश० २७६ ।

अग्रधृतस्कन्ध-द्वितीयधृतस्कन्ध । आचा० ३१८ ।

अग्राह-अग्रमेय । जीवा० १८७ ।

अघा गतां हृदो । वृ० प्र० १०९ आ ।

अघोर-मन्त्रविशेष । उक्त० २६७ ।

अङ्गुसल-अङ्गुशयुक्त । (मर०)

अङ्गुमंगो-अगोपांगानि । (मर०)

अचंड-अचण्ड, सौम्य । उक्त० ४७ ।

अचंडो-अचण्ड, कारणविकलकोपविकल । प्रथ० ७४ ।

अचक्रिय-अचरिता, अप्रासिता । उक्त० ३५३ ।

अचक्षुर्वृत्तस्य अचक्षुर्वर्शनम्, चक्षुर्वर्शेषेन्द्रियमनोभिर्दर्शनम् । जीवा० १८ ।

अचक्षुसे-अचाक्षुपम्, चक्षुर्निद्रियाप्राथम्यम् । दश० ३०२ ।

अचक्षुस्ते-अनिष्टम् । वृ० वृ० ४१ अ ।

अचक्षुषा-चक्षुर्वर्शेन्द्रियचक्षुष्येन मनसा । टाणा० ४४८ ।

अचरम-अचरम, यस्य चरमो भवो न भविष्यति सोऽचरम । भग० २५९ ।

अचरमसमयनियंठो-अचरमसमयनिमित्तम्, अचरमा-आदिमयास्तेषु यो वर्तमान ग । उक्त० २५७ ।

अचरिमं-अचरमम् । प्रज्ञा० २३४ । अप्रान्तं, मध्यर्ति । प्रज्ञा० २२८ ।

अचरिमंतपपस-अचरमान्तप्रदेन । भग० ३९६ ।

अचरिमो-अचरम, अभव्य मिदध । प्रज्ञा० १४३ । जीवा० ४४४ ।

अचल-(अयलो) कलाशिक्षायामुदाहरणत पुष्प । दश० १०९ ।

अचलेन्द्र-मेह । आव० ४७ ।

अचले-अचल, अन्तर्दृग्गानां द्वितीयवर्गस्य षचमाययनम् । अन्त० ३ ।

अचलचर्च-चचचयेतिशब्दरहितम् । प्रथ० ११२ । अचलचवम् । अनुकरणशब्दोऽयम् । भग० २१४ । मन्कमित्र चर्चयन् न चचचवावेद । ओप० १८७ ।

अचल्ल-अचलम्, मानसचापप्यरहितम् । भग० १४० ।

अचल्लो-अचल, कार्यादिचापप्यरहित । प्रथ० ७४ । नाऽऽरन्ध्रकार्यं प्रयस्थिर, अथवा अचल्लो-गनिग्मान-भाषाभाषमेदत चतुर्था । उक्त० ३४६ ।

अचिअत्त-अप्रीतिरम् । दश० २२१ ।

अचिअत्तकुलं-अप्रीतिकुलम्, यत्र प्रविशति मापुभिर-प्रीतिस्तपयते तत्कुलम् । दश० १६६ ।

अचिअत्ति-य मापुभिरागच्छन्ति दुःखेनास्ते । ओप० ९३ ।

अचिणिषु-आचिय, आमप्रदेशे सहोपचिन्य । प्रथ० ९८ ।

अचित्तं-आयु धयेवाचित्तं न परस्यतार्थम् । वृ० द्वि० १०६ अ । अचित्तम्, दग्धदेशादि । दश० १७८ ।

अचित्तद्रव्यपरिघ्न-(अचित्तद्रव्यपरिजुग्ग), जीर्णवग्दि । आचा० ३५ ।

अचित्त-अचित्तमहास्कन्ध । आव० ३५ ।

अचित्तस्कन्ध-द्विप्रदेशिनादिस्कन्ध । विज्ञे० ४२४ ।

अचियत्त-अचियत्त, स्वयेनैव करोति वाचा न किमपि व्रते एव देशीभाषया । वृ० प्र० २४६ अ ।

अचियत्त-अदानशील । ओप० १५६ । अप्रतीति । ओप० १६९ । अप्रीतिकम् । आव० १९१ । आव० ११८ ।

अचियत्ता-न रोचते । ओप० १९४ ।

अचियत्ते-अचियत्तः, अनभिमतः । सूत्र० ३३७ । अप्री-  
तिकरः । उक्त० ३४६ । अप्रीतिकानि-नास्ति प्रीतिः साधुषु  
यदसुपयतेषु येषां तानि । वृ० प्र० २३५ अ ।  
अचियत्तो-साधुन् प्रत्यप्रीतिमान् । प्रथ० १२४ । अप्रीति-  
त्युत्पादकः । प्रथ० ६४ ।  
अचियत्तोर्गहो-अप्रीतिकावग्रहः । आव० ३०४ । आव०  
१८९ ।  
अचिरं-स्थानम्, स्थण्डिलम् । आचा० २९४ ।  
अचिरकालकर्यं-अचिरकालकृतम्, द्विमासिके ऋतौ यद-  
ग्न्यादिना प्रागुक्तकृतम् । औष० १२३ ।  
अचिरवत्तवीवाहे-अचिरवृत्तवीवाहः । सूर्य० २९२ ।  
अचुष्टा-चुष्टीए समीपे । नि० चू० प्र० ३२८ अ ।  
अचेल-अचेल, अल्पचेलो जिनकरिपको वा । आचा०  
२४२ । अपगतचेलोऽल्पचेलो वा अचलनस्वरूपो वा ।  
आचा० २४५ । यः साधुर्नास्य चेलं-वस्त्रमस्तीति अचेलः,  
अल्पचेल इत्यर्थः । आचा० २४४ । नास्य चेलं-वस्त्र-  
मित्यचेलः । आचा० २४४ । पट्टः परीपद्दः । आव० ६५६ ।  
अचेलकः-अवमानि, असाराणि लघुत्वशीर्णैवादिना चेलानि-  
वस्त्राण्यस्येति । उक्त० ३५९ । अविद्यमानचेलकः सुरिसत-  
चेलको वा । उक्त० ५०० ।  
अचोषखं-अचोक्षम्, अपवित्रम् । जीवा० २८२ ।  
अचोक्षाः-पिशाचभेदविशेषः । प्रज्ञ० ७० ।  
अच्यंतथापरा-अत्यन्तस्थापरा, अनादिपनस्पतिक्रिया-  
दुद्गत्य । आव० ४६५ ।  
अच्यंतित्रो-आत्यन्तिकः, सर्वकालमावी । सूत्र० ३९५ ।  
अच्यंतिया-तेन गद्वत्प्रधारितिक्रामा । वृ० वृ० १३२ अ ।  
अच्यत्तो-अच्यतितः, पीडितः । दश० ४४ ।  
अच्यणज्जं-अच्यणीयम् । सूर्य० २६७ । चन्दनगन्धादिभिः ।  
औष० ५ ।  
अच्यणज्जाओ-चन्दनादिना । भग० ५०५ ।  
अच्यणिय-अच्यनिका । आव० ३५० ।  
अच्यणियघायडा-अच्यनिकाव्याघ्रा । आव० ८६३ ।  
अच्यंतो-विजुद्धोपि जं पुटं न संसरति संसरतो वा जसगत्यं  
न विजुग्मति गो अच्यंतो । नि० चू० द्वि० ८६ अ । अन्त-  
मतिशयोक्त्यर्थतः । उक्त० ६२१ । अनादिः । उक्त० ६२१ ।  
अचिदान्तपर्यन्तम् । उक्त० ६२९ ।

अच्छलीणो-आसण्यं । नि० चू० प्र० १७५ अ ।  
अच्छल्लूढो-अतीव प्रज्वलिते । नि० चू० प्र० १७५ अ ।  
अच्छसणे-अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम । जं० प्र०  
४९० ।  
अच्छा-प्रतिमा । वृ० वृ० २६आ । नि० चू० प्र०  
११७ अ । अर्चा, मनुष्यतनुभाविनी । औष० ८१ ।  
तनुः, शरीरं, पद्मादिका स्त्रिया वा । सूत्र० २३८ । स्त्रिया  
चित्तवृत्तिः । सूत्र० २३४ ।  
अच्छासणयाए-अत्यन्तं सततमासनं-उपवेशनं यस्य सोऽ-  
त्यासनस्त्रद्धावस्तता तथा । टाण० ४४६ ।  
अच्छासणे-अत्यशनः, शास्त्रीयद्वादशदिवसनाम । सूर्य० १४७ ।  
अच्छासात्तप-अत्याशातयितुम्, छयाया भ्रंशयितुम् ।  
भग० १७५ ।  
अच्छासायणा-अत्याशातना, क्रिमेभिः क्लहशस्त्रैरिति ।  
आव० ५८० ।  
अच्छि-ब्रह्मलोककरणे विमानविशेषः । सम० १४ ।  
अच्छि-अर्चि, छिन्नज्वालम् । दश० २२८ । मूलाग्नि-  
च्छिन्ना ज्वाला । दश० १५४ । अनलविच्छिन्ना ज्वाला ।  
जीवा० १०७ ।  
अच्छिकर्तं-अर्चिःकान्तम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।  
अच्छिकूर्डं-अर्चिःवृष्टम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।  
अच्छिज्ज्यं-अर्चिर्ध्वजम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।  
अच्छिज्ज्यं-अर्चिःप्रभम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।  
अच्छिमालि-कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकाग्निर्कामानः ।  
सम० १४ । भग० २७१ ।  
अच्छिमाली-अर्चिमालिः, अर्चिषां माला । प्रज्ञा० १०१ । अ-  
र्चिमाली, चन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी । जं० प्र० ५३२ । द्वाकाप्र-  
महिषीरात्रधानी । टाण० २३१ । सूर्यस्य तृतीयाग्रमहिषी ।  
टाण० २०४, भग० ५०५ । चन्द्रस्याग्रमहिषी । टाण०  
२०४, भग० ५०५ । दक्षिणपूर्वतकिरणपर्यवस्थापरस्य  
दक्षिणपूर्वस्य दक्ष्या अग्रमहिष्या राजधानी । जीवा० ३६५ ।  
अर्चिषि-किरणार्णेषां माला, गाऽस्यासीति किरणमाला-  
परिभूत इति । जीवा० १८० । चन्द्रस्य सूर्यस्य च उयो-  
विषेन्द्रस्य तृतीयाग्रमहिषी । जीवा० ३८४ । कृष्णराज्यव-  
काशान्तरे लोकान्तिर्कामानः । टाण० ४३२ । द्वितीयं  
लोकान्तिर्कामानम् । भग० २७१ ।

अच्चिरावत्तं-अर्चिरावर्तम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।  
 अच्चिरुत्तरावर्डिसम्-अर्चिरुत्तरावर्तसकम्, विमान-  
 विशेष । जीवा० १३८ ।  
 अच्चिलेखसं-अर्चिलेखम्, विमानविशेषः । जीवा० १३८ ।  
 अच्चिवन्नं-अर्चिवन्नम्, विमानविशेष । जीवा० १३८ ।  
 अच्चिसिंगारं-अर्चिसिंगारम्, विमानविशेष । जीवा०  
 १३८ ।  
 अच्चिसिद्धं-अर्चिसिद्धिम्, विमानविशेष । जीवा०  
 १३८ ।  
 अच्ची-अर्चि, अनलाप्रतिबद्धा ज्वाला । प्रज्ञा० २९,  
 जीवा० २९ । प्रथम लोकात्मिकविमानम् । भग० २७१ ।  
 कृष्णराज्यवकाशान्तरे लोकान्तिकविमान । टाणा०  
 ४३२ । अर्चि, शरीरस्थरत्नादिते नोज्वाला । औष० ५०,  
 भग० १३२ । विमानविशेष । जीवा० १३८ । स्वशरीर-  
 गतरत्नादिते नोज्वाला । जीवा० १६२ । अर्चि, लेखा ।  
 सूत्र० १९० । दाहपतिबद्धो ज्वालाविशेषोऽर्चि । आचा०  
 ४९ ।  
 अच्चीकरणं-गुणवर्णन । नि० चू० प्र० १९५ आ ।  
 अच्चीसहस्रमालिणीयं - चन्द्रप्रभाशिविसाविशेषणम् ।  
 आचा० ४२३ ।  
 अच्युतो-अच्युत, देवलोकविशेष । आच० ११७ ।  
 अच्युत्तवर्डिसर्गं-अच्युतकल्पगतविमानविशेष । सम०  
 ४१ ।  
 अच्युदयं-अच्युदकम्, महान् वर्ष । औष० ३१ ।  
 अच्युयवर्डिसम्-अच्युतावर्तसक, अच्युतदेवलोकस्य मध्ये-  
 ऽवर्तसक । जीवा० ३९३ ।  
 अच्युया-अच्युता, कल्पोपवर्तमानिकभेदविशेषा । प्रज्ञा०  
 ६९ । अच्युत-आयात । औष० ५० ।  
 अच्युच्चाया-परिधानता । वृ० द्वि० २११ आ ।  
 अच्चेह-अत्येति, अतिनामति । आचा० १४४ ।  
 अच्छं-अक्षम् । आचा० ३३८ । अतिस्वच्छम् । जीवा०  
 १६० । स्फटिकवच्छुद्धम् । जीवा० १२३ । आकाशस्फटिक-  
 गदतिस्वच्छम् । प्रज्ञा० ८७ ।  
 अच्छन्द-अच्छन्द, अखवस । दश० ९१ ।  
 अच्छन्दो-यथाच्छन्द, पाण्डुस्य । आच० १९३ ।

अच्छ-अक्ष, प्रसिद्ध । भग० १९०, नि० चू० प्र०  
 १३८ आ । अक्ष । भग० ३०१ । अक्षा, मच्छम् ।  
 ज० प्र० १२४ ।  
 अच्छउ-तिष्ठतु । दश० ३७ ।  
 अच्छणं-अवस्थानम् । वृ० प्र० २३६ अ । मन्त्रिधौ आग-  
 नम् । आच० ५२४ ।  
 अच्छण-उपविद्यावस्थानम् । वृ० प्र० ११० अ ।  
 अच्छणम्-यत्र स्वाभ्यायं कुर्वन्तिरास्यते । औष० ९४ ।  
 अच्छणघरं-अवस्थानगृहकम्, यत्र यदा तदा वाऽऽपरा-  
 बहव सुप्राप्तिकाऽवतिष्ठन्ते । जीवा० २०० ।  
 अच्छणघरगा-अवस्थानगृहकणि । ज० प्र० ४५ ।  
 अच्छणजोष-अक्षणयोग, अर्द्धिमाच्यारपर । दश० २२८ ।  
 अच्छणितुपूरे-सख्याविशेष । भग० ८८८ ।  
 अच्छणितुराति-सख्याविशेष । टाणा० ८६ ।  
 अच्छणितुरे-सख्याविशेष । भग० २१० । भग० २७५ ।  
 अच्छणिकुरंगाति-सख्याविशेष । टाणा० ८६ ।  
 अच्छणे-आत्ने, प्रकमाशाचायान्तरादिमन्त्रिधौ अवस्थाने ।  
 उक्त० ५३५ ।  
 अच्छणपट्टिच्छणो-आच्छादितप्रयाच्छारित । जीवा०  
 १४५ ।  
 अच्छते-तिष्ठति । आच० ८३० ।  
 अच्छमह-अक्ष । नि० चू० द्वि० ५८ अ । वनजीवा ।  
 (मर०)  
 अच्छमहो-अक्ष । नि० चू० द्वि० १२९ अ ।  
 अच्छरं-आहारकम्, आच्छादनम् । जीवा० २१० ।  
 अच्छरसा-अच्छरसा, अतिनिर्मला । ज० प्र० १९२ ।  
 अच्छरा-अपारा, चप्पुटिका । सूत्र० ३२५ । शकस्याप्रमहि-  
 धीनाम । भग० ५०५ ।  
 अच्छराणिघातो-अप्यरोनिपात, चप्पुटिका । प्रज्ञा० ६०० ।  
 अच्छराते-शकस्याप्रमहिष्या राजधानीविशेष । टाणा०  
 २३१ ।  
 अच्छरानियात्-अप्यरोनिपात, तिष्ठथप्पुटिका । औष०  
 १०९ । चप्पुटिका । भग० २६९ । जीवा० १०९ ।  
 अच्छरियं-आश्चर्यम् । आच० ३९५ ।  
 अच्छरि-अक्षपि, अक्षरीर, अव्ययक । भग० ८९२ ।  
 अच्छरी-अच्छपि, अव्ययक । उक्त० २५७, टाणा० ३३६ ।

अच्छह-तिष्ठत। ओष० १५८।  
 अच्छा-अच्छाः, आकाशस्फटिकवत्। ठाणा० २३१।  
 अच्छा-अच्छापुरी, वरणजनपदे आर्यक्षेत्रम्। प्रज्ञा० ५५।  
 सनखपदविशेषः। प्रज्ञा० ४५। आकाशस्फटिकवदति-  
 स्वच्छ। ज० प्र० २०।  
 अच्छाडेह-आच्छादयति। आव० ४३४।  
 अच्छारियभक्तं-लावकभक्तम्। आव० २०७।  
 अच्छारिया-लावकम्। आव० २०७। मूल्यप्रदानेन शालि-  
 लवनाय कर्मकराः, अस्तारिका-क्षेत्रे क्षिप्यते ते। व्य० द्वि०  
 १६९ आ।  
 अच्छाविज्जह-स्थायते। आव० ६३३।  
 अच्छावित्तो-स्थापितः। आव० ३५२।  
 अच्छावेह-स्थापयति। आव० ६३१।  
 अच्छि-(रोडए), चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उक्त० ६९६।  
 अच्छि-अक्षी। आव० १९२। धीजप्रदेशस्थानानि यस्याः  
 सा निदिता। ओष० २१८।  
 अच्छिउं-स्थानुम्। उक्त० १५३।  
 अच्छिको-अस्पृष्टः। व्य० प्र० १८६ आ।  
 अच्छिचमढणं-चक्षुषोर्मालनम्। चू० द्वि० २०७ आ।  
 अच्छिज्जं-आच्छेद्यम्। आचा० ३२९।  
 अच्छिदोक्कणियं-अक्षिपादनम्। आव० ५६१।  
 अच्छिणिउपूरंने-संख्याविशेषः। भग० ८८८।  
 अच्छिण्णे-अच्छिन्नः, अव्यवहितः, नान्यैः शब्दान्तरैर्वातादि-  
 कैर्वाऽप्रतिहतशक्तिः। प्रज्ञा० २९९।  
 अच्छिह-अच्छिद्रम्, अविरलम्, निर्दूषणं वा। भग०  
 १३६।  
 अच्छिहजालो-अच्छिद्रजालः, अङ्गुल्यन्तरालसमूहरहितः।  
 जीवा० २७२।  
 अच्छिहे-गोशालकदिशाचरः। भग० ६५९।  
 अच्छिद्रपाणि-प्रतिमापन्नो जिनकल्पिको वा। आचा०  
 २७७।  
 अच्छिन्न-अच्छिन्नः, अपृथग्भूतः। ठाणा० ४७२।  
 अच्छिपत्ताहं-अक्षिपत्राणि, नेत्ररोगाणि। ज० प्र० ८१।  
 जीवा० २३४।  
 अच्छिपुह्यं-अक्षिपुष्पिका। नि० चू० प्र० ७ अ।  
 अच्छियं-श्लेषविशेषकम्। आचा० ३४९।

अच्छियाहो-स्थितवान्। आव० ६८३।  
 अच्छिरे-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उक्त० ६९६।  
 अच्छिरोडा-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२। चतुरि-  
 न्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
 अच्छिवेयणा-अक्षिवेदना, नेत्रपीडा। भग० १९७।  
 अच्छिवेहप-चतुरिन्द्रियजीवभेदः। उक्त० ६९६।  
 अच्छिवेहा-चतुरिन्द्रियविशेषः। प्रज्ञा० ४२।  
 अच्छिवेहो-अक्षिवेषः, चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः। जीवा० ३२।  
 अच्छुत्ता-उद्भूत्य। नि० चू० द्वि० १४ आ।  
 अच्छुरंति-आस्तुण्वन्ति। ओष० ८३।  
 अच्छुरलमे-प्रचुरलमे। नि० चू० द्वि० १४ आ।  
 अच्छुटं-अक्षिसम्। ओष० १६५।  
 अच्छे-अच्छः, सुनिर्मलः, जाम्बूनदरत्नबहुलपात्र मेरुनाम।  
 ज० प्र० ३७५। ऋक्षः-अच्छभद्रः। प्रज्ञा० २५३।  
 अच्छेओ-अच्छेकः, अविकलः। आव० ५२७।  
 अच्छेज्ज-आसीत्। भग० ९०। आच्छेद्य-पष्टदाबलदोषे।  
 प्रश्न० १४४।  
 अच्छेज्जे-आच्छेद्य-बलाद् भूत्यादिसत्कमाच्छिद्य यत्स्वामी  
 साधने ददाति। ठाणा० ४६०।  
 अच्छेज्जेह-भोजनदोषः। भग० ४६६।  
 अच्छेण्णं-आच्छेद्यं, यदाच्छिद्य भूत्यादिभ्यः स्वामी ददाति।  
 प्रश्न० १५५।  
 अच्छेरे-आधर्यम्। जीवा० २७७।  
 अच्छेरगा-आधर्याणि, अङ्गुतानिभौ ठाणा० ५२३।  
 अच्छेरियं-आधर्यम्, आधर्यवस्तु। दश० ५५।  
 अच्छो-अच्छः, स्वच्छः। सूर्य० ७८। ऋक्षः। जीवा०  
 ३८। नाहरविशेषः। प्रश्न० ७।  
 अच्छोड-आच्छोदनम्। ओष० १३३।  
 अच्छिन्नेयनयाहं-अच्छिन्नच्छेदनयिका-सूत्रविशेषः। सम०  
 १२८।  
 अजगर-अजगरः, शयुषयायः, उरःपरिमर्षविशेषः। प्रश्न०  
 ७। सम० १३५।  
 अजजो-अजज्यः, जेतुमशक्यः। उक्त० १६९।  
 अजताभासविद्यञ्जी-अयताभाषाविवर्णा, दुष्टवाक्परि-  
 हर्ता। आव० ७७५।



अजरयं-अयतम्, अनुपदेशेन । दश० १५६ । अणुवासेण ।  
 दश० चू० ७० ।  
 अजय-अयतः, अयतनपरः । ओष० ३० । नक्षत्रपापरधाने-  
 भ्योऽनुपपरतः । उक्त० १५४ ।  
 अजरणं-अजीर्णम् । आव० १३१ ।  
 अजवणिज्जोदण-अयापनीयोदकाः, अयापनीयं-न यापना-  
 प्रयोजनमुदकं येषां तैः । भग० ३०६ ।  
 अजसो-छायाघातः । वृ० वृ० १९ अ ।  
 अजहणमणुकोसे-अजघन्योत्कृष्टः, अजघन्योत्कृष्टस्थितिः ।  
 आव० ३३५ ।  
 अजाहपाणीयम्-अथितक्रितमम्भबो न्यायविशेषः । आचा०  
 १८ ।  
 अजाणतिया-अजालती पर्यत् जे होइ पण्यमुदा । वृ० प्र०  
 ५८ अ ।  
 अजाणू-अज्ञस्य अज्ञानात् वा व्याप्तः । ठाणा० १७४ ।  
 अजाता-उत्तरगुणैश्चाभाकर्मोदिभिरमुदा । ओष० १९३ ।  
 अजायकल्पिओ-अजातकल्पिको, अगीतार्थः । वृ० प्र०  
 ११२ आ ।  
 अजाया-अजाता, याऽतिरिक्तनिरवयुहारपरित्यागविषया ।  
 आव० ६४१ ।  
 अजिओ-अजितः, परीरहोपमर्गादिभिर्न जितः, द्वितीयजिनः,  
 यस्मिन् गर्भे मति माता राज्ञाऽजिताऽतः । आव० ५०२ ।  
 अजिर्णं-अजिनं, चर्म । सूत्र० ३०७, आचा० ७१ ।  
 अजिण्णओ-अजीर्णम् । आव० ३५२ ।  
 अजिम्हं-अमन्दम् । प्रश्न० ८४ ।  
 अजिम्ह-अमन्दे, अद्रव्यवतया निर्विकारचपले । ज० प्र०  
 ११५ ।  
 अजियसेतित्थयं-अजितशान्तिस्तव । आव० ६३८ ।  
 अजियसेणं-ऐरवतावसर्पिणीतीर्थकरः । सम० १५३ ।  
 अजियसेणे-अजितसेनः, अज्ञातोदाहरणे कौशाम्बीराजा ।  
 आव० ६९९ । अतीतोत्सर्पिणीकुलकरः । सम० १५० ।  
 अलोभोदाहरणे भावस्त्यामाचार्यः । आव० ७०१ ।  
 वसतपुरे नृपः खड्गप्रमादिसैनिकसिद्धकः । प्रज्ञा० ४४१ ।  
 अजिद्र्यं-अपराजिता (आज्ञा) । आव० ५९६ ।  
 अजिया-अभिनन्दनजिनप्रवर्तिनीनाम । सम० १५२ ।  
 अजिरं-अज्ञम् । प्रश्न० १३८ ।

अजीरं-अजरणम् । ओष० ६३ ।  
 अजीरगं-अजीर्णत्वम् । आव० ६५५ ।  
 अजीरय-अजीर्णम् । भग० १९७ ।  
 अजीर्णम्-रोगविशेषः । जीवा० २८४ ।  
 अजीय-अजीवाः, जीवविपरीतस्वरूपाः । प्रज्ञा० ७१ ।  
 अजीयअपच्यखणफिरिया - यदजीवेषु-मयादिष्व-  
 प्रत्याख्यानात् कर्मबन्धनं सा अजीवाप्रत्याख्यातक्रिया ।  
 ठाणा० ४११ ।  
 अजीयकरणं-अजीवभावकरणं, परप्रयोगमन्तरेणाधोदेर्ना-  
 नावर्णन्तरमनम् । आव० ४६४ ।  
 अजीयफिरिया-अजीवक्रिया, अजीवम्-पुद्गलममुदावस्य  
 यत्कर्मतया परिणमनं सा अजीवक्रिया । ठाणा० ४० ।  
 अजीवणेसन्धिया-अजीवनैशुष्टिरी, यत्तु काण्टरीनां धनुरा-  
 दिभिः नियजनम् । ठाणा० ४३ ।  
 अजीवपाउसिया-अजीवप्रादेपिरी, अजीवस्वोपरि प्रदेवाद्या  
 क्रिया प्रदेवकरणमेव वा । भग० १८२ । अजीवे-पापाणादी  
 स्फलितस्य प्रदेवात् । ठाणा० ४११ ।  
 अजीवपाओगिअं-अजीवप्रायोगिकम्, अजीवप्रयोगेन नि-  
 र्गुप्तं, जीवप्रायोगिकद्वितीयमेदः । आव० ४५७ ।  
 अजीवपारिगहिया-अजीवपारिग्रहिणी, पारिग्रहिणीक्रियाया  
 द्वितीयो मेदः । आव० ६१२ ।  
 अजीवमिस्सिया-अजीवमिश्रिता, प्रभूतेषु मृतेषु स्नोकेषु  
 जीवेषु एकत्र राशोऽतेषु-अदो महानयं मृते जीवराशिदिशि  
 भाषा । प्रज्ञा० २५६ ।  
 अजीयमीसण-अजीवानाश्रित्य मिथमजीवमिश्रं । ठाणा० ।  
 ४९० ।  
 अजीवमीसण-अजीवमिथा, सत्याप्यमापापामेदः । दश०  
 २०९ ।  
 अजीववेयारणिया - पुरुषादिविप्रतराणुदुदुधैव वाऽजीवं  
 भण्येतादृशमेतदिति । ठाणा० ४३ ।  
 अजीवसामंतोपनिघारया - अजीवसामन्तोपनिपातिर्की,  
 सामन्तोपनिपातिक्रियाया द्वितीयो मेदः । आव० ६९३ ।  
 अजीवसाहन्धिया-यच्च स्वह्लाह्लातेनैवाजीवेन-स्वप्नदिना  
 जीवं मारयति सा अजीवस्वाहस्तिकी । ठाणा० ४२ ।  
 अजीवारभिया - जीवकवेपराणि पिष्टादिमन्वाजीवाकृतौध-  
 ववादीन् वा आरभमाणस्य वा अजीवारभिकी । ठाणा० ४१ ।

अञ्जुतं-अयुतम्, चतुरशीतिरयुताङ्गशतसहस्राणि । जीवा०  
३४५ ।

अञ्जुतंगं - अयुताङ्गम्, चतुरशीतिरर्धनिकुरशतसहस्राणि ।  
जीवा० ३४५ ।

अञ्जुत्तं-अयुक्तम्, अयुतपक्षिणम्, अयुतपक्षिविशेषः । आब०  
३७५ ।

अञ्जुत्तो-अयुतयुक्तः । च० तृ० ६ आ ।

अञ्जुरणया-शरीराण्ययकारिणोकायुत्पान्नेन । भग० ३०५ ।

अञ्जो-अञ्जं, छगलको द्विचुरशतुष्पदः । जीवा० ३८ ।

अञ्जोगव्यं-अयोगवयम्, वैद्याशुद्राभ्यां जातो वर्गः । आचा० ८ ।

अञ्जोगी-अयोगी, निरुद्धयोगः, शैलेद्यां गतो हृत्पद्माक्षरो-  
द्विरणमात्रकालं यावत्, भूतप्रामस्य चतुर्दशं युगस्थानम् ।  
आब० ६५० ।

अयोनिभूतम्-(अजोगि ऋण), विष्वस्तयोनि, शरोहाममर्धम् ।  
दश० १४० ।

अजोसिया-अजुष्टा, असेविता, धर्मं वा अवनायकक्षणम-  
तीता । सूत्र० ५० ।

अज्जंहिज्जो-अजद्वं । आब० ७१५ ।

अज्ज-अज, आरब्धः, आर्यः । उक्त० ३६३ । आर्यः-  
आराम्यवहेयधर्मभ्यो यातः-प्राप्तौ युवैरित्यार्यः । प्रज्ञा० ५ ।  
आवाराधनयोगादारायातः सर्वहेयधर्मभ्य इत्यार्यः । दश०  
३८४ । आर्या-प्रज्ञान्तरुपा चण्डिका । भग० १६४ ।

अज-मान्यतम् । ज० प्र० ३४६, आचा० १५८ । आर्यः-  
( गौतमः ) । आचा० १५८ । पापकर्मबहिर्भूतत्वेनापाय-  
( क्षेत्रदिभेदेन नवधा ) । ठाणा० २०८ ।

अज्जप-हरितविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

अज्जकण्हा-आर्यकृष्णाः, आचार्याः । उक्त० १७८ ।

अज्जकण्ठो-आर्यकृष्णः, आचार्य । आब० ३२३ ।

अज्जकालका-नाम आयरिया । च० प्र० ३९ अ ।

अज्जकालगायरियं-चतुर्षीप्रवर्तकी युगप्रपादः । नि० च०  
प्र० ३३९ आ ।

अज्जकालगो-आर्यकालकः । आब० ३६९ ।

अज्जकालय-प्रसादश्रान्तः । ( मर० )

अज्जकालउडो-विशान्दि आचार्यः । नि० च० प्र० ३०४ अ,

नि० च० प्र० २७६ अ, नि० च० प्र० १६ अ ।

आर्यपुत्रः, विशान्दि आपार्यविशेषः । आब० ४११ ।

अज्जगो-आर्यकः, वनस्पतिविशेषः लीके आजओ । ज०  
प्र० ४२४ । प्रत्येकवनस्पतिविशेषः । नि० च० द्वि० ६० अ ।

अज्जगोविन्दो-आर्यगोविन्दः, मित्योपस्थितायामुदाहरणम् ।  
आब० ८६१ ।

अज्जचंदणा-आर्यचन्दना, आर्याविशेषः, यस्याः पार्वं  
मृगावत्याः केवत्योत्पत्तिः । आब० ४८५, नि० च० तृ०  
१३४ आ ।

अज्जचाप-आर्यतया, पापकर्मबहिर्भूतया अथतया वा  
अधुनातनतया वर्तमानकालतया । भग० ६५६ ।

अज्जजपयं-आर्यपदम्, शुद्धपर्मपदम् । दश० २६९ ।

अज्जजपभिई-अद्यप्रभृति, सम्यक्सवप्रतिपत्तिकालादारभ्याद्य  
यावत् । आब० ८११ ।

अज्जमावे-आर्यभावः धायिकादिजानादियुक्तः । ठाणा०  
२०९ ।

अज्जमंशु-आर्यमंशुः, प्रद्विरमसातगौरवदृष्टान्तो मधुराया-  
माचार्यः । आब० ५७९ । अवसभाचार्यः । नि० च०  
प्र० ३५१ अ । आचार्यतिथेयकः दुर्बलाऽऽचार्यः । व्य०  
द्वि० १७४ आ ।

अज्जमणग-आर्यमणकः, आर्यभार्यो मणकभेति विप्रः,  
यस्मात्सैर्दशैकास्त्रिस्त्यायेता । दश० २८४ ।

अज्जमहागिरि-रघुलभद्रवत्तमणभारवाचार्यः । नि० च०  
प्र० २४३ अ ।

अज्जमहागिरी-आर्यरिओ । नि० च० तृ० ४४ आ ।

अज्जमूलं-आर्यमूलम्, मानामहपादमूलम् । आब० ६८४ ।

अज्जय-आर्यकः, पिता । उक्त० ९८ । आब० ३०५ ।  
भग० ४७० । आब० ३७७ ।

अज्जयमंजरी-आर्यमंजरी । आब० १२५ ।

अज्जकलितो-सत्त्वानुसाहदाचार्यः । नि० च० द्वि०  
१०९ अ ।

अज्जकलितय-मोक्षमाहिलप्रेषवाचार्यः । नि० च० प्र०  
३३५ आ, १०३ आ । उज्ज्विन्यामयेत्कथं । ( मर० ) ।  
'अर्करहितः' । वि० १००० । आचार्यविशेषः । व्य० द्वि०  
३३९ अ ।

अज्जय-आर्यवम्, पारिभाषिकद्विपरिदृष्टि नामापरियाम ।  
दश० २६३ ।

अञ्जयहरसामि-आर्यशितविद्यासु । नि० च० प्र० १०१ आ ।  
 अञ्जयहरा-आर्यवरा । विशे० १२८ । आर्यवन्न, वाग-  
 ल्योदाहरणे आर्य । दश० १०३ ।  
 अञ्जयहरौ-आर्यवर । आव० २८५ । आर्यवन्न, युग-  
 प्रधान । आव० ३०२ । आर्यवर, पितृभक्तिद्वारे आचार्य ।  
 आव० ५३६ ।  
 अञ्जयद्विषाणा-आर्यवम्, संवरभेदा । ठाणा ३०२ ।  
 अञ्जयवे-आर्यवम्, ऋजुता योगसत्प्रते दशमो योग ।  
 आव० ६६४ ।  
 अञ्जयसमिधो-आर्यममित, सुनन्दाश्वाता । आव० २८९ ।  
 आर्यममित । उत० ३३३ ।  
 अञ्जयसमिया-आर्यममिता, वन्नम्यामिनो मातुला ।  
 आव० ४१२ ।  
 अञ्जयसमुदा-आचार्यातिशेयानतिशेयि । व्य० द्वि० १४४  
 अ । नि० च० प्र० १५१ अ ।  
 (अञ्जसा)-अजसा, प्रयुगेन न्यायेन । विशे० ७७९ ।  
 अञ्जसासस्-आरासर्वदेवधर्मैभ्यो यात-प्राप्तौ गुणैरि-  
 त्यायं स चासौ दशमथा आयश्याम, नरम् । प्रजा० ५ ।  
 अञ्जसुनन्दा-आर्यसुनन्दा । उत० ३२१ ।  
 अञ्जसुहृत्थी-आर्यसुहृत्थी, योगसप्रभेदनिधितोदधानद्वयान्ते  
 आर्यस्थूलमदस ल्यु दिष्य । आव० ६६८ । स्थूलमद-  
 दत्तगणधारकाचाय । नि० च० प्र० २४३ अ । आचार्यो ।  
 नि० च० तृ० ४४, वृ० द्वि० १५३ आ ।  
 अञ्जसुहृत्मे-आर्यसुधर्मा, महावीरस्यान्तेवासी अविर् ।  
 प्रध० १ ।  
 अञ्जहिक्ती-अद्य (घ) । आव० ६९२ ।  
 अञ्जा-सुलनीममो धनरूपविशेष । भग० ८०३ । सुनि-  
 सुवतत्रिनप्रवर्तिनीनाम । १५३ । आर्या, सत्यचतु क्ल  
 गणादिष्ववस्थानिवद्धा मात्रासम्प्रदाया । जे० प्र० १३८ ।  
 अञ्जाकल्पं-आर्यानीनाम् । ( गणि० )  
 अञ्जाघरे-आर्याघरे । ठाणा० ३७० ।  
 अञ्जावैषट्वा-आज्ञापयितव्या । आचा० १७८ ।  
 अञ्जासादो-आर्यापाठ, स्थिरकिरणोदाहरणे उच्चयि-  
 न्यामास्यापाठ । दश० १०३ । यत्सभ्यामाचार्यविशेष ।  
 उत० १३३ । आचार्य । आव० ३१५ ।

अञ्जिप-आर्यिका, आर्यिका मातु पितृपुत्री माता । दश०  
 २१६ ।  
 अञ्जिया-पितामही मातामही वा । वृ० द्वि० ५८ आ ।  
 माउ पिउ वा जा माता मा । दश० च० १०० ।  
 अञ्जिया-आर्यिका । आव० ७३१ ।  
 अञ्जियालाभो-आर्यिकालाभ, आर्यिकान्यो लाभ । आव०  
 ५३५ ।  
 अञ्जुष-अर्जुन, वृक्षविशेष । प्रजा० ३० । अर्जुनाभिधानं  
 यथापद्वरम्बर्णम् । जे० प्र० २४२ । बहुवीरविशेष । भग०  
 ८०३ । वीरविशेष । व्य० द्वि० १३० आ । वृक्षविशेष ।  
 प्रजा० ३३ ।  
 अञ्जुषय-अर्जुनक, राजघटे मातृकारविशेष । अन्न०  
 १८ ।  
 अञ्जुषामो-अर्जुनक, राजघटे मालाकार । उत० ११२ ।  
 अञ्जुषासस्-अर्जुनक, गोशाल्यपरावर्तिम्यानम् । भग०  
 ६७४ ।  
 अञ्जुषामालार-अर्जुनमालाकार, आद्योगद । ( मर० )  
 अञ्जुषासुधर्णे-अर्जुनसुधर्ण, श्वेतकायनम् । औप० ११५ ।  
 अञ्जुषासस्-गीतमगोशौ गोशाश्रुतीत्यवधारणौ । भग०  
 ६७३ ।  
 अञ्जुषणो-अर्जुन, सुषोयनगरवृषति । विद्या० ८५ ।  
 अञ्जुन्ने-गोशालकदिशाचर । भग० ६५९ ।  
 अञ्जे-आर्य । उत० २८६ । अद्य, आर्य, म्यामिन ।  
 भग० १७६ ।  
 अञ्जो-आर्य, पितामह, गीर्थकराणाम् प्रथम । आव० १६८ ।  
 आर्य । आव० ७९३ । धीवर्द्धमानस्त्वमी । जे० प्र० ५४१ ।  
 अञ्जोत्ति-आरापापकर्मभ्यो याता आर्यान्नामन्वर्ण हे  
 आर्या । ठाणा० १३५ ।  
 अञ्जोरह-हरितविशेष । प्रजा० ३३ ।  
 अञ्जस्त-अध्यासम्, चत । दश० १६ ।  
 अञ्जस्त्ये-अध्यासम्, सुन्दरुत्वादि । आचा० ७६ । आस-  
 त्वय । जीवा० २४२ । आसस्या मित्यात्वात्वात् ।  
 उत० ४०२ । अन्त करणम् । आचा० ७९० । अध्यासम् ।  
 आचा० २०८ । अध्यासक्रिया-यत्केनापि कथयनाप्यपरि-  
 भूतस्य दीर्घमन्स्वकरणम् । ठाणा० ३१६ । अध्यास-  
 परिणाम । व्य० प्र० १८१ आ । अध्यासम्-मन । ठाणा० ५ ।

अङ्गसूत्रार्थे-अध्यात्मदण्डः, शोकाद्यभिभवः। प्रश्न० १४३।  
अङ्गसूत्रनिष्कृतं-अध्यात्मनिष्पन्नम्, अध्यवसानोद्गतम्।  
। दश० २२६।

अङ्गसूत्रव्यवस्था-अध्यात्मवचनम्, अभिप्रेतमर्थं गोपयितु-  
कामस्य सहसा तस्यैव भणनम्। प्रश्न० ११८। यदन्वये-  
तसि निषाय विप्रतारकबुद्ध्याऽन्यद् विभक्तिपुरापि सहसा  
यच्चेतसि तदेव ब्रूते तत्। प्रश्न० २६७, आचा० ३८७।

अङ्गसूत्रस्थिर-अध्यात्मिकः, अभ्यर्षितः। विधा० ३८।  
अध्यात्मिकः-आत्माधितः। भग० ४६३। आध्यात्मिक-  
क्रियास्थानविशेषः। सम० २५।

अङ्गसूत्रस्थिभो-आध्यात्मिकः, आत्मविययः, सङ्कल्पविशेषः।  
जीवा० २४२।

अङ्गसूत्रस्थियं-अध्वकसितं, सङ्कल्पम्। आच० ६६९। अध्या-  
। सिर्क-अन्त करणोद्भवम्। सूत्र० ३११।

अङ्गसूत्रस्थिभो-अध्यात्मस्थः। आच० ६४५।

अङ्गसूत्रस्थेव-अध्यात्मन्वेव, ब्रह्मचर्यं ध्यवस्थितः। आचा०  
२०८।

अङ्गसूत्रस्थो-आध्यात्मिकः, आत्मन्यध्यायार्थं - तत्रभवः  
दण्डविशेषः। सूत्र० ३०६।

अङ्गसूत्रस्य-अध्यात्मं, सद्भावनारुढं चित्तमेव। प्रश्न० १३४।  
आध्यात्मिकं, आत्मन्यधीत्यध्यायं तत्र भवम्। आन्तरत्वात्कि-  
ञ्चनितं सारिवकं। सूत्र० १६७। आत्मानमधिकृत्यात्ममा-  
त्मनम्। प्रश्न० १२८। मनः। सूत्र० ६५। अधि आत्मनि  
वर्तत इति अध्यात्म-ध्यानम्। आच० ७७४। रुढितो मनः।  
उत्त० ७। आत्मनि। उत्त० ६१८। चेतः। आच० ५२५।  
धर्मध्यानदिकम्। सूत्र० २६९। मनः। आचा० २१९।  
आत्मनि। उत्त० ४६५। मनः। उत्त० ५९१।

अङ्गसूत्रस्ययोग-अध्यात्मयोगः। ( महाप्र० )

अङ्गसूत्रस्ययोगसाहज्यसुते - अध्यात्मयोगमाध्वनयुक्तं,  
अध्यात्म-चरितस्य योगा-ध्यापारा धर्मध्यानादप्यस्तयो  
साधनानि एवाप्रतादीनि तिर्युक्तः। उत्त० ५९१।

अङ्गसूत्रस्ययोग-अध्यात्मध्यानं, अनुकीडं अनुकृते अयु-  
गसिन्ने अयुगपमद्भागदिद् न य तधि राहणैर्यादिकम्।  
प्रश्न० १२८।

अङ्गसूत्रस्य-अध्यात्मरतः, प्रगहनध्यानवकं। दश० २६७।

अङ्गसूत्रस्यबुद्धे-अध्यात्मसङ्कृतः, श्रीयोगादत्तमानः सूत्रार्थो-  
पयुक्तनिष्कृतनोयोगः। आचा० २१९।

अङ्गसूत्रस्य-अध्यात्मनि, आन्तरम्। सूत्र० २३०।

अङ्गसूत्रस्य-अध्ययनम्, विशिष्यार्थेष्वनिसन्दर्भेषुम्। जीवा०

४। ठाणा० ६। पाठः। आच० ७३२, विज्ञे० ४५०।

सञ्ज्ञाभो। दश० चू० १२५। स्वस्वभावे आनीयते-

ऽनेनेति आनयनं प्रस्तावादात्मनः, निरुक्तविधिना। उत्त०

६। निरुक्तविधिनाऽर्धनेदंसारवाह्याऽस्य भयतेरेतेवार्धधि-

पूर्वस्य। उत्त० ७। नाम। सूर्य० ९, १४६। आच० ७१५।

अध्यात्मानयनाच्छेत्तौ विदुदद्यापादानात्। दश० १३८।

अनेन करणभूतेन साधुबोधस्यममोक्षत् प्रत्यधिकं मन्त्रति

यस्मादेवं तस्मादध्ययनम्। दश० १६। अध्यात्मानयनं,

अधिगम्यन्ते परिच्छिद्यन्ते वा अर्था अनेनेत्याधिगमनमेव प्राह-

तेशल्या तथाविधार्थप्रदर्शकत्वात्स्यास्य वचनोऽध्ययनमिति,

अधिकं नयनमधिकनयनं चाध्ययनम्। दश० १६। अध्या-

त्मानयनं-अध्ययनप्रतानम्। दश० १६। शालम्। दश०

२८४।

अङ्गसूत्रस्य-अध्ययनपङ्कं। विशेषे ४१५।

अङ्गसूत्र-म्लेच्छविशेषः। प्रश्न० ५५।

अङ्गसूत्रस्य-अध्ययनायः, सूत्रमो मनःश्रीगणपसमुत्पः।

आचा० ६८। सूत्रं आत्मनः परिगामविशेषः। आचा० ३११।

अङ्गसूत्रस्यार्थं-अध्ययनार्थं, अन्त.करणप्रवृत्तिः। सूत्र० ३४०।

मनोविशेषः। औप० ९९। जीवा० १३०। अन्त.करण-

मन्यपेक्षम्। आच० १८४। रागस्नेहभयमेतानि अध्यव-

सानानि। आच० २७२। अध्यवसायाः। प्रश्न० ५४३।

ध्वनगविधित्तियाप्रयत्नविशेषम्। औप० ६०। मन

एकप्रतात्मनम्। आच० ५८३। रागस्नेहभयात्मिकोऽध्य-

वसायः। ठाणा० ४००। विशेषे ८४२।

अङ्गसूत्रस्यार्थापरिगणितार्थं-भावचारिमावरणीयानि। मन०

४३२।

अङ्गसूत्रस्योहि-अध्ययनार्थः, मन परिगामैः। जे० प्र०

२७५।

अङ्गसूत्रस्य-अध्वकसितम्, परिमोगक्रियासंगहनविषयम्।  
भग० ८। अध्ययनार्थं, प्रयत्नविशेषः। भग० ८१।  
अङ्गसूत्रस्य-अध्वकसितं, विषयसंगहनविषयम्। औप०  
६०

- अञ्जायस्सन्ति-अप्ययमनः । दश० ३५ ।  
 अञ्जायस्ते-अपीनम् । आय० ३४० ।  
 अञ्जाय-अप्ययनम् । विशे० ५०६ । अथायः । मग० ४ ।  
 वृषुमीनां मनःपीडानां वा आयः । मग० ४ । पाठः ।  
 उत० ७१३ । धार्योऽप्ययिनोः । आय० ६८ । अप्यय-  
 नानि । उत० ७१३ ।  
 अञ्जायहो-अथाहहः, वृक्षयोनिषु वृक्षेषु कर्मोपादान-  
 निष्पादितेषु उपयुग्मि अप्यारोहतीति, वृक्षोपनिजानो वृक्षः,  
 यतीवृक्षाभिधानः कामवृक्षाभिधानो वा वृक्षः । मृत्त० ३५२ ।  
 अञ्जायमिञ्ज-अभ्युप्येति । टाणा० ३५१ ।  
 अञ्जययमं-उपयानितकं । वृ० वृ० ७४ आ ।  
 अञ्जरीणं-अशीरम् । विशे० ४५० । अशीरधुननाम ।  
 दश० १६ । यहीयमाने न क्षीयते ममः तद् अशीरम् ।  
 टाणा० ६ ।  
 अञ्जुययानो-अममममममममि रि ( आमकितः ) । नि०  
 वृ० द्वि० ७१ आ ।  
 अञ्जुस्तिरं-अनुपिरम्-अमर्गधिका दशिका निपया च ।  
 औप० २१४ ।  
 अञ्जुमिरे-नृणादिच्छत्रं न । औष० १२३ ।  
 अञ्जुमिरो-एहित्रीनिकागकितः प्रसिधिमगनगहितो वा ।  
 वृ० द्वि० २५२ आ ।  
 अञ्जोमर-अप्यवपूरकम्, स्वार्थनृत्तारहणप्रक्षेपणम् ।  
 दश० १७४ । नि० वृ० प्र० १४० आ ।  
 अञ्जोयरप इ-भोजनद्रोषः । मग० ४६६ । स्वार्थनृ-  
 त्ताहणे गत्प.चर्षं कवपनेरमप्यवपूरक । टाणा०  
 ४६० ।  
 अञ्जोयवमियाप - आभ्युपगमिनी, प्रवज्याप्रतिगतिनी  
 प्रदानसंभोगमयननेमलुगमारीनामत्रीकारेण निर्वृता वेदना ।  
 मग० ६५ ।  
 अञ्जोयवज्जन्ति-अप्युपयन्ते-तदेकचित्ता अञ्जन्ति तद-  
 जन्तव्यं थापिहनेनोपययन्ते उपपन्ना पटमानाः । टाणा० २९२ ।  
 अञ्जोयवज्जणं-अप्युपयानं, क्वचिदिष्टार्थंऽप्युपयानि-  
 मित्तः । टाणा० १३४ ।  
 अञ्जोयवज्जिञ्ज-अभ्युपयन्ते, अनिश्चये क्वचिन् । दश०  
 ४५ ।  
 अञ्जोयववर्ण - अप्युपयानः, विपयविर्णयान् ३११ ।  
 आय० ७८ ।  
 अञ्जोयववर्णो-अप्युपयानः, अप्ययः । औष० १९६ ।  
 अप्युपयानः । आय० ३५१, ९२ ।  
 अञ्जोयववर्ष-अप्युपयानः, अप्ययः । दश० १५१ । अ-  
 प्युपयानिनामापिहनेनोपयानः । मग० ६५० ।  
 अञ्जोयववन्ते-अप्युपयानः, तदेकचित्ता गत । मग०  
 २९२ । मूर्तिगनः । विपया ३८ ।  
 अञ्जोयवव्रो-अप्युपयानः । आय० ३५१ ।  
 अञ्जोयवयव-अप्युपयानः, प्रवज्याप्रतिगतिता । प्रथ० ३५३ ।  
 अञ्जोयान-अप्युपयानः-धदा । म्य० प्र० २१३ आ ।  
 अञ्जोयपसे - अमन्नामनः, प्रवज्याप्रतिगतिः मन्नामनः ।  
 मृत्त० २३४ । वीनरागः । मृत्त० २३५ ।  
 अमालोऽञ्जुवृत्ति-( अमालोऽञ्जुवृत्तिः ), वृत्ते वृत्ते मिश्रणम् ।  
 उत० ४०४ ।  
 अमानम-अनामोमः, अननुमन्मं वा । दश० १३९ ।  
 अमर्द-आतम्, मंदिदाप्यवयवम् । दश० वृ० १५४ । अतन्म्य  
 पीडितव्येदे वनमिति वृत्ता । अमर्दोऽम्य मोडमनाम ।  
 प्रथ० २६ । आर्तवयान - मोहाकन्दनविनयनानिश्चयं  
 वयानम् । आय० ५८० ।  
 अट्टहासं-अहाहास्यम् । आय० १९१ ।  
 अट्टहासो-अट्टहासः । आय० ८३० ।  
 अट्टणमाला-व्यायाममाला । मग० ५४२ । अट्टणमाला ।  
 औप० ५५ ।  
 अट्टणे-अट्टनः, योगमहप्रदे आलोचनाद्वयान्ते उच्चमिर्गो  
 मट्टिनोः । आय० ६६४ ।  
 अट्टणो-अट्टनः, उच्चमिर्गो जितशुभराजमयः । उत० १९० ।  
 अट्टुहट्टवसट्टे-आर्तु.वार्तावगातो । उत० ३३१ ।  
 अट्टुहट्टा-आर्तु.वार्तिगताः, आर्तु.वार्ताः । आय० ३९५ ।  
 अट्टुहट्टो-आर्तु.वार्ताः । आय० ३८८ ।  
 अट्टुनियट्टियच्चिस्ता-आर्तुनिर्वर्तिनचित्ताः, आर्तु निर्वर्तिनं  
 चित्ते येनै तथा, आर्तादा निर्वर्तिनं चित्ते येनै । मग०  
 १२१ ।  
 अट्टमगा-अमिमारकाः । नि० वृ० द्वि० ११ अ ।  
 अट्टमहाइ-अर्दविन्दं । उत० गा० ४८६ ।  
 अट्टवमहा-आर्तवगातो । आय० ३८८ ।

अट्टहासं-अट्टहासम् । भाव० ६३४ ।  
 अट्टा-आतां, दुश्चिनः रागद्वेषोपदेय । भाषा० १८३ ।  
 अट्टाल-प्राकारसम्बन्धिन्यट्टालाहौ । भाषा० ४११ ।  
 अट्टालकं-प्राकारकोष्ठकोपरिवर्ति आयोपनस्थानम् । उक्त० ३११ ।  
 अट्टालक-अट्टालकः, प्राकारस्वोपरि मृत्याध्रयविशेषः । जीवा० १५९ ।  
 अट्टालका-प्राकारस्वोपर्याध्रयविशेषाः । मय० १२७ ।  
 अट्टालगं-अट्टालकं । जीवा० १६९ ।  
 अट्टालग-अट्टालकः, प्राकारोपरिवर्त्ता आध्रयविशेषः । प्रश्न० ८ । अट्टालकम्, प्राकारोपर्याध्रयविशेषः । मय० २३८ ।  
 अट्टालगा-पागारस्स अहे अट्टहास्यो मग्नौ । नि० चू० प्र० २६५ अ ।  
 अट्टालगो-अट्टालकः, प्राकारस्वोपरि मृत्याध्रयविशेषः । जीवा० २५८ ।  
 अट्टालयं-अट्टालकं । भाष० ६७५ ।  
 अट्टालय-अट्टालकाः, प्राकारस्वोपरिवर्त्त्याध्रयविशेषाः । जै० प्र० ७६, १०६ । औप ३ । प्राकारस्वोपरि मृत्याध्रयविशेषाः । प्रजा० ८६ । प्राकारस्वोपर्याध्रयविशेषः । जीवा० २७५ ।  
 अट्टालयसंठिमो-अट्टालकसंस्थितः । जीवा० २७५ ।  
 अट्टे क्षाणे-ध्वानस्य प्रथमो भेदः । मय० १२३ ।  
 अट्टो-आर्षः, मनसा । विष्ण० ८१ ।  
 अट्ट-अर्थः । आप० ७१३ ।  
 अट्ट-अर्थान्, वर्णादीन् । जै० प्र० ९८ । अर्थान् । उक्त० ३९० ।  
 अट्टकरो-अर्थकरणं, अपांभिनियंत्तकधिकारण्यदि येन द्रव्यादि निरापयते । अपार्थं वा करणं, यत्र रासोऽपार्थिन्ययते । अर्थं एव वा तैस्तैरुपायैः क्रियन्त इति । उक्त० १९५ ।  
 अट्टकर्ममतसंनिषिद्धा-अष्टौगतरत्नममतसंनिषिद्धा, प्रभाषिणोः । भाष० ३४३ ।  
 अट्टक-अट्टकः । आप० १४४ । अट्टकम्-धनुर्विद्याय-पिकृततन्त्रकर्मणावकप्रमाणम् । मूल० ३१८ ।  
 अट्टगुणात्-अट्टगुणाः । भाष० ८३ ।

अट्टगुणे-अट्टगुणाः । टाणा० ३९४ ।  
 अट्टजायं-अर्थकार्यां अर्थिकार्यां अर्थप्रयोजनानां वा । चू० तू० २४२ अ ।  
 अट्टजुत्तं-अर्थयुक्तं-अर्थते-गम्यत इत्यर्थस्तेन युक्तमन्त्रितम् । उक्त० ४६ ।  
 अट्टमियं-अट्टाष्टमिका, मिश्रप्रतिमाविशेषः । अन्त० २९ ।  
 अट्टमिया-अट्टाष्टमिनि । मय० ७७ । अट्टाष्टमम् । टाणा० ४४० ।  
 अट्टपयति-अनुभागसंक्रमस्वरूपनिर्धारणम् । टाणा० २२२ ।  
 अट्टपिष्टपुट्टा(निष्ठिया)-अट्टवारपिष्टप्रदाननिष्पन्ना । जीवा० ३५१ ।  
 अट्टपिष्टुणिष्ठिया-अट्टपिष्टनिष्ठिता, अट्टभिः सावप्रतिष्ठैः पिष्टैर्निष्ठिता । प्रजा० ३६४ ।  
 अट्टफास-अट्टस्वर्शम्, मादरपरिणामम् । मय० ९६ ।  
 अट्टभाह्या-अट्टमभागानामो मानविशेषः । मय० ३१३ ।  
 अट्टमंगलय-अट्टमन्त्रलक्षणम्, अष्टेति संख्याशब्दः, अट्टमन्त्रलक्षणीति चारण्डः संज्ञाशब्दः । जै० प्र० १९३ ।  
 अट्टमभक्तं-अट्टमभक्तम्, त्रिराशोपवासः । भाष० २२८ ।  
 मयपरिमाणोपवासप्रश्नं, यद्वाऽष्टमभक्तमिति साव्यं नाम, तच्चैवम्-एकैकस्मिन् दिने द्विपारशो जनौचित्येन दिनप्रयस्य पण्णा भक्तानामुत्तरपारणवदिनयोरेकैकस्य भक्तस्य च त्यागेनाद्यं भक्तं त्वाज्यं यत्र । जै० प्र० १९७ । उपवासप्रयस्य संज्ञा । जै० प्र० ११८ ।  
 अट्टमप्रतिज्ञा-अट्टमभक्तिका, दिनप्रयसनाहारिणः । जै० प्र० २३१ ।  
 अट्टमेणं-अट्टमेज, उपवासप्रयस्यलक्षणम् । जै० प्र० १९१ ।  
 अट्टय-तर्कः । भाष० ६४३ ।  
 अट्टरसमिपउत्त-अट्टरती रत्नः पृथ्वागतिः मय्यद् प्रार्थयं युक्तम् । जै० प्र० ३९ ।  
 अट्टसहार्दि-अर्थगतानि यावु गतिं ता अपेक्षानि-वास्तानि, अपवा अपार्थानां-दृश्यावाणां दानानि यावन्मना अपेक्षानाम्ना पृथ्वागतिः । जै० प्र० १४३, मय० ४८१ ।  
 अट्टमने-अट्टमने । भाष० १४७ ।  
 अट्टमयं-अट्टापिष्टं दानम् । जै० प्र० ९० ।  
 अट्टमयंसिद्धौ-अट्टमयंसिद्धः । भाष० १४१ ।

अट्टसहस्रम्-अष्टमहयम्, अष्टोत्तरं महयम् । जं० प्र० ५१० ।

अट्टसहस्रस्यरक्तचणसत्यागा-अष्टा महयाणि-अष्टसहस्रमरुपाका वरकामनशलाका-वरकामनमण्यः शलाका येषु मानि । जं० प्र० ५९ ।

अट्टसिरे-अष्टशिराः, अष्टकोणः । औप० १० ।

अट्टसौघणिश्रे-अष्टमुवर्णा मानमस्त्रेयष्टसौघादिकं, सुवर्णमानमिदम्-धरवारि मधुरवृणकलान्येकः स्वेतमर्षयः, योऽस्य स्वेतमर्षय एकं धान्यमायकले, द्वे धान्यमायकले एकः गुडा, पत्र गुडा एकः कर्ममायकः, योऽस्य कर्ममायकाः एकः सुवर्णः । जं० प्र० २२६ ।

अट्टा-अर्थक्रिया, अर्थाय यत्करणम्, क्रियायाः प्रथमो भेदः । आव० ६४८ ।

अट्टाणं-अस्थानम्, अयुक्तं, असाम्प्रतं वा । सू० १९० । शब्दप्रतिषेधावसतिः । वृ० वृ० १९७ आ ।

अट्टाणवृणणा-अस्थानस्थापना-पूर्ववप्रहादिके अस्थाने प्रत्युपेक्षितोपधेः स्थापनं-निष्प्रेडः । ठाणा० ३६२ ।

अट्टादंष्ट्रे-अर्थाय-शरीरस्वजनयमार्गिप्रयोजनाय दण्डः-प्रयस्यावराहिणा । मम० २५ ।

अट्टायय-(अष्टापदः) पर्वतविशेषः । आव० ८२७ ।

अट्टापदं-अर्थापदम् । आव० ३५२ ।

अट्टारसर्वको-अष्टादशवक्त्रः, अष्टादशमणिको द्वारः । आव० ६८९ ।

अट्टारसर्वजणाउले-अष्टादशयज्ञनाहुलम् । मृग० २९३ । ठाणा० १७७ ।

अट्टायप-अष्टापदम्, युज्यम्, अर्थवदं वा । दण० १९३ ।

अट्टायधो-पर्वतविशेषः । आव० १४८ ।

अट्टाययं-अष्टापदम् । जीवा० २७६ । अर्थपदम् । आव० ४१२ । शारिफलकयुतं तद्विषयकलात् । जं० प्र० १३७ । घृतफलकम् । प्रथ० ८४ । पर्वतविशेषः । आव० १५१ । घृतकीटाविशेषः । सू० १८१ । घृतफलकं, वैद्याः पर्वतविशेषो वा । प्रथ० ७० । अष्टापदः, पर्वतविशेषः । आव० ८२७ । घृतफलकम् । जं० प्र० ११४ ।

अट्टाययसेमिहरसि-अष्टापदमैदानिस्थाने । जं० प्र० १५८ ।

अट्टाहिअं-अष्टादिशाम्, अष्टानामर्षा-रिवगानां मयाहासोऽप्याहं तद्वदिन यस्यां मदिमायो वा अष्टादिशाम् । जं० प्र० १९३ ।

अट्टाहिया-अष्टादिका, महामदिमादिनामः । जीवा० ३९५ । जं० प्र० ४२३ ।

अट्टि-अग्नि, कीटमम् । प्रथ० ८, भग० १३५ ।

अट्टिकच्छमा-ने अभिवहृलाः कच्छगाम्ने अभिवहृलाः । प्रमा० ४४ ।

अट्टिकच्छमो-अस्त्रिकच्छमः, कच्छादिनामः । जीवा० ३६ ।

अट्टिकरकम्-मन्दुकोदकम् । दण० १७७ ।

अट्टिरांटे-अस्त्रिमण्डं । भाष० ३८९ ।

अट्टिग-अस्त्रिकम्-कीटमम् । भग० ३०८ ।

अट्टिचम्मापणदं-अस्त्रिकमार्गवन्दम्, अरक्षीन चर्मावन-द्वानि यस्य । भग० १२५ ।

अट्टिज्जामे-अस्त्रिकवामम्, अग्नि च तद्व्यामं च-अग्निना इयामतीकृतं-आधारितपर्यायानाम् । भग० २१३ ।

अट्टितरगामं-अस्त्रिकवामम्, पूर्वं शर्दमानकनामकम् । आव० १८९ ।

अट्टिभेजणं-अस्त्रिकवामम्, कीटमामर्शनम् । प्रथ० २७ ।

अट्टिमिज्ज-अस्त्रिमिज्जः-प्रीतिप्रयजीवविशेषः । उल्ल० ६९५ ।

अट्टिमिजा-अस्त्रिमिजा, अस्त्रिकवामम् । सू० ४०८ । भग० ५२६ ।

अट्टिय-आधिकः, अर्धेन इत्यर्थः-मोक्षः, स प्रयोजनमर्थेति अर्थः स एव प्रयोजनरूपोऽस्यास्तीति । उल्ल० ६५ ।

अट्टियकट्टुट्टियं-अधिकप्रोत्थनम् । दण० ३२९ ।

अट्टियगामं-अस्त्रिकवामं-धौवीर्य्य प्रथमचानुर्मागमः । भग० ६६१ ।

अट्टिलग्गो-सुट्टि कृत्वा । आव० ६९० ।

अट्टिह्वो-अस्त्रि (रीजम्) । नि० वृ० प्र० ५६ आ ।

अट्टिसरफरता-अग्निमरुज्ज्वा-कावाटिकाः । व्य० टि० २७३ आ ।

अट्टिसिणा-कम्मगोदान्नमं गोशम् । ठाणा० ३९० ।

अट्टि-अस्त्रि-मग्ना । अनुल० ५ । एट्टमरुज्ज्वा । नि० वृ० टि० १७२ आ ।

अट्टुपत्ती-ववहायो । नि० वृ० नृ० १०१ आ ।

अट्टे-अर्थः, भावः । भग० ३४ ।

अद्वैति-निवृत्ति । नि० चू० दि० ६२ आ ।  
 अद्वैत-अर्थित्वं च धर्मः । आष० ३४१ । अर्थ-विज्ञानम् ।  
 सूत्र० ३९८ । अर्थेन इत्यर्थो बोधः । उच० ६५ ।  
 अद्वैत्यकण्ठा-अभ्यमजिनानां महाविदेहविजानानां वा साधवः ।  
 सू० तृ० २५४ आ ।  
 अद्वैतमकुन्दैरिभ-अद्वैतमकुन्दैरिभमम्, दण्डो निग्रहस्तेन  
 निवृत्तं राजदेयतया व्यवस्थापिते दण्डिभे, कुण्डः-अभ्य-  
 म्प्रमिदहस्तेन निवृत्तं ग्रन्थं कुण्डलिनम्, ते अविद्यमाने यत्र  
 । प्रमोदे सः । विद्या० ६३ ।  
 अद्वैत-चतुरस्रीतिरुज्ज्वलितसदृशस्त्विति । जीवा० ३४५ ।  
 अद्वैतगं-अद्वैतगं, चतुरस्रीतिरुज्ज्वलितसदृशस्त्विति । जीवा०  
 ३४६ । सख्याविशेषः । ठाणा ८६ । भग० ८८८ ।  
 अद्वैतज्ञः, सख्याविशेषः । सूत्र्य० ११ ।  
 अद्वैतानि-सख्याविशेषः । ठाणा० ८६ ।  
 अद्वैत-अद्वैतः, संख्याविशेषः । सूत्र्य० ११ । भग० २३०,  
 २७५, ८८८ ।  
 अद्वैतालं-अद्वैतत्वारिणम्, प्रसस्तं वा । जीवा० १६० ।  
 अद्वैतालच्छन्दो देशीयचमत्कार प्रसंशाकाची । प्रज्ञा० ८६ ।  
 देशीयन्दः प्रशंसाकाची अद्वैतत्वारिणश्चेदभिन्नचित्छिद्यस्य  
 कृता चमत्कारा येषु तानि । जे० प्र० ७६ ।  
 अद्वैतालकौटुम्बरस्य - अद्वैतत्वारिणश्चेदभिन्नचित्छिद्य-  
 न्द्रगोपुररचितानि । सम० १३८ ।  
 अद्वैतालकौटुम्बरस्य-अद्वैतत्वारिणश्चेदभिन्नचित्छिद्य-  
 नाकारिणश्चेदभिन्नचित्छिद्यचित्छिद्यः कोष्ठकाः - अपवर्क  
 रचिता-स्वयमेव रचनां प्राप्ता येषु सतः । प्रगन्तकौष्ठ-  
 रचितं वा । जीवा० १६० ।  
 अद्वैतालिय (ल) -राष्ट्रः किल प्रसंशावाचकः । मग०  
 १३८ ।  
 अद्वैतगतौ-देशे देवेन हिंसा । द्य० प्र० १६२, अ ।  
 अद्वैतविपुलुचं - अद्वैतविपुलुचम्, अद्वैतविपुलुचम् ।  
 उच० ३७५ ।  
 अद्वैतमिमी-अद्वैतमिमी । भाष० ३९७ ।  
 अद्वैती - अद्वैती, अद्वैतयो-द्वैतरजननिवामत्थाना । भगव ।  
 जे० प्र० ११ ।  
 अद्वैत्या-अभ्यमजिनिनां । जीवा० ४१ । अद्वैत, चर्मप-  
 तिनिर्णय । प्रज्ञा० ४९ ।

अद्वैत्यालित्त-आधिर्य, वस्तुत्वारं कृत्वा । दश० ३८१  
 अद्वैत-चतुर्ष्वपति, लगयति । आष० ६९० ।  
 अद्वैत-लेमपक्षिविशेषः । जीवा० ४१ ।  
 अद्वैतोलिया-बेवोनाम राजा तस्य कुहिता । सू० प्र० १९१  
 अ । संदीर्याए । सू० प्र० १९१ अ ।  
 अद्वैत-विपुलुचलितम् । जीवा० २०७ । तिर्यक् । आष० ३६० ।  
 अद्वैतपुत्राण-प्राद्विषये प्रसिद्धम्, चदन्यविषये पिशीरिति  
 रटम् । जीवा० २८२ ।  
 अद्वैत्या-चंकिता । नि० चू० प्र० १६७ अ । चिह्नी । भग०  
 ३९५ ।  
 अद्वैतियकु-अद्वैतियकु-कर्महीनम् । ओष० १७७ । निप्र-  
 कीर्णम् । नि० चू० तृ० १३ अ ।  
 अद्वैतियद्व-अकमम् । ओष० १७६ ।  
 अद्वैत्या-आदिता, आदिता, लौकिकमन्त्रकरणम् । आष०  
 ४६५ ।  
 अद्वै-आलयम्, परिपूर्णम् । औष० १०११ ।  
 अद्वै-आलय, धनधान्यादिभिः परिपूर्णः । भग० १३४ ।  
 अद्वैत-आलय, मन्मथः । आष० ३६४ ।  
 अद्वैत-अद्वैतः, विशीयः । दश० १०४ । आर्धरामिकः ।  
 द्य० डि० २५५ आ ।  
 अद्वैत-धनपति । ठाणा० ४९१ ।  
 अद्वैत-अद्वैत-अद्वैत-आदिता । आष० ३६ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । आष० ८४८ ।  
 अद्वैत-अद्वैत-आदिता । आष० ६२० ।  
 अद्वैत-आद्वैत-धनपतिः सुतकारणपरामुषे अपवा  
 आद्वैत-विद्यनाया इत्या-पुत्र्या आद्वैत्या । ठाणा० ४८८ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । नि० चू० प्र० ११७ आ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । सू० डि० १९ अ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । आष० ३७३ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । नि० चू० प्र० १७७ आ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । दश० प्र० १४५ । पापम् । विद्ये० ११०९ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । आष० ३७३ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । दश० प्र० १४५ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । आष० ३७३ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । दश० प्र० १४५ ।  
 अद्वैत-आदिता-आदिता । आष० ३७३ ।



वा क्रीडा कृतवृत्त्यस्यापि खलित्नेनाहार्यैः काष्ठकृत्तुस्तृणिक-  
काचमार्दिघटितप्रजननैर्षोण्दिवाद्यप्रदेशामेवमम् । आव०  
८२५ । वृचकक्षोरुवदनादिमोहोदयोद्भूतस्तीनो मैथुना-  
ध्यवमायास्वयं कामः । आ० ८२५ । मैथुनादावर्षकिया-  
मम्प्राप्तकामस्य चतुर्दशो मेदः । दण० १९४ ।

अर्णगपडिसेवणी-मैथुने प्रधानमङ्गं मेरुं भगवत् तत्प्र-  
तिषेधोऽनङ्गं तेनानङ्गनाहार्मिदिगादिना अनङ्गे वा-मुग्गादौ  
प्रतिषेधाऽन्ति यस्याः अनङ्गं वा-काममपरापरपुरुषसंपर्कतो-  
ऽतिशयेन प्रतिषेधत इत्येवंशंलाऽनङ्गप्रतिषेधिणी । टाण०  
३१३ ।

अर्णगसेवा-सुरण्यगारे, मद्रनिमगं इणन्त । नि० चू०  
तु० ५ अ ।

अर्णगसेना-अनङ्गमेना, गणिकासुख्या । अन्त० २ ।

अर्णगसेणो-चम्पावासुख्यः स्वर्णकृत्, कामाप्रहामालुष्य ।  
वृ० द्वि० ४४ अ ।

अर्णगरति-अनङ्गक्रीडा । वृ० तु० १०० आ ।

अर्णतं-अनन्तम् । विशे० ३९६ । केवलतमानाऽनन्तत्वात् ।  
जीवा० २५६ । अनन्त, अनन्ताधैवियज्ञानस्वरूपत्वा-  
दन्तरहितः । भग० ७, मम० ५ । अपरिमाणम् । भग० ६६ ।  
अनन्तकर्मपुत्रलनिर्वृत्तत्वात्तदन्तमिति अनन्ताना वा बवानां  
हेतुर्वृत्तदन्तम् । ओष० १०८ ।

अर्णतकार्यं-मूलकादिकम् । प्रजा० २५९ ।

अर्णतकिरिया-अनन्तकिया, परम्परासुक्तकला । उज०  
५८३ ।

अर्णतकुत्तो-अनन्तकृत्, अनन्तवाराद । भग० १३० ।

अर्णतगं-वम्प्यादिवम्बम् । ओष० ३४ ।

अर्णतगमेजुत्त-अनन्ता-अर्षवमिता गम्यते वम्पुररूप  
मेमिति गमा-वम्बुपरिच्छेदप्रकारा नामादवम्बुक्तानि-  
अन्विनान्यनन्तगमयुक्तानि । उज० ३४२ ।

अर्णतगुणपरिहाणीय-अनन्तगुणपरिहाणि, अनन्तगु-  
णानां परिहाणि । ज० प्र० १२२ ।

अर्णतगुणविसिद्धतरा-अनन्तगुणविसिद्धतरा । मूर्ध०  
२९४ ।

अर्णतघाई-अनन्तघानित-अनन्ते ज्ञानदर्शने इत्यु शीले येया  
ते । उज० ५८० ।

अर्णतजिणेण-रागद्वेषेना, ज्ञानो निम्बध । आच० ४३० ।

अर्णतजीघिया-अनेतजीघिका-पनकादयः । टाण० १७२ ।

अर्णतणाणी-अनन्तनाणी, शेरही । आव० ६६३ ।

अर्णतते-अनन्तकम्-पुत्रधेनिक क्षेत्रम् । टाण० १४७ ।

अर्णतमिस्त्रिया-अनन्तमिथिना, मूलकादिअनन्तकार्य  
तस्यैव सत्परिपाण्डुपत्रैरग्येन वा केनचिन्प्रत्येकवनमगतिना  
मिश्रमरालोक्य सर्वोऽप्येवोऽनन्तकार्यिक टनि वदन्त माया ।  
प्रजा० २५९ । टाण० ४९० ।

अर्णतमीसग-अनन्तमिथा, मत्याभूयाभापामेद । दण०  
२०९ ।

अर्णतयं-अनेतकम्-जिनम् । मम० १५३ ।

अर्णतरं-अनन्तरम्, मङ्गिभूतम् । मूर्ध० ३४ । मम०  
१२८ ।

अर्णतरगाट्टिया-अनन्तरप्रथिता, अनन्तरं ध्यवस्थापितं  
प्रथियमि मह प्रथिता (जाट्टिया) । भग० २१४ ।

अर्णतरपञ्जता-अनन्तरपर्याप्तका-पथममयपर्याप्तका ।  
टाण० ५१४ ।

अर्णतरपुरफरडे-अनन्तरपुरस्कृतः, अनन्तरं-अव्येवधा  
नेन पुरस्कृत-अप्रेकृतो य म । मूर्ध० ९० ।

अर्णतरवेधे-येषा पुद्गलाना बदानां गतामनन्तरं समयो  
वर्तने तेषामनन्तरबन्ध भग० ७९१ ।

अर्णतरहिता-अने टिया-अना न अना-अनेता मयिता ।  
नि० वृ० प्र० २५७ आ । नि० चू० द्वि० ८२ आ ।

अर्णतरहियाप-अनन्तरि(रहि)तया - अव्यवहितया ।  
आचा० ३३७ ।

अर्णतरा-अनन्तरी, गण्यातीनी । आव० ७६९ ।

अर्णतरिया-अनन्तरिका, अनन्तस्य विच्छेदस्य कारणम् ।  
भग० २२० ।

अर्णतरो-अनन्तर-वर्तमान समय । टाण० ५१४ ।

अर्णतरोगाट्टे-अनन्तरोगावगाट्टम्, येषु प्रदेशोऽन्त्यावगाट्ट-  
स्तेष्वेव वदवगाट्टे तदन्तरोभाविनावावगाट्टावदन्तरोगावगा-  
ट्टम् । भग० २३ । अव्यवधानेनावगाट्टम् । जीवा० ६० ।

अर्णतरोगाट्टे-उत्पत्त्यनन्तसमयावगाट्टस्यम् । भग० ९३७ ।

अर्णतरोघयणगा-उपपत्त्यलिप्रथममयवर्तिन । प्रजा०  
३०४ ।

अर्णतयत्तियाणुप्येहा-अनन्तवर्तितानुपेक्षा । टाण०  
१०२ । अवमन्तान्म्यानन्तवर्तितानुचिन्तनम् । औ० ४५ ।

अणंतविजय-आगामिन्यां उरुहर्षिण्यां भरते चतुर्विंशे जिन-  
नाम । सम० १५४ । एरुवते भविष्यजिनः । सम० १५४ ।  
अणंतवीरिय-अनन्तवीर्यः । आव० ३९२ ।  
अणंतसंजय-एकेन्द्रियादिषु सम्म्यग् यतः । आचा० ४२९ ।  
अणंतसंसार-अपर्यवसितसंसार अयम्याः । अत्त० ७१३ ।  
अणंतसंसारवहणा-अनन्तसंसारवहनः । उत्त० ३३० ।  
अणंतसेणे-अनन्तसेनः, अन्तकुरशानां तृतीयवर्गस्य  
द्वितीयाध्ययनम् । अन्त० ३ । भरतेऽतीतोत्तरसिंघीकूलकरः ।  
सम० १५० । टाणा० ५१८ ।  
अणंतसो-अनन्तसः, अविच्छेदेन । सूत्र० ३४ ।  
अणंतहिअ-अनन्तहितम्-मोक्षः । दश० २५० ।  
अणंता-तित्यकरा । वृ० प्र० २२४ आ ।  
अणंताणुवंधी-अनन्तानुवन्धी, अनन्तं संसारमनुबध्नन्ती-  
त्येवंशीलः । प्रज्ञा० ४६८ । षोडशकथाये प्रथमो भेदः । सम०  
२१, आचा० ११ । अनन्तं भवं अविच्छिन्नं करोति,  
अनन्तो षाडनुबन्धो यस्य । टाणा० ११४ ।  
अणंतियं-अनन्तिकम्, नजोऽस्पर्यत्वान्नात्यन्तमन्निकम-  
द्वारासमित्यर्थः । भग० २१७ । अनासन्नम् । भग० २१७ ।  
अणंतेहि-अनादित्वात् अनन्ताः । भग० ६१० ।  
अणंतो-अनन्तः अनन्तकर्माज्ञयात्, अनन्तानि वा  
ज्ञानार्थिन्यस्येति, चतुर्दशो जिनः, रत्नखचितमनन्तं दाम-  
स्वप्ने जनन्या दृष्टमतः । आव० ५०४ । अपर्यवसितः ।  
उत्त० २१३ । अनन्तानामेवैकं शरीरम् । औप० ३४ ।  
अणंघो-राजविशेषः । नि० चू० द्वि० ४२ आ ।  
अणंखिले-अनाम्लम्-स्वस्वादाद्यचितम् । आचा० ३४६ ।  
अण-अगाः, अणन्ति-अन्वयन्ति अविक्लहेतुत्वेनासातवेद्यं  
नारकाद्यायुष्कमिति, अनन्तानुबन्धिनः क्रोधादयो वा ।  
आव० ८१ । नारकाद्यायुष्कं च क्षण्यन्त्याकारयन्तीत्यणाः,  
अनाः । विशे० ५६१ ।  
अणइकमणाइ-अनन्तिकमनं, मयमयोगानामनुबध्ननम् ।  
उत्त० ५४३ ।  
अणइफला-अनाख्याता । (गणि०)  
अणइयत्तिध-अनन्तिक्य-यथावर्षितं वस्त्रागममिहितं  
तथाऽनन्तिक्यम् । आचा० २५६ ।  
अणइयर-अनन्तवरं, अविद्यमानद्रुमताया प्रधानं न विद्यते-  
ऽनन्तं यस्मान्नत । औप० ५४ ।

अणईपत्तो-अनीतिपत्रः, न विद्यते इति-गङ्गुरिकादिरूपेति  
रहितपत्रः । जीवा० १८८ ।  
अणकरो-भ्रमणकरः, भ्रमणं-पापं करोतीति, प्राणवधस्य  
चतुर्विंशतितमः पर्यायः । प्रश्न० ६ ।  
अणको-अणकः, विज्ञातदेशासी म्हेच्छदितोषः । प्रश्न०  
१४ ।  
अणफिखत-परीक्षितः । नि० चू० द्वि० ८१ आ ।  
अणगार-अनगरः, सूत्रकृताश्चै पञ्चममध्ययनम् । आव०  
६५८ । साधुः । दश० ६२ । सूत्रकृताश्चैकविंशमध्ययनम् ।  
उत्त० ६१६ । चतुर्दशसतके नवमोद्देशकः । भग० ६३० ।  
द्रव्यतो भावतथाविद्यमानागरः । दश० १५९ । न विद्यते-  
ऽगारं शूद्रमेवामित्यनगाराः-यतयः । आचा० ३६ । तीर्थिक-  
प्रवृत्तिः । आचा० ३०९ । अनगारी-यतिः । उत्त० ५७८ ।  
साधुः । आव० ३२९ ।  
अणगारमग्ने-उत्ताराध्ययने पञ्चमिहत्तमाध्ययनम् । सम०  
६४ ।  
अणगारसुखं-सूत्रकृताश्चै एकविंशतितमाध्ययनम् । सम०  
४२ ।  
अणगारस्सभिक्खु-अनगरास्वभिक्खुः, अस्वेषु भिक्खुरस्व-  
भिक्खुः-आस्थापनाजीवनादनामीकृतत्वेनामत्सोयानेव शूद्रि-  
षोऽनादि भिक्षत इतिकथा, स च यतिरेव, ततोऽनगा-  
रथावस्वभिक्खुश्च । उत्त० १९ ।  
अणगारियं-अनगारिकं (अनगारितं वा), अनगारेषु-भाव-  
भिक्खुषु मयं अनुष्ठानम् । उत्त० ३३६ ।  
अणगारे-अनगरः, न विद्यते अनारं-शूद्रं यस्यासौ माधुः  
जीवा० १४२ । भावितास्मा लब्धिसामप्योत् । भग०  
५९६ । न विद्यते अनारं-शूद्रं द्रव्यतो भावतथं यस्यासौ  
स्यत इति । प्रज्ञा० ३०३ । न विद्यते अनारं-शूद्रं यस्य सः ।  
सूर्य० ४ । अगाः-शूद्रास्तेऽभिक्खुभ्रमणारं तत्र विद्यते त्यक्क-  
हपाशः । आचा० ४०३ ।  
अणगारो-भ्रमणारः, क्रममिव कालान्तरक्रेमानुभवहेतु-  
तया भ्रमणम्-अष्टप्रकारं कर्म तद् करोतीति, तथा तथा  
सुखचनविपरिपत्रप्रतिभिरुपचिनोतीति । उत्त० २० ।  
अणगात्तो-सुखकालः । वृ० वृ० २३ अ ।  
अणघा-गिरोग । नि० चू० प्र० ८० अ ।  
अणघाधिअ-अनन्तायिनम् । औप० १०८ ।

अणश्चाधितं-वक्ष्यमात्मा वा यत्र न नार्तितः । ठाणा० ३६१ ।  
 प्रस्तोदनं प्रमाजने वा । उता० ५४० ।  
 अणश्चासाद्वाणयिण्य-आसातना तत्तपिषेधरूपो विनयो-  
 ऽनत्यासातनाविनयः । भग० १२२ ।  
 अणञ्जं - अनार्यम् । अनार्यवचनत्वात् । अथर्द्धारस्य  
 तृतीयं नाम । प्रथ० २६ ।  
 अणञ्जघम्ने-अनार्यधर्म, इरकर्मकारी । सूत्र० १५८ ।  
 अणञ्जभावे-अनार्यभावः । क्रीडादिमान् । ठाणा० २०९ ।  
 अणञ्जे-अन्याप्यः, न न्यायोपेतः । प्रथ० ५ ।  
 अणञ्जो-अनार्यः, स्लेच्छद्वेषितः । दश० २७५ । पापकर्मा ।  
 प्रथ० ४० ।  
 अणज्जाप-अकाले, अस्वाग्यायिके वा । नि० चू० प्र०  
 १० आ ।  
 अणट्टा-अनातं - आर्तध्यानविकलं । उता० ४४८ । मकल-  
 वोपविगमतोऽबाधिता । उता० ४४९ ।  
 अणट्टा-अनर्थक्रिया, अनर्थाय यत्करणम्, क्रियाया द्वितीयो  
 भेदः । आच० ६४८ ।  
 अणट्टाद्वे-अर्थविलस्यो दण्डः । सम० २५ ।  
 अणणुगामी-अननुगामुकः-स्थितप्रवीणवत् । आच० ४२ ।  
 अणणं-अनन्यः-ज्ञानादिकं । आच० १६३ ।  
 अणण्कार- 'स्तु-प्रथवण' इति षचनत्वात् आस्नव-  
 आधवः कर्मोपादानं तत्करणशीलं आस्नवकरस्तत्तपिषेधा-  
 दनास्नवकर-प्राणातिपः । प्रथववर्जित इत्यर्थः । ठाणा०  
 ४०९ ।  
 अणण्णय-अनाध्व । आच० २८० ।  
 अणण्णयत्तं-अर्नहस्करवम्-अविद्यमानकर्मवत् । उता० ५८६ ।  
 अणण्णयफले-अनाध्वफल, समय । भग० १३८ ।  
 अणति-प्रज्ञापयति । उता० १२८ । दण्डवति । आच०  
 ७८८ । आदत्ते-गृह्णाति । नि० चू० द्वि० ९ आ ।  
 अणतिक्रमणिज्ज-अनतिक्रमणीयम्, अनात्नीयम् । भग०  
 १३० ।  
 अणत्तट्टिप-अनात्तमार्षिक, नामार्था एव यस्याभययो पर-  
 मार्थकारी । प्रथ० ११३ ।  
 अणत्तट्टियं-अस्वीकृतम् । आच० ३६० ।  
 अणत्तपम्ने-अनात्मप्रज्ञा-नात्मने दिता प्रज्ञा देया नै,  
 आच० ७३४ ।

अणत्ते-प्रणपीडितः । ठाणा० १६५ ।  
 अणत्थको-अनर्थकः, परनामंरथा निरर्थकः, परिमद-  
 स्याद्याविशतितमं नाम । प्रथ० १३ ।  
 अणत्थद्वे-अनर्थदण्डः, अप्रयोजनदण्डः । आच० ८१० ।  
 अणत्थमियसंक्पे - स्यान्निष्कामयभोजनमुक्त्वाप्यथात् ।  
 वृ० वृ० १७९ अ ।  
 अणत्थो-अनर्थ आगयः । प्रथ० १२ । अनर्थदेतु-वार  
 परिमहस्वैवविशतितमं नाम । प्रथ० १२ ।  
 अणत्थिट्टं-अनादिष्ट-अविदोषितम् । वृ० वृ० १६ अ ।  
 अणत्थट्टी-अनन्यदत्ता-यथावशिष्टनपार्थक्येष्टा, भगवदुप-  
 देशादन्यत्र न रमते । आच० १४५ ।  
 अणत्थपरम्-अनन्यपरम-सैयमः । आच० १६६ ।  
 अणत्थारामे - अनन्यारामो-सोक्षमार्गोऽन्यत्र न रमते ।  
 आच० १४५ ।  
 अणत्थज्जो-अज्ञानमाणो । नि० चू० प्र० ११ अ ।  
 अणत्थप्रिय-अवान्तरप्यन्तरमेदः । जीवा० १७७ ।  
 अणत्थपयो-अनन्यप्रय ( अनन्यप्रय ) ब्रह्मगम अवि-  
 द्यमानो वाऽऽत्मन सम्बन्धी प्रयो-द्विष्ण्यादिर्मयम् ।  
 भावधनयुक्त । औप० ३७ ।  
 अणत्थज्जो- ( देशी ) अनात्मवशः । वृ० द्वि० २०९ अ ।  
 अणत्थज्जो-अनात्मवशः । वृ० वृ० २५८ अ ।  
 अणत्थियं-अनर्पितविषयविभागम् । वृ० वृ० ११० अ ।  
 अविदोषितम् । ठाणा० ४८१ ।  
 अणत्थिदंतं-अचलत् । नि० चू० द्वि० २० अ ।  
 अणत्थलो-प्रणवत्, बलवानुत्तमणं । प्रथ० ३० ।  
 अणत्थुचसो-अननुपगत, धृतममपदाऽनुपगम्यतोऽनि-  
 वेदिताम्नेत्यर्थः । विदो० ६२५ ।  
 अणत्थुक्क-कर्म-देय इध्य भक्षित-न ददाति य म ।  
 प्रथ० ४६ ।  
 अणत्थिकं-अनभिक्षानं, अनतिन्हित । आच० १९३ ।  
 नाभिक्षान्ना जीविनादनभिक्षान्ना मत्तेननयः । आच०  
 ३२३ ।  
 अणत्थिगतार्णं-अभिक्षानं । वृ० प्र० १३० अ ।  
 अणत्थिगद्भिः - अविद्यमानमर्थात्-आभिसुव्येन गृहीतं  
 मह्यं-ज्ञानमन्वेष्यनभिसुव्येन - अनभिक्ष । उता० ५६५  
 अनर्हीहना । उता० ५६५ ।

**अणभिंग्वहिय** - न विद्यते अभिसुख्येनोपादेयतया गृहीतं-  
ग्रहणमस्यैवमभिगृहीत । प्रज्ञा० ६० । अनिश्चितमशिव-  
दिभिर्निर्गमभावात् । टाणा० ३०९ ।

**अणभिंग्वहियमिच्छादं सणवत्तिया** - अनभिगृहीतमि-  
च्छादंनप्रत्ययिकी, जेहि न किचि कृतिरिद्यमयं पडि-  
वण्ण । आव० ६१२ ।

**अणभिंग्वहिया**-अनभिगृहीता, अनभिगृह्यता यत्र न प्रतिनि-  
यताधोवधारण सा भाषा । प्रज्ञा० २५६ । अहत्वमृपा  
भाषामेद । टाणा० २१० । अर्थानभिग्रहेण गोच्यते । भग०  
५०० ।

**अणभिजोग**-अनभियोग, इच्छा । आव० ६६८ ।

**अणभिमिहियं**-अनभिहितं, अनुपदिष्ट स्वतिद्वान्ते सूत्रोप-  
विशेष । आव० ३५९ ।

**अणभिमज्ज**-अविच्छेद, अमिच्छं । (मग्ग)

**अणराए**-रणी कालगतै-रिञ्जिअ वि जाव गे राया ठवि-  
ज्जति । नि० चू० तृ० ७१ अ ।

**अणरायं**-राजयुवराजोभयाभिप्रेरहित राज्यम् । वृ० द्वि०  
८० अ । मते रामणे जाव मूलराया गुधराया य एते दोवि  
अणभिसिता । नि० चू० द्वि० १० आ ।

**अणलगिरि**-अनलगिरि । आव० २९९ ।

**अणला** - अर्थाज्ञा, सीधापाल्मेऽसमर्था । वृ० द्वि०  
२८७ आ ।

**अणलो**-अनल, अमर्ष । आव० २५९ । वेयावच्च  
प्रति पुने अत्ये अभिगमे परिहरणे । नि० चू० द्वि०  
४९ आ ।

**अणल्लिअंता**-अनाध्यन्त । ओष० ९७ ।

**अणवः**-स्वल्प । उत० ४२० ।

**अणवें**-अणवान् । मय्यं १४६ । ज० प्र० ४९१ ।

**अणवकंसवत्तिया**-अनवकाएखाप्रत्ययिकी, विगतिक्रिया  
मध्ये पदवर्ती । आव० ६१२ । अनवकाए-स्वसरीराग-  
नपेन-इ संव प्रत्ययो यस्या सा । टाणा० ४३ । इहोक्-  
परलोनापावानपेभस्येति । टाणा० ३१० ।

**अणवगल्ल**-अनवकल्प, जग्मा अनभिभूत । भग० २७६ ।  
३० प्र० १० ।

**अणवज्ज** - अनवपम्, साम्प्रतिककामपर्याय । आव०

४५४ । सामायिकम् । आव० ३६४ । पाषाणुज्ज्वरहितम् ।  
दश० ११५ ।

**अणवज्जय**-अणवज्जंता, पापवज्जंता । आव० ३७३ ।

**अणवज्जुत्तो**-तत्रयम्, अनुपग्रभूत । आव० ७५८ ।

**अणवहृप्पा**-अनवस्थाप्य -नावस्थाप्यत्वेनप्रतिनिवृत्ते । टाणा०  
१६४ । कृततपसो व्रतारोपणम् । भग० ९२० ।

**अणवहृप्पारिहे**-कृततपसो व्रतारोपणम् । भग० ९२० ।

**अणवहृप्पा**-अनवस्थाप्यता, हस्ततालादिप्रदानयोपाहृष्टतर-  
परिणामत्वाद् व्रतेषु नावस्थाप्यते इति अनवस्थाप्य, तद्वाच ।  
आव० ७६४ । टाणा० २०० ।

**अणवहृत्तो**-अनवस्थित । वृ० प्र० १२५ । अ ।

**अणवहृत्तियं**-अनवस्थित, नन्ततम् । जीवा० ३४५ । अनि-  
यतप्रमाणम् । सूयं ८५ ।

**अणवहृत्तिया**-नापश्यमपिन । टाणा० ३७४ ।

**अणवहृत्तिया**-अनवस्थिता-येन पुन प्रतिसेदितेवोत्थापना-  
या अप्ययोम्यं सन् क्वचित्काल न व्रतेषु स्थाप्यते यावत्ताया  
पि विशिष्टं तपस्यार्थं भवति पश्चात् कीर्तनपास्तदोषोपरतो  
व्रतेषु स्थाप्यते । व्य० प्र० १४ आ ।

**अणवर्था** - अनवस्था, यद्यथावैगभाचरण-पायश्चित्त न  
दीयते क्रियते वा सा । ओष० २०७ ।

**अणवधग्ग**-अनवधम्, अनन्तम् । प्रश्न० ६३ । टाणा०  
१२० । औष० ४८ । अपर्यवसानम् । सूत्र० ३५८ ।

**अणवधिय** - अणपत्निका, अन्तरनिकायानामुपपरिवर्तिनी  
व्यन्तरजातिसिधिया । प्रश्न० ६९ । वाषमन्तरविशेष ।  
प्रज्ञा० २५ ।

**अणवयस्सिक्खत्ता**-अन्वेष्य पश्चाद्भागमनवलोभय । भग०  
३१० ।

**अणवयवग्ग**-अनवन्ताप्र-अपर्यन्तम् । टाणा० ४८ । अनन्त  
अपार, अनवन्ताप्र-अनवन्त-अनामक अग्र-अन्तो यस्य  
ता । अनवन्ताप्र-अनवन्त-अपरिच्छिन्न अग्र-परिमाण  
यस्य ता । भग० ३० । कालोऽपरिमाणम् । व्य० प्र०  
२०५ अ ।

**अणवयवग्ग**-अनवधम्, अनवधम् । उत० ४८५ ।

**अणविकखया**-अभिगमा ( गणिते )

**अणसण**-अनघन, भोजनविधि । औष० ३७ । काश्चनो  
३१ । उत० ६०० ।

अणसण-अनशनम्, आहारव्यागः । दश० २६ । भग० ९२१ ।

अणसणा-अनशनम्, व्रतविशेषः, उपवासः । भग० १२८ ।

अणसायणा-अनाघातना, अहीलना । दश० २४१ । मनो-  
चाङ्गयैरप्रतीपप्रवर्तनम् । उक्त० १७ ।

अणसिन्धो-अनशितः, न अशितः-भिक्षाप्रदानानभिज्ञेन  
लोकेनाभ्यर्हितः । जाव० १४४ ।

अणहं-अनघं, अक्षतम् । सूर्य० २९२ । अणहशब्दोऽक्षत-  
पर्यायो देवस्तेनाणहं-अक्षतं । जं० प्र० २२१ ।

अणहवीया-अविणद्ववीया । नि० चू० प्र० ८० अ ।

अणहारण-ऋणधारकः । विषा० ७२ ।

अणहारेणं-स्वदेशजाहाराभावेनेति । ठाणा० ५४ ।

अणहअपरमत्था-अनधियतपरमार्थाः । ( गणित० )

अणहिकडा-अनधिकृता-तदृक्षणायोगतस्तत्रानन्तभाविनी ।  
प्रज्ञा० २४८ ।

अणहियासिया-अनध्यासिनी । आव० ४२८ ।

अणहियासी-अनधिकासिकाः, सन्हावेभोत्पीडितः सन् या  
याति सा । ओष० २०० ।

अणहे-अनघः, नास्याधमस्तीति, निरवधानुष्ठायी । सूत्र०  
६९ ।

अणहो-अनघः, अक्षतशरीरः । प्रश्न० ११५ ।

अणहण्णं-पणगपरिहाणीकमेण पणं । नि० चू० द्वि०  
१५७ अ ।

अणहण्णा-अणासेविय । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।

अणहण्णं-अनाकीर्णं-असंकुलं । उक्त० ४२८ ।

अणहण्यं-अणातीतं, अनादिकं, अज्ञातिकं, ऋणातीतं अणा-  
तीतं वा, अविद्यमानादिकं, अविद्यमानस्वजनं, ऋणं वाऽ-  
तीतं ऋणजन्यदुःस्थनातिक्रान्तम्, दुःस्थतानिमित्ततयेने  
ऋणातीतं, अर्णं वा अणकं-पापमतिशयेनेत-गतमणातीतम् ।  
भग० ३५ । आ-ममन्तादतीव इतो-गतोऽनाधनन्ते समारे  
आतीतः, न आतीत अनातीतः, अनादतो वा संपारो येन  
य तथा, समारणं वपारगामी । आचा० २८६ ।

अणहत्तो-अनुपयुक्तः । ( महाप्र० )

अणहयंतो-विवादानतिक्रान्तम् । व्य० प्र० १० अ ।

अणहले-अनाधिलः, अधीनस्थ चतुर्थं नाम । अन्न० २० ।

अकलुपः । प्रश्न० १११ । अकलुपः, शुद्धस्वभावः । प्रश्न०  
१३६ ।

अणाहसेसि-अनतिशयी, अवध्यायतिशयरहितः । आव०  
२४० ।

अणाहं-अनादिः, नास्यादिरस्तीति संसारः । सूत्र० ३४१ ।

अणाउट्टी-अनाउट्टिः । आव० ३७३ ।

अणाउत्तं-अनावधानता । औप० ४२ । अनुपयुक्तः ।  
ठाणा० ४३ ।

अणाउत्तआइयणया-अनायुक्तवज्रादिप्रहणता । ठाणा०  
४३ ।

अणाउत्तपमज्जणया-अनायुक्तप्रादिप्रमात्रेणता । ठाणा०  
४३ ।

अणाउत्तो-अनाउक्तः-अक्षणिकता । सू० तु० ४४ अ ।

अणाउल्ल-अनाकुलः, क्रोधादिरहितः । दश० १६६ ।

अणाउल्ले-अनाकुलः । आचा० ४२४ ।

अणाउल्लो-अनाकुलः । आव० ४०४ ।

अणाए-अनया । आव० ३९९ ।

अणाएस्से-अनदिताः, न आदेशः, सामान्यम् । उक्त० ३९ ।

अणागई-अनागतः, सिद्धिः, श्रेयस्कर्म्मच्युतिरुपा लोकाभा-  
काशदेशस्थानरुपा वा । सूत्र० २२३ ।

अणागतं-अनागतम्, अनागतकरणार्थं, पशुपणादावाचा-  
यदिवैवाह्यकरणान्तरायसद्रावादारत एव तत्तत्करणम् ।  
आव० ८४०, ठाणा० ४९८ ।

अणागमणधम्मिणो-अनागमनधम्मणिः-यस्मिन् मनुष्य-  
लोके अनागमनं धर्मो येषां ते, न पुनर्यहं प्रत्यागमनेप्सवः ।  
आचा० ७४३ ।

अणागमो-अनागम-अनवनरः । आचा० १२२ ।

अणागयं-अनागतम्, एष्यत्कालम् । आव० ५०९ ।

अणागय-अनागताम्-आयत्याम् । आव० ५०९ । अना-  
गतं, अनागतकरणदानागतम् । भग० २९६ ।

अणागलियं-अनिर्मलितं-अनिवारितोऽनाकलितः । भग०  
६७३ ।

अणागारं-अनाकारम्, अविद्यमानाकारम् । आव० ८४० ।  
ठाणा० ४९८ । अविद्यमानाकारं-यदिशिष्टपञ्चोजनममव-  
भावे कान्तराहुर्भिक्षाद्री महत्तरायाकारमनुचारयद्विषीयते  
तदनकारम् । भग० २९६ ।

**अणागारपासणया**—अनाकारपरयथा-चिन्त्यमानायां प्रकृतं  
परिस्फुररूपमीक्षणमवसेयम् । प्रज्ञा० ५३० ।

**अणाकारो**—अनाकारः, यथोक्ताकारविकलः । जीवा० १८ ।  
सामान्यग्राही । भग० ७३ ।

**अणाजीवी**—अनाजीवी । नि० चू० प्र० १८ अ । अनाजीविको-  
विःस्पृहः । दश० १९०६ ।

**अणाडिया**—अनादिति । आव० १५ । अपराधः । चू०  
प्र० ३० आ ।

**अणादायमाणे**—अनाद्रियमाणः—सखडिभनादरयन् । आचा०  
३२९ ।

**अणादिभस्स**—अनादतनाम्नः जम्बूद्वीपाधिपतेः । जे० प्र०  
३३४, जीवा० ३०६ ।

**अणादिउ**—जम्बूद्वीपक्षेत्रे देवः । ठाणा० ६९ ।

**अणादिये**—अनादतम्, अनारं सम्प्रमरहितम्, कृति-  
कर्मणि प्रथमदोषः । आव० ५४३ ।

**अणादिये**—अनादतः, जम्बूद्वीपाधिपतिर्व्यन्तरपुरः । उपा०  
३५२ । अनादताद्—अनादराता सा अनाहता, शिपिलस्य  
या ना । ठाणा० ४७४ ।

**अणाणसा**—अनाणावाः—नानात्ववर्जिता येष्वेवाध्यात्मभूता-  
कागप्रदेशेष्वेके तेष्वेवेनरेऽपि । भग० ९६१ । नानात्ववर्जिताः  
देशमेदेनालक्षितनानावाः । प्रज्ञा० ७४ ।

**अणाणाप्**—अनाशया, स्वैरिण्या बुद्ध्या । आचा० ११३ ।  
स्वमनीयिकाचारीतोऽनाचारः । आचा० २२७ ।

**अणाणुकिती**—जो एवं कथयति । नि० चू० प्र० ३३३ आ ।

**अणाणुगामिते**—अवधिमानस्य द्वितीयो भेदः । ठाणा ३७० ।

**अणाणुगामियसारे**—अननुगामिकन्वाय—अष्टमनुबन्धाय ।  
ठाणा० १४९, ३५८ ।

**अणाणुपूर्वी**—अनानुपूर्वी, यत्र पूर्वपथादिभागो नास्ति ।  
भग० ८० । अर्थमदृष्टार्थे पदे अपरतो । नि० चू०  
टि० ५३ अ । अनियतममानुपूर्वी । ठाणा० ४ । यथोक्तप्र-  
कारद्वयातिरिक्तस्वरूपा । अष्ट० ७३ ।

**अणाणुबंधि**—न विद्यतेऽनुबन्धः—गातन्वप्रसंभवादीनां यत्र  
तदनुबंधि । ठाणा० ३६१ ।

**अणादिद्वी**—अनादिति, अन्तर्हरानां तृतीयवर्गस्य प्रयो-  
दगमवययनम् । अन्न० ३१ ।

**अणादीओ**—अणादिकः, अणं-पायं कर्म आदिः—कारणं यस्य  
सः । षष्ठातीतः, षष्ठ्यं-अधर्मण न वेयं इत्यं तदतीतो-  
ऽतिदुरन्तत्वेनातिकान्तः । प्रथ० ४ । अनादिकः, प्रवदा-  
पेक्षयाऽऽदितिरहितः । प्रथ० ४ ।

**अणादीयं**—नास्त्यादिरस्म्यनादिकं । ठाणा० ४४ ।

**अणादेज्ज**—अनादेयम्—यदुदयवशादुपपन्नमपि द्रुवाणो नोपा-  
देयवचनो भवति, नाप्युपक्रियमाणोऽपि जनस्तस्याभ्युत्थानादि-  
न्माचरति । प्रज्ञा० ४७५ ।

**अणापुच्छा**—अनापुच्छा । आव० १९८ ।

**अणाबाहं**—अनाबाधकत्वं 'येदनाभावत्ववत् । उपा० ५१० ।

**अणाबाहि**—अनावाधः—मोक्षमुखम् । ठाणा० ४८८ ।

**अणाभिगता**—अगहियलुगत्या । नि० चू० तू० १४३ अ ।

**अणाभिखंतो**—अस्पृहन् । नि० चू० प्र० १८७ अ ।

**अणाभोगं**—अनाभोगम्, अतिचारविशेषः । आव० ९६४ ।  
विस्मृतिः । ठाणा० ४८५ ।

**अणाभोगनिव्वत्तिप**—अनाभोगानिवोत्तः, यदा त्वेवमेव  
तथाविधसुहृत्पवसाद्गुणसौविचारणाद्यन् परवचीभूय षोणे  
कुरते तदा मकोपः । प्रज्ञा० २९१ ।

**अणाभोगवकुत्तो**—अनाभोगवपुसा, योऽनाभोगेनाजानत्  
करोति सा, वपुसास्य द्वितीयो भेदः । उपा० २५६ ।  
सहसाकारी । ठाणा० ३३७ ।

**अणाभोगवत्तिया**—अनाभोगप्रत्ययिकी, विनातिक्रिया-  
मर्थे चतुर्दशी । आव० ६९२ । अनाभोगेन पाद्याद्याददत्तो  
निक्षिपतो वा । ठाणा० ३१७ । अनाभोग—अज्ञानं प्रत्ययो-  
निमित्तं यस्याः सा । ठाणा० ४३ ।

**अणाभोगे**—अनाभोग—अज्ञानम् । भग० ९१९ । एकान्त-  
विस्मरणम् । स्व० द्वि० ३३२ आ ।

**अणाभोगो**—अनाभोगः, अलन्तविस्मृतिः । आव० ८५० ।  
नि० चू० प्र० २९ आ । अज्ञानं । नि० चू० प्र० १४७ आ ।  
विस्मृतिः । आव० ८४८ ।

**अणायरो**—अनायकः, अन्यो न विद्यते नायकोऽस्येति  
अनायकः—स्यस्यप्रमुधववर्यादिः । सुप्त० ६१ । अविद्यमान-  
नायको राजा । मम० ५३ ।

**अणायण**—अनायनम्, विद्वत्स्थानम् । दश० २१६ ।  
अभ्यासम्, वेद्यानाभ्यासनादि । दश० १९५ ।

अणायतणं—अनायतनं, साधुनामनाश्रयः । प्रथ० १३८ ।  
 नि० चू० प्र० ११६ अ । श्रीपशुपण्डकसंसक्तं स्थानम् ।  
 ओष० १२ ।  
 अणाययथं—पशुपक्षिमदृष्टं । वृ० वृ० ११५ आ ।  
 अणाययण—श्रीपशुपण्डकसंसक्तपृथक्वर्ण । नि० चू० वृ०  
 २५ अ ।  
 अणायरिया—अनार्या—अर्द्धपङ्क्तिवर्जजनपदनाथानि । आचा०  
 ३७७ ।  
 अणायवेतिथं—छायायाम् । नि० चू० द्वि० ७६ आ ।  
 अणाया—अनात्मा पटादिपदार्थः । सम० ५ ।  
 अणायार—अनाचारः, मावययोगः । दश० २३३ ।  
 अणायारो—अनाचारः । आव० ७७८ । गिलिते सति आधा-  
 कर्मणि दोषविशेषः, यावच्छम्बनोत्क्षेपोत्तरकालम् । आव०  
 ५७६ । व्यभिचारः । आव० ५७८ । आचारस्य साधवा-  
 चारस्याभावः परिभोगतो ध्वंसः । व्य० प्र० ९० अ ।  
 अणारब्धं—अनारब्धम्, अनाचीर्णम् । आचा० १४८ ।  
 अणारिओ—अनार्यः, म्लेच्छादिः । प्रथ० ५ । ऋक्स्मर्माणः ।  
 आचा० १८६ ।  
 अणारिय—आचार्यं मुक्त्वा । वृ० प्र० २४५ अ । म्लेच्छाः ।  
 ठाणा० ३०९ ।  
 अणारिया—नामकहा । नि० चू० प्र० २५८ अ । अनार्य—  
 क्षेत्रभाषाकर्मनिर्भक्षितः । सूत्र० ३९३ । उक्त० ३५८ ।  
 अनार्यः—न आर्यः, अज्ञानावृत्त्यादमदनुष्णायी । सूत्र० ३३ ।  
 अणारोहण—अनारोहकः, योधवर्जितः । भग० ३२२ ।  
 अणालाभे—अनालापः—वृत्तित आलापः । ठाणा० ४०७ ।  
 अणालिओ—अनेष्टा । आव० ३७० ।  
 अणावडंतो—अस्तुशरः । नि० चू० प्र० १८७ अ ।  
 अणावसं—अवशम् । (नर०)  
 अणावाय—अनापात । आचा० ३३५ । अनापात—आपा-  
 तादिरहिता उचारणम् । दश० २३१ । उक्त० ५१८ । विज-  
 नम् । आचा० ३३९ । स्थानापातारहितः । उक्त० ६०८ ।  
 अणावायमसंलोप—अनापातसंलोपम् । ओष० १२२ ।  
 अणाबाहो—मोक्षो । दश० चू० १३ ।  
 अणासगं—परिज्ञा । नि० चू० प्र० ३५२ आ । अनशनं ।  
 नि० चू० प्र० २५८ अ ।  
 अणासप—अनशः, अशरहितः । भग० ३०० ।

अणासन्नं—अनासन्नं, यद्द्रव्यामर्षं भावासन्नं वा न भवति ।  
 ओष० १२३ ।  
 अणासवो—अनाश्रवः, मध्यस्थो रागद्वेषरहितः । सूत्र०  
 २४४ । कर्मबन्धनरोधोपायत्वात्, अहिसयाः पञ्चविंशतमं  
 नाम । प्रथ० ९९ । अनाश्रवा—मृत्युविशेषः । आचा० १८२ ।  
 अणासायणाविणम—अनागतानाविनयः, उपचारविन-  
 यमेदः । दश० २४९ ।  
 अणासेवियं—अनास्वादितम् । आचा० ३२५ ।  
 अणाहृपवज्जा—उत्ताराध्ययनस्य विगतितमाध्ययननाम ।  
 सम० ६४ ।  
 अणाहृप्पाओ—अनापातमानौ । आव० ७१ ।  
 अणाहृस्ताला—अनाशला—आरोग्यशाला । भ्य० द्वि०  
 ५७ आ । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।  
 अणाहृतालालओ—अनापाशालालयः । आचा० ११९ ।  
 अणाहारो—अनिष्ट शोभनमपि न रोचते परि अणाहारो  
 भवति । नि० चू० द्वि० ५१ अ ।  
 अणाहृय—अनाहृतः, अनिलापिण्डः, अनन्याहृतो वा,  
 स्पर्धारहितः । भग० २९३ । भग० २९४ ।  
 अणिगालं—रागपरिहारेणैत्यर्थः । प्रथ० ११२ ।  
 अणित्त—अनिर्गच्छन् । नि० चू० प्र० २५८ आ ।  
 अणिदियं—अनिन्दितं—शिष्टनिन्देन—स्वपरप्रशंसादिहेतुनाऽ  
 नृत्वादितम् । उक्त० ६६७ ।  
 अणिदिआ—अनिन्दिता, अष्टमी दिहुमारी । ज० प्र० ३८३ ।  
 अणिदिया—अनिन्दिता, अधोलोकवास्तव्या दिहुमारी ।  
 आव० १२१ ।  
 अणिदिया—अनिन्दियाः अपर्याप्ताः, केवलिनः, निष्ठा-  
 उपयोगतः । ठाणा० ३५५, ५१९ ।  
 अणिगणा—अनमा, अनमा नाम दुःमगणाः । ज० प्र० ९९ ।  
 अणिगामसुक्खा—अनिकामसौख्याः—अप्रकृत्युक्ताः । उक्त०  
 ४०० ।  
 अणिगिण—अनमत्रम्, मद्यन्तं तद्वैतुवादनमा इति ।  
 सम० १८ ।  
 अणिगृहतो—अनिगृहन्, प्रकटयन् । आव० ५३४ ।  
 अणिगृहियबलविरिप—अनिगृहितबलवीर्यः, न निगृहिते  
 बलवीर्ये येन मः बलं—शारीरं कीर्तय—आन्तरं शक्तिविशेषः ।  
 आव० २५९ ।

**अणिग्गहो**—अनिग्रह, अनिवेधो मनसो विषयेषु प्रवर्तमान-  
स्य, अन्रक्षण एकादशं नाम । प्रश्न० ६६ । स्वर ।  
प्रश्न० ३१ ।

**अणिञ्च**—अनिलम्, न निलमश्चिरत्वात् । प्रश्न० १६६ ।  
**अणिञ्चमावास्**—अनित्यावास --मनुष्यादिभवस्तच्छरीरम् ।  
आचा० ४३९ ।

**अणिञ्चाणुप्येहा**—अनित्यानुप्रेक्षा—जीवितादेरनित्यस्यानु-  
प्रेक्षा । टाणा० १९० ।

**अणिञ्चैरुण**—अ(न)र्चयित्वा । आव० १४६ ।  
**अणिञ्छियत्ता**—अनीप्सितता, आप्नुमनिष्ठता । भग० २३ ।  
प्राप्नुमनमिनाञ्छितत्वम् । भग० २५३ । प्रज्ञा० ५०४ ।  
**अणिञ्छियन्त्वो**—अनेष्ट्यन्, मनागपि मनसाऽपि न प्रार्थ-  
नीय । आव० ५७२, ७७८ ।

**अणिञ्जिण्णा**—अनिर्जीण, सामस्येनात्मप्रदेशेभ्योऽपरिष्ठा-  
पित । प्रज्ञा० ६०२ ।

**अणिञ्जुहियांसी**—अनिर्जुहा—कृतविभागापि नान्यत्र नीतां  
क्षिरा । वृ० द्वि० १९९ आ ।

**अणिञ्जापत्ता**—अनिर्दार्पण, चक्षुरह्यार्या । भग० ३१३ ।  
**अणिट्ट**—अनिष्टम्, सतमनमिच्छणीयम् । आव० ५८९ ।  
**अणिट्टत्ता**—अनिष्टता, इष्टा-मनसा इच्छामिषयीकृता तद्वि-  
परीता अनिष्टा तस्या भाव । प्रज्ञा० ५०४ । अनिष्टता,  
इन्द्रया अविषयता । भग० २५३ ।

**अणिणहवणं**—अनपलाप । नि० चू० प्र० ९ अ ।  
**अणितणा**—वज्रदामिन । टाणा० ५१७ ।

**अणित्थि**—अनित्थिक—अविद्यमाननियतस्वरूप । भग० ४६९ ।  
**अणित्थेत्थं**—अनित्थंत्थम्, इतीदं प्रकारमापन्नमित्थं, दत्थ  
तिष्ठतीति इत्थंत्थं, न इत्थंत्थ अणित्थमित्थि, केनचित्प्रकारेण  
लौकिकेनास्थितमित्थि । आव० ४४५ । नेत्थ तिष्ठतीति, अनि-  
यताकारम् । जीवा० २५ ।

**अणित्थेत्थे**—अनित्थंत्थं परिमण्डलादिव्यतिरिक्तम् । भग०  
८५८, ८५९ ।

**अणिदा**—अनिदा—अनिर्दाराणा । भग० ४८ । क्लिप्तविक्रम  
सम्पत्तिविकल्पिका या । प्रज्ञा० ५५७ ।

**अणिदानो**—अनिदान, देवेन्द्रोद्युक्तप्रार्थक । प्रश्न० १४७ ।  
**अणिदेस्सं**—अनिर्देस्यं । वितो० १५७ ।

**अणिघत्तियं**—(अणिज्जतं) कम्म ण कारयिज्जति । नि०  
चू० द्वि० १०६ अ ।

**अणिमिसच्छो**—अनिमेयाक्ष, निश्चलनयन । आव० ७८४ ।  
**अणिमिसनयणे**—अनिमित्तनयनम्, विकसितं नयनम् ।  
भग० १७१ ।

**अणिमिसा**—अनिमेया । आव० १२४ ।

**अणिमिसे**—अनिमेया, मरत्या । दश० १०२ ।

**अणियं**—अणिकं, अप्रमृ-गुण्डम् । प्रश्न० ११५ । अनीकं—कट-  
कम् । उक्त० ४३८ ।

**अणियट्ट**—अनिवर्णं, मोक्ष । आचा० १९३ ।

**अणियट्टिवायरो**—अनिवृत्तिवाद्, निवृत्तिवादाद्भव लोभा-  
णुवेदनं वायवत् भूतप्राप्तस्य नवमं गुणस्थानम् । आव०  
६५० ।

**अणिभट्टी**—भरते भविष्यजित् । मम० १५४ ।

**अणियण**—अनमकारणत्वादनम्रा—विशिशुक्लदादिन, संज्ञा  
शब्दो वाऽयमिति । टाणा० ३९९ ।

**अणियणो**—अनम । आव० १११ ।

**अणियतो**—अनियत, अनियमवान्, अनवर्षित । प्रश्न०  
२८ ।

**अणियत्तो**—अनिवृत्त । आव० ८२३ ।

**अणियद्वरिस्सणं**—हयगजरथपादात्पवीकदर्शनम् । नि० चू०  
द्वि० ७१ अ ।

**अणियघा**—अनिघता—अनिर्घातिता । प्रज्ञा० ३३९ ।

**अणिया**—अनिदा, अकारणम् । आचा० ३४ । मेयाधारणे  
न्द्रियपाटवदेहाणुवर्धनकारी । नि० चू० प्र० २५४ आ ।  
अनभोगत् । सम० १४६ ।

**अणियाणे**—प्रार्थनारहित । भग० १२३ ।

**अणियादिघट्टं**—अनीकाधिपत्य—मज्जादिनेत्यप्रधाना ऐरा  
वतादय । टाणा० ११७ ।

**अणिलामयी**—यातरोमिणी । वृ० द्वि० २१९ अ ।

**अणिलो**—निलो जस्य नत्थि । दश० चू० ९८ ।

**अणिवारिप्प**—अनिवारित, निषेधकरहित । विद्या० ७० ।

**अणियिद्धं**—कम्म ण कारयिज्जति । नि० चू० द्वि० १०६ अ ।

**अणियुष्णं**—अपिप्त । नि० चू० प्र० ४३ आ ।

**अणिसिद्धं**—अणियष्टं, बहुलापारणं म१ अदेव ण्य इदानी ।  
प्रश्न० १०१ । परिहारिकम् । नि० चू० प्र० १६१ आ । यद्



कर्तव्यं । ओष० २१४ । ठाणा० ४६० । भग० ४६६ ।  
नि० चू० वृ० १६ अ, ४८ आ । तत्स्वामिनाऽनु-  
त्सकलितम् । आचा० ३२५ । दोषविशेष । आचा०  
३२९ । साधारणं बहूनामेकादिना अननुज्ञातं दीयमानम् ।  
ठाणा० ४६७ । दोषविशेष । प्रथ० १४४ ।

**अणिसिद्धो**-अनिधिद, अनुपयुक्त । आव० २६७ ।  
**अणिसिद्धि** (चि) **अण्पा**-अनिधृतात्मा, अनिदान । आव०  
८४३ ।

**अणिसिद्धि**-अनिधित, द्रव्यभावनिधारित प्रविबन्ध-  
विमुक्त । दश० २२३ ।

**अणिसिद्धोद्योगे**-अनिधितोपधान, ऐहिकामुष्मिकपेक्षा  
विकल तप, योगसंग्रहे चतुर्थो योग । आव० ६६४ ।  
अनिधितं तप । प्रथ० १४६ ।

**अणिसिद्धतं**-अनिधितम् । आव० ३५८ । सर्वांशमारहित ।  
भग० ३८५ ।

**अणिसिद्धय**-अनिधितम्, कैतयादिनिरपेक्षम् । प्रथ०  
१२६ ।

**अणिसिद्धय** - अनिधितम्, बुलादिव्यप्रतिबद्धम् । दश०  
७२ ।

**अणिसिद्धेयस्य** - अनिधेयम्-अमोक्षाय । ठाणा० १४९ ।  
अकन्याणाय, अमोक्षाय । ठाणा० २९२ । अकन्याणाय ।  
ठाणा० ३५८ ।

**अणिसिद्धो**-अनिध - कस्यचि-संबन्धिनाऽव्ययमेन रहित ।  
उत्त० ६३३ ।

**अणिसिद्धय**-अनिधत अन्तर्हृद्धानां तृतीयवर्गस्य तृतीयम-  
ध्ययनम् । अन्त० ३ ।

**अणिसिद्धे**-अनिध, अमाय । दश० २६८ । अनिह, परीयहो  
पसर्गनिहन्त्यत इति निह, न निह अनिह -उपसर्गपर  
जित इति । सूत्र० ६९ । अरिनह -अष्टकर्मरहित,  
अराग -रागद्वेषरहित, भावरिपुभिरनिहत । आचा० १९० ।  
रिनशत इति निह, न रिह अरिनह -सर्वत्र ममत्वरहित  
इति । सूत्र० ६९ । अत्रुट्टिः । प्रथ० चू० १९१ ।

**अणीय**-अनीकम्, सैन्यम् । भग० ८९ ।  
**अणीयजसे**-अनीक्यता, नागम्य साधापतं कुमार ।  
अन्त० ४ ।

**अणीयसे** - अन्तर्हृद्धानां तृतीयवर्गस्य प्रथममध्ययनम् ।  
अन्त० ३ ।

**अणीसिद्धं**-हस्तमानावप्रदात्मिदितम् । वृ० द्वि० २३९ अ ।

**अणीहारि**-अनिहारि, तपोनेद । उत्त० ६०० ।

**अणीहारिमे**-अनिर्हरणाद् गिरिकन्दरादौ अनदानम् । ठाणा०  
१४ । जद बर्हि पविबद्ध । नि० चू० द्वि० ५८ अ ।

**अणु** - अनु-प्रतिदिवसम् । सूर्य० १३६, १३३ । धेवे ।  
दश० चू० ८९ । स्तोकप्रदेशम् । प्रज्ञा० २६३ । पश्चाद्भावे  
स्तोके च । वृ० प्र० ३३अ, १ । स्तोकम् । प्रज्ञा ५०१ ।  
प्रमाणतो ब्रह्मादि । दश० १४७ । लघु, हीन । सूर्य०  
२६१ । ज० प्र० ५२० ।

**अणुअतणुअ**-अनुकतनुकानां-अतिसूक्ष्माणाम् । जै० प्र०  
२३७ ।

**अणुओग** - अनुयोग, अर्थकथनम् सूत्रादनु-पश्यान्मध्य  
योगोऽनुयोग सूत्राध्ययनात्पश्चादर्थकथनम् । अगोर्वा लघी  
यस सूत्रस्य महताऽर्थेन योगोऽनुयोग । आचा० ३ ।  
व्याख्यान । ओष० ७१ ।

**अणुओगतयो**-अनुयोगार्थं, व्याख्यानभूतोऽर्थ । आचा० ७ ।

**अणुओगद्वार** - अनुयोगद्वारम्, सूत्रविशेष । आव०  
७४० । अस्वाध्याये परिहृत्यसूत्रविशेष । नि० चू०  
नृ० ७१ आ० ।

**अणुओगद्वारे**-अनुयोगद्वारम्, अनुयोगद्वारसूत्रम् । भग०  
२२१ ।

**अणुओगस्स**-अनुयोगस्य । विप्र० ५९३ ।

**अणुओगो** - अनुयोग, सूत्रस्थापनानुयोजनम्, अभिधेये  
व्यापार सूत्रस्य योगो वा, अनुब्रूलोऽनुब्रूयो वा योग ।  
आव० ८६, ठाणा० ४८१ । निवेनाभिधेयेनाथेनानुयोजनं-  
सम्बन्धनम् । विप्र० ५९३ । सूत्रप्राधान्तरमनु-पश्चात्सू-  
त्रस्थापेन सह योगो-घटना । जीवा० २ । अनुब्रूल -अवे-  
रोधी सूत्रस्थापेन सह योगो वा । जीवा० २ । सूत्रस्थापेन  
सह सम्बन्धनं, अनुब्रूलोऽनुब्रूलो वा योगो व्यापार सूत्र-  
स्थापेप्रतिपादनम् । अगो -लघो पश्चाज्जातया वाऽनुब्रू-  
दवान्यस्य योऽभिधेयो योगो-व्यापारस्तत्सम्बन्धो वाऽणु-  
योगो अनुयोगो वा । त० प्र० ४ । दृष्टिवाचतुर्थो  
भेद । म० १२८ । विशेष । आव० ६९४ ।  
अनुधातनम्, अनुब्रूलो वा योग । अणु-मुने, मन्त

अर्थसतो महतोऽर्थस्याणुना नृपेण योगी वा । औष०  
४ । विचारः । ठाणा० ४८१, ४९५ । अनुष्पोऽनुकूलो  
वा योगः । सम० १३१ । अणयनार्थः । आव० ५४ ।  
सूत्रस्पर्शकनिर्गुक्तिः सूत्रानुगमश्च । आव० ८६ । परीक्षा ।  
आव० १५७ ।

अणुकंपं-अनुकम्पां-उपष्टम्भम् । ठाणा० १७० ।  
अणुकंपओ-अनुकम्पय-अनुरूपक्रियाप्रवृत्तिः । उक्त० ३५९ ।  
अणुकंपा-अनुकम्पा, अनुग्रहः । दश० ६७ । भक्तिः । औष०  
१९६ । आय० ३४८ । सम्यक्त्वगुणविशेषः । आव० ५९१ ।  
अनुकीशः । सम० १२७ । श्रीनानायविषयं दानम् । ठाणा०  
४९६ ।

अणुकंपाए-अनुकम्पया-अनुग्रहेण । ज्य० द्वि० १७२ आ ।  
अणुकंपे-अनुकम्पते, उपकुरुते । उक्त० ४९५ ।  
अणुकहई-अनुकंपयति । आव० २१८ ।  
अणुकुपति-प्रच्छादयति, अणुसिद्धिः । नि० चू० प्र० १८० अ ।  
अणुकुयितं-अरुलथम् । चू० द्वि० २५२ अ ।  
अणुकूला-संजमविषयकरा ( राज्यार्षणदिकाः ) । नि० चू०  
प्र०-१५४ आ ।

अणुकंतो-अनुकान्तः-अनुचीर्गः । भाषा० ३०६ ।  
अणुकर्म-अनुकर्मः । आव० ३४२ । पारम्पर्यम् । उक्त०  
१४७ ।

अणुकर्मतो-अनुकर्ममाणः, प्रेषमाणः । सूत्र० १३६ ।  
अणुकसाई-अनुकशायी, अणुरूपायी, उत्कण्ठितः सत्का-  
रादिषु श्रेत इत्येवं क्षील उत्कण्ठायी, न तथा । यो न  
सत्कारादिकमवबुधते बुध्यति, तत्सम्पत्तौ वा नादृष्टारवात्  
भवति न । उक्त० १२४ । अणवः-स्वल्पाः सज्वलनतामान  
इतिवाच्यत्वात् । कौषादयो यस्य । उक्त० ४२० ।

अणुगच्छई-अणुगच्छति, आपन्नो भवति । जे० प्र० १८७ ।  
अणुगच्छण-अणुगमनम्, आगच्छतः प्रयुद्धमनम् । दश०  
२४१ ।

अणुगच्छमाणो-अणुगच्छन्-अणुगच्छन्-युद्धमानः नरः ।  
आवा० २२२ ।

अणुगम-अणुगमः, अणुगमनमेतान्सादरिभक्तिं वा अणु-  
वचनम् । भाषा० ३ । अन्यः । द्वि० ९५४ ।  
अणुगमर्ण-अणुगमनम्, भागच्छतः प्रयुद्धमनम् । उक्त०  
१७ ।

अणुगमिओ-अणुगमितः, अनुनीतः । आव० ५५ ।  
अणुगमो-अणुगमः, सूत्रार्थयोरनुरूपसंबन्धकरणम् । विश्वे०  
४३१ । निश्चितसूत्रस्यानुकूलः परिच्छेदोऽर्थकथनम् । जे०  
प्र० ५ ।

अणुगमर्थ-अणुगतं, अन्वच्छिन्नम् । प्रश्न० ९६ । युक्तम् ।  
दश० २०४ । अविप्रयानुवर्तिनतामानम् । उक्त० ३२२ ।  
युक्तः । उक्त० ६३१ ।

अणुगमर्ण-अणुगमः, ग्राममार्गानुकूलं लघुर्वा ग्रामः, रुद्धित  
एकस्माद्वा ग्रामादन्यो ग्रामः । उक्त० ९५ ।

अणुगामियत्ताए-अणुगामिकता-परम्परया गुभानुगन्धसु-  
खाय भविष्यति । जीवा० २४२ ।

अणुगीया-अणुगीता तीर्थकरादिभ्यः ध्रुवा प्रतिपादिता ।  
उक्त० ३८५ ।

अणुगह-अणुग्रहः, अनुग्रहपरिहरणा अक्षोडभंगपरिहरणा,  
( अरुष्टभ्रष्टत्वपरिहारः ) आव० ५५२ । ज्ञानाद्युपकारः ।  
ठाणा० १५५ ।

अणुगहकस्तिर्ण-छहं मासार्थं आरोपितानां छद्दित्वा  
गता, ताहं अणो छम्मासो आवग्नो, ताहं सं तेण अद्बुद्धं  
तं उज्जोतितं जं पच्छा आवण्ण छम्मानितं तं वहति,  
एथ पंचमासा च उच्चवीसं च दिवसा जेण उज्जोतिया । नि०  
चू० तृ० १३५ अ ।

अणुगहहृदथ-अणुग्रहार्थ-अणुग्रहः - उपकारोऽभिवीयते,  
अथशब्दः प्रयोजनवचनः । औष० ४ ।

अणुगहपरिहारो-अणुग्रहपरिहारः-राजहृतानुग्रहयोन ए-  
वद्विष्यादिवर्षमर्षादया यथोक्तार्थं खोदादिभेजन् एक द्वे त्रौणि  
वर्षाणि यावत् वर्षति, यावन्तं वा कालं राजानुग्रहः कृत-  
त्वावन्तं वाके वर्षति, न च द्विष्यादि प्रददाति, नापि वैदि  
करोति, न चापि चारभशरीनां भोजनादि प्रदानं तिष्ठते, एव  
खोदादिभंगो । व्य० प्र० ४५ अ । तत्पितृं पालं सो दन्वारिपु  
परिहरिज्जति तावत्तत्तत्तं न दप्येते यथं । नि० चू० तृ० ८९ आ ।

अणुगहो-अणुग्रहः, उपकारः । औष० ४ ।

अणुगमो-अणुगमः, निश्चितग्रामागतयो ग्रामः । औष०  
२२ ।

अणुगघाई-अनुदातिर्ण-यद् ग्रामासादि प्रापयित्वा वर्षते ।  
प्रश्न० १४५ ।

अणुगघाडिया-अनुदादिता, अणुग्रहः । दश० ४१ ।

अणुघाता गुरवः । नि० सू० प्र० ८७ अ ।  
 अणुघातियं—जं गिरतं वहति गुहं । नि० सू० प्र०  
 ३०५ आ । गुहं । नि० सू० प्र० २५७ अ ।  
 अणुघातयं—आचारप्रत्ययस्य सप्तविंशतितमो भेदः । आ०  
 ६६० ।  
 अणुघातयकस्तिणं—जं कालं जहा मागयुष्मादि अहवा  
 जं गिरतं दार्ग एम मागल्लुगादिपि गिरतं दिज्जमाणं  
 अणुघातं भवति । नि० सू० तृ० १३५ आ ।  
 अणुघातयण—अणोद्घातन—अणयनेन जन्तुगणधनुर्गणिकं  
 सत्कारमित्यर्थं—धर्मं तस्योत्—प्राचयेन धाननम्—अपनयनम् ।  
 आचा० १५७ ।  
 अणुघातयणि—गृहणि प्रायश्चित्तानि । सू० तृ० ६७ अ ।  
 अणुघट्टता—अतृप्यन्तः । ओष० ७८ ।  
 अणुघाहय—अनुदाते, न नियते उदातो-लघुकरणलक्षणो  
 यस्य तपोविशेषस्य तत् यथाभूतदानं, तयोषा प्रतिषेधा-  
 विशेषतोऽस्ति ते । टाणा० ३११ ।  
 अणुचरित्या—चरिका, नगरप्रकाशशोरपान्तराले । सू० तृ०  
 ५३ अ ।  
 अणुचिष्णो—अनुचीर्णम्, आचरितम् । आच० २२७ ।  
 अनुष्ठित । ओष० १०३ ।  
 अणुचित्तर्णं—अनुचिन्तनम्, पयांलोचनम् । आच० ५८९ ।  
 अणुचिध्रं—अनुचीर्णम्, सम्यक् तदर्थोवगमासंगसक्तिग-  
 भानिवत्सतमभावप्राप्तय। धर्ममेघनामकनमोधिक्पेग परिणमि-  
 तम् । जीवा० ४ । अनुचीर्णं—दायसगमागता सम्पानि-  
 मादकः । आचा० २१७ ।  
 अणुचिय—अनुचित—भाविता शैशो वा । सू० द्वि० २३८ अ ।  
 अणुजत्तं—अनुजातम् । उत० ३०४ । अनुयात्रा, राजपा-  
 टिका । आच० ७२० ।  
 अणुजत्ता—अनुयात्रा । आच० ३६५ ।  
 अणुजाप—अनुजानं, महत् । सू० २३३ ।  
 अणुजाणं—रथयात्रा । सू० द्वि० १५५ अ । सू० प्र० २५८  
 आ । व्य० द्वि० १० आ ।  
 अणुजाणपेखभो—अनुजानप्रेक्षक । आच० ५७७ ।  
 अणुजाणे—अनुजानन् । उत० २९३ ।  
 अणुजाते—विनृसमः । टाणा० १८४ ।  
 अणुजायं—अनुयाते, नृनम् । जं प्र० २९० ।

अणुजीरति—अनुजीरति—तदुपासिंशितानुपभोगाः उप-  
 जीरति । उत० ४४९ ।  
 अणुजोगत—तीर्थकरादिर्गमचारिव्याख्यानप्रभो गण्डि-  
 काज्योगध भरतनरपतिनेजानां निर्वानिगमनानुत्तरधमान-  
 वकनव्यताभ्याख्यातप्रत्य स्नि शिष्येऽनुयोगे गतोऽनुयोग-  
 गतः । टाणा० ४९१ ।  
 अणुजोगी—अनुयोगी—अनुयोगी—व्याख्यानं प्रकृतं वा ।  
 टाणा० ३७५ ।  
 अणुजोगी—अणोः—लपो पक्षात्तातयवा अनुगन्धवाच्यस्य  
 सूत्रस्य शोऽभिधेये योगो—व्याख्यानं न सम्बन्धो वा शो-  
 ऽनुयोगोऽनुयोगो वेति । टाणा० ३ । अणु—पञ्चानावभो  
 यधेये वा । सू० प्र० ३३ अ । निवारः । गम० ५० । सूत्रस्याप्येन  
 सह सम्बन्धनम्, सूत्रस्यार्थप्रतिपादनम् । टाणा० ३ ।  
 अणुजोगी—अनववायो, शिवादेरीविशेषणम् । उत० ४९९ ।  
 धीमहावीरस्वामिनः गुना जमन्तेर्माया, प्रियदर्शनोऽपर-  
 नाम । उत० १०३ ।  
 अणुज्जज्ञमाणाहं—एकं स्वप्नोऽज्जज्ञि अपरं च तेषां  
 क्वचित्कामेऽनुपयोगान्नेनचिद्वृत्तिक्रियमाणानि । उत० ५४९ ।  
 अणुज्जता—ऋतुभावविविग्नः । नि० सू० प्र० २८९ आ ।  
 अणुज्जा—अनववायो, धीमहावीरस्वामिनो ज्येष्ठा भगिनी,  
 मुदग्नाऽपरनाम । उत० १०३ । महावीरस्वामिनः पुत्री-  
 नाम । आचा० ४२० ।  
 अणुज्जियस्तं—वगाक्यम् । सू० तृ० ७ आ ।  
 अणुज्जुष—अज्जुष, कथिञ्जुक्कुंमसाक्यनदा । उत०  
 ६५६ ।  
 अणुज्जुक्तं—अज्जुक्तम्, वकम्, अयमंकारस्य त्वमं नाम ।  
 प्रथ० २६ ।  
 अणुद्वाणे—अनुयाते । टाणा० ३३० ।  
 अणुद्विस्तु—अनुद्विष्टेणु—भावकारिणु । आचा० ७५६ ।  
 अणुद्विया—अनुद्विष्टा, निविष्टा । आच० ७७७ ।  
 अणुद्विहो—अनुद्विष्टा । सू० तृ० ४ अ ।  
 अणुष्णाचण—अनुष्णाचण । ओष० १९९ ।  
 अणुष्णाचणाज्यष्णा—वगयाचनुष्णाचणोपगुणा । नि०  
 सू० तृ० १० आ ।  
 अणुष्णावेति—अनुष्णाचणनि । आच० १९० ।  
 अणुष्णासं—नामिकाविनिर्गन्धस्वरानुगतम् । जं प्र० ४० ।

अणुष्णेता-अनुनीय-प्रायः ध्यात्वा । सम० १२३ ।  
 अणुतडियमेय-अनुतडिकाभेदः, भवततटभेदवद् यो भेदः ।  
 भग० २२४ ।  
 अणुतडियाभेदे-अनुतडिकाभेदः, इक्षुत्वपादिकः । प्रज्ञा०  
 २६७ ।  
 अणुत्तपत्तो-लजनीय । नि० चू० प्र० २६६ आ ।  
 अणुत्तरं-अनुत्तरम्, सम्यक् । दश० १५९ । अनन्यसदृशः ।  
 आव० ६० । अनुत्तरं-सर्वसंयमस्यानोपरिवर्तिनं । उक्त०  
 ३९३ । अनुत्तरं-सर्वलोकाकाशोपरिवर्तिनीमतिप्रधानां वा ।  
 उक्त० ३९३ ।  
 अणुत्तर-अनुत्तरम्, वृद्धिरहितम् । आचा० १४ ।  
 अणुत्तरपाशासो-अनुत्तरपाशाः, आत्मनः पारतन्त्र्यहेतु-  
 तया पाशावपाशाः, अनुत्तरपाशासौ पाशाश्च । उक्त० ४३ ।  
 अनुत्तरप्रवृत्तः-न विद्यते उत्तरणं-पारममनमस्मिन् सती-  
 त्यनुत्तरणः, स चासौ मासध-अवस्थानम् । उक्त० ४३ ।  
 अणुत्तरणाणी-कैवलज्ञानवान् । उक्त० २७० ।  
 अणुत्तरधरे-न विद्यते उत्तरमन्यतप्रधानमेपामिति । उक्त०  
 ३५७ ।  
 अणुत्तरधरो-अनुत्तरधरः, न विद्यते उत्तरं-अन्यतप्रधानमे-  
 पामित्यनुत्तराः, ते च प्रकमात्प्रकर्षप्राप्ता शानादय एव  
 गुणारताव धारयतीति । अनुत्तरान् गुणान् धारयतीति वा ।  
 उक्त० ३५७ ।  
 अणुत्तरविमाणे-नैपामन्यान्युत्तराणि विमानानि सन्ति इति  
 अनुत्तरविमानानि । अनु० १२ ।  
 अणुत्तरे - स्थित्यादिभिः सकलनरकज्येष्ठेऽप्रतिष्ठान इति ।  
 उक्त० ३९३ ।  
 अणुत्तरो-अनुत्तरः-न विद्यते उत्तरा-प्रधानाः रिषतिप्र-  
 भावमुखगुतिलेऽयादिभिरेभ्योऽन्वे देवाः । उक्त० ७०२ ।  
 अणुत्तरो-अनुत्तरः, कृष्णवासुदेवागमनम् । आव० १६३ ।  
 अचल १ विजयभद्र १ बलदेवदयागमनम् । आव० १६३ ।  
 अणुत्तरोयवाइय-अनतरोपपातिकम् । भग० २२२ ।  
 अणुत्तरोयवाइया-अनुत्तरोपपातिकाः । प्रज्ञा० ६९ ।  
 अणुदिर्घ- ( अनुदीर्घम् ) । भग० ५८ ।  
 अणुदिसा-अनुदिशः, प्रतिदिशः । दश० २०१ । एकप्रदेगा  
 अनुत्तराः ( दिशोः ) । टाणा० १३३ ।  
 अणुदिहो-अनुदिहः, यावन्निन्नादिभेदवर्जितः । प्रध० १०८ ।

अणुदरी-अनुदरी, आत्मदोषोपसंहारविषये द्वारधत्वामर्हि-  
 त्रश्रेष्ठिभार्या । आव० ७१४ ।  
 अणुद्भुअ - अनुद्भुताम्, आनुष्णेण यथामार्द्रिकविधि  
 उद्भूता-वादनार्थमुत्क्षिप्ता । जं० प्र० १९४ ।  
 अणुधर्मो-अनुधर्मः । सूत्र० ३९९ ।  
 अणुनदी-अनुनदि, नदी नदी प्रति । आव० ४५३ ।  
 अणुनयने-अनुज्ञातम् । ओष० १६० ।  
 अणुनाओ-अनुज्ञातः । ओष० २१५ ।  
 अणुनासं-सानुनासिकं नासिकाकृतस्वरम् । टाणा० ३९६ ।  
 अणुध्रया-अनुध्रया-नोर्ध्वमुखा । व्य० द्वि० २३७ आ ।  
 अणुध्रवणा-अनुज्ञापना, वन्दनेके द्वितीयं स्थानम् । आव०  
 ५४८ ।  
 अणुध्रविय - अनुज्ञापितः । आचा० ४२६ । अनुज्ञाप्य-  
 याचित्वा । आचा० ३३८ ।  
 अणुध्रवेमाण - तत्त्वजनादीस्तत्परिष्ठापनायानुज्ञापयन्तः ।  
 टाणा० ३५४ ।  
 अणुध्रा-अनुज्ञा, अनुमोदनम् । सूत्र० ३२९ । सूत्रार्थयोरन्य-  
 प्रदानम् । व्य० प्र० २६ आ । अधिकारदान । टाणा०  
 १३९ ।  
 अणुध्रायं-अनुज्ञातम्, भोग्यत्वयैव वितीर्णम् । प्रध० १०२ ।  
 अणुध्रयु - जुवराया, तेजावति । नि० चू० प्र० १७४ आ ।  
 सेनाधिपति । वृ० प्र० ९० आ ।  
 अणुपरियन्ति-अनुपरियन्ति, सातत्येन पर्यटन्ति । उक्त०  
 २९६ ।  
 अणुपरिचट्ट - अनुपरिवर्तयते, आत्मनद्यावयते । सूत्र०  
 १०७ ।  
 अणुपरिचट्टिय - अनुपरिवर्तयं, प्रादक्षिण्येन परिभ्रम्य ।  
 जीवा० ३७५, ३९९ ।  
 अणुपरिहारी-अतो जतो परिहारी गच्छति ततो गतो  
 अणुपिहृतो गच्छति । अणु-षोर्षं पडिलेहणादि साहेजं  
 कर्तेति । नि० चू० तु० १३२ आ ।  
 अणुपविष्टे-अनुप्रविष्टः-तदुदयवती । टाणा० २१९ ।  
 अणुपरस्तओ-अनुपरयने-पर्यालोचयतः । उक्त० ३१० ।  
 अणुपास्तं-कर्मण कारविज्जति । नि० चू० द्वि० १०६ आ ।  
 अणुपालइत्ता-अनुपाल्य-सतनमागम्य । उक्त० ५७२ ।

अणुपालणा-अनुपालना, अनु० विद्युद्धि, प्रत्याप्यान-  
शुद्धया पयमो भेद । आच० ८४७ ।

अणुपालणासुद्धे-अनुपालनाशुद्धे-शान्तारादिषु न भग्न  
यत्प्रेक्षास्थानम् । टाणा० ३४९ ।

अणुपालिय-अनुपालित, पूर्वकालस धुमि पालितरत्नद्विप  
धिनमाशुभिधानु-पथारपालितमिति । प्रध० ११३ ।

अणुपालिया-आत्मसयमानुदूलतया पालिता । टाणा०  
२४० ।

अणुपालेइ-अनुपालयति । भग० १२२ ।

अणुपालेमि अनुपालियामि, यौन पुन्यकरणेन । आव०  
७६१ ।

अणुपिट्टि-अनुपूर्व्या । सम० ६८ ।

अणुपुद्गरोअनुपूर्वत, क्रमेण । उत० २१२ । अनुपूर्व्या०  
क्रमेण । उत० ५१८ ।

अणुपुट्टि-अनुपूर्व्या, मूलादिपरिपात्री । ज० प्र० २९ ।  
शास्त्रीयोपक्रमभेद । आचा० ३ ।

अणुपुत्रिविहारीण - अनुपूर्ववहारिणा-प्रतिपालितरीषम  
यमानां शास्त्रार्थग्रहणप्रतिपादनीतरकालमवलीदत् सयमा-  
ध्ययनाध्यापनक्रियाणां विचारितशाब्धानामुत्सर्गगतं द्वादश  
सवत्सरमलेखनाक्रमसंलक्षित्वेद्देहाना । आचा० २६० ।

अणुपुट्टेण-आनुपूर्व्या-यथेष्टकालावश्यकक्रियारूपया चतु-  
र्थपद्यचाभ्लादिकया । आचा० २८४ । अनुक्रमेण-परिपाठ्या  
योगपथेन । आचा० २४१ ।

अणुपुट्टो-अनुपूर्व, पूर्वस्या पूर्वस्या अनु । जीवा०  
२७० ।

अणुपेहा-अनुप्रेक्षा, अनु-पथाद्वावे प्रेक्षा देशा, स्मृति,  
ध्यानाद्भ्रष्टस्य चित्तचेष्टा । आचा० ५८३ ।

अणुपेहे-अनुगुणं करोति । ओप० ८४ ।

अणुप्य-अनर्प्य-अनर्पणीय, अदोकीय । टाणा० ४६५ ।

अणुप्यगथे-अनुरूपतया-भीचिल्येन विरलेनेवगुणोदया  
दगुरयि या-सुहोऽप्यल्योऽपि प्रगतो ग्रन्थो-धनादियस्य  
यस्माद्वा । टाणा० ४६५ ।

अणुप्यवाड-अनुवदानु-परंरवेण प्रदानम् । व्य० प्र०  
२१७ आ ।

अणुप्यवाप-अनुप्रवाद पूर्वविशेष । उत० १६३, विदो०  
९६१ ।

अणुप्यवापुष्ये-अनुप्रवादपूर्वम् । आच० ३१६ ।

अणुप्यवित्ते-अनुप्रविशेत्, मनसि लब्धावपरी भवेत् ।  
उत० ९९ ।

अणुप्यव्याह-अनुप्रस्ता-भाषिता । आचा० ३४८ ।

अणुप्यव्ये अनुमतम् । सू० दि० ३ अ ।

अणुप्येच्छा-अविद्वला । उत० १० १४० ।

अणुप्येह-धर्मोचानस्य पथारप्रेक्षणानि-पर्यालोचनान्यनु-  
प्रेक्षा । भग० ९२६ ।

अणुप्येहा-मनसा । सू० दि० ५४ आ । अनुप्रेक्षा, अहेतुगाना  
मुहुर्महु सततमनूचिन्तना । आच० ७८६ । यो मनसा  
परिपत्तयति, न वाचा । दश० ३२ । ध्यानोपरमकालमा-

विनी अनित्यत्वाशलोचनास्था । आच० ५९० । सूत्रार्था  
नूस्मरण ध्यानस्य पश्चात् पर्यालोचनानि, भाषना । टाणा०

१९० । सूत्रवर्धेऽपि सम्भवति विस्मरणमत सोऽपि परिभा-  
वनीय इत्यनुप्रेक्षणं, चिन्तनित्वा । टाणा० ३४९ । प्रयार्थयो

वि-तनम् । ओप० १८९ ।

अणुफासे अनुस्पर्श, अनुभाव । दश० १९८ । --

अणुफासो-अणुभयो । दश० चू० ९६ ।

अणुग्रथ अनुग्रथ, निरन्तरम् । ओप० १०८ । सन्तान-  
भावेन प्राति । ज० प्र० १२५ ।

अणुग्रथो-विदक्षितपर्यालोच्यवच्छिन्नेनावस्थानम् । भग०  
८०८ । सात्त्विकेन भवेत् तन्मरणानाम् । उत० २३९ ।

अणुग्रद्ध-अनुग्रहम्, सन्ततम् । आच० ३२८ । टाणा०  
४३० ।

अणुग्रद्धोत्पत्तरो-अनुग्रह-सन्तत, योऽर्थो-अव्यय  
च्छिन्नो रोपस्य-क्रोधस्य प्रसरो-विस्तारोऽर्थेऽपि अनुग्रह-  
रोपप्रसर । उत० ७११ ।

अणुग्रद्धा-सन्ततमालिगिता सम० १२६ ।

अणुग्रह-अनुग्रहम् । उत० १७८ ।

अणुग्रहो-अनुग्रह, अनुत्वन । जीवा० २७५ । उत०  
५८७ ।

अणुग्रहणत्पण्णा-अनुभवसज्ञा, आहारराश । आचा०  
१२ ।

अणुग्रहो-अनुभव, स्वेन स्वेन रूपेण प्रवृत्तिना विपाकतो  
वेदानुभव । विदो० १००६ ।

**अणुभाग** - अनुभागः, आसुर्द्व्याणामेव विपाकः । भग० २८० । अचिन्त्या शक्तिर्वैकियकरणदिका । ठाणा० ६९, १४४ ।  
**अणुभागकम्मे** - अनुभागकर्म - कर्मप्रदेशानां संवेद्यमानता-  
 विषयो रसस्तदुप कर्म । भग० ६५ ।  
**अणुभागो** - अनुभागः, विशिष्टवैकियादिकरणविषयाऽचिन्त्या  
 शक्तिः । जीवा० १०९ । सामर्थ्यम् । प्रज्ञा० ८८ ।  
**अणुभाषकम्मे** - यथाषट्शरो वेद्यते तदनुभावतो वेद्यं कर्मा-  
 नुभावकमेति । ठाणा० ६६ ।  
**अणुभावनामनिधत्ताउप** - अनुभावनामनिधत्तायुः - अनु-  
 भावः - प्रकर्मप्राप्तो विपाकः, तदर्थानं नाम, यश्चिन्तु भवे  
 तीव्रविपाकं भामकर्मानुभूयते त(य)था नारकायुषि अष्टम-  
 षण्मन्धरसप्तशोपषातानादेयं दे. स्वरायशः कीर्त्यादिनामानि  
 तदनुभावनाम तेन सह निधत्तायुः अनुभावनामनिधत्तायुः ।  
 प्रज्ञा० २१८ ।  
**अणुभावे** - अनुभावः, विपाको रसविशेषः । भग० ३५ ।  
 तीव्रतमदुःखादिः । आव० ४९६ । अनुभावः । सूर्य० २७९ ।  
 विपाक उदयो रस इत्यर्थः । ठाणा० ४१४ ।  
**अणुभाव्यो** - अनुभावः, माहात्म्यम् । सूत्र० १२६ । विपाकः ।  
 प्रज्ञा० २१८ । स्वभावः, स्वरूपम् । ज्ञ० प्र० २९९ ।  
 तीव्रादिदेशो रसः । सम० १० । शाणुनाग्रहणामर्थ्यम् । उत०  
 ३६५ । प्रभावः । ज्ञ० प्र० २४६ । रसः, विपाकः ।  
 विशेष० ५६५ । कारणम् । जीवा० ३३९ । विपाकोदयः ।  
 जीवा० १३० । सामर्थ्यादिलक्षणः । आव० ५९६ । विपाकः ।  
 आप० ५९८ । रसः । उत० २३० ।  
**अणुभास्वर** - अणुभाषते । आव० ३११ ।  
**अणुभासणा** - अनुभाषण, प्रत्याख्यानशुद्धिः । आव० ८४७ ।  
**अणुभासमाण** - अनुभाषमाण । विशेष० १००५ ।  
**अणुमप** - अनुमतम्, मानितम् । भग० १२२ । वाच्यस्था-  
 घातस्य पथादपि मतः । भग० ४६८ ।  
**अणुमभो** - अनुमतः, अभिष्टो मोक्षाद्युत्ता । आव० ३२६ ।  
 अभिप्रेता । सू० प्र० २८९ आ ।  
**अणुमगा** - शीघ्रम् । (आज०)  
**अणुमत** - अनुमतं, वैगुण्यद्वैतस्थापि पधान्तम् । औप० ९६ ।  
**अणुमजा** - अनुमतिः । सू० सू० १२८ अ ।  
**अणुमर्ष** - अनुमतम्, अभिरक्षितम् । औप० ६४ । अनु-  
 मतः - गम्यतः । जीवा० १०६ ।

**अणुमया** - अनुमता, अनुज्ञाता । प्रज्ञा० २५० । विप्रियद-  
 शंसस्य पथादपि मता । विवा० ४२ ।  
**अणुमहत्तरो** - मूलमहत्तरो अगणिहिते जो पुच्छगिजो-  
 धुरे ठापति शो । नि० सू० प्र० १५८ आ ।  
**अणुमहयरो** - मूलमहत्तरोभावे प्रथम्यः पुरःस्थानथ । सू०  
 द्वि० १९० आ ।  
**अणुमाणं** - अनुमानम्, स्वार्थम् । आव० ४२७ । दृष्टान्तः ।  
 दश० १३०, १२६ ।  
**अणुमाणता** - लघुतरापराधनिवेदेन घट्टदण्डादिवमाचा-  
 र्यस्याकल्पय यदालोचनम् । भग० ९१९ । अनुमानं कृत्वा ।  
 ठाणा० ४८४ ।  
**अणुमाणे** - अनुमानम्, अनु-लिङ्गमहणसम्बन्धसरण्यदेः प-  
 धान्मीयतेऽनेनेलनुमानम् । भग० २२२ । अन्विति-लिङ्ग-  
 दर्शनसम्बन्धानुस्मरणयोः पधान्मानं - ज्ञानमनुमानम् ।  
 ठाणा० २५४ ।  
**अणुमाणेऽं** - अनुमान्य, सम्यक् क्षमयित्वा । व्य० प्र०  
 २५४ अ ।  
**अणुमोदये** - मादुज्जगामेओ । नि० सू० प्र० १०३ आ ।  
**अणुम्मुअंतो** - अनुमुच्यन्, अपरिच्यजन् । आव० ४०० ।  
**अणुयसंतं** - अनुवर्त्तयन् । आव० ३०५ ।  
**अणुया** - अणुकाः । दश० १९३ ।  
**अणुयाणं** - रथयात्रा । सू० सू० ६१ आ । पटिमातिमहिमा ।  
 नि० सू० प्र० २३९ आ ।  
**अणुयोगं** - अनुयोगो, ब्याख्यानं विधिप्रतिषेधाभ्यामर्थप्रप-  
 णम् । विशेष० २ ।  
**अणुरंगा** - गङ्गा । नि० सू० प्र० ३२४ अ । पंथिका, यान-  
 विशेषः । सू० द्वि० १२५ आ ।  
**अणुरंगिणी** - अणुरंगिनी, अनुवृत्तये - अनुकारं विदधानीत्येवं-  
 शीला । ज्ञ० प्र० ५१८ । सूर्य० १३६ ।  
**अणुरगो** - पंगिओ । नि० सू० सू० १७ आ ।  
**अणुरत्ता** - अनुगतः - भाषतः प्रतिबन्धः । उत० ३९४ ।  
 अन्तरप्रतिशेयतः परस्परस्वेदवन्ती । उत० ५३१ । अनु-  
 रताः - मतं प्रतिशेदाः । उत० ७०८ ।  
**अणुराभो** - अनुगतः । आव० ३०४ ।  
**अणुरागर्ष** - अनुवागतम्, अनुष्णमागतम् । भग० ११७ ।  
**अणुराधा** - अनुगथा, नक्षत्रविशेषः । सू० ११० ।

अणुराहा-नक्षत्रविशेषः । ठाणा० ७७ ।  
 अणुलिङ्ग-अणुलिम्पति । जीवा० २५४ ।  
 अणुलिपणं-अणुलिम्पनं-मङ्गलिप्याया भूमिः पुनर्लेपनम् ।  
 प्रज्ञा० १२७ ।  
 अणुलिहृत्-अणुलिम्पत्, अणिलिङ्गयत् । मूर्ध० २९४,  
 जीवा० ३७९, जं० प्र० २९७ । अणुलिम्पत्-अतिलिङ्गयत् ।  
 प्रज्ञा० ९९ ।  
 अणुलिहृत्ति-अणुलिम्पति, अणिलिङ्गयति । जीवा० २०९ ।  
 अणुलेपणं-अणुलेपनम्, मङ्गलिम्पय पुनः पुनर्लेपनम् ।  
 प्रज्ञा० ८० ।  
 अणुलोमं-अणुलोमम्, अनुब्रह्मनुगुणे वा । जीवा० ३ ।  
 अनुलकरणम्० । ठाणा० ३७६ ।  
 अणुलोमछाया-अणुलोमच्छाया, मूर्धच्छायाविशेषः । मूर्ध०  
 १५ ।  
 अणुलोमणा-अणुलोमना-प्रक्षापना । वृ० मृ० १२३ आ ।  
 अणुलोमयाउवेगो-अणुलोमयाउवेगोः । अणुलोमः-अनु-  
 ब्रह्मो वायुवेगः, दारीरान्तवैर्मैवान्तत्रयो यस्य सः । वायु-  
 गुल्मरहितोदरमध्यप्रदेशः । जीवा० २७७ ।  
 अणुलोमिम-अणुलोमम्, मनोहारि । दत्ता० २२३ ।  
 अणुलोमियं-कृत्वापरिमारितोमवजिज्यं त्रे भावमाणो अभा-  
 नओ लभद् । दत्ता० वृ० ११५ ।  
 अणुल्लय-ईन्द्रियविशेषः । उता० ९९५ ।  
 अणुल्लसिमो-अभिरुच्यमानः । आब० ६२१ ।  
 अणुल्लावे-अनुलाप-पीत-पुन्यभाषणम् । ठाणा० ४०८ ।  
 अणुल्लउत्तो-अनुपयुक्तः, मधुं प्रयत्नमावधानः । ओप०  
 २३ ।  
 अणुल्लक्यं-अनुपकृतम्, परैरवर्तितम् । आब० ५९७ ।  
 अणुल्लघादप-अनुपपातिके-उपपातध यत्र न भवति  
 उदाहारि तस्मिन् । ओप० १०० ।  
 अणुल्लघादय-आचारप्रकल्पस्य षड्विंशतिभेदः ।  
 सम० ४७ ।  
 अणुल्लघओ-अनुपलयः, अनुपनीयमानता, अनुपादान-  
 मिति । उता० ६ ।  
 अणुल्लघंते-अनुपनिष्ठति, अस्वाम्ये अस्वामंते । ओप०  
 १५५ ।  
 अणुल्लघावणीया-अनुवर्तनीया । ओप० १२४ ।

अणुल्लघंति-करोति । मग० ३२० ।  
 अणुल्लघत्-अनुवर्तः-भूयः प्रज्ञो वाद्वयं प्रज्ञः । सम० द्वि०  
 ४४१ अ ।  
 अणुल्लघत्त-अनुवर्तते । आब० ५९१ ।  
 अणुल्लघत्ति-अनुवर्तिः-अनुवर्तु अर्थात् अनुवर्तमानः । वृ० प्र०  
 ४३ अ ।  
 अणुल्लघत्तो-अनुवर्तमानः । आब० १११ । परिष्कृतो  
 महाजनेन । दद० द्वि० ४४१ अ ।  
 अणुल्लघत्तिया-परिवेष्टिता । नि० वृ० प्र० १८४ आ ।  
 अणुल्लघत्ती-अनुवर्तिः । आब० ५९५ ।  
 अणुल्लघत्ते-अनुवर्तमानः-मास्त्रकालभवी । दत्ता० ६२ ।  
 अणुल्लघदिहृत्-जं नो भावयिष्यपरंराग्यं मुक्तलम्बास्त्रक-  
 क्त । नि० वृ० द्वि० २३ आ ।  
 अणुल्लघदेसा-अनुपदेशः-गुण्याऽनुक्तः । ओप० १५१ ।  
 अणुल्लघमुञ्जो-संगकामवर्षितानादिराहारः, शुभित्कवन्-  
 लादिपरिधिः । वृ० मृ० ४७ अ ।  
 अणुल्लघमा-अनुगमा । जीवा० २३८ ।  
 अणुल्लघमाणा-अनुवदत-अनु-पधाद्वदनः पृथगो वदतो-  
 ऽप्येन वा मिथ्यादृष्टयादिना वृक्षला इत्येवमुक्तः । आना०  
 २५१ ।  
 अणुल्लघवारं-निर्दुरं । नि० वृ० प्र० २७८ अ ।  
 अणुल्लघवर्य-अनुपरतम्, अभिरतम् । मग० १८१ ।  
 अणुल्लघवर्यकार्हाया-अनुपरतवायित्री-देवानः सर्वतो वा  
 सावयवोमादिरतः नोपरतोऽनुपरतः कुतश्चिद्व्यतिष्ठान् इत्यर्थः  
 तस्य वायित्री । प्रज्ञा० ४३६ ।  
 अणुल्लघवर्यकायिकिरिया-अनुपरतस्य-अभिरतस्य सावयव-  
 सिध्यादये. सम्यग्दृष्ट्यां कायक्रिया-उक्तेरदिल्लघना, कर्म-  
 बन्धनिबन्धनम् । ठाणा० ४१ ।  
 अणुल्लघस्ते-अनुपसाग्ना, उदावायव्यः । प्रज्ञा० २९१ ।  
 अणुल्लघसंपन्नमाणागती-अनुपसंपन्नमानागतिः, परस्पर-  
 मुपदृष्टम्भरहितानां पथि गमनं, विद्यायोगनैधत्तुषो भेदः ।  
 प्रज्ञा० ३२७ ।  
 अणुल्लघस्तु-अनुवम्-मरामः भावकथ । आना० २४० ।  
 अणुल्लघाप-अनुपातः, अनुवारः । प्रज्ञा० १४४ । अनुगमने-  
 अनुवारः उता० ६३१ ।  
 अणुल्लघायगद्यत्-अनुपातगतिः-अनुवारगतिः । मूर्ध० १६

अणुवालय - नोशालकधावकविशेष । अणु ३५० ।

अणुवासन - अनुपासक विध्यादृष्टि । नि० चू० द्वि० २५ अ ।

अणुयासना - अनुवासना, अपानेन जठरे तलप्रवेशनम् । निष्ठा ४१ ।

अणुचित्तबुद्धि - अनुप्रतिबुद्धि - अनुभूताकारबुद्धि । विज्ञे० १८८ ।

अणुचिद्वि - अनुचिद्वि - मिथ्या ध्यात्वा । ज० प्र० १९३ ।

अणुवीद्वि - अनुवीद्वि, आनुवृत्त्यम्, मैथुनाभिलाषम् । सू० १११ । अनुचिन्त्य विचार्य सम्प्रक्रियत्य । आचा० ३८६ ।

आलोच्य । दश० २०१ ।

अणुवीद्विनिद्राभासि - अनुविचिन्त्य निद्राभाषी - विचार्य निश्चितभाषक । आचा० ३९३ ।

अणुवीद्विभासप - अनुविचिन्त्यभाषण, पर्यालोच्य भाषक, द्वितीयमतस्य द्वितीया भावना । आच० ६५८ ।

अणुवीद्विति - चित्तैरुग । नि० चू० प्र० १०० अ ।

अणुवीद्वि - पूर्वव बुद्धौ अणुचित्तिय । दश० चू० ११५ ।

अणुवृद्धेहा - अनुवृद्धेहा - परेश स्वस्य क्रियमाणस्य तस्या जुगोदयिता, तद्रूपे ह्यकारि । टाणा० ३८९ ।

अणुवृद्धेर - लक्षणसमुद्राधिकारक । सम० ३३ ।

अणुवृद्धेरराया - अनुवृद्धेरराया, भुचनेन्द्र । जीवा० ३९२ ।

अणुवृद्धेरनागरातीण - अनुवृद्धेरनागराया - नागराति विशेष । टाणा० २२८ ।

अणुवृद्धेसलागा - दाहसोपविशेष । नि० चू० द्वि० १८ अ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेयन, सप्तस्य एव । आच० ३३९ ।

अणुवृद्धो - अगर्वित । नृ० नृ० ४ अ ।

अणुवृद्ध - अनुवृद्धम् । आच० ८३१ ।

अणुवृद्धा - अनुवृद्धानि - अनु - महान्तकर्मणस्य पश्चात्तदप्रतिपत्ती यानि व्रतानि कथ्यन्ते तानि, अथवा सर्वविरतापेक्षया अग्रे लघुगुणिनो व्रतानि । टाणा० १९१ ।

अणुवृद्धय - अनुवृद्धिनि, परिणामिद्विबुद्धिदृष्टान्ते भावार्थि आच० ४३६ । अविचि - पुलाकुरुषं प्रथम् - आरौज्या अनुवृद्धा पतिमना इति यद्विदुःशुभं वा । उत० ४४६ ।

अणुवृद्ध - सूत्रशायानिवातनियुति दश० ११० ।

अणुवृद्धा - अनाय्या (स्या)ने - रिनरथम् । आच० १०१ ।

अणुविवग्गो - अनुविवग्गो - प्रज्ञानत परीपहादिभ्योऽविभ्यत् । दश० १६३, १०५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धे, अविचि - लक्षीकृत्य सधरे - लसम्बन्ध सम्भाषनि यावा । उत० ४४६ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति विविदिशा गमन भावदिगागमन वा स्मरति वा । आचा० २० ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति, सन्त नेवानुवृद्धे । जीवा० २८४ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । आच० १५० । अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । उत० ५८४ । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० २८९ अ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।

अणुवृद्धे - अनुवृद्धेति । अनुवृद्धेति । नृ० प्र० ३५५ ।



**अणुसिद्धी**—अनुशासनमनुशास्ति—सदुणोक्तीर्तनेनोपबृहणं सा विधेयंति यत्रोपदिश्यते सा । टाणा० २५३ । अनुसिद्धिः—उपदेशप्रदानम् । व्य० प्र० ११७ अ । शिक्षाम् । उत० ३२३ । धर्मकथाम् । ओष० ७३ ।

**अणुसूयगा**—अनुसूचका—नगराभ्यन्तरे चारुसुपलभन्ते, सर्वमनुसूचकेभ्यः कथयंति । व्य० प्र० १७० आ ।

**अणुसूयसं**—अपरशरीराधितता, परनिष्ठा । सूत्र० ३५७ । अनुस्यूतसं—परनिष्ठा कृम्यादित्वम् । सूत्र० ३५७ ।

**अणुसोयचारी**—अनुश्रीतश्चारि—प्रतिश्रयादारभ्य शिक्षा-चारी । टाणा० ३४२ । नशादिप्रवाहगामी । टाणा० २७२ ।

**अणुस्तस्यि**—अनुस्यूतम् । दश० १९ ।

**अणुस्तिस्यस्य**—अनुरिसक्तम्—अनुदत्तत्वम् । उत० ५९१ ।

**अणुस्तुयं**—अनुधृतम्—अवधारितम् । उत० २४७ ।

**अणुस्तुपसं**—अनुसूचकम्—विषयसुखं प्रति निःस्पृहत्वम् । उत० ५८६ ।

**अणुया**—अनुपः, सजलप्रदेशः । विशे० ७२७ ।

**अणेगचित्ते**—अनेकचित्त, अनेकानि चित्तानि कृपिवाणि-ज्याबलमनादीनि यस्यासौ, खलुरवधारणे, संसारमुखाभि-लाषन्नेकचित्त एव भवति । आचा० १६३ । अनेकस्यस्थानि चञ्चलतया चित्तानि—मनासि यामा सा । उत० २९७ ।

**अणेगगुणा**—अनेकगुणा—अनेकप्रकारा । मृ० प्र० ७५ अ ।

**अणेगतालाचराणुचरियं**—जानाविधंप्रेशाचारिसेविताम् । भग० ५४४ ।

**अणेगाद्वयो**—अनेकद्वय । विशे० ४२४ ।

**अणेगापत्नी**—अनेकपत्नी । आच० ९५ ।

**अणेगरूपधुणा**—पहानि वस्त्राणि एकीकृत्य धुनाति । ओष० ११० ।

**अणेगव्यधुणे**—अनेकवधुणा चामी महुषाव्यमातिक्रमणतो युगपदनेकवस्त्रग्रहणतो वा धुनना च प्रकम्पनानिमिका अने-करूपधुनना । उत० ५४२ ।

**अणेगवासानुपयं**—अनेकवपनयुत, अनेकवपणां—असङ्घषेय-वस्तवणां नयुतं—महुषाविशेषम् । उत० २७७ ।

**अणेगावाती**—परंपरदिलक्षणा एव भावा इति वादिनः । टाणा० ४२५ ।

**अणेगिल्मि**—अनील्य—अनन्यमशगम् । आचा० ४२९ ।

**अणेग्याणी**—जाहे ताणि मुराहीणि ण लज्जन्ति ताहे वेदिं अभावे परमं दुक्ख समुपजजति, मोक्खग्गभावे वा । दश० च० ८८ ।

**अणेगसाणा**—अनेकसां—अध्यासोपविशेषः । भाव० ५७५ ।

**अणेगसिजं**—अनेकणीयम्—आधाकर्मादिशेषदुष्टम् । आचा० ३२१ ।

**अणेगकंता**—अनुपकान्ता—अनिराकृता । श्रौ० ३४ ।

**अणेगधमिअ**—अनिमार्जनम् । ल० प्र० ५७ ।

**अणेगजा**—अनवया, स्वामिदुहिता । भाव० ३१२ ।

**अणेगत्तया**—अलज्जनीयता । मृ० प्र० ३०९ आ ।

**अणेगवरया**—अपारा (सं०)

**अणेगमर्दंसी**—अवर्म—हीनं मिथ्यादर्शनाधिरारोपि तद्विपर्य-रतमवर्मं तद्दृष्टुं शीलमस्तेव्येनवमवर्दी, सम्यग्दर्शनज्ञान-चारिणवान् । आचा० १६४ ।

**अणेगमाणं**—अपमानं अनादरकृतं न भवति । ओष० १०३ ।

**अणेगपारं**—अनर्वाक्पारम्—विस्तीर्णस्वरूपम् । प्रथ० ६२ ।

**अणेगधर्मवसितम्** । भाव० ६०१ । अर्वाभागपरमाग-वक्षितमनाद्यनन्तम् । सूत्र० ४०३ । अनर्वाक्पारमिव महत्वादानवर्वाक्पारम् । प्रथ० ५१ । देशीवचने, प्रनु-राधे, आराद्भागपरभागहिते । भाव० ३४५ । (भक्त०)

**अणेगहविज्जंतो**—अविध्यापितः । भाव० ३८४ ।

**अणेगधिहिआ**—अनीपनिधिक्वी—वक्ष्यमाणपूर्वानुपूर्व्यादि-क्रमेणाविरचनं प्रयोजनं यस्या इति । अनु० ५२ ।

**अणेगवमा**—अनुपमा । प्रजा० ३६४ ।

**अणेगवमा**—स्ताथविशेष । ज० प्र० ११८ ।

**अणेगहट्टं**—अजाजिष, बोटलाति उवकारेण विरहितं । नि० च० प्र० १८३ अ ।

**अणेगहंतरा**—समारतरणमर्था । आचा० १२३ ।

**अणेगहट्टि**—अनपघटकः, यो बलाहकतादौ गृहीत्या प्रवर्त-मानं निवारयति सोऽपघटकस्तद्भावात् । विपा० ५२ ।

**अणेगहियं**—अविद्यमानजलोपिकातमिगहनत्वेनाविद्यमानोर्द्धं वा । भग० ६७३ ।

**अणुउत्थिष**—अन्ययूथिका—अन्ययूथं—विचित्रितसंघादपर-संघस्तदस्ति येषां तेऽन्ययूथिकाः तीपन्तितीकाः । भग० ९८ । अन्यनीथिका । जीवा० १४३ ।

अणउत्थिया - तद्यणियादि धेनवा लभिया गाररथा ।  
नि० चू० द्वि० ।

अणभ्रीमुहो-अन्यतोसुर । भाव० ६५० ।

अणभ्रीमुहो-अन्यतोभूतम् । भाव० २०५ ।

अणभ्राञ्छेह्य-अन्यगच्छीय । भाव० ३२३ ।

अणभ्रिग्लाय-अभ्रग्लान - प्युषितमद्य मया मोक्षयमि-  
त्वेरं प्रतिपन्नाभिप्रह । वृ० प्र० ३१२ भा ।

अणभ्रिग्लाय-अभ्रग्लायक । औप० ३९ । वृ० प्र०  
११२ भा ।

अणभ्रित्थिययवत्ताणुजो-अन्यतीर्थिकेभ्य - कपिलदि-  
भ्य सकाशात् प्रवृत्त - स्वकीयाचारवस्तुतत्त्वानामिणुगेभ्यो-  
विचार तत्पुस्तकरणार्थं शास्त्रसंदर्भ इत्यर्थं लोऽन्यतीर्थि-  
कप्रवृत्ताणुजो । सप्त० ४९ ।

अणभ्रित्थिया - रथपदाद्य । नि० वृ० प्र० ७६ भा ।  
अन्यतीर्थिका - चरकपरिव्राजकशाकमीजीवकत्रुदभावकपम्ब-  
तय । नि० वृ० प्र० १४७ भा ।

अणभ्रन्थ-अन्यत्र, परिवर्जनायै । भाव० ८५० ।

अणभ्रन्थे-अन्वये-अनुगतं सूत्रं परमैश्वर्यादिकोऽर्थो यत्र  
स । विद्वा० २२ ।

अणभ्रन्तहरे-अन्यवत्तहर - अन्येभ्यो वृत्त-रात्रादिना वितीर्ण  
हरति अगन्तरात् एवाच्छिन्नति । प्र० २७४ । अणभ्र-  
न्तहर - मामनगरादिषु चौरैर्हृत । उप० ७४ ।

अणभ्रमणघडस-अन्योऽन्यवृत्ता, अन्योऽन्य घन-  
सुदुयाररचना यत्र तद्व्योऽन्यवृत्तं तदभाषस्तथा आलिका ।  
भग० २१५ ।

अणभ्रय-अर्णव - अर्णो-चल-विद्यते यत्राभावणव । उप०  
२४१ ।

अणभ्रसंभोह्य-अन्याम्भागिव । भाव० ८४० ।

अणभ्रम्मिणी-परतीर्थिका अगारम्या अक्षरिणी । वृ०  
तृ० ४० भा ।

अणभ्रद्वृत्तरी-अन्याविद्यतरीरप्यन्यराधिष्ठितवारीरम् ।  
भाव० ६३३ ।

अणभ्रद्वो-अन्याविद्य, परायत्त, यथाविद्यो वा । उप०  
११३ । भावि० । अन्त ०० ।

अणभ्रलो-अपराद । नि० वृ० तृ० १०१ भा ।

अणभ्रासि-अशासिणी, अमातो आतिथुतादिभि एशनि-  
उच्यति पिण्डादीति । उप० १२४ ।

अणभ्रायं-अज्ञानम्, चतुर्थं उदङ्ग । भाव० ८५६ ।  
एकविंशतितम परीपह, समीपाकनादनामोद्विजेत ।  
भाव० ६५७ ।

अणभ्राणदोसे-अज्ञानदोष । औप० ४४ ।

अणभ्राणिय-अज्ञानिक, वृणितं ज्ञानमत्वास्तीति । भाव०  
८१७ ।

अणभ्राणियचाई - मन्तपष्ठिभेदा अज्ञानवादि । सप्त०  
१११ ।

अणभ्राणो-अज्ञान, पराप्रमोहित । भाव० १४६ ।

अणभ्रातचञ्ज-अज्ञातचर्या । भाव० ८२० ।

अणभ्रातपिडे-अज्ञातपिण्ड, अन्तमान्त, अज्ञातेभ्यो वा-  
पूर्वापरसस्तुतेभ्यो वा पिण्डोऽज्ञानोच्छ्रयत्वा उच्यते ।  
सूत्र० १६४ ।

अणभ्रायं-अज्ञातीर्षक । वृ० द्वि० १८६ भा ।

अणभ्राय-अज्ञातम्, अनुमानत अज्ञातम् । भग० १६७,  
२०० ।

अणभ्रायया-अज्ञानता, तपनोऽप्रकाशनम् । प्र० १४६ ।  
अज्ञातता तपरवज्ञातता, योगवत्प्रदे गन्तव्यो योग ।  
आप० ६६४ ।

अणभ्रावदेसो-अदक्षिणभागे । नि० वृ० प्र० ७७ भा ।

अणभ्रियुत्तो-अर्णिकापुत्र । नि० वृ० प्र० १९४ भा ।

अणभ्रिया-अर्णिका, दक्षिणमपुराया दक्षिणपुत्रे । भाव०  
६८८ ।

अणभ्रियापुत्ते-अर्णिकापुत्र । वृ० तृ० १२ भा ।

अणभ्रियस्तर-ईयदवन्ता । वृ० द्वि० १२४ भा ।

अणभ्रयति-क्षरति (तः)

अणभ्रय-भारुव, अ-आमविधिना हनौति-अक्षति वमं  
यन्मान् य आश्रव प्राणतिधातादि । प्र० ०१ ।

अणभ्रयकर-भ्राधवकर । औप० ४२ ।

अणभ्रयकरि-रमाभ्रवरी । भावा० २०८

अणभ्रयकरे-रमाभ्रवरी । भावा० ४०५ ।

अणभ्राण-अज्ञानम् । भाव० १०१ ।

अणभ्राणो-अज्ञानयव । भाव० ८३१ ।

अतज्जाय-अतज्जातपारिव्यापनिकी, पारिव्यापनिकया द्वितीयो  
 भेदः । आव० ६११ ।  
 अतज्जाय-अतज्जातीयं, भिन्नजातीयम् । आव० । ६२३ ।  
 अतज्ज-अतीर्थं, अन्यतीर्थं वा । वृ० द्वि० ३१ अ । अतिर्थं ।  
 नि० च० वृ० १७ अ ।  
 अतति-सततमवगच्छति । ठाणा० १० ।  
 अतन्त्रम्-शास्त्रलक्षणरहितम् । आव० १२० ।  
 अतरं-तरीतुमगम्यं, विषयगणं भवं वा । उक्त० २९२ ।  
 अतरंत-रत्नानम् । वृ० प्र० २२९ आ । अतरन्त-अति-  
 ग्लानः । ओष० १८३ ।  
 अतरंत-ग्लानाः । ठाणा० १३८ ।  
 अतरंते-अतरन्-अमहः । ध्य० द्वि० ३७ अ ।  
 अतरंतो-अतरन्, अशक्नुवन् । आव० ८४७ । अशक्नु-  
 वन्-असमर्थः । दश० ८९ । अशक्नुवान् । आव०  
 ६३७ । ग्लानः । ओष० ४५ । मयाऽऽकाशम्यवरिषता-  
 भ्यां पादाभ्यां न शक्नोति स्थातुं तदा । ओष० ८४ ।  
 गिलाणो । नि० च० प्र० ४३ अ. ३० आ, ३६० अ ।  
 ग्लानः । वृ० वृ० ५ आ, नि० च० प्र० ८४ अ ।  
 अतरण-अतरण, अशक्तः, ग्लानः । ओष० ६७, वृ० प्र०  
 २३४ आ ।  
 अतरो-ग्लानः । वृ० द्वि० २२४ अ । रत्नाकरः । वृ० प्र०  
 ३७ अ ।  
 अतसी-अथमी, धान्यविशेषः । ठाणा० ४०६ । घुन्छविशेषः ।  
 प्रमा० ३० । धान्यविशेषः । नि० च० प्र० १४४ आ ।  
 अतहृणाणे-अनथाज्ञानम् । ठाणा० ४८१ ।  
 अतरं-अतारम्, तरितुमगम्यम् । भष० ८० ।  
 अतारिमा-दुग्धमगः । मृत्र० ८६ ।  
 अति-अतिगयवान् । ठाणा० ४०३ ।  
 अतिति-प्रविशन्ति । नि० च० प्र० २०२ अ ।  
 अतितिणः-अतिन्तिण, अलाभेऽपि नेपथ्यक्रियनभाषो ।  
 दश० २३३ । अतिन्तिण, न सत्त्विकशिक्षुकः सप्तस्यया  
 भयो भयो वक्ता, प्रनिपूणः सुत्रादिना । दश० २५८ ।  
 अतिअस्तिप-आदिवायिकाः । मार्गश्लोकाः । वृ० द्वि०  
 १२५ अ ।  
 अतिउच्चाओ-अतिधान्तः, प्राचूर्णकादिः । ओष० १८६ ।  
 अनिउच्चारिण-अयुदातिः । ओष० १३८ ।

अतिकार-महोरगेन्द्रः । ठाणा० ८५ । अतिकार-महो-  
 रगभेदविशेषः । प्रमा० ७० ।  
 अतिक्रमा-अतिक्रमः-अतिलङ्घनं, विनाशः । आचा०  
 १३५ । प्रतिप्रवणतो मर्यादाया वरुणनम् । म्य० प्र० ९० अ ।  
 अतिक्रीडायासो-अतिक्रीडाजामः, सुस्थितलवणपिपस्यं  
 भूमियविहारविशेषः । जीवा० ३१५ ।  
 अतिक्रवतुंडो-अतीक्ष्णतुण्डम्-अतीक्ष्णमुतम् । आव०  
 ७६४ ।  
 अतिमान्ता-अतीना । आर्चा० १७८ ।  
 अतिखर्द-प्रभूतम् । वृ० द्वि० १८७ अ ।  
 अतिखर्द-गुरोरात्तके भोक्तव्यम्, अतिप्रचूरं भक्षयेत् ।  
 ओष० १८२ ।  
 अतिगण-अतिगतः । आव० १७३ ।  
 अतिगओ-अतिगतः । दश० ४१ ।  
 अतिगता-श्विष्टः । वृ० द्वि० १८४ अ ।  
 अतिगमणं-प्रवेन । वृ० द्वि० १६३ आ । अतिगमनं, प्रवे-  
 नम् । वृ० प्र० २७५ आ ।  
 अतिगुपिल-अतिगूडम् । आव० २९६ ।  
 अतिगुलिका-(अइगुलिया)-कुक्कुटा । वृ० वृ० १९५ अ ।  
 अतिघरं-सजतिपडिस्मृतो । नि० च० प्र० २३७ आ ।  
 अतिखारो-व्यतिक्रमः स्वल्पनपर्यायः । तरवा० ७-१८ ।  
 अतिच्छिष्ट-अतिकान्तामाम् । ओष० १५२ ।  
 अतिजाति-पविमति । नि० च० प्र० ३४ आ ।  
 अतिजाते-मयूदनरः । ठाणा० १८४ ।  
 अतिज्ञाणो-अतियानम् । आव० ३६६ ।  
 अतिज्ञाहि-अतियास्यति-प्रवेश्यति । ठाणा० ४६३ ।  
 अतिणिओ-अतीनीनः । आव० २०४ ।  
 अतिणीओ-अतीनीनः, प्रापितः । आव० ८०० ।  
 अतिणेउं-प्रवेदय । वृ० वृ० ७४ आ ।  
 अतिणो-रत्नानः । वृ० प्र० २८८ आ ।  
 अतिंतणित-आगच्छच्छन् । नि० च० प्र० १२० आ ।  
 अतिताणकहा-अतियानकथा-नगरादौ प्रवेशकथा । ठाणा०  
 २१० ।  
 अतिताणगिहाति-अतियानगृहाणि-नगरादिप्रवेशे यानि  
 गृहाणि । ठाणा० ८६ ।  
 अतितेया-अनितेजा, गतिनामविशेषः । सूर्य० १४७ ।

अतिशयः- अतीर्थम्, तीर्थस्याभावोऽतीर्थम्, तीर्थस्याभावात्  
धान्यादोऽपान्तराले व्यवच्छेदो वा । प्रश्न० ११ ।

अतिशयसिद्धा-अतीर्थे-तीर्थान्तरे सायुष्यवच्छेदे जाति-  
स्मरणदिना प्राप्तापवर्गमार्गा मरुदेवीवत् सिद्धा अतीर्थसिद्धाः ।  
ठाणा० ३३ ।

अतिशयाधिते-प्रत्याख्यातः, निषिद्धः । नि० चू० प्र०  
१८५ अ ।

अतिशयभो-अस्तमितो । नि० चू० प्र० ३१२ अ । समा-  
प्येतर्यः । नि० चू० वृ० १२६ अ ।

अतिशयिधिभाग-न्यायागृहानां कल्पनीयानामेषापानादीनां  
द्रव्याणां देसकालभ्रदात्मकारकमोपेतं परया आत्मानुग्रह-  
युद्धया संयतेभ्यो दानम् । तत्त्वा० ७-१६ ।

अतिशयति-(अङ्ग) प्रकरोति अनियन्तति वेति । ठाणा०  
२९८ ।

अतिशयिष्ठि-अतिशयिष्ठः-प्रामितः । प्रश्न० ५३ ।

अतिपरिणामक-अपवादैकमतिः । मृ० प्र० १३२ अ ।

अतिपरिणामा-अतिपरिणामाः, अतिशयाप्याऽपवाददृष्ट-  
योऽतिपरिणामाः । विभे० १३१ । अतिशयाप्या परिणामो  
गुणोच्छ्वरूपो यस्य गः । व्य० प्र० ७२ अ ।

अतिपात-प्राणिनः विभ्रंसः । ठाणा० २९० ।

अतिपातनम्-प्राणवता मह वियोजनम् । ठाणा० २६ ।

अतिपासं-अतिपासं-एवतावमपिणीतीर्थकरः । मम०  
१५३ ।

अतिपुण्यः-किपुण्यमेदविशेषः । प्रश्ना० ७० ।

अतिपुण्यया-अधुलादादिशरणकारणमोक्षानुपादानेन ।  
भग० ३०५ ।

अतिबलदाया-अतिबलदाया । आब० ११६ ।

अतिमन्द्र-गम्भीरः । जं० प्र० ५२९ ।

अतिम(मु)त्तकुमारो-राजविनाय । नि० चू० द्वि० २७ आ ।

अतिमुक्तकः-वक्ष्यपरमप्रतिनः । भग० ५८६ । अतिमुक्तक-  
नाशकमुत्पापिदोषः । प्रश्ना० ३७ ।

अतिमुक्तकचन्द्र-अमुत्तचन्द्र) पुण्यविदिरदम् । भग०  
१११ ।

अतिमुक्तग-अतिमुक्तगता-रजनिविशेषः । शं० १८३ ।

अतिमुक्तो-अतिमुक्तः, वसाधमयः । भन्न० ६ । विज-  
यमयः धरेकदाः मयः । भन्न० २३ ।

अतियाण-अतियानं-नगरप्रवेशः । ठाणा० १७३ । प्रवेशः ।  
नि० चू० प्र० २७३ अ ।

अतियातो-अतियातः, मतः । उक्त० ४८१ ।

अतियारे-अतिचारः-अतिचरणं प्रहृणतो प्रतस्यानिकरणम्  
व्य० प्र० ९० अ ।

अतिराडले-स्वामिदुलम् । प्रश्न० २५३ ।

अतिरायितं-अताडितम् । ओप० ११०

अतिरिच्छच्छिन्नं-अतिरिच्छोवच्छिन्नं-तिरश्चीनमपाटितं ।  
आत्मा० ४०५ ।

अतिरिक्तं-अतिरिक्तम्, कुक्षिपूराहारप्रमाणातिशयन्तम् ।  
प्रश्न० १५४ ।

अतिरिक्तसजासणिप-अतिरिक्ता-अतिप्रमाणा मर्या-  
वसनिरामनानि च पीठकारीनि यस्य मन्ति सोऽतिरिक्त-  
दायामनिकः । मम० ३७१ ।

अतिरिक्ता-धंपशाला । नि० चू० प्र० १०६ आ ।

अतिरूपः-भूतमेदविशेषः । प्रश्ना० ७० ।

अतिरेगं-अतिरेकः, आधिक्यम् । भग० १८६ । अतिरेकम्-  
अत्यर्थम् । ओप० २२५ ।

अतिलोलुप-अनीव रमलम्पटः । उक्त० ३४५ ।

अतियद्दमाणे-अतिवर्तमानः-मयंयाद्यान् सर्वाभ्यन्तरे  
प्रतिगच्छन् । मम० १७ ।

अतियद्विष्ट-अतिवर्तितः-प्रामितः । प्रश्न० ५६ ।

अतियद्विष्णुं-अतिवर्तय-अतिरायेन गणा । प्रश्ना०  
५१० ।

अतिययनी-अतिमजति, बाहुल्येन गच्छति । शं० १३१ ।

अतियात्मा-अतिवर्षा, अतिवर्षवर्षा वेगवद्बर्षणम् । भग०  
११९ ।

अतिपाहयति-अवयति, विनयति च । प्रश्न० ९४ ।

अतियिज्ञे-अतिविद्यः, तरवपरिच्छेदी विदा यस्य । भग०  
१५९ ।

अतियिज्ञान-विदिनायमतद्राव । मम० आत्मा० १२१ ।

अतियेगो-अतियेगः-अतिरजानादीपयेगः । प्रश्न० ५१ ।

अतिमुक्तो-मुक्तमूर्तिः । ठाणा० ३७४ ।

अतिसेसे-सेसाप्यनिकान्ते गात्रियम् । ठाणा० ३८४ ।

अतिसेसा-अतिमयसाः । ठाणा० ३९५ । अतिसेसे-अतिमयः  
उक्त० ३८४ ।

अक्षय-अक्षयवान्, सचेतन । दश० २३६ ।  
 अक्षयसंपन्नगृहिय-आत्मसम्पन्नगृहीत, आत्मैव सम्पत्क प्रव-  
 र्थेण गृहीतो येन । दश० २५६ ।  
 अक्षयसमाह्विय-आत्मसमाह्वित, आत्मना समाह्वित ज्ञान-  
 दर्शनचारित्र्योपयोगेन सद्योपयुक्त इत्यर्थः । आत्मा वा समा-  
 ह्वितोऽस्मैत्यात्मसमाह्वित । सदा शुभव्यापारधानित्यर्थः ।  
 आचा० १११ ।  
 अक्षयसुरिसो-आत्मसद्वन, बुद्ध्युरूप । उक्त० ४० ।  
 अक्षयि-आत्महित, मोक्ष । दश० १०० । मोक्षो ।  
 दश० सू० ६८ ।  
 अक्षा-आत्मा । आव० २५८ । मोक्ष, कथमो वा । सूत्र०  
 १०१ । आत्मा-शरीरता, स्वीकृता । टाण्ण० ६३ । आ-  
 अभिविधिना प्रायन्ते-दुःखात् सरक्षन्ति युक्त्योत्पादयन्तीति  
 आत्मा आत्मा वा-एकान्तहिता । भग० ६५६ । आर्ता-  
 शुकुडभ्या पीडिता, आप्ता-रागद्वेषरहिता, आत्मा-  
 गीतार्था । बृ० द्वि० १४३ अ ।  
 अक्षाणशो-अत्राण । आव० २११ ।  
 अक्षाणा-गणित्वितीया मात्या, कर्मिका, संश्रता वा ।  
 सू० द्वि० ८२ आ ।  
 अक्षाणो-अत्राण, अनर्थप्रतिपातवर्जिन । प्रथ० १९ ।  
 प्राणरहित, अनर्थप्रतिपातवाभावात् । प्रथ० ११ । गवा-  
 दिहारिणो । नि० सू० द्वि० ११ अ ।  
 अक्षाह्विय-आत्माधिष्ठित । ओष० १५० ।  
 अक्षि(ति)मुत्तय-अतिमुक्त, पुण्यप्रधानवनस्पतित्विमेव ।  
 जं० प्र० ४६ ।  
 अक्षुकोसे-आत्मोत्कर्ष । सम० ७१ । आत्मगुणामिमान् ।  
 टाण्ण० २७१ ।  
 अक्षेय-आत्रेय श्रद्धिनाम । आर० ३७२ ।  
 अक्षो-आप्त, मोक्षमार्ग, प्रशोधनोप, सर्वज्ञ । सूत्र०  
 १९५ । रागादिरहित । दश० १०८ ।  
 अक्षोषणीय-आत्मैव शेषनीर - तथा निवेदितो-विशोजितो  
 यस्मिन् । टाण्ण० २७२ ।  
 अक्षय-अज्ञम्, नाराचादि क्षेत्र्यायुधम् । प्रथ० ११६ । अर्थ,  
 विषय । आव० २८३ । अर्थ-ज्ञेयवान् मर्त्यमेव वस्तु,  
 ६३ विषय । उक्त० ३६८ । अभिषेध, जीवादिस्त्वल्पो वा ।  
 उक्त० ३८५ । अप्येव इत्यर्थ-स्वर्गापवगादि । उक्त०

४४८ । व्याख्यान । टाण्ण० ५० । सुप्रय व्याख्यान ।  
 टाण्ण० १७० । विदो० ५९२ ।  
 अक्षयशो-अपे पक्व गतो, अचकलुषिमयपथे वा गतो ।  
 दश० सू० १३३ ।  
 अक्षयतमयस्मि-अलमयति । उक्त० ४३५ ।  
 अक्षयतरं-अर्थांतरम्, पृथग्भाजम् । आव० ६०३ ।  
 अक्षयतरभावे-अर्थांतरभाव-भेद । आव० ४७६ ।  
 अक्षय-अर्थ, शब्दादिविषयभावेन परिणतद्वयत्वम् ।  
 विदो० १६० ।  
 अक्षय-अक्षयस्ति) अक्षयुष्य, अर्थांतरपर । आव० २७३ ।  
 अर्थ, निष्पन्नमुत्तरमोक्ष । दश० १८५ । अर्थनम्,  
 असम्प्राप्तकामभेद, तदभिप्रायमानम् । दश० १९४ ।  
 अस्त, अस्तपत्वेन अदर्शन वा । दश० २३३ । आदेश ।  
 सू० प्र० २० आ ।  
 अक्षयअचरामो-अर्थावगम, अधपरिच्छेद । दश० १२५ ।  
 अक्षय-गुणविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।  
 अक्षयकक्षिया-प्राप्तोत्पद्येऽविकल्पितेन्द्र । भग० ६७१ ।  
 अक्षयकरो-अर्थकर विद्यायर्थरक्षणक्रीड, भाषकरविशेष ।  
 आव० ४९१ ।  
 अक्षयकहा-अर्थकथा, विद्या विष्णुमुखायोऽतिवेद मन्वथ  
 कथा नाम दृष्टो भेद उपप्रदानम् । दश० १०७ ।  
 अक्षयक्रे-अकण्ठ-अनवना । दश० ९३ ।  
 अक्षयक्रेषणया-अक्षयवया, अर्थगवेपगन्मिमतम् । मूर्ध०  
 ७९२ ।  
 अक्षयक्रे-अस्ताप । शोष० ३० । अस्तापम् । आव० ४१९ ।  
 अक्षयजुषी-अर्थयुक्ति, ह्येतद्व्याख्या अर्थयोजना । दश० १६० ।  
 अक्षयजुतो-अर्थयुक्त, अर्थवार, अपुनरुक्तो, महावृत्त ।  
 जीवा० २५५ ।  
 अक्षयदुस्पर्ण-अर्थदुष्पण्यममम् । अपोपत्तिहेतवो मे नामा  
 गुणयचतुष्पप्रभृतय प्रकारास्तीनां क्षणम् । व्य० प्र०  
 १५७ अ ।  
 अक्षयधम्मगर्ह-अर्थधर्मधर्मधर्मवर्मा यदि वाऽप्येते-द्वितीय  
 निरभिलष्यते, गति-मातृधाना ज्ञानार्थना हिताहित  
 लक्षणा स्वस्वपरिच्छिन्ना । टाण्ण० ४७० ।  
 अक्षयनिउरे-सख्याविशेष । मूर्ध० ९१ ।  
 अक्षयनिउरे-मन्वापिसेर । मूर्ध० ९१ ।

अर्थनिकुरं—अर्थनिकुरं, चतुरशीतिरर्थनिकुराङ्गगतसदृशानि ।  
जीवा० ३४५ ।

अर्थनिकुरंगं—अर्थनिकुराङ्गम्, चतुरशीतिरर्थनिकुराङ्गगतसदृशानि । जीवा० ३४५ ।

अर्थपञ्जाया—अर्थपर्याया, ये तु तेषामेव पाचकशब्दानामभिधेयार्थस्वयामभूता भेदाः, यथा कनकस्य कटककैयूरादयः, ते सर्वेऽप्यर्थपर्याया भव्यन्ते । विशेषे २०८ । ये तु तद्वेदभेदभक्तिद्वयं तेषां तदेव प्रतिपादकः पर्याया अर्थपर्याया उच्यन्ते । विशेषे २०७ ।

अर्थपर्यं—अर्थपरम्, मुक्तिर्हेतुर्वा । मृ० १५३ ।

अर्थपल्लिमथो—अर्थपरिमन्थ । विशेषे ६०८ ।

अर्थपिपासिय—अप्रार्थार्थनियमनात्तृष्णा । भग० ६७१ ।

अर्थपुहुक्त—अर्थप्रयक्त्व—क्षुताभिधेयोऽर्थं तस्मान्मूर्धं पृथक्, अर्थेन वा पृथु अर्थपृथु तद्भाव अर्थपृथुत् । आव० ६१ । अर्थात् पृथक्त्व कथञ्चिच्छेदो यस्य, निस्तीर्णमर्थपृथु । विशेषे ५९२ ।

अर्थप्रणमुहुक्तं—अस्तमनमुहुक्तम्, अस्तोपलक्षितं मुहर्तम् । ज० प्र० ४५९ ।

अर्थमंत—अर्थवताम्, प्रयोजनवताम् । भक्षणार्थाणाम् । ज० प्र० २४३ ।

अर्थमंतमेत—अस्तमगति मित्रे-पूर्वे, रायम् । ज० प्र० २४३ ।

अर्थरणी—आस्तरणम्, आस्तरणं करोति । आप० ४१ ।

अर्थरथ—आच्छादनम् । ज० प्र० ५५ । आस्तरकैः, अस्तरजसा वा । भग० ५५२ ।

अर्थलोला—अर्थं लोला—अर्थलोला—लम्पग—चौरादयः । उत० ५९० ।

अर्थविगम्पणा—अर्थवक्तृपना । आव० ४८४ ।

अर्थविणिच्छय—अर्थविनिश्चय—अपयारक्षक कल्याणवह वा अर्थावित्तभाषम् । दृग० ०३० ।

अर्थभंजुक्तं—मठभावस्तुत । दृग० ५० ८९ ।

अर्थसंपर्याणं—मावतरीकार्थगतम् । आचा० ४०० ।

अर्थस्तथं—अर्थशाब्दम् । आव० ४९२ । अर्थापयप्रतिपादनं शाब्दम् । प्रथ० ९७ । नीतिसाध्यादि । ज० प्र० २१९ ।

अर्थसिद्धे—अर्थमिद्धः, चाप्रीयश्चासावित्तनाम । मृ० १५७, ज० प्र० ४९० ।

अर्थस्त—अस्तो मेदर्थस्तस्तेनान्तरितो रक्षिरस्तं गत इति व्यपदिश्यते तस्य पर्यन्तराजस्य गिरिप्रधानस्य । मम० ६५ ।

अर्थ्या—अर्था, इच्छाणि । उत० ३८४ । अर्था, प्रार्थनीया वा । उत० ३८४ । अर्थन्त—गम्यन्त इत्यया ।

ओष० ५ । शब्दादयः । टाणा० २५३, आया० २०१ । फलानि, वस्तूनि । टाणा० ३३ । अर्थ्यन्ते—अभिलष्यन्ते क्रियाविभिरर्थ्यन्ते वा अधिगम्यन्ते । टाणा० ३३५ । निर्मुक्तिमाभ्यन्तप्रहृष्टिर्गतिर्भूणिपिमादिक्रिया । मम० १११ ।

अर्थ्याणं—देशविशेष । भग० ६८० ।

अर्थ्याणमंडयिया—आस्थानमण्डपिणा । आव० ८९ ।

अर्थ्याणि—आस्थानिका । उत० ११५ ।

अर्थ्याणिमंडयो—आस्थानमण्डप । नि० च० प्र० २७८ भा । अर्थ्याणियं—आस्थानम् । उत० १५६ ।

अर्थ्याणियमंडयिया—आस्थानमण्डपिका । वृ० प्र० २७ आ ।

अर्थ्याणी—आस्थानी । आव० ६७२ । आस्थानिका । आय० १४९, २९८ ।

अर्थ्याणीयरणो—आस्थानविरगल । आव० २१६ ।

अर्थ्यादानं—अपाननिमित्तं प्रयोगे । वृ० तृ० ८६ अ ।

अर्थ्यामा—अस्थामान, सामान्यत शक्तिविकल । ज० प्र० २३९ । अर्थ्यामा, सामान्यत शक्तिविकल । भग० ३२३ ।

अर्थ्यापणयं—आर्थार्थनयः । आव० ३८२ ।

अर्थ्यायाणं—अर्थादानं—द्रव्योपदानकारणमष्टागमिषितं तद्दत्त—प्रयुजान । टाणा० १६४ ।

अर्थ्यायत्ती—सामान्यगम्या । वृ० द्वि० १२१ आ ।

अर्थ्यायत्तीदोसो—अर्थावित्तोप, यत्रार्थावित्तप्रतिपत्तिः, मूत्रयोगविशेष । आव० ३७४ ।

अर्थ्याहं—अस्तापम्, अविद्यमानम्नापम्, अगापम् । भग० ८० । अस्ताप—निरस्तापस्ततम् । भग० ८० । अस्तापम् । आव० ३७४ ।

अर्थ्याहं—अस्तापम्, अविद्यमानम्नापम्, अगापम् । भग० ८० । अस्ताप—निरस्तापस्ततम् । भग० ८० । अस्तापम् । आव० ३७४ ।

अर्थ्याहं—अस्तापम्, अविद्यमानम्नापम्, अगापम् । भग० ८० । अस्ताप—निरस्तापस्ततम् । भग० ८० । अस्तापम् । आव० ३७४ ।

अर्थ्याहं—अस्तापम्, अविद्यमानम्नापम्, अगापम् । भग० ८० । अस्ताप—निरस्तापस्ततम् । भग० ८० । अस्तापम् । आव० ३७४ ।

अर्थ्याहं—अस्तापम्, अविद्यमानम्नापम्, अगापम् । भग० ८० । अस्ताप—निरस्तापस्ततम् । भग० ८० । अस्तापम् । आव० ३७४ ।

भग० ३२ । प्रदेशः । भग० १४९, जीवा० ६ । अस्ति,  
निपातः सर्वप्रतिचरन । प्रज्ञा० ५६३ । प्रदेशः । आव०  
६०० । त्रिकालवचनो निपातः । अभूत्, भवति, भविष्यति  
च । आव० ७६८ । अरितद्वारम्, अस्त्रन्यधैतन्यरूप ।  
दश० १०५ । स्वामी । विज्ञे० ६७२ ।

अतिथिकाप-अस्तिकाय प्रदेशराशि । भग० ३२४ ।  
अतिथिकाय - अस्तिकायः, प्रदेशराशि, अस्तीति सन्ति  
आसन् भविष्यन्ति च ये काया प्रदेशराशयस्ते अस्तिकायाः ।  
भग० १४८ । प्रदेशसङ्घातः । जीवा० ६ । धर्मास्तिका-  
यादि । दश० १३४ ।

अतिथिकायउद्देश्य - भगवताद्वैतविषयतस्त्वं उपभोद्वैतक-  
नाम । भग० ६०८ ।

अतिथिकायधम्म-अस्तिक यवमे । दश० २१ ।  
अतिथिकायधम्मे-अस्तय -प्रदश स्तेषा कायो-रागिरिनि-  
काय स एव धर्मा-गतिपर्याये त्विषुद्वलयोद्धारणम् । ठाणा०  
५१५ ।

अतिथिक-आस्तिक्यम्-जीवस्यास्तित्वनिष्ठं वर्तुत्वबोक्तृ-  
भोक्षताम्राधनधदानम् । आव० ५९१ ।

अतिथिनतिथि-अस्तित्वाभिननामपूर्ति । ठाणा० १९९ ।  
अतिथय-अतिथ-बहुवीजप्रश्रयण । प्रज्ञा० ३० । अति  
काय । भग० ८१ । अतिथम्, अतिथप्रश्रयणम् । दश०  
१०६ ।

अतिथया-बहुवीजप्रश्रय । भग० ८०३ ।  
अती-अपेक्षाना । सू० प्र० ११० अ ।  
अतीनतिथिपर्याय - यथा लोके अस्ति नानि च तेषु  
तपोन्यते चतुर्धर्तनाम । सम० ७६ ।  
अत्युभा-आत्मना । आव० १७३ ।  
अत्युदण-पाठना । नि० च० द्वि० ६१ अ ।  
अत्युदण- (अधुरद) आत्मोपेते । औष० ८३ ।  
अत्ये - अनेन शान्तरितं स्यात्प्रित्ना इत्यभिधीयते । मेरु  
नाम । ज० प्र० ३७० ।

अत्योगह्या-मन्वैकिके । प्रज्ञा० १८१ ।  
अत्यो-अथ, अभिप्रेय, प्रयोजन वा । प्रश्न० ११० ।  
काण, तारिरा पदार्थो वा । जीवा० १८ । अर्पत-अप्यम  
एति । आव० १० । पञ्चभा, अचकुरितरवपदयोः ।  
दश० सू० १०३ । अर्-य स्यात्प्रतिपत्ति । नि०

५८८ । अर्पत इति, विगतं प्रबोधित विकचकल्पम् । आव०  
८६ । अभिप्रेयपदार्थः । आव० ४१५ । द्रव्यम् । आव०  
६०७ । अर्पत इति । उच० ६८ । त्रियादि । दश० ११४ ।  
अत्योगहृण-फलनिधयम् । भग० ५४१ ।

अत्योगहृ-अर्थावग्रह, अथस्यावग्रहणम्, अनिर्देश्यसामा-  
न्यरूपार्थग्रहणम् । व्यञ्जनावग्रहोत्तरकालमेव सामाधिक्यमनि-  
र्देश्य सामान्यमादाथग्रहणम् । प्रज्ञा० ३११ । अथस्य-  
सामान्यनिर्देश्यस्वरूपस्य शब्दादे अवेति-प्रथम व्यञ्जनाव  
ग्रहानन्तरं ग्रहण-परिच्छेदनमर्थावग्रह । गम० १० । भग०  
३४४ । व्यञ्जनावग्रहचरमसमयोगानुबन्दाद्यर्थावग्रहणलक्षणम् ।  
आव० १० । अर्पते-अधिगम्यतेऽर्पते वा अन्विष्यत इत्यथ -  
सामान्यरूपादे प्रथमपरिच्छेदनमर्थावग्रह । ठाणा० ७१ ।

अत्योमं - अन्तोमक, वैहिककारादिपदच्छिन्नपूरणस्तोभकनि-  
पातशून्यम्, सूत्रगुण । आव० ३७६ ।

अर्थडिल्ल-सचित्तमूमी । नि० च० प्र० ३८ आ ।  
अथ-अथशब्द प्रक्रियाप्रदानन्तर्यमत्रलोपन्यासप्रतिचरनस-  
सुचये षट्प्रदानन्तर्या । ठाणा० ८९५ । वाक्योपन्यासाथ  
परिप्रथायो वा । भग० १४ । प्रक्रियाप्रदानन्तर्यमत्रलोप-  
न्यासप्रतिचरनसमुक्तेषु । प्रज्ञा० २४७ ।

अथक-अस्ताव । सू० प्र० ५१ आ ।  
अथकागओ-अस्तावगाण । आव० ८०० ।  
अथको-अतिश्रन्त । आद० १०८ ।

अथाउदोगहृ-यथालङ्कारवग्रह । नि० च० प्र० २३९ अ  
अथाहं-जप पुणं वृत्तिं नास्मि यत । नि० च० द्वि० ७८ आ ।  
अथिरो-अथिरे, क्षमावशार्था । सूत्र० ६ ।  
अदुडे-अदुष्ट, प्रसन्नयोगनयमहिमाभावात् वा । सम० ७ ।  
अदंसणो-अन्ध । ठाणा० १६१ ।  
अदकुरु-अन्ध, अनिपुण । सूत्र० ७६ । अदण, अर्त्त-  
रक्षणम् । सूत्र० ७४ ।

अदफुदसणो-अचछुर्दनेन अचछुर्दनेनमस्यागे, चेत्  
लक्षणं सर्वज्ञ । सूत्र० ७४ ।  
अदुत्तियेवण-प्रापम् । औष० १६३ ।  
अदुत्तये-अर्पुष । उच० १३ ।  
अदुत्तो-विपारि गैलाणा जी दुत्तरया । नि० च० प्र०  
१०८ अ ।

अदृग्णा-विषादीकृता । नि० चू० प्र० ३२१ अ ।  
 अदृत्तं-अदत्तम्, अदत्तद्रव्यग्रहणम् । प्रश्न० ४ । अविनी-  
 णम्, अघर्मद्वारस्य तृतीयं नाम । प्रश्न० ४३ ।  
 अदृश-आत्मरक्षणपरा । वृ० प्र० १९० आ ।  
 अदृसा-अदृशा-दशोकारहिता क्षीमा । औष० ३१७ ।  
 अदृसी-अरुसी । आय० ८५४ ।  
 अदिच्छाविक्षिहिह-अदिरिष्ये, निषेत्स्ये । दश० १० ।  
 अदिदृष्ट-अदृष्टम्, प्रत्यक्षापेक्षया अदृष्टम् । भग० ११७, २०० ।  
 अदिदृष्टाभिय-अदृष्टलाभिकः, सोऽदृष्टपूर्वेण वीर्यमानं  
 शृणाति सः । प्रश्न० १०६ ।  
 अदिदृष्टहा-अदृष्टाहता, अदृष्टोक्तेपमानिता, प्राञ्जिका ।  
 आय० ५७६ ।  
 अदिदृष्टि-अदृष्टे-तिरोहिते । औष० १६७ ।  
 अदिपिणे-अदत्तादानक्रिया, अदत्तादानाय यत्करणम्,  
 क्रियायाः सप्तमो भेदः । आय० ६४८ ।  
 अदिष्ठादानवत्तिष्-अदत्तादानप्रत्ययः । सम० २५ ।  
 अदिन्ने-अदत्तादानक्रिया-आत्मार्थमदत्तग्रहणम् । ठाणा०  
 ३१६ ।  
 अदिस्समाणे-अदृश्यमानः, अनपदिद्यमानः । आचा०  
 १३१ ।  
 अदीणवं-अदीनवन्तम्, अदीनं, दैन्यरहितम् । उक्त० २८२ ।  
 अदीणसत्तु-नमिनाथपूर्वभवनम् । सम० १५१ ।  
 अदीणससू-अदीनशत्रुः, इरितशीर्षेणगरुपतिः । विगा०  
 ८१ । ठाणा० ४०१, ४०२ ।  
 अदीणो-पलणमणो । नि० चू० प्र० १८९ अ । अदीनः,  
 अशुक्लः । उक्त० १९० । अदीनकारुणः । अनुक्त० ४ ।  
 शोकाभावः । अन्त० २२ ।  
 अदु-अथ, 'अतः' इत्यर्थे । सूत्र० ६१ । अथवा । उक्त० २१५ ।  
 अदुअक्सरिय-जुगुप्सिता, अदुपक्षरिका । नि० चू० लृ०  
 १८ अ ।  
 अदुआलिआ-मयिका, मन्थनकारिणी । दश० ६० ।  
 अदुक्खणया-अदु खनता, दुःस्वस्य करणं दुःखनं तद्विद्य-  
 मानं यस्यास्तावदुःखनः, तद्भावास्तथा अदुःखकरणमित्यर्थः ।  
 भग० ३०५ ।  
 अदुगुच्छिअ-अजुगुप्सनीयम्, सामायिकाष्टमपर्यायः । आय०  
 ४७४ ।

अदुद्रो-अद्विष्टः अदुष्टो वा दामके आहारे वा । प्रश्न० १०१ ।  
 अदुत्तं-अदुत्तं, अनुत्तुक्रम् । प्रश्न० ११२ ।  
 अदुत्तरं-अयोत्तरम्, अथापरम् । भग० १५५, ३०६ ।  
 अयान्यत् । जीवा० १६६ । अथापरं । औष० ३७१ ।  
 अदुयं-अशीघ्रम् । भग० २५४ ।  
 अ(अं)दुययंघणं-अनुकवन्धनम् । सूत्र० ३२८ ।  
 अदुयं-अथवा । उक्त० ११० ।  
 अदुय-अथवा । भग० ११० ।  
 अदुया-अथवा, पक्षान्तरोपन्यासद्वारेणाभ्युषयोपदर्शनायः ।  
 आचा० ४७ ।  
 अदुयालियं-उन्मिथितम् । उक्त० १४६ ।  
 अदुरं-प्रत्यामनम् । आय० २३२ ।  
 अदुरसामंते-अदुरसामन्तम्, नातिदूरे नातिनिकटे ।  
 सूय० ५ ।  
 अदेसकालप्पलावी-जहा भायणे पडिकमियं अदृकरुपि  
 षे कयं लेविं, रुद्धं ततो पमापत्तं भयं ताहे सो अदेस-  
 कालप्पलावी मए पुक्वं चेव वायं एवं मज्जिहिति । नि० चू०  
 लृ० ८० आ । अदेसकालप्रलापी, अतीते कार्ये यो वक्ति-  
 यदिदं तत्र देसो काले वाऽस्करिष्यत ततः सुन्दरमभिष्य-  
 दिति । उक्त० ३४७ ।  
 अदु-आरम्, तरसम् । प्रश्न० ११ । सूत्रहनास्य पठम-  
 ष्ययनम् । उक्त० ६१६ । आय० ६५८ । गुणविशेषः-  
 प्रश्न० ३२ ।  
 अदुइज्जं-आर्यवीयम्, सूत्रहृतास्य पठमष्ययनम् । सूत्र०  
 ३८५ । सूत्रहृतास्यप्ययनमाविशेषः । सम० ४३ ।  
 अदुप-आरम्, अनन्तकारभेदः । भग० ३०० ।  
 अदुकुमारिज्जं-आर्यकृमासीयम् ( महाष्ययनम् ) । टाणा०  
 ३८७ ।  
 अदुक्खु-अशुभ, दृढवन्तः । भग० २११ ।  
 अदुणो-पीडितः । आय० ७०० । अश्रुतिमापनः-कातरः ।  
 आय० ८०० । अश्रुतिमुपगतः । आय० ४१६ । अश्रुति-  
 मापनः । दश० ४८ । अक्षुणिकः । वृ० द्वि० ४६ अः  
 अश्रुतिमुपगतः । आय० १९० ।  
 अदु(दु)न-महाविशेषनाम । व्य० द्वि० ३५७ अ ।  
 अदुष्ठा-आजुलीभृताः । वृ० प्र० २९० आ ।  
 अदुपुरं-आर्यपुरं, आर्यकराजधानी । सूत्र० ३०५ ।



अहया-आर्द्रका, हरिद्रा । उक्तं २१८ ।  
 अहवचर्व-आर्द्रवचर्वम्, निगलितम् । आव० ८५४ ।  
 अहसुतो-आर्द्रसुतः, आर्द्रकराजकुमारः । सूत्रं ३८५ ।  
 अहहिज्जति-आर्द्रहति । नि० चू० प्र० ३१७ अ ।  
 अहहिया-आर्द्रहणम् । आव० ८५४ ।  
 अहा-आदानामनक्षत्रम् । ठाणा० ७७ ।  
 अहाप-आदर्शः । नि० चू० प्र० ३४७ अ ।  
 अहाओ-आदर्शः । आव० २९८, ४१६ ।  
 अहार्या-आर्द्रकं । औप० १७२ । दर्पणः । वृ० प्र० १३६ आ ।  
 आदर्शः । ठाणा० २४३, सम० १२४ । औप० १४८ ।  
 अहारा-आदर्शः । ठाणा० ५१२ ।  
 अहाणक्षत्ते-आर्द्रानक्षत्रम् । सूर्य० १३० ।  
 अहामलगमेत्त-आर्द्रामलकमात्रं । आव० ८५७ ।  
 अहार्य-आदर्शः । आव० ९५ ।  
 अहार्य-आदर्शः । प्रज्ञा० २९३ ।  
 अहारिष्टे-आर्द्ररिष्टः, कोमलकाकः । जं० प्र० ३२ ।  
 अहिज्जमाणेहि-आर्द्रैः-पुत्रकलायापुत्रजनिवस्नेहादर्द्रा-  
 क्रियमाणैः । आचा० २९२ ।  
 अही-अदिः, याया । प्रश्न० ९३ ।  
 अहीण-अदीणः, अशुभितः । प्रश्न० १०५ ।  
 अहीणमाणसे-अदीनमनसा । आचा० ४२४ ।  
 अहीणा-अदीनाः, कथं वयममुत्र अविष्याम इति वैश्व-  
 रहिताः परीषहोपसर्गादिसम्भवे वा न दैन्यमाजः । उक्तं  
 २८२ ।  
 अह-अर्द्धम् । सूत्र० १६ ।  
 अहस-उपारसः । वृ० तु० ३५४ अ । नि० चू० प्र०  
 १९९ अ ।  
 अह-अदाकालः-चन्द्रस्यपश्चिम्यपश्चिमिष्टोऽर्द्धतृतीयक्षोपममु-  
 ग्रान्तवर्ती समयदिलक्षणः । आव० २५७ । काश्वे । नि०  
 चू० प्र० ३३७ अ । अर्द्धम्, भागमात्रा । भग० २०८ ।  
 तिर्यग्बलितम् । जं० प्र० ५२ ।  
 अहकविहृगासंठाणसंठिते-अर्द्धकपित्यसंस्थानसंस्थितम्,  
 चन्द्रविमानस्यरूपम् । सूर्य० २६२ ।  
 अहकविरथसंठाणसंठियं-अर्द्धकपित्यसंस्थानसंस्थितम्,  
 उतानिहृतमर्द्धकपित्यं-रस्येव यस्मान् तेन संस्थितम् ।  
 जीवा० ३७८ ।

अहकायसंथाणा-आलोककव्यन्तरादिकायार्थप्रमाणा । जं०  
 प्र० ५७ ।  
 अहखलुया-पादार्थच्छादकं चर्म । वृ० द्वि० २२२ आ ।  
 अहखलुया-अदे जाव खलुया जीए उपायहा । नि० चू०  
 प्र० १३६ आ ।  
 अहखिसं-अर्द्धक्षेत्रम् । यद्गोरात्रप्रमितस्य क्षेत्रस्यार्द्धं  
 चन्द्रेण सह योगमरदुते तजक्षत्रम् । सूर्य० १७७ । जं०  
 प्र० ४७८ ।  
 अहखेद-अर्द्धचन्द्रः, चाणमिशेषः । आव० ९५७ ।  
 अहखेदा-अर्द्धचन्द्राः, खण्डचन्द्रप्रतिबिम्बानि चित्ररूपाणि ।  
 जं० प्र० २७१ ।  
 अहखेदो-अर्द्धचन्द्रः, सीपानविशेषः । प्रश्न० ८ । द्वारा-  
 दिपु रतनमार्गविशेषः । प्रज्ञा० ९९, सूर्य० २६४ । आव०  
 ४२५, जीवा० १७५ ।  
 अहचक्रयाला-चक्रयालार्थरूपा । भग० ८६६ । अर्धव-  
 ल्याकारः । ठाणा० ४७७ ।  
 अहजंया-जहाधेपियाणि चर्म । वृ० द्वि० २२२ आ ।  
 अहजंघमेत्तो-अहजहा । नि० चू० द्वि० ७९ आ ।  
 अहजामीसप-अहजमिश्रा, सत्यामृशामायामेदः । दश०  
 ३०९ ।  
 अहजामीसप-अहजामिधकं, अदा-दिवयो रजनी वा  
 तदेकदेशः प्रहरिः अहदा तद्विषयं मिश्रकं-सत्यासत्यं ।  
 ठाणा० ४९१ । अहदा, दिवसरज्येकदेशः । दश० २०९ ।  
 अहजामिस्त्विया-अहजामिश्रिता, दिवसरज्येकदेशे एक-  
 देशोऽदृश्यादृशा सा मिश्रिता यथा सा भाषा । प्रज्ञा० २५६ ।  
 अहजाराय-अदनेारायम्, यथैकपार्थे मर्कटजन्तो द्वितीये  
 च पार्थे कीर्तिता तम् । जीवा० १५, ४३ । प्रज्ञा० ४७२ ।  
 अहपक्षप-मानविशेषः । भग० ३३३ ।  
 अहपलितका-अर्धपद्मा-ऊटावेकपादनिवेशनलक्षणम् ।  
 ठाणा० २९९, ३०२ ।  
 अहपलियंकसंठिते-अर्धपन्थद्वसंस्थितम् । सूर्य० ११० ।  
 अहपलुका-एकं वातुमुगाटयोपधानम् । वृ० तु० २०० अ ।  
 अहपेहा-गोचरवर्णमिधमहविशेषः । उक्तं ६०५ । ठाणा०  
 ३६६ ।  
 अहपेला-गोचरवर्णमिधमिधमिधः । नि० चू० तु० १२ अ ।

अक्षमंडल-अक्षमण्डलम् । जं० प्र० ४७८ ।

अक्षमंडलसंदिती - अक्षमण्डलसंदिती; अक्षमण्डलस्य-  
पत्न्या । ए० १९ ।

अक्षमागहृदियन्मम - अक्षमागपत्रिमम्, पृहृदियेवः । जीवा०  
२९९ । जं० प्र० १०७ ।

अक्षमागहा - अक्षमागपी, अक्षे मागप्या इत्यक्षमागपी  
भाषा । भग० २२१ । मागपमागलक्षणे किमिदमिदम्  
प्राहृतमागलक्षणे यस्यां हा, अक्षे मागप्या इत्यक्षमागपी ।  
भग० २२१ । मगहृदियमिदमिदमिदं, अक्षमागपीमाग-  
लियते । नि० चू० द्वि० ३६ अ ।

अक्षमासिपयु - अक्षमासिका । भाषा० ३२७ ।

अक्षरसकालरमभो - अक्षरसकालरमभः । भाष० १२१ ।

अक्षसंकासा - अक्षसंकासा, संरक्षमविरक्तताविरये देयलागु-  
राजस्य तापगावस्यायामुत्पत्त्या पुत्री । भाष० ७१४ ।

अक्षसम - अक्षसमम्, पयविरयेः । दश० ८८ । एकतरगमम् ।  
ठाण० ३९७ ।

अक्षसेलसुविधयं - अक्षसेलसुविधयः । जीवा० २९९ ।

अक्षधारा - अक्षधारा, नवसरिकः । जं० प्र० २४, १०५ ।

अक्षधारमहो - अक्षधारमहः, अक्षधारे द्वीपे  
पूर्वाक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारमहाभो - अक्षधारमहाभः, अक्षधारे द्वीपे  
उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारमहाधरो - अक्षधारमहाधरः, अक्षधारे समुदे-  
सपराक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरमहो - अक्षधारधरमहः, अक्षधारे द्वीपे  
पूर्वाक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरमहाभो - अक्षधारधरमहाभः, अक्षधारे  
द्वीपे उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरमहाधरो - अक्षधारधरमहाधरः, अक्षधारे  
समुदे उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरायभासमहो - अक्षधारधरायभासमहः, अक्ष-  
धारायभासे द्वीपे पूर्वाक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरायभासमहाभो - अक्षधारधरायभासमहा-  
भः, अक्षधारायभासे द्वीपे उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा०  
३६९ ।

अक्षधारधरायभासमहाधरो - अक्षधारधरायभासमहा-  
धरः, अक्षधारायभासे समुदे उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा०  
३६९ ।

अक्षधारधरायभासधरो - अक्षधारधरायभासधरः, अक्ष-  
धारायभासे समुदे पूर्वाक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरायभासो - अक्षधारधरायभासः, द्वीपे द्वीपे  
समुदविरयेः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधारधरो - अक्षधारधरः, अक्षधारे समुदे पूर्वाक्षि-  
पतिर्देवः । जीवा० ३६९ । द्वीपविरयेः, समुदविरयेः ।  
जीवा० ३६९ ।

अक्षधारो - अक्षधारः, नवसरिकः । जीवा० ५९ । जीवा०  
१८१ । भूगविविरयेः । जीवा० २६८ । द्वीपविरयेः,  
समुदविरयेः । जीवा० ३६९ । प्रजा० ३०४ ।

अक्षधा - अक्षा, पत्न्याः । भाष० ६६२ । गमयः । विदे० ९९१ ।

कालः, अक्षधारीयद्वीपसमुदाहरणं समयादिलक्षणः । विदे०  
८३७ । कालम् । ठाण० ४४ । कालस्याक्ष्या । प्रजा० ९ ।

अक्षधारायभासमहाभो - अक्षधारायभासमहाभः, अक्षधारे  
द्वीपे उपराक्षिपतिर्देवः । जीवा० ३६९ ।

अक्षधाउप - अक्षधा-कानः तद्व्याजमानु-  
भारालयेऽपि कालान्तरानुगामी । ठाण० ६६ ।

अक्षधाप - कालस्य कालान्तरानुगामी । ठाण०  
४९८ । काने अपराक्षिपतिर्देवः । ठाण० २८० ।

अक्षधाकालः - अक्षे कालः, कालमन्त्रे द्वि कालानुगत्या-  
स्त्वपि वर्तते, ततोऽन्वयदेन विधिष्यत इति । ठाण०  
२०१ । चन्द्रमूर्त्तिकाविरयेऽपि द्वीपसमुदाहरण-  
दाकालः । दश० ९ ।

अक्षधाकाले - चन्द्रमूर्त्तिकाविरयेऽपि द्वीपसमुदाहरण-  
वर्ती गमयतिः । भग० ५३३ ।

अक्षधापय - अक्षधापयः, मानविरयः । भग० ३१३ ।

अक्षधाप्ये - पदो । नि० चू० प्र० ५१ आ । महदरम्ये । चू-  
द्वि० १०४ आ । अक्षा-पत्न्याः । चू० द्वि० १२२ अ ।  
महता अक्षी । नि० चू० प्र० ५० आ । जिज्ञासते महदर-  
म्यम् । चू० द्वि० २१ आ । उपनिन्दयम्यम् । ठाण० २६८ ।

अद्धान-अध्वनः । आर्व० ५३५ । अन्ना-विप्रवृष्टौ मार्गः ।  
वृ० प्र० २३८ आ ।

अद्धानतेणो-पंये सुसतो । नि० वृ० द्वि० ३८ आ ।  
अद्धानपडिचन्ने-अध्वप्रतिपन्नः, मार्गप्रतिपन्न । भग०  
११६ ।

अद्धानपरिस्संतो-अद्धानपरिभ्रान्तः । ओष० १०७ ।  
अद्धानपवण्णमो-अध्वप्रवन्नकः । आर्व० ५५८ ।

अद्धानसीसए-यतः परं समुदायेन गन्तव्यं तम्यग्मा-  
गविहनात् । वृ० तृ० ६१ आ ।

अद्धानसुत्ते-अद्धानविहिजयणाविदंसणसुत्तये । नि० वृ०  
द्वि० १४८ आ ।

अद्दामिस्सिया-अद्दामिप्रिता, अद्दा-काल. स चेह प्रस्ता-  
वाहिवसो, रात्रिवां, स मिथितो ययासा भापा । प्रज्ञा० २५६ ।

अद्दामीसए-कालविषयं सखासखम् । ठाणा० ४९० ।  
अद्दामीसग-अद्दामिधा, सखासृषामेद । दस० २०९ ।

अद्दामसय-कालसमयः, अद्दाम्य निर्विभागो भागो वा ।  
जीवा० ६ ।

अद्धिती-अधृतिः । आर्व० ३५३ ।  
अद्धुद्धाई-अर्द्धचतुर्थाणि । आर्व० ३९ ।

अद्धुद्धाण-अयुष्टानाम्, अर्द्धाधिकतिसृणाम् । प्रश्न० ७३ ।  
अद्धोवमिए-अदौपमिकम् - यत्कालप्रमाणमनतिशयिना  
मरीतुं न शक्यते तत् । ठाणा० ९० ।

अद्दुतम्-वाण्यतिशयः । सम० ६३ ।  
अधम्मजुत्ते-येन उक्तेन प्रतिपाद्यस्याधम्मजुत्तराजन्त्यते  
तदधम्मजुत्तम् । ठाणा० २५३ ।

अधम्मपलज्जणो-अधर्मप्रकः, अधर्मशत्रवेण धर्मसु प्रत्येण  
रज्यत इति । सुत्र० ३२९ ।

अधम्मगलोई-अधर्मशत्रोर्षी, अधर्मनिर्-परममध्निधोया-  
नेव प्रत्येक्यति-प्रेक्षते इत्येत्शीलः । विषा० ४८ ।

अधम्मो-अधर्मः, अचारिप्रसंगत्वात् । अत्रज्जण. योद्धो  
नाम । प्रश्न० ६९ । अधर्मास्तिकायः स्थित्युपपत्तभयुणः ।  
ठाणा० ४० । अधम्म-धुनलक्षणविहीनत्वादानामे अपीद-

पेयादी । ठाणा० ४८७ । अधर्मास्तिकायः । सम० ६ ।  
अधिघनानमदायार- उण० ४३४ ।

अधर-भाष्यनिर्णयकारणम् । वृ० तृ० १९ अ ।  
अधरकाणू-पार्श्विका । म्य० द्वि० २९९ अ ।

अधरिमं - अविश्रमानधारणीयद्रव्याम् ध्वणमुत्कलनात् ।  
भग० ५४४ ।

अधरो-अधरः, अधस्तनीष्टः । प्रश्न० १४० । अधीर ।  
उत्त० १५३ ।

अधरोद्धा-अधरोष्टः, अधस्तनो दन्तच्छदः । जं० प्र० ११३ ।  
प्रश्न० ८१ ।

अधस्तनकाय-पादागणितोधीवमुच्यते । ठाणा० ३५७ ।  
अधस्तारका-पिशाचमेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

अधारणज्जं-अधारणीयं, धारयितुमशक्यम्, स्थातुं वा-  
शक्यम् । विषा० ६२ । अविश्रमानाधमणम् । विषा० ६३ ।

अप्रशस्तप्रदेशरुजनादिकलद्धादितत्वात् । आचा० ३९६ ।  
अधिकरणं-अधिकं-अतिरिक्तं उत्सृज्यं करणं, अवयव  
अधमा जघन्या गतिः तामास्मानं प्राहयति । क्पाव-

भावः । नि० वृ० प्र० २९४ अ । अधोकरणं,  
अधितिकरणं, अनुद्धिकरणम् । नि० वृ० प्र० २९३

आ । कलहो । नि० वृ० प्र० ३४४ आ, २३९ अ ।  
अधिकरणनिर्वर्त्तिनी - लडादिनिर्वर्त्तिनी, अधिकरणिकी-  
क्रियाया द्वितीयो मेद । आर्व० ६११ ।

अधिकरणप्रवर्त्तिनी-चममह पशुवन्धादिप्रवर्त्तिनी क्रिया,  
अधिरगिक्रियक्रियाया प्रथमो मेद । आर्व० ६११ ।

अधिकरणसाला-अधिकरणसाला, लोहपरिकर्मशुद्धम् ।  
भग० ६९७ ।

अधिकरणानं-अधिकरणानां-कलहानां यन्त्रादीनां कौत्या-  
दयिता । सम० ३७ ।

अधिकरणलोडी-अधिकरणलोडी-यद् वाष्टपिकरणी  
निवेदयते । भग० ६९७ ।

अधिकरणसंठिते-अधिकरणीमास्थितम् । ठाणा० ४३४ ।  
अधिकरणीतो-तुष्टी । नि० वृ० द्वि० १०१ अ ।

अधिकास्तिका-या मन्त्रायेगेनापीडितं कुपेनेव गन्तुं शक्य-  
नोति ता । ओष० १९९ ।

अधिक्के-अर्गले । उत्त० ६६० ।  
अधिकवाड-अधिकवर्त्तं गण्यते । नि० वृ० प्र० १५१ अ ।

अधिगमजे-दर्शनमेद । आर्व० ५७७ ।  
अधिगरणं-अधिकरणं, अपिफियते-अध्वयते-नरकारित्वा-  
ग्याडंनेति, अनुदन्तिसंज्ञः । प्रज्ञा० ४१५ ।

अधिग्रहणसि-विशेषः । ठाणा० ४४१ ।

अधिगरणिया-आधिकारिकी, अधिकरणेन निर्वृता । प्रज्ञा०  
 अधिगारो-अधिकारः । नियोगः । प्रश्न० ६६ । [ ४३५ ।  
 अधिघटिकया-कपिलदरिद्रदृष्टान्तविशेषः । आचा० १६३ ।  
 अधिदृष्टं-संगितेजवेदिः चैव उपवेगं । नि० चू०  
 प्र० २४६ आ ।  
 अधिद्वानं-अधिष्ठानम् । ओष० १४८ ।  
 अधिद्विज्ञा-अधितिष्ठत्-योग्याकर्षणेन संगृहीयान् । ठाणा०  
 ३१३ ।  
 अधिद्वेति-परिभुञ्जति । नि० चू० प्र० २२५ आ ।  
 अधिमरगा-अहिकृत् अनपकृतेऽप्यपकारे मारका । नि० चू०  
 द्वि० ११ अ ।  
 अधियं-अधिकम्, वर्णादिभिर्भ्यधिकं, स्मृदोषविशेषः ।  
 आव० ३७६ ।  
 अधियासितो-अध्यासितः, अधिवापितः । आव० ३४३ ।  
 अधिशय-आश्रयतः । आचा० २५५ ।  
 अधिष्ठानम्-गुदास्थानम् । दश० ११८ ।  
 अधीकारो-प्रयोजनम् । वृ० द्वि० २२५ अ ।  
 अधीकारवशः-प्रसङ्गः । आचा० २४१ ।  
 अधीता-अधीना, धृतनिषेदा सती पठिता । प्रश्न० १०५ ।  
 अधीतान्वीक्षिकीकस्य-सुर्यहीतहेतुदृष्टान्तलेशस्य । आचा०  
 २२३ ।  
 अधुवं-अधुवं-नावश्यभाविनम् । प्रश्न० ९६ । प्रतिहारिकम् ।  
 नि० चू० द्वि० ११७ आ ।  
 अधुववगणा-अधुववर्गगा, इतलोर्ध्वमित्थमेवैकोत्तररुदि-  
 कमेव वर्द्धमाना ध्रुववर्गणाभ्य इतरा अनन्ता भवन्ति ।  
 विशे० ३३१ ।  
 अधुवे-न ध्रुव, स्योदयवक्ष प्रतिनियतकालेऽवश्यमेवै । भग०  
 ४६९ । अधुवं-स्वल्पकालानुज्ञापनान् । आचा० ३९६ ।  
 नित्ये न । उत० २८९ ।  
 अधो-भूमी । ओष० १६२ ।  
 अधेणु-सुक्ता वज्रा वा । नि० चू० प्र० ३२७ अ ।  
 अधोघटना-अधो भुवं पश्यति । ओष० १०९ ।  
 अधोणता-गजदंतवत् भवन्ता । नि० चू० द्वि० ४९ आ ।  
 अधोदृष्टा-दोषविशेषः । उत० ४९० ।  
 अधोभागा-भूमिभागः । जं० प्र० ३२१ ।  
 अधोभावो-अधोभावः, तिरस्कारस्युदिः । आव० ६९९ ।  
 अधोविवृतम्-अनाच्छादितमालयहम् । ठाणा० १५७ ।

अधोवेदिका-जानुकेरपी हस्तयोगिनैः । ठाणा० ३६२ ।  
 अध्यसनं-भगीर्णे भोजनम् । ठाणा० ४४७ ।  
 अध्यास्यन्ते-गणन्ते । प्रज्ञा० ८० ।  
 अध्याहार-व्याख्यात्मकम् । आचा० ५५ ।  
 अध्येष्टया-यह्यष्टया । गम० ३७ ।  
 अध्वर-यज्ञः । उत० ५२५ ।  
 अनंगप्रविष्टं-गणधरानन्तरापाचार्येऽध्यम्पुत्तरवा० १-२० ।  
 अनङ्गमिन्नेहि-अनस्तनैः । भग० ३७३ ।  
 अनङ्गवो-अनङ्गकः, द्रुमविशेषः । जीवा० २६९ ।  
 अनङ्गसेन-वैपाययितुवर्गेश्वरः । वृ० वृ० १०८ आ ।  
 अनतिचारम्-ऐरोपग्यापनीयमेदविशेषः । ठाणा० ३२३ ।  
 अनतिविलम्बितम्-नाप्यतिशयविशेषः । सम० ६३ ।  
 अनध्यवसायः-संशयो विपर्ययो वा । आचा० १५० ।  
 अननुफमाद्-पथानुसृत्या । विशे० २८४ ।  
 अनन्तकम्-गमयभाषया वक्षमिति । ठाणा० ३४६ ।  
 अनन्तगुणितम्-अनन्तगुणितं, अनन्तशो गुणितम् । विशे०  
 २६८ ।  
 अनन्तरयही-माप्रादयः पृ३ । वृ० वृ० ४२ आ ।  
 अनन्यत्यद्रव्यशुद्धिः-आदेशतो द्रव्यशुद्धिर्भेदः, यथा शुद्ध-  
 दन्तः । दश० २११ ।  
 अनपनीतम्-वाप्यतिशयविशेषः । सम० ६३ ।  
 अनभ्युद्यगवो-अनभ्युद्यगतः, ध्रुतोपमम्यदानुपमम्यवः ।  
 आव० १०० ।  
 अनभिप्रहिकः-मिष्यात्वविशेषः । ठाणा० २७ ।  
 अनममाणो-अनममानान्, निर्पुणतया मावयानुशयिनः ।  
 आचा० २५४ ।  
 अनगलितकपाटम्-उद्धाटकपाटम् । ओष० १६६ ।  
 अनर्धकम्-अर्धशतम् । आव० ५१ ।  
 अनलं-अनलम्-अभिष्टकार्यममर्ष हीनादिवात् । आचा०  
 ३९६ । न अलो अनलः-अपचलः । नि० चू० द्वि० २५ आ ।  
 अनलगिरी-अनलगिरिः, प्रवीतस्य हस्ती, तृतीयं स्तनम् ।  
 आव० ६७३ ।  
 अनलसा-उन्साह्वन्तः । ओष० १०० ।  
 अनवभाष्यता-अविद्यमानववप्राप्यं-अवप्रपणं लज्जनं यस्य  
 सः, अवप्रापयितुं-लज्जयितुमर्हः, शक्यो वाऽवप्राप्यो  
 लज्जनीयः न तथा तद्भावः । उत० ३९ ।

अनवगतानि—असङ्कल्पितान्यनालोचितानि । विशेषे १४५ ।

अनवघाही—महानीरभयवद्विहा । विशेषे ९३५ ।

अनवयगा—अनवदमम्, अनन्तम् । भग० २४८ ।

अनवसर—अनागमः । आचा० १२२ ।

अनाकारा—सामान्यासमग्रशक्तिः । भग० ७३ ।

अनाघात—(अण्पायं), अमारिघोषणा । आचा० २६० ।

अनाचारश्रुतम्—स्वकृताह्निस पञ्चममध्ययननाम । टाणा० ३८० ।

अनाचीर्णम्—अनारब्धम् । आचा० १४८ ।

अनायुक्ता—(अण्प्रुता)—लोपकृता । ओष० १८६ ।

अनाद्यन्तं—भाषन्तरहितम् । टाणा० १२० ।

अनानुगामिकः—अनानुगामिकः—भृक्ष्वलाप्रतिबद्धदीप इव यो गच्छन्तं पुरुषं नानुगच्छति । प्रज्ञा० ५३९ ।

अनाभवद्वयवहार—अस्वामित्वव्यवहार । आव० ८२१ ।

अनाभोगिक—भिष्यात्वविशेषः । टाणा० २७ ।

अनालोढं—(अण्लोढं)—अनवबुद्धः । ओष० २२७ ।

अनालोचितानि—असङ्कल्पितान्यनवगतानि । विशेषे १४५ ।

अनाहो—अनाथः, नायुरहितः, योगक्षेमकारिनायकाभावात् ।

प्रश्न० ११ । योगक्षेमकारिविपरिहितः । प्रश्न० १९ ।

अनिन्दं—अनिन्दम्, सामाधिकसप्तमपर्यायः । आव० ४०४ ।

अनिन्द्यं—मनः । वृ० प्र० ९आ ।

अनिकामं—परिमितम् । वृ० द्वि० ४ अ ।

अनिन्दितः—किञ्चरभेदविशेषः । प्रज्ञा० ७० ।

अनिउणमई—अनिपुण्यतिः । आव० ४९२ ।

अनिगहं—अविग्रहः—न विद्यते इन्द्रियनिग्रह—इन्द्रियनियमालम्बकोऽस्येति । उक्त० ३४४ ।

अनिज्जुद्धिता—अदत्त्वा । भग० ७७३ ।

अनिष्टं—अनिष्टम्, इत्यन्ते स्मेतीयास्तत्त्वेष्वेवादिष्टाः । भग० ७२ ।

अनिष्टता—अनिष्टता, अवष्टमता । भग० २३ ।

अनिष्टुभ्रमो—अनिष्टीवकः, सुखरूपमगोऽपरिष्ठावकः । प्रश्न० १०७ ।

अनित्यंरथं—अनित्यंरथं, र्दंनरागापजमित्यं, इत्यं-तिष्ठ । तीति इत्यर्थं, न इत्यर्थं अनित्यंरथं—वदनारिष्टपुरिप्रतिष्ठीयते प्रांनरात्याभावात्तद्विभवाकारमिति । प्रश्न० १०९ ।

अनित्यत्वम्—अताद्वस्त्वम् । उ० प्र० ३६ ।

अनिहेस—अनिहेसघोषः, यत्रोद्देश्यपदानामेकवाक्यभाषो न कियते, एतादृशः सूत्रदीपविशेषः । आव० ३४४ ।

अनिभृता—निष्ठुरभोक्त्यादिरूपा । वृ० प्र० २३३ अ ।

अनिदोर्जं—अनिर्भवं, अस्वत्वम् । वृ० द्वि० २४३ आ ।

अनियद्दि—अनिष्टति—शुक्रस्थानवस्तुर्षभेदरूपम् । उक्त० ५८५ ।

आ सम्पदसंनत्ताभाद् न निवर्तते । विशेषे ५३५ ।

अनियद्दी—प्रहृविशेषः । टाणा० ७९ । उ० प्र० ५३५ ।

अनियओ—अनियतः, अनियतवृत्तिः । उक्त० २६९ ।

अनियतवृत्ति—अनियतविहाररूपा । उक्त० ३९ । अनियतविहारः । टाणा० ४२३ ।

अनियओ—अनियत । ओष० ७३ ।

अनियणे—अनिदानः, न विद्यते निदानमस्येति निराकाङ्क्षी-ऽशेषकर्मक्षयार्थं संयमातुष्टाने प्रवर्तते । सूत्र० २६४ ।

अनिरक्षिखय—क्षितः । आव० ९८१ ।

अनिरुद्धे—अनिरुद्ध, अन्तर्दृष्टाना चतुर्थवर्गसाध्याद्ययनम् । अन्त० १४ ।

अनिरुद्धो—अनिरुद्ध, हृष्णवास्तुदेवापत्यनाम । प्रश्न० ७३ ।

अतिविष्टं—न दत्तकल्पम् । वृ० प्र० ५० आ ।

अनिवुद्ध—अनिवृत्तिः, अरवास्थ्यनिकषणना कयादिवेश । आव० ४९९ ।

अनिल—अनिलनरेन्द्रः यवराजपिपिता । वृ० प्र० १९० आ ।

अनिलसुओ—अनिलयुनः यवराजा । वृ० प्र० १९१ आ ।

अनिलेच्छिपि—अवहितकैः । भग० ३७२ ।

अनिवृत्तिकरण—सम्पन्नसम्पत्तौ करणविशेषः । टाणा० ३१ । अनिवृत्तिकरणं, न निवर्तनीयत्वम् । आव० ७५ ।

अनिवृत्तियादर—दर्शनसत्त्वकोभोपसामयोरन्तरम् । आव० ८२१ ।

अनिव्याणि—अनिर्वाणि.—असुखम् । वृ० प्र० ९२ अ । मेदः—(गमि०)

अनिवृद्धकरो—अनिवृत्तिकर, अस्तास्थ्यनिवन्धनकापारि-पेशकरः । आव० ४९९ ।

अनिवृद्धं—अधिगमोयी विद्यप्रोदृष्टमभी । दत्त० ५० ५१ ।

अनिधितवचनता—रागाद्यकल्पितवचनता । उक्त० ३९ ।

अभिप्यक्षातापना—(अभिप्यक्षणायावना)—आनापनाभा-भेदः । जीव० ४० ।

अनिसाह-अनिशाही । सम० २० ।  
 अनिसीहं-अनिसीयम्, निशीथादिपरीतम् । उत० २०४ ।  
 वदधुतम् । आष० ४६४ ।  
 अनिहुआ-त्रिदिण्डिनः । वृ० द्वि० २३५ आ । कन्दर्पवहुला  
 मायिनथ । वृ० तृ० १९५ आ ।  
 अनिहो-अनिहः-अमायः, न निहन्यत इति वा परीपहै-  
 रपीडित, अस्निहः-स्नेहस्वप्नधनरहितः । सूत्र० ४०० ।  
 अनीकाधिपतयः-दंडनायकस्थानीयाः । तत्त्वा० ४-४ ।  
 अनीहदं-अनिर्गतम् । आचा० ३२५ ।  
 अनीहारीमे-अनिहारीतम् । अष्टव्यादिकृतमनशनम् । भग०  
 १२० । गिरिकन्दरादौ अनदानम् । ठाणा० ९४ । भग०  
 ६२५ ।  
 अनु-पथान् । आव० २४२ । सातत्यम् । उत० ६२७ ।  
 अनुकूलं-अनुगुणं, अनुलोमं च । जीवा० ३ ।  
 अनुगमः-सुनस्य न्यासातुक्लः परिच्छेदः । ठाणा० ४ ।  
 सहितादिव्याख्यानप्रकाररूप, उद्देशनिर्देशानिर्गमादिद्वारकला-  
 पात्मको वा । सम० ११५ । अनुगमनम्, अनुगान । उत०  
 ६३१ ।  
 अनुगामि-यन्मोक्षाय अनुगन्तति । व्य० द्वि० ३९८ अ ।  
 अनुगामिकता-परम्परया शुभाशुभधनुसम् । जीवा० २४२ ।  
 अनुगुणं-अनुकूलमनुलोमं च । जीवा० ३ ।  
 अनुग्गहे-अनुग्रहकृदस्ते, यत् पर्णां मामानामारोपितं पद्  
 दिवसा गतास्तदन्तरमन्थन् एन्मासात् आपन्नस्वतो यत्  
 अव्यूढं तत्समस्तं शोधितं पथान् यदन्वत् पाण्मासिकमा-  
 पन्नं तद्गृहति । व्य० प्र० ११८ आ ।  
 अनुज्येष्ठे-पञ्चादष्टस्थङ् । विदो० ४४३ ।  
 अनुज्ञा-विधिः । आव० ७१३ ।  
 अनुज्ञातभक्तादिभोजनम् - अदत्तादानविरमणचतुर्थभा-  
 वना । प्रथ० १२८ ।  
 अनुज्ञातसंस्कारकग्रहणम् - अदत्तादानविरमणद्वितीय-  
 भावना । प्रथ० १२७ ।  
 अनुज्ञापनाथ-अनुमत्यै । आव० ५४२ ।  
 अनुतटभेदः-पैशवर् तभेदः । ठाणा० ४७५ ।  
 अनुत्संकलितम्-अवितीर्णम् । आचा० ३६ ।  
 अनुदिशो-उपाध्यायप्रवर्तिनीलक्षणम् । व्य० द्वि० २०० अ ।  
 अनुदिह् । व्य० द्वि० १९६ आ । व्य० द्वि० २०४ आ ।

अनुदातकृत्स्न - कालगुरु निरन्तरं वा । व्य० प्र०  
 ११८ आ ।  
 अनुद्धरि-कुन्धुविशेषः, श्रीन्द्रियजीवभेदः । उत० ६९५ ।  
 चलनेव कुन्धुः स विभाव्यते । ठाणा० ४३० ।  
 अनुनादि-वाण्यतिशयविशेषः । सम० ६३ ।  
 अनुपथ-मार्गमध्यः । आचा० २६५ ।  
 अनुपरतम्-उत्सर्जनं, बाहुल्येन । आव० ५९० ।  
 अनुपरिहारकाः-पारिहारकवैयाहृत्यकराः । ठाणा० ३२४ ।  
 अनुप्रवाचयति-(अनुपवाएद्), अनु-परिपाठ्या प्रकथेण  
 विशिष्टाद्यवगमस्येव वाचयति । जीवा० २५४ ।  
 अनुप्रास-अलङ्कारविशेषः । जं० प्र० १४३ ।  
 अनुप्रेक्षा-यनसा प्रन्थार्थसोरभ्यासः । तत्त्वा० ९-२५ ।  
 अनुप्रेक्षितम्-ध्यातम् । ठाणा० १७३ ।  
 अनुभवसञ्ज्ञा-स्वकृतासातवेदनीयारिकमेषिपाकोदयसमुत्था ।  
 जीवा० १५ ।  
 अनुभूयते-लक्ष्यते । विदो० १७६ ।  
 अनुमत्तं-वामम् । आव० ५२७ ।  
 अनुमानं - साधनधर्ममात्रान् साध्यमाननिर्णयात्मकम् ।  
 ठाणा० ४९२ ।  
 अनुयोगद्वाराणि-व्याख्याज्ञानि । आचा० ३ ।  
 अनुलिखन्-अभिलिखयद् । जीवा० १७५ ।  
 अनुलेपनेन-सङ्क्षिप्तस्य पुनः पुनरुपलेपनेन । सम० ११६ ।  
 अनुलोम-उत्सर्गः । ओष० ६५ ।  
 अनुलोमयचनसहितत्वं-प्रतिरूपविषयविशेषः । व्य० प्र०  
 २३ अ ।  
 अनुस्वण-अनुवृत्तः । जीवा० २७५ ।  
 अनुपातनम्-उच्चारणम् । आव० ८३५ ।  
 अनृतम्-असत्यम् । ठाणा० ५०० ।  
 अनेकजातिसंश्रयाद्विचित्रम्-वाण्यतिशयविशेषः । सम०  
 ६३ ।  
 अन्तिकान्तिक-हेतुदोषविशेषः । ठाणा० ४९३ ।  
 अनुशाय-शोधः । उत० ३७७ ।  
 अनुश्रेणि-अनुश्रेणिः । उत० ५९७ ।  
 अनुष्ठानं-(अनुष्ठान)-विहितम् । आव० ६९९ ।  
 अनुसारगति-अनुपातगतिः । सूत्रे० १६ ।

अक्षं-अन्यत् । उत १३४ । मण्डकखण्डलायादिसमस्तमपि  
भोजनम् । उत ३६९ ।

अक्षति-अनुपन्ति, आगच्छन्ति । ओष १२६ ।

अक्षंदाहं-अस्या, अन्यामिदानीं वा । आष ५०९ ।

अक्ष-अन्यः । भग ३१७ । अक्ष-भर्तः । दश २१६ ।

अक्षइलाय-अक्षतिताए, दोषाक्षभोजी । प्रथ १०९ ।

अक्षइलायप-अक्ष विना ग्लानो भवति । भग ७०५ ।

अन्नइलायचरण-अन्नग्लानको दोषाक्षभूमिति, अथवा अक्षं  
विना ग्लायकः-समुत्पन्नवेदनादिकारण एव, अन्यस्मै  
वा ग्लायकाय भोजनार्थं चरतीति अन्नग्लानकचरकोऽन्न-  
ग्लायकचरकोऽन्यग्लायकचरको वा । ठाणा २९८ ।

अन्नउत्थिप-अन्यतीर्थिकः, चरकपरिप्राजकभिधुभौता-  
दिकः । आष ८११ ।

अन्नउत्थिता-अन्ययूथिकाः-अन्यतीर्थिकाः । ठाणा १३५ ।

अन्नउत्थियं-अन्ययूथिकः, अन्यतीर्थिकः, चरकादिकः ।  
जीवा १४३ ।

अन्नकाले-अक्षकालः, सृष्टार्थयौष्ट्युत्तरकालं शिक्षाकालः ।  
सूत्र ३०१ ।

अक्षकिञ्चकरो-अन्यनुत्तिकरः । आष ७० ।

अक्षगिलाय-पशुयितम् । आषा ३१३ ।

अक्षत्थ-अन्यत्र, परिवर्जनार्थे । प्रज्ञा २५३ । व्य ७०  
१६४ आ ।

अक्षधर्मिय-अन्यधार्मिकः, मिथ्यादृष्टिः । ओष २४ ।

अक्षपर-अन्यपर-अन्यरूपतया परमन्यत् । आषा ४१५ ।

अक्षपाणं-अक्षपानम्, शोदनकाञ्जिकादि । उत ३६३ ।

अक्षभयं-परचक्रभयं । नि ७० । द्वि २१ आ ।

अक्षभावेण-अन्यभावः-योऽस्ती गन्ता सोऽन्यभावः, उजि-  
ष्कमितुकामः । ओष २२ ।

अक्षमक्ष-अन्योऽन्यं-परस्परं । ठाणा १६९ ।

अक्षमक्षओगादाहं-एककोत्राधितानि । भग ७५८ ।

अक्षमक्षगद्विया-अन्योऽन्यमयिता, परस्परगुम्फिता ।  
भग ३१५ ।

अक्षमक्षगुदयसा-अन्योऽन्यगुदकता, अन्योऽन्येन द्रव्य-  
नाहृदकता-विस्तीर्णता । भग २१५ ।

अक्षमक्षगुदयसंभारियसा-अन्योऽन्यगुदकद्वभारिकता,  
अन्योऽन्येन गुरुकं यत्सम्भारिकं तद्भाद्रस्ता । भग २१५ ।

अक्षमक्षगुदसा-परस्परसमुदायता । भग ७५८ ।

अक्षमक्षगुदसा-आगावाश्लेषतः । भग ७५८ ।

अक्षमक्षगुदसा-गावाश्लेषतः । भग ७५८ ।

अक्षमक्षभारिसा-अन्योऽन्यभारिकता, अन्योऽन्यस्य यो  
भारः स विद्यते यद्य तदन्योऽन्यभारिकं तद्भावनता । भग  
२१५ ।

अक्षयंस्तथं-अन्यतरत् शक्यम्; सर्वशक्यम्, एकधारादि-  
शास्त्रव्यवच्छेदेन सर्वतोधारशक्यत्वम् । दश २०१ ।

अक्षय-अन्यतरम्, स्तोत्रम् । दश १९८ । प्रतिकूलम् ।  
आषा ३४२ ।

अक्षयरावमि-अन्यतरमिन् । उत ५४३ ।

अक्ष भण-अन्येनाकृत्यमाणः । ओष १६५ ।

अक्षलिने-अन्यलिङ्गम्, साधुलिङ्गम् । आष १३४ ।

अक्षवत्थुयसास-अन्यवस्तुपन्त्यासः, उपन्यासस्य द्वितीयो  
भेदः । दश ५५ ।

अक्षवाल-अन्यपालः-अन्ययूथिकः । भग ३२३ ।

अक्षवेल-तत्रान्यसां- भोजनकालापेक्षयाऽऽयावसानरूपाया  
वेलायां-समये चरतीति । ठाणा २९८ ।

अक्षहाभवी-अन्यथाभावः । वृ ६० । द्वि २८९ अ । उजिष्क-  
मणामिप्रायः । ओष ८१ ।

अक्षान्दु-अन्यविष्टः-अभिध्यातः । भग ६८३ ।

अक्षानो-अन्यस्मात्, अन्येन द्वारेण । उत २१९ ।

अक्षानं-अज्ञानम्, मिथ्याज्ञानम् । उत १५१ । मिथ्या-  
त्वतिमिरोपप्लुतदृष्टेर्भावस्य विषयः । विशे ८७३ । द्रव्य-  
पर्यायविनिययोधाभावः । ठाणा १५५ । लौकिकभ्रतम् । ठाणा  
४५१ ।

अक्षानतावादा-अज्ञानमेव श्रेय इत्येवं प्रतिज्ञाः । ठाणा  
२६८ ।

अक्षानाणकिरिया-अज्ञानात् वा चेष्टा कर्म वा सा ।  
ठाणा १५३ ।

अक्षानादोसे-अज्ञानदोष-अज्ञानात्-पुशास्त्रसंस्कारात्  
हिंसादिष्वधर्मस्वरूपेषु नरकादिकारणेषु धर्मबुद्ध्याऽभ्युद-  
यार्थं वा प्रवृत्तितद्दक्षणी दोषः, अज्ञानमेव दोषः । ठाणा  
१९० ।

अक्षानिघण्टयाह-वृत्तितं ज्ञानमज्ञानं तथेषामिति तेऽज्ञानि-  
वास्ते च ते वादितथेत्वज्ञानिकवादितः । भग १४४ ।

अन्नाणी-अज्ञानी, मिथ्याज्ञान । जीवा० ४३९ । ज्ञान-  
निद्रववादी । सूत्र० २०८ ।

अन्नाणमूढा-जो सक्ताविमता अज्ञाना णाणबुद्धीण गेहति,  
णो जतिण हेउमएहिं दंसिय षडमाणमत्थपि गिहति ।  
नि० चू० टि० ४३ अ ।

अन्नातचरते-अज्ञात -अनुपदर्शितस्वाजन्यदिमरप्रजिता-  
दिभाव सत् चरनि-भिक्षार्थमटतीलज्जातचरक । ठाणा०  
२९८ ।

अन्नायउच्छं - अज्ञातोच्छम्, विशुद्धोपररणप्रहणविषयम् ।  
दश० २८० ।

अन्नायपत्नी - अज्ञातपत्नी-अज्ञात -तपस्वित्तादिभिर्गुणैरनव-  
गत एवयते-प्रासादिक गवेपयति । उक्त० ४१४ ।

अग्नि-अन्यदीप्यम् । सूत्र० ३०८ ।

अग्निआपुत्तो-गर्भोप्राप्तकेवल आचार्य । (म०)

अग्निआपुत्रिक-आचार्यविशेषनाम । ष्य० प्र० ११२ आ ।

अग्नितो-अग्नि-त-युक्त । उक्त० ४४८ ।

अग्निपुत्ता-अग्निपुत्रा, वैनयिक्यामाचार्या । भाव०  
४४९ ।

अग्निपुत्तो-अग्निपुत्र, आधिकालाभद्वारे आधिक  
ऽऽनीताहारभोक्ता आचार्य । भाव० ५३७ ।

अग्ने - नानादेशपेभया गौरवबुद्ध्यादिगर्भमामन्त्रणवचन  
मिदम् । दश० २१६ ।

अग्नेसमाण-अग्नेपमाण, भगवदानामनुपालयन् । दश०  
१८७ ।

अग्नेसि-अग्नेपरंत गवेपयेत् । आचा० ७७ ।

अग्नेो-अ-वसीयम् । सूत्र० ३०८ ।

अग्नेोन्नं-अन्यद्वयम् । औष० १४३ ।

अग्नेोन्नारणं-परस्परवैश्याक्यकरणम् । सू० टि० २९२ अ ।

अग्नेोन्नधत्ता - अन्योऽन्यधत्ता, परस्परमन्त्रदत्ता ।  
जीवा० १३ ।

अन्यस्वम् - अनगारद्वयमन्त्रिणो वे पुत्रेलास्तेषा भेद ।  
भग० ७४१ ।

अन्यस्वद्रव्यमुद्दि-अन्यद्रव्यमुद्दि, आदेशतो द्रव्यमुद्दि  
भेद, यथा शुद्धवासा । दश० २११ ।

अन्यद्रव्यनानाता-परमाणोर्ध्वशुक्तादिभेदमिहता । भाव०  
२८१ ।

अन्यपुष्टः (अणपुष्ट)-कोटिल । उक्त० ६५३ ।

अन्योऽन्यक्रियासंतक-मत्तममत्तकम् । ठाणा० ३८७ ।

अन्योऽन्यप्रगृहीतम्-काव्यतिष्ठविशेष । सम० ६३ ।

अन्योऽन्याविभागसम्बद्ध-धर्मीनीरादिकसम्बद्धम् । भाव०  
३२२ ।

अन्यीक्षिष्यामि-अन्येपिष्यामि । आचा० २८७ ।

अन्येष्येत्-प्रार्थयेत् । आचा० २९० ।

अन्यतीर्थिक-नरजरकादय । आचा० ३२४ । अन्यानि  
च ताव्यद्वेषणीनतीर्थान्यत्वेन तीर्थानि च-निजनिजा-  
भिप्रायेण भवजल्पेनरगं प्रति कण्ठतया विहन्पित्तेनान्य  
तीर्थानि तेषु भवा, ते च शाक्यगरजरकादय । उक्त०  
२९९ ।

अपहृष्टाण्ये-अप्रतिष्ठान, मत्तस्या नरकावागविशेष । प्रभा०  
८३ ।

अपकरणं-हाम । ठाणा० २२२ ।

अपकसंती-परिहमन्ती नीयमाना वा । ठाणा० ३०८ ।

अपकित्त-अपष्टम् । विशिदुत्तम् । भग० २०२ ।

अपकस्वगाही-अपक्षग्राही, न पथं शास्त्रवाचितं युद्धाति  
इति । ठाणा० ४४१ ।

अपकस्त्रो-काल्पकस्यो । नि० चू० टि० ३३ आ ।

अपच्यद्रव्यमन्द-कृशशरीरतया प्रवर्तने न कर्तुमीष्टे ।  
सू० प्र० ११३ अ ।

अपच्यभावमन्द-बुद्धरभावेन हिताहितप्रवृत्ति-निवृत्ती न  
कर्तुमीष्ट । सू० प्र० ११३ अ ।

अपच्यखाणकसाण-देशविरतिप्रतिबन्धको मोह । सम०  
३१ ।

अपच्यखाणकरिआ-सूत्रज्ञाने द्वितीयश्रुतहृन्त्यावयव-  
विशेष । सम० ४२ ।

अपच्यखाणकरिया-अप्रत्याख्यानक्रिया, विनाशिक्रिया  
मन्य पञ्चक्रिया । भाव० ६१७ । अविरतिमन्त्रिमिमा  
न्मन्त्रेण । ठाणा० ४१ । निवृत्त्यभावेन क्रिया-कर्मबन्ध-  
कारणम्, सम्भयरदृष्टानुर्था क्रिया । प्रभा० ३३४ । प्रत्या-  
ख्यानक्रियाया अभाव, अप्रत्याख्यानजन्य कर्मजन्यो वा ।  
भग० १०१ ।

अपच्यखाणा-अप्रत्याख्यान । प्रभा० ४६८ । कथाया ण्व ।  
भाव० ७७ । देशविरत्यानारण । ठाणा० १०४ ।



अपचलो-अपचलः, असमर्थः । आव० ५३७ । अशोचयः ।  
नि० चू० द्वि० २५ आ ।

अपच्छिन्नं-अपक्षिमम्, चरमम् । आव० ५४४ । पश्चत्काल-  
भात्रिन्यः । सम० १२० ।

अपच्छिन्ना-अपक्षिमा । आव० ८३९ । पश्चिमैवामङ्गल-  
परिहारार्थमपक्षिमा । टाणा० ५७ ।

अपज्जत्तं-अपर्याप्तम्-अद्यक्तः । उक्त० ४०८ ।

अपज्जत्ता-अपर्याप्ता, पर्याप्तभाषाविपरीतो भाषामेदः ।  
दश० २१० ।

अपज्जत्तिया-अपर्याप्तिका, यामिधतया उभयप्रतिषेधात्मक-  
तया वा न प्रतिनियतरूपतयाऽवधारयितुं शक्यते सा,  
भाषाया द्वितीयो मेदः । प्रभा० २५५ ।

अपज्जोसवण-अपते अतीते वा जो पज्जोसवति । नि०  
चू० प्र० ३३६ अ ।

अपज्जिकम्म-शरीरप्रतिकर्मेवजितम् । भग० ६२६ ।

अपज्जिणे-अप्रतिज्ञः, नाश्य प्रतिज्ञा विधये । आचा० १३२ ।  
अनिदानो, वसुदेववत् संयमानुष्ठानं कुर्वन् निदानं न करोति ।  
आचा० १३३ । यदि वा स्यादादशभानत्वनमौनीन्द्रागम-  
स्वैकपक्षाधारणं प्रतिज्ञा तद् रहति । आचा० १३३ ।  
अनिदानः । आचा० ३०६ ।

अपज्जियद्धया-अप्रतिबद्धता, स्वजनादिषु स्नेहाभावः ।  
भग० ९७ ।

अपज्जिभाणी-अप्रतिभाषी । आचा० ३०६ ।

अपज्जिरूपा-अप्रतिरूपा । उक्त० ११३ ।

अपज्जिल्लेह-अल्पायं नम्, ततोऽवस्तुपेक्षित इति अल्प-  
करणत्वादल्पप्रयुषेक्षः । उक्त० ५९० ।

अपज्जियात्ती-अवधिज्ञानमेदः । टाणा० ३७० ।

अपदमसमयनियेठो-अश्रमसमयनिर्णयः, यः केषु  
नमणेषु वर्तमानः सः । उक्त० २५७ ।

अपत्तिट्टिए-अप्रतिष्ठितः-आकौशादिकारणनिरपेक्ष भेदं  
कोपवेदनीकोदयाद् यो भयति सः । टाणा० १९३ ।

अपत्तं-अपार्थ-अभाजनम् । नि० चू० तू० ८० अ ।

अपत्तपडिच्छण-अत्रापामात्रि वेत्ताम् प्रतिपाठयति । श्लो०  
४९ ।

अपत्ति-अप्रतिनि । आव० २०१ ।

अपत्तियं-अप्रतिकम् । आव० २७३ । अपाधिकाम्-अविय-  
मानाधाराम् । भग० ७०५ ।

अपत्तियते-अप्रत्येति । वृ० द्वि० २२८ आ ।

अपत्त्यं-अपत्त्यं-अहितम् । उक्त० २७६ ।

अपत्तिथ्यपत्तिथया-अप्राथितप्रार्थकः । आव० १९२ ।

अपत्तिथ्यपत्त्यप-अप्राथितं प्रार्थयते यः सः । भग० १७४ ।

अपदंसो-पितारज । नि० चू० प्र० ११७ अ ।

अपदपातितं । जीवा० १९९ ।

अपद्रापयेत्-जीविताद्वयपरोपयेत् । आचा० ४२८ ।

अपदलम्-अपशदं द्रव्यं (दल) कारणभूतं मृत्तिकादि यस्या-  
सावरदलः, अवदलति वा शीघ्रं इत्यवदलः अलपशक्तया  
ऽनार इत्यर्थः । टाणा० २७९ ।

अपद्रावन्ति-प्रागन्मुच्यन्ति । आचा० ५५ ।

अपद्धारं-कुतिसितद्धारम् । टाणा० ४०२ ।

अपद्धारिका- ( अवदारिआ )-स्थानविशेषः । वृ० द्वि०  
२७२ आ ।

अपघ्यानम्-विहोतसिका । आव० ६०२ ।

अपनीत-विधुत् । प्रकम्पितो वा । आव० ५०७ ।

अपनीता-विनाशिता । ओष० ४६ ।

अपभ्रंशः-तण्डुलेषु दुर्द्धं भाषितम् । उ० प्र० २५९ ।

अपमज्जियं-अप्रमाजितम्, द्वितीयसमाधिस्थानम् । आव०  
६५३ ।

अपमज्जियचारि-अप्रमाजितचारी, अन्माधिस्थाने द्वितीयो  
मेदः । सम० ३० ।

अपमज्जियदुग्गमज्जियसिज्जासंघारप-अमाजितदुग्ग-  
माजितशाखासन्धारकः, द्रव्यादेश्छुपा न प्रयुषेक्षं, द्रव्या-  
देश्छुद्धान्तवेचना प्रयुषेक्षं दुग्गप्रयुषेक्षं यस्य सः । आव०  
८३५ ।

अपमत्ते-अप्रमत्तः-निशदिपमाररहितः । आचा० ३०१ ।

अपमानभीर-भिर्मां ध्रमकणि न यस्य तस्यैव वैरमि  
प्रवेष्टुमिच्छति, यदि वा 'ओमाग' नि प्रवेत्, स च स्वपश-  
परपशयोस्व द्वाग्दृष्टिगतवन्धेन मा मां प्रविशन्तमवकीर्याम्ये  
साधवः गौमानदयो काऽप्र प्रवेश्यन्तीति । उक्त० ५५० ।

अपमिश्यकः-पठ सावलक्ष्ये । प्रभा० १४४ ।

अपयं-अपयम्, पयंगी पये विधानयोगेऽन्यत्ततोऽभि-  
धानम् । सूत्रदोषवेदान् १ आव० ३७४ । न विदते पदम्-

अवभाषितो यो यस्य न । आचा० २३१ ।

अपयाण-अपादानं-मर्यादाया दानं (उपदानं) । आच० २७८ ।  
 अपया-लोमसीआदि । नि० सू० प्र० ३ आ ।  
 अपर-सयम । आचा० १६७ ।  
 अपरच्छे-अपराक्षम्, अममक्ष, अधर्मद्वारस्य त्रिशतम  
 नाम । प्रथ० ४३ ।  
 अपरद्धो-अपराद्ध, ध्यान्त । आच० १०८ ।  
 अपरमं-दुक्खम् । दश० सू० ६२ ।  
 अपरमविद्धम्-वाप्यतिसयविशेष । सम० ६३ ।  
 अपराहवा-वशावतीविश्वे अपराजिता राजधानी । ज०  
 प्र० ३५७ ।  
 अपराहृण-प्रतिवासुदेवनाम । सम० १५४ ।  
 अपराहृण-पद्मबलदेवस्य पूर्वभवनानाम । सम० १५३ ।  
 अपराजिभ-अपराजित, अरत्रिनप्रथममिक्षादाता । आच०  
 १४७ ।  
 अपराजिभा-अपराजिता, राजधानीनाम । ज० प्र०  
 ३५२ । पौरस्त्यदक्षकवास्तव्याऽऽप्ती विष्णुमारी । ज० प्र०  
 ३९१ । रात्रिनाम । ज० प्र० ४९१ । चन्द्रस्याप्रमहिषीनाम ।  
 ज० प्र० ५३२ । पद्मबलदेवमाता । आच० १६२ ।  
 अपराजिण-प्रह्वविशेष । ठाणा० ७९ ।  
 अपराजित-जगतीद्वारनामविशेष । सम० ८८ ।  
 अपराजिता-अपराजिता, अन्ननपईते पुष्करणीविशेष ।  
 ठाणा० २३१ । अनुत्तरोपपातिकविमानविशेष । प्रज्ञा० ६९ ।  
 अपराजिते-जगतीद्वारनामविशेष । ठाणा० २२५ ।  
 अपराजिय-कुम्भुत्रिनप्रथममिक्षादाता । सम० १५१ ।  
 अपराजिया-अपराजिता-सैदान्तिकरात्रिनाम । सू०  
 १८७ । अधमबलदेवमाता । सम० १५२ । अह्नारकर्म  
 ह्यप्रहस्याप्रमहिषी । भग० ५०५ । ठाणा० २०४ । मुद्यधि  
 नाथरीक्षासिद्धिका । सम० १५१ । विद्दहेतु राजधानीविशेष  
 नाम । ठाणा० ८० । राजधानीविशेष । ठाणा० ८० ।  
 अपराधालोचनना-आलाचनमेद । ध्य० प्र० ४८ आ ।  
 अपरिभाविभा-अपरितापिता, स्वत परतो वाऽनुप  
 जातकायमन पारताया । ज० प्र० १२६ ।  
 अपरिक्कम्-अपरिकर्म-०याघाते गिरिमित्तपतनाभिघातादि  
 रूचे सत्त्वनामनिधासैव भक्तश्रयाख्यानादि क्रियते तत् ।  
 उत० ६०३ ।  
 अपरिक्खउ-अनानोय । नि० सू० प्र० ९८ आ ।

अपरिरोदितं-वाप्यनिगमत्रिशेष । सम० ६३ ।  
 अपरिगहियागमणे-अपरिगृहीतागमनम्, वेदाभाय  
 मकरग्रीनमाटी युवाग्रना अनाया या तस्या गमनं-  
 मैधुनासेननम् । आच० ८२५ ।  
 अपरिग्गहो-अपरिग्रह, धर्मोपकरणवर्षपरिग्रहवस्तुषुर्मां  
 पकरणम् उर्वाजित । प्रथ० १४२ । न त्रियते पर्मां  
 पकरणदत्ते शरीरोपयोगाय स्वन्तोऽपि परिग्रहो यस्य न ।  
 सूत्र० ४९ । अगीनार्थे तदापताथ । ध्य० प्र० २३३ अ ।  
 अपरिणत-अमार्गस्य । आच० ८५१ ।  
 अपरिणते-भोचनपरिणयभाव । ओप० २३ ।  
 अपरिणय-सेहप्राय । ओप० ८९ । बाणप्रहृणमातोऽ  
 पगतोऽयचित्तो वा जात । ओप० २०३ । अपरिणत-एवणा-  
 दोषविशेष । आचा० ३४५ । अविभ्रन्त । आचा० ३४८ ।  
 अपरिणामा-अपरिणामा, अपरिणतजिनवचनरहस्या ।  
 विदो ९३१ । अपरिणामिन । ध्य० प्र० ७२ अ ।  
 अपरिततजोगी-अपरितान्तयोगी अविधान्तसमाधि ।  
 अन्त० २३, अनुत्त० ४ । अपरितान्ता-अधन्ता योगा-  
 मन प्रभृतय सदनुष्ठानेषु यस्य स । प्रथ० १०९ ।  
 अपरिततो-वैयाहृत्यादी अनिवदी । सू० नृ० ९७ ओ ।  
 अनिविणो । वृ० प्र० २२१ अ ।  
 अपरिताविय-अपरितापित, स्वत परतो वाऽनुपजात-  
 कायमन परिनाप । जीवा० २८४ ।  
 अपरिपुष्णे-अपरिपूर्णम्, सद्गुणविरहापुच्छम् । मृग० ३०६ ।  
 अपरिभुक्तं-अपरिभुक्त् । आचा० ३०५ ।  
 अपरिभुक्त-अपरिभुक्त अनाक्रान्त । ओप० ५७ ।  
 अपरिमाण-अपरिमाण-अनन्त । आचा० २४१ ।  
 अपरिमितम् अमितम् । आच० ७९५ ।  
 अपरिमियपरिग्गह-अपरिमितपरिग्रह । आच० ८२५ ।  
 अपरिमियमणता-अपरिमितानन्ता-अत्यन्तानन्ता ।  
 प्रथ० ९२ ।  
 अपरियाहृत्ता-अपर्यादाय-ममन्तादृहीवा । ठाणा० ०० ।  
 अपर्यादाय-अग्रहीवा । भग० ६४३ । जीवा० ३७५ ।  
 ठाणा० ४६ ।  
 अपरियाणिसा-अपरिहाय । ठाणा० ४६ ।  
 अपरियाघणया-शरीरपरितापातुत्पात्नेन । भग० ३०५ ।  
 अपरिसाडि-अनवयवोन्मनम् । भग० २९४ ।

अपरिसाडि-अपरिसाडि, परिसाडिचक्रितम् । प्रश्न० ११२ ।  
 अपरिसाडी-वसकपिमासी । नि०-सू० प्र० १६८ अ ।  
 अपरिसुद्धं-अपरिशुद्धम्, अयुक्तियुक्तम् । आच० ५७६ ।  
 अपरिस्साद् - न परिश्वेत - नालोचकदोषानुपश्रुत्वान्यरमै  
 प्रतिपादयति य एवशील सोऽपरिश्वाती । ठाणा० ४२४ ।  
 अपरिस्सावी-अपरिश्वावी-अवन्धको निलदयोग । भग०  
 ८९२ । अमरक (आउ०)  
 अपरिहृद्यो-अदृश । आच० ५६७ ।  
 अपरिहरिस्ता - अपरिहृत्य - द्विनैमांसैर्व्यपधानमकृत्वा ।  
 आच० ३६६ ।  
 अपरिहारिया-अपरिहारिका-साधर्मिका । आच० ३५२ ।  
 अपरीस्ता-साधारणशरीरा । ठाणा० १३२ ।  
 अपर्याप्ति-तत्परिणामयोग्यदलिकद्रव्यमारमना नोपात्त (सकृपि  
 तत्पुद्गलेषु स परिणामो ह्यथेते) । तत्त्वा० ८-१२ ।  
 अपवरगो-अपवरक । जीवा० २६९ । अपवरकम्,  
 अन्तर्गृहम् । ओष० १५३ ।  
 अपवरिका-अपवरकम् । द्य० द्वि० २०७ आ ।  
 अपवर्त्तनम्-कमला स्थित्यादेरवस्थायविशेषेण हीनताक  
 रणम् । भग० २५ । उपनमैरुत्पुंस्त्वस्त्री प्राक् । तत्त्वा०  
 २-५२ ।  
 अपवर्त्तना-हानिकरणम् । सूर्य० १३३ ।  
 अपवर्त्तयन्-तिरधीन कुर्वन् । आच० ३४३ ।  
 अपवाद् -करण, विमेषवचन च । ज० प्र० ५४९ ।  
 विभाग । नि० सू० तृ० १०५ आ ।  
 अपवाद्गम् प्रवचनरहस्यम् । सू० प्र० १३१ अ ।  
 अपवादापवाद्गुरुपम्-शाकमासीना प्रवाचने रक्षाभौ विज्ञाप  
 नम् । ठाणा० ३१२ ।  
 अपव्यापितो-न प्रजिन न मुदितानि कृतानि । व्य०  
 द्वि० २८ आ ।  
 अपसत्यविहायगति - अप्रवास्तविहायगान - नामकर्म  
 विहाय । प्रश्ना० ४७४ ।  
 अपसिणा-अप्रश्ना -या पुनर्विद्या मन्त्रविधिना जयमाना  
 अष्टण एव शुभाशुभे कथयन्ति एता । सम० १२४ ।  
 अपसू-अपपु -द्विपदचतुष्पादिरहित । आच० ४०३ ।  
 अपहार-मय । ठाणा० ३०९ ।  
 अपशुण्यते अप्रभवति, अपर्यमाण । पिण्ड० ८८ ।

अपहृताभ्योत्तरम्-वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३ ।  
 अपार्णघाण-अप्रचीनवात य प्रतीच्या दिश तन्नाग छति  
 वात स । प्रश्ना० ३०१ ।  
 अपाचीनै-अशुभ । आच० २५० ।  
 अपान्तरालम्-अथावा । जीवा० १४ ।  
 अपान्तरालसामान्यम्-वृक्षत्वगोत्वगन्तराधिकम् । विश्वे०  
 ८९५ ।  
 अपाय-अपादम्, विशिष्ट-उन्दोरचनाशोभात् पादविक्रित  
 गद्यगुण । दश० ८८ ।  
 अपाय-सम्यगसम्यगिति शुण्दीपविचारणाध्यवसायापनोद ।  
 तत्त्वा० १-१५ ।  
 अपायतो-विदलेपत । ठाणा० ४२८ ।  
 अपारगमा-अपारङ्गमा, पार-त परकृत् तद्गच्छतीति  
 पारङ्गना न पारङ्गमा अपारङ्गमा । आच० १२४ ।  
 अपावते-अपावक शुभचिन्तारूप । ठाणा० ४०९ ।  
 अपायभाव-अपायभाव, शुद्धचित्त । दश० २३ ।  
 अपाश्रय-आधार । विश्वे० ४१५ ।  
 अपि. - सम्भावनातिशयपेक्षासमुच्चयगृहस्थित्यास्येणभूषण  
 प्रशस्त्रिति । ठाणा० ४९५ । यादम् । जीवा० १९० । विदमान ।  
 आच० ४५० । च । उत० १८२ । इति । आच० ३६ । तथा  
 इत्यर्थ, समुच्चयार्थश्च । आच० ६५ । पुन । आच०  
 २८२ । यादार्थे । ज० प्र० ४६ । ग्वकारार्थे । आच०  
 ५६९ । अभ्युपगमयादसम्यक् । आच० ५३१ । यादम् ।  
 ज० प्र० ४१३ ।  
 अपिष्टणया-यष्टपादितानुपतिहारैः । भग० ३०५ ।  
 अपियत्ता-अप्रियता, सवपाभव द्वेषतया । भग० २३ ।  
 अपीशो-असीत, न पीत । उत० ८० ।  
 अपुञ्जो-अपुञ्ज, अवन्दीय । आच० ५१९ ।  
 अपुडुवागरण-अपुडुवागरणम्, अष्टप मति प्रतिपादम् ।  
 भग० ११७ ।  
 अपुणराद्यस्तय-अपुनरावर्त्तयम्, नमपीजामावाद्वावावतार-  
 रहितम् । भग० ७ ।  
 अपुणराविति-अपुनरावर्त्तयम्-आवयमानुपनर्भवात्तारम् ।  
 गम० ५ ।  
 अपुत्तो-अपुय, स्वजनयपुलित, निर्गम इत्यर्थ । आच०  
 ४०३ ।

अपुण्ड्रिय-अपुण्ड्रितं-तरिकारहितम् । ओष० १०२ । मन्त्रम् ।  
वृ० प्र० ६८ अ ।

अपुम-नपुमकम् । ओष० ९० ।

अपुरिस्तंरकण्डं - अपुरुयान्तरकृत-तेनैव दाया कृतम् ।  
आचा० ३२५ ।

अपुरिस्त-अपुरय, नपुमक । ठाण० ३७२ ।

अपुण्ड्रो-अपूरि, अननुभूतपूर्वोऽनुभूतपूर्वो वा । अनु० १३७ ।

अपुन्रं-अपूरंम्, अपूरंरणम् । आच० ८५२ ।

अपुन्रधुतप्रत्याख्यानम्-अनुरप्रत्याख्यानदिकम् । आच०  
४७९ । अत्राप्तपूर्व, स्थितिपात-रगाघाताद्यपूर्वार्थनिरतकम् ।  
विश० ५३५ । अष्टापूर्वम् । आच० २३०, वृ० प्र० १९४अ ।

अपुन्रकरण-अपूरंकरण-असहस्राक्षयतसायविशेषम् । भग०  
४३६ । अत्राप्तपूर्वम् । आच० ७५ । सम्यक्त्वप्राप्ती करण-  
विशेष । ठाण० ३९ ।

अपुहुत्ते-अपुधत्त्व, अपुधभाव, चरणधर्मसङ्घपाद्व्याप्त  
योगानां प्रतिपन्नमवेमगेन वर्तनम् । आच० २८५ । अपु-  
धत्त्वानुयोग-एकरिमन्वेव सप्रे सर्व एव चरणाद्य प्रल्पन्ते ।  
दश० ४ ।

अपूरंतो अपूरयन् अतुरंत । आच० २७ । अपूरंत्, अनाचरन् । आच० २६३ ।

अपूर्यंभक्तिकम्-अपूरयनाकम् । ठाण० ४०१ ।

अपेक्षकारणम् - दिग्देगकालाकाशपुरषचक्रादि । ठाण०  
४९४ ।

अपेक्षे-अपेयम् । जीवा० ३०० । अपेयम्-मगदिरम् ।  
व्य० प्र० ८ अ ।

अपोहार्-साक्षादुक्ति । आचा० ४९ । निगम । आच०  
३०९ ।

अपोरतीय-अपीरयेयम्, अपुरयप्रमाणम् । भग० ३९० ।

अपोरसिय-अपीरयेयम्, पुरयप्रमाणरहितम् । भग० ८० ।

अपोह अपोह, पृथग्भाव । ओष० १२ । अपोहनं-निधय ।  
आच० १८ । विपक्षनिराम । भग० ४३३ । अपोहनमपोहो-  
निधय । विश० २०६ ।

अपोहप-वक्रानिष्ठं शुभ्रिरेव निधिनोति । विश० ३३ ।

अपोहते एवमेतन् यदादिप्रमाचार्येवेति पुनस्तमर्थमाहृतीत  
थायति करोति च सम्यक्त्वतुल्यमनुगममिति । आच० २६ ।

अपूरं-अल्पम्, मूल्यत एरण्यकाद्यादि । दश० १४७ । अभाव,  
स्नोक वा । आच० ५८६ ।

अपूरंरुद्धाणे-अप्रतिगान । तम० २ । मोक्ष । आचा० २३१ ।

अपूरंरुद्धिरे - अप्रतिगान-निरालम्बन एव केवलक्रोधवेद-  
नीयतुपपायते य कोष । प्रज्ञा० २९० ।

अपूरंकारं-अप्रतीकारम्, स्तुतिजन्यदिरहितम् । प्रश्न० २० ।

अपूरंउल्लोसहिभक्त्वणया-अपकीयधमक्षणा । आच०  
८२८ ।

अपूर्य-शरीरे । आच० ५५५ ।

अपूर्यकम्मप्रयायाते - अपूर्यंप्रत्यायात् -अल्पं-रतीं  
कर्मणि करणभूते प्रत्यायात् -प्रत्यायतो मानुषत्वमिति,  
अथवा एकत्र जनित्वा ततोऽल्पकर्मो सन् य प्रत्यायात्  
स तथा लघुधर्मतयोत्पद्यते । ठाण० १८० ।

अपूरंरित्यतराप-अपूरमित्यत्वम् - तथाविधकामिक्यादि-  
कर्मिणाऽपेक्षम् । भग० ७६९ ।

अपूरंकुहुं - अल्पकौतुह्यं, अल्परपन्दन, अपूरं-असत्  
'पुत्रय' कौतुह्यं-वरचरणसूत्रमगाद्यस्येष्टात्मकमस्येति ।  
उक्त० ५९ ।

अपूरंक्त्वम्-आत्मक्षमा-आत्महिताम् । ओष० १८९ ।

अपूरंक्त्वम्-अन्याधरम्, सूत्रगुण । आच० ३७६ ।

अपूरंक्त्वम्-अन्यार्थम्, स्वत्वमूल्यम् । भग० १९९ ।

अपूरंरुद्धो अपूरयय, प्रत्ययानाव । अधर्मद्वारस्य चतुर्वि-  
शतितमं नाम । प्रश्न० २६ । अपूरययकारणत्वात् । अधर्म-  
द्वारस्य सप्तदशं नाम । प्रश्न० ४३ ।

अपूरंरुद्धाण-अप्रत्याख्यानम्, सर्वप्रत्याख्यान देगप्रत्या-  
ख्यानं च येषा उद्वे न लभ्यते । विश० ५४४ ।

अपूरंरुद्धाण्य अप्रत्याख्यान-अनिराहृत्य । उक्त० ३६६ ।

अपूरंरुद्धं-अपूरंरुद्धं-आत्म-छन्दमिति, आत्म-छन्दा-स्वामि-  
प्रायकार्यकारी । आच० १०० ।

अपूरंरुद्धि-निःऽप्योदनादिकम् । आचा० ३३५ ।

अपूरंरुद्धं-आत्मवध, स्वस्वचित्तम् । वृ० द्वि० २१० अ ।

अपूरंरुद्धाण-आत्मख्यानम्, असुकोऽह असुकुट्टे असुग-  
मिसो असुगधर्मद्वान्द्विदण न य तद्विराहणेत्यादिरूपम् ।  
प्रश्न० १२८ ।

अपूरंरुद्धे-अपूरंरुद्ध, अविद्यमानकृद्विशेष । औप० ३९ ।

अप्यंशदा - अल्पसंज्ञाः - विगततथाविधविप्रकीर्णवचनाः ।

ठाणा० ४४२ ।

अप्यडिकुट्टाई - अप्रतिमुष्टे - अनिवारिते । ठाणा० ९३ ।

अप्यडियखे - अप्रतिबद्ध - मनसि निरभिधंगता । उक्त० ५८७ ।

अप्यडियुद्धामणे - अप्रतिबुद्धमानः - शब्दान्तराप्यनवधारयन् अप्रत्युद्यमानो वा - अनपहियमाणमानसो । भग० ४८३ ।

अप्यडिरूया - अप्रतिरूया । आव० ६७५ ।

अप्यडिरूवे - अप्रतिरूपः, अविद्यमानं प्रतिरूपमतिप्रकपवत्त्वेनानन्यतुल्यमस्येति । उक्त० १८८ ।

अप्यडिलेहणा - अप्रत्युपेक्षणा, गृन्त एव चक्षुषाऽनिरीक्षणा । आव० ५७६ ।

अप्यडिलेहियदुप्यडिलेहियउच्चारपासवणभूमि - अप्रतिलेखितदुप्यडिलेखितोच्चारप्रवणभूमि - पौषधेऽतिचारः । आव० ८३५ ।

अप्यडिलेहियदुप्यडिलेहियसिञ्जासंथारप - अप्रतिलेखितदुप्यडिलेखितशयासस्तरकः - पौषधेऽतिचारः । आव० ८३५ ।

अप्यडिलेहियदूसे - अप्रतिलेखितदूष्यः । ठाणा० २३४ ।

अप्यडिलेहियपणयं - अप्रतिलेखितदूष्यपणयम्, दूष्यपणयस्य प्रथमो भेदः, तल्लुपयानकरगणडोफयानाभिलिङ्गनीचपोतमयममूरुभेदभिन्नम् । आव० ६५० ।

अप्यडियाइ - अप्रतिपाति, अनुगतस्वभावम् । आव० ६०८ ।

अप्यडिसुणणं - अप्रतिभ्रवणम्, अप्रतिश्रोता । आव० ७२६ ।

अप्यडिसेयी - अप्रतिसेयी - रं कुसिलं र्मं आकरिणि । ओप० १६५ ।

अप्यडिहो - अप्रतिहतः, शौगन्धिकानगर्भधिपतिः । विष्णो० ९५ ।

अप्यडिहट्टु - अप्यगणिता । नि० सू० प्र० १६९ अ ।

अप्यडिहयं - अप्रतिहृतं, अप्रतिरहितम् । जीवा० २५६ ।

अप्यडिहयपक्षकपायपाययम्मे - अप्रतिहतप्रसाध्यातपाययर्मा, न प्रतिहृतं तपोविधानेन मरणजात्यदासराधयिनप्रयाग्याने च मरणकालेऽप्याधप्रनिरोधेन पाययमे वेन सः । न प्रतिहृतं मयस्वर्गमनसिपतित प्रत्यागतं च मयैवैर-

लक्ष्मीकरणतः पार्थक्यं - ज्ञानावरणाद्युत्थं कर्म वेन सः । भग० ३६ ।

अप्यडिहयवरणाणदंसणघरे - अप्रतिहतवरज्ञानदर्शनघरः, योऽप्रतिहते कम्प्यादिभिस्खलितेऽविसवादेके वा वरे - प्रधाने ज्ञानदर्शने - विशेषतामान्ययोधात्मके धारयति सः । भग० ७३ ।

अप्यडिहो - अप्रतिधः ( भक्त० )

अप्यप्यं - अप्यं, प्राधान्येन विवक्षणम् । विशेष० १२७७, ७७१ ।

अप्यप्यचिय - आत्मीयम्, स्वकीयम् । भग० १३२ ।

अप्यप्यट्टा - आत्मार्थम्, आत्मनिमित्तम् । दश० २४९ ।

अप्यप्यियं - आत्मीयं । आव० १८९ ।

अप्यप्यिया - आत्मीया । आव० २१२ ।

अप्यप्यिट्टाणं - अप्रतिज्ञानम्, नरकविशेषः । आव० ३४८ ।

अप्यप्यमुंतुमा - अत्यनुमन्तुमा - विगतशोभहृतमनेविकाविशेषाः । ठाणा. ४४२ ।

अप्यप्यमुंतुमे - अल्पम् - अविद्यमानं त्वं त्वमिति स्वल्पापराधिन्यपि त्वमेव पुराऽपि कृतवान् स्वमेवं सदा करोषीत्यदिपुनः पुनः प्रलपनं यस्य सः । उक्त० ५८९ ।

अप्यप्येभ - अप्येतेत्र - तेजशयः । दश० २७६ ।

अप्यप्यियं - अप्रतिकम् । उक्त० ९० । दश० सू० १२५ । पञ्चमिरिसरणम् । नि० सू० प्र० ३१ अ । मनस पीडा कुर्यात् । आचा० ४०५ । शोषः । मूत्र० ३४ । अप्रमं । भग० २९० । मनसः दुष्प्रीधानम् । सूत्र० ३३१ ।

अप्यपरिकम्मं - तननं, गन्धानं दशहेदनं वा । सू० डि० २०० अ ।

अप्यपाणं - अप्यगणम्, अग्या - अविद्यमानं प्राणा - प्राग्भिनो यमिस्तन, अव्यभिचारानुरजन्नुपिरहितम् । उक्त० ९० । अप्यपुण्णेहि - अपुण्यैः - अनार्थिः पापाचारैः । आचा० ३०३ ।

अप्यभाप - अप्यभातः । आव० ३०१ ।

अप्यभक्ती - अत्यल्पमाधो - अगानि - मतोऽपि लघूनि निगाराणि निष्पावारीणि भक्षयितुं शीलमम् । उक्त० ४२० ।

अप्यभु - अप्यभ्र - नृत्तसादयः । ओप० १६३ ।

अप्यभूतं - अप्यभूतं - अभाः । ठाणा० २०९ ।

अप्यमञ्जणा - अप्रमादना, मृगत एव म्योदरपादिनाऽमर्शना । आव० ५७६ ।

**अण्मञ्जियदुप्यमञ्जियउच्चारपासयणभूमि** - अप्रमा-  
जितुप्रमाजितोच्चारप्रप्रथयणभूमि - पौषधेऽतिचार । आठ०  
८३५ ।

**अण्मत्तो** - अप्रमत्त, गुरुमारतन् यापहारिप्रमाद्परिहर्ता ।  
उत्त० २२३ । अप्रमत्तसयतप्राम, भूतप्रामस्य सप्तम गुण-  
स्थानम् । आव० ६५० । आत्महितेषु जायन् । आचा०  
१७२ । प्रयत्नवान् । ओष० २२१ ।

**अण्माप** - अप्रमाद, योगसद्ग्रहे पद्विशतितमो योग ।  
आव० ६६४ । अकर्मकम् । सूत्र० १६९ ।

**अण्माशो** - अप्रमाद, उत्तराध्ययनेषु एकोनत्रिंशत्तममध्यय-  
नम् । उत्त० ९ । सम० ६४ । उवओगपु-वकरण-  
मियालकखणे । नि० चू० प्र० २९ अ ।

**अण्माणभोती** - अप्रमाणभोत्री, द्वानिशाकवलापिन्नाहार-  
भोक्ता । प्रथ० १२५ ।

**अण्मातो** - अप्रमाद प्रमादकर्त्रेणम्, अहिंसाया एकोन  
पचासत्तम नाम । प्रथ० ९९ ।

**अण्ये** - आत्मानम् । अत्पमेव वा । उत्त० ९० ।

**अण्यथाण्य** - अप्रयाणम् । आव० ३८५ ।

**अण्यर** - अल्परत, अण्य-अविद्यमान रतमिति व्रीडित  
मोहनीयकर्मोदयजनितमस्येति, लवमत्तमदि, अत्परजा,  
प्रतनुन्यमानकर्मा । उत्त० ६७ ।

**अण्यरिसाडियं** - अपरिसाडिम्, परिसाडविरहितम् । उत्त०  
६१ ।

**अण्यरिहारि** - अपरिहारिः पार्श्वध्यावसन्नतुशीलसक्त  
यथालम्बरूप । आचा० ३२४ ।

**अण्यलीयमाणा** - अण्यलीयमाना - अनभिपत्ता । आचा०  
२४१ ।

**अण्यलेवा** - अण्यलेवा, निर्लेपा, चतुर्थी पिण्डैपणा । आव०  
५७० । अण्यलेवा - गस्न दिज्जमाणस्स णिप्पावण्णमादिमस्स  
लेवो ण भवति गा । नि० चू० तृ० १२ अ ।

**अण्ययणिजोद्ग** - अपातयजला मेवा । भग० ३०६ ।

**अण्यवृष्टिकाप** - अण्यवृष्टिकाप, अण्य - स्तोकोऽविद्यमानो  
वा वर्षेण वृष्टि - अथ वननं वृष्टिप्रधान कायो-जीवनिकायो  
व्योमनि पतदफ्काय इत्यर्थ, वर्षेणयम्भुक्त बोदक वृष्टि,  
तस्या कायो-राशिर्बृष्टिकाप अण्यधामी वृष्टिनायथात्ववृष्टि  
याय । ठाणा० १४१ ।

**अण्यसत्थाओ** अप्रसस्ता - आश्रेयस्कोऽनदिया । ठाणा० १७५ ।  
**अण्यसदा** - अण्यदन्दा - विगतराटीमहाध्वनय । ठाणा०  
४४२ ।

**अण्यससरक्खं** - अण्यससरम् । आचा० ३३७ ।

**अण्यसागारियं** - अण्यसागारिकम् । आव० १९५ । अण्य-  
यहस्थम् । उत्त० ९० । आव० ३५८ ।

**अण्यसावज्जे** - अण्यसावयम्, अपाप, स्तोत्रपाप वा ।  
आव० ५८६ ।

**अण्यसाहणो** - अण्यसाधन, यलादिरहित । आव० ७१२ ।

**अण्यहाणो** - अप्रधान, लघु । उत्त० १४९ ।

**अण्यहित्ते** - अप्रहृष्टम्, अहसन् । दश० १६६ ।

**अण्या** - आत्मा, अभिहितरूपस्तदाधाररूपो वा देह । उत्त०  
५३ । शरीरम् । प्रज्ञा० ३०५ । अतति सन्तन गच्छति  
शुद्धिसङ्केशात्मपरिणामान्तराणीति । उत्त० ५२ । नि०  
चू० प्र० १५ अ । आत्मा-स्वभावः । ठाणा० ६१ ।

**अण्यद्वय** - आप्यायितः । आव० ७१६ ।

**अण्यउरण** - अण्यउरण, अभिप्रहृष्टिशेष । आव० ८५४ ।

**अण्यणं** - आत्मानम्, अतीतसावययोगकारिणमत्प्राप्तम् ।

अत्राणम् - अतीतसावययोगकारिणविरहितम् । अतनम् - अतीत  
सावययोग सततभवन्नप्रवृत्त निवर्तयामि । आव० ४८६ ।

**अण्यणमेव** - आत्मनेव । उत्त० ३१४ । आत्मान-अनरा-  
त्मानम् । आचा० २८३ ।

**अण्यायक** - अत्पातइ, रोगरहित । आव० ७९३ । अरोगी  
आचा० ३९३ ।

**अण्यहंति** - नन्दिगन्ति । सू० तृ० ४४ आ ।

**अण्यहट्टु** - आहल्य, व्यवस्थाप्य, अपाहल्य वा । सूत्र० २७४ ।

**अण्यहाणया** - नन्दशस्त्रनैव दातव्य । ओष० १०० ।

**अण्यहार** - अण्यधारणा, सामर्थ्यम्, अण्यहारता जत्य त् ।  
नि० चू० तृ० ८२ आ ।

**अण्यहार** - अण्यहार, ऊनोदरताया प्रथमो मेद । दश०  
२७ । ठाणा० १४९ ।

**अण्यहारे** - अण्यहार - तमेव पृष्ठा सूत्रार्थवाचना ददाति ।  
सू० तृ० १३३ आ । अण्यहार, अष्टकवलाहार । ओष० ३८ ।

भग० १२१ । स्तोत्राहार, साधु । भग० २९२ ।

स्तोत्राशी, पठ्याप्रमादिसलेखनाक्रमायात तप कुर्वन् यत्रापि  
पारयेत्ताप्यपमित्यर्थ । आचा० २९० ।

अण्पाहारो-ओ भायरिओ सकियसुतथो त चेव पुच्छिउ  
घायणं देति, तारिस ति मोनु ण गतव्व । नि० चू० नृ०  
१३ आ ।

अण्पाहिति-सन्दिशन्ति । घृ० द्वि० ११४ आ । सन्दिशत ।  
आष० ३०२ ।

अण्पाहिकरणे-अल्पाधिकरणं-निष्कलह । ठाणा० ४१६ ।

अण्पाहितो-सन्दिश । उक्त० २१९ ।

अण्पाहे-तद्गुरोस्तत्प्रवर्तिन्या वा एव सन्दिशति-यथेतामा-  
रमसकाशो वुहत । ओष० ४३ ।

अण्पाहेद-सन्दिशति । दश० १०३ ।

अण्पाहिति-सन्दिश । नि० चू० प्र० २११ आ ।

अण्पाहेत्ता-सन्दिश्य । उक्त० १०३ । आष० ३१० ।

अण्पिच्छे-अत्पे छ, अल्पा-लोफा, अन्वशच्छत्यामाववादि-  
त्वेनाविद्यमाना मा इच्छा-वाच्छा वा यस्तेति । उक्त० १०४ ।  
न्यूनोदरतयाऽऽहारपरित्यागी । दश० २३१ ।

अण्पिणिच्चिया-आत्मिवा । आष० २०७ ।

अण्पित्तण्पित्ते-अर्पित-विशेषित, अनर्पित-अविशेषितम् ।  
ठाणा० ४८१ ।

अण्पियं-अर्पितम्, आहितम् । भग० ८९ ।

अण्पिय-अप्रियम्, अनिष्टम् । भग० ७२ । अर्पित,  
विशेष । विशेष० १३४६ ।

अण्पियणियं-अप्रीतिकम्, कलह । उक्त० ३५५ ।

अण्पियत्ता-अप्रियता, अप्रेमहेतुता । भग० २५३ । प्रज्ञा०  
५०४ ।

अण्पियवहा-अभियवधा -अप्रिय-दुःसकारणम् तन् प्रन्विता ।  
आषा० १२२ ।

अण्पुष्णकण्पिया-अपूर्णकणिका-अन्योन्यस्य सुखं खोपस  
पदं प्रतिपद्यते । व्य० द्वि० ३७८ आ ।

अण्पुष्पायी-अन्योत्पायी, अल्पमुष्पायु लीकमस्तेति ।  
प्रयोगनेऽपि न पुन पुनरुत्थानसील । उक्त० ५८ ।

अण्पुस्तुय-अपौस्तुक्य । भग० १७४ । त्वरारहित ।  
भग० १२३ । अविमनस्क । आषा० ३७९ ।

अण्पे-आप्य, अण प्रभव हृद । भग० १४१ ।

अण्पो-अत्प, सर्वथाऽविद्यमानः । जीवा० १२१ । नारित  
किंवदित्यर्थे । ओष० १७७ । निषयादुपेत रणोहरणे  
सुखविविधा चोत्पत्तया । व० प्र० १५० आ ।

अण्पोद्व-अण्पोदके-भौमान्तरिक्षोदकरहिते । आचा० २८५ ।

अण्पोहं-हृदयेष्टनाद् धनवेष्टनात् । ओष० २१४ ।

अण्पोवही-अण्पोपधि, अनुन्वण्यनुक्ततोकोपधि । दश०  
२८० ।

अण्पोस्ते-अल्पावराये-अथस्तनोपरितनावदयावविप्रुद  
वर्जिते । आचा० २८५ ।

अण्फद्वणया-भाणोचितहसपादादिचेष्टाविक्रता । व्य०  
प्र० २३६ आ ।

अण्फद्यतो-अद्वयते । नि० चू० प्र० १४७ आ ।

अण्फालिया-शिक्षिता-उपालब्धा, उक्ता । आष० ५५७ ।

अण्फालेद-आस्फालयति, हस्तेनाऽऽताडयति-उत्तेनयति ।  
औष० ६४ ।

अण्फिडिऊण-आस्फाल्य । आष० ३४४ ।

अण्फुण्णा-व्याप्ता । वृ० नृ० ७० आ ।

अण्फुण्णे-आपूर्ण-परिपूर्णरीर । उक्त० ४८३ ।

अण्फुण्णो-ध्याप्त । आष० ३५४ ।

अण्फेया-वर्णविशेष । प्रज्ञा० ३२ ।

अण्फोआ-वनस्पतिविशेष । ज० प्र० ४६ ।

अण्फोडेह-आस्फोडयति, करास्फोटं करोति । भग० १७५ ।

अण्फोया-वनस्पतिविशेष । जीवा० २०१ ।

अण्फोच-आस्तीर्ण, वृक्षगुच्छगुल्मलतासदृश । उक्त० ४३८ ।

अण्फकीर्णप्रस्तु-वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३ ।

अण्प्रतिहत-(अण्प्रिह्य) -क वृद्धयपर्वतादिभिररत्नल्लिते  
अभिसवादेके वा । सम० ४ ।

अण्प्रत्याप्यानम्-द्वितीयकपायचतुष्टयम् । आचा० ९१ ।

अण्प्रमाजितचारित्वम्-द्वितीयममाधिस्थानम् । प्रज्ञ०  
१४४ ।

अण्प्रोपित-सामाजिक, सन्निकित । विशेष० १०६५ ।

अण्प्ररा-दक्षिणपश्चिमरतिक्रमवैतस्य दक्षिणस्यां भूतावत  
सिकाराजधान्यधिपानी, शक्रेवेन्द्रस्य द्वितीयाधमद्विधी ।  
जीवा० ३६५ । शकस्याधमद्विधी । व० प्र० ११९ ।

अण्फलयवकी-अण्फलय, अण्फलय । प्रज्ञा० ६४ ।

अण्फव्यता-अण्फमना । नि० चू० प्र० १८३ आ ।

अण्फासुअ-अण्प्रसुक्म्, सन्निवन्निभ्यधि । दश० २३१ ।

सचिसम् । आचा० ३२१ ।

अफासुए-अप्रायुक्तम्, न प्रगता असवः-अमुन्तो यस्मात्-  
तदप्रायुक्तम्-सजीवमित्यर्थः । भग० २२६ ।

अफुडिय-अंफुडितः-राजीरहितः । आव० २३१ ।

अफुणगे-आपूगम् । प्रज्ञा० ५९२ ।

अफुसं-अस्पृश्यम्, अव्यन्धीयम् । भग० १०४ ।

अफुसमाणगतिपरिणामे-अस्पृशद्रतिपरिणामः, अस्पृ-  
शतो गतिपरिणामः । प्रज्ञा० २८९ ।

अफुसमाणगती-अस्पृशद्गतिः, यत्परमाण्वादिकमन्येन पर-  
माण्वादिना सह परस्परसम्बन्धमननुभूय गच्छति सा,  
विहायोगेतेद्वितीयो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।

अबंधव-अवान्धवः, स्वजनरहितः । पद्म० १९ ।

अबंधवो-अवान्धवः, यान्धवरहितः, स्वजनसम्पायकार्या-  
भावात् कर्मनिगदुबद्धः । प्रथ० ११ ।

अयंघिउं-पात्रकवन्धप्रन्थिमदत्त्वा । ओष० १४४ ।

अबंभे-अब्रह्म, अदुशलं कर्म, मैथुनम् । प्रथ० ६५ ।

अबुशलासुगानम्, अब्रह्मगः प्रथमं नाम । प्रथ० ६६ ।

मैथुनम् । आव० ६५३ । वस्तुनिवमलक्षणं । आव० ७६१ ।

अबंभ-अब्रह्मवक्त्रकः, धावकस्य पत्नी प्रतिमा । आव० ६४६ ।

अबंमचारिणो-अब्रह्मचारिणः, मैथुनं आसेवितुं शील धर्मो  
वा येषां ते । उक्त० ३५८ ।

अबद्धिआ-अबद्धिकाः, अबद्धं सरकर्म कंबुकवत्पार्श्वतः ।

स्पृष्टमात्रं जीवं समनुगच्छन्तीत्येवं वदन्ति । औप० १०६ ।

अबद्धिगा-अबद्धिकाः, स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः । आव०

३११ । अबद्धिकं, बद्धं-जीवमदेवैरन्योऽन्याविभागेन सम्पूर्कं

न बद्ध-अबद्धं, अपार्श्वकर्म, तदभ्युपगमविषयमेवामर्त्स्यति ।

उक्त० १५२ ।

अबद्धिता-अबद्धिकाः-स्पृष्टकर्मविपाकप्ररूपकाः । ठाणा० ४१० ।

अबला-अजलाः, शारीर्याधिकिकलः । जं० प्र० २३९ ।

अबले-अबलः, शारीर्याधिकिरहितः । भग० ३०३ ।

अबहुस्तुए-आपधुताय-अवगाढहतीकशात्राय । सूर्य०

२९६ ।

अबहुस्तुतो-लेग आचारपगप्यो ण प्रज्ञातितो । नि० च०

८० २५ अ ।

अबहोड-अबहोटकः, वन्द्यविशेषः । उक्त० ११३ ।

अबंध-अन्तरालम् । विशे० ३७६ ।

अवाधाप-अवाधया अपान्तरालः । स्ये० २६२ ।

अवाला-अप्राधिक्यर्थः । नि० च० प्र० १७३ आ ।

अवाहा-अवाधा, कर्मणो बन्धोदययोरन्तरम् । भग० २५५ ।

अन्तरं, अन्तरालवाप्रतिपातरूपा । अव्यवधानेनान्तरम् ।

जं० प्र० ४३५ । दूर्वातिवेनानाकमभमपात्ररालम् । जं० प्र०

६४ । अन्तरं-व्यवधानम् । जं० प्र० ६५ । अपान्तरालम् ।

जीवा० १४, २०४ । अन्तरालवाव्यापातरूपा । जीवा०

३०२ । अन्तरालम् । ओप० ९० । आव० ४६ । विशे०

३७६ । अन्तरं । जं० प्र० ४३५ ।

अवाहाप-अवाधया, व्यवधानेन कृत्वा । सम० २१ ।

अवाधयां कृत्वा, अपान्तरालेषु मुक्त्वा । जीवा० ३२२ ।

अवाहिरा-अवाधाः, न वाप्रा इति । आव० ४५४ ।

अवितिञ्जभो-अद्वितीयः, सहायो न भवति । प्रथ० १२१ ।

अबुद्धा अबुद्धजागरियं-अबुद्धाः-कैवलज्ञानाभावेन यथा-

संभवं शेषज्ञानसद्भावाच्च बुद्धसदशास्ते चाबुद्धानां-छद्मस्य-

ज्ञानवतां या जागरिका । भग० ५५४ ।

अबुहजण-अबुधजनः, अविपश्चिञ्जः-परिजनो यस्यां सः,

अकल्याणमिन्द्रपरिजनः । दश० ८६ ।

अबोट-अनाक्रमणीय । ओष० ९२ ।

अबोहि-अबोधिः, मिथ्यात्वकार्यम् । आव० ७६२ । मिथ्या-

त्वसंहतिः । दश० २४४ ।

अबोहिअ-अबोधिकम्, मिथ्यात्वफलम् । दश० २०५ ।

अबोहिकलुसं-अबोधिकलुपः, मिथ्यादष्टिः । दश० १५८ ।

अव्यहृलकाण्डम्-रत्नप्रभाया तृतीयकाण्डः । सम० ८८ ।

अप्युयं-द्वितीयसत्ताहर्गर्भावसा ( तं० )

अर्धं-अर्धम्, सामान्याकारेण प्रतीयम् । जीवा० २८३ ।

अर्धंमिगलुय-स्नेहाभ्युत्थारः । ओप० ७४ ।

अर्धंमिओ-अर्धमन्त्रितः । आव० ११७ ।

अर्धंमेति-धेवेग अर्धमेगं । नि० च० प्र० ११६ आ ।

अर्धंमो-धेवेण । नि० च० प्र० १८८ अ ।

अर्धंमतरं-लोकेऽन्यैरनुगतम् । दश० च० १४ ।

अर्धंमतरकरणं-द्रयोः साधोः गच्छन्नेतौभूतयोरभ्यन्तरे

बुलादिकार्यनिमित्तं परस्परमुद्रावतोरतृतीयस्थापनुभूयोः बहिः-

करणं । व्यं० प्र० २३८ अ ।

अर्धंमतरगे-अभ्यन्तरम्-अभ्यन्तः मध्ये भवं । ठाणा० ५५ ।

अर्धंमतरगे-पौगण्ड-अवधारणविनोदारिकेण वा शरिरेण ये

क्षेत्रभेदाः अवगाढास्तैश्चैव वे सन्त्ये तैस्त्वसंयोगः, विभूपा-



अभिन्तरसंबुद्धा-सवनाभिधेतोवभाए आगिदए अतो आउ-  
वति बाहिरओ सणियट्टइ । उत० ६०५ ।

अभिन्तरिया-अभ्यन्तरिका, नगरविशेष । आप० २०० ।

अभिभिड्डऊण-आस्फाल्य । उत० १४५ ।

अभ्भुक्खेइ-अभ्युधति, अभिसुयं सिधति । जीवा० २५६ ।

अभ्युक्षति, नियति, स्तपयति । जं० प्र० १९२ ।

अभ्भुक्ख्वेति-अभ्युक्षन्ति सिधन्ति । जं० प्र० २७५ ।

अभ्भुग्गए-अभ्युद्गतः, आभिसुय्येन सर्वतो विनिर्गत् ।  
स्यं० २६३ ।

अभ्भुग्गओ-अभ्युद्गतः, आभिसुय्येन सर्वतो गतः । जीवा०  
१७५ । अभ्रोद्गत-बद्धा आकाशे उद्गता प्रबलतया सर्व-  
तरित्येक् प्रवृत्ता । जं० प्र० २९७ ।

अभ्भुग्गय-अभ्युद्गतः, आभिसुय्येन सर्वतो विनिर्गत् । प्रज्ञा०  
९९ । अभिसुयसुद्गतः, अभिमन्त्रणे मन्त्राक् उद्गतः । जीवा०  
२०५ । सजातः । सम० १३९ ।

अभ्भुग्गयमूसिय-अभ्युद्गततोच्छ्रितः, अभ्युद्गतमभ्रोद्गतं  
वा यथाभवत्येवमुच्छ्रित, अथवा मकारस्यागमिकत्वाद्भ्यु-  
द्गतथासावुच्छ्रितेत्यभ्युद्गततोच्छ्रितः, अत्यर्थमुक्त्वा इत्यर्थः ।  
भग० १४५ ।

अभ्भुग्गया-अभ्युद्गता, आभिसुय्येन सर्वतो विनिर्गता ।  
जीवा० ३७९ । अभिमभावे मनुगुहता । जं० प्र० ५० ।  
अभ्युद्गता, अतिरमणीयतया द्रष्टृणा प्रत्यभिसुयसुत्-प्राबल्येन  
स्थिता । जीवा० २२६ ।

अभ्भुग्गयाओ-अभ्युद्गतान्यभ्रोद्गतानि बोधानि । भग० ६७२ ।

अभ्भुग्गयुच्छित्तपभासियं-अभ्युद्गतोच्छ्रितप्रभावितं, अ-  
भ्युद्गता-आभिसुय्येन सर्वतो विनिर्गता उत्सृता-प्रबलतया  
सर्वसु विद्भु प्रवृत्ता या प्रभा तथा सितम् । जीवा० ३७९ ।

अभ्भुज्जयं-अभ्युज्जतमरणेण अभ्युज्जयविहारेण वा । नि०  
चू० तू० ३० अ ।

अभ्भुज्जया-अभ्युपया, सुविहिता । अनुग० ३ ।

अभ्भुज्जयविहारो जिग्गप्पादि । नि० चू० प्र० २६३ आ ।

अभ्भुज्जणं - अभ्युत्थानम्, आगच्छति गच्छति च दृष्टे  
शुभावसनमोचनम् । उत० १७ । ससम्भ्रममासनमोचनम् ।  
उत० १२४ । अमीत्याभिसुय्येनेत्थाने-उत्थमनम् । उत० ५३५ ।  
विनयाहृत्य दर्शनादेवासनत्वजनं । ठाणा० ४०८ । आसन-  
त्याग । मम० ९५ । गौरवार्हदर्शने विष्टरत्त्याग । भग०

६३७ । जओ सीगइ तओ चेइ वायस्यं । दस० ३० ।  
आगतस्याभिसुय्यथानम् । दस० २४० ।

अभ्भुज्जिञ्ज-सिंहामनाद्भ्युत्तिष्ठेगुिति । ठाणा० ११७ ।

अभ्भुट्टिओ-अभ्युट्टिएति सामाह्यकडो पडिक्कंता मनारो-  
पितः । नि० चू० तू० ८४ आ ।

अभ्भुट्टितो-वैयाहृत्यकरणोद्यतः । नि० चू० प्र० ३३४ अ ।

अभ्भुट्टित्तए-अभ्युत्थानम्-अभ्युपगन्तुम् । ठाणा० ५७ ।

अभ्भुट्टियं-अभ्युत्थितम्-अभ्युद्यते । उत० ३०७ । अभ्यु-  
त्थापन-बंदनकरतीच्छनकारिकं । व्य० प्र० १७२ आ ।  
अभ्युत्थित-उद्यतः । भोप० १८० ।

अभ्भुट्टेमि-अग्नीवरोमि । भग० १२१ ।

अभ्भुत्तरोमा-प्रतीतरोमाः । नि० चू० दि० ६१ अ ।

अभ्भुदए-अद्भुतवान्, आश्चर्यहान् । उत० ३१७ ।

अभ्भुदओ-उत्सवविशेषः । चू० दि० १९८ अ ।

अभ्भुअय-अभ्युत्थत्, अभिसुगमुत्थत् । जीवा० २७५ ।

अभ्भुअगमिया-आभ्युपगमिणी, या स्वयमभ्युपगम्य वेत्ते  
(वेदना) । भग० ४९७ ।

अभ्भुअगमे-स्वेच्छया अभ्युपगम्य पादस्था क्रियते । चू०-  
प्र० ३१ आ ।

अभ्भुअगमो-अभ्युपगम, स्वयमग्नीहार । प्रज्ञा० ५७७ ।  
भग० ६८३ ।

अभ्भे-आभिन्वात्, आगिच्छन्वात् । आचा० ३८ ।

अभ्भोअगमिया - आभ्युपगमिणी-केंतोडुवनानापनादिभिः  
शरीरपीडा । प्रज्ञा० ५५७ । शिरोलोचमद्भचर्यादिनामभ्युप-  
गमे भवा (वेदना) । ठाणा० २४७ ।

अभ्रल्ल-मैथुनम् । आचा० ३३१ ।

अभ्रओ-अभयः । आव० ९५ । अभयपुरमारोऽष्टमकारी ।  
अन्त० ९ । व्यक्रियेण । आव० ३६८ । उदाहरणेने  
अभयपुरमारः । दस० ५३ । नामविशेषः । चू० प्र० ४६ आ ।

अभ्रओ सच्चस्सवि - अभयं सर्वस्यापि प्राणिगणस्याभा-  
यम् । अहिमाया द्विपशादात्म नाम । प्रज्ञा० ९९ ।

अभ्रकार्थः-समणः, क्षण । व्य० प्र० १८१ आ ।

अभ्रगं-अभयम्, अपीडितम् । आव० ७७३ ।

अभ्रग्गजोगो-अभययोगः । आव० ७९३ ।

अभग्गसेण-अभगनसेनः, विजयस्य चौरसेनापतेः स्कन्द-  
श्रीभार्यायाः पुत्रः । विपा० ५७ । विजयस्य चौरसेनापतेः  
पुत्रः । विपा० ६० । अभगनसेन, विपाकधुताध्ययनम् ।  
ठाणा० ५०७ ।

अभग्गो-अभगः, अभगसेनः, विजयाभिपचौरसेनापति-  
पुत्रः, अन्तर्दृष्टासु तृतीयाध्ययनम् । विपा० ३५ ।

अभज्जियं-अभगनाम्-अमर्दितामविराधिताम् । आचा० ३२३ ।

अभडप्पवेसं-अभट्टवेसाम्, कौटुम्बिकगेहेषु राजवर्णवतां  
भयानामवियमानप्रवेगम् । विपा० ६३ ।

अभत्तच्छन्दो-अभक्तच्छन्दः, भक्तास्त्रिरुपः । उक्त० ७८ ।

अभत्तद्धं-अभक्तार्थम्, उपवासः । आच० ८५२ ।

अभत्तद्धो-अभक्तार्थं, न भक्तार्थं, उपवासः । आच० ८५३ ।

अभय-अभयः, श्रेयिकपुत्रनाम । सूत्र० १०३ । दानविशेषः ।

प्रश्न० १३५ । अभयः, संयमः । आचा० ६२ । कुमार-

विशेषः । नि० चू० प्र० ७ आ, नि० चू० तू० ३७ अ ।

वृथाधिष्ठापकव्यंतरदर्शा । व्य० प्र० १७ अ ।

अभयकटा-मञ्जिनिवृक्षाश्रितिका । सम० १५१ ।

अभयकरो-अभयकरः । आच० ४९९ ।

अभयकुमारः-प्रयोतस्यापकारकः । मूत्र० ३१३ । विशेष-

नाम । विशेषे ६१२ । औत्पातिकीबुद्धेर्दृष्टतः । वृ० प्र० १८६ अ ।

आर्द्रकुमाराय प्रतिमाश्रयः । सूत्र० ३८५ । प्रयोतयगिक्र-

निर्धार्मिकवचनया ववितः । सूत्र० ३२९ । कालतीकरिकमुत्त-

मुलसखा । सूत्र० १७८ । मवरपूर्विकैर्हितार्थसिद्धौ दृष्टान्तः ।

जं० प्र० १९७ । रोहिणीयस्य लौकिकसङ्गमपरिनिर्वा-

पण । व्य० प्र० २०९ आ ।

अभयकुमारो-द्रष्टातविशेषः । नि० चू० प्र० १९४ अ ।

अभयद्वय - अभयदयः, प्राणापहरणरहितेऽप्युपसर्गकारिणि

प्राणिनि यो न भयं द्यते ददाति, अभया सर्वप्राणिभय-

परिहारवती वा दया-अनुकम्पा यस्य सः । भग०

७ । अभयं - विशिष्टमात्मनः स्वात्सर्वं निःश्रेयसधर्म-

भूमिकानिबन्धनभूता परमा प्रतिरितिभावः तद्भयं ददाति ।

जीवा० २५५ ।

अभयद्वयेणं-अभयदयः, न भयं द्यते प्राणापहरणरहितो-

पसर्गकारिण्यपि प्राणिनि ददातीत्अभयदयः । सम० ४ ।

अभया वा-सर्वप्राणिभयपरिहारवती दया-पृणाय यस्यामा-

वभयदयः । सम० ४ ।

अभयसेण-अभयसेनः, संवेगोदाहरणे वारप्रकपुरे राजा ।  
आच० ७०९ ।

अभयसेणो-वारतपुरं नगरं, तत्थ अभयसेणो राजा । नि०

चू० तू० ५४ आ । वारप्रकपुरराजा । वृ० द्वि० २४९ आ ।

वभयसेन-छट्टितदोषदृष्टान्ते राजा । विं० १६९ ।

वभयसेना-वापीनाम । जं० प्र० ३७० ।

अभया-हरीतकी । आचा० १३० । नि० चू० द्वि०

१४१ आ ।

अभये-अभयः, अनुत्तरोपातिरुद्गानां प्रथमवर्गस्य दश-

साध्ययनम् । अनुत्त० ११ ।

अमयसिद्धिय-अभक्तसिद्धिकः, अमव्यः । जीवा० ४४९ ।

ठाणा० ३० ।

अभविय-अभव्यः-अयोग्यः । उक्त० ७१३ ।

अभाग-अभाग्यः, अशोभनः । आच० ७०८ ।

अभावं - ननः वृत्तायामपि दर्शनादशोभनं मार्वं-सर्वतो

निष्काशनलक्षणं पर्यायम् । उक्त० ४६ ।

अभावित्रा-अगतार्थाः । वृ० द्वि० १६६ आ ।

अभावित्रो-अभावितः । आच० १०१ । अभावित -अपरि-

गतजिनवचनस्तस्य निर्लेपनाभावे मा भूद् विपरिणामः ।

वृ० प्र० २७२ अ ।

अभाविते-असंमर्षपात् प्राप्तसंसर्गं वा । ठाणा० ४८१ ।

अभावितो-वृत्ताभासः । नि० चू० तू० १३१ आ ।

अभावुक-नललम्बः । औप २२३ ।

अभावो-असम्भवं । दश० २९ । विनाशः । वृ० द्वि० ७२ आ ।

अभासो-स्वदेगभाषाया अज्ञं । वृ० द्वि० १९ आ ।

अभि-पृथग् । वृ० द्वि० १९५ अ ।

अभिर्ह-अभिजित्, नक्षत्रविशेषः । सूत्र्य० ११४ । ठाणा० ७७

अभिओय-अभियोगः, आत्ताप्रदानलक्षणः । दश० २४९ ।

विबुर्वेगा । भग० १९१ । बलारकारः । उक्त० ३६५ ।

अभिओगकया-अभियोगकृता, या वशीकरणचूर्णमन्त्रयोः

सयोजिता सा । औप० १९३ ।

अभिओगपावर्णं - अभियोगपावर्णं, दृष्टाद्व्यापारवर्तनम् ।

प्रश्न० ७२ ।

अभिओगिओ-आभियोगिकः । आच० १२४ ।

अभिओगे-अभियोगः, प्रेयक्षमणिं व्यापार्यमाणवम् जीवा०

२४३ ।

अभिभोगो-अभियोगः, पारवश्यम् । विष्णो ५४ । गर्वः ।  
आष ७७२ । वृत्तीकरणचूर्णो मन्त्रथ । ओष १९३ ।  
अभिभोगो-अभियोगः, अभिमुखं कर्मम् युज्यते ध्यापा-  
र्यत इति वा, तस्य भावः कर्म्यं वा । जीवा २८० ।  
अभिकंख-अभिकाक्ष्य-उद्दिश्य । आचा २८१ । पर्या  
लोच्य । आचा ३८८ ।

अभिकंखमाणो-अभिकाक्ष्य, मायारहितः । दश २५२ ।

अभिकंता - अभिकान्ता-शय्यायास्तृतीयप्रकारः । चू० प्र०  
९३ अ ।

अभिकंठ-अभिकान्तम्, अभिक्रमणम् । प्रज्ञापकं, प्रत्यभि-  
मुखं क्रमणम् । दश १४१ ।

अभिक्रमंति-अभिलमंति । दश ७० ६२ ।

अभिक्रममाणे-अभिक्रमन्-गच्छन् । आचा २१७ ।

अभिक्रमस्तेषा-पुगो पुणो गमनं । नि० चू० प्र० ३९ आ ।

अभिक्रम-अभिक्षे-अनवरतं । आष १९५ ।

अभिक्रम-अभिक्षे, अनवरतम् । भग २२, ४१ ।

आचा ३६५ । सूत्र ११५ । उत ३४३, २१४ ।

आष ४०७ । अनुमन्यम् । भग ४३ । पुनः पुनः ।

उत २४४, ४२८, ठाणा ३०१ ।

अभिक्रमणं अभिक्रमणं ओहारइत्ता - शयलद्रोप ।

सम ३७ ।

अभिक्रमणं ऽभिक्रममोहारी-अभीक्ष्णमभीक्ष्णमवधारकः,  
यो ऽभीक्ष्णमवधारिणीं भाषां भाषते, यथा दासस्त्वं चौरौ  
वेति, यदा शङ्कितं तमिःशङ्कितं भगति । एकादशममगमाधि-  
स्थानम् । आष ६५३, ६५४ ।

अभिक्रमच्छति-अभिक्रमच्छित, समीपमभिक्रमच्छित । भग ०  
१३७ ।

अभिक्रता-अभिक्रताः, अभिक्रतजीवाजीवाः । आष ३०४ ।

अभिक्रम-अभिक्रमः, ज्ञानम् । उत ५९२ । बोधिलभः ।

सम १२० । मैथुनासेवना, गमने च । आष ८२५ ।

अभिक्रम्य, विज्ञाय, आसेव्यः । दश २५८ ।

अभिक्रमकुसले-अभिक्रमकुसलः, लोकशार्पूणकादिप्रतिपत्ति-  
दशः । दश २५५ ।

अभिक्रमणं - अभिक्रमनं, सर्वं शास्त्रान्मण्डलादभ्यन्तरप्रवेग-  
नम् । जीवा ३४५ । सूर्य ० २४३ ।

अभिक्रमरई - अभिक्रमरश्चिः-यस्य धृतमानमर्थो दृष्ट-म  
भवति । प्रज्ञा ५६ । अभिक्रमो-ज्ञाने ततो रश्चिर्मण म,  
येन ह्याचारादिकं धृतमर्थोऽभिगतं भवति सः । ठाणा ०  
५०४ । अभिक्रमरश्चिः-अभिक्रमो-ज्ञानं तेन रश्चिर्मण सः ।  
उत ५६३ ।

अभिक्रमसहे-अभिक्रमसहेः-यत्र कारणे आर्णव्ने प्रवि-  
द्यते । ओष १५६ ।

अभिक्रममहो-मम्मदित्री-गिहीतापुष्यओ । नि० चू० प्र०  
१९९ आ ।

अभिक्रम - अभिक्रमः, विस्तरशोः । भग ० १०० ।  
प्रतिपत्तिः । भग ० १३७ ।

अभिक्रमो-अभिक्रमः, यथावशिष्यतपदार्थगिरिच्छेदः । आष ०  
८३८ । साधून्मागयाणं जा विष्णवपटिवत्तो मा । दश ०  
७० १४१ ।

अभिक्रमया-जीवाजीवादिपदाभोभिक्रमोपेता थाविकेव्यर्षः । चू०  
चू० १३९ आ ।

अभिक्रमिहियट्ट - अभिक्रमिहियट्टम्, प्रक्षिन्नाप्यभिक्रमनार्त्तम् ।  
भग ० १३५ ।

अभिक्रमह - सेवते । आचा ११४ । अभिक्रमहन्ते-सेवन्ते ।  
आचा १३३ ।

अभिक्रमिज्ज - अभिक्रम्य, आलोच्य । दश ० २१६ । अर्त्तोऽप्य,  
तदभिमुखीभूय । ठाणा ० ५६ ।

अभिक्रमह - अभिक्रमः, गुरुवियोगकरणाभिमन्धिः । दश ०  
२४१ ।

अभिक्रमिहियमिच्छादं सण्यत्तिया - अभिक्रमिहिय्या-  
दक्षिणप्रत्ययिनी, मिष्यादक्षिणप्रत्ययिनीक्रियाया द्वितीयेभेदः ।  
आष ० ६९२ ।

अभिक्रमिहिया-अभिक्रमिहिया, प्रतिनियतायावधारणम् । प्रज्ञा ०  
२५६ । अभिक्रमिहिका-वस्त्राणि वा पात्राणि वा पृष्ठीयाणि अपरेण  
वा येन प्रयोजनमिति प्रतिपन्नमिहियः । चू० प्र० ९९ आ ।

अभिक्रमहो-अभिक्रमः-प्रवाह्यान्विशेषः । आष ० ८५३ ।  
कुमतपरिमहः । ठाणा ० ४९ । निममः । भग ० ६२ ।

अभिक्रमिहिकः-मिष्यादक्षिणविशेषः । ठाणा ० २७ ।

अभिक्रमिहियमाणस्स-अभिक्रमिहियमाणस्स-वेगेन गच्छतः ।  
जं प्र० ३७ । जीवा १९३ ।

अभिघातो-उच्यते वा प्रतिजति । नि० ३०० प्र० १०६ आ ।

अभिचन्दे-अस्वामवसर्पिण्यां चतुर्थबुलकरः ३ सम० १०३,

१५५ । अभिचन्द्रः, अन्तःकुक्ष्यात् द्वितीयवर्गस्याष्टमा-

ध्ययनम् । अन्त० ३ । अभिचन्द्रः-सुहृत्विशेषः । सूर्य०

१४६ । जं० प्र० ४९१ । बुलकरविशेषः । आष० १११ ।

जं० प्र० १३३ । अभिचन्द्रः-अमुष्यामवसर्पिण्यां चतुर्थ-

बुलकरः । टाणा० ३६८ ।

अभिचारकमन्त्रविद्यादि - अशिवपुराणादी तद्विज्ञान-

नार्थं । टाणा० १६४ ।

अभिचारकं-वारकता । नि० चू० प्र० २७४ आ ।

अभिचारकं-वलीकरणं । नि० चू० प्र० १०१ आ ।

अभिजाय-अभिजातः, शास्त्रीयद्वादशादिवसनम् । जं० प्र०

४९० । विनीतः । उत० १८८ । बुलीनः । जं० प्र० १८२ ।

अभिजाओ-सिद्धः । नू० द्वि० २५५ आ ।

अभिजाजह-अभिजातति, विवेचयति । आचा० २०२ ।

अभिजातं-वाच्यविज्ञानविशेषः । सम० ६३ ।

अभिजाति-बुलीनता । उत० ३४७ ।

अभिजातिषु - अभिजातिग, अभिजाति-बुलीनता ता

गच्छति-उत्क्षिप्तभारनिर्वाहणदिनेति । उत० ३४७ ।

अभिजाते-अभिजातः, शास्त्रीयैकादशादिवसनम् । सूर्य०

१०७ ।

अभिजाय-अभिजातम्-बुलीनम् । भग० ४६९ ।

अभिजायह - अभिजायते, उपभोग्यतयाऽऽभिमुख्येनोत्प-

द्यते । उत० १८७ ।

अभिजित्-वसुधैवकुटुम्बकः । प्रश्न० ९५ । उदायवपुत्र ।

टाणा० ४३१ ।

अभिजुंजति-अभियुषते, योजयन्ति । प्रश्न० २६ ।

अभिजुंजित्तप - अभियुक्तुम्, विद्यादियागर्ध्वतत्त्वदनुपवे-

देन व्यापारयितुम् । भग० १९१ ।

अभिजुंजिया-अभियुज्य, व्यापार्य, स्मारयित्वा । सू०

१३९ । मोक्षयित्वा, अभिविधेयं प्रादयित्वा, व्यापारयित्वा ।

आषा० १३३ । आश्रित्य-वलीकृतः । टाणा० १०६ ।

सम्बन्धमुपगतं, प्रतिरुद्धं । टाणा० १७७ ।

अभिजोहति - निरुद्धंति, निर्मूलंयन्ति । नू० प्र०

२८१ म ।

अभिजोययति-वरीवृत्ति । नू० द्वि० २५५ आ ।

अभिजुं-अत्रेय । उत० २०७ ।

अभिजा - अभिघानमभियेयस्य । सम० ५१ । लोभः,

अभिघानं वा । प्रश्न० ९७ ।

अभिज्जा-अभिघ्या-अहताभिविधेयं, विपत्तलक्षणः । भग०

५७३ । अभिघ्या, अभिघ्यानम्, अभिघ्याय । प्रज्ञा०

५०४ ।

अभिज्जिअ-अभिघ्यातम्, इष्टम् । दश० ३७७ ।

अभिज्जियत्ता-अभिघ्यितत्ता, भिष्या-लोभः सा सञ्जाता

यत्र सो भिद्यते, न भिद्यतेऽभिघ्यितस्तद्भावस्तथा । भग०

२५३ । अभिघ्यितता, अभिघ्यानमभिघ्या-अभिलाष, सा

सञ्जाताऽस्मिन् तस्य भावः । प्रज्ञा० ५०४ । अभिघ्येयता-

अव्ययत्वं, अष्टमत्वं । भग० ३३ ।

अभिजाण-अभिनयः, चतुर्विंशतिवर्षावधिकस्यैषाकार्यार्थमेतैः

समुद्दितासमुद्दिताऽभिनेतव्यस्तुभावप्रकटनम् । जं० प्र०

४१४ ।

अभिजण्डो - अभिजन्दनः, अभिनयते देवेन्द्रादिरिति,

चतुर्विंशति, गार्भरिपृथिवीस्यैषा चोऽभिनन्दितवामिति ।

आष० ५०३ ।

अभिजण्डि-अभिनन्दितः-लोकोत्तरप्रथमामनाम । जं० प्र०

४९० ।

अभिजण्डियाहभू-अभिनन्दितवान् । आष० ५०३ ।

अभिजण्डे-अभिनन्द, लोकोत्तरप्रथमनाम । सूर्य० १५३ ।

अभिणिक्खत्ते-अभिनियन्तः । आष० ११७ ।

अभिणियोहे-अभिनियोग, अधाभिमुखो नियतः प्रतिनियत-

स्वरूपो योगो-योगविशेष, अभियुक्तोऽस्माद् अभिनयं वेति ।

तदावर्णनमैश्वरीपठम् । प्रज्ञा० ५२६ ।

अभिणिवृत्तानि - अभिनियन्तानां, धृमगमनम् । सू०

३५४ ।

अभिणिवृत्तं - अभिनियते, विशिष्टविशिष्टतराण्यवसायभाव-

तोऽतिनीनानुमापन्नतरया व्यवस्थितम् । प्रज्ञा० ४०३ ।

अभिणिवेत्ते-अभिनियेत, विपत्तलक्षणः । जीव० १०६ ।

अभिणियत्तिहा-अभिनियार्थं, गमार्थम् । सू० ३७५ ।

अभिघणायं - अभिघानं, विदम् । उत० १४९ । आष०

३४४ ।

अभिघणाय-अभिघानम्, अभिनयम् । भग० १९३ ।

अभिताचर्यंति-अभितापयन्ति, अपनयन्ति । सूत्र० १३३ ।  
 अभितुर-अभि-आभिमुख्येन त्वरस्व-श्रीप्रो मथ । उच० ३४० ।  
 अभितोसहजा-अभितोपयति, येन वा तेन वा यापयति ।  
 दश० ३५३ ।  
 अभितुरगा-अभिदुर्गा, आभिमुख्येन दुर्गा-दु खोत्पादिका ।  
 सूत्र० १२९ ।  
 अभिद्वं-अभिदवन्ति । आचा० ४२९ ।  
 अभिद्वय-अभिद्वृतः, सर्वात्मना ध्यातः । जीवा० १३० ।  
 अभिधानं-चचनपर्यायः । आच० २९ ।  
 अभिधारण-अभिधारणे-यायात् । दश० १८६ । किमेते  
 उपसर्गा ममाचलिनचेतसः कर्तुमलमिति चिन्तयेत् ।  
 उच० १०९ । अभिधारयेयु-अन्तर्भावितेव । उच० १०९ ।  
 अभिधारणा - धारणा, विचारणा, संकल्पः । दश० द्वि०  
 ३७३ आ ।  
 अभिधारयामो-गर्हणानुद्वेषोद्घट्टयामः । सूत्र० ३९२ ।  
 अभिधारमाणे-अभिस्धारयत्-गच्छतः । आचा० ३२९ ।  
 अभिधास्ये-श्रीर्तयिव्ये । आचा० ४ ।  
 अभिनंदिज्ञा-अभिनन्देत्, अनुमन्येत । उच० १०० ।  
 अभिनयिका-नृत्यकलासेदः । सम० ८४ ।  
 अभिनव-विशिष्टवर्णादियुगोपेत । जीवा० १२१ ।  
 अभिनवम्-नवम् । सूर्य० १८ ।  
 अभिनिस्त्वमणं-अभिनिष्कमणं-श्रीसा । आचा० ४२२ ।  
 अभिनिस्त्वमति-अभिनिष्कामति-धर्माभिमुख्येन गृहस्थ-  
 पर्याय निर्गच्छति । उच० ३०६ ।  
 अभिनिचरिका-आभिमुख्येन नियता चरिका मन्त्रोपदेशेन  
 वह्निर्जिह्वादिषु दुर्बलानामाप्यायनिमित्तं पूर्वोक्तफले समु-  
 त्कृष्टं समुदान लब्धु ममानं । दश० द्वि० ६९ अ ।  
 अभिनिद्वारं-अनेकद्वारम् । सू० द्वि० १२ आ ।  
 अभिनिबोध-अर्थोभिसुखोऽतिपर्ययरूपत्वाभियतोऽसंशयरूप-  
 त्वाद् बोधः-सवेदनम् । ठाणा० ३४७ ।  
 अभिनिपयाव-अभिनिपजा-अभि-प्रत्येकं नियता-विविक्ता  
 प्रजा पुत्री । दश० द्वि० ३३९ अ ।  
 अभिनिवर्त्तनम्-क्रिया । उच० ५८१ ।  
 अभिनिविष्टा-अभिनिवृत्ता । आच० २२० ।  
 अभिनिचिद्वं-अभिनिचिद्वम् । तीवाजुभाषतया निचिद्वम् ।  
 भय० ९० ।

अभिनिविष्टा-अभि-अभिविधिना निविष्टानि-सर्वाण्यपि  
 जीवे लमानि । भग० ५६९ ।  
 अभिनिवुद्धो-अभिनिवृत्तार्थः-शरीरसंतापद्वितः । आचा०  
 २८१ ।  
 अभिनिवेशकः-मिथ्यात्वविशेषः । ठाणा० २७ ।  
 अभिनिवेशय-अभिनिवेशयेत्, वृथात् । दश० २३२ ।  
 अभिनिवेशं-अभिनिवेशः । आच० ३११ । आमदः ।  
 भय० ४८९ ।  
 अभिनिव्वट्टिचा-अभिनिवर्त्य, विधाय । भग० २२४ ।  
 अभिनिव्वगड-विष्वक् अपवरकः । दश० द्वि० १९० आ ।  
 अभिनिव्वगडा-अभिनिव्वगृह्यत-पृथग्भिन्नद्वारायां वसती ।  
 दश० प्र० ४० आ ।  
 अभिनिव्वगडाव-अभि-प्रत्येकं नियतो वगडः-परिक्षेपो  
 यसां सा अभिनिव्वगडा । दश० द्वि० १८९ आ ।  
 अभिनिस्त्रिजा-अभिनिपया-रात्रिस्त्रिधायावभूमिः, अभिनैपे-  
 धिनी-तामान्यस्त्रिधायावभूमिः । दश० प्र० १२७ आ ।  
 अभिनिस्त्रिदो-अभिनिस्त्रिदः, अभिमुखं-वह्निर्भागामिमुखं  
 निस्त्रिदः । जीवा० ३६९, २०६ ।  
 अभिनिस्त्रिदति-अभिनि-ध्रवति, जिघ्रतामभिमुखं निस्त्रि-  
 दति । जीवा० १९२ ।  
 अभिनं-अव्यपगतजीवं । सू० प्र० ३५ आ ।  
 अभिन्नाय-अभिनाय-ज्ञात्वा । आचा० ३०४ ।  
 अभिन्नायो-अभिनायः, बुद्धिः । आच० ४१४ ।  
 अभिन्नेय-अभिन्नेतः, कामयत् । दश० १९५ । अभिन्नेत-  
 अभिन्नेतः । उच० २५४ ।  
 अभिभव-अभिभवकायोत्सर्ग - उपसर्गाभियोजने द्वितीयः ।  
 आच० ७७१ । विशेषे ६१२ ।  
 अभिभूतः-अभुक्तः । आच० ५८९ । प्रारब्धः, अपराद्धो  
 यः । प्रथ० ६० ।  
 अभिभूय-तिरस्त्रय । आचा० ३०८ । मर्षया तत्सामर्थ्य-  
 मुपहस्य । उच० ८१ । पराजितः । सूत्र० १४५ । अभि-  
 व्याज्य । सूत्र० २८५ ।  
 अभिमरय-अभिमरकः । आच० ८१९ ।  
 अभिमरा-अभिमरा । उच० १६२ । आच० ३१६ ।  
 अभिमुखं-अभिमुखं । दश० प्र० ९९ अ ।

अभिमुखनामगोत्रः - ( अभिमुहनामगोत्रं ), नोआगतो  
द्रव्यद्रुमस्य तृतीयः प्रक्रमः । दश० १७ । अभिमुखे-संमुखे  
उपन्योक्तार्थानां समवायान्तर्गृहणानन्तरादितया नामगोत्रे  
इन्द्रसम्बन्धिनी वस्य स तथा । टाणा० १०३ ।

अभिमुखनामगोत्रा - ये पुनर्बादरापर्याप्ततेजःकायिकापु-  
नर्मिगोत्राणि पूर्वभवमवचनानन्तरं साक्षाद्देवयन्ते तेषुभि-  
मुखनामगोत्राः । प्रज्ञा० ७६ ।

अभिमुह-पञ्चजामिमुहो, संपट्टितो । नि० च० प्र०  
१०४ अ ।

अभिमुहो-अभिमुहः, उचुकः । दश० २४५ । अभि-भग-  
वन्तं प्रति मुहमस्य । सूर्य० ६ ।

अभियोग-आज्ञा । टाणा० ५२१ । ग्रहणप्रवणः, अर्षवला-  
ऽऽयातत्वेन तन्नान्दरीचकौद्रवः । विज्ञे० ५३ । कामर्षं  
कुपार्त्तः । वृ० प्र० १९ अ ।

अभियोग-अभियोग्यः, अभियोगार्ह आदेशकारी देवः ।  
प्रश्न० १२१ ।

अभियोगो-वशीकरणं । व्य० द्वि० ३१५ अ ।

अभियोजनम् - विद्यामन्त्रादिभिः परेषां वशीकरणादि ।  
प्रज्ञा० ४०६ ।

अभिरर्ह-अभिरति, अभिमुद्येन रतिः । भाव० ४५१ ।

अभिरामयति-अभिरामयति, अभिमुद्येन विनयादिपु  
शुभते । दश० २५६ ।

अभिरू-मायमहामस्य सप्तमदुर्छेनानाम् । टाणा० ३९३ ।

अभिरूहण-स्वाडुभावमिषोपवासः । भाव० ४६७ ।

अभिरूप-अभिमुखमतीवोक्तत्वं आकारो यस्य सः । सूर्य० २ ।

अभिरूपं-अभिहर्ष, अभि-सर्वेषां द्रवृणां मनःप्रसादानुहूल-  
तयाअभिमुखं रूपं यद्य तद्, अल्लन्तकमनीयमिति ।  
जीवा० १६१ । प्रज्ञा० ८७ ।

अभिरूपा-अभिरूपाणि, कर्मनीयानि । सूर्य० १३८ । अभि-  
सर्वेषां द्रवृणां मनःप्रसादानुहूलतया अभिमुखं रूपं यस्यः सा,  
अत्यन्तकमनीया । जं० प्र० २१ । अभिरूपाः-कमनीयाः ।  
टाणा० २३३ ।

अभिलंघमाण-अभिलङ्घय, अनुलिखन् । जं० प्र० २९७ ।

अभिलसति-अभिलसति । औप० २४ ।

अभिलसद्-अभिलसति, अभिलसन्-तत्पल्लवता वाञ्छनम् ।  
उत्त० ५८७ ।

अभिलावपुरिसे - अभिलावपुरस्यः बुद्धिज्ञानिधानमाश्रम् ।  
भाव० २७७ । टाणा० ११३ ।

अभिलापः-तीव्रलोभोद्वेषप्रभव आत्मपरिणामः । भाव० ५८० ।

अभिलोचणं-अभिलोकनम्, अभिलोकयते यत्रस्वेतत्,  
उत्ततस्यानम् । प्रश्न० १३६ ।

अभिवदञ्जो-अभिवन्दकः, अभिवन्दित्यत इति । भाव०  
१६७ ।

अभिवदिकृण-अभिवन्द्य, अभिसुखं वन्दित्वा-प्रणम्य ।  
प्रज्ञा० ३ ।

अभिवहिए-अभिवदितः, तृतीयः प्रथमद्युगे संवत्सरो ।  
सूर्य० १५४ । टाणा० ३२४ ।

अभिवहिए णं मासे-अभिवदितसंवत्सरस्य चतुर्थवारिशाद-  
होरात्रष्टिपष्टिभागधिकत्रयशीलधिकत्रयत्रयरूपस्य द्वादशो  
भागः । सम० ५६ । अभिवदितमानः, अभिवदितो नाम  
मुष्यतस्त्रयोदशचन्द्रमासप्रमाणसंवासरः । वृ० प्र० १८६ अ ।

अभिवहियचरिसं-अत्य अधिकमात्रगो पठित वरिसे तं ।  
नि० च० प्र० ३३९ अ ।

अभिवहियसंबच्छरे-अभिवदितसवत्सरः । सूर्य० १६९,  
१७१ ।

अभिवयंति-अभिवयति-न्यक्वेन्ति । टाणा० १७७ ।

अभिवयी-अभिवृष्टिः, उभराभादपदाया देवता । जं० प्र०  
४९९ ।

अभिवयणा-अभिविधानकानि वचनानि-तस्या अभि-  
वचनानि, पर्यायशब्दाः । भग० ७७६ ।

अभिवारदण-अभिवारनम्, क्षिरोत्तमनचरणस्यसंवादि-  
पूर्वमभिवारदे इत्यादि वचनम् । उता० १२४ ।

अभिवारण अभिवादनं-नमोकारादिकरणी । दश० च० १६३ ।

अभिवारो-अभिव्याहारः, आचार्यशिष्ययोर्वचनप्रति-  
पत्तेऽभिव्याहरणम् । भाव० ४७१ ।

अभिविधमगहर्ण-पर्यायप्रतिष्ठापितादेशदणम् । वृ० द्वि०  
२४ अ ।

अभिवुद्धिता-अभिवर्ष्य । सूर्य० ११ ।

अभिवुष्ट्यागे-अभिवर्ष्यत । सूर्य० १३ ।

अभिव्यज्यते-अनन्तरशामस्य इत्यस्य तत्पल्लवताका-  
रामनिधाने सप्तद्वयम् । टाणा० ४९० ।

**अभिज्ञानसप्तमम्** - असद्व्यापारोपण, अभ्याख्यानं च । आच० ८२१ ।

**अभिज्ञानधारिज्ञान** - अभिज्ञानधारयत, पर्यालोचयेत् । आचा० ३२९ ।

**अभिज्ञानधि** - आलोचनम् । प्रज्ञा० ५०० ।

**अभिज्ञानभूया** - अभिज्ञानभूता, प्रादुर्भूता । आचा० ३७६ ।

**अभिज्ञानप्रणायग** - तद्गोपयेक्षया । भग० १५९ । गतेषु यथा लब्ध । भग० २०८ ।

**अभिज्ञानप्रागच्छामि** - अभिज्ञानप्रागच्छामि, अभिविधिना साङ्ख्येन चावगच्छामि - सर्वं परिच्छित्तिप्रकारं परिच्छिन्नमि । भग० ७२५ ।

**अभिज्ञानप्रागय** - परिणमयितुमारब्धम् । भग० २२४ । उदयाभिमुखीभूतम् । भग० ९० । अभिज्ञानप्रागयतम् - उदयाभिमुखीभूतम् । प्रज्ञा० ४०३ । लक्षणेन परिच्छिन्नम् । भग० २३३ ।

**अभिज्ञानप्रागया** - अभिज्ञानप्रागया अभि - अभिमुख्येन मध्यग - इन्द्रियावधारणतयाऽऽन्विति - शब्दादिस्वरूपावगमात्पश्चादागता इति - परिच्छिन्ना यस्य । आचा० १५३ । शोभ्यावस्थां गता । ठाणा० २४५ ।

**अभिज्ञानप्रागयाद्** - अभिविधिना सवर्णित्वसंभवा गतानि - मन्त्रानि नि । भग० २६९ ।

**अभिज्ञानप्रागच्छति** - अभिज्ञानप्रागच्छति माध्यमिदौ व्यापारणत मध्यक प्राप्नोति । भग० २३९ ।

**अभिज्ञानप्रागय** - अभिज्ञानप्रागय, बहुपरिच्छिन्न । ठाणा० १७७ ।

**अभिज्ञानेद्या** - आभिमुख्येन मध्यगित्वा - ज्ञात्वा । आचा० ४४१ ।

**अभिज्ञान** - अभिपिक्तं वीक्षासंस्कृत । दश० २४५ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्ष, त्रियोऽभिपेक्ष । आच० १७८ ।

**अभिज्ञानसिला** - अभिपेक्षसिला, अभिपेक्षाय - जिनपन्नम स्तान्नाय सिला । न० प्र० ३७१ ।

**अभिज्ञान** - यवतिष्ठी । नि० सू० प्र० १३० आ ।

**अभिज्ञान** - आचार्यवद्व्यापनार्हं, मूत्रार्थतदुभयोपेत । वृ० द्वि० २८३ आ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्षेण, युक्तगोणितनिपेक्षदिकभेदेति । आचा० २३९ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्ष - मूत्रार्थतदुभयोपेत आचार्यवद्व्यापनार्हं । द्य० प्र० १४१ आ । जीवा० ७७६ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्षभाण्डम्, अभिपेक्षोपहार । जीवा० २३६ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्ष, अभिपिक्त । वृ० प्र० १७७ आ ।

**अभिज्ञानप्राप्ता** - अभिपेक्षप्राप्ता - प्रवर्तिनीयदयोग्या । वृ० द्वि० २० आ ।

**अभिज्ञानसिलायो** - अभिपेक्षसिला, तीर्थकराणामभिपेक्षायां सिला । ठाणा० २०१ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान्या, अभिज्ञान्या । द्य० प्र० १२८ अ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान्या, द्वितीयवमति । विशेषे १३०९ ।

**अभिज्ञान** - अभिपेक्ष - उपान्याय । द्य० द्वि० १६५ अ ।

**अभिज्ञानसभा** - अभिपेक्षसभा । जीवा० २३६ ।

**अभिज्ञानसभा** - अभिपेक्षसभा, यस्यां राज्याभिषेकेणाभिषिञ्चते । ठाणा० ३५२ । अभिपेक्षसंभवनमिमानभाविनी सभा । प्रथ० १३५ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, अभिमुख्येन हता, चरणन पट्टिता, उच्छिन्न्य क्षिप्ता वा । आच० ५७३ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, स्वप्रामाद माधुनिमित्तमभिमुख्यमानीतम् । दश० ११२ । गृहस्थेनानीतं । आचा० ३७७ । निष्प्रसवेवान्वयत समानीतम् । आचा० ३६९ । अभिज्ञान - स्वप्रामादित्य आहृत्य यद्दाति । ठाणा० ४६० । भग० ४६७ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, अभिमुख्येन - उन्नी घ्नन्ति । प्रज्ञा० ५९७ ।

**अभिज्ञान** - आभिमुख्येन ह्य । भग० ३८१ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, पादेन ताडयेत् । आचा० ४८८ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, अद्विष्टम्याप्यथस्यावगारकत्वम् । प्र० १४४ ।

**अभिज्ञान** - अभिपि, उदायननृपपुत्र । भग० ६१८ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, नक्षत्रदिग्घ । मय० १२९ ।

**अभिज्ञान** - मत्त्वसम्पन्न । आच० २०२ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, परिणामादि । नि० सू० प्र० २६३ आ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, य उमारणव प्रवर्जित । ओष० ९१ ।

**अभिज्ञान** - अभिज्ञान, अल्पद्वार । दश० २४३ ।

अभूषणं-अमृतेन, अनन्दमुतेन । सम० ७० ।  
 अभृतोद्गायनम्-यथा सर्वगत आत्मा । ठाणा० २६ ।  
 अभृतिभावो-विणासभावो । दश० च० १३१ ।  
 अभैङ्ग-अभिध्या, रौद्रध्यानम् । प्रथ० ४२ ।  
 अभैङ्गलोभो - अभिध्यालोभ , रौद्रध्यानाग्निवता सृष्ट्या ।  
 प्रथ० ४२ ।  
 अभैतसु - कणिकाकारं पुत्र्यु । आचा० ३९३ ।  
 अभ्यर्त्तरं तप-सवरनिर्जादारा विषाणप्रापकं । तरवा० ९-४६ ।  
 अभ्यन्तरशम्बुका - यस्या क्षेत्रमध्यभागाच्छङ्खचद्वयस्य  
 परिध्रमणभङ्गया भिक्षा गृह्णत क्षेत्रबहिर्भागानागच्छति । च०  
 प्र० २५७ अ ।  
 अभ्यन्तरान्-अवगाहक्षेत्रस्याद् । ठाणा० २८४ ।  
 अभ्यन्तरानिवृत्ति-चाङ्गनिवृत्ते खड्गधारासमानाया स्पृष्ट-  
 तरपुद्गलसमूहात्मिका । प्रथ० २९४ ।  
 अभ्यस्तः-जित उचितो वा । आच० ५९४ ।  
 अभ्यस्तम्-हनं, निर्वृत्तितम् । आच० ५९३ ।  
 अभ्यागत-अतिथि । उक्त० ३८१ ।  
 अभ्यासगुणे-(अभ्यासगुणे), भोजनादितिषय । आचा०  
 ८६ ।  
 अभ्यासराशि-गुणकार । सम० ९१ ।  
 अभ्युद्यतविहारेण-जितकल्पादिना । वृ० प्र० २१० आ ।  
 अभङ्गलिङ्गजीवो-अमण्डल्युपजीवक-तत्र योऽमण्डल्युप  
 जीवकः स माधुगृहमयान गत्वा तमेव गुरु भगति-यथा  
 है आचार्या ! संदिग्ध-ददत युयुमिर्द भोजनं प्राधुर्लक-  
 क्षपक-अनरन्तवाल्लङ्घयिष्येभ्य-माधुष्य दति । औष०  
 १७८ ।  
 अभङ्गरम्-अविलम्बितम् । औष० १८० ।  
 अभङ्गो-अमय , न विम्मयोरपि । दश० १३३ ।  
 अभङ्गो-अमार्ग , मिष्टान्नादिकादि । आच० ७६० ।  
 अभङ्ग-अमात्य , राज्यपिष्टायक । भाग० ३१८। मन्त्रिब ।  
 दश० १०० ।  
 अभङ्गा-अमात्या , राज्यपिष्टायक । भाग० ३१८ ।  
 अभङ्गो-अमात्य । आच० ११६ । राज्यपिष्टायक । प्रथ०  
 ०९, १६ । राज्यपिष्टायक । औष० १८० । राज्यपि ।  
 ५-७-३३ अ । जो राजापि पितां प्रपश्यति सो ।  
 ४५० प्र० १९० आ । ण० ३८० ।

अमच्छरी-अमरवरी, परगुणप्राही । प्रथ० ७४ ।  
 अमण-अवमानम् । विदो० १३०४ ।  
 अमणाम्-अमनोऽमम् , न मनसा अन्त मगम्यन्ते, पुन  
 पुन स्मरणमर्थम् । भाग० ७२ ।  
 अमणाम्-अमनोऽम्यता, अमनोगम्यता । भाग० २३ ।  
 न मनसा अम्यते-गम्यते स्मरणतोऽमनोऽम्यन्तत्रा  
 वन्तता, प्राणमुष्याच्छित्तत्वम् । भाग० २५३ । भोज्यतया  
 मन आप्नुवन्तीति मनआपा प्राकृतत्वाच्च पकारस्य मका-  
 रत्वे मणाम इति मन् निर्देश, न मनआपा अमनआपा ।  
 प्रथ० ५०४ ।  
 अमणुष्य-अमनोऽमम्, न मनसा -अन्त सबेदेनेन शुभयथा  
 ज्ञायन्ते । भाग० ७२ । अमनोज -रत्नशील । औष०  
 १५३ । अमनोज -असवित्र । औष० १०० ।  
 अमणुष्यसंप्रयोगसंपत्ते - अमनोजसमर्थयोगसंपत्क -  
 -अमनोज -अनिष्टो य शब्दादिनाम्न य संप्रयोगो-योगतेन  
 सयुक्तो य स । औष० ४३ ।  
 अमणुष्या-असात्मोगिका । वृ० डि० १८ आ ।  
 अमणुष्यता-अमनोजता, न मनोजा अमनोजा , विषाकवापे  
 तु सन्नवतया न मन प्रदादहेतु । प्रथ० ५०४ । न मनसा  
 प्रायते सुन्दरता । भाग० ३५३ । कथाऽऽयमनोरमतया ।  
 भाग० २३ ।  
 अमणुष्ये - अमनोक्षो-न वशित् प्रदिभाति रमणीयत्वात्  
 तद्धावकी क्षिण्यते । औष० १०० । सर्वामप्यनिप । वृ०  
 प्र० २६६ अ ।  
 अमणो-अमनहर , मनोरमित -गम्यन्तत्र । औष० २२१ ।  
 अमण-अमणम्-क्षरीरविजलम् । जीवा० २१० ।  
 अमण-अमम, गमकाररहित । भाग० २७६ । द्वादशोऽर्द्धं ।  
 ठाणा० ८३४ । गातिनाचक शब्द । भा० प्र० १०८,  
 २१३ । अन्त वरं मनुष्यमेवविशेष । वि० प्र० १०८ ।  
 अमणायमाणे-अमनीर्वृत्त-अर्थावृत्त । भाग० ११० ।  
 अमणे-जितवशयताया । भाग० १०३ । ज्ञानदारे द्वादशोऽर्द्धं ।  
 अच० १६ । जसम, पर्याप्तितमो मुदम् । १०  
 प्र० ४०१ । गुरुनामपिण्य । मृगं० १९६ ।  
 अम्ममणा-भयव्यगम्यनाय । औष० ३८ ।



**अमुत्ती** - अमुक्तिः, सलोभता, परिग्रहस्य पङ्क्तिवशानितम्  
नाम । प्रथ० १२ ।

**अमुय** - अस्थृतम्, मनोऽपेक्षया अस्मृतम् । भग० १९७ ।

**अमुहं** - अमुलं, निहत्तरम् । व्य० द्वि० १६० अ ।

**अमुहा** - अमुयाः, निर्वाचः । भग० ३७६ ।

**अमूढ** - अमूढः, अविप्लुतः । दश० २६६ ।

**अमूढद्विद्वी** - अमूढदृष्टिः, घालतपरिचतपोविद्यातिशयदर्शनेनैवं  
मूढाः स्वभावाच्चलिता दृष्टिः - सम्पददर्शनरूपा यस्यामावमूढ-  
दृष्टिः । प्रज्ञा० ५६ । अचलितमम्यदृष्टिः । दश० १०२ ।

अद्रिमातृतीर्थिकदर्शनेऽप्यनवगीतमेवास्मर्गर्शनमिति मोह-  
विरहिता सा चासी दृष्टिश्च - बुद्धिरूपा । उक्त० ५६७ ।

**अमूढलक्ष्म** - अमूढलक्षः, सर्वज्ञेयाविपरीतवेत्ता । भाव०  
२३४ ।

**अमूतरसा** - वापीनाम । ज० प्र० ३७१ ।

**अमेज्जं** - अमेव्यम् । भाव० २१३ ।

**अमोसलि** - न विद्यते मोमली यत्र तटमोसलि । ठाणा०  
३६१ ।

**अमोहं** - अमोघम्, अन्तरिक्षम् । सूत्र० ३१८ । अवन्ध्यम् ।  
दश० २३३ । जूषणो । नि० च० तु० ७०आ ।

**अमोहदं सणं** - अमोघदर्शनम्, पुत्रिमनाले उद्यानम् । विपा०  
५५ ।

**अमोहदं सि** - अमोहदर्शा, योऽमोहं - यथावत्पश्यति । दश०  
२०७ ।

**अमोहदं सी** - अमोघदर्शी, पुरिमतालनगरेऽमोघदर्शनोद्याने  
यक्षः । विपा० ५५ ।

**अमोहपहारी** - अमोघप्रहारी, जिनराजो गन्धो रथिक ।  
उक्त० २१४ ।

**अमोहरहो** - अमोघरथः, जिनराजो राज्ञो रथिक । उक्त०  
२१३ ।

**अमोहमरथं** - अमोघराजम् । भाव० ४०७ ।

**अमोहा** - अमोघा, पूर्वदिग्भागजनपर्येतस्य दक्षिणस्या दिग्धि  
पुष्करिणीविशेषः । जीवा० ३६४ । ठाणा० २३० । अनि-  
फल, अम्बा सुदर्शनाया द्वितीयं नाम । जीवा० २९९ ।  
मत्स्य । ज० प्र० ३३६ । अमोघाः, आदिरशोदशास्त्रमय-  
योरादिबकिष्णविकारजनिता दण्डाः । भग० १९६ ।

विदधिलानाम । (दे०) । मूर्धभिव्यस्याधःकदाचिदुपलभ्यमा-  
नशक्रोर्त्रिसंस्थिता इयमादिरेशा । जीवा० २८३ ।

**अमोहे** - अमोहः, वैधमणस्य पुत्रमथानीयो देवः । भग०  
२०० । प्रवेयवकिमानप्रमट्टनामविशेषः । ठाणा० ४५३ ।

**अमोहो** - अमोघः । उक्त० ४०३ । अमोघः, आदिलकिरण-  
विकारजनित आदिरयोद्गमनास्तमयने आताम्र. कृष्णस्यामो

घा शक्रोर्त्रिसंस्थितो दण्डः, यूपः । भाव० ७३६ ।  
अमोहः, शाहजनीनगर्यां देवरमणोद्याने यक्षः । विपा० ६५ ।

**अम्मड** - (अम्मडः), परित्राजकः । भग० ६५३ ।

**अम्मघार्ह** - धार्शी । उक्त० ३३१ ।

**अम्मया** - अम्बा, पुरपतिहवायुदेवमाता । भाव० १६२ ।

अम्बा । भाव० ८१६ ।

**अम्माहिती** - पञ्चमवासुदेवमाता । सम० १५२ । व्य०  
प्र० १८० आ ।

**अम्मि (ग्भि)ओ** - अ-यागतः । भाव० ५६० ।

**अम्मो** - अम्बा । भाव० ७७२ ।

**अम्मोगद्या** - अहृषुर्विका । भाव० २९३ ।

**अम्मोगतिया** - अग्निमुल । भाव० ३०० ।

**अम्मल** - (अबिले), आश्रवणहेदनकृत् । ठाणा० २६ । अम्मल-  
(अबिले), काञ्चिन्म । ठाणा० ४९२ । रसविशेषः । प्रज्ञा० ४७३ ।

**अम्मलवैतस्** - अम्मलम्परिणतः । प्रज्ञा० १० ।

**अम्मलपहि** - अम्मरीयम् । भाव० ८१३ ।

**अम्मलचय** - अम्मदीयम्, अम्मस्तम्बन्वि । दश० ११० ।

**अम्मलचय** - अम्मानी । भाव० २९५ ।

**अम्हे** - अम्माकम् । पठ० २८-६६ ।

**अयं** - अय, प्रत्यक्षगोचरीभूत मयारी । आचा० १६३ ।

**अयफल**, कर्म । जीवा० ३२ । लोहं । भग० ६९७ । अय-  
फलम् । भग० ४ ।

**अयन्त्रिय** - अयन्त्रित, अनियमित । उक्त० ४७८ ।

**अयंते** - (अयंते), पुनः कायिका द्युक्तज्य यमति प्रविशन्तः ।

आष० ८१ ।

**अयंपिर** - अजपनशीला, नोचैरत्प्रविलम्बा । दश० २३६ ।

**अयंपुले** - वणस्य पुनस्थानीशे देवः । भग० १९९ ।

मत्स्यवन्धविशेषः । विपा० ८१ । गोदासकधावकः । भग०  
६८० ।

अयंयुले-आजीवकोपायकविशेष । भग० ३७० ।  
 अय-अय, लोह । प्रज्ञा० २७ । पृथिवीभेद । आचा० २५ ।  
 अयभाकरो-लोहाकर यत्र लोह भ्यायते । टाणा० ४१९ ।  
 अयककरभोई-अनकरभोजी, अय-छागान्मय करं-  
 यन्नकरकद्रुदयमार्ग करंगायते तच्छेद प्रत्यावाग्मदीन्नुत्तरम-  
 तिपक्व वा माम तद्रोती वा । उक्त० २७६ ।  
 अयकरण-भञ्जकरक, प्रहविशेष । टाणा० ७८ । ज० प्र०  
 २३६ ।  
 अयकोट्टसि-लोहप्रतापनाथ कुशले । भग० ६६७ ।  
 अयकोट्टसिद्धितो-अय कोट्टसिद्धित, अय कोट्ट लोहमय  
 कोट्टस्तद्वत्स्थिता । जीवा० १०२ ।  
 अयगरा-अजगरा, उर परिसर्पभेदविशेष । प्रज्ञा० ४० ।  
 अयगरो-अजगर, उर परिसर्पविशेष । जीवा० २९ ।  
 अयगोलो-चाले िद्धिम्भो वा । ति० चू० प्र० ६२ अ ।  
 अयण-अयन, त्रय श्रवण । जीवा० ३४४ । मूर्त्य० ९१ ।  
 अयन-मातल्यभवनप्रवृत्त । विशेष० १३६३ ।  
 अयणाति-अयनानि-ऋतुत्रयमानानि । टाणा० ८६ ।  
 अयणे-(अयन), तय श्रवण । भग० ८८८ ।  
 अयत-(अजय) अयननया । आप० २१९ ।  
 अयधायम्-पलाशाभिधानवन । आप० ५१ ।  
 अयमाने-आडानन प्रवृत्तमान ( मूर्त्य० १२१ अयान  
 आगच्छत । मम० १६१ )  
 अयमाणे (अयमाण)-अवदान । ज० प्र० ४६२ ।  
 अयराड अतरागि, मागारामाण । त्रये० १०७१ ।  
 अयरामर-अतरामरम् अविगमानी गमामगौ यस्मिन्  
 तद । आप० ८१ ।  
 अयल-अय स्वामादिकप्रयागकचलनहेत्वयापाहाल ।  
 जीवा० २५ । अचल-स्वामादिकप्रयागिकचलनहेत्व  
 नावान निधल । भग० ७ ।  
 अयलपुर-अयपुर नगरवर्णन । ज० प्र० ९९ । पिंड०  
 १४६ ।  
 अयलभोया-अयप्रताप, वेदनमणरम् । आप० १६०१ ।  
 अयले-अचल, पथमचलहेव । आप० १०९ १७४ । मम०  
 ८८ । अयल्लुहाना प्रथमवर्गस्य पथययनम् । अन्त० ११ ।  
 अयलो-अचर, उज्जिग्या वा नगरक । ज० प्र० २१८ ।

स्वामादिकप्रयागिकचलनहेत्वभावात् । मम० ५ ।  
 अयवीही-अचवीपी, शुभमत्प्रदृश्य मन्तवी वीपी । टाणा० ।  
 ४२८ ।  
 अयदा-कीर्तिनाम (अचमोर्तिनाम), यदुदयदान  
 मन्तरस्यापि जनस्याप्रशस्यो भवति तद । प्रज्ञा० ४७० ।  
 अयदोभयम्-अरलापाभयम् । आप० ६४६ ।  
 अयसि-अतसी, धान्यविशेष । दत्ता० १९३ । भग०  
 ८०२, ८०३ । अही, धान्यविशेष । भय० २७४ । अतसी-  
 पुष्पम् । उक्त० ६६० । कुमुनिआ । औप० १४६ ।  
 अयसिकुसुम्-अतसीकुसुम्, । प्रज्ञा० ३६० ।  
 अयसिचर्ण-अतसीवनम् । आप० १८६ ।  
 अयसिचर्ण-(अतसीवनम्) । भग० ३६ ।  
 अयसिर्ण-आंपधिरिषेप । प्रज्ञा० ३३ । धान्यविशेष । उक्त०  
 ६५३ ।  
 अया-द्विचुरविशेष । प्रज्ञा० ४९ ।  
 अयागर-अयआगर, यस्मिन् निरन्तर महामृपास्वयोदल  
 प्रथिप्याडय उत्पद्यते स । जीवा० १०३ । लोहाकर-  
 यत्र लोह भ्यायते । भग० १९९ ।  
 अयि-अयि कौमल्यमन्त्रण प्रयुज्यमान शब्द । दश०  
 ६०  
 अयोगी न मन्ति यागा यस्य न, न योगिनि वा यो-  
 ऽमावयोगी दैलेष्टीरुणव्यवस्थित । टाणा० ५० ।  
 अयोग्य (अजागो) अय, अपय । ति० चू० द्वि०  
 २० आ ।  
 अयोध्या-दशरथनधानी । प्रज्ञा० ८७ । भरतमगगदि-  
 चरुवृत्तितो नगरी । प्रज्ञा० ३०० । वाशला । ज० प्र०  
 १३० ।  
 अयोमुहा-अयामुल्य पणदशमान्तरद्वय । प्रज्ञा० ५७ ।  
 अय्यावारोपेक्षा-मृतस्वचनातिभरत मन्त्रियमाणसुपुष्प-  
 माणास्तत्रानामाना । टाणा० २३ ।  
 अय्याहृतपौर्वापर्यम्-वाप्यतिगयविशेष । मम० ६३ ।  
 अरजर-अरजरम्, र्णकुम्भा, अलक्षरम् । टाणा० २८३,  
 २८४ ।  
 अरह-अरति, मोहनीयदयाच्चिनाद्वय । मम० ८० ।  
 अरहकम्म-अरतिमै यत्तयन तन्निवारति पयते तत् ।  
 टाणा० ६९९ ।

अररमोहणजं-अररिमोहनीयम्-यदुदयवसान् पुनर्वाशा-  
 भ्यन्तरेषु वस्तुषु अश्रिति करोति तद् । प्रभा० ४९९ ।  
 अररयं-अररितो जे ण पचति । नि० चू० प्र० १८९ अ ।  
 अररुं - अररतिः, इष्टप्राप्तिविनाशोयो मानमो विकारः ।  
 आचा० १६८ । वातादिजनिनधिकोद्वेगः । उत० ३३८ ।  
 अररप-अररजाः, महविशेषः । जे० प्र० ५३५ । टाणा० ७९ ।  
 अररफसुरी-आररुर्गम्, संवेगोदाहृण्ये मित्रप्रभस्य प्रत्यन्त-  
 नगरम् । आव० ७१० ।  
 अररगतं-अररकान्तरम् । आव० ३४४ ।  
 अररगाउत्तासिया-आररकोत्तासिता, अररकैरायुक्ता-अमिबि-  
 यिनाऽपिचता अररकायुक्ता, 'मिब'ति स्यात्-अवेर, अपवा-  
 ऽऽरकावतासिता-आररफालिता यस्यां मा । भग० १५४ ।  
 अररघट्टमदीनिघहादिः । उत० ५९९ ।  
 अररजा-अररजपूः । जे० प्र० ३५७ ।  
 अररणी-काहविशेषः । प्रभा० २९ ।  
 अररणे-अरण्यम्, खाननम् । दश० १४७ ।  
 अरण्यविद्विस्वर्गं-विमानविशेषः । मम० ३९ ।  
 अरण्यानी-अरण्यम् । उत० ३८१ ।  
 अररति - अररतिः, मोहनीयोदयत्रधिनविकार उद्वेगलक्षणः ।  
 टाणा० २९ ।  
 अररते - अररजा, प्रदालोकं विमानप्रयप्रच्छन्नाम । टाणा०  
 ३६७ ।  
 अररप-अररजांस्व स्वामाविकरजोरदिनस्यात् । मम० १४० ।  
 अररयं-अररत, रतस्याभावरूपः, अररजो-अररजोऽभावरूपः ।  
 अररमं-अरररारदिररामायम् । उत० ४४८ ।  
 अररिदि-अररिदि, अवेकवर्गविशेषः । प्रभा० १० ।  
 अरररहविशेषः । प्रभा० ३३ ।  
 अररसं-अररमम्, हिष्वादिनिर्गमेश्चतम्, प्रभा० १०९ ।  
 प्रभा० ६३ । अविष्मनादाहारमम् । हिष्वादिनिर्गमेश्च-  
 र्मिति । प्रभा० १६३ । अजीवणम् । दश० चू० ६१ ।  
 अरररजामम्, हिष्वादिनिर्गमेश्चतम् । दश० १८० ।  
 अरररजोदी - अरररजो दीनिर्गमेश्चतम् । दश० १८० ।  
 टाणा० ३९६ ।  
 अरररदिहं-अररमयेव, अररनीहयेव । भग० ३०६ ।  
 अररराहारे - अररराहारे, अररयो-हिष्वादिनिर्गमेश्चतम् ।

हारयतीति, अररनी वाऽऽहारे यस्यासावरहाहारः । टाणा०  
 २९८ ।  
 अररसाहि-अरररविशेषः । उत० ४६० ।  
 अररसिया-अररसि । उत० १२१ ।  
 अररसेहि-अविष्मनरदीः । भग० ४८४ ।  
 अररसो-अररमः, हिष्वादिभिरसंरुतः । औप० ४० ।  
 अररहंत-अररहंतः, अररकोपप्रमहाप्रतिहायादिष्वां पूजाम-  
 हंतौति । दश० ९२ ।  
 अररहंतघरं-अररहंतघरम् । आव० २९५ ।  
 अररहंता -अररंत, अरररवादिनिर्गमेश्चतमिहाप्रतिहाय-  
 र्वां पूजामहंतौति । भग० ३ । अररहोऽन्तो-अविष्मनं रह-  
 णकान्तदेशोऽन्तो-मार्चं गिरिगुदानीं मयैवेदितया देवां ते ।  
 भग० ३ । अररयान्तः-अविष्मनो रथः-स्यन्दनः मकर-  
 परिग्रहोपलक्षणभूतः अन्नः-विनाशो जरापुपलक्षणभूतो  
 येवा ते । भग० ३ । अररहन्तः-अविष्मनामपिष्मच्छन्तः ।  
 भग० ३ । अररहयन्-अररहयान्दिहेनुभूतमनोभेनरविषय-  
 मयकंऽपि वीतरागवादिहे हं स्वभावमत्यजम् । भग० ३ ।  
 अररः-अररहन्तः । आव० ४०९ । प्रभा० ५५१ । अररको-  
 पप्रमहाप्रतिहायादिष्वां पूजामहंतौति मयैवेदितया । आव० ४८ ।  
 अररः । टाणा० ३३० ।  
 अररहंतुपपसो-अररहंतुपदेन, अररम । आव० ४०९ ।  
 अररह-अररह, अररविष्मनाप्रतिहायंरूपप्रायोगेन टाणा०  
 ४९५ । अररहं-पूजाहं । भग० ६३ ।  
 अररहृ-अरररहृ । ( आउ० ) ।  
 अररहृ-अरररहृ । अवे० १०८ ।  
 अररहृणाय-अररहृणाय । ( अर० ) ।  
 अररहृणायो-अररहृणाय, अररवादिनी यश्च देवपया तद्-  
 गितः । आव० ६३६ ।  
 अररहृणाय - अररवादिनीयामिहत् । ( अर० ) । अररहृणायः,  
 मयैवेदितयाप्रायः । दश० ९० ३५६ अ ।  
 अररहृणाय - अररहृणाय, अररहृणायप्रायः । दश० ९० ।  
 अररहृणायो-अररहृणाय । आव० ३८८ । उत० ३०६ ।  
 अररहृणाय-अररहृणाय, अररवादिनीयामिहत् । दश० ९० अ ।  
 अररहृणायो-अररहृणाय, अररवादिनीयामिहत् । दश० ९० अ ।  
 अररहृणाय - अररहृणाय, अररवादिनीयामिहत् । दश० ९० अ ।

अरहत्या-अहंता, तीर्थहरता । भाष० २३० ।  
 अरहृत्स्व - अतीव रहस्यभूतं छान्दाश्विनवत्प्रभु । वृ० नृ० ।  
 २६१ आ ।  
 अरहृत्सिद्धा-अरहृत्प्रयत्नम् । ध्य० प्र० २० आ ।  
 अरहृत्-देवादिभ्यो पूजामर्हन्तीति अर्हन्त, अरहण अथवा  
 नाभिन रह-प्रच्छन्न किमिष्येति येषां प्रत्यक्षज्ञानित्वात् ।  
 टाण० १७४ । जित । मम० १०२ । अर्हन्-पूजा  
 मर्हतीति । अरहन्, नाम्य रहस्य विद्या इति या । उग०  
 २०७ ।  
 अरहृत्-सामपादेनेभ्यः षेयुकारोद्देशे वा यापुमाभ्यो परस्परं  
 श्लिष्यन्थो वा । वृ० टि० १८ अ ।  
 अरातिः-व्याधि । विभे० ७७१ ।  
 अरायाणि-अराजानि, यत्र राचा गृन् । आचा० ३७८ ।  
 अरि-अरि, सामान्यत एव । न० प्र० १२० ।  
 अरिणो-अरिण । औप० १९९ ।  
 अरिष्ट-अरिष्ट, पितृमन्द वृधविशेष । प्रज्ञा० ३१ ।  
 अरिष्टनेमि-अरिष्टनेमि । भाष० २७३, ५१५ । दश०  
 ३६, ९६ । तीर्थकरविशेष । वृ० प्र० ३० आ । अन्त०  
 २५ । समुद्रविजयमत । उत० ४८९ । समुद्रविजयस्य  
 प्रथम पुत्र । उग० ४९६ ।  
 अरिष्ट्यं-अरिष्टकं, ऋविशेष । प्रज्ञा० ३६० ।  
 अरिहृत्-भेदवगोत्रस्य नामविशेष । टाण० ३९० ।  
 अरिहृत्-धर्मजिनप्रथमशिष्य । मम० १०२ ।  
 अरिणो-अरय, इन्द्रियविषयकषायपरीषहवेदनोपमार्गत्वा ।  
 भाष० ४०६ ।  
 अरिद्रमन-अरिद्रमनो अभवत्पानसाधान्ये बभूवपुरे राजा ।  
 मय० १०० ।  
 अग्निमर्देन-मन्वासाध्यान्ते बभूवपुरे राजा । विद्व० ४८ ।  
 अरिष्टनगरम्-राममानुलहिरण्यनाभराजधानी । प्रथ० ८८ ।  
 अरिष्टपुरम्-रथिरराजधानी । प्रथ० ९० ।  
 अरिस्त-अस्तिमि गणविशेष । विद्या० ४०३ नि० चू० प्र०  
 १८० अ । नि० चू० टि० ६२० आ । अर्पे गुराकुर ।  
 न० प्र० १३० ।  
 अरिहन्त-अर्हन्त, अरहन्त-न रहन्तीति । ऋ० ७९ ।  
 अतोकायमहाप्राणिहायादिभ्यो पूजामर्हन्तीति अर्हन्त - ।  
 नाम्ना । भाष० १९९ ।

अरिहन्तचेष्ट्यं-अर्हन्त्येवम्, तीर्थहरप्रतिष्ठा । भाष० २८६ ।  
 अरिहन्ता-अरिहन्ता, कामाग्निनामक । भग० ३ । कर्मणि-  
 हन्ता । भग० ३ । अरिहन्ता, इन्द्रियविषयकषायपरी-  
 षहवेदनोपमार्गमम ( नाम ) इति । भाष० ४०६ । अरिह-  
 न्ता, रजोहन्ता । भाष० ४०६ ।  
 अरिहमिचो-अर्हन्मिच । उग० १० ।  
 अरिहा-अर्हा । भाष० ३८३ ।  
 अरिहो-अर्हं, अर्पे । प्रथ० ३६ ।  
 अरी-अरि, मयु । जीवा० २८० ।  
 अरुभ-अरु, मरी । वृ० टि० ११ आ । अरु-मरी । वृ०  
 ७० २०८ आ ।  
 अरुगं-अरुं, मग । वृ० टि० २५८ अ ।  
 अरुज्जंते-अरुज्जमले-एनरिमन् पात्रक । शेष० १४९ ।  
 अरुण-अरुण, नन्दीधरमसुदानन्तरे द्वीप, तदनन्तरे  
 समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । मन्महाकृत्रेण प्रथममेव ।  
 आचा० २३० ।  
 अरुणस्तरयद्विस्तरं-अरुणोऽरुणो विस्तरितेभ्यः । मम० १८९ ।  
 अरुणप्वभ-शीतलनापरीक्षारिषिचा । मम० १०१ ।  
 अरुणप्वभो-अरुणप्वभ, चतुर्षोऽनुलेखनरत्नामरात्र तर्द-  
 वावागपर्वेत्तथ । जीवा० ३१३ । टाण० २२६ ।  
 अरुणमहावरो-अरुणमहावर, अरुणवरो समुद्रोऽप्यर्हन्  
 धिपतिर्देव । जीवा० ३६७ ।  
 अरुणवर-अरुणवर अरुणसुदानन्तरे द्वीप, तदनन्तरे  
 समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ । द्वीपतिर्देव । टाण० २१७ ।  
 अरुणवरमहो-अरुणवरमह अरुणवरोऽपि पूर्वोऽपिप-  
 तिर्देव । जीवा० ३६७ ।  
 अरुणवरमहामहो-अरुणवरमहामह, अरुणवरोऽपिऽर-  
 गादीधपतिर्देव । जीवा० २६७ ।  
 अरुणवरायभास-अरुणवरायमानन्तरे द्वीप तदनन्तरे  
 समुद्रोऽपि । प्रज्ञा० ३०७ ।  
 अरुणवरायभासमहो-अरुणवरायभासमह, अरुणवरा-  
 यमहोऽपि पूजादीधपतिर्देव । जीवा० ३६७ ।  
 अरुणवरायभासमहामहो-अरुणवरायभासमहामह, अरुणवरायभासमहामहोऽपिऽर-  
 गादीधपतिर्देव । जीवा० ३६७ ।  
 अरुणवरायभासवरो-अरुणवरायभासवर, अरुणवरा-  
 यभासवरो पूजादीधपतिर्देव । जीवा० ३६७ ।

अरुणवराचभासो - अरुणवराचभास, अरुणरोदगमुद्र-  
सक्तो द्वीप । जीवा० ३६७ ।

अरुणचरो-अरुणचर, अरुणोदसमुद्रमत्को द्वीप । जीवा०  
३६७ । अरुणचरोदे समुद्रे पूर्वाक्षाधिपतिर्देव । जीवा० ३६७ ।

अरुणचरोण - अरुणचरोद, अरुणचरद्वीपमत्क समुद्र ।  
जीवा० ३६७ ।

अरुणा-शिलरिपर्वतवामिदिवनाम । ठाणा० ८० ।

अरुणाभं-ब्रह्मलीककल्पे विमानविशेष । मम० १४ ।

अरुणाभे-अरुणाभ, राहप्रलापीने कृष्णपुद्गलविशेष ।  
म्य० २८७ । सौधर्मकल्पे विमान । मम० ५५१ ।

अरुणावभासो - अरुणावभास, अरुणावभासद्वीपमत्क  
समुद्र । जीवा० ३६७ ।

अरुणे-ग्रहविशेष । ठाणा० ७९ ।

अरुणो-अरुण - लोकान्तिरुददेवावशाप । आ० १३५ ।  
महापुराण्ये प्रथमो मेद । प्रश्न० १६१ । ग्रहविशेष । ज० प्र०  
७३ । द्वापविशेष, यो देवप्रभया परैतादिमानव इतरनप्रभ  
या चारुण प्रति । जीवा० ३६७ । देव । ज० प्र० २०० ।

अरुणोण-अरुणोद, अरुणद्वीपसत्क समुद्र, मभद्रमुमनो  
भद्रदेवाभरणयुताऽरुणम्-आरुणमुद्रक यम्यानी । जीवा०  
३६७ ।

अरुणोद्ग-अरुणोदक, अन्धकार, तमस्काम्य नाम ।  
मम० २७० ।

अरुणोद्-समुद्रविशेष । ठाणा० १७७ ।

अरुणोपपात-सुप्तविशेष । वृ० प्र० ६० आ ।

अरुणोपचाले-अरुणोपपात, इहाणो नामद्रवत्तसमयनि  
यद्धो मन्धस्तद्रुपतहेतु, अचयननाम । ठाणा० ५१३ ।

अरुण्य - अरुण, अविद्यमानगेम । मम० ९ । अरु-  
ण्य । सुप्र० ९० । अरुण, क्षीरमनसोरभावेनाधिष्ण्याधि  
रहितम् । जीवा० २५६ । अरुण्य-अविद्यमानगेम क्षीर  
रमनसोरभावात् । मम० ५ ।

अरुण्य-अरु । भा० ८०० ।

अरुह-न रहोऽरुह अपुनर्नीची । आ० २३३ ।

अरुहंत-अरोहन्, क्षीरमनीक्षरवाद्गुपनायमान । मम० ३ ।

अरोहन, अनुपायमान क्षीरमनीक्षरवात् । मम० ३ ।

अरुह्य-अर्हता । वि० ८६१ ।

अरुणिणः-अमृता । ठाणा० १०५ ।

अरुवी-अरुण, अमृतम् । मम० १०० ।

अरेण-आरत । आव० २८७ ।

अरो-अर, तीर्थकृचक्रवृत्तिविशेष । उत० ४४८ । मन्म  
चक्रवर्ती । आव० १५९ । मम० १७० । सर्वोत्तमे कुले  
वृद्धिरो जायतेऽत, अमादयो जिन, यस्मिन् गर्भगते  
मात्रा स्वप्न सर्वरत्नमयोऽतिमन्दरोऽतिप्रमाणधाराका ह्यो  
ऽन । आव० ५०५ ।

अरोगी-अरोगी-रोगविप्रमुक्त । दश० २०५ ।

अरोस-अरोप, चित्पानदेगनिवासी म्हेच्छविशेष । प्रश्न०  
१४ ।

अर्कतुलम्-उत० ६७७ । प्रज्ञा० १० ।

अर्गलम्-अधिकम् । उत० ६६० ।

अर्गलपाशाका-अमरुतामगागि, यन्मर्गलाऽप्राणि निमित्ते ।  
आचा० ३३७ ।

अर्गला-( अमरुत ), पकरणभेद । आचा० ६० । परिष ।  
उत० ३११ ।

अर्घति-( अमरुत ), अर्हति । उत० ३१६ ।

अर्चा-( अर्चे ) देया, अरीर, कोपाद्युपवभाषायां भिक्का  
ज्वाला । आचा० २८४ ।

अर्धि-( अर्धी ), अर्धिलम्बम् । ठाणा० ३३६ । अर्धि-  
मूलप्रतिषद्धा ज्वलनाशवा । उत० ६९६ ।

अर्धिया-( अर्धोण ) क्षीरनिर्गततपोज्वाला । ठाणा० ४२१ ।

अर्जितद्रुक्षा-अर्जित उपाजित द्रुक्षा यैस्ते । लण० २६३ ।

अर्जुन-तृणविशेष । प्रज्ञा० ७० । उत० ६९० । जीवा० १६१ ।  
ज० प्र० १३ ।

अर्जुनसुरार्णकम्-( अर्जुनसुरवक्त्रम् ) अर्जुन द्रुक्षा त्र्य  
नसुरार्णकम् । उत० ६८१ ।

अर्जुनसुरार्णमयी-सर्वा यना कनकमयी । ज० प्र० ३३३ ।

अर्त्ति-( अर्त्ति ) क्षीरमानवी पीडा तत्र भवा । आ० १०० ।  
१३९ ।

अर्थ-अर्थे गम्यत, परिच्छिनन्ति । आव० १० । आशा  
आच० ६०६ । निद्रमच्छपयिष । ठाणा० ७७ ।

अर्थम्-निमित्तम् । उत० ५७३ । २

अर्थकर-( अर्द्रकर ) मन्त्री निर्मातक । ठाणा० २४१ ।

अर्थजाता-( अर्द्रजाय ) अर्थ-पाशुमुद्रात्पन्नत मन्त्रीय  
परिणमादेजात यथा या पतिवीरारिना मयमात्पायम न  
त्यर्पस्ता ता । ठाणा० २०९ ।

**अर्थदण्ड** - ( अद्वादडे ), दण्डयतेऽऽत्माऽन्यो वा प्राणी येन स दण्ड । ठाणा० ३१६ ।

**अर्थधर्माभ्यासानपेतम्** - वाण्यतिशयविशेष । सम० ६३ ।

**अर्थनिर्यापणा** - अर्थस्य पूर्वापरसाहच्येन गमनिकेत्यर्थः । ठाणा० ४२३ । अर्थ - सूत्राभिधेय वस्तु तस्य निरिति-  
भ्रष्टा यापना - निर्वाहणा पूर्वापरसाहच्येन स्वयं ज्ञानतोऽन्येषां च कथनतो निर्गमना । उक्त० ३९ ।

**अर्थपदम्** । भग० २०२ ।

**अर्थपदानि** - ( अद्रुपदा ) अर्थप्रधानानि पदानि । उक्त० ३४१ ।

**अर्थशास्त्र** - धनुर्वेदादि । ह० प्र० १३० आ ।

**अर्थाज्ञया** - पुनरभिनिवेशतोऽन्यथा प्रवृत्तगणितलक्षणया । सम० १३२ ।

**अर्थात्** - ( अद्रु ), निमित्तात् । उक्त० ४९१ ।

**अर्थाधिकारः** - ( अर्थाहिकारो ), शास्त्रीयोपक्रमस्य प्रथमभेदः । आचा० ३ । ठाणा० ४ । वक्तव्यतावशेष एव, स कैक त्रयसिष्टारामोदिपदार्थप्रणलक्षण इति । ठाणा० ५ । आच० ५६ । अर्थयनसमुदायार्थः । आच० ५८ ।

**अर्थान्तराभिधानम्** - गामधर्मित्याद्यन्यार्थप्रतिपादनम् । आच० ५८८ ।

**अर्थान्तरोक्ति** - सूत्रावादिशेष । ठाणा० २९० ।

**अर्द्धचित्तर्दा** - विद्वान् । ज० प्र० १७० ।

**अर्द्धचन्द्र** - अर्द्धचन्द्र । सम० ३०, १३९ ।

**अर्द्धतृतीया** - अर्द्ध तृतीया येना ते । प्रज्ञा० ४७ ।

**अर्द्धपेटा** - यस्या तु साधु क्षेत्रे पेटावचतुरस्य दिभजय मय्य वर्तन्ति गृहाणि मुक्त्वा चतसृष्वपि दिक्षु समभ्रेष्या मिथामटति मा पेटा एवमेव नवरमर्द्धपेटमहासंस्थानयोर्दिग्द्वयमन्ववदवागृहभ्रेष्योरन पश्यति । ह० प्र० २५७ अ ।

**अर्द्धभारम्** - पञ्चमहासंस्थानम् । ज० प्र० २५३ ।

**अर्द्धमागधभाषा** - भाषायाश्च । ज० प्र० १४ ।

**अर्द्धासंयासम्** - उपरसासंयसम् । ह० प्र० १-५ अ ।

**अर्धापकान्ति** - ( अडडापकान्ति ), एतदेवार्धापकान्त्यान्तिशरे कुर्वन्ति तत्रार्धस्यामप्रदिभागस्यैकदेशस्य वैकादिपदामकस्यापकमणमवस्थानम्, औपस्य तु द्व्यपिपस्य द्वातरुपस्यैकदेशस्योर्ध्वं गमनं यथा रचनाया नाममय परिभाषया अर्धापकान्तिरुच्यते । विशेषे ५८८ ।

**अर्थाक** - अथ । आच० ८२७ ।

**अर्हन्** - मानिषयम्पम्पगमनित्व । आचा० ४१२ ।

**अर्ल** - अल्म्, अल्यम् । दश० २३८ ।

**अर्लकार** - अर्कार । नि० चू० प्र० २७६ आ । अर्लकारान्, वक्ष्यतीन् । ज० प्र० १४५ । आच० १८२ ।

**अर्लकारियसभा** - अर्लकारसभा । जीवा० २३६ । अर्लकारभवन्विमानभाविनी सभा । प्रथ० १३५ ।

**अर्लकारित** - अर्लकारिका, यस्यामलक्षकियते । ठाणा० २५२ ।

**अर्लकिये** - अर्लकृतम्, उपमादिभिष्टेत् । सूत्रगुणविशेषः । आच० ३७६ । अन्योऽन्यस्फुटगुणस्वरविशेषाणां करणान् । ज० प्र० ४० । सुत्रगदिभिर्विभूयितम् । भग० ११९ ।

**कान्यालङ्कारयुक्तम्** । ठाणा० ३९७ । अन्यान्यस्वरविशेषाणां स्फुटगुणानां करणान् । ठाणा० ३९६ । अर्लकृतं । ज० प्र० ४२० ।

**अर्लगादो** - अर्लकार, आमरणम् । जीवा० २४१ ।

**अर्लद** । नि० चू० द्वि० ९१ आ ।

**अर्लदक** - वरीमूलम् । ह० द्वि० १७९ अ ।

**अर्लमुस्ता** - अर्लमुष्या, उत्तररुचकवाल्म्या विद्वमारी । आच० १२२ । उत्तररुचकवास्तव्या प्रथमा विद्वमारी महत्तरिका । ज० प्र० ३९१ ।

**अर्लकम्** - लङ्गम् । जीवा० २७३ ।

**अर्लकापुरी** अर्लकापुरी, लौकिकशास्त्रे धनदपुरी । ज० प्र० १८१ । वैधमणयक्षपुरी । अत० १ ।

**अर्लका** - मविषया । ( मत् ) ।

**अर्लफख** - अर्लक्षम् गुप्तम् । आच० ४२१ ।

**अर्लफखला** - अर्लभणता - असमभया, अभिधायिता । विशेषे २०५ ।

**अर्लफखे** - अर्लफख, वाणारस्या राजा । अन्त० २५ । अन्तकृत्तानां पद्यमवर्गस्य पोडशाध्ययनम् । अन्त० १८ ।

**अर्लत्त** - अर्लत्त । उक्त० ६५३ ।

**अर्लत्तगपहो** - जमेत अलत्तगपहो रजति तमेतो कर्हो जमि परे सो अलत्तगपहो । नि० चू० ७९ आ ।

**अर्लत्तगा** - रंगविशय । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

**अर्लत्तगधयम** - गन्मीर । उक्त० ५५४ ।

**अर्लमथु** - मयभाषया समर्थाऽभिधीयते । ठाणा० २९६ ।

**अर्लमत्स्यु** - अर्लमस्तु, पर्याप्तं भवतु । भग० ६७ । निषेधो भवतु निषेधकः । ठाणा० २९६ ।

- अलङ्कार-अलङ्कार, व्यक्ता भाषा । दश० २३५ ।  
 अलङ्कार-अलङ्कार, मौनव्रतको निष्ठितयोगः, मुष्टिकादियुक्तो वा । सूत्र० ३९३ ।  
 अलसंन्द्विसयथासी - अलसण्डविषयवासिनः, म्लेच्छवि-  
 शेयाः । जं० प्र० २२० ।  
 अलस-अलसः, अन्येन सह प्रभूते पर्यटितुमसमर्थः । ओष०  
 १५० । गण्डलकः । प्रथ० २४ ।  
 अलसने-हस्तपादादिस्तम्भः श्वयधुर्वा । आवा० ३६२ ।  
 अलसा-अलसाः, प्रयत्नरहिताः । ओष० २२२ । द्वन्द्वि-  
 यगीपभेदः । उक्त० ६९५ ।  
 अलाउ-अलाउ, अलाउतुम्बयोर्लम्बत्ववृत्तवृत्तभेदः । जं०  
 प्र० २४४ । अलातं-उत्पुङ्गम् । ओष० १७ ।  
 अलाउय-अलाउकः । आवा० ४०० ।  
 अलाते-अलातम्, उल्मुकम् । जीवा० २९, १०७ । प्रज्ञा०  
 २९ । ओष० १७ । ठाणा० ३३६ । दश० १६९ ।  
 अलातद्रव्यम् - वक्रतयाऽवमानमानमेकान्तावसाधुभ्युपगतं  
 वा वस्तु । ठाणा० ४८९ ।  
 अलाउकः । ओष० १४५ ।  
 अलाम-अलामः, याचितभिक्षाच्छायाः, पशुदवा परीपहः ।  
 आवा० ६५७ । अभिलपितविषयाप्राप्तिः । उक्त० ८३ ।  
 अलायं-अलातम्, उल्मुकम् । उक्त० ८३ । दश० २२८,  
 १५४ ।  
 अलायचक्रं-अलातचक्रं, कालभेदेन दिक्षु भ्रमत् । विदोः  
 ९७५ ।  
 अलाहि-अलम् । आवा० ११६, ७०२ । भग० ४७० ।  
 ओष० ५६९ ।  
 अलिजरम्-दृष्यम् । दश० २६० ।  
 अलिद-सुण्डकम् । ओष० १६६ ।  
 अलिद्विभो-अलिन्दकरिषता । उक्त० ३५५ ।  
 अलिवाति । नि० सू० प्र० १६२ अ ।  
 अलिदेण-अलिन्देन-सुण्डकेन । ओष० १६७ ।  
 अलिदो-शोषविशेषः । वृ० दि० ६२ अ । न३ इव । ध्य०  
 प्र० १६४ अ ।  
 अलिप-अलीकम्, भूतनिद्रवहर्ष, अमर्त्यं वा । भग० ७२२ ।  
 अलिप्तय-अलिप्तम् । आवा० ३३ ।  
 अलिप-अलीकं, श्यावादः । प्रथ० ९५ । सिध्या, अपथम्-  
 द्वास्व प्रथमं नाम । प्रथ० २६ । सङ्कृतार्थनिद्रवहर्षम् ।  
 प्रथ० १२१ । अमृत-अमृतोद्भावनं भूतनिद्रवह, सुप्तोद-  
 विशेषः । आवा० ३७४ । विदोः ४६४ । शुभफलपेक्षाया  
 निष्फलः । प्रथ० २७ ।  
 अलियचयणे-अलीकवचनम् । ठाणा० ३७० ।  
 अलिया-अलिका, पक्षिविशेषः । अनुक्त० ४ ।  
 अलियाण-अलीकाज्ञः, अलीका आज्ञा-भागमो वयम् तु ।  
 प्रथ० ४० ।  
 अलिसिदा-चवल्गारा । नि० सू० प्र० १४४ आ ।  
 अलुदो-अलुब्धः । आवा० ८५९ ।  
 अलेप-अक्षणेन मर्पिषा-वृत्तेन वर्मया च निर्बृमो लेपोऽ-  
 लेपो ज्ञानव्यः । वृ० प्र० ८२ आ ।  
 अलेभदो-अस्थिरः, अनाहारः । आवा० २१२ ।  
 अलोप-अलोहः-केवलाकाशरूपः । औप० ७१ ।  
 अलोला-वेदियविशयनिगमहकारः, एमणं ण पेल्लेति । वि०  
 सू० प्र० ३२२ आ ।  
 अलोलुओ-अपविदो । दश० सू० १४० ।  
 अलोहे-अलोमः, योगमन्त्रोऽष्टमो योगः । आवा० ६६४ ।  
 स्वल्पलोभः । जं० प्र० १४८ ।  
 अलौकिकत्वम्-अमाधारणम् । दश० १६७ ।  
 अल्पशुभिक्षादः । आवा० ३३६ ।  
 अल्पशब्द-अविद्यमानवाक्यलहः । उक्त० ५८९ ।  
 अल्पपरिकर्माणि-यानि हविन्मनाक् र्गितानि । ओष०  
 १३२ ।  
 अल्पलेपा-चतुर्थी फिटैपणा । आवा० ३५७ ।  
 अल्पार्यके- ठाणा० ३२० ।  
 अलुह-शुभविशेषः । भग० ८०३ ।  
 अलुहकुसुमं-अलुहीकुसुमम्, लोके प्रतीयम् । प्रज्ञा० ३६१ ।  
 जं० प्र० ३८ ।  
 अलुह्य-आर्द्रकम्, कन्दविशेष । आवा० ८०८ । आर्द्र आर्द्रकं  
 च । आवा० ८२८ ।  
 अलुच्यमे । नि० सू० द० १२० अ ।  
 अलुपहो-अली, शुभिकतुण्डावृत्तिः । विषा० ७१ ।  
 अलुय-आर्द्र ( सं० )  
 अलिर्व-अतिद्रोणम्, आभयिर्द्रं वा । आवा० ४३० ।

अक्षिप-आश्रयेत् । ( गणिते )

अक्षितो-अपित । आच० ४३४ ।

अक्षियंतुं-उपसर्तुम् । भाव० ६५ ।

अक्षियतो-आश्रयन् । आच० ४०० ।

अक्षियद्-आश्रयति । आच० ६९५ ।

अक्षियउ-अलग्नु । आच० १९९ ।

अक्षियस्वह-आश्रयत । उत० ३९६ ।

अक्षियह-आलीयेताम्-आश्रयताम् । उत० ३९४ ।

ओष० १५९ ।

अक्षियावं-प्रवेशम् । आच० ३४९ ।

अक्षियावणरथे-अक्षियावणं द्रव्यस्य द्रव्यान्तरेण श्लेषादिना  
ऽऽलीनस्य यत्करणं तद्द्रव्यो यो बन्धः स । भग० ३९० ।

अक्षियायो-प्रवेश, आश्रयणम् । उत० १४५ ।

अक्षिविओ-अपिन । आच० ४२९ ।

अक्षिवेई-अपयति, ददाति । आच० ५६० ।

अक्षीण-आलीनम्, मुञ्चिष्टम् । जं० प्र० २२ । आलीन -

सम्बन्धमिती । क्विचित्प्र० न तु टप्परो । जं० प्र० १९३ ।

मनोवाक्यशुभायाधितौ वा, यदा अलीनौ-वृथगवस्थानं

परस्परमसिद्धौ । उत० ४९५ । गुरुचनमाधित । अनु

शान्नेऽपि न गुरुषु द्वेषमावयन्ते, अथवा आ-ममन्ता

न्वर्षान् कियामु लीना-गुप्ता मोन्वणत्वेनाकारिण । न० प्र०

११७ । जीवा० २७८ । गुप्ताधित । औप० ८८ । इप

एन । आच० १९७ । आलीन । आच० ६३ । आधित

( आउ० ) । आ-ममन्तान् लीना आलीना । व्य० द्वि०

४४० आ ।

अक्षेसेहिं अश्वप । आच० ६३ ।

अक्षे-(अवाक्) अपन्नात् । आचा० ६३ ।

अक्षेगाओ-अपाङ्गा, नयनप्रान्तम् । जं० प्र० १२ ।

अक्षेगुअ-अप्राप्तम् । नि० सू० प्र० २०४ अ ।

अक्षेगुदुधारे-अप्राप्तद्वारं कपादिभिर्भ्यामनगृहद्वार ।

औप० १०० ।

अक्षेगुय-अप्राप्तम् न मध्ययति । सू० द्वि० २५ आ,

१६४ अ ।

अक्षेगुन्मि-उद्गन्ति । सू० द्वि० ५१० अ ।

अक्षेगुदुधारो-अप्राप्तद्वारं, अप्राप्तं द्वारं येन स, उद्

धातिनद्वार । मूत्र० ३३१ ।

अक्षेगो-अपाङ्गा, नयनोपान्तम् । जीवा० २०९ ।

अक्षेग-अक्षय्य, एकादशपूर्वनाम । टाणा० १९९ ।

अक्षेगुदुधारे-अक्षय्यपूर्वं-यत्र सम्प्रस्थानादयोऽक्षेग्या-सफल

वर्षन्ते तत्र, एकादशपूर्वनाम । सम० २६ ।

अक्षेगितक्षुण-अयन्तीवर्षण, अज्ञातोदाहरणे प्रयोक्तारमज-

पालकमुत । आच० ६९९ ।

अक्षेगितसुकुमार-प्राणिन आहागविमोचने हर्षत । आचा०

२९९ ।

अक्षेगितसुकुमालो-अयन्तिवृषुमात्रं, योगसङ्ग्रहेऽभिधितो-

पधानद्वयान्ते उज्ज्विन्या मूत्राणुप्र । आच० ६७० । वंग-

कुडंगेऽनगनी ( मर० ) । गुगालीमक्षित ( भक्त० ) ।

अक्षेगितसेण-अवन्तीपेण, अज्ञातोदाहरणे घाग्निणुप्र ।

आच० ६९५ ।

अक्षेगी-देशविशेष । सू० तृ० २१८ अ । उत०

४९ ।

अक्षेगीजनणव-अवन्तीजनणं, देशविशेष । आच०

२८९ । उत० ४९ । नि० सू० प्र० ६४ आ ।

अक्षेगीजनणवय-देशविशेष । व्य० प्र० १४९ आ ।

अक्षेगीसुकुमार-नामविशेष, उदाहरणविशेष । सू० द्वि०

२२४ अ ।

अक्षेगीसुकुमालो-वराकुडंगेऽनगनी ( मर० ) । गुगालोम-

क्षित ( भक्त० )

अक्षेगीसुत-गुगालीमक्षेगो मुनि । (स०)

अक्षेगीसोमालो । नि० सू० प्र० १३७ आ ।

अक्षे-अश्वक्त्वम् । आच० २७८ । अध० प्रज्ञा० ५२६ ।

उत० २७७ । मयाँदया एतावत्क्षेत्रं पर्यय । विज्ञे० ५४ ।

अक्षेद्वो-अपविद्ध, तोमरादिना मम्यतिवद्ध । प्रज्ञा०

४९ ।

अक्षेद्वो-अपकीक । आच० ७९८ ।

अक्षेउज्जिअ-अधोऽवनम्य । आचा० ३४४ ।

अक्षेउज्जिअ-परित्यज्यते । आच० ७६५ ।

अक्षेउज्जिअयोधमाहारो-उज्जितमन्त्रोकाहार, उज्जित-

धमा स्तोत्र-स्वयं आहारो यस्य स । आच० ५६८ ।

अक्षेउडग-अवकाशम्, प्रावाका पथ्यादृशणयनम् ।

विपा० ५३ । अवकाशक, वृत्तादिवाया अधोनयनम् ।

विपा० ४७ ।



अथव-अथकम्, अनन्तजीववनस्पतिभेदः । आवा० ५९ ।  
जलरुद्विधेयः । प्रज्ञा० ३१, ३३ । साधारणवादावनस्प-  
तिकायविशेषः । जीवा० २६ । प्रज्ञा० ३४ । साधारणव-  
नस्पतिविशेषः । प्रज्ञा० ४० ।

अथपहप-तापिकाहस्तकार् । भग० ५४८ ।

अथजोडयबंधनपर्यं - अवमोहनतोऽवकोटनतो वा पृष्ठदेशे  
बाहुशिरसा संयमनेन बन्धने यस्स सः । अन्त० १९ ।

अथकंलह - अवकाहति, भवेक्षते, अनुकम्पते । भग०  
१०२ ।

अथकारिसो-अपकर्षः-अमाषः । प्रश्न० ६२ ।

अथकारं-अपकरणम्, अक्षारोपरिक्षेपः । प्रश्न० ४० ।

अथकिप्रतो-अवकीर्णकः, करकण्डोः प्रथमं नाम । उत-  
३०१ ।

अथकिरति-उत्सृजति । आवा० ७७१ ।

अथकिरियव्यं-अवकर्णीयम्, विक्षेपणीयम्, लाज्यम् ।  
प्रश्न० १६ ।

अथकुंडिय-अवगाह-न्याप्त । (मर०)

अथकुज्जियं-उद्याए तिरियहुत्करणं । नि० सू० ५९ अ ।

अथकोडकबंधणं-अवकोटकवन्धनम्, बाहुशिरसां पृष्ठदेश-  
बन्धनम् । प्रश्न० १४ ।

अथकोडयं-अवकोटकम्, कोटयाः-प्रीषाया अधीतयनम् ।  
प्रश्न० ५६ ।

अथकान्तः-अपकान्तः, सवेद्यमभावोऽपगतः-प्रदः, अप-  
कान्तः-अकमनीयः । ठाणा० ३६६ । आवा० ५०४ । अव-  
कान्तः-अवरियतः । उत० १५६ ।

अथकामि-अपकामति, स्वयते । जीवा० ११० । गच्छति ।  
जीवा० २४३, ३०६, ३२३, ४०० । अपकामति । आवा०  
१९६ । अपकाम्यति । उत० १५७ ।

अथकामिजा-अपकामयेद्-गच्छेत् । आवा० ३८५ ।

अथकामिस्ता-अथकाम्य, गत्वा । दन० १७८ ।

अथकामेज - अपकामेत्, अपकामेत्, लतमयुग्स्थानवाद्  
हीनतरं गच्छेदित्यर्थः । भग० ६४ ।

अथकामे-अपकर्षणं, अपकर्षणं, अपकाशो वा । भग०  
५७२ । अपकर्षः । भग० ७१ ।

अथकाम्यं-अनथ । दन० सू० ११३ ।

अथकाम्य-विनिर्गमः । दन० प्र० १४६ अ ।

अथक्षारणं-अपक्षारणम्, अपक्षारं क्षारायमाणं वचनं,  
अपक्षारणम्-सामिध्याकरणम् । प्रश्न० ४१ ।

अथक्खित्तो-आक्षिप्तः । उत० ११७ ।

अथगति-युक्तिः । उत० ३९२ ।

अथगाम-गंश । आवा० १२ ।

अथगाह-अवस्थिताः । ठाणा० ५१४ ।

अथगाहगाह - गाढावगाहम्, अतिगाहम्, प्राकृतत्वादेवं  
स्पृ । भग० ३७ ।

अथगाहा-आश्रिताः । ठाणा० ५२७ ।

अथगाहाअथगाहं - अथगाहावगाहम्-अत्यन्तव्याप्तिदर्श-  
नम् । भग० १५३ ।

अथगायति-परिभवति । आवा० १०६ ।

अथगासो-अवकाशः, यद्यस्योत्पत्तिस्थानम् । सूत्र० ३५० ।  
अवस्थानम् । विशेषे ५७१ । गमनादिवेष्टास्थानम् । आवा०  
८३५ । अवस्थानमवतारो । ठाणा० २३७ । बहूनां

विवक्षितद्रव्याणामवस्थानयोर्वं क्षेत्रम् । भग० ६०५ ।

अथगाहृणा-आश्रयभावः । भग० ६०९ । अवस्थानरूपा ।  
विशे ८६२ ।

अथगीत-वाग्मजिगीषि केनचिदप्यनुवर्ष्यमानः । आवा०  
१०६ ।

अथगीतम्-निन्दितम् । भग० ११ ।

अथगुणंति-अपाश्रवन्ति । भग० ६८३ ।

अथगृहीतो-अवगृहीतः । आवा० ३४४ ।

अथगुण्यते-द्विष्यते । आवा० १४७ ।

अथगहो-अवग्रहः, अव इति-प्रथमतो, ग्रहणे-परिच्छेद-  
नम् । ठाणा० २०३ । अवग्रहः । भोष० २११ । गामा-  
न्यार्थस्याग्रेपविशेषनिरपेक्षानिर्देशस्य रूपादेरवग्रहणम् ।  
आवा० ५ ।

अथग्रह-ओगाह, अथर्कं यथास्वमिन्द्रियैर्विषयाणामाशोच-  
नावधारणं । तरवा० १-१५ ।

अथग्रहाधि-धारण आगन्ते संवर्षार्थं यो पृथगते । भोष०  
३०८ ।

अथघाटनप्रायश्चित्तं-सोपगम्यधितार्त्तनी शोषयति । दन० प्र०  
९३ आ ।

अथघाटो । नि० सू० प्र० १०६ अ ।

अथघ्न-जपन्तः । सूत्र० १०० ।

अवचप-अपचय, हाम, शारीरेभ्य पुद्गलानां विचटनम् ।

प्रज्ञा० ४३० । देशतोऽपगम । भग० ५४० ।

अवचयो-अपचय-हीनत्वम् । सूर्य० १६ ।

अवचनम्-त्रिविधवचनप्रतिषेध । ठाणा० १४१ ।

अवचूलकम् । वृ० प्र० २९८ आ ।

अवचूल-अवचूरुम् । भग० ३१८ ।

अवचलेणसारकखणा - अल्पलयनसरक्षण । आव० ४०५ ।

अवच्ये-अपत्ये । आव० १९९ ।

अवच्छेप-अवच्छेद, देश । ठाणा० २०५ ।

अवजाते-अपजात-अप-हीन, जातोऽपजात, पितृ मका-  
शादीपद्वीनयुग । ठाणा० १८४ ।

अवज्जे-अवयम्, पाप । विशेष० १३१७ । आव० ३६४ ।

अवज्जपडिच्छन्नो - अवयवप्रतिच्छन्न, पापप्रच्छादित ।  
आव० ५३७ ।

अवज्जभीरु-अवयवभीर, सानु । औष० २२४ ।

अवज्जुत्त-पृषाम्भूतम् । आव० ७५८ ।

अवज्झा-अवयवा, गन्धिलविजयराजधानी । ज० प्र० ३५७ ।

अवज्झाभो । ठाणा० ८० ।

अवज्झाणायरिप - अपयानाचरित, अप्रशान्तयानाच-  
रित । आव० ८३० ।

अवट्टिप-अवरिषत, निर । भग० ७२० । एवमुभयरूप

नया । ठाणा० ३३३ । निष्परत्वात् । ठाणा० ३३३ ।

अवस्तिनानि-आश्वतानि । ठाणा० १४२ । अवधे परममेद ।

प्रज्ञा० ५८३ । आव० २८ ।

अवट्टिय-अवस्थित, स्थितम् । भग० ११९ । अवट्टियु

जीवा० २७२ । अवस्थिता-स्वप्रमाणावस्थिता । जीवा०

९९ । स्वप्रमाणेऽवस्थिता मानुशेनरपर्वताद्यदि ममुद्रवत् ।

ज० प्र० ७७ ।

अट्टिया कल्पा-अवस्थिता कल्पा-मामाथिन्मा क्लाम

वदयभ विन । ठाणा० ३७४ ।

अट्टिसगभूय - अचतवक्रभूतम्, शेषकल्पम्, प्रथम

मितार्थे । प्रश्न० १३७ ।

अवडेसग-अवतमक, क्षेत्रक । भग० ३२२ ।

अवडुं वृत्ताडिवाम् । भग० ६७९ ।

अवह्वं-अपार्दम्, अर्धमानम् । सूर्य० ३०, १०४ । अर्द-  
ध्रुवमात्रम् । औष० ८६ ।

अवह्वक्खेत्ता-अपार्दक्षेत्रम्, अपार्दं-समक्षेत्रापेक्षया अर्द-  
मेव क्षेत्रम् । ठाणा० ३६७ ।

अवह्वेत्तं-अपार्दक्षेत्रम्, अर्धमात्रक्षेत्रम् । सूर्य० १०४ ।

पयदशमुहूर्तभोग्य नक्षत्र अभिचिर्वा, पयदशमुहूर्तभोग्यानि  
भरणी आर्द्रा अश्लेषा स्वातिर्ज्येष्ठा च । वृ० वृ० १४८ आ ।

अवह्वगोलावल्लच्छाया-अपार्दगोलावल्लच्छाया, गोला-  
नामावर्णिगोलावर्त्तित्वा छाया गोलावर्त्ति छाया अवा-  
र्द्धाया-अपार्दमात्राया गोलावर्त्तच्छाया । सूर्य० ९५ ।

अवह्वचंदो-अपार्धचंद्र-अर्धचंद्र । वृ० प्र० १०९ आ ।

अवह्वचाविसंठित-अपार्दवापीनस्थित । सूर्य० १३० ।

अवह्व-अपार्दा । ठाणा० १४९ ।

अवह्वो-अर्द्ध । नि० वृ० प्र० १४२ आ ।

अवह्वोमोरिआ-उपार्द्धावमोदरिका, द्वात्रिंशतोऽर्द्ध मोदण,  
एव च द्वादशानामर्द्धमपीपर्वत्तिनादुपार्द्धावमोदरिका द्वाद्-  
शभिरिति । औष० ३८ । भग० २९२ ।

अवणप-अपनय-पूजाभक्तारादेरपनयनम् । ठाणा० ४१८ ।

अवणय-एवाप्ते स्थापनम् । वृ० द्वि० २६३ आ ।

अवणिज्जनु-अपनीयन्ताम् । आव० ४३६ ।

अवणितमूलो-अपनीतमूल, अपनीतमूलत्रिभाग, त्रिभा-  
गनिर्वाणितवाग्, ऊर्ध्वभागादपि त्रिभागहीन इति । जीवा०  
३५५ ।

अवणीओचणीयचयणं - अपनीतोपनीतवचनम्, यन्नि-  
रिखा प्रथमति । प्रज्ञा० २६७ ।

अवणीय अपनीतम्, स्थानान्तरस्थापित निराकृतयुग वा ।  
औष० ३९ ।

अवणीयचयणं-अपनीतवचनम्, निन्दावचनम् । प्रज्ञा०  
२६७ । गुणानपनयनरूपम् । प्रश्न० ११८ । निर्दावचनम् ।  
आचा० ३८७ ।

अवणीयोचणीयचयणं - अपनीतोपनीतवचनम्, यत्रैक  
युगमपनीय गुणान्तरसुपनीयते । प्रश्न० ११८ । अल्पवती  
र्त्नी किन्तु मद्रता । आचा० ३८७ ।

अचणेति-महामणि प्रथायति । नि० वृ० प्र० ११६ आ ।

अचणेज्ञा-अपनयेत्, परिलजेत् । दश० १०६ ।

- अवर्णन-अवर्णः, अवर्णा वा, अनादरः, वर्णनाया अकर-  
णम् । औप० १०५ । अश्लाघामकः । उत० ७१० ।  
निन्दा । भाव० १०३ ।
- अवघृष्टाणो-अपस्नाजम्, तथाविधद्रव्यसंस्कृतजलेन स्ना-  
नम् । विषा० ४१ ।
- अवर्तसो-पुरषव्याधिनामको रोगः । वृ० वृ० ३४९ अ ।
- अवतासृण-बाहार्हि अततासिता । नि० चू० प्र० ११३ अ ।
- अवत्त - अत्रासम्-असृष्टम् । भग० १२७ । अव्यक्तः,  
अष्टानां बर्णनामयो बालः । औप० १६२ ।
- अवत्तदर्शने - अव्यक्तदर्शनः-अव्यक्त-अस्पष्टं दर्शने-  
अनुभवः । भग० ७०६ ।
- अवत्तमय-अव्यक्तमताः, संयतासंयतायवगमे संदिग्धबुद्धयः ।  
विशे० ९३३ ।
- अवत्तव्यं-अवक्तव्यम् । प्रज्ञा० २३४ । यस्वरमगन्देनान-  
रमनन्देन वा स्वस्वनिमित्तशून्यतया वक्तुमशक्ये तत् ।  
प्रज्ञा० २३५ । अनन्तगुणे । दश० २२१ ।
- अवत्तव्यसंचिता-अव्यक्तव्यकर्मचिता-समये समये एक-  
तयोरपन्नाः । ठाणा० १०५ ।
- अवत्ता - छगणमद्वियाए पाणिणय य । नि० चू० प्र०  
२३२ अ ।
- अवत्तित्ता-अव्यक्तिकाः, अव्यक्त-अस्पष्टं वस्तु अभ्युप-  
गमती विद्यते येषां ने । ठाणा० ४१० ।
- अवत्तो-मोलनकारिसारेण वयसा । नि० चू० प्र० २९० आ ।
- अवत्तधर्म-अपार्थक्यम्, पीर्वापर्यायोगादर्शितसम्बन्धार्थं, चतुर्थ-  
सूत्रयोपः । भाव० ३७४ । अस्पष्टार्थम् । विशे० ४६६ ।  
अनु० २६१ ।
- अवत्तारं-अपार्थक्यम् । भाव० ३०६ ।
- अवत्तारियं-अवदारितम्, उद्धृतम् । भाव० ६०७ ।
- अवत्तार्लि-पादादिन्यायेऽधीगमनम् । भाव० ५४० ।
- अवत्तार्लि-अवदारितः । भाव० १०४ ।
- अवत्तार्लियं-अवदारितम्, रविकरं विचारितम् । औप०  
१७ । रविकरार्थं विचारितम् । जीवा० २०३ । यत्रावा-  
षदलनं-विचिनितम् । प्रश्न० ६२ ।
- अवत्तार्लि-अवदारयति-दाकटं स्वस्वामिने विनाशयतीत्यर्थ-  
शैलः । उत० ५४६ ।
- अवत्तार्लेह-अवदारयति, उदारयति । प्रज्ञा० ६०३ ।
- अवत्त-कृकटिका । विषा० ७२ ।
- अवत्तहृणा-दम्बनम् । विषा० ४१ ।
- अवत्तारं-अपत्तारम् । भाव० ३०६ ।
- अवत्तगोलगोलच्छाया-अपार्थक्यगोलगोलच्छाया । सर्व०  
९५ ।
- अवत्तगोलच्छाया-अपार्थक्यगोलच्छाया । सर्व० ९५ ।
- अवत्तगोलपुंजच्छाया-अपार्थक्यगोलपुंजच्छाया । सर्व० ९५ ।
- अवत्तचंद्र-अपत्तमर्दं चन्द्रस्यापार्थक्यचन्द्रः । ठाणा० ७१ ।
- अवत्तजवरासिसंठाणसंदिग्-अपार्थक्यवरासिसंस्थासं-  
स्थितः, अपगतमर्दे यस्य सः, स चासी यवध राशिथ  
अपार्थक्यवरासी तयोरिव वत्स्थानं यस्य तेन संस्थितः ।  
जीवा० ३४३ ।
- अवत्तपोरिसी - उपार्थक्यवरी, अवगतमर्दे यस्याः मा  
अपार्थक्यं सा चासी वीरवी । सर्व० ९५ ।
- अवत्त-मिथ्यात्वकपालनो कपालक्षणम् । भाव० ।
- अवत्तार्य-चूत्वा । जीवा० २६२ ।
- अवत्तारियं-तापप्रेषणतो हृदये विभ्रमितं । म्य० प्र०  
२५७ अ ।
- अवत्तकेदली - केवलद्वितीयमेव । नि० चू० दि०  
१३९ आ ।
- अवत्तधिनः-विशिष्टावधिपरः । भाव० ५०१ ।
- अवत्तज्ञानम्-ज्ञानस्य तृतीयमेव । ठाणा० ३३० ।
- अवत्तज्ञानजिनः-विशुद्धावधिज्ञानः । म्य० प्र० ६५ आ ।
- अवत्तधीयेत्-उपप्रेषेत् । उत० ११३ ।
- अवत्तधीरित-परिभूतः । भावा० १०६ ।
- अवत्तधृतम्-अवज्ञातम् । औप० १५ ।
- अवत्त-अवर्गम्, निन्दा । भाव० ६६२ । अस्लाघामवज्ञा ।  
ठाणा० ३६० ।
- अवत्त-अवज्ञा, परिभवः । औप० १०६ ।
- अवत्तसुरे-अपत्तुपात्, उद्धायेन । दश० १६७ ।
- अवत्त-पर्वणशेषः, येषु वैमानिका देवा अवपन्ति  
अवपन्त च मत्स्यप्रेषणान्नावात्स्यन्ति । प्रश्न० ९६ ।
- अवत्तपील्ह-अवपील्हति, जलेन शोधयति । जीवा० ३२६ ।
- अवत्तपील्ह-अवशोधः, मर्तः । भावा० १२ ।
- अवत्तसासियं-अवसासितं, दुष्टभाषणं, विस्मयं भाषणं । म्य०  
प्र० २७ अ ।

भयमंथित-अथाप्युर्गणितम् । सू० प्र० ८० भा ।

भयमः-लघु पञ्चमिण । टाण० २४० ।

भयमण्ड-भयमन्यते, भयमाऽऽस्तां मन्यते । भग० १६६ ।

भयमण्ड-उचिनप्रतिपत्त्यकरणेन । भग० २१९ ।

भयमद्-भवमद् । जै० प्र० १०१ ।

भयमद्-अपमर्दम्, उपमर्दनम् । प्रथ० ३० ।

भयमप्रतिजागरणम्-गुणविशेष । भाष० ५२८ ।

भयमा-तीना । आत्मा ३३२ ।

भयमाणं-अपमाननम्, विनयश्रेण । प्रथ० ९० । अन-  
-पुण्यातिरिक्तम् । भग० २२७ । मानहरणम् । प्रथ० ४१ ।

अपमानम्, अपूजनम् । औप० ४६ ।

भयमाणो-अपमान, दैन्यम् । प्रथ० १३८ ।

भयमानं-हस्तारि । टाण० १९८ ।

भयमारियं-अपस्मार-अपगत स्मार स्मरणं यस्मात् स  
अपस्मार, तस्मिन् गति तद् रोगिण सर्वविषया मृत्ति  
नश्यति । आचा० २३३ ।

भयमोद्-अवधे-ऊनमुद्-जठरं यश्च स । टाण०  
१४८ ।

भयमो-अवश्यम् । भाष० १०१ ।

भययथाभो-अवधक्यास्तनापका । भग० ४८८ ।

भययस्वंत-अपक्षमाण ( भयम् ) । वृष्टोऽभिमुख निर-  
पनयन । औप० १२७ ।

भययस्त्वमाणस्त्व-अवधक्यभयोऽपक्षमाणस्य वा । भग०  
८९६ ।

भययस्यं-अन्त, अन्तवाचको देशंवननोऽर्थे शब्द ।  
भग० ३० । अवदप्रम् पर्यन्तम् । टाण० ४४ ।

भययणं-अवचनम् । भाष० ३६३ ।

भययथ-अवयवा, प्रतिज्ञादय । दश० ७० । अवयव-  
पमानाहलक्षण । दश० ७३ । अवयवा तथापिपत्त्यत्र  
परिणामापक्षया । टाण० ११ ।

भययधिद्रव्यता-तथाविधैकपरिणामिता । टाण० ११ ।

भययथी-अवयवानां तथास्य महातरिणामविशेषः ।  
जीवा ९१ ।

भययार्णं-नैवविशेष । सू० टि० २२१ भा ।

भययानी-अनुभवंतीगमिनी । दश० प्र० २० भा ।

भययारो-अवकाश, प्रस्ताव । दश० टि० २५ भा ।

भययार्णं-आश्रितनम् । शेष० १६४ ।

भययामणं-व्यापीनामश्रितनम् । सू० प्र० २१० भा ।

भययामि-आश्रितनम् । सू० सू० २६ भा ।

भययामिजमाणो-अपयाम्यमान, अयाम्यवमनो व ।  
औप० १०२ ।

भययामिस्ता-अवकाश । भाष० ३०१ ।

भययामेते-निवादिद्वि, निरोद्धम् । भाष० ४३८ ।

भयरे-अरी, पक्षाकात्मकी । आत्मा १६० ।

भयरजिषयाउ-अपराधवार । भाष० ८३० ।

भयरकंठा-अवरकंठा, शाखायां पोटभाषयनम् अत्र  
९० । पण्डर वेदनी ज्ञानम् । उप्० ६१८ । लम्० ३६ ।

भयरगञ्जभो-अगम्यम् । भाष० ३८२ ।

भयरज्ज-अग्रापति, अग्राधमात्रेऽपि । दश० १०६ ।

भयरहस्यंघटी-विद्या रक्षितं गद्यो भुजे, गद्यभेदस्य  
वितियमत्रो । नि० सू० टि० १५ भा ।

भयरभो-अवगत, अपन्यत । नि० ०३० ।

भयरस्त-अपगत, अपहृत गति, पथमस्तदान ।  
भग० १२३ । स्मृण पृथिव्यजातो । दश० सू० १६८ ।

भयरद्विजवणा-अगद्विजग । भाष० ६३० ।

भयरद्वारिता-अगद्वारिकादि, अगद्वार्यां द्विजं गच्छन्ते  
येषु । टाण० ४१४ ।

भयरद्वे-अगद्वम्, दशम् । उप्० १४३ ।

भयरद्विगा-द्विगा द्विजम्, तस्यां मुनारद्विजायामुपि-  
तायां शास्त्रशास्त्रात्मन्यनेन द्विजैकानेन पश्चिच्छ-विद्यते ।  
भाष० १३० । सर्वशास्त्रस्मिन् पश्चिच्छादि विद्यते । औप०  
१३० ।

भयरभू-अवभू, भयोभू । सू० ४६ ।

भयररायं-अगद्वारं-गद्ये वाचाय नाम । आत्मा  
२१० ।

भयरविञ्जितकूटे-अपरविञ्जितकूटम्, निरपे अगद्वट । जै०  
प्र० ३०८ । अगद्विद्वेषिपुत्रम् । जै० प्र० ३०३ ।

अवरचिदेहे-अपरचिदेहः, मेरोऽम्बूद्वीपगतः पश्चिमचिदेहः ।  
 जं० प्र० ३१० । महाचिदेहापरभागः । ठाणा० ६८ ।  
 निपथे कूटविशेषः । ठाणा० ७२ । नीले कूटविशेषः । ठाणा०  
 ७२ ।  
 अवरवीयाचो-अपरवीजापः । आव० ३८७ ।  
 अवरा-अपरा । आव० ६३० ।  
 अवराइअ-अपराजितः, पद्मबलदेवपूर्वभवनाम । आव०  
 १६३ ।  
 अवराइआ-अपराजिता, शङ्खविजये नगरी । जं० प्र०  
 ३५७ ।  
 अवराओ । ठाणा० ८० ।  
 अवराजिआ-अपराजिता, पूर्वदिग्दर्शकवासव्या दिकुमारी ।  
 आव० १२२ ।  
 अवराजिया-अपराजिता, उत्तरदिग्भाष्यजनपूर्वतस्थोत्-  
 रस्थां पुष्करिणी । जीवा० ३६४ ।  
 अवराह-अपराधः, सुरविनयलङ्घनरूपः । आव० ५४१ ।  
 अवराहखामणा-अपराधक्षामणा, वन्दनके पष्ठे स्थानम् ।  
 आव० ५४८ ।  
 अवहंडिओ-आलिङ्गितः । आव० २७४ ।  
 अवरुज्जय । आव० ६३८ ।  
 अवरुत्तरा-अपरोत्तरा । आव० ६३० ।  
 अवरुद्धो-अवरुद्धः, अन्तर्भूतः । विदो० ११६७ ।  
 अवरेय-अवरेकः, रिफता । उक्त० ३०५ ।  
 अवरेण-अपरेण-जन्मादिना सार्द्धम् । आचा० १६७ ।  
 अवरो-अववातो । नि० चू० तृ० १४६ अ ।  
 अवरोत्परमसंयद्ध-परस्परमसम्बद्धः । आव० ६३५ ।  
 अवण्णे-अवणं, अदलाधा । असदोषोद्धरणम् । ठाणा०  
 २७५ । अयराः, सर्वदिगागमिन्यप्रतिदिदि । ठाणा० ४१८ ।  
 अवन्न-अवणं, अप्रसिद्धमात्रम् । भग० ४८९ । अदलाधा ।  
 ओष० १२१ । अयरा । ओष० १२५ ।  
 अवलंघण-अवलंघित्प्रति अवलंघयं, नो पुग वेतिता  
 मत्तावलंघो वा । नि० चू० प्र० ११९ अ । बाह्यदिमा-  
 त्रैकदेशप्रहणम् । वृ० तृ० २३० अ । अवतरतामुत्तरताम-  
 बलम्बनहेतुभूताः । जं० प्र० ४३ । अवलम्बनः, अवतर-  
 तामुत्तरता चालम्बने हेतुभूतः । जीवा० १९८ । अवलम्बनं  
 देसे प्रहणम् । ठाणा० ३२७ ।

अवलंघणवाहा-अवलम्बनवाहा, उभयोऽप्ययोः पार्श्वयो-  
 रवलम्बनाध्यभूता मितिः । जीवा० १९८ ।  
 अवलंघनीयम्-लम्बयितव्यं रज्ज्वादिनिबद्धं हस्तादिना  
 धरणीयम् । भग० ४७ ।  
 अवलंघमाणे-अवलम्बयन् हस्तवध्वात्प्राप्तौ गृहीत्वा ।  
 ठाणा० ३५३ ।  
 अवलंघमाने-अवलम्बमानः, पतन्ती बाह्यादौ गृहीत्वा  
 धारयन् । ठाणा० ३२७ ।  
 अवलग्ना-सेवकाः । भग० ४६४ ।  
 अवलग्नं-सेवा । आचा० १३२ ।  
 अवलङ्ग-अपलङ्घ्यः न्यङ्कारपूर्वकतया । ठाणा० ४६६ ।  
 इपलङ्घ्यः, अलङ्घ्यो वा । प्रथ० १३८ ।  
 अवलङ्घि-अपलङ्घिः, अलाभोऽपरिपूर्णलाभो वा । भग०  
 १०१ ।  
 अवलम्बय-अवलम्बने-अवष्टम्भादिकां क्रियां कुर्यात् ।  
 आचा० २९३ ।  
 अवलिवाति । ठाणा० ८६ ।  
 अवलितं-वक्ष्य शरीरं वा न वलितं कृतं तत् । ठाणा० ३६१ ।  
 यथाऽऽत्मनो वक्षस्य च वलितमिति- मोहनं न भवति ।  
 उक्त० ५४१ ।  
 अवलितं-अवलितम् । ओष० १०९ ।  
 अवलुपण । आचा० ३७८ ।  
 अवलहणिया-वासु कर्मपेठणी । नि० चू० प्र०  
 १०४ अ ।  
 अवलेखकं-मायाया लक्षणम् । आचा० १७० ।  
 अवलोक्तम्-प्रकाश १ चू० प्र० २०० अ ।  
 अवलोचो-अवलोपः, वस्तुमद्वावप्रच्छादनम् । अधर्मशा-  
 रस्य त्रिशतं नाम । प्रथ० २७ ।  
 अवलग्न । आचा० १०६ ।  
 अवल्लु-गोष्ठी । आव० ६६५ ।  
 अवल्लुखेवा-मविलवा खेवा । नि० चू० द्वि० ७८ अ ।  
 अवल्लुगं । ओष० ३३ । नियमित्ता. (मर०) ।  
 अवधं-अवधम्, चतुरशीतिरववाश्रयभूतमहध्यामि । जीवा०  
 ३४५ ।  
 अवधंगं-अववाश्रयं, चतुरशीतिरववाश्रयभूतमहध्यामि । जीवा०  
 ३४५ । भग० ८८८ ।

अचयंगति । ठाणा० ८६ ।  
 अचयवर्ग-अपवर्ग, गृहान्तर्भाग । दश० ४० ।  
 अचयाद्यय-आपवादिक यद्द्रव्यक्षेत्राद्यपेक्षम् । उप० मा०  
 गा० ४०० ।  
 अचयाओ-अपवाद, द्वितीयपदम् । नि० चू० द्वि०  
 ९३ अ ।  
 अचयाडण-अपवाग्नम्, विदारणम् । भग० १०० ।  
 अचयाति । ठाणा० ८६ ।  
 अचयाय-अपवाद, परद्रव्याभिधानम् । प्रश्न० ११६ ।  
 अचयायसुत्तं-तिष्ठमन्तरागम् इत्यादि । वृ० प्र० २०१  
 आ । नि० चू० वृ० ११ अ ।  
 अचयायाचयाओ-अववाए पुण अओ अवाओ । नि० चू०  
 द्वि० ६५ आ ।  
 अचयायाचयातियं । नि० चू० प्र० २२५ आ ।  
 अचविहे-आजीविक्षेपामकविशेष । भग० ३६९ ।  
 अचवे-कारविशेष । भग० २१०, २७५, ८८८ । मूर्त्य० ११ ।  
 अचध्रावणम्-आयामम् । ओष० १३३ ।  
 अचघृम्भम्-उपग्रह । ओष० १०४ । उक्त० ५५ ।  
 अचघृष्ठा-आकाशान्ता । आचा० २५८ ।  
 अचस्रण्णा-अवसला । आव० ६७ । स्वगूडप्राया ।  
 ओष० ११६ ।  
 अचस्रहो-अवशब्द । आव० ४०१ ।  
 अचस्ररो-अवसर, उपयोगकाल । मृग० ११ । विभाग,  
 पर्याय, देश, प्रस्ताव । विशे० ८३७ ।  
 अचस्रपण । आचा० ३६४ ।  
 अचस्वार्ण-अवधानम् । आव० ३८४ । अत । पज्ञा०  
 ३९७ ।  
 अचसाय-निधय । प्रग० १०४ ।  
 अचसायण-अवध्रावणम्, काणिकम् । वृ० द्वि० १२९ आ ।  
 अचस्त्रिभो-अवन्तित, जित । पदशे० ९९४ ।  
 अचसिद्धतो-अपनिङ्गन्त । आव० ३२० ।  
 अचसोहिय-अवशोध्य, अपनार्य, वृषहृत्, परिहृत्य ।  
 उक्त० ३४० ।  
 अचसेत्त-अवशेषम्, उद्धरितम् । उक्त० ५९६ । भिक्षा  
 प्रकमात्प्राप्तनिशागदरितम्, यदाऽवगत शेषमवशेषम् ।  
 उक्त० ४४४ ।

अचस्कन्द-निविर । आचा० १६० ।  
 अचस्थानम्-संश्रयिणि । मूर्त्य० ७ ।  
 अचस्स-अवश्यम्, निशेगन । आंश० २६५ ।  
 अचस्मकरणिज्जं-अवश्यकरणीयम्, आवश्यकरणीयमे  
 द्वितीयनाम । निशे० ४१५ ।  
 अचह-अव्याप्रियमाण । वृ० द्वि० २७ आ ।  
 अचहट्टण-त्पण । (मर०)  
 अचहट्ट-अपहृत्य, एकरता । भग० १०० । पग्द्वय ।  
 औष० २४ । परिताप्य । औष० ११४ । आहृत्य-निष्कृत्य,  
 एस्त्वा । आचा० ४०० ।  
 अचहट्टअसंजमे-अपहृत्यासयम्-अभिधिनोयारासीनां परि-  
 णपनतो य स । मम० ३३ ।  
 अचहट्टसंजमे-अपहृत्यसयम्-प्राग्भिधिनो यण अण  
 पानमयवाऽपिमुद्रमुपकरण पात्रादि यदाऽनिरिक्त भवेत् तत्प-  
 रिणपनं विधिना । आव० ६५३ ।  
 अचहडे-अपहृत्यम् । भग० २७७ ।  
 अचहप्त-उद्गारम् । वृ० द्वि० ६० अ ।  
 अचहारइ-अवगायते, प्रथमतया स्थाप्यते । मूर्त्य० ११३ ।  
 अचहारय-अपहारणायत् । ठाणा० ४८४ ।  
 अचहाराद-अपहनयन्त-एहीनयन्त । आचा० ३३७ ।  
 अचहारो-अपहार, अधर्मद्वारस्य दशम नाम । प्रश्न०  
 ४३ । जलचरविशेष । प्रश्न० ६२ । अवधार्य-पुत्रराशि ।  
 मृग० ११३ । १० प्र० ५०७ ।  
 अचहितचित्त-एकाग्रमनता । उक्त० ५९९ ।  
 अचहीर्यं-अपधीकम्, अपमदा-निन्या धीर्यमिहस्तत ।  
 अधर्मद्वारस्याणविंशतिनाम नाम । प्रश्न० २६ ।  
 अचहीयम्-अवधीयते, अवगच्छदस्याव्ययत्वेनाने सार्धं वादधो-  
 ऽधो विस्मृत धीयते-परिच्छिद्यते रूपिवस्तु तेन ज्ञानेनेत्य-  
 वधि, अथवा अव-मर्यादया एतावत्क्षेत्रे पर्यन्, एता-  
 वन्ति इत्याणि, एतावन्त बाल पश्यतीत्यादिपरस्परनिय-  
 मितक्षेत्रादिवक्ष्यया धीयते-परिच्छिद्यते । विशे० ७४ ।  
 अचहेडय-अर्द्धगिरीगोमम् । उक्त० १४३ ।  
 अचहेडिय-अवहेडितम्, अनेत्य गो, हेडित-साधित अ गो-  
 नामितमिति । उक्त० ३७७ ।  
 अचाअ-अपाय, उदाहरणस्य प्रथमो भेद । दश० ३५ ।

अथाईण-अवाचीनम्, अधोमुखम् । औप० ७ । अवाती  
नानि, न वातोपहतानि, न वातेन पातितानि । ज० प्र०  
२९ ।

अथाईणपक्षा-अवाचीनपक्षा, अधोमुखपर्णा, अधोमुख-  
पक्षाश्च वा । औप० ७ । अवातीनपक्षा-अवातोपहत  
वर्हा । औप० ९ ।

अथाउड-अश्रावृत्तम्, अवरणरहितम् । दश० ११५ ।  
अश्रावृत्ता । औप० १६७ । प्रावरणाभाव । भग० १२५ ।

अथाउडप-अश्रावृत्तक, प्रावरणवर्तक । औप० ४० । न  
विद्यते प्रावरणकम् । ठाणा० २९९ ।

अथाउडिय-अश्रावृत्तिक, सकलां रात्रिं यावद् अश्रावरणामि  
प्रह्वान् । वृ० द्वि० २९२ अ ।

अथाव-अवाय, अवधारणामको निर्णय । प्रज्ञा० ३१० ।  
अपाय-अवप्रदुशनेन ईहितस्वार्थस्य निर्णयरूपो योऽप्य  
वसाय । प्रज्ञा० ३१० ।

अथावो-अवाय-प्रकान्ताधिनिश्चय । मय० ३४४ ।  
ईहायविवेकनिश्चय । आच० ९ ।

अथावाय-अवाय-प्रकान्ताधिनिश्चय । मय० ३४४ ।  
ईहायविवेकनिश्चय । आच० ९ ।

अथावप्रदेश-गुणम् । प्रज्ञा० ४३० ।

अवातदसी-अपायदसी । ठाणा० ४८४ ।

अवातीणपक्षो-अवातीनपक्ष, न वातोपहतं पक्ष, वाते  
नापातित पक्षम् । जीवा० १८७ ।

अवाते-अपाय-अनर्थ । ठाणा० २७३ ।

अवाद्युणो-अवादान-विशेषतो मयादिवा वीयते, क्त्वाते,  
गृह्यते, अवधिमात्रम् । ठाणा० ४२८ ।

अवाय-अपाय, विवर्ण । विदो० ८७३ ।

अवायदसी-आणालोचनस्य फलिउंचेनस्य पण्डिते अङ्कं  
नस्य समार तन्मन्मरणासीदु-अवाचीयत च परनेमा  
बाए ददिमेति इरनेमे च ओमानिवादी सो अवायदसी ।  
नि० पू० तू० १०८ आ । मानिचारस्य प्राणीविकापा  
यद्वर्णाति । ठाणा० ४८९ । अवायान्-अनपाय तिप्यति  
पमत्रानिवादीदसीदु दुमिदशीकेव्याङ्गनाद् परवर्णयेत् ।  
मन्मरणातोचनानां वा दुर्गभोविकरवादीन् अवायान्  
तिप्यस्य दसेयति । ठाणा० ८२४ ।

अवायाणुपेहा-अवायाणुपेक्षा, आधवाणामपायानामनु-  
पेक्षा । ठाणा० १८८ ।

अवायाणुपेक्षा-अवाचितरेष्म । (त०)  
अवायारे-अव्यापार, इन्द्रियाव्यापार । आच० ६५२ ।

अवायार्ण-देवविशेष । भग० ६८० ।

अविदतो-अलभमान । आच० ५३७ ।

अविधेण-आव्ययनम्, मन्त्रावेक्षणम् । प्रथ० ३८ ।

अवि-अपि, अपिशब्द पद्यवन्धत्वेन पादवर्णार्थ एवावा  
राथो वा । जे० प्र० २४५ । प्रवारवाची । नि० पू० प०  
१६८ आ ।

अविअ-अपिच, अभ्युचये । औप० ३६ ।

अविअतो-अव्यक्त, सुगंध-महजसदिविदविकल्प । सूत्र०  
३४ ।

अविह-समन्ताद् वीचय इव वीचय । उक्त० २३१ ।

अविउट्टमाणो-पीड्यमान । सूत्र० ५१४ ।

अविउट्टकड-अविद्वत्प्रकृता, अव्युत्प्रकृता वा न विद्वेयत  
उत्-प्राबल्यनक्ष प्रकृता । भग० ३२१ । अपिपारद तन्मा-  
वनार्थ उत्-प्राबल्येन च प्रकृता-प्रकृता प्रकृता वा उत्  
हृतः प्रकृ वा । भग० ७०३ ।

अविउस्सिया-अव्युत्प्रकृत्य, अपरिख्यय । सूत्र० ३९४ ।

अविभोगियो-अविवोगिक, वियोगामहिष्णु । आच०  
४२६ ।

अविभोगो-अविवोग, धनदिरत्ययनम् । परिमदस्य  
पक्षविगतितम नाम । प्रथ० ९२ ।

अविभोसित-अव्ययनितम्, अनुपगान्तम् । ठाणा०  
१६६ ।

अविकारधण-अविकारधण-न चतुर्भाषी । म्णा० १ । अवि  
कचनम्-हितमितभाषणम् । आच० २ ।

अविकल्प-अविकल्प, निश्चय । आच० ८४१ ।

अविकल्पुलु-अविकल्पुलु, अविपरिपूर्णा । भग०  
४६१ ।

अविकोविभो-ओ वा नपिभा अङ्को । चः मुञ्जे मुञ्जाने  
विहिमि तो स छर्दं गुण वा ग्राहामो, एते विभोविभो, एतेषां  
च विवर्णितो ओ य पदमन्तात् पण्डित परिषद्वर्जिते  
अर्धविभा अर्धनि । नि० पू० तू० १०९ अ ।

अविद्ययेण-अविद्ययेण-भाटकेन । व्य० प्र० २३८ आ ।

अविद्विज्जि-असकृत्तम्, मूलभमीयदानन्यथापि । दश० २०१ ।

अविद्विषो-आमायमाणो । दश० चू० १२३ ।

अविद्वुल्लं-अपूर्तिवृत्त । (मर०)

अविगणिया-अविमता । आव० ६९२ ।

अविगियचयणो-अविकृतवदन, नात्यन्तनिर्घणितमुख । ओष० १८२ ।

अविगीत-अविप्रतिपक्ष । व्य० प्र० १९२ अ ।

अविगुह-अवारित । (मर०)

अविगहगहसमाचन्नग-अविग्रहगतिसमापन्न, ऋजुगति, स्थितो वा । भग० ८५ । विग्रहगतिनिषेधाद्व्युत्पत्तिक अवस्थितम् । भग० ८७७ ।

अविगहसणे-अविग्रहमना, अकलहचेता अव्युद्ग्रहमना वा, अविद्यमानासदभिविषा । प्रथ० १११ ।

अविघाटा-अप्रकाश । व्य० द्वि० २०३ अ ।

अविघुट्ट-विशोषणमिव यत्न विस्वरम् । ठाणा० ३९६ । विमोक्षणमिव यद्विस्वरं न भवति तत् । ज० प्र० ४० ।

अविचिन्तिय-अविचिन्तितम्, अविचक्षितम् । विशे० ७३ ।

अविच्युति-धारणभेद । दश० १२५ ।

अविज्जा-अविद्या, न विद्या-मिथ्यात्वोपहतवृत्तिसतज्ञानात्मिका । उत० २६२ ।

अविज्जापुरिसा-अविद्यापुरिषा, अविद्या-मिथ्यात्वोपहतवृत्तिसतज्ञानात्मिका तत्प्रधाना पुरिषा अविद्यमाना वा विद्या-प्रभूतधृत येषां ते । उत० २६२ ।

अविद्योपचितम्-अविज्ञानमविद्या तयोपचित, अनामोक्तकृतमिति । सूत्र० ११ ।

अविद्या-अविनय । आव० ७९३ ।

अविद्यासी-अविनासी, क्षणपेभ्याऽपि न निरन्वयनाशयमा । दश० १२९ ।

अविधीअप्या-अपिनीताना, भवान्तरसकृतविनय । दश० २४५ । विनयरहिता अनामज्ञा । दश० २४८ ।

अविधीओ-अविनीत, सूत्रार्थदातृवेन्दनादिचिन्तयरहित । ठाणा० १५ । अविनीता, ये बहुशोऽपि प्रतिशोभमाना प्रमागन्ति, ते न छन्दोऽर्धमाना भवन्ते । वृ० प्र० २५८ अ ।

अविष्णाय-अविज्ञातम्, अवश्यपेक्षया अज्ञातम् । भग० १९७, २०० ।

अवितथभाव-अर्थविनिधय । दश० २३५ ।

अवितहं-अवितथम्, मत्वम् । आव० ७६१ । भग० १०१ ।

अवितहमेयं-अवितथमेतत्-न कालान्तरेऽपि विगाभिमतप्रकारम् । भग० ४६७ ।

अविद्वल्लङ्घो-अद्विद्वृता, न द्विद्वृता अद्विद्वृता, अनुदर्भपाठिता । आचा० ३२३ ।

अविद्वन्तो-अविद्वन् । उत० २७१ ।

अविद्वकधप-अविद्वकणं, अभ्युत्पन्नम् । भग० ६७७ ।

अविद्वध-अविध्वस्त, प्ररोहममर्थ । दश० १४० ।

अविद्यमानम्-मागलयाऽनुपपन्नवमाणम् । जीवा० २७१ ।

अविधिभिन्ने-उर्ध्वगालिका वेद्य कृत तदनुकर्मिणं, यत्पुनस्तिर्यक्वृत्तकालिकाकृत तच्च कल्पाभिधमेते द्वे । वृ० प्र० १७५ अ ।

अविधो-वृत्तिष्ठतो । नि० चू० प्र० २७७ अ ।

अविनेया-प्रहणधारणविज्ञानेदापोहवियुक्ता महामोहाभिभूता दुष्टावप्रहिताश्च । तस्या० ७-६ ।

अविपकृदोसा-कपायेन्द्रियनिग्रहेऽसमर्था, अकीर्तिदा वा । वृ० द्वि० १४१ अ ।

अविपरीतदर्शन-साम्प्रतक्षी । सूत्र० ३९४ ।

अविपु(घु)ट्ट-अविपु(घु)ट्टम्, न विस्वरं कोदातीव । जीवा० १९४ ।

अविपिक्कड-अविप्रकाश, आनुकूल्येन प्रकृता-प्रसन्ता, अथवा न विशेषेण प्रकृता अविप्रकटा । भग० ३०५ ।

अविष्णयासो-अविप्रणाश, गाश्वतं, सिद्धाना नमस्कारार्हये हेतु । आव० ३८३ ।

अविष्णुणं । नि० चू० द्वि० ३१ आ ।

अविषेधणो-अविषयधन, अविद्यमानमन्त्रादिनियन्त्रण । उत० ४७९ ।

अविभाग-अविभागा, अनुभागा । ठाणा० ०२२ ।

अविभागपलिच्छेदो-अविभागपरिच्छेद, चैवन्निष्काशे देनाविभागम् । वृ० तृ० १५ आ ।

अविमणे-अविमता, न शून्यचित्त, अहीनस्थ द्वितीयं नाम । भन्त० ०२१ ।



अविमोक्ति-अविमुक्ती, गृदि । नि० पू० प्र० १५५ अ ।  
 अविष्यं-उच्छिद्यम् । वृ० प्र० २७१ आ ।  
 अवियसप्तकुलं-जत्य बहुणावि कालेण भिक्षया न लब्धम् ।  
 दश० पू० ७७ ।  
 अवियस्रो-अविदाप, अतृप्त । ( महाप्र० )  
 अवियाह-इत्येवमारीनुद्दिद्य । आचा० ३५३ ।  
 अवियाउरी-अप्रसविनी । आव० २१२ ।  
 अवियरणओ-अविज्ञानर, हिताहितप्राप्तिपरिहारशून्य  
 मना । आचा० ७० ।  
 अवियारं-अपराक्रममप्रभवति काले । ( भक्त० )  
 अवियार-अविवारम्, चेष्टामकविचारविरहितमरणानशन-  
 तप । उक्त० ६०२ । अविकारा-गीतादिविकाररहिता ।  
 वृ० प्र० ३१० आ ।  
 अवियोगज्ज्ञवसाणं-अवियोगाध्यवसानम्, अविप्रयोग  
 दृढाध्यवसाय । आव० ५८५ ।  
 अविरद्-अविरति, इच्छाया अनिशृति । भग० १०१ ।  
 अविरद्दय-अविरतिक् । आव० २१८, ६२०, ६४०,  
 ४०४, ५६० । दश० ८९ । गृहस्थी । ओष० १२४ ।  
 अविरप-अविरत, प्राणतिपातादिविरतिरहित, विशेषेण  
 या तपनि रतो शे न भवति स । भग० ३६ ।  
 अविरओ अविरत, नविरत, सावयव्यापारादिनिवृत्तमना ।  
 प्रज्ञा० २६८ ।  
 अविरतओ-अविरत । आव० ३५६ ।  
 अविरतकायिकी-वायिक्रीमिनाया प्रथमो भेद । मिथ्या  
 दृष्टेरविरतसम्यग्देष्ये उक्तेषोपादिदृक्षण क्रिया तर्मेवन्ध  
 निवन्धना । आव० ६११ ।  
 अनरिति-अविरति, अत्रक्त । टाणा० ३७२ । अल्प्या  
 रुयानमभवत् अविरतिहो भोव, शक्यम् । टाणा० ४९२ ।  
 अविरति । आव० ९२ ।  
 अविरतिया-अविरतिका, न विद्यते विरतिर्यस्या सा ।  
 टाणा० ३७२ । अविरतिका । आव० ३९६ ।  
 अविरत्ताप-अविरक्तता विप्रियकरणे । भग० ५७९ ।  
 अविरत्तो-अनिरक्त । औष० १३ ।  
 अविरत्य-अविरत, अनिष्टम् । प्रश्न० ३० । मिश्रवाग्नि  
 नम्यस्तुभिश्च । आव० ५८८ ।

अविरत्यसम्महिद्वी-अविरतसम्यग्दष्टि, देगतिरतिरहित  
 सम्यग्दष्टि, भूतप्राप्तस्य चतुर्थे गुणस्थानम् । आव० ६५० ।  
 अविरलं-परस्परसन्नम् । प्रश्न० ८३ ।  
 अविरलपत्तो-अविरल्पत्र । जीवा० १८७ ।  
 अविरहिप-अविरहितम्-बृहस्पतिरहितन्यायादपि न विरहित,  
 अथवा प्रदीर्घकालोपभोग्याहारस्य सकृद्ग्रहणेऽपि भोगोऽनु  
 सम्य स्यादतो ग्रहणस्यापि सातत्यप्रतिपादनार्थम् । भग० ।  
 २० ।  
 अविरहिय-अविरहित, अविमुष । आव० ५३२ ।  
 अविरहो-अनिरह, सातत्येनाप्यस्थानम् । आचा० ६९ ।  
 अविराहर्षं-अविराधना । भग० ८६८ ।  
 अविराहियसंजम-अविराधितसयम, प्रज्याकालादार-  
 ध्याभ्रमचारित्रपरिणाम, तज्ज्वलनकपायसामर्था प्रमत्तगुण  
 स्थानकसामर्थादि स्वल्पमाशादिदोषसम्भवेऽप्यनाचरितव-  
 रणोपपात । भग० ५० ।  
 अविरिका-अविरक्ता, अविभक्तिक्था । वृ० तृ० २४३ अ ।  
 अविरिक-रोग । व्य० द्वि० १३७ अ ।  
 अविरुद्धो-अविषुद्ध, वैनयिक । औष० ९० ।  
 अविलं-लेखनिकं । दश० पू० ६ । गडुलमाजुल वा ।  
 सम० ५३ ।  
 अविलंविष्यं-अविलम्बितम्, नातिमन्यरम् । भग० २९४ ।  
 अमन्यरम् । ओष० १८७ । अनतिमन्दम् । प्रश्न० ११२ ।  
 अवियञ्जओ-अविपर्यय । विशेषे ६४१ ।  
 अविशुद्धकोटि । आचा० २७१ ।  
 अवियन्न-अविपन्न, अप्राप्तविपन्न मन्नादिभिरनियमित्त ।  
 उक्त० ८०९ ।  
 अविसेस-अविशेष, विशेषरहित । भग० ९९१ । प्रज्ञा०  
 ७४ ।  
 अविसधि-प्रवाहणाव्यवच्छिन्नम् । भग० ४७१ । अन्य  
 वच्छिन्नम् । आव० ५६१ ।  
 अविसंवायण-अविसवादनम्, पराविप्रतारणम् । उक्त०  
 ५९१ ।  
 अविसंवायणाजोरो-अविसवादानजोरो । टाणा० १९६ ।  
 अविसादी-अविवादी, चिन्तारहित, अदीनस्य पद्यम नाम ।  
 अन्न २२ ।  
 अविस्मारओ-अविशारद । प्रज्ञा० ६० ।

अत्रिमुद्रलेखे - अविशुद्धलेख, कृष्णादिरेख । जीमा०  
१४० । विभक्तज्ञान । भग० २८४ ।

अत्रिमुद्रो - पायुष्मकी तेषां मज्जातो जो आगतो विहाग  
मिमुद्रा तस्मै जो पु० गोचरी मो अत्रिमद्रो । नि० चू०  
दि० ११३ अ ।

अविसेसियं - अविशेषितम्, विशेषहितम् । ज० प्र० ८८ ।

अविसोहिफोडी - अत्रिप्रोधिकोष्ठी । दृग० १६२ ।

अविहृड - गाल्य ( देख्याम् ) । चू० प्र० ।

अविहृममाण - विरिषि परीपहोपगर्भेन्यमानो विहृम्य  
मान, न विहृम्यमानोऽविहृम्यमान, न निर्विण्ण मत्र  
वैदानस्य गार्दप्रमन्यद्वा वाक्यमरण प्रतिपत्त इति । आभा०  
२५९ ।

अविहाड - अग्रभ । व्य० दि० ३७९ अ ।

अविहाय - अत्रिभ०व्य, अविभावनीयस्वरूप । प्रथ० १९ ।

अविहि - अविधि । आग० ५२ । अवतना । चू० दि०  
१५ अ ।

अत्रिहिमहिभ - अत्रिधिग्रहणम् अशुद्धस्व-उड्मादिदोषा  
जिनस्य यद्ग्रहण, अथवा गुडादिद्वयस्य मण्डकारिणा  
प्रच्युतं यदेतत् पात्ररुदो स्थानत तत् । आप० १९२ ।

अत्रिहेपरिट्टावणिया - अत्रिधिपरिष्ठापिका । आग०  
५३८ ।

अत्रिहेडण - अत्रिहेडन न क्वचिद्वितेऽनादरवान । न्य०  
२६६ ।

अमीह - अवीचि वीचि - नि रुद्रस्तद्भावान् । उक्त० २३१ ।

अवीरिण - अवीर्य उधानानि क्रियाविरुद्ध । भग० ९५ ।  
मानसगतिर्जात । भग० ३०३ ।

अमीर्य - अवीर्य विज । भग० ९५ ।

अवीसंभो - अविप्रमभ अविश्राम, प्राणरुपस्य तृतीय  
पर्वीव । प्रथ० ५ ।

अमीहीपुनडण - अविधिप्रण, वक्षपात्रागुपस्वय विहाराथ  
सुदुप्राय वृच्छनि । चू० प्र० २४१ अ ।

अनुध - अपुयम् । उक्त० ११० ।

अनुत्तपूर्वम् । आब० २३० ।

अवेइअ अवैत, मनसाऽन्यनालायिन । आब० ११५ ।

अयोनिछन्ना - अयुडिणया यावदेकाऽपि निष्पन्न तान्त ।  
आब० ७२७ ।

अन्युच्छेदम् - पाण्यगिण्यरिण्य, रिण्येणार्थानां अन्व-  
विदि यावदनरिण्यप्रयत्नप्रयोगम् । गम० ९३ ।

अन्युद्धो । दृग० चू० २७ ।

अन्युण - अन्वयम्, अन्वयदिनम् । भग० ११० ।

अन्युओ - अन्वय, अन्वयान्दराय । जीमा० १८३ ।

अन्युते - अन्वय पयायापगमेऽप्यन्तन्पर्वीकतया । गणा०  
३३३ । अन्वयगोभया । टाणा० ३३३ । अन्वयमात्र ।  
भग० ७९० ।

अन्यत्तं - अन्वयक, अन्वयकमत्, अन्वयकमत्, संयत्तान्तो  
सन्दिग्धपुदि । आब० ३११ । अन्वयम् । अत्रि० १०९ ।  
सन्दिग्धपरिणत, अनिर्देश्यम् । रिण्ये० १०० । अत्रिगर्भम्  
गुरो सन्दिग्धो यदात्तेन तत् । टाणा० ४८४ ।

अन्यत्तगामत्रिया - अन्वयकमत्प्रति, इषागिण्यन्वयक-  
हारत रीषिप्रवृत्तिनाया परतोऽगन्त्यान्वयकहारतस्य  
स्यात्तत्तेनागन्त्यान्वयकत्वेन च वक्षु न सन्वयेऽपानर-  
क्तस्य स चैव सन्वयान्त्वन्वयेन - एवमेव एवमेव पादो  
मथिता । भग० ७९६ ।

अन्यत्तलिंभो - अन्वयकम् । आग० ३०२ । अन्वय-  
कम् । आग० ५६० ।

अन्यत्तस्त अन्वयकम् - अर्गीताभ्यस्य मन्वयार्थपरिनिष्ठितम् ।  
आचा० १९६ ।

अन्यत्तो - तत्र अन्वयकस्य रोमनमो न भवति, तत्र  
अहवा तत्र मोन्वयकारेणा तत्र अन्यत्तो । नि० चू०  
नू० ८० अ । प्रतुऽर्गीतार्थं वयति अर्गीक पोऽगन्व्य ।  
चू० नू० १३० अ । अर्गीकट्टी । नि० चू० प्र० १७३ आ ।

अन्यत्त्या - अन्वयका । जीमा० ९९ । अन्वयकदराया,  
मन्वयकस्य स्वरूपान्तस्य तावुचिन्वयकम्भवात् । ज० प्र०  
२७ । तन्वयकम्भवेऽप्यत्रिहृण । त० प्र० १०७ ।

अन्यत्तमितस्त अन्वयकमितम् - अन्वयकमितोऽप्यत्रिहृणो  
या । टाणा० १७६ ।

अन्यत्तियो - अन्वयकित, परतनापादितम् । त० प्र०  
१६ । जीमा० ९९ । आचा० ४०४ । अर्गीतमना ।  
गणा० ३३० । अन्वयो । गणा० चू० १०३ ।

अन्यत्ते - अन्वयकम्, देवादिहृणोपयगान्तिनित अन्वय-  
कं च यथा तस्या अभावो अन्वयकम् । टाणा० १९० ।

अन्यत्त आस्वान, नडान, नडानम् । अत्रि० १०३ ।

**अव्यायाधे**, ०हं-अव्यायाधम्, केनापि विवाधयितुमशक्य-  
त्वात् । जीवा० २५६ । वन्दनके मृदीयं स्थानम् । आच०  
५४८ । अव्यायाधः, परेया पीडाकारित्वाभावाद्दिनष्टयाधः ।  
भग० ७ । अव्यायाधम्-उपरतसकलमीडं मौक्तम् । उत०  
५७६ ।

**अव्यायाह**-शुकाभिमानवासी सप्तमो लोकान्तिकदेवः ।  
भग० २७१ । ठाण० ४३२ । अव्यायाधः सप्तमलोकान्ति-  
कदेवः । आच० १३५ । अपीडाकारित्वम् । सम० ५ ।

**अव्यायाडा**-अव्याहृता, अस्पष्टा अप्रकटार्था, असत्यामृपा-  
भाषानेदः । दश० २१० ।

**अव्यावारपोसहे**-अव्यावारपीयधः । आच० ८३५ ।

**अव्याहयं** - अव्याहृतम्, एकान्तिकमिहृपरलोकाविशुद्धं  
फलान्तरावाधितं वा । आच० ४१५ ।

**अव्याहितो**-अव्याहितः, अनाहृतः । जीवा० १६६ ।

**अव्यतिगिद्ध** - अव्यतिगृहे, उद्धाटया पौरुषामित्यर्थः ।  
व्य० द्वि० २२७ आ ।

**अव्युक्तार्ह** - अव्युक्तान्ताः, अधिष्वस्तपर्यायाः । आचा०  
३४८ ।

**अव्युच्छितिनयद्वया**-अव्युच्छितिनयार्थता, द्रव्यास्तिक-  
नयमतम् । सूर्य० २८६ ।

**अव्युच्छिन्ननयद्वया**-अव्यवच्छिन्ननयार्थता, द्रव्यास्तिक-  
नयमतम् । सूर्य० २५८ ।

**अव्यो**-सवोधने, अहम् । व्य० द्वि० २०३ आ ।

**अव्योगडं**-अव्याहृतम्, पुरुषनिर्देशपतोऽनाख्यातम् । भग०  
१०० । दायदादिभिरविभक्तं अननुज्ञातं वा । वृ० वृ०  
५० अ । अव्याकृतं नामदायिना मामाग्यं न पुनरनेवि-  
भक्तं, यदिवितृतं न केनापि विहारमापादितं, यद् भवेत्  
पूर्वराजेन संदिष्टे, वंशस्य परम्परया समागतम् । व्य० द्वि०  
२७५ आ । अविभक्तम् । व्य० द्वि०  
२७५ अ । अव्यक्तोऽपरिस्पृष्टः । आचा० ३२० ।

**अव्योगडा**-अव्याहृता, अविमथता । आच० ७२७ । हुने  
ऽपि भागे निर्देशातीना अनिक्ता । वृ० द्वि० ११५ आ । अत-  
गम्भीरशब्दार्था, अशब्दाक्षरप्रयुक्ता वा अनामप्रयुक्ता-  
भाषेदः । दशा० २५६ ।

**अव्योच्छित्तिनय** - अव्यवच्छित्तिनय, द्रव्यास्तिकनय ।  
उत० १५ ।

**अव्योच्छित्तिनयद्वया**-अव्यवच्छित्तिनयार्थता, अव्यवच्छि-  
त्तिप्रधानो नवोऽव्यवच्छित्तिनयस्तस्यार्थो-द्रव्यमव्यवच्छिप्ति-  
नयार्थस्तद्भावस्तता । भग० ३०२ ।

**अव्योच्छिन्न**-अव्यवच्छिन्नम्, अखण्डितम् । आचा० ४०५ ।  
अव्यवच्छिन्नाः, अनवरतम् । ओष० १२६ ।

**अव्योच्छिन्ना**-वृत्तेऽपि ममो मूलराशेरव्यवच्छेदो यावत् ।  
वृ० द्वि० ११५ आ ।

**अव्योच्छिन्नाओ**-अव्यवच्छिन्नाः, व्यवच्छिन्ना-जीवरहिता  
न व्यवच्छिन्ना अव्यवच्छिन्नाः । आचा० ३२३ ।

**अव्योयडा**-अव्याहृताः, गम्भीरशब्दार्था मन्मनाक्षरप्रयुक्ता  
काऽनाविभाविताः । भग० ५०० ।

**अक्षरणाशुभेक्षा** - अक्षरणस्य-अक्षरणास्यात्मनोऽशुभेक्षा ।  
ठाण० ११० ।

**अनुपिरे**-अनुपिरे, वृणपणशिनार्थिः । उत० ५१८ ।

**अशून्यान्तरा**-न शून्यानि अन्तराणि मासां ता । आच०  
३५ ।

**अशोकपल्लवमधिभक्तिः** - विनाशितो नोऽधिधि ।  
जीवा० २४७ ।

**अशोकलता**-लताविशेषः । आचा० ३० ।

**अशयः**-(अम), शोण, कोशय । ठाण० ४३५ । चतुर्दि-  
ग्विभागोपलक्षिता शरीराशययाः पर्यङ्गमनोपदिष्टस्य ज्ञानु  
नोरन्तरं, आनन्दस्य ललाटोपरिभागस्य चान्तरम्, दक्षि-  
णस्त्रयस्य ज्ञानुनधान्तरम्, चामस्त्रयस्य दक्षिणज्ञानु-  
नधान्तरमिति । ज० प्र० ११ । चतुर्दिग्विभागोपलक्षिताः  
शरीराशययाः । ठाण० ३५७ ।

**अश्रुतनिश्चितम्**-वस्तुनः पूर्वं तदपरिनिमित्तमते क्षयोपश-  
मपटीश्वस्तादीर्यतिक्रयादिलक्षणमुपजायते तत् । आच० ९ ।

**अद्वन्द्वमः**-वाहनः । उत० ६० ।

**अद्विती**-द्वयं नक्षत्रम् । दश० २३६ ।

**अष्टभाग**-अष्टभागो-अष्टमो भागः । भग० ८३२ ।

**अष्टमीपौषध**-अष्टमीपौषधो-अष्टम्या पौषा-उपवसना-  
दिषोऽष्टमीपौषधः । आचा० ३०७ ।

**अष्टमीपौषधिया**-अष्टमीपौषधिया-उपवसः । आचा०  
३२७ ।

**अष्टापदम्**-अष्टापद, मूर्धापदोप । आचा० ४१८ । आच०  
२८० । वृ० वृ० ५२ अ ।

अष्टाष्टकिका-चतु पट्टि । व्य० द्वि० ३४७ आ ।  
 अष्टीचती-जातुनी । प्रश्न० ८० ।  
 अष्टीचान्-जातु । जीवा० २७० ।  
 असंकल्पिय-असल्पित, असङ्कल्पितानि च तानि शब्दादि-  
 विषयभावेन परिणतद्रव्यरूपाणि । वित्ते० १४५ ।  
 असंकमणो-असङ्कमना, न विद्यते शङ्का यस्य मगस  
 स्तदाङ्गम्, असङ्क मनो यस्य स । आचा० १२२ ।  
 असंकिया-असङ्कित । आच० ५६१ ।  
 असकलित्-असङ्कृष्टम्, निर्दूषणम् । औप० ४९ । विशु  
 द्धमानपरिणामवान् । प्रश्न० ११० ।  
 असंक्षेपकालः । ठाण० २७८ ।  
 असंखड-कलह, वैरं वा । वृ० तृ० ४८ अ । वृ० प्र०  
 ८६ अ । नि० चू० प्र० ३१ अ । कलह । ( गगि० ) ।  
 औप ८० ।  
 असखडबोलो-कलहबोल । आच० ६५४ ।  
 असखडि । आव० ६३० ।  
 असंखडिओ-असङ्कृतिक, कलहकारक । औप० १५१ ।  
 असंखय-असङ्कृतम् । दश० १०५ । उत्तराध्यायेषु चतु  
 र्धमध्ययनम् । उक्त० ९ । सम० ६४ ।  
 असंखया-असङ्खयना, मङ्गुपाविरहिता । उक्त० ३१६ ।  
 असंखेज्जजीविया - असङ्खयताजीविका वृक्षविद्योषा ।  
 भग० ३६४ । यथा निम्वाप्राचीना मूलकन्दरुक्त्तवस्त्रा  
 राप्रवाला । ठाण० १२२ ।  
 असंखेज्जप्रिथडे-असङ्खेयविस्तृत, असङ्खेयैः विस्तृत  
 यस्य स । जीवा० १०६ ।  
 असंखेप्पदा - असङ्खेप्यादा, त्रिभागादिना प्रकारेण या  
 सङ्क्षेप्तु न शक्यते सा चासौ अदा च । प्रश्न० ४८९ ।  
 असङ्खयेयकः । अनु० २४० ।  
 असगहरई-असङ्गहादि, गच्छामहत्तरस्य-मीठादिकस्यो  
 पकरणस्थेषां दोषमित्युक्तस्य सभ्यमानस्यात्मभरिवेन न  
 विद्यते सङ्ग्रह रत्विर्स्यासौ । प्रश्न० १२५ ।  
 असंगे - अतस्त, वैधमणस्य पुत्रम्यानीशो देव । भग०  
 २०० ।  
 असघयणो - आदिर्द्वि तिहि सघयणेहि वजितो । नि०  
 चू० तृ० १३० अ ।  
 असंघानिनो-एगगिओ । नि० चू० द्वि० ७९ अ ।

असंचद्वया-असचयिता -ने गामिके द्वैमासिने त्रैमासिके  
 चतुर्मासिके पञ्चमासिने षष्णमासिने वा प्रायश्चित्ते षण्णन्वे  
 ते । व्य० प्र० ९७ आ ।  
 असुचेअयओ-असुचेतयत, अज्ञानानस्य । औप० २२० ।  
 असंजअ-असयत, गृहस्थ । आचा० ३४२ । अप्रशान्ता-  
 ध्वयमायवान् । वित्ते० १०२७ ।  
 असंजगविसओ - भगवया पडिषिद्धो । नि० चू० द्वि०  
 १८ अ ।  
 असजण-असगो, अगेही । नि० चू० प्र० ८१ अ ।  
 असजमो-असयम, प्राणवधस्य चतुर्दशपर्याय । प्रश्न०  
 ५ । अथमंदारस्य पष्ठ नाम । प्रश्न० ४३ ।  
 असंजय - असयत चरणपरिणामशून्य । भग० ४५ ।  
 गृहस्थ । दश० २२२ । असयमवान् । प्रश्न० ३० ।  
 असंजलं - जम्बुद्वीपरिवर्ते पञ्चदशतीर्थकरनाम । सम०  
 १५३ ।  
 असंजातकिणस्कन्धः । आचा० ८७ ।  
 असंजोगरया-असयोगरता -सयोग-सम्बन्ध पुत्रकलत्र-  
 मित्रादिनिमित्तान् रता सयोगरतामादिपर्ययैकत्वभावना-  
 भाविता असयोगरता । आचा० १८० ।  
 असंजोगिमे - असयोगिम, सयोगिमादिपरीत आदिल-  
 विम्वादि । उक्त० २१२ ।  
 असज्झा-असञ्ज्ञा, विगतसञ्ज्ञा । औप० २०२ ।  
 असज्णी-असञ्जी-अविदितपूर्वगूढातम् । व्य० द्वि० ३७७ आ ।  
 असज्जई-असन्तान, अयथा वा । वृ० प्र० । अमन्तति  
 (ता) परिणामविद्येय । आच० ८४८ ।  
 असतक-असत्कम्, असदर्शाभिधानरूपवान्, द्वितीयाधर्म  
 द्वारस्य पञ्चम नाम । प्रश्न० २६ ।  
 असंतगं-असत्, असद्गतार्थम् । अशान्त-अनुपगमप्रधा-  
 नम्, असोभन वा । प्रश्न० १२१ । असत्क-अविद्यमाना-  
 र्थम्, असत्वमिति । प्रश्न० ३६ ।  
 असंतती-भावणवो-छेदो अभाव इत्यर्थः । नि० चू० द्वि०  
 ११६ अ ।  
 असंतय - अशान्तक, अनुपशान्त, अमन्-असोभनम् ।  
 प्रश्न० ४१ ।  
 असंतरणए-असस्तरणे । औप० १४३ ।  
 असतासते-मागितम्याप्यलभ । वृ० द्वि० ७७२ आ ।

असंते-असत्, नाभाववचन शब्दोऽयम् । आचा० ७४ ।  
 आवयमान । उक्त० ६१७ ।  
 असंतोसो-असन्तोष, परिग्रहस्य त्रिभूतम नाम । प्रथ०  
 ३३ ।  
 असंधडाई-अससतानि, वीजादिभिरग्वानासि । उक्त०  
 ४८७ ।  
 असंधडो-छद्ममादिषा तवेण क्लितो असयडो, गेलण्ण  
 वा दुष्परलक्षारीरो, दीहटाणेण वा पञ्जत अलभंतो । नि०  
 चू० प्र० ३१३ अ ।  
 असंधरताणं-अयुधक्षताण । ओष० ७८ ।  
 असंधरमाणा-असस्तरमाणा, अतृणा । ओष० ७८ ।  
 असंधरे-अपरतरताम् । ओष० १५४ ।  
 असंधुओ-इय वदरितो सणायगो अनायगो वा । नि० चू०  
 द्वि० १२१ अ ।  
 असंधिग्धम्-वाण्यनिशयविशेष, असशयकारिता । मम०  
 ६३ ।  
 असंधिग्धवचनता-परिस्फुग्धवचनता । उक्त० ३९ ।  
 असन्दिद्ध-अमन्दिद्धा, स्पणम् । दश० २१३ । अमन्दि  
 र्धम्-सूतस्य द्वितीयगुण, सैन्धवशाब्दव्युत्पन्नधोक्तयनेना  
 र्धसशयकारि न भवति । आच० ३७६ । मन्देहवर्षितम् ।  
 मग० १२१ ।  
 असन्दीणो-अमन्दीन, सन्दीभादितर जलत्पावनान् न  
 क्षयमाप्नोति । उक्त० २१२ । आदिल्लचन्द्रमण्वादि । आचा०  
 २४७ । प्रचुरेन्धनतया विरक्षितमालवस्त्राधि । आचा०  
 २४७ । कपतापन्टेदभिर्घणितोऽमदीन । आचा० २४८ ।  
 वृत्तर्षाप्रशुष्यतयाऽमन्दान अधोऽय, प्राणिना ज्ञाणया  
 द्वागमभूमि । आचा० २४८ ।  
 असंधिप-अमन्धिन, असंधोचिन । उक्त० २१० ।  
 असंधिया-पौरजिता । नि० चू० प्र० १११ अ ।  
 असनिहिंसचय-असन्निधिसदय, न विद्यते माक्षधिरप  
 मयसो यस्य न । जीवा० २७८ ।  
 असपभोगचिता-कथविदभाव मत्तयप्रयोगविन्ना ।  
 आच० ५८१ ।  
 असपभोगाणुस्तरणं-मति प्रयोग मत्प्रयोगानुस्तरणम्-  
 विन्ननम् । आच० ५८१ ।

असंपग्गहिया-असंप्रहिता-सपप्रहरहितता । व्य० द्वि०  
 ३९१ अ ।  
 असंपत्त-असम्प्राप्त । दश० १९४ । असलप्रम् । जीवा०  
 १८१ । त्रिषिष्टान् वर्गादीननुपयत । जीवा० २३ ।  
 असंप्रग्रह-आत्मनो जालायुत्सेकरूपग्राहवर्जनमिति भाव ।  
 ठाणा० ४२३ ।  
 असंप्रग्रहता-असम्प्रग्रह, समन्तात्प्रवर्षेण जालादिप्रह  
 टतालक्षणं प्रहणम्-आत्मनोऽयधारण सम्प्रग्रहस्तद्भाव ।  
 जालायनुदिसत्त्वेति । उक्त० ३९ ।  
 असफुरो-असहत । वृ० वृ० ३ आ, वृ० द्वि० २२४  
 आ । सङ्घुचिन्तापदो, गान् । वृ० द्वि० २२९ अ ।  
 असयद्ध-अमयद्धम्, स्वरीरात्पृथग्भूतम् । जीवा० १२० ।  
 असमते-असम्प्रान्तम्, असम्प्रान्तज्ञान । मग० १४० ।  
 असंभवंता-अप भवन्त, ते गौरवत्रिधान्यतरदोवाज्जन्-  
 नादिके मोक्षमार्गे न सम्प्रभवन्त-नोपदिशे वर्तमाना ।  
 आचा० ३५० ।  
 असंभासो-असम्भाष्य । आच० २२१ ।  
 असभम-अमय्यम, न भय वर्तंयम् । ओष० ५२ ।  
 असमत्त-अमय्यक्त्वम्, डाविशानिनम परीवह । आच०  
 ६५७ ।  
 असंलोप-असत्रोक्ते, न विद्यते सत्रोको-दूरस्थितस्यापि  
 स्वपक्षदिरालोको यदिसंस्तन् । उक्त० ५१८ । आचा०  
 ३३५ ।  
 असववहारिप-अयववहारिक, अनादिनाशदालय  
 निर्गोहावध्यासुपगता एवावतिष्ठन्ते ते व्यवहारपथादीन्  
 त्वात् । प्रज्ञा० ३८० ।  
 असत्रिग्गा पातःशोणगो पुर्णालो मयतो अहृद्यो । नि०  
 चू० वृ० ३३ अ ।  
 असत्रिग्गाग्नि-मविभजति-गुह्यगनवालादिभ्य उचितमस  
 नादि यन्तरीयवरील सचभागी, न तथा य आ मयापफ  
 त्पदेन स । उक्त० ४३४ । आचार्यगान्नादीनामेपगुण  
 निशुद्धिश्च सप्त विभक्तयेऽपि । प्रथ० १२१ ।  
 असंयुद्धण । नि० चू० प्र० २१६ अ ।  
 असंयुद्धयत्सो-असन्तयुद्ध, यो मृत्गुणादिवन्न  
 मत् ररानि, वदुगम्य चतुवा भेद । उक्त० २५६ । मग०  
 ८० । प्रवर्णरा । ठाणा० ३३० ।

असंबुडे-असहृत, प्रमत । भग० ३१५ ।  
 असंबुद्धम्-सद्भीष्मम् । भाष० ७६० ।  
 असंसद्वा-दायगो अससद्देहिं हृत्यमतेहिं देति । नि० चू०  
 तृ० १२ अ । अससृष्ट-अक्षरद्वय । ठाणा० ३८६ ।  
 असंसारसमावण्णा-अससारसमावणा, मुक्ता । प्रशा०  
 १८ ।  
 असंसारो-अससार, समारप्रतिपक्षभूतो मोक्ष । जीवा०  
 ८ । न ससारोऽससार, मोक्ष । प्रशा० १८ ।  
 असंसहनन-असपयण, आदिमाना त्रयाणां सहननानामन्य  
 तमेनापि सहननेन विकल । व्य० प्र० ११४ अ ।  
 अस-अदानरूपाणि । व्य० द्वि० १२९ आ ।  
 असद्-असहृद्, अनेकधा । उत० ३१३ ।  
 असद्-अगति, अवाह्यमुखदस्ततलरूपा मुष्टि । ज० प्र०  
 २४४ ।  
 असद्-अगती । ओष० १४६ । मस्तरणाभावे । घृ० द्वि०  
 १९३ आ ।  
 असद्पोषणया-अनतीपोषणता, अयती पोषयति । भाष०  
 ८२९ ।  
 असङ्गो-असहृत, स्वभावसम्पन्न । भाष० ११४ ।  
 असङ्ग-असङ्गुन, न विद्यते सङ्गुन-संस्कारो यस्य स ।  
 अमस्कृत-अविद्यमानसंस्कार । प्रश्न० ४१ ।  
 असङ्गमसङ्ग-असङ्गनामस्कृत, अविद्यमानसंस्कारम  
 संस्कार । न विद्यते संस्कृत-संस्कारो यस्य सोऽसंस्कृत,  
 असंस्कृत-अविद्यमानसंस्कार । प्रश्न० ४१ ।  
 असंगडतातो-ज्ञानासहन । (मर०)  
 असंगडपिया-अशक्यपिता, अशक्यनाया पिता । उत०  
 १३० । नामविशेष । व्य० प्र० १८ अ । नि० चू० प्र०  
 १५ अ ।  
 असंगडा-अशक्य । उत० १२९, १३० । एतज्ज्ञानी  
 आमीरपुत्री । दश० १०९ ।  
 असंगडातए-अशक्यपिना । व्य० प्र० १८ अ ।  
 असङ्घसधत्तर्ष-असङ्घसङ्घरत्नम्, असङ्घ-अलीक सन्द  
 धाति अङ्गिच्छं करोतीति, तद्वाच । द्वितीयाधमंद्वासर  
 पठविगतितम नाम । प्रश्न० २६ ।  
 असङ्घो-असङ्घ, मन्त्रोपहित । प्रश्न० ३० ।

असङ्घर्ष(घर्ष)-प्राभ्यवचनं, कर्कशं, कटुकं, निष्ठुरं, अचारा-  
 दिक वा । नि० चू० तृ० ८० आ ।  
 असङ्घाद्यं-असाध्याधिक्यम्, अशोभन आध्याय एव,  
 स्थिरादि कारणे कार्योपचारात् । भाष० ७३१ ।  
 असद्-शठभावरहित । ओष० २२० ।  
 असद्कारणो-‘नष्ट’ च्छादने, जो अप्पणं मायाए ण्णति-  
 असद्दो होऊन करण करेति । नि० चू० तृ० १४९ अ ।  
 असदत्तणं-अशठत्वम् । भाष० ५२ ।  
 असण-अशनम्, घृतपूर्णदि । भाष० ८११ । मण्डकौ  
 दनादि, आद्य-तीव्र छुषा-कुशुषा शमयतीति । भाष०  
 ८५० । वीजक । भाष० १८६ । अद्यत इत्यशनम्,  
 ओदनादि । दश० १४९ । अद्यते-भुज्यते इति अशेषा-  
 दाराभिधानम् । उत० ६०० ।  
 असणवण-अशनवनम्, वीजवनम् । भाष० १८६ ।  
 वनविशेष । भग० ३६ ।  
 असणि-अशनि, वज्रम् । दश० १६४ । आकाशे पतन्न-  
 मितय वज्र । जीवा० २९ । प्रशा० २९ । वद्रोयणिदस्य  
 अगमहिती । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ ।  
 असणिमेहा-अशनिमेधा, करकादिनिपातवन्त, पर्वता-  
 दिदारणसमर्थजलत्वेन वज्रमेधा । ज० प्र० १६८ । कर-  
 कादिनिपातवन्त पर्वतादिदारणसमर्थजलत्वेन वा वज्रमेधा ।  
 भग० ३०६ ।  
 असणे-अशन, वृक्षविशेष । प्रशा० ३१ । मीयक । उत०  
 ६५३ ।  
 असण्णातय-असरातीव । भाष० ८४६ ।  
 असति-असहृद्, अनेकवारम् । जीवा० १२८ ।  
 असतिणिवेसणे । नि० चू० प्र० १६२ अ ।  
 असतिघाडगा । नि० चू० प्र० १६२ अ ।  
 असतिसाहीओ । नि० चू० प्र० १६२ अ ।  
 असत्थ-अशब्दम्, सतदभेद-सयम । आचा० ५३ ।  
 असत्थस्स-अशब्दस्य, निरवशानुगानरूपस्य सयमस्य ।  
 आचा० १५६ ।  
 असदध्यारोपणम्-भाष० ८७१ ।  
 असद्-अविद्यमानम् । उत० ३४७ ।

असहृत्तो-अभ्रदान, अभ्रदान । आच० १८१ ।  
 असहृहण-अभ्रदानम् । आच० ५०३ ।  
 असद्भूते.-साधो कर्णमयुक्ते । आच० २४२ ।  
 असनिरूपेण-ईतिरूपो हि पतद्वादेरापत इति दश० १६४ ।  
 असनो-असन, धीयक । आच० ४११ ।  
 असन्निभाउण-असत्पायु, असत्ज्ञी तन् परभवयोग्य वद-  
 मायु । भग० ५१ ।  
 असन्निभूय-असन्निभूत, असन्निभूय उत्पन्न । प्रज्ञा०  
 ५५८ ।  
 असन्निभूय-असत्ज्ञीभूता, असन्निभूता या जायते सा ।  
 प्रज्ञा० ३३९ ।  
 असन्नी-असत्ज्ञी, मिथ्यादाहरिभ्रमनस्को वा । प्रज्ञा० ३३९ ।  
 यथोक्तमनोविज्ञानविकल । प्रज्ञा० ५१३, ४०७ ।  
 असथलायारे-अथावरो यस्य वितासितवर्गोपिनपत्नीवर्दे  
 इव कर्तुर आचारो-विनयशिक्षाभाषागोचरादिक । व्य०  
 प्र० २३५ अ ।  
 असथलो-अथावल, एकान्तशुद्ध । उक्त० २५७ ।  
 असम्भं - असम्भम्, अनुचित जकारभकारादि । आच०  
 ५८८ ।  
 असम्भावे-असद्भावम्, अवियमाना सन्त-परमार्थतन्तो  
 भावा-जीवाद्योऽभिधेयभूता रस्मिन् तत् । उक्त० १५१ ।  
 असम्भावमिहतर-यद्दस्य पार्श्वत पुरोहदेऽङ्गणे मध्ये वा ।  
 वृ० वृ० २३ अ ।  
 असम्भाववृत्तवणा - एक एवाक्ष पिण्डक-पनया बुद्ध्या  
 कल्पते तत् । औष० १२९ । असद्भाववस्थापना, अमद्भा-  
 वकल्पना । जीवा० १२२ ।  
 असम्भावपट्टवणा-अमद्भावप्रस्थापना । जीवा० १५१ ।  
 असम्भावभाषणा-अमद्भावभावना । उक्त० १६५, २२३ ।  
 असम्भावबुद्ध्यावणा - अमद्भावोद्भावना । उक्त० १५७ ।  
 आच० ३१४ ।  
 असम्भावो अमद्भाव । आच० ३२० ।  
 असम्भूय - अमद्भूतम् अमृताद्भाववरूपममोभनरूपं वा ।  
 भग० २३० ।  
 असम्भूय-अमद्भूतम्, अमृताम् । आच० ५८८ ।  
 असम्भय अमलम् । आच० ८३८ । चरपक्षपादि । उक्त०  
 ३५७ ।

असमंजसं-अनुकूलम् । उक्त० २२६ ।  
 असम्मो - असमय, असम्यगाचार, द्वितीयाधर्मद्वारस्य  
 पमविंशतितम नाम । प्रश्न० २६ ।  
 असमणपाउगो-अप्रथमप्रायोग्य । आच० ७७८ ।  
 असमणुज - असमनुज, आचारात्तेऽप्याध्ययनस्य प्रथ-  
 मोद्देशक । आच० २६० । असमनोता, असम्मोहिका ।  
 औष० ५४ ।  
 असमर्थ-अतिभारेण न शक्नुवन्ति पलाति धारयितुम् ।  
 आच० ३९१ ।  
 असमाणो-असमान, न विद्यते समानोऽस्य गृह्णित्वाभ-  
 यार्णित्तत्वेनानन्वतीकिंचित् वाऽनियतविद्यारादिने, असदस-  
 समानो वा साहचारी न तथेति । उक्त० १०७ ।  
 असमारभमाणस्स - अनमारभमाणस्य, महद्द्वारीतामव-  
 पयीकुरीत । उक्त० ३२४ ।  
 असमासदोसो-असमासदाप, समासम्पलय सप्रदापवि-  
 शेष । आच० ३७४ ।  
 असमाहडा-अममाहता, अनशीलता । सूत्र० ३१४ ।  
 असमाहडाप-अशुद्धया क्षेत्रया-उत्तमादिशापदुष्टमिदमिषेव  
 चित्तविप्लव्या । आच० ३३८ ।  
 असमाहि अमनाधि, अस्वास्थ्यनिबन्धना वायदियथा ।  
 आच० ४९९ । समाधि-समाधानं-जानादिषु चित्तैक्याय  
 न समाधि । उक्त० ६१४ । चित्तोद्गम्यम् । उक्त० ५५१ ।  
 असमाहिकरो अमनाधिकर, अस्वास्थ्यनिबन्धनकर ।  
 आच० ४९९ ।  
 असमाहिटाणा - अमनाधिसत्वानि, न चित्तव्यारथ्य  
 स्याधया । प्रश्न० १४४ । भग० ३७ ।  
 असमिक्खियत्पलावी - बुद्ध्या अणुद्विष पुष्पावरं उह-  
 परलोयगुणदाय वा ता महसा भद्द । ति० वृ० वृ०  
 ८० अ । अममा धातपलावी अयथालोचितामर्थकवापी ।  
 प्रश्न० ३२ ।  
 असमित्त-अधामन । ति० १३८ ।  
 असमीक्ष्य अमलाय । उक्त० ३८७ ।  
 असमोहण-अव्युत्पन्नतामना । भग० ५८९ ।  
 असमोहयाधि-दण्डादुपरना अमसुद्धता वा । भग० ७६४ ।  
 असम्मोहे - अममात् त्वाकिञ्चनमायापित्तस्य म-म

पदार्थविययस्य च गम्भोदस्य मृदताया निषेधात् । टाणा०  
१९३ ।

अक्षरण-अक्षरणः, क्षरणरहितः, अर्थापकाभावात् । प्रथ०  
११ । अर्थाकारकचेरहितः । प्रथ० १९ । यद् नात्र क्षरण-  
मन्तीत्यक्षरणः संयमः । आचा० ३०३ । क्षरणमनात्मक-  
मानोऽतीतमनस्कः । आचा० ३०६ ।

अक्षहीण-अक्षः । घृ० द्वि० १८७ अ । अक्षार्थीनः, परा-  
यण । आचा० १५२ ।

अक्षहृ-मुमुक्षुः । राजपुत्रादिप्रजितः । टाणा० १३८ ।  
अर्थापकः । नि० घृ० प्र० ३६० अ । अक्षहृष्णुः । ओष०  
१४३ । सुदमारक्षरीरं । उष० मा० गा० ४०३ । अक्षमर्ष-  
राजपुत्रादिः । ओष० १३८ ।

अक्षहृ-अक्षमर्ष-ध्रुवीडितः । ओष० ४४ । राजादि-  
शीघ्रितः । घृ० द्वि० २०८ अ । रायाजुवरया मेद्वि अक्ष-  
पुर्णहिया य एते अक्षहृ । नि० घृ० प्र० १०१ अ । निष्ठा-  
वैली प्रतिपालयितुमशकः । ओष० ८६ । अक्षहृष्णुः ।  
आष० ८५८ । अक्षमर्षः । ओष० १९५ ।

अक्षाब्धयहारिक-उष्क । आष० ५२७ ।

अक्षाप-अगात, अगातोदयकलितः । जीवा० १३० ।

अक्षाडभृत्-आमाडभृतिः, मायापिण्डोदाहरणं धर्मस्वि-  
शिष्यः । पि०ड० १३७ ।

अक्षाटप-तृणविशेषः । प्रज्ञा० ३३ ।

अक्षाटा-अपादा, पूर्वोत्तरापादानक्षप्रविशेषः । आष० १०० ।

अक्षाधृ-अमाधय, अक्षयण । टाणा० ३९९ ।

अक्षाम्रघ्नं अक्षामान्यम्, अक्षानीर्णपूर्वम् । मूर्ध० २३८ ।

अक्षारजरटा-अकालउदा । ओष० २१८ ।

अक्षारणा-अगवेषणा । घृ० प्र० १५६ अ ।

अक्षार्यणा-अगवेषणा । नि० घृ० द्वि० १३६ अ ।

अक्षारहृषि-अक्षारहृषिः, मारहृषिहितः । भग० ३२२ ।

अक्षारिष्-अमागारिकः । नि० घृ० द्वि० ३१ आ ।

अक्षायज्ञं-अक्षायणम्, अक्षयतस्य प्रथमं पर्यायः । ओष०  
६२० ।

अक्षायस्-अक्षायणम्, प्रतिक्षयमावीचीमरणेन मरुणम् ।

आचा० ६६ । क्षणनक्षरम् । भग० ४६९ ।

अक्षायस्यं-अक्षायणम्, प्रतिक्षयं विनागएवम्-अनिव्यम् ।

प्रथ० ९६ ।

असाहृया-असाहृया, श्रोहरभावता । उष० ११४ ।

असाहृ-असाहृ, अपणमभावगापुत्रः । उष० ५८ ।

असि-असिः, गद्गः । जीवा० ११० । भग० १८२ ।

प्रज्ञा० ९७ । तलवारः । आष० ५८८, ४८७, ३६० ।

सह्याभ्यासम् । प्रथ० ९७ । सङ्घ-क्षरालः । भग० १९१ ।

क्षत्रविशेषः । आष० ३६० ।

असिअ-असिणम्, क्षणमशुभं च संगणानुबन्धित्वात् ।  
आष० ४३९ ।

असिअपर्य-अक्षेण । भग० ६५० ।

असिप-असिः-अक्षद-नैः सार्धं संगमवृत्तं भिद्यु ।  
अचा० ४३० ।

असिकच्छप-अभियच्छपः, कच्छपविशेषः । भग० १३५ ।

असिक्खण-असिक्खणः, विरप्रजितः । दश० ३९ ।

असिखिण्ड-असिखिण्डकम्, अक्षिणा मह क्लृप्तम् । प्रथ०  
२१ ।

असिचम्मपायं-असिचर्मपायम्-स्फुरक, अपथा अक्षि-  
स्रद्धमर्षात् न-स्फुरक, स्रद्धमर्षात् वा । भग० १९१ ।

असिचम्मपायहृद्यकियाग-असिचर्मपायहृद्यकियाग-  
असिचर्मपायं हृद्ये यस्य स तथा हृद्य-मृषादिप्रयोगेन गत-  
अध्रित हृद्यगतस्यतः कर्मधारय, अपथाऽसिचर्मपायं  
हृत्वा हृद्ये क्लृप्तं यैतानी असिचर्मपायहृद्यकियाग-  
त्वाच्चैव ममान, अपथाऽसिचर्मपायस्य हृद्यहृद्य-हृद्य-  
करणं गतः-प्राप्तो यः स तथा । भग० १९१ ।

असिद्वे-असिद्वे, अक्षिणादि । प्रथ० १११ । असिद्वे ।  
आष० २१८ ।

असिणाह-अन्ये धमनादयो येऽमुममपिण्डमसिद्वेवन्त ।  
आचा० ३३७ ।

असिणाण-अक्षानतया । आचा० ३६४ ।

असिता-यद्भवामविमुक्ता । आचा० २२२ ।

असिन्द-न सिद्ध, हेतुदोषविशेषः । टाणा० ४०३ । सुमाग्री ।  
जीवा० ८३६ ।

असिपंजर-असिपणम्, पक्षितपणम् । प्रथ० ११० ।

असिपत्त-असिपत्त, अक्षिणा पत्रम् । विषा० ७१ । गद्ग-  
पत्रम् । जीवा० १०६ । अक्षि-गद्गः स एव पत्रम् ।  
टाणा० २७३ । अक्षय-मन्त्राभ्युद्वेष्टकतया पत्रात्-  
पत्रानि यस्मिन्भवन् । उष० ४६० । प्रज्ञा० ८० । परमा-



धामिकेषु नवम । उक्त० ६१४ । नवम परमाधामिक ।  
 आव० ६५० । सूत्र० १२४ । सम० २९ ।  
**असिपुत्रिक** । उक्त० ४५ ।  
**असिय**-अमित, कृष्ण । प्रज्ञा० ११ ।  
**असियअं-दानम्** । आव० २९५ ।  
**असियग**-असियगम्, दानम् । आचा० ६१ ।  
**असिरयणं** - असिरलम्, चक्रवर्तरेकेन्द्रियपथमरलम् ।  
 ज० प्र० २३८ । ठाणा० ३९८ ।  
**असिलद्वी**-असियष्टि, सङ्कलता । विपा० ५६ । असि-  
 खड्ग स एव यष्टि - दण्डोऽसियष्टि, अथवा अनिध यष्टिश्च ।  
 ज० प्र० २६४ ।  
**असिलार्यं**-विखरम् । वृ० लृ० २१ अ ।  
**असिलिङ्गं**-अदिल्लम् । आव० ९९ ।  
**असिलोगमते** - अश्लोकभयम्, अक्रीतिभयम् । ठाणा०  
 ३८९ । अश्लोकाभयम् । आव० ४७२ ।  
**असिलोगो**-अश्लोका, अयस । आव० ६४६ ।  
**असिव**-अशिवम्, व्यन्तरहृतं व्यसनम् । आव० ६२६ ।  
 उदाहरणं अभिदत्त । नि० चू० प्र० ९७ अ । नि० चू० प्र०  
 ७१ अ । व्यन्तरहृत उपद्व । वृ० प्र० २३१ अ ।  
 देवतादिजनितो ज्वरागुपद्व । ओष० १३, १४ ।  
**असिचारखेसं**-असिचारिण्यम्, असिचारिपथानं क्षेत्रम्,  
 आदिशब्दाद्गोदरताराजद्विधादिपरिमह । दश० ३९ ।  
**अग्निद्युवसमणी**-अग्निद्युवसमणी कृष्णस्य चतुर्था मेरी ।  
 आव० ९७ ।  
**असिद्योवसमणी**-असिद्योवसमणी, कृष्णस्य चतुर्था मेरी,  
 पश्चामाव मर्धे रोगोपसमनी । वृ० प्र० ५९ अ ।  
**असी**-असि, अस्याग्लक्षितं मन्त्रकपुष्प । जीवा० २५४ ।  
 हीरो । नि० चू० दि० १४१ अ । सद्यः, समुपजीव्य जन  
 गणसत्तितो भवति, यदा गृहचर्मक्षण्या अग्निसन्दन अत्र  
 अस्याग्लिता पुण्या शृणुते । ज० प्र० १-२ ।  
**असी**-असी, अविद्यमानसी, मरीचा विनकारिद  
 पथं । उक्त० ३४० । असीला - असीला । ठाणा० १०३ ।  
**असीलाया**-असीला नारिद्वयप्रतारया । अत्रद्वयं मन्त्र  
 दो नाम । प्रज्ञा० ६६ ।  
**असुमा**-असुमा, असुमात्रम्, ईर्ष्या । दश० २४३ ।  
**असु**-असुवि, असुविर्षा । पथ० ६१ । स्नानव्रह्मचर्या

दिव्यजितवान् असुवि, शास्त्रवर्जितो वा अधुति । मग०  
 ३०८ । स्नानव्रह्मचर्यादिव्यजिता, अधुतय, शास्त्रवर्जिता ।  
 ज० प्र० १७० । विगन्ध शरीरमलादि । जीवा० २८२ ।  
**असुष्णंतरा** अश्रान्यन्तरा, एकोत्तरद्वया सर्वदैवाग्रन्या  
 न्यव्यवहितान्यन्तराणि यासा ता अश्रान्यन्तरा । विज्ञे०  
 ३३१ ।  
**असुति**-असुचानि, अनेष्यानि मृतपुरीपाणि । ठाणा० ४७६ ।  
**असुद्ध**-असुद्धम्, आधाकमिदि । ओष० १७७ ।  
**असुधकाल**-अश्रान्यकाल, नारकभवानुगमनारावस्थानका  
 लस द्वितीयमेद । मग० ४७ ।  
**असुध**-असुधकार्ये मृतकस्यापनादौ । व्य० प्र० १६९ अ ।  
**असुधजोग**-अनुभोग, अनुपयुक्तया प्रत्युपेधाधिकरणम् ।  
 मग० ३२ ।  
**असुधनाम** - असुधनाम, यदुदयवशात् नामेत्प्रसन्ना  
 पादाद्योऽनयथा असुधना भवन्ति तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।  
**असुधस्ता**-असुधस्ता, न सुधस्ता । प्रज्ञा० ५०४ । अम  
 ह्न्यस्ता । मग० २५३ ।  
**असुभाणुपेहा**-असुभाणुपेहा, अनुभवा संसारस्यानुपेहाय-  
 अनुभरणम् । ठाणा० १८८ ।  
**असुभाते**-असुभाय-दुःखाय । ठाणा० १४६ । असुभाय,  
 अनुप्यमन्थाय अदुःखाय वा । ठाणा० २९२ । पापाय,  
 असुभाय वा-दुःखाय । ठाणा० ३०८ ।  
**असुप्यं**-अभुताक्रम, नोभुताक्रम । उक्त० १४४ ।  
**असुय**-अभुत परवचनद्वारेण । मग० २००, १९३ ।  
**असुर**-रौद्रकर्मकारी । उक्त० २७६ ।  
**असुरकुमार**-असुरकुमारा, देवभक्षी । मग० १९७ ।  
 अमाराधने नक्षयौवननया कुमारा इव कुमाराद्येवम-  
 कुमारा । ठाणा० २८ । असुरगतिमेद्वितीय । प्रज्ञा०  
 ६१ ।  
**असुरकुमारी**-असुरकुमार्य, देवीवर्णना । मग० १९७ ।  
**असुरद्वारे**-विदायननस्य द्वितीया द्वारम् । ठाणा० २३० ।  
**असुरसुतं**-असुरसुतम्, असुरसुतानां सुतम् । मग० २९४ ।  
 मरुतनाटं अत्रिना । ओष० १८७ । अत्रिनामरुतसुतम् ।  
 प्रज्ञा० ११० ।  
**असुरा** - अस्या न मया अस्या, अत्रपत्नीवत्पत्नी ।  
 ठाणा० २३ । अत्रपत्नीवत्पत्नी अत्रपत्नीवत्पत्नी वा ।

ठाणा० १०४। असुरकुमार । भग० १३५। भवनपति  
व्यन्तरक्षण । ठाणा० ४६६।  
असुरो-असुर, आसुरभावान्वितत्वाद् यक्ष । उक्त० ३६६।  
भवनवासी । वृ० द्वि० २६४ अ।  
असुह-असुमम्, अशुभस्वभावम् । भग० ७२। अशुभ-  
अतीवासातरूप । जीवा० १०३।  
असुहदुःखभागी - असुहदुःखभागी, दुःखानुबन्धिदुःख  
भागी । भग० ३०८।  
असुहया-अशुभदा, असुपदा । आव० २३६।  
असुहिय-असुखित, अविद्यमानसुहृद् वा । प्रश्न० ४१।  
असुह्र-असुचितम्, प्यञ्जनादिरहितम् । दश० १८१।  
असुचया-साक्षात् । ठाणा० ३०४।  
अस्यपुत्तो-अस्यपुत्र । आव० २११।  
अस्या-अपणो दोस भासति न परस्व । नि० चू० प्र०  
२७८ अ। आतगता । नि० चू० प्र० २७८ अ।  
असूचा-रुद्रमेव परदोषोद्धृष्टम् । वृ० प्र० १२८ अ।  
अस्येयं-सुख । नि० चू० प्र० ८८ आ।  
असोडो-अमज्जपाणो । नि० चू० द्वि० १४४ अ।  
असोभ-असोक, सुप्रभवलदेवपूर्वभवनाम । आव० १६३।  
अरुणद्वीपे महर्षिको देवविशेष । जीवा० ३६७। दिनत  
तितमग्रह । ज० प्र० ५३५। वृक्षविशेष । जीवा० २२२।  
विश्वरूचतराणी चैत्यवृक्ष । ठाणा० ४४२। अशोक-  
नामदेव । ज० प्र० ३२०। लताविशेष । प्रज्ञा० ३२।  
बिन्दुमारपुत्र । वृ० प्र० ४७ अ। वृक्षविशेष । भग०  
८०३। एकास्थिकवृक्षविशेष । प्रज्ञा० ३१। ठाणा० ७९।  
मणिनाभस्य चैत्यवृक्ष । सम० १५२। विजयपुरस्य मन्दन  
वोचाने यक्ष । विपा० ९५। बिन्दुमारपुत्तो । नि० चू०  
प्र० २४३ अ।  
असोमचन्द्रो-अशोकचन्द्र, योगमन्त्रहेतु शिखाया इष्टान्त ।  
आव० ६७९।  
असोमदत्तो-अशोकदत्त, मायोदाहरणे स केतपुरे समुद्र  
दत्तभागदत्तपिता । आव० ३९४।  
असोमलक्ष्मि-चतुर्भुजलदेवपूर्वभवनाम । सम० १५३।  
असोमचण - अशाकवनम् । आव० १८६। पुष्करिण्या  
वनम् । ठाणा० २३०। वनसङ्गठनाम । ज० प्र० ३२०।  
भग० ३७।

असोमसिरी - पाण्डुपुत्रो असोमसिरी राया । नि० चू०  
वृ० ४४ आ । वृ० द्वि० १५३ आ । अशोकश्री, बिन्दुमा-  
रपुत्र । विज्ञे० ४०९।  
असोमा-अशोका, नलिनविजयराजपात्री । ज० प्र० ३५७।  
नागपुरसारेंद्रस्यामहर्षिणी । भग० ५०४। ठाणा० २०४।  
असोमा-अशुत्वा । भग० ४३५। आगमानपेक्षम् । भग०  
४५५।  
असोमिज-अशोमितम्, रफरहितम् । आव० ७६४।  
असोमथो-अशुत्थ । आग० ४१७।  
असोमयणा-अशोकनता, दैन्यानुत्पादनेन । भग० ३५।  
असोमयला-अशोकलता, लताविशेष । भग० ३०६।  
असोमचडेसप । भग० १९४।  
असोमाओ । ठाणा० ८०।  
असोही-अशोधि, प्रतिसेवना, रसलना । ओप० २२५।  
अस्तमयनप्रविभक्तिः-नभमनात्यमेद । ज० प्र० ४१६।  
अस्तान्ते-अत्यन्तं, अस्तमयपर्यन्ते । उक्त० ४३५।  
अस्ति-अतिथ, प्रदेश । ठाणा० १५, ५१६।  
अस्तिकायः-अतिथिकाय, धर्मादिपञ्चधास्तिकायमाधिर्य  
काय । आव० ७६७।  
अस्तिकायधर्म - अतिथिकायधर्म, अस्तिराज्येन प्रदेश  
उच्यन्ते, तेषां कायो-राशिस्तिकाय स चासी सज्ञया  
धर्मैर्धति गत्युपष्टम्भलक्षण घमास्तिकाय । ठाणा० १५४।  
योऽस्तिकायानां धर्मादीनां धर्मो-गत्युपष्टम्भादि । उक्त० ५६६।  
अस्तिकायाः-अतिथिकाया, अस्तीत्यत्रिकालवचनो लिपात्,  
अभूवन् भवन्ति भविष्यन्ति चति भावना, अतोऽन्वि च  
ते प्रदेशानां कायाश्च राशय इति, अस्तिराज्येन प्रदेश  
इत्युच्यन्ते, ततश्च तेषां वा वाया अस्तिकाया । ठाणा०  
१९६। अस्तीनां-प्रदेशानां सङ्घातात्सङ्घातान् काय ।  
ठाणा० १५।  
अस्तिनास्तिप्रवादपूपेम् - अतिथिराप्युपवातपुत्र, चतुर्भु  
पूर्वम् । ठाणा० ४८४। तत्र यद्वस्तु लोकेऽस्ति धर्मास्ति-  
कायादि यच्च नास्ति खरशृङ्गादि तच्च प्रवर्तति, सर्वं वस्तु  
स्वरूपेणास्ति परस्वपेण नास्तीति प्रवर्तति । मन्दी १४१।  
अस्थानस्थापनम् - अठाणठपण - अयोवत्यास्थापनम् ।  
ओप० १३१।  
अस्थिका-अद्विप, कपालिकापयांग । व्य० प्र० २०६ अ।

- अस्थितकल्पिकः—ताधुमेदविशेषः । भय० ४ ।
- अस्थिमिजा—अद्विमिजा, अस्थिमध्यरसः । ठाणा० १७० ।
- अस्थिमिजानुसारि—अद्विमिजापुसारी । ठाणा० ३७५ ।
- अस्थिरम्—अधिरं, जीर्णम् । आचा० ३९६ ।
- अस्थिरणाम—(अधिरणाम), यदुदयवशाजिह्वादीनामधय-  
वानामस्थिरता भवति तत् । प्रज्ञा० ४७४ ।
- अस्निहः—(अणिह), स्निह्यते—दिलम्ब्यतेऽष्टप्रकारेण कर्म-  
णेति स्निहः, न स्निहोऽस्निहः, यदि वा स्निह्यतीति स्निहो  
रागयान् यो न तथा सोऽस्निहः, उपलक्षणार्थत्वाच्चास्य  
रागद्वेषरहित इत्यर्थः । आचा० १९१ । स्नेहरहितः ।  
आचा० २१० । स्निह्यतीति स्निहो, न स्निहोऽस्निहः—  
रागद्वेषरहितत्वात् अप्रतिबद्धः । आचा० २५८ ।
- अस्पृशद्भति—समयप्रदेशान्तरमस्पृशती । भाव० ४४१ ।
- अस्फुटितम्—अकुडिआ, सर्वविराधनापरित्यागः । दशा०  
१९६ ।
- अस्संजय—असंयतः—गृहस्थः, स च थावकः प्रवृत्तिभद्रको  
वा । आचा० ३२९ । असंयताः—असंयमन्तः, आरम्भ-  
परिमहप्रसक्ताः, अन्नन्नचारिणः । ठाणा० ५२४ ।
- अस्संजतो—गिहृत्थो । नि० चू० प्र० २० आ ।
- अस्संजमो—असंयमः, प्राणतिपातादिलक्षणः । भाव०  
५१६ ।
- अस्संपडियाय—न वियते स्वं—द्रव्यमस्य सोऽयमस्यो  
निर्गम्य इत्यर्थः, तत्प्रतिज्ञया । आचा० ३२५ ।
- अस्सकण्ठी—अश्वकर्णा, वनस्पतिविशेषः । आचा० ५७ ।  
साधारणवनस्पतिकारिकमेदः । जीवा० २७ ।
- अस्सकक्षे—साधारणवाद्देवनस्पतिकारिकविशेषः । प्रज्ञा० ३४ ।
- अस्सकन्धी—अनन्तकायमेदः । भग० ३०० । अग० ८०४ ।  
कन्दविशेषः । उत० ६९१ ।
- अस्सन्तो—अश्वतरः, खरतरः, एकखुरधतुणदः । जीवा०  
३८ । एकखुरधतुणदः । प्रज्ञा० ४५ ।
- अस्सपुरं—अश्वपुरम्, पुष्टमिहपुरम् । भाव० १९७ ।
- अस्सपुरा—अश्वपुरी, पक्षमविजयराजधानी । जं० प्र०  
३५७ ।
- अस्सरोनिवाय—अप्यरोनिवातः, चण्डिका । जीवा०  
३९९ ।
- अस्सगालापेलथं । आचा० ४२३ ।

- अस्सलेसा—नक्षत्रविशेषः । ठाणा० ७७ ।
- अस्सवाणियओ—अश्ववाणिक । भाव० २२० ।
- अस्सवाहणिया—अश्ववाहणिका । उत० २७७ । भाव० ५६ ।
- अस्ससेणे—अश्वसेनः, सनत्कुमारपिता । भाव० १६२ ।  
पार्वपिता । भाव० १६१ ।
- अस्सादणसगोत्ते—आस्वादनसगोत्रम्, अधिनीनक्षत्र-  
गोत्रम् । सूर्य० १५० ।
- अस्सामिणी—अस्सामिनी । भाव० २२४ ।
- अस्सायणे—आस्वायनम्, अरिचनीगोत्रम् । जं० प्र० ५०० ।
- अस्सासणे—अष्टाशीतिमहाग्रहे चतुर्दशमहाग्रहः । ठाणा०  
७८ ।
- अस्सासो—आस्वासः, प्राणिनामेव आस्वासनम्, अर्हि-  
सायाः पञ्चाशत्तमं नाम । प्रज्ञा० ९९ ।
- अस्सि—अयम् । ठाणा० १३८ ।
- अस्सिपडियाय—एतत्प्रतिज्ञया एतान् साधून् प्रतिज्ञाय-  
उदिय । आचा० ३६१ ।
- अस्सिलोय—अयं लोकः, अयं मनुष्यलोकः । जीवा० ३४८ ।
- अस्सिणि—अरिचनी, नक्षत्रविशेषः । सूर्य० १३० । ठाणा०  
७७ । मेतायर्जनमनक्षत्रम् । भाव० २५५ ।
- अस्सीइ—अरिचनी, नक्षत्रविशेषः । ठाणा० ४६९ ।
- अस्सेसा—अश्लेषा । सूर्य० १३० ।
- अस्सो—अश्वः, षोडशः, एकखुरधतुणदः । जीवा० ३६ ।  
अशः । जीवा० ३८४ । प्रज्ञा० ४५ ।
- अहं—अधे—अश्वस्तात् । आचा० ६३ । अधः—सुप्ते । भाव०  
१६८ ।
- अह—एष । नि० चू० प्र० ११८ आ । व्य० प्र० १०३ आ ।  
अयं । नि० चू० द्वि० ९७ आ ।
- अहक्त्वाओ—यथास्थितः । (सं०)
- अहक्त्वायं—अथाख्यातम्, अथदत्तो यथार्थे, आह-  
अभिधिषी, यथातथ्येनाभिधिषिना वा यत् ह्यार्तं—वधितं  
अकपार्थं चारिद्रम् । प्रज्ञा० ६८ । यथाख्यातम्—अथया-  
यमित्यर्थः । विसो० ५४७ । यथाख्यातं—नक्षत्रम्पराया-  
नन्तरं गवेर् माधुजीवल्लोके ख्यातं—प्रतिदं, प्रथमं प्रविष्टुर्दं  
हासिद्रम् । विसो० ५५५ । यथाख्यातं—यथेवाख्यातम्—  
अथयायम् । भाव० ७८ । यथेवाख्यातं—यथाख्यातं प्रविष्टं  
मर्त्यमिह जीवलोके, अथयायचारिद्रमिति । भाव० १९ ।

अधशब्दो यथार्थं, आख्यात-अभिहित अधाख्यातम् ।  
ठाणा० ३२४ ।

अहखिलसौ । नि० चू० प्र० १६४ अ ।

अहगुरु-वेन प्रमाजितो यस्य वा पार्श्वे अर्थात्, रत्नाधि-  
कतरक । व्य० द्वि० ३९५ अ ।

अहछंदो-यथाछन्द, यथैच्छवैवागमनिरपेक्ष प्रवर्तते य ।  
आव० ५१८ ।

अहछंदिया-अथाछन्दिका, अद्यावारिता, स्वय प्रवृत्ता ।  
बृ० द्वि० २६१ अ ।

अहण्णे-अधन्य । उत० ३०९ ।

अहतह यथातथ, सूत्रहृताह्वायश्रुतह्कण्ये प्रयोदशमध्ययनम् ।  
आव० ६५१ । सूत्रहृताह्वाय नयोदशमध्ययनम् । उत०  
६१४ ।

अहतानि । भग० ५०६ ।

अहत्ता-अधस्ता, गुरुपरिणामता । प्रज्ञा० ५०४ । भग०  
२३ । जघन्यता । भग० २५३ ।

अहत्ये-यथास्थान्, यथावस्थितान् यथार्थान् वा-यथाप्र-  
योजनान् भावान् जीवादीन्, यथा द्रव्यान्, पर्यायान् ।  
ठाणा० ३५१ ।

अहृत्पहाण-यथाप्रधान । भग० ६७९, ६८३ । यथाप्र-  
धान, यो यत्र प्रामादौ प्रमान । ओप० ५९ ।

अहमं-अधमम्, जघन्यम् । आव० ५८५ ।

अहमती-अह अना इति अन्तो-जाल्यादिप्रकर्षपर्यन्तोऽस्या-  
स्तीचन्त अहमेव जार्यादिभिरुक्तमतया पर्यन्तवर्ती ।  
ठाणा० ४७३ ।

अहमिन्द्रा-अहमिन्द्राणि, अह अह इत्येवमिन्द्रा । सम० ४३ ।

अहमो-अधम, मलावित्राजुगुणिसत् । सूत्र० ८२ ।

अहम्म-अधम, अधमम् । दश० २७१ । धर्मविपक्ष-  
पापम् । उत० २७४ । धर्मप्रतिपक्ष । उत० २४८ । अय-  
मं, अधर्मोपकं दान अधर्मनारणत्वान् । ठाणा० ४९६ ।  
भारहरामायणादिवाचसुत । नि० चू० द्वि० ४ आ ।  
धर्मविपक्ष विषयासक्तिरूपम् । उत० २८५ ।

अहम्मखाई-अधर्माचार्यानि, न धर्ममाग्यान्तीत्येव-  
शीया न धर्मान् रयतिथया ते । भग० ५६० ।

अहम्मखाई-अधर्माचार्या, अधर्मभाषणशील । अधर्माचा-  
रि-अधर्मिकप्रतिद्विको वा । विपा० ४८ ।

अहम्मजुक्तं-अधर्मयुक्तम्, पापवम्बद्धम् । दश० ५२ ।

अहम्मपलक्षणो-अधर्मप्रखन, अधर्मं हिंसादौ प्रख्यते  
अनुरागवान् भवतीति । विपा० ४८ ।

अहम्माणी-अहमानी, अहमेव विद्वान् इति मानोऽस्येति ।  
आव० २४१ ।

अहम्माणुप-अधर्मानुग, अधर्मान्-पापलोकात् अनुगच्छ-  
तीति । विपा० ४८ ।

अहम्मिष्टा-अधर्माष्टा अधर्मिष्टा वा-धर्म-धुनरूप एवेष्टो-  
वम्भ पूजितो वा येषां ते धर्मैश्च, धर्मिणां चैष्टा धर्माष्टाः  
अतिशयेन वा धर्मिणो धर्मिष्टास्तथैवाधर्मैश्च अध-  
र्माष्टा अधर्मिष्टा वा । भग० ५६० ।

अहम्मिष्टे-अधर्मिष्ट, अतिशयेनाधर्मो-धर्मरहित । विपा०  
४८ । अधर्मंष्ट, अधर्मो-धर्मविपक्ष-पापमिति स इव-  
अभिलषितोऽस्येति, यदा अधर्मंशुणयोगाद्धर्म, अतिशयेना-  
धर्म । उत० २७४ ।

अहम्मियं-आधार्मिक-अधार्मिकाणामिदम् । प्रथ ११० ।

अहय-अहतम्, मलमुपि विभिरनुपवृष्टितं, प्रत्यमिति ।  
औप० ६६ । अव्यवच्छिन्नम् । औप० ७४ । अपरिम-  
लितम् । जीवा० २५४ । तदुगत । नि० चू० प्र०

२५३ अ । आख्यानकप्रतिबद्धम्, अव्याहृत, नित्य, नित्यानु-  
बन्धि वा । जीवा० २१७ । प्रज्ञा० ८९ । ज० प्र० ६३ ।  
अव्याहृतम् । भग० १५४ । सूर्य० २६७ । अपरिशुणम् ।

भग० २५४ ।

अहर-अधरम्, अध-तरकतिर्यक् । दश० २७० । नरक ।  
आव० ५३२ ।

अहरगतिगमणं-अररगतियमनम्, अधोगतिगमनं नृत्तार-  
णम् । प्रज्ञा० ३६८ ।

अहराई-अहोरात्रिकी । आव० ६४८ ।

अहय-अथवा-अधर्मो । विशे० ११३० ।

अहवण-अथवा । बृ० द्वि० १४ आ । विकल्पप्रदर्शने । नि०  
चू० प्र० २९० अ । विकल्पार्थो निपात । बृ० द्वि०  
२४६ आ ।

अहवा-अन-नरम् । नि० चू० प्र० १८ आ । अय निपात ।  
नि० चू० प्र० १६८ आ ।

अहवणणवेद-अधर्मणवेद, चतुर्णां वेदानां चतुर्थं वेद ।  
भग० ११० ।

अहसंधडं-निष्प्रकम्प चम्पकपद्मादि । वृ० वृ० ३१ अ ।  
 अहसिता-न सहेतुकमहेतुक वा हसन्नेवास्ते । उक्त० ३४५ ।  
 अहसुञ्जो-यथाशुद्ध, निर्दोषोपदेशदाता । वृ० वृ० ७१ आ ।  
 अहसिसरे-अहसनशील । उक्त० ३४५ ।  
 अहस्ससखे-अहास्यात्सख्य, हास्यपरिखागतसख्य, द्वितीयम  
 तस्य प्रथमा भावना । भाव० ६५८ ।  
 अहाभतयं-यथार्थम्-निर्बुक्त्यादिव्याख्यानानतिक्रमेणेत्यर्थ ।  
 ठाणा० ३८८ । अर्थस्य निर्बुक्त्यादेरनतिक्रमेण । ठाणा०  
 ५१९ ।  
 अहाउभकाल-यथायुष्ककाल, देवाशायुष्कलक्षण । दश०  
 १ ।  
 अहाउनिष्काले-यथायुर्निर्बुक्तिकाल, यथा-येन प्रकारेण  
 यथो निर्बुक्ति-बन्धनं, तथा य काल-अवस्थितिरसौ ।  
 भग० ५३३ ।  
 अहाउयं-यथायुष्कम्, यथायुष्कमायुष्कम् । प्रथ० १९ ।  
 यथायुष्कम् । भाव० ११५, २५८ । यथायु-आयुषोऽन-  
 तिक्रमेण । उक्त० १८८ ।  
 अहाकडं-यथावृत्तम्, यद्यस्येन स्वार्थं निर्बुक्तिम् । प्रथ०  
 १२७ ।  
 अहाकडा-आधावृत्ता, साधूनायाय-भङ्गप्रथार्य वृत्ता । वृ०  
 प्र० ९२ अ ।  
 अहाकल्पं-यथाकल्पम्, प्रतिमाकल्पानतिक्रमेण तत्कल्पव  
 स्त्वनतिक्रमेण वा । भग० १२४ । कल्पनीयानतिक्रमेण  
 प्रतिमासमाचारानतिक्रमेण वा । ठाणा० ३८८ ।  
 अहाकल्पं-यथाकल्पे, बद्धकर्मानतिक्रमेण । भग० ६५ ।  
 अहाकर्मम् । भग० ४६६ ।  
 अहागडा-प्राशुक्कानि, अल्पपरिकर्माणि । औप० ९२ ।  
 अहागटे-यथाकृतम्, आरम्भमभिनियुक्तिम् । दश० ७२ ।  
 अहाचरा-अभधरा - विलबासित्वात्पार्ष्णदय । आचा०  
 २९१ ।  
 अहाचर्यं-दक्षिणदे सूपमेर । मय० १२८ ।  
 अहाच्छडे-यथाछन्दान्, स्वच्छन्दान् । औप० ५६ ।  
 अहाछन्द-यथाछन्दा - यथा कथमन्नागमपरतन्प्रतया छन्द-  
 अभिगणो-बोध । भग० ५०२ । यथा ह्याभिज्ञत तथा  
 प्रतापयत् । नि० वृ० द्वि० २३ आ ।  
 अहाजानो-अण्योपधी । नि० वृ० द्वि० १३१ आ ।

अहाजायं-रजोहरणमुल्लवत्रिकाचोलपद्भ्युत रचितकरपुत्रश्च ।  
 वृ० वृ० १० आ ।  
 अहाड-यथाकृतम्, परिकर्मशून्यम् । वृ० द्वि० २०२ आ ।  
 अहाणी-असीयण । नि० वृ० प्र० ५ आ ।  
 अहातथं-यथातत्त्वम्, तत्त्वानतिक्रमेण धर्मानाम् । भग०  
 १२४ । सप्तसप्तयिनेत्यभिधानार्थानतिक्रमेणान्वर्थसत्त्वापनेने  
 त्यर्थ । ठाणा० ३८८ । शब्दार्थानतिक्रमेण । ठाणा०  
 ५१९ ।  
 अहातथे-यथातथ्यो यथातथ्यो वा, यथा-येन प्रकारेण  
 तथ्य-तथ्य तत्त्व वा । भग० ७०९ ।  
 अहातथो-जहैव दिदो, तहेव जो भवति सो अहातथो  
 भवति । नि० वृ० द्वि० ८६ आ ।  
 अहापञ्जं-यथापर्याप्तम् । भग० १३९ ।  
 अहापङ्क्तिरुवं - यथाप्रतिरूपम् । भाव० १९९ । भग०  
 ६६१ ।  
 अहापदं-यथापदम् । भाव० ३५२ ।  
 अहापरिग्राहिय-यथाप्रतिश्रीतम्, यथाप्रतिपन्नम् । भग०  
 १३६ ।  
 अहापरिद्राय-यावन्मात्र क्षेत्रमनुज नीषे तावन्मात्र काल  
 तावन्मात्र च क्षेत्रमाश्रित्य वय वसाम इतिभावत् ।  
 आचा० ४०३ ।  
 अहापवत्तं-यथाप्रवृत्तम् । भाव० ११७ ।  
 अहावायरा-यथावादरा, यथोचितवादरा आहारपुद्गल  
 इत्यर्थ । भग० १८९ । यथावादाणि, स्थूलतरङ्ग्या  
 न्यताराणि । भग० २५१ ।  
 अहावायरे-यथावादरम्, स्थूलप्रकारम् । भग० २५१ ।  
 अमारम् । भग० १५४ ।  
 अहाभद्गो-यथाभद्रक । भाव० ७३९ ।  
 अहाभदे-यथाभद्र, नासनबहुमानयत् । वृ० प्र० ३३ अ ।  
 अहाभदो दाण्यी । नि० वृ० प्र० १९९ आ । दंमपरिद्विनी  
 अरक्षतेनु तन्मातये माधु उभयमद्वितीये । नि० वृ० प्र०  
 ३२५ आ ।  
 अहाभायो - स्थानिद्वे धारणम् । वृ० द्वि० २४ आ ।  
 आधावृत्ति । नि० वृ० प्र० २५१ आ । प्रतिशामिन्-प्रति  
 श्रुती न तु अन्वयेन यथाप्रति । वृ० द्वि० २८६ आ ।

अहामग्नं-यथामाग्नम्, ज्ञानादिमोक्षमार्गानतिक्रमेण धार्यो-  
पशमिक्कभावाततिक्रमेण वा वर्तमानम् । भग० १२४ ।  
मार्गं-धार्योपशमिको भावस्तदनतिक्रमेण । टाण० ३८८ ।  
अहारिणो-गन्तव्येतिणः । आचा० २४२ ।  
अहारिय-यथारतम्, रीत-रीति-स्वभाव, गन्तानति-  
क्रमेण वर्तते तत्, यथास्वभावमित्यर्थः । भग० २१२ ।  
यथाऽऽर्थम् । आचा० ३७९ । यथाऽऽजु । आचा० ३८१ ।  
अहालंद-मध्यममष्टपौरपीमानम् । वृ० तृ० ३५ आ ।  
पोरिमी । नि० चू० तृ० १८ अ । जघन्येन तरुणीदकारक-  
रभोपनाल, उत्कृष्टत पूर्वेनेटी । वृ० द्वि० ३२ आ । सजोग-  
वर्जिते तृतीयभेद । नि० चू० प्र० २३९ आ । यावन्मात्र-  
काल भवाननुजानाति । आचा० ४०३ ।  
अहालहुस्सप-स्तोकप्रत्ययधितदानम् । वृ० तृ० २०९ आ ।  
अहालहुस्सगाइ-यथालघुस्व कानि, 'यथेति-यथोचितानि-  
लघुस्वकानि-अमहास्वरूपाणि, महतां हि सेवा नेतुं गोप-  
यितुं वाऽऽशक्यत्वादिति यथालघुस्वकानि, अथालघूनि-  
महारिते वरिष्ठानीति इडा । भग० ।  
अहावच्चा-यथापल्यानि, पुनस्थागीवा । भग० १५७ ।  
अहासंघड-गिण्यका पट्ट । नि० चू० प्र० १७० अ ।  
अहासंघडा-अचला । नि० चू० प्र० १६० आ ।  
अहामखं-यथासत्यम्, इदं यन्मया कथितं कथ्यमानं च-  
तयथामलम्, याथातथ्यम् । आचा० १८३ ।  
अहासन्निहित्रा-यथामन्निहिता । आव० १७५ ।  
अहासम्म-यथागम्यम्, समग वानतिक्रमेण वर्तमानम् ।  
भग० १२४ ।  
अहासुत्त-यथासूत्रम् सूत्रानतिक्रमेण । टाण० ३८८ ।  
यामान्त्रसूत्रानतिक्रमेण वर्तमानम् । भग० १०४ ।  
अहासुहुमणियटो-यथामुक्षमनिग्रन्थ, यथामुक्षम एतेषु-  
मवपु । उक्त० ५७ ।  
अहासुय-यथासूत्रं यथासूत्रं वा । आचा० ३०१ ।  
अहासुहुमकसायकुसील-कपायतृतीलस्य पचमो भेद ।  
भग० ८९० ।  
अहासुहुमपुण्ड्र पुलकस्य पचमो भेद । भग० ८९० ।  
यथामुक्षमपुलाक, पुलाकस्य पचमो भेद । पचस्यपि पुलाकेषु-  
य स्तोत्र स्तोत्र विग्राहयति ग । उक्त० २०६ ।

अहासुहुमयत्स-यत्सस्य पचमो भेद । भग० ८९० ।  
उक्त० २५६ । यथामुक्षमवक्रा, योऽऽणो पुष्टिकामपच-  
यति, शरीराद्वा धूत्यादिकमपचयति । उक्त० २५६ ।  
अहासुहुमे-यथामुक्षमान् सारान् । भग० १५५ ।  
अहि-सर्प, पृथिव्याश्रितो जीवविशेष । आचा० ५५ ।  
सर्प । उक्त० ६९१ । उर परिसर्पभेद । सम० १३५ ।  
परिसर्पविशेष । प्रज्ञा० ४४ ।  
अहिडंतो-अहिष्टमान, असहिष्टोर्द्वितीयभेद । आव०-  
८५८ ।  
अहिस्ता-अनुकम्पा । प्रश्न० १०३ । प्राणतिपातविरिति ।  
दश० २१ ।  
अहिअ-अधिकम्, अहितम्, अपश्यम् । ज० प्र० १६७ ।  
अहिअगामिणिं-अहितगामिनीम्, उभयलोऽरुविहृदाम् ।  
दश० २३५ ।  
अहिउत्थ-अभ्युपित । उक्त० १२० ।  
अहिकरणं-अधिररणम्, गन्त्रीयन्त्रादि । भग० १३५ ।  
अहिकरणकरा-अधिकरणकर, योऽन्येषा कलहयति,  
द्वादशमसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।  
अहिकरणोईरण-अधिकरणोदीरण, योऽन्येषा यन्त्रादीन्-  
दीरयति, त्रयोदशमसमाधिस्थानम् । आव० ६५३ ।  
अहिकिच्च-अधिहृत्-आश्रित्य । भग० २४ ।  
अहिकखेच-अधिक्षेप, निन्दामिक्षेप । प्रश्न० ४१ ।  
अहियमरुइ-अधिगमरुचि, विशिष्ट परिज्ञान सेन रुचि-  
र्यस्यावौ । प्रज्ञा० ५८ ।  
अहियमास-अधिकयास । दश० २७० ।  
अहियमो अधियम, विशिष्ट परिज्ञानम् । प्रज्ञा० ५० ।  
ज्ञानम् । आव० ५३० । अधियम-तेषा । सम० ५३ ।  
अहियरणं-अधिकरणम्, कलह । दश० ६६ । वृ० तृ०-  
११२ अ । वृत्पाशरूपम् । भग० १३ । अधिक्थियते आत्मा-  
नररादिषु येन तदधिकरण-अनुष्ठानं वाद्यं वा वस्तु चक-  
महादि । आर० ६११ । कलह यन्त्रादि वा । आव०-  
६५४ । ज्योतिषादि । आव० ६२२ । अनुष्ठानविशेष,  
वाद्यं वा वस्तु चकलहादि । भग० १८१ । अनुष्ठान-  
वाद्यं वा वस्तु । टाण० ४१ । वास्तुद्वयशिलापुनःकगो-  
धमयन्त्रादि । आव० ८३१ । रात्रि । ओष० १८२ ।

अहिगरणक्रिया - अधिकरणक्रिया, दुर्गती ययाऽपि  
 कियन्ते प्राणिनः सा । प्रश्न० ३७ ।  
 अहिगरणि-अधिकरणि, सुवर्णकारोपकरणम् । ज० प्र०  
 २२६ ।  
 अहिगरणिव्य-अधिकरणकर-कलहकरम् । आच० ४२५ ।  
 अहिगरणिया-अधिकरणिकी-अधिकृतये तृकादिष्वात्मा  
 ऽनेनेति अधिकरण-अनुष्ठानविशेष बाह्य वा वस्तु चर्मसि  
 ङ्गादि, तत्र भवा तेन वा निर्वृत्त, क्रियामेदविशेष ।  
 भग० १८१ । अधिकृतयत् आत्मा चरवादिषु येन तदधि  
 करणम्-अनुष्ठान बाह्य वा वस्तु चर्मवादि, तेन निर्वृत्ता  
 क्रिया । आच० ६११ । सम० १० ।  
 अहिगरणी-अधिकरणी, यत्र रोहकारा अयोधनेन लोहानि  
 वृद्धयन्ति । भग० २५१ ।  
 अहिगरणे-अधिकरणसिद्धात् । वृ० प्र० ३१ आ ।  
 अहिगारनिउत्तो-अधिकारनिउत्त । आच० ७३८ ।  
 अहिगारो-अधिकार, प्रयोजन, प्रस्ताव । आच० २७६ ।  
 विरो० ८५६ । ओषत् प्रपञ्चप्रस्तावरूप । दश० २७८ ।  
 आ-अध्ययनपरिसमाप्त्येवोऽनुवर्तते स । दश० १३ ।  
 नियोग । प्रश्न० ६६ । प्रयोजनम् । दश० १३५ । द्य० प्र०  
 ४ अ । नृत्ति । उप० मा० गा० ३७१ ।  
 अहिगरिणता - अधिकरणि-रक्षासिद्धिर्नानी । टाण०  
 ३१७ ।  
 अहिच्छत्ता - अहिच्छत्ता - नमस्विधीय । उक्त० ३७ ।  
 पार्थनायम्य धरुणद्रमहिमारयानम् । आच० ४१८ ।  
 चरुण्ये जनपदव्याप्येयम् । प्रश्न० ५० । महारिहरणवि  
 पय पुत्री । आच० ७०३ ।  
 अहिजुजिय-अभिजुजय पत्नीश्वर, अस्त्रिय ता । भग०  
 १३३ ।  
 अहिज्ञ-अज्ञ । उक्त० ३६२ ।  
 अहिज्ञिउ-अयुम्, पत्नियुम्, धानुं, आतपियुम् । दश०  
 १३८ ।  
 अहिद्वय-अहिद्वय तत्र प्रतीको वृत्तौ । दश० २३८ ।  
 अहिद्वयि यथापर कर्मात् । दश० २५६ ।  
 अहिद्वय-अहिद्वय, कर्मा । दश० २६६ ।  
 अहिद्वय अहिद्वयम्, अतद्वयम् । आच० ४१० ।  
 अहिद्वय-अहिद्वयम् । आच० ४१० ।

अहिद्वित्त-अधिष्ठान-परिमोक्तम् । वृ० द्वि० २१८ अ ।  
 अहिद्वित्ता-अधिष्ठान, आरोहण कृत्वा । दश० ६१ ।  
 अहिद्वानि-अधिष्ठाने, अमानप्रदेशे । औप० ६९ ।  
 अहित अनुचितविधाया । वृ० प्र० २१४ अ । अपत्यम् ।  
 उक्त० २७६ ।  
 अहितुष्ट-अहितुष्टक, गरुडिच । दश० ३७ ।  
 अहितद्व-अभिनन्दनि, बहु मन्यते । आच० ५१० ।  
 अहिधायदसणे-अभिशातदत्तने-मन्यक्त्वभावनाया भाषि  
 त । आच० ३०४ ।  
 अहिमडे-अहिमृत, पृथग्विदेह । जीमा० १०६ ।  
 अहिमन्त्र-मन्त्रसाधनोपायशास्त्राणि । सम० ४९ ।  
 अहिमर-अभिमर, अभिमुखमाकार्यं मारयति नियते त्ति ।  
 आच० १८ । रात्रादिपातक । विरो० ७४० । विरो० ९७१ ।  
 अभिमुख परं मारयति य य । प्रश्न० ४६ ।  
 अहिमरका-पातका । वृ० द्वि० ८० आ ।  
 अहिमार-अभिमार, वृक्षाविशेष । उक्त० १४३ ।  
 अहिमासयस्मि-अधिकमासे । आच० ५५७ ।  
 अहिय-अधिक, अहितं वा अधिकं, अपत्य या । भग०  
 ३०६ । अर्गलम् । उक्त० ६२३ । अर्गल, तीमत्तम् । उक्त०  
 ७ । अतिशयेन । जीमा० २२९ । जीमा० ३५० । अ  
 तम्, अथय । आच० ३८ ।  
 अहिययिन्दुमिञ्ज अतिक्रिष्टाण्यम् । आच० ४३३ ।  
 अहियाते-अहिताय, अत्यप्याय । टाण० १४९ । अण  
 याय । टाण० २९२ । अपत्याय । टाण० ३०८ ।  
 अहियासपञ्जा-अभिधेय, यत्तया, पाययः । यद  
 १९४ ।  
 अहियारण-अभिधेयना उपपत्त्ययम् । आच० ६९० ।  
 अभिधेयना । आच० ७०० ।  
 अहियामेत्त-अभियानियुम् । आच० ४३३ ।  
 अहियामेति - अत्याययि-पदनायाययानं कर्मात् ।  
 टाण० २४७ ।  
 अहियोगो अभिधेय, यथायत् । वृ० द्वि० २३३ अ ।  
 अहियाया-अहियः यत्तया । वृ० द्वि० ४४ अ ।  
 अहियि-अहियम् । दश० प्र० १८० अ ।  
 अहियामाणा-अभिधेयना अत्याययि-पदनायाययानं कर्मात् ।  
 अहियोगो-अहियः यथायत् । वृ० द्वि० २३३ अ ।

अहिलक्षणं-मुगसयमनम् । अग० ४८०, ज० प्र० २६५ ।

औप० ७१ । मुगसयमनविशेष । अ० प्र० २३५ ।

अहिलिति-गमागच्छति । वृ० द्वि० १०८ अ ।

अहिलोडिया - गोपालिकाख्यो हिमकजीव । वृ० वृ० १९० आ ।

अहिल्लियाए-अहिल्लिका, मैथुने दृष्टान्त । प्रथ० ८९ ।

अहिवर्ह-अधिपति-आचाय । औष० ७४ ।

अहिव्यास-अविवास-अनस्थ न । भग० ४७० ।

अहिव्यासिकृण-अत्रिवास्य । भाष० २६१ ।

अहिसका-अभिशाहा, तथ्यनिधय । सूत्र० ३९३ ।

अहिसङ्गण-उस्मुरै आगच्छति । नि० चू० प्र० १४२ आ ।

अभिषङ्गण-तस्यैव विवक्षितकालस्य सचर्द्धन, परत करणमित्यर्थ । वृ० प्र० २६८ आ ।

अहिसरणेहि-अगतो वा सरति । नि० चू० द्वि० ४९ आ ।

अहिसरिया-अभिभृता । भाष० ३७७ ।

अहिसलापा-मुडुलि-अहिसेदाविशेष । प्रज्ञा० ४६ ।

अहिसैया-अभिषेका, गणान-छदिनी । वृ० द्वि० २६३ अ ।

अही-अहि, मर्ष, उर परितर्षविशेष । जीवा० ३९ । प्रज्ञा० ४५ ।

मुडुलि अहिमेविशेष । प्रज्ञा० ४६ । मामान्यत संप । १० प्र० १२५ ।

अहीणपडिपुत्रपचिद्वियसरीर-अहीनप्रतिपूर्णपर्वे द्वयशरीर, प्रतिपूर्णाणि स्वकीयस्वकीयप्रमाणत, प्रतिपुण्यानि वा पवित्राणि पत्रिद्वयाणि-हरणाणि यस्मिंस्तत्तथा अही नमज्ञोपात्रप्रमाणत प्रतिपूर्णपर्वे द्वय प्रतिपुण्यपञ्चेन्द्रिय वा शरीर । टाणा० ४५८ ।

अहीणपुत्रपचिद्वियसरीर-अहीनाणि-स्वरूपं पूर्णानि मञ्च्यथा, पुण्यानि वा-पूर्तानि पञ्चन्द्रियाणि यत्र तत्तथा नदेवविन शरीर यस्य स । भग० ५४१ ।

अहीणो - अहीन, प्रष्ट, अथानो वा न्यायत । प्रथ० १३२ ।

अहीनग्रहण-गमग्रहणम् । ७७ प्र० ८६ आ ।

अहीलणज - अहीनीयम् अज्ञानमुत्पन्नम् । उत० ३६५ ।

अहुण्ड्यासिय-अधुना यदुत्पितम् । औष० ५७ ।

अहुणोत्तपो-अधुनातन । भाष० ४२१ ।

अहुणोत्पन्ने-अधुनोपपन्न, अत्रिरोपपन्न । टाणा० १८७ ।

अहुमरतो-अप्रवन् । भाष० २७३ ।

अहे-अध, आरुण । सूत्र० ४५ । अधशब्दार्थे । वृ० द्वि० १७९ अ ।

आमन्नणार्थो निपात । भग० ४६० । अध-आमन्नार्थाभ्यंश शब्द । भग० ८३, ८६ । गतायाम् ।

उत० २१३ । भूमितले । प्रज्ञा० ८० । अध । टाणा० १६२ ।

अपेति परिप्रदानार्थ । टाणा० ४०६ । अध - अधस्तात् नीचे । भग० २६९ । अधशब्दश्च पदयवेऽपि

प्रयणामप्याश्रयाणा प्रतिमाप्रतिपत्तस्य तापो कल्पनीयतया तुभ्यताप्रतिपादनार्थ । टाणा० १५७ । यथार्थ । टाणा० ३२४ ।

अधशब्दार्थ । वृ० द्वि० १७९ अ । आधाकम् । वृ० प्र० ८३ अ ।

अधेपन्नगद्वरूपो-अध पन्नगार्द्ररूप, अधमन यत्पन्नग स्यात् तस्यैव रूपमाकारो यस्य न, अध पन्नगार्द्रवदति-सरलो दीर्घश्च । जीवा० २०६ । अध-अधस्तन यत्पन्नग स्यात् तस्यैव रूपम्-आकारो यस्य स । जीवा० २६१ ।

अहेऊहि - अहेतुभि, क्रियावाचादिरिकल्पितवृद्धेतुभि । उत० ४४९ ।

अहेघाए-अधोवात गोऽथ उद्वन्च्छं वाति वात स । जीवा० २९ ।

अहेत्रिगडे - अधोविक्रे-अध-तुम्पादिरहिते छत्रेऽप्युपरि तदम वेऽपि च । आचा० ३०१ ।

अहेचियड-पार्श्वेऽपारहत एहम् । वृ० द्वि० १८१ अ ।

अहेसगिज्जे - यथाऽमातुडमादिदोपरहित एणयीयो भवति तथाभूतो दुर्लभ । आचा० ३७६ । यथाऽसौ मूत्रोत्तर गुणोपरहितत्वेनपर्णयो भवति, तथाभूतो दुर्लभ इति । आचा० ३६८ ।

अहेसि-अभूयम् । भाष० १४६ । अभूत् । उत० ४९६ ।

अहो-अध अर्वाक । भाष० ८७७ । दीर्घभावे, किम्ह, आमतणे य । दश० चू० ९६ । उद्वन्धोतोऽनुहम् । नि० चू० वृ० २३ आ ।

अहोकाय-अध काय पादलक्षण । भाष० ५४७ ।

अहोत्था-अभूत् । उत० ४७५ ।

अहोधाए-अहतधारा वर्णा । भाष० ७९१ ।

अहोघिय - नियतज्ञेयविषयोऽवत्रिम्बूप शानदर्शनम् । टाणा० ४७३ ।

अहोरत्ता-अहोरात्रा-त्रिंशन्मुहूर्तप्रमाणा । टाणा० ८६ ।



अहोरोत्ते-अहोरानम् । भग० ८८८ ।  
अहोराइयाभिकम्बुपडिमा - अहोरानप्रमाणा एकादश  
भिधुप्रतिमा । सम० २१ ।

अहोलोप-अधोलोक, तिर्यग्लोकस्याधस्ताल्लोक । प्रज्ञा०  
१४४ ।

अहोलोयतिरियलोप-अधोलोकतिर्यग्लोक, यदधोलोक  
स्थोपरितनमेकप्रदेशिकनाकाशप्रदेशप्रतर यच्च तिर्यग्लोकस्य  
सर्वाधस्वनमेकप्रदेशिकनाकाशप्रदेशप्रतरम्, एतद्वयमपि ।  
प्रज्ञा० १४४ ।

अहोघाए-अधोघात, अध उद्गच्छन् यो वाति वात स ।  
प्रज्ञा० ३० ।

अहोविहारो-आधर्यभूतो विहार । आचा० १०७ ।

अहोवेइया - अधोवेदिका, यत्र जान्वोरधो हन्वी कृवा  
प्रतिलिख्यते सा । ओष० ११० । जाणु हेद्वाओ द्वितेसु  
हृत्तेसु पडिलेदेति । नि० चू० प्र० १८२ अ ।

अहोसिरा-अध सिरम, अधोमुखा । ज० प्र० १५४ ।



आ

आगुल-याक्षित । नि० चू० प्र० ३४७ अ ।

आटरगमादि-वनरूपतिथिमेय । नि० चू० द्वि० १५७ अ ।

आह-निपात । भग० ६७५ । विम्वयतधयते । टाणा०  
५२३ । वाक्यालङ्कारे । भग० १७६ । वाक्यालङ्कारार्थे ।  
प्रध० ११७ । अलङ्कारे । प्रध० १२६ । वाक्यालङ्कार, अध  
धारणे वा निपात । उपा० २७ । आदि-धमस्य प्रथमा  
प्रति । नीचा० ५५ । गणितप्रतियाया आदि (अगा  
वर्तुत्यायाग ) । सूत्र० ९ । यस्यापरममि न पृषम् ।  
अनु० ५४ । स्वमेद । अनु० ३४ ।

आहरितिया-शाम्पी तन्मा वृत्तद्वयत धीकयभोनाम वा  
प्र० म् करण कथयति या च तत्र गिर-वतिन गद्व-  
म् कथयति धीय मिष्टं पश्यद् । चू० प्र० ७१० अ ।

आहधर्षा-गार्धयित्तव । चू० मू० ४४ अ ।

आहध(य)दे-आदिध, आनी-द्वयमत धुतधम् आचा  
गदिधम्कामर्ष क्वानि-तदर्थम्कामर्षान प्रत्यर्क्यवर्षं य ।  
भग० ७१ ।

आहधयति-अध यति, अम-यति कथयति । भग०

१८ । ईषद् भाषन्ते । टाणा० १३६ । आचधते । आचा०  
१७८ ।

आइफखगा-आख्यायका, शुभाशुभकथका । ज० प्र०  
१४२ । य शुभाशुभमाग्याति । प्रध० १४१ ।

आइफखणं-रहितोच्चारणम् । चू० मू० २५ अ ।

आइफिरए-मातणविधा यदुपदेशात्तीनादि कथयन्ति यो  
ण्डो वधिरा इति लेकप्रतीता । टाणा० ४५१ ।

आइगर-आदिकर, षडभनामा भगवान् । उपा० ६२० ।

आइघ-आदिल, अचिन्मात्रिमानवासी द्वितीयो लोक  
कान्तिकदेव । भग० २७१ । आदितरामो येन वातेना  
दित्यो राशि भुजे । सम० ५६ । आदिल । आव०  
१३५ । सूर्य० २१२ ।

आइघजसाई-आदिलयस प्रभृति । नन्वी २४२ ।

आइघजसे-आदिलयशा, भरतचक्रियुग । टाणा० ४३० ।

आइघपेट-आदितरपीठम् । आव० १४६ ।

आइघसचच्छरे-आदिलस्यसर, युगभाविस्वसरदिशे ।  
सूर्य० १६८ । 'पुत्रविदगाण' मिरादिलक्षण सवत्सरविशेष ।  
सूर्य० १७१ ।

आइज-आदिय-रम्य । प्रध० ८३ ।

आइजा आदया दर्शनपथपुगता, उपादेया ममगा ।  
नीचा० २७१ ।

आइठ-विशिष्टम् । चू० मू० ६६ अ । आदिण-अशिष्टिता ।  
टाणा० ३२८ ।

आह(य)हि - आमदिः, आमसात् आमन्दिर्मा ।  
भग० १०७ ४९-१ ।

आहणम्-रमय कथम् । ज० प्र० ३६ । गृपकरिर्गै  
गिपकादि । आचा० ३९४ ।

आजिनक चममया वधरिण । भग० ५४० ।

आइण्णा - अ हीम्, गमनाश्रितम् । भग० १५३ ।  
गम्यार । अण्णान्णिया । आव० ४८ । अण्णीम् ।  
नि० चू० द्वि० १०७ अ । आजिनकम् । चू० प्र० ३३० अ ।  
आइण्णता-न तयत् । आय० ६२० ।

आइण्णशोभता । वाक्यालङ्कारे अण्णशोभता ।  
(सोम) शिष्टम् । नि० चू० मू० ५२ अ ।

आइण्णा-अण्णम् । नि० चू० प्र० १८६ अ । आइण्ण  
शोभता । नि० चू० मू० १८६ अ । अण्णम् । प्र वा० ३३३ ।

आइणो-पठोत्रे गतदस ज्ञातम् । उक्तं ६१४ । मगं ३६ ।

आइणो-आनीगं, गुणध्यासः । जीवां २७० । जारः । औपं ७१ । रितामिथ यत्रिं गुणेर्हि जयविक्रयाईहि भावुरिओ, असो जातिरेव वा । दशं ५० १६५ ।

आइरु-आरुच्य । (सर०) । आदिभ्यः, आधिक्रितः । प्रथं ४१ । आविद्धः, प्रेरितः । भाषं ६०२ ।

आइरु-आचोर्णम्, आमैयितम् । आचां ५ । आयरिय-परंपरणं बालकलाओ आदिण्य मिन्मीनोदररुड आमैयित त आइरु । नि० पृ० द्वि० १५७ आ । आत्मीया-त्मीयाऽऽवातमर्थादानुलघनेन ध्यात्ताः । भगं ३७ । कल्प्यम् । पिण्डं १६५ । आनीर्णम्-राजकुलसङ्घादि । दशं २८० ।

आइरुचर-जात्यप्रधानः । भगं ३२२, ४८१ ।

आइरुसंल्लिखं-रुयादिचित्रादीयं । आचां ३८१ ।

आइरु-आकीर्णानि, गुणप्रति । जं० प्र० २३२ ।

आइरु-आकीर्णं, आकीर्णं-व्याप्यते विनयादिभिर्गुणैरिति जालादिगुणोपेतं । उक्तं ३४९ । व्याप्तः । उक्तं ३४८ ।

आइरु-आनीर्णं, गद्दीर्णं, गुणध्यायो मनुयजनः । औपं ० । विनीतः । उक्तं ४८ । आचार्यगुरोराचारधुनमेवदादि-भिर्ध्यात्-परिपूर्णे । उक्तं ५५-१ ।

आइरु-आदिशुद्ध, प्रथमतः कोमलम् । अनु० १३१ ।

आइरु-शुभादिगुलो वलावाद्यं कार्णम् । आचां ८७ ।

आइरु-अदनं, भक्षणम् । आचां ७२६ । ध्यं प्र० १८० आ । भोजनम् । वृ० द्वि० १२६ आ । समुद्रनम-भोजनम् । वृ० तु० ४ आ । आपानम् । वृ० द्वि० ३४ आ । टाणं ३३१ । भूय प्रयापिचमि । वृ० तु० १८५ आ ।

आइरु-आदयति, दृक्कति, कम्पनीत्यर्थः । टाणं ३२० ।

आइरु-आदते । उक्तं १९८ ।

आइरु-आविलम्-गडुलम् । जीवां ३०० ।

आइरु-असह्य-उरिष्वचन्द्ररहितः । सूर्यं २८० ।

आइरु-आदिधुनः, सामाधिकारिधुनः । वृ० प्र० ३८ आ ।

आइरु-अभमप्रलम् । वृ० तु० २४९ आ ।

आइरु-आदिश्यते-अभिधीयते । भगं ७४९ ।

आइ-आदिः, संसारः, धर्मकारणानां वाऽऽदिभूते प्रागिम् । मृगं १६२ । सामीप्यम्, व्यवस्था, प्रकारः, अवयवश्च । प्रथं ७ । निवेगः । औपं ५ ।

आइ-आनीगः, आ-गमन्नादतीव इतो-गतोऽनापनन्ते संगरे । आचां २८५ ।

आइ-आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम् । जीवां ३९० ।

आइ-आजिनकम्, चर्ममयं वस्त्रम् । जीवां २१० ।

औपं ११ । जं० प्र० ५५ । जं० प्र० १०७ । निरगां ११ ।

आइ-आगमन्नादतीव इतो-गतोऽनापनन्ते संगरे प्रम-णम् । आचां २८६ ।

आइ-आ-समन्नादतीव इताः-ज्ञानं, परिच्छिन्ना जीवा-दरोऽर्था येन नोऽयमातीतार्थ-आदत्तार्थो वा, यद्विवा-तीता-सामस्येनातिकान्ता अर्था-प्रयोजनानि यस्य ग तथा, उपरतध्यापार । आचां २८६ ।

आउ-वैद्यम् । भावं ६६० । भाविपिण्डेनव-कर्म-पुत्रता । आचां १०७ ।

आउ-आउचनम्, गायत्र्योचनरुद्रम् । आचां ५७४ ।

आउ-आउचनप्रकारम् । भावं ८०३ ।

आउ-आउचनम् । भगं ६३१ ।

आउ-आयु, स्थिति । भगं २३६ । उताहो । वृ० प्र० २१० आ । एत-उपक्रमहेतुभिरनववर्षयन्तया यथाभिर्ध-वानुभवतीपतां गच्छतीति । उक्तं ३३५ । जीविने । टाणं १०८ । आयु, कर्मविशेष । टाणं २०० ।

आउ-आयु, पूर्णमुद, पदिमगमुदी वा । सूर्यं ४७ ।

आउ-आयु, आयु ध्वेग, आयु पूर्णकरणेन । आचां ५०१ ।

आउ-आयु, आयु भूम-आयुष्य मय्यक पालन । आचां २९० । जीविने । आचां २९१ ।

आउ-आतोयम्, बदिधं, मृदंगदि । भावं ५०८ । पदमेरीचमरीचसदयोर्दीनि । आचां ६१ ।

आउ-आतोयम्, आतोयकारम् । उक्तं १४३ ।

आउ-आतोयम्, उरयोक्त, उरयोक्त, उरनी । भगं १०० ।

आउञ्जिया-आयोजिका, भा-मर्षादया केवल्लिहया योजन-  
शुमानां योगानां व्यापारणम् । प्रज्ञा० ६०४ ।

आउञ्जियाकरणं-आयोजिकाकरणम् । प्रज्ञा० ६०४ ।

आउञ्जीकरणं-आवर्जीकरणम्, उदीरणावलिकायां कर्म-  
प्रक्षेपव्यापाररूपम् । औप० ११० । आवर्जितकरणम् ।  
प्रज्ञा० ६०४ ।

आउञ्जो-आवर्जः, आत्मानं प्रति मोक्षस्याभिमुखीकरणं-  
आत्मनो मोक्षं प्रत्युपयोजनमिति, अथवा भावज्येते-अभि-  
मुखीक्रियते मोक्षोऽनेनेति वा-शुभमनोवाक्पाव्यापारविशेषः ।  
प्रज्ञा० ६०४ ।

आउट्ट-आकुट्टम्, आलज्जालम् । उक्त० १४६ । आवर्जितः ।  
वृ० द्वि० ३४ अ ।

आउट्टइ-आवर्त्तते, प्रवर्त्तते । भग० २८९ ।

आउट्टणं-आकम्पनम् । वृ० तृ० ८५ अ ।

आउट्टणया-आवर्त्तना, आवर्त्तते-ईहातो निवृत्त्यापायभावं  
प्रलम्भिस्रो वर्त्तते येन बोधपरिणामेन सः, तद्भावः, अपा-  
यपर्यायः । नन्दी १७६ ।

आवट्टति-निवर्त्तते । सूत्र० १९० । आवर्त्तते-निवर्त्तते तमा-  
लोचयतीत्यर्थः । ठाण० १३९ । करोति । नि० चू० प्र०  
२५६ अ ।

आउट्टा - आराधिता । वृ० द्वि० ११२ अ । आवर्जिता ।  
औप० १५९ ।

आउट्टामो-प्रवर्त्तमिहे । आचा० ३३१ ।

आउट्टावेज्ज-अभिसुखयेत् । आचा० ३९४ ।

आउट्टिआप-आउट्ट्या-उपेय । सम० ३९ ।

आउट्टिज्जमाज्जं - आकोज्जमाज्जम्, सहोच्यमानम् । सूत्र०  
२९८ ।

आउट्टि-उपेय । व्य० प्र० १६ आ ।

आउट्टिय-ज्ञात्वा । आव० ७५८ । उतमार्थकृत्यः आहारः ।  
नि० चू० द्वि० ५७ अ ।

आउट्टिया-आउट्टिया नाम आभोगो ज्ञानान् इत्यर्थः । नि०  
चू० द्वि० ५९ अ । आवर्जिताः । वृ० द्वि० १८६ अ ।

आउट्टी-समाधानम् । वृ० तृ० १२३ अ ।

आउट्टे - कर्ममभिलषेत् । आचा० ४१७ । निवर्त्तयेत् ।  
आचा० १११ । आवर्त्तयेत्-अनुशूलयेत् । व्य० द्वि०

२८२ आ । आवृत्तः-व्यवस्थितः । आचा० २७९ । सम-  
न्तात् व्यवस्थितः । आचा० २७९ ।

आउट्टेउं-आवर्ज्यं । वृ० तृ० ३४ अ ।

आउट्टो-व्यावृत्तः । उक्त० ३३२ । आवर्जितः । द्वष्टः । उक्त०  
३३२ । स्वस्थः । उक्त० ३५५ । आव० २२० । उक्त०  
१०८ । आवृत्तः । आव० ५७८, २९४, ५३६ २८७ ।  
उक्त० ३२४ । आवर्जितः । आव० ४१२ ।

आउडिज्जमाण-‘उट्ट’ वन्दने, इतिवचनाद् ‘आजोञ्ज-  
मानेभ्यः’ आत्मभयमानेभ्यो मुखह्लादवृत्तानां सह सङ्ग-  
पटहस्तद्वयनिभ्यो वाद्यविशेषेभ्य आउड्यमानेभ्यो वा एभ्य  
एव ये जाताः शब्दास्ते, आजोञ्जमाना आउड्यमाना एव  
बोध्यन्ते, अतस्मान्नाजोञ्जमानानाउड्यमानान् वा शब्दान्  
शृणोति, इह च प्राकृतत्वेन शब्दशब्दस्य मत्तुमकनिर्देशः,  
अथवा आउड्यमानानि-परस्परैणामिदृश्यमानानि । भग०  
२१६ ।

आउड्डे-आउडति, सम्बद्धं करोति, लिखति । जं० प्र०  
२५० । आउड्डयति, ताडयति । जं० प्र० २२४ । आउ-  
ड्डयति । भग० १७३ ।

आउडस-आयुक्तम्, उपयोगपूर्वकम् । भग० १८४ । सम्भक्  
प्रवचनमालिन्यादिरक्षणतया । प्रज्ञा० २६८ । उपयुक्तः । ठाण०  
४०९ । प्रयत्नपरो मरशाराधनयुक्तः । उपयुक्तः । औप०  
२०२ । उपयोमतत्परम् । औप० १७६ । आउक्तः । व्य०  
द्वि० २६६ अ ।

आउत्तगो-आवर्त्तकः । उक्त० ३०४ ।

आउत्तियं-आयुक्तियम् । उक्त० ११९ ।

आउत्तो-आयुक्तः, व्यवस्थितः । दश० २२६ ।

आउउव-आयुक्तम्, जीवितम् । जज० ३४१ । आयुक्त-  
कालः, देवाणामुपकलक्षणः । आव० २५७ ।

आउयकम्मस्स गालणा-आयु-कर्मणो गालनं, प्राणवधस्य  
द्वादशः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

आउयकम्मस्स णिट्टवर्णं-आयु-कर्मणो निष्ठापनम्, प्राण-  
वधस्य द्वादशः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

आयुक्कम्मस्स मेय-आयु-कर्मणो भेदः, प्राणवधस्य द्वादशः  
पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

आउयकम्मस्स संयट्टगो-आयु-कर्मणो संवर्त्तनः, प्राण-  
वधस्य द्वादशः पर्यायः । प्रश्न० ५ ।

भाउयकर्मस्तुपद्यो-आयु कर्मण उपद्रव, प्राणकाम्य  
द्वादन पर्याय । प्रथ० ५ ।

भाउयसंधग्दा-आयुसंधग्दा । प्रथ० ४८० ।

भाउयसंघट्टण-आयु संघट्टण-आयुगणकम् । टाण० ६७ ।

भाउर-आतुर, क्षीरसमुत्थेनागन्तुनेन वा श्वेनेन भवान् ।

दश० २७० । शुभा विषाणया वा पीडित । ध्य० प्र०

२३ आ । दृशन्ते । नि० चू० प्र० २०२ आ । आतुर,

यदिदपि स्वास्थ्यमलभमान मन् आतुर । जीवा० १२२ ।

आतुर-दुग्ध । भग० ७०५ । श्वाने सति प्रतिजगारणार्थं

( प्रतिशया ) । टाण० ४८४ । अत्यन्तानुलननु । उत०

८६ । कामेच्छाऽऽर्था । आचा० २३८ । प्रतिशेवनामेद ।

भग० ९१९ । आतुर, चिक्रिगया अविषयभूत । विषा०

७६ । चिक्रिगया अविषयभूतो रोगी । सू० प्र० २८१ आ ।

मर्तुक्राम । उत० २७३ ।

भाउरपक्षसाण - नोपूतप्रत्याग्यानभेद । विद्वे०

१३२० । प्रतीकनाम । आच० ८०४ । धृतप्रत्यागया

नम् । भाव० ४७९ । अस्वास्थ्यमना । आचा० ७३ ।

आतुर-वित्तिरनाक्रियाभ्यपेत तस्य प्रत्याग्यानवर्गेनम् ।

नदी २०६ । अपूतप्रत्याग्यानम् । भाव० ४७९ ।

भाउरसरणं-आरोग्यता । दश० चू० ५१ ।

भाउररुसरण-आनुरसरणम्, दोषानुरोधयदानम् । दश०

११८ । आनुरसरणम्, शुभाद्यानुराणां पूर्वोपयुक्तस्मरणं

चानाचरितम् । दश० ११७ ।

भाउरीभूपहि-आतुरीभूते, आतुरीभूते । सू० प्र० ३९७ ।

भाउल-आतुलम् । ध्यमम् । आच० ५८५ । प्रतुरम् । भग०

९५ । आतुर, रस्य । विद्वे० ४०६ । गडुके, आदिते

वा । ताम० ५३ ।

भाउलगमर्ण-आतुलगमर्ण-एक्य मिलिता गच्छन्ति । ओप०

१०६ ।

भाउलमाउल-आतुलातुलम्, कृपाणिरिभोगविवाहयुदा

शिक्षणसंनानाप्रकारम् । भाव० ५७४ ।

भाउला-आतुला, त्वरमाग । सू० द्वि० ६५ अ ।

भाउलातुल-आतुलातुल, अनिष्ठातुल । प्रथ० ५० ।

भाउली-तडवडाण । जीवा० १९१ ।

भाउली-आतुल, अभिभूत । आच० ८८९ ।

भाउसं - आयु-जीविने तर्क्यमप्रधानत्वात् प्रथमं प्रभू

वा विद्यते यस्यानायुसंधग्दाभ्यस्तमप्रथम् । टाण० ७१ ।

भाउसंत-आयुमान्, विद्यमानः । दश० १११ । अचक्रे

गुण्युत्सावगन् वा । दश० ११७ ।

भाउसंक्षेपं-आयुमत्तेन, धवर्णादिमर्षादया गुण्युत्सेप-

मानेन । उत० ८० । भगवतेऽप्य विभेद्यमायुसंधग्दा-विश

जीविष्यता । मम० २ । धवर्णादिमर्षादया गुण्युत्सेप

मानेन । टाण० ९ । आयुमदने, आयुमता । नदी

२१२ । आयुमानेन-प्रीतिप्रवचनमया । मम० २ । हे

आयुमन् । मम० २ । नदी २१२ । आयुमता-गुरुकर्मयुतं

संशुद्धता । मम० २ । गुण्युत्सावगता । दश० १११ ।

आवगता गुरुत्वे । मम० २ । आयुमन्, विष्यामन्प्रथम् ।

उत० ८० ।

भाउसंघट्टणं आयुगणकम् । नि० चू० प्र० २७४ अ ।

भाउसणादि-आशोभना मृगोऽपि स्वमिनाभिर्भिरने ।

भग० ६८३ ।

भाउसेह-आक्रोशयति, शयति । भग० ६८३ ।

भाउसो-आयुमन्, पुत्रादेशान्प्रथम् । भग० १३० ।

भाउस्त-आश्लेष, अगभ्यवचनम् । गुण्युत् ९३ ।

भाउस्त्रियकरणं - आवरयच्छकरणम्, आवरित्रकरणम् ।

प्रथ० ६०४ ।

भाउह-आयुषम्, क्षेयं शत्रुम् । प्रथ० ४७ । अक्षेयम् ।

विषा० ४६ । मेच्छादि । जीवा० २०९ । क्षेयाशम् । भग०

१९४ । शत्रुम्, अथवाऽऽयुषं-अक्षेयशत्रु शत्रुदि । भग०

३१८ ।

भाउहस्ताला-आयुशाला-शयागारम् । भाव० १४८ ।

भाऊ-आयु एति-अगच्छति प्रतिवच्यकतां स्वहृत्कर्म

यद्वरकारिण्युतेतिष्कमिजुसन्तो जन्तोऽपि । अथवा आ-

ममन्नादेति-गच्छति भवाद् भवान्तरगच्छन्ती निरको

द्वयमिति वा । प्रथ० ४५४ ।

भाण-अनन्तकाय-बुद्धविदेव । प्रथ० ३३ । आमना ।

टाण० १३९ ।

भाणस-प्रभूक । ओप० ६७ । नि० चू०

प्र० १९ अ । प्रभूक आयात । ओप० १०१ ।

भाण । नि० चू० प्र० २८० अ । अदिग-द्विमहन्-

भूद्रीभेगादय । आचा० ९१ । प्रभूक । आचा०

१२१, ३५२। गर्भररादि । आचा० ४१५। व्यापारवि  
 योत्रेता । आचा० ३१८। दृष्टत । आचा० २६९।  
 आदिरयते इत्यादेश आचार्यपारम्पर्यभूत्यायातो वृद्धयानो,  
 यर्मोतिगमाचक्षते । आचा० २६९। प्रह्लाद । आचा०  
 २६३। प्राधुनिक । टाणा० ११८। उपचारो, व्यवहार  
 (देशे प्रपाने च) । टाणा० २२३। एतद्रथिव्यतीत्यदि  
 निर्णय । टण० मा० गा० ११५। आचि, विदेश,  
 आकिति मर्यादया विशेषरूपानतिक्रान्तिवया दिश्यते-  
 कथयत इति । उत० ३२। प्रापूर्वकतापु । आव०  
 २६३। प्रापूर्वक । ओष० १८३। आदेश-प्रकार सामा  
 न्यविशेषरूपस्य च। देशेन-ओषतो द्रव्यमाप्रतया न तु  
 तद्रतसर्वविशेषापेक्षयतिभाव, अथवा आन्तरेन-धृतपरिक  
 र्मिततया । भग० ३५७। आदेश, कथनम् । उत०  
 १४७। सक्तद्विविधो ह्यग्नय ६ वृ० द्वि० १३५ आ ।  
 उपचार । विशेषे १३१५। प्रापूर्वक । नि० चू० प्र० १४  
 आ । पाहुणक । नि० चू० प्र० २९३ आ । प्रापूर्वक ।  
 वृ० द्वि० १९५ आ । प्रापधितप्रकार । वृ० द्वि० ९८  
 आ । सन्मुख्यते । विशेषे २३१। आदयो नाम शातष  
 स्तुप्रकार । स च द्विविध-सामान्यप्रकारा विक्षपप्रकारश्च ।  
 विशेषे २३०। अस्तत्याधरिस । प्रश्न० १७। विध्यन्तरम् ।  
 दश० १३। व्यपदेश । आचा० ७४। अभ्यहित  
 । प्राहुणकम् । उत० २७२। अधिकार । वृ० प्र०  
 २७६ आ । प्रकार । विशेषे ९२२। अनुज्ञा । व्य० द्वि०  
 ३४६ आ । उपचार, व्यवहार, स च बहुतरै प्रपाने  
 वाऽऽदिरयते । टाणा० २२३। नयान्तरविकल्प । व्य०  
 द्वि० ३५४ आ । आदिरयते-आज्ञाव्यत इत्यादेश-कर्म  
 करादि । आचा० ४१५।

भाष्यसर्ण-आवेशन अथकारकुभकारान्स्थानम् । औप०  
 ६९।

भाष्यसर्णामि - आदेशनानि-लोहकारांशितानि । आचा०  
 ३२६।

भाष्यसर्ण-आदेश-कर्मकरादि म चामी परादेशेत्पर ।  
 आचा० ४१५।

आदसा-आदेश, प्रतिबन्धनमुपादव्ययश्रीभ्यासाचर पद  
 प्रसम् । विशेषे २९८।

भाष्यसर्ण-आपसिप्या । सूत्र० ७९।

भाष्यसिप-आदेशम्, विभागीदेशिन्वृत्तीगमेद । पिठ० ७५।  
 आओ-आय, प्राप्ति । विशेषे ४५०। उतादो । वृ० द्वि०  
 ७ अ । माय । आव० ३४२। लभ, उपदान, हेत ।  
 विशेषे ५४३। ज्ञानातिनामापहेतुव्याकथयनम् । टाणा०  
 ६। भूमिस्त्रोत्कविशेष । आचा० ५७।

आयोग - आयोग, द्विगुणादिप्रदथ अथदानम् । भग०  
 १३५। द्विगुणादिप्रदार्थ प्रदानम् । ५० प्र० २३२।  
 अर्थलाभ । औप० १२। अर्थोपाय यानपात्रोद्युम्भ  
 न्कानि । सूत्र० ४०७। परिकर । औप० ६१।

आयोगप्रयोगसपउत्ताह आयागेन - द्विगुणादिनामेन  
 द्रव्यस्य प्रयोग-अथवर्णना दान तत्र सम्प्रयुक्तानि-व्यापृ  
 तानि तेन वा सम्प्रयुक्तानि-मत्ततानि तानि । टाणा०  
 ४२२। आयोयो-द्विगुणादिप्रदार्थप्रदान, प्रयोगश्च-एता  
 न्तरं ती सप्रयुक्तो-व्यापारितो यैस्ते । भग० १३५।

आयोगप्रयोगसपउत्ते-आयोगप्रयोग-द्व-वार्धनोपायवि  
 शेषा सप्रयुक्ता-प्रवर्तता येन । टाणा० ४२३।

आओडविद-आशोच्यति, प्रवेतयति । विपा० ७२।

आओसे-प्रकाशे । औप० ७६।

आओसेज्ञा-आशोच्यते । उपा० ४२।

आओहण-आयाधनम्, (सुद्धम्) । टाणा० ४०२।

आकद्रिय-आकृतिरूपम्, यो विरुपकरणम् । प्रश्न० २०।

आकपहस्ता-वैद्यावृत्त्यानि आकम्प्य-आवर्ज्ये । टाणा०  
 ४८४। यदायचनाऽऽचार्य वैद्यावृत्तरणानिनावय यदा  
 लोचनम् । भग० ९१५।

आकृष्टविकर्हि-आकर्षणविकर्हि । भग० ६८५।

आकृष्टि-आकृष्टि । भग० ६८३।

आकृष्टविकर्हि करेइ-आकृष्टविकर्हि करोति आकर्षणं  
 पिंसा कराति । भग० १६७।

आकरणम् - आगरण आदानम् । आप० २०४।

आकाशम् आश्विन मन्वभावानि-व्यात्या काशत इति ।  
 उत० ६७७। सप्रभावावकाशानात् आ-मर्यादया चार-वे-  
 दीप्यते पदार्थवायो यत्र तत् । आ-अभिविधिना काशत  
 दीप्यते पदार्थो यत्र तत् । अत्र० ७४। आकिति मर्यादया-  
 स्वस्वभावावरीत्यागण्यया काशत-स्वस्वस्वैः प्रतिभासते  
 तरेपदार्था इति । उत० ६७७। वृ० प्र० ९१ अ ।

आकाशगा - आगमना मूलविरया । प्रश्न० ७०।

आकासादि-आकर्षय । आचा० ३७८ ।  
 आकारसिद्धि-सावविशेष । जं० प्र० ११८ ।  
 आकिण्ण-अतिरीण । नि० चू० तृ० १३ अ ।  
 आकृष्टि-द्विषा । आचा० ३०५ ।  
 आकृष्टिय-उत्प्रेल । वृ० तृ० १२० आ ।  
 आकुल-आकुल, व्यास । जं० प्र० १८८ ।  
 आकृतम्-अभिप्रेतम् । विशेषे ८८५ ।  
 आकृष्टिविकृष्टि । व्य० प्र० १४ आ ।  
 आकेवलिआ-आकेवलिका, न केवल अकेवलम्, तत्र भवा आकेवलिका-गद्वन्दा-सप्रतिपक्ष इत्यायत्त असम्पूर्णा वा । आचा० २४१ ।  
 आकोट्टिम-आकुट्टिक यथा ह्यकोऽथस्तादपि उपर्यपि मुच कृत्वाऽऽकृत्यते । दश० ८६ ।  
 आकोडन-आकोणम्, कुट्टनेनात्रे प्रवेदानम् । प्रश्न० ५७ ।  
 आकोडेमाणे - आउडेमाणे, आकुट्टयमानम्, आह्वयमानम् । भग० २५१ ।  
 आकोसायंत-आकोशायमानम्, विकचीभवत । जीवा० २७१ । जं० प्र० १११ ।  
 आक्षोषुका-क्षुधा रहिता । दश० १३७ ।  
 आख्यातिकम्-क्रियाप्रधानत्वात् धावतीति । अनु० ११३ ।  
 आख्यायिकास्थानानि - अक्त्वाइयठाणाणि, कथानकस्थानानि । आचा० ४१३ ।  
 आगतागारं-गामपरिसङ्घाण, आगतागारं-वहिया वासी । नि० चू० प्र० १८३ अ । आगन्तुकाना कार्पटिकादीनाम गारमागन्तागारम् । सूत्र० ३१३ । प्रामादेर्बहिरागत्यागल पयिकादयस्तिष्ठन्ति । आचा० ३६५ ।  
 आगतार-यत्र गारिण आगल तिष्ठन्ति तदागन्तुकागारम् । वृ० तृ० ४८ आ । प्रमायाता आगय वा यत्र तिष्ठन्ति तदागन्तारम्, तत्पुनर्प्रोभाभवत्तदो बहि स्थान तत्र । आचा० ३०३ । आगन्तागारम् ( धर्मशास्त्रे ) । आचा० २०२ । पत्ताद्वहिर्यहम् । आचा० ३४८ ।  
 आगन्तु-आगन्तुक पथिकादिरगारस्थत्रो यत्रागल लनिष्ठते । वृ० द्वि० १७९ आ ।  
 आगन्तुप्रो-आगन्तुक, कष्टकादिप्रभव । आव० ७६४ ।  
 आगन्तुगो-आगन्तुक । आव० २७० । आगन्तुण सत्या-तिष्ठाकथो चो मो । नि० चू० प्र० १८८ आ ।

आगन्तुय-आगन्तुक । दश० १०८ ।  
 आगन्तु-आगन्तुक । उक्त० ११३ ।  
 आगंपिया-वशीकृता । नि० चू० द्वि० ९७ अ ।  
 आगह-आगति, प्रत्याश्रया-प्रातिश्रयेनागमनम् । आव० २८१ । प्रसापत्रप्रत्यागत्रस्थाने आगमनम् । ठाण० १३३ ।  
 आगम - आगमनम्-आगम-आ-अभिविधिना मर्वादया वा गम-परिच्छेद इति । आव० २६ । आगम्येपारम्पर्येणागम, आस्यचनं वा । अनु० ३८ । आगम्यन्ते-परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेनेति, केवलमन पर्यायावधिपूर्वकगुरुदशकनवकरण । ठाण० ३१७ । सूत्रार्थोभयरूप । आव० ५२४ । आगम्यन्ते-परिच्छिद्यन्ते अर्था अनेन इति आगम-आगतवचन-सम्पाद्यो विप्रवृष्टार्थप्रत्यय । ठाण० २६२ । गुरुपारम्पर्येणागच्छतीति आगम, आ-समान्ताद्रम्यन्ते-ज्ञायन्ते जीवा-दय पदार्था अनेनेति वा । अनु० २१९ । आप्तप्रणीत । आचा० ४८१ । (आगममिद) । ठाण० २५ । सूत्रम् । आव० ६०४ । धृतपर्याय । विशेषे ४१६ । अभ्ययनम् । आव० ३०० । आगम, प्राप्ति । दश० १६ । सङ्ग्रहम् । वृ० प्र० ३२ आ । अर्थगरीज्ञानम् । व्य० प्र० २५१ आ । आ-अभिविधिना सकलधृतविययव्याप्तिरूपेण मर्वादया वा यथावस्थितग्रहणारूपया गम्यन्ते-परिच्छिद्यन्तेऽर्था येन स । नदी २४९ । आग छति गुरुपारम्पर्येणेत्यागम । भग० २२२ । आगम । विशेषे ४३२ ।  
 आगमकुसला-आगम-धृतिरच्छ्रयाविरूपस्तरिन्नु उदाला-घागमकुसली । उक्त० ५२१ ।  
 आगमणं-प्रयोजनपरिममाप्तौ पुनर्वर्गति गमनम् । आव० ५७३ । आकसण । नि० चू० तृ० ६३ आ ।  
 आगमणगिहं - मभाप्रपादेवउल्लादिगधिकस्थानम् । वृ० द्वि० १७९ आ । आगमनच्छ-समाप्त्यादि, पथिकारीनामा गमनेनेपेन, तदर्थं वा गृहम् । ठाण० १५७ ।  
 आगमत - आगममाश्रित (जानापेक्षेयर्थ) । अनु० १४ ।  
 आगममाणे - आगमयन्-आपादयन् । आचा० २७८ । २८३ । अक्वमयन्, सुच्यमान । आचा० २४५ ।  
 आगमंथयहारी-आगमंथयहारी लब्धिहे-केवलशाणी ओही-शाणी मणपञ्चवर्णाणी चोदसपुष्वी अभिगणदपुष्वी गण-पुष्वी य । नि० चू० तृ० १०० अ । आगमंथयहारीण,

व्यवहारपथके प्रथममेतद् । व्य० प्र० ५ अ । प्रायश्चिन्तानिनः ।  
व्य० प्र० ६३ अ ।

**आगमसूत्र**—आगमशास्त्रम्, आ—अभिविधिना सकलश्रुत-  
विषयव्याप्तिरूपेण मर्यादया वा यथावस्थितप्ररूपणारूपया  
गन्धन्ते—परिच्छिद्यन्तेऽर्था येन स आगमः, स चैवं व्युत्पत्त्या  
अवधिनेवलादिलक्षणोऽपि भवति तत्तत्सद्व्यवच्छेदार्थं  
विशेषणान्तरमाह—‘शास्त्रे’ति शिष्यतेऽनेनेति शास्त्रमागमहर्ष  
शास्त्रमागमशास्त्रम् । नंदी २४१ ।

**आगमिषद्गो**—ज्ञानः । आच० ३१७ ।

**आगमिओ**—आगमितः, ज्ञातः । आच० ४३७ ।

**आगमियं**—ज्ञातम् । आच० ११६ । ओप० १०५ । ज्ञातः ।  
आच० ३१६ ।

**आगमियाणि**—प्राप्तानि, अभीतानि । आच० ४३३ ।

**आगमिस्त्वं**—आगमिष्यम्, आगामि । आच० १६७ ।

**आगमिसस्त्वद्भ्रष्टाद्य**—आगमिष्यदिति—आगामिक्काल-  
भावि भ्रष्ट—कल्याण यस्मिंस्तथा तस्य भावस्तथा तथा, यदि  
भाऽऽगमिष्यतीत्यागमः—आगामी कालस्तदिरमन् शब्दभ्रष्ट-  
तया—अनघरतकल्याणतयोपलक्षितम् । उत० ५८५ ।

**आगमिस्त्वा**—आगामिक्कालः । आच० ५३२ ।

**आगमेति**—जानाति । विपा० ७३ ।

**आगमेयव्यं**—आगमयितव्यम्—ज्ञातव्यम् । वृ० प्र० ११२ अ ।

**आगमेस्ता**—आगमिष्यन्ती । आच० १७४ ।

**आगमेसिभ्रष्टा**—आगमिष्यत् भ्रष्टा—द्वितीयभवे अन्तर्हृतः ।  
उपा० २९१ ।

**आगमेस्सन्ति**—आगमिष्यामि—शुद्धीष्यामि । व्य० द्वि०  
४१८ आ ।

**आगमेस्त्वा**—भविष्यतः (मर०) ।

**आगमेस्त्वाणं**—आयत्याम् । आच० ३५८ । भविष्यताम् ।  
( महाप्र० ) ।

**आगमोर्गं**—आगमौर्ग, पथिकाद्यगारिणं स्थानं, तथा आग  
मने वा यद् गृहं तद् । वृ० द्वि० १७५ आ ।

**आगव्यं**—आगतम्—स्वीकृतम् । आच० १८१ ।

**आगया**—आगता—सिद्धा । रागद्वेषाभावात् पुनरावृत्ति-  
रहिता सर्वत्रा । आच० १६७ ।

**आगयपण्ण्य**—आयातप्रथवा पुनरुद्देशादागतमनुमुकल-  
भ्येत्तर्यं । भग० ४६० ।

**आगर**—आकर, यत्र सन्निवेशे लक्षणाद्युत्पद्यते । टाण०  
४४९ । उत्पत्तिस्थानम् । ( मर० ) । अन्त० ७ । वृषिव्या-  
घाकरः । आच० ६२२ । लोहागुत्पत्तिभूमिः । टाण०  
२१४, ७८६ । आकरः, हिरण्याकरादि । प्रज्ञा० ४८ ।  
खानिः । प्रश्न० ३८ । ओप० ९ । रत्नादीनामुत्पत्ति  
भूमिः । प्रश्न० १३४ । उत० ६०५ । हिरण्याकरादिकः ।  
जीवा० २७९ । लोहागुत्पत्तिस्थानम् । प्रश्न० १२७ ।  
अनु० १४२ । आगल्य तस्मिन्पुंतीत्याकरः । आच० ५ ।  
हिरण्याकरादिः । जीवा० ४० । लोहागुत्पत्तिस्थानम् ।  
भग० ३६ । भिल्लपाने मिलकोई वा । नि० चू० तु० ५२  
अ । चू० द्वि० २४६ अ । कुट्टिकापणादिः । वृ० द्वि०  
२४२ अ । जल्य परद्रादिसमीपेभुवहुं जलमुत्सृज्यते । नि० चू०  
प्र० ६२ अ । हृष्यसुवर्णागुत्पत्तिस्थानम् । नंदी २२८ ।  
सुवर्णादेरुत्पत्तिस्थानम् । ओप० १५ । ताम्रादेरुत्पत्तिस्थानम् ।  
आच० ३२९ । सुवर्णादिधातूनां खानि । नि० चू०  
द्वि० ७० आ ।

**आगरमहेसु**—आकरमहो—खानिमहोत्सवः । आच० ३२८ ।  
**आगररुह्यं**—आकररूपम् । भग० १९३ ।

**आगररिस**—आकर्षणं—चारित्र्यस्य शक्ति । भग० ९०५ । आकर्षणं—  
तथाविधेन प्रयत्नेन कर्मपुत्रयोपदानम् । प्रज्ञा० २१८ ।  
आकर्षणम्, प्रथमतया मुक्तर्य वा ग्रहणम् । आच०  
३६३ । एकानेकभवेतु प्रहणानि । आच० १०५ । आक-  
र्षणमाकर्षणं—एकस्मिन्मानाभवेतु वा पुनः पुनः सामाधिक्यस्य  
ग्रहणानि प्रतिपत्तये । अनु० २६० ।

**आगलणं**—वैकल्पम् । व्य० प्र० १३२ आ ।

**आगलैति**—आकलयन्ति, जेष्याम इत्यथ्यवस्यन्ति । भग०  
१७४ ।

**आगलेइ**—शुद्धाति । उप० मा० गा० ३१३ ।

**आगल्लो**—ग्लानः । वृ० ए० १२९ आ ।

**आगसत्तं**—आकृत्यत इति आगम्यन् तं च दत्तव्यं । नि०  
चू० प्र० १७४ आ ।

**आगाद**—कर्कात् । वृ० द्वि० ७३ आ । तीव्र । आच० ५८८ ।  
अत्यर्थम् । व्य० प्र० २५२ अ ।

**आगादयोग**—आगादयोग, गणयोग । ओप० १८१ ।

**आगादपण्ण**—आगादपण, आगादा—अवगता परमार्थ-

पर्ययमिता तत्त्वनिष्ठा प्रज्ञा-सुद्धिरस्यासौ । सूत्र० २३७ ।  
शास्त्राणि । ध्य० प्र० २२६ अ ।

**आगादो**-आगादतरा जम्मि जोगे जतणा सो । नि० पू०  
प्र० १९७ अ ।

**आगामिपद्**-आगामिपथ, आगामिनो-लक्ष्यव्यस्य वम्बुन  
पन्था । टाणा० ९८ ।

**आगार**-गृहम् । अनु० २४४ । आगर-आक्रियतेऽनेना-  
मिश्रेत ज्ञायत इति, बाह्यचेष्टारूप । आव० २८१ ।  
प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽनाभोगादय । आय० ८४० । आ-  
कार-आक्रियत इत्याकार-प्रत्याख्यानापवादहेतुर्मेहतराया-  
कार । भग० २९६ । आकारा-प्रत्याख्यानापवादहेतवोऽना-  
भोगादय । टाणा० ४९८ । शरीरगता भावविशेषा । ध्य०  
प्र० ६४ आ । प्रतिनियतोऽर्थप्रदणरिणाम । प्रज्ञा० ५२६ ।

तन्त्रप्रणामाप्रम् । प्रज्ञा० ३७१ । प्रत्याख्यानापवादहेतुरनाभो-  
गादि । आव० ८४० । बाधचेष्टारूप । विशेष० ८८५ ।  
आहतय, स्वरूपाणि । अनु० १३१ । टाणा० ३९५ । दिग्  
बलोकनादि । वृ० प्र० ४३ अ । आकृति । जीवा० २०७ ।  
प्रभा । जीवा० २६५ । प्रतिवस्तु प्रतिनियतो प्रदणपरि-  
णाम । जीवा० १८ । मूर्ति । जीवा० २७३ । विशेषतः  
प्रदणशक्ति । भग० ७३ । स्थूलधीसवेद्य प्रत्यानादिभावा-  
भिव्यञ्जको दिग्बलोकनादि । उक्त० ४४ । सञ्चिनेशविशेष ।  
सूर्य० २९३ ।

**आगारधर्म**-आगारधर्म द्वादशवन्नरूपो गृहस्थधर्म ।  
**आगारभाव**-आकारभाव, स्वरूपविशेष । ज० प्र० १८ ।  
जीवा० १७६ । आकार एव भाव । आव० ३३८ ।

**आगारभावघण्टोयादे**-आकारभावप्रत्यवतार, आकारस्य-  
आकृतेर्मत्वा-पर्याया, अथवा आकाराद्य भावाद्य आकार  
भावास्तेषां प्रत्यवतार-अवतरणमाभिर्भाव । भग० २७७ ।  
**आगारभावमायाप**-आकारभाव एव अतारभावमात्र ।  
आव० ३३८ ।

**आगारमेप**-आधारमेद । प्रज्ञा० ५३१ ।

**आगाल**-आगाल, आगालनमागाल-समप्रदेशावस्थानम् ।  
आचा० ५ ।

**आगास**-आकाशम्, अनाहतस्थानम् । प्रथ० १३८ ।  
आकाशम्, सर्वद्वेषस्वभावानाकाशयति-आशीरयति तेषां  
स्वभावलाभेऽवस्थानदानादिति, आह-मर्यादाऽभिधिवाची,

तत्र मर्यादायामाकाशो भयन्तोऽपि भावा स्वात्मन्येवाऽऽगते  
नाकाशात् वाप्तीयेरं तेषामात्ममाद्वरणाद्, अभिरिपी वृ  
गर्भवाक्योपानादाकाशमिति । टाणा० ५५१ । आह इति मर्या-  
द्या स्वस्वभावापरिलग्नरूपया काशान्ते-स्वरूपेण प्रति-  
भाणन्ते अस्मिन् व्यसिधना पदार्था इत्याकारम्, यदा  
त्वमिधिवावाह तदा 'आह' इति सर्वभागमिध्याप्या  
काशते इत्याकारम् । प्रज्ञा० ९ । आकाशम्-मृगादिरहितम् ।  
वृ० प्र० ९१ अ । आ-मर्याद्या अभिनिधिन वा गौर्धर्मा  
काशन्ते-स्व स्वभावं लभते यत्र तदाकाशम् । भग० ७७६ ।  
आप्ति मर्याद्या स्वस्वभावापरिलग्नरूपया काशान्ते-स्व-  
पेगेव प्रतिभाणन्ते तस्मिन्पदार्था इत्याकारं, यदा स्वमिधिवा-  
वाह तदा आप्ति-सर्वभावाभिध्याप्या काशत इति । उक्त०  
६७२ ।

**आगासगामित**-आकाशगामित्वम् । टाणा० ३३० ।

**आगासगर्भ**-आकाशगर्भ-व्योमवर्ति आकाशर्ष वा-प्रकाश-  
मिल्लर्षे । गम० ९१ ।

**आगासतल**-आकाशतलम् । जीवा० २६९ । कटाग्रच्छ-  
सुद्धिमम् । जै० प्र० १०६ । आव० ६९५, ६९९ ।

**आगासधिगल**-आकाशधिगलं, शरदि मेषाणान्तगल-  
वर्याकाशखण्डम् । प्रज्ञा० ३६० । शरदि मेषमुक्तमाकाश-  
खण्डम् । जै० प्र० ३२ ।

**आगासफलद**-आकाशफलिकम्, अनिस्वच्छस्वदिकवि-  
शेष । जीवा० २५३ । जै० प्र० २७५ । भग० १० ।

**आगासफलोद्यमा**-आकाशास्वदिकोपमा । प्रज्ञा० ३६५ ।

**आगासफलोद्यमाह**-स्वाद्यविशेष । ज० प्र० ११८ ।

**आगासवासिणो**-जातिभुगितविशेषा । नि० पू० द्वि०  
४३ अ ।

**आगासाहवाह**-आकाशादिवादिन, अमूर्तानामपि पदार्थानां  
साधन(नि) समर्थवादिन । औप० २९ । आकाशातिपातिन -  
आकाश व्योमातिपनन्ति-अतिक्रामन्ति आकाशागमिधिसा-  
प्रभावात् पादलेपादिप्रभावाद्वा आकाशाद्वा हिरण्यवृष्णादिक-  
निष्ठमनिष्ठ वाऽनिसायेन पातयन्तीत्येवशीला । औप० २९ ।

**आगासिया**-आकाशिता, आकाशे-अम्परमिता-प्राप्ता,  
आकृतिता वा-आहृता, उत्पादितेति वा । औप० २२ ।

**आद्य**-सूत्ररूपाणि प्रथमप्रवृत्तस्वरूपे दशमाध्ययननाम । सूत्र०  
१८६ । आरयानवान् । सूत्र० १८८ ।



आर्घसण-एतेहि एकसिं आपसणं । नि० चू० द्वि० ११९ अ ।  
नि० चू० प्र० १९० अ ।

आर्घवदत्ता-धर्ममाख्याय, आख्याय सामान्यतो यथा  
कार्यो धर्मे । टाणा० ११९ । आख्यायक-प्रस्तापक ।  
टाणा० २९७ ।

आर्घवउ-आख्यात, तस्मिन् क्षेत्रे प्रसिद्ध । आच० ५२४ ।  
आर्घवणा-आख्याना । उपा० ४७ ।

आर्घविए-आख्यात, सामान्यविशेषपर्यायाभिध्यातिवध  
नेन । उपा० ५९८ ।

आर्घविर्जति-प्राकृतशैल्या आख्यायन्ते-सामान्यविशेषाभ्या  
कथ्यन्ते । सम० १०९ । नदी० २१२ ।

आर्घविर्ध-अर्घापितम्, अर्थ-पूजा तस्य आप-प्राप्ति  
जाता यस्य तत्, अर्थ वा आपिते-प्रापिते यत्नः । प्रश्न०  
११३१ ।

आर्घवेह-आख्यापयति सामान्यविशेषरूपत । टाणा०  
५०२ । भग० ७११ ।

आर्घवेज्ज-आप्राहणेच्छ्यान् अर्घयिद्ये च-प्रतिपादनत  
पूजा प्राप्येत । भग० ४३६ ।

आर्घाज्ज-आर्घात । दश० २०११ मरणम् । सुत्र०  
१७८ । तथाविषयतनयाऽन्यप्राणिनामात्मनश्च विधिवत् सति  
चित्तशरीरतया यस्मिंस्तन् । उपा० १४९ ।

आर्घातर्ण-आर्घातभम्, यत्र सद्भाभि बहुनि सृतानि सन् ।  
आच० ७४४ ।

आर्घातो-जर्वतो भूतो अर्घ्या मगासमन्त्रिये ते सध्वे  
पातयतीति । दश० चू० ९८ ।

आर्घादियं-अर्थयित्वा । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

आर्घाद्यटाणं-आपातस्थानम्, वषस्थानम् । आच० ७४१ ।

आर्घायणं-आपातनम्, वषभूमिमण्डलम् । प्रश्न० ५९ ।  
जग्ध (धृयकादि) हतो त । नि० चू० तु० ७२ अ ।

आर्घायाध-आपातनम्, क्लेशानामिभिरपक्षमकारणं सम  
न्नादातयन-विनाशयन् । उपा० २५४ ।

आर्घादिध-आचरितम्, वष्यम् । दश० ११६ ।  
आर्घार- (आचार), चक्रवात्सामाचारिक्य । चू० प्र०  
२४९ अ । सामाचारप्रतिपादये प्रथ । सिधे० ६४८ ।  
आर्घाविरितो ध्यवहार । उपा० ७११ । ध्यवहार । टाणा०  
१६० । ऐराणादिको वाध क्रियाद्यप्य । उपा० ४९९ ।

पूर्वपुराचारितो ज्ञानाशासेवनविधि, ताप्रतिपादके प्रथ्य ।  
नदी २०९ । आरियम् । उपा० ९८३ । आचरणमाचार-  
उचितक्रिया विनय इतियावत् । उपा० ३४४ ।

आचारप्रधिधि- (आचारपण्ठी), दसवैकालिकसाध्य  
मध्यनम् । दश० २२४ ।

आचारवस्तु- (आचारवर्ष), नवमपूर्वगतवृत्तीयवस्तु ।  
उपा० २५८ ।

आचारसम्पत्- (आचारसप्या), सयमधुवयोग्युक्ततारि  
चतुर्भेदभिजा सम्पत् । उपा० ३९ ।

आचारिकम्- (आचारिय), निजनिजाचारमवमनुगलम् ।  
उपा० २६६ ।

आचार्यपरिभाषित्वम्- (आचारियपरिभाषित), प्रथम-  
समाधिस्थानम् । प्रश्न० १४४ ।

आचार्यो-आचार, आचार्यतेऽनेनातिनिविष्टं कर्माशीला-  
चार । आच० ५ ।

आच्छिद्युषं- एकसि ईयद्वा छेदनम् । नि० चू० प्र०  
१८९ अ ।

आज्यजयीभाव-पुन पुनर्भोगभाव । आच० ७९ ।  
उपा० ३३६ ।

आज्यर्जवे-अज्यजवी, पुन पुनर्भोगम् । आच० १९१ ।

आजाह-आजायन्ते तस्वामिष्ठाजाति, आचारपर्याय ।  
आच० ६ । आजगति-समुप्यजन्म गहिता जायेध्वयंका  
दिरहिततया । टाणा० ४१९ । सम्पूर्च्छनगर्भोपपातयो

जन्म । टाणा० ५१२ । द्युतस्वोद्वृत्तस्य वा पुमाद्युपन  
तिर्भवत्कथा गहिता पुमानुपादिवदेव । टाणा० १२२ ।

आजाहसहस्र-आजातिसहस्रम्, अनेकेषु-देवकिञ्चनम  
प्रतिजीव क्रमप्रत्येपे अभिकरणभूतेषु चतुस्वापुष्कमहासि त  
स्वामिरीयानामापादीनां च बहुसतसहस्रद्वारवार । भग०  
२१० ।

आजिणभहो-आजिणभद, आजिणे द्वीपे पूर्वार्धोपरिधि  
देव । जीया० ३६९ ।

आजिणभदाभहो-आजिणभदाभद, आजिणे द्वीपेऽधोपार्धो  
परिधिदेव । जीया० ३९० ।

आजिणय आजिणयम्, यर्मयवे यद्यम् । जीया० २९९ ।

आजिणयत्तभहो-आजिणयत्तभद, आजिणयत्तभदो । जीया०  
३६० ।

आढत्त-आरण्यम् । भग० २८२ ।  
 आढत्ता-आरण्या । आव० ३३५ ।  
 आढत्तो-आरण्याः । आव० १०३, ५१३, २६२ । दश० १७ ।  
 आढत्त-आढकः, तैत्तिकप्रतपाः । जं० प्र० २४४ ।  
 आढवेष्ट-आरभते । दश० ३८ ।  
 आढवेऊण-आरभ्य । आन० ३४५ ।  
 आढा-आदरः । वृ० द्वि० ६७ अ॥  
 आढाति-आद्रियते । दश० ५९ । आव० १२, ८१२ ।  
 अरढायमाणे-आद्रियमानः । आवा० २८४ ।  
 आणो-आज्ञा-योगेषु प्रवर्तनलक्षणम् । टाण० ३३१ । विधि-  
 विषयमादेशम् । टाण० ३८६ ।  
 आणोतरिप-आनन्तर्यम्-सातत्यमच्छेदनमविरहः । टाण०  
 ३४६ ।  
 आणोद्-आनन्दः, द्वितीयमासखण्डे मिश्रादाता । आव०  
 २०० । उपासकदर्शोपासकभयनम्, तक्षाम धावकः । उपा०  
 १ । गाथापतिः । आव० २१५ । नालदेवादिहिरकार्यां गाथा-  
 पतिः । भग० ६६२ । आनन्दः, पद्यो बलदेवविशेषः । आव०  
 १५९ । भूतेन सामाधिक्यवती दृष्टातः । आव० ३४७ । पौडशः  
 मूर्धन्यविशेषः । सूर्य० १४६ । जं० प्र० ४५५ । परणोद्-  
 रणानीकाधिपतिः । टाण० ३०३ । पद्यो बलदेवः । स०  
 १५४ । क्षीतलजिनाचरणसूत्र । स० १५२ । भगवान् महा-  
 वीरशिल्पः । भग० ६६८ । अवधिनिर्णयविषये धर्मगो-  
 पासकः । सूत्र० ९ । प्रथमप्रायस्कनाम । आव० २१५ ।  
 आणोदकूडे-आनन्दनाम्नो देवस्य कृतमानन्दकृतम् । जं०  
 प्र० ३१३ ।  
 आणोदपुरं-आनन्दपुरम्, इन्द्रोक्तगुणविषये कच्छदेशे  
 नगरम् । आव० ८२४ । द्रव्यमहोदाहरणे पुरं । नि० चू०  
 द्वि० ४२ अ । स्थलपञ्चनविशेषः । नि० चू० प्र० २२९ अ ।  
 ( मार्गोपलक्षणे ) नगरविशेषः । नि० चू० प्र० २४९ अ ।  
 नगरविशेषः । नि० चू० द्वि० ७१ अ । क्षेत्रविषयसि नगर-  
 विशेषः । नि० चू० द्वि० ८ अ ।  
 आणोदपुरे मूलनैलस्यै सर्वजनसमक्षं दिवसतः वस्त्रकर्षणं  
 भवति । नि० चू० प्र० ३५५ अ ।  
 आणोदरमिष्य-आनन्दरक्षितः, पाश्चात्यलक्ष्यविरतनाम ।  
 भग० १२८ ।

आणोदा-आनन्दा, पूर्वदिग्दक्षकवास्तव्या दिग्गुमारी । आव०  
 १२२ । दक्षिणदिग्दक्षकजनयवैतस्वापरस्मां पुत्रकर्षिणी ।  
 जीवा० ३६४ । अञ्जनकपर्षिणी पुष्करिणी । टाण० २३० ।  
 पौरस्वस्वचकवास्तव्या तृतीया दिग्गुमारी । जं० प्र० ३९१ ।  
 आणोदिष्ट-आनन्दितः, वृष्टः, वृष्टः, वैष्णुमुखसौम्यतादिभावाः  
 समृद्धिसुपगतः । भग० ११९, ३१७ ।  
 आणोदियं-आनन्दितम्, स्फीतीमूलम् । जीवा० २४३ ।  
 आण-आशा, श्रुतपर्यायः । विशेषे ५३१ ।  
 आणोदिति-आनयन्ति । वृ० द्वि० १०९ अ ।  
 आणोद्विखऊण-परीक्ष्य । आन० २९१ ।  
 आणोद्विखस्तसि - अग्नीध्रिप्यानि - अन्वेषयिष्यामि ।  
 आवा० २८२ ।  
 आणोद्विखेते-परीक्ष्य । ओष० ३३ । अहमीष । वृ० वृ०  
 १६४ अ ।  
 आणोद्विखऊण-हात्वा, निदिधत् । नि० चू० प्र० ६ अ ।  
 आणोतं-एतेन विचितासागरोपमस्थितिके विमानम् । स०  
 ३७ ।  
 आणोत्तं-अप्यत्वम्-अनगरद्वयसम्बन्धने ये पुद्गलास्तेषां  
 भेदः । भग० ७४१ ।  
 आणोत्तिं-आशक्तिकाम्, आज्ञां प्रत्यर्पयत । जं० प्र०  
 १६२ ।  
 आणोत्तो-आज्ञातः । आव० ४१९ ।  
 आणोपाण-आणप्राणः । सूर्य० २९२ ।  
 आणोपाणकालो-आनपानकालः, उच्छ्वासाधिधासीं ससु-  
 दित्तवैकं । जीवा० ३४४ ।  
 आणोपाणलक्षी - अंगमुद्गतेषु चतुर्दशपूर्वपारवर्तनवाणि ।  
 ओष० १७८ ।  
 आणोमति - आनन्ति । भग० १९ । उच्छ्वासितं, अन्न-  
 स्फुरन्तीसुच्छ्वासकियां बुवंति, आनन्ति उच्छ्वासितं ।  
 प्रज्ञा० २१९ । 'गुणं प्रदत्ते' इत्येवमग्नेः शर्पेणैव खगनार्ष-  
 रणात्, आनन्ति इत्यनेनाभ्यासकिया । भग० १९ ।  
 आणोमणिया-आणयन्ती, निशतिक्रियामध्ये द्वादशो क्रिया ।  
 आव० ६१२ । कार्ये परस्य प्रवर्षेण यथेष्टं बुवंति भावा ।  
 प्रज्ञा० २५६ ।  
 आणोय-आगत, नवमदेवलोचनाम । प्रज्ञा० ६९ ।

**आणकई** - आज्ञारुचि, आज्ञा-सर्वज्ञवचनात्मिका तस्या रुचि - अमिलाषो यस्य स आज्ञारुचि । जिनाज्ञैव मे तस्य न शेषं युक्तिज्ञातमिति योऽभिमतमयते स आज्ञारुचि । प्रज्ञा० ५६ ।

**आणकृती** - आज्ञारुचि आज्ञा-सर्वज्ञवचनात्मिका तथा रुचि यस्य स तथा, यो हि प्रतनुरागद्वेषमिध्याज्ञानतयाऽऽचा योदीनामाज्ञयैव पुत्रदाभावाज्जीवादि तथेति रोचते स । ठाणा० ५०३ ।

**आणवणप्पओणे** - आनयनप्रयोग । भाव० ८३४ । इह विनिष्ठावधिके भूदेशान्निग्रहे परत खयगमनायोगयदन्य गथितारिद्रव्यानयने प्रयुज्यते सन्देशकप्रदानादिना त्ववेदमाने यम् इत्यानयनप्रयोग ( दशावकाशिके अतिचार ) । उपा० १०१ ।

**आणवणिया** - आज्ञापनिका, जीवाजीवानानाययत । ठाणा० ३१७ । आज्ञापनरुच-आदेशनस्त्वयमाज्ञापनमेव वेत्ताज्ञापनी गैवाज्ञापनिका, तज्ज कर्ममन्ध, आदेशनमेव वेति, आना यन वा आनायनी । ठाणा० ४३ ।

**आणवणी** - आज्ञापनी, असत्याम्याभावात्तद् । दश० २१० । काय परस्य प्रवतेनी । भग० ५०० ।

**आणवेस्सामि** - आनाययिण्यामि । भाव० ४१० ।

**आणा** - आज्ञा, मीनीन्द्रवचनम् । आचा० ४४ । तीर्थकर गणपरोपदेश । इदा० २६५ । ज्ञानायासेवास्वरूपजिनोपदेश । भग० ५४ । कर्तव्यमेवेदमित्याद्योऽर्थः । भग० १६७ । दुवाचसगं गणपिडग । ति० चू० तु० ४ अ । उपदेश । सूत्र० १८३ । अर्थे । भाव० ६०४ । आज्ञाप्यत -

**आणा** - हिताहितप्राप्तिपरिहाररूपतया सर्वतोपदेश । आचा० ११३ । आज्ञया सूत्रज्ञया अभिनिवेशतोऽन्यथा पाटादिलक्षणया अतीतकाले अनता जीवाधनुन्त समार वान्तारं नारकतिर्गनरामरविविषयक्षजालदुस्तरं भवा-वीगह नमित्यर्थं, अनुपराश्रितवन्तो जमापित्वं अपाज्ञया पुनराभि निवेशतोऽन्यथाप्रपणादिलक्षणया गोट्टामाहिलवत् उभयाज्ञया पुन पन्निषाचापरिज्ञानरुणोयतशुचिदिशादेरन्यथाकरण लक्षणया गुरुश्लनीकद्रव्यत्रिगधार्गनिकभ्रमणवत् सूत्रार्थोभयं विराधेयर्थं, अथवा द्रव्यक्षेत्रकालभावापेक्षामग्नोक्तानुष्ठान मेवासा तथा तद्वर्णनेत्यर्थः । सम० १३३ । हे सापो । भवतेः रिपेयमित्येवःपामादिष्टि । ठाणा० ३०१ । गूढार्थपदं

रगीतार्थस्य पुरतो देशान्तरस्यगीतार्थनिवेदनाय गीतार्थो यद्विचारनिवेदनं करोति सा । ठाणा० ३०१ । यदगीतार्थस्य पुरतो गूढार्थपददेशान्तरस्यगीतार्थनिवेदनायाति शरारोचनं इतरस्यापि तथैव शुद्धिदानया । भग० ३०४ । ठाणा० ३१८ । आदेशः । भग० १२२ । जीवा० २४३ । सर्वज्ञवचनात्मिका । प्रज्ञा० ५८ । आश्रिति स्वस्वभावावस्थानात्मिकया मयादिषाऽभिध्याप्या वा ज्ञायन्तेऽर्था अनयेति, भगवदभि हितागमरूपा । उत० ४४ । आगम । सूत्र० ४०५ । भाव० ८६२ । उत० ४४९ । अनुज्ञा । पिण्ड० १६९ । गुरुरनियोगात्मिका । उत० ५०२ । यथोक्ताज्ञापरिपालना । नैदी २४८ । द्वादशांग सूत्रार्थोभयमेदेन त्रिभिः, द्वादशांगमेव चाना, आज्ञाप्यते जन्तुगणे हितप्रवृत्तौ यथा साऽऽज्ञेति, अथवा पञ्चिषाचापरिपालनशीलस्य परोपकारकरणैकतरपरस्य गुरोर्हितोपदेशवचनमाज्ञा । नैदी २४८ । श्रुतस्य पर्याय । विशे० ४१६ ।

**आणाइणो** - आज्ञादय, आज्ञाभद्रादय । पिण्ड० ६९ ।

**आणाइयं** - आज्ञानिर्ग-आज्ञा-जिनादेगमतिगच्छति-अभि-क्रामति यत्तु, अधर्मद्वारस्य पाठान्तरेणाष्टाविनतितन नाम । प्रश्न० २७ ।

**आणाईसरसेणाचयं** - आज्ञेश्वरसेनापत्तम्, आज्ञाप्रधानस्य सतो यद् सेनापत्तम् । भग० १५४ । स्वस्वमन्य प्रत्यङ्गतमाज्ञाप्रधान्यम् । प्रज्ञा० ८९ ।

**आणाकखी** - आज्ञाकापी, आगमानुपारप्रवृत्तिक । आचा० २१० ।

**आणानिहेसयदे** - आज्ञानिदशकर, आज्ञा-भौम्य । इदं वृत् इदं च मा कापी इति गुरुवचन तस्या निदेश, इदमि त्यमेव करोमीति निश्चयाभिधानं, तत्कर । उत० ४४ । भगवदभिहितागमरूपया उत्सर्गाववादाभ्या प्रतिपादनमाज्ञा निदेश इदमित्य पिपेयमिदमित्य वयेवमात्मक तत्करणदी-लम्बदुलोमानुष्ठानो वा । उत० ४४ । आदानिदेशतर-आज्ञानिदेशेन वा तरति भवाम्भोधिमिति । उत० ४४ ।

**आणानिहेसे** - आज्ञानिदेश, आज्ञा-भगवदभिहितागमरूपा तस्या निदेश - उन्मर्गाववादाभ्या प्रतिपादनम् । उत० ४४ ।

**आणापाण** - आनप्राण, उच्छ्वासानि श्वासान । भग० २११ ।

आणापाणू-आनप्राणा - उश्वासनिःश्वासकालः संख्याताव-  
लिकाप्रमाणाः । ठाण० ८५ ।

आणाफलं - आनाफलम्-जनेन यपोदितध्वचनप्रतिफलरूपा  
फलं प्रयोजनं अस्य । उक्त० ५८० ।

आणामं-(अननम्-ध्वसनम्) । भग० १०९ ।

आणामियं-आनामितम्, ईषन्नामितम् । प्रश्न० ८९ ।  
आरोपितम् । जीवा० २०३ ।

आणाय-आज्ञाय, स्वरूपाभिध्याप्याऽवगम्य । उक्त० १०४ ।  
आनायम्, जालम् । उक्त० ४०७ । प्रश्न० २२ ।

आणाकृष्ट-आज्ञारुचिः, आज्ञा-सर्वज्ञवचनात्मिका तया रुचि-  
र्यस्य सः । उक्त० ५६३ । आज्ञा-सर्वव्याख्यानं नियुक्त्या-  
दिप्रदानम् । औप० ४४ । नियुक्त्यादि तत्र तया वा रुचिः ।  
ठाण० १९० । भग० ९२६ ।

आणाविजय - आज्ञाविजयम्, आज्ञागुणादुन्निन्तम् ।  
औप० ४४ । प्रवचनपर्यालोचनविषयमाहालोचनविषयं धर्म-  
व्यानम् । ठाण० १९० । आणाविजय-आज्ञा-ज्ञानप्रवचनं  
तस्या विचयी-निर्णयो यत्र तदाज्ञाविजयम् । भग० ९२६ ।  
आज्ञा वा विजीयते अधिगमद्वारेण परिचिता क्रियते यस्मि-  
न्निति । ठाण० १९० । आ-अभिधिनिना ज्ञायन्तेऽर्थी  
यया साऽज्ञा-प्रवचनं सा विजीयते-निर्णीयते पर्यालोच्यते  
वा अस्मिन्नात् । ठाण० १९० ।

आणाविष्यं-आनायितम् । आय० ४२२ ।

आणासापमाणे-अनादायमालः, आणाविषयमनुवर्णोऽना-  
स्वादयन् वाऽनुआनोऽतर्कयन्स्त्वहयप्रार्थयमानोऽनभिलषन् ।  
उक्त० ५८८ ।

आणितिल्लयं-आनीतः । आय० ५५८ ।

आणिमलो-अनलगिरिगजस्य निष्ठा । नि० चू० प्र० ३४६ अ ।

आणुकंपिप-अनुकम्पितः, कृपापात्र । भग० १६९ ।

आणुग-आणु -नपाद्विपानीयवहूलः । बृ० प्र० १७५ अ ।

आणुगामियं-देशान्तरगतमपि ज्ञानिनं यदनुगच्छति लोच-  
नवदिति तदेवानुगामियम् । ठाण० ३०० । धूमादिहेतु-  
नुगामि एते जातमाणुगामियम्-अनुमानं तद्भूयो ध्ययताय ।  
आण० १५३ ।

आणुगामियं-आनुगामियम् । औप० ५८ । आनुगामिपुः-  
अनुगतमनसीलः । आय० २८ ।

आणुगामियत्ताप-आनुगामिकत्वाय, शुभानुबन्धायेत्यर्थः ।

भग० ४५६ । भवपरम्परानुबन्धमुखाय । भग० ११५ ।

आणुपुष्पी-आणुपूर्वी, शिष्यप्रशिक्ष्यपरम्परारामिका । उक्त०  
८ । क्रमेण मरणकालं परास्व आणुपुष्पी । नि० चू० द्वि०  
५३ अ । वृषभनासिकान्यस्तराज्जुसंस्थानीया, यया कर्म-  
पुद्गलसहसा विशिष्टं स्थानं प्राप्यतेऽती, यया बोधोऽसमा-  
ज्ञाधश्चरणादिरूपो नियमतः शरीरविशेषो भवति सा ।  
आव० ८४ । यथाऽऽसन्नम् । भग० २११ । मूलादि-  
परिपाटी । जीवा० १८७ । आय० ८०३ । क्रमेण यथाऽऽ-  
सन्नम् । ज० प्र० ४६१ । शाश्वीयोपकमायमेदः । ठाण०  
४ । आय० ५६१ । यदुदयादन्तरालगती जीवो याति तदा-  
नुपूर्वीनाम । सम० ६७ । उक्त० ६४१ । आणुपूर्वी-यथा-  
सन्नम् । जीवा० २० ।

आणुपुष्पिगदिया-आणुपूर्वो-परिपाठ्या प्रथिता-गुम्भिता  
इति आणुपूर्वीप्रथिता । भग० २५४ ।

आणुपुष्पो-आणुपूर्वः, क्रमेण नीचैर्नीचेस्तराभावरूपः । जीवा०  
१९८ ।

आणू-उस्तातो । दश० चू० ५४ ।

आतंतमे - आतमतमः-आत्मानं तमयति-खेदयति इति  
आतमतमः-आचार्यादिः । आत्मनि तमः-अज्ञानं कोषो वा  
यस्य स आतमतमाः । ठाण० ३१८ ।

आत-(आय)-गणा । नि० चू० प्र० ३२ अ ।

आतवेताचक्षकरे - आत्मवैवाह्यकरः, अन्तो विमज्जो-  
गिघे वा । ठाण० २४१ । आत्मवैवाह्यकरः-यस्यात् स  
तपसा पूर्वसंयतकर्ममूलं शोधयन्नात्मन एतेषुकारे वर्तते  
ततः सः । द्य० प्र० ३४८ अ ।

आतसरीरसंग्रहणी - आत्मशरीरसंग्रहणी - यदेतदस्मीयं  
शरीरमेतदशुचिं अशुचिकारणजातमशुचिद्वारविनिर्गतमिति न  
प्रतिबन्धस्थानमित्यादिकथनरूपा । ठाण० ३१२ ।

आतामवितानं-(आयाणवियाण), तदनुप वेमारिद्रिया ।  
विशे० ८६९ ।

आतायणा-आतायना । प्रश्न० १०७ ।

आतायते - आनापयति-आतायना इतीतायारिनदनरूपो  
वरोति इति आतायकः । ठाण० ३९९ ।

आतियं-आचिनम्, रितम् । प्रश्न० ४० ।

आतियणो-अस्ते-यक्षणे । द्य० प्र० १८० अ ।

आतियाणे-पुंजणवेलाए ठाति । नि० ५० सू० ३८ आ ।  
 आतुरीभूः । नदी १५५ ।  
 आतुलुभा-शाधारणवादेरधनस्पतिकारिदोषः । प्रभा० ३४ ।  
 आतो-आयः । उक्त० १५७ । आहोसित । उक्त० ३२३ ।  
 आतो(उ)ज्जं-आतोद्यम्, वाद्यम् । प्रभा० ८ । पट्टहादिः ।  
 टाणा० ६३ ।  
 आत्तपणं-आत्तोन-गृहीतेन, आत्मनेन वा । अणु० २२ ।  
 आत्ततरः-दृढतरः, अममनयोरतिशयेनातो-गृहीतो यत्नेना-  
 प्यवसित इत्यर्थः । आत्ता० २९५ ।  
 आत्तप्रदाहा- (अत्तगण्हा ), आत्तां-गिदान्तादिध्वजतो  
 गृहीतामातो वा-इहपरलोकान्तः सद्बोधोपरतया दितो  
 'प्रज्ञा-आत्मनोऽभ्येयां वा बुद्धिं वृत्तक्याडुलीकरणतो हन्ति  
 यः स । उक्त० ४३५ ।  
 आत्मछन्दाः-आत्मनैव उपपेदानयनाय छन्दोऽभिप्रायो  
 विद्यते येनां ते आत्मछन्दसः । ध्य० द्वि० २९ आ ।  
 आत्मरक्षा-शिरोरक्षस्थानीयाः । तत्रवा० ४-४ ।  
 आत्मरक्षी-विषयान्मिषापविषगमाभिर्निदानः सन् आत्मानं  
 रक्षत्यपयोभ्यः - कुमतिगमनादिभ्यः दृश्येत्सलीः । उक्त०  
 २२५ ।  
 आत्मचादी-अस्त्यात्मा सन्तो निख इति वादी । आव०  
 ८९६ ।  
 आत्मसमीपे-आत्मोत्पत्ते । ओष० ११८ ।  
 आत्मसंवेदनीय-आत्मना कियत इति । आव० ४०५ ।  
 आत्मगम-अत्तागम, गुरुपदेशमन्तरेणात्मन एव आगमः ।  
 अनु० २१९ ।  
 आत्माधिष्ठितयोगी - आत्मादिद्वयजोगी, आत्माधिष्ठितेन-  
 कल्पेन भक्तादिना सुज्यत इति, अत्तलक्षिओ । ओष०  
 १५१ ।  
 आत्मार्थ-अत्ते, अर्थमानतया स्वर्गादि, यद्वा आत्मैवायं ।  
 उक्त० २८५ । विसोभनम् । ध्य० प्र० ११५ अ ।  
 आत्माधिक्यम्-अत्तद्विय, आत्मनोऽर्थे, आत्मार्थस्तस्मिन्  
 भवम् । उक्त० ३६० ।  
 आदंसग-आदंसक-दर्पणः । उक्त० ६५० ।  
 आदंसगहृत्थिआ-आदंसहृत्ता । आव० १२२ ।  
 आदंसिआइ-राशयिदोष । जै० प्र० ११८ ।  
 आदण्ण-सिम्भः । आव० ९४, ३५५ ।

आद्वृत्ति-विरुधति । प्रभा० १०७ ।  
 आदर्शकगृहं-भरतपेनलसानएगनम् । प्रभा० २० ।  
 आदर्शसमानः-(अत्तागमग), आदर्शगमानो, को हि गायुभिः  
 प्रताप्यमानात्पुर्णार्थापराशरीनागमिकान् भावान् यथात्तर-  
 निपद्यते गभिदिनापार्नादर्शकश्च त आदर्शगमानः ।  
 टाणा० २४३ ।  
 आदाण - आदानम्, आरीयते-स्वीकियतेऽद्यप्रसार्धं परं  
 येन तत्त्वं, कपायाः, परिग्रहः, गान्त्राद्युदानं वा ।  
 सूत्र० २९५ । ( यदिदातव्यं )-यदिदां-मैधनम् आदानं न-  
 परिग्रहः, परिप्रां वा वस्तु धर्मोपकरणम् इति । टाणा०  
 २०२ । मोक्षाधिनाऽऽरीयते-गृह्यत इति, मंगमः । सूत्र०  
 २२९ । वारणम् । नि० ५० प्र० ११६ अ । प्रमरः,  
 प्रमुनिः । नि० ५० प्र० ११६ अ । प्रहणम् । आव० ८२२ ।  
 आरीयत इति, धनम् । आव० ६४६ । नि० ५० प्र०  
 ३१७ अ । आदानः, अत । सूत्र्यं २०९ ।  
 आदाणमिषक्रेयणासमिती-आदाननिक्षेपनासमितिः, त्रै  
 यथापयस्यधारणफलगपीडगकारण्णा गृहनिक्षेपकरणं पदि-  
 लेहिय पमज्जय सा । नि० ५० प्र० १७ अ ।  
 आदाणनिष्क्रेयणभणाभोगकिरिया-आदाननिक्षेपा-  
 नभोगक्रिया, रजोहरणेनप्रसाज्यं पात्रनीवरादीनामादानं  
 निक्षेपं वा करोति सा । आव० ६१४ ।  
 आदाणभयं-आदानभयम्, धनस्य चौरादिभ्यो यद्भयम् ।  
 आव० ६४६ । धनहरणभयं । आव० ४७२ । आदानं-  
 धनं-तदर्थं चौरादिभ्यो यद्भयम् । टाणा० ३८९ । इय-  
 माश्रिल भयम् । प्रभा० १४३ ।  
 आदाणभरियसि-आदहणमृते । उपा० ३६ ।  
 आदाणिज्जं-आदानीयम्, सुप्रकृताक्रम्य पमदनाप्ययनम् ।  
 सूत्र० २५० ।  
 आदाणियं-आदानीयम्, आरीयते-गृह्यते उपादीयत इति,  
 पदमर्थं वा । सूत्र- ९ ।  
 आदाननिक्षेपणासमितिः-रजोहरणानन्तवरादीनां पीड-  
 नलकादीना चावश्यकं निरीक्ष्य प्रमुज्य चादाननिक्षेपे ।  
 तत्रवा० ९५ ।  
 आदाणीय-आदानीयः, उपादेयः । मम० ८१ । टाणा०  
 ३६९ । परमाणे भवदानीयं ज्ञानदर्शनचाग्रिप्रस्यं तत् ।  
 आत्ता० १४० ।

आदित्यमरण-यानि हि नरकाद्युष्कृतया कर्मदलिका-  
न्यनुभूय भ्रियते मृतस्य न पुनस्त्वानुभूय पुनर्मरिष्यत  
इत्येवं यन्मरणं । भग० ६२४ ।

आदि-आदि, कारणम् । प्रश्न० ४ ।

आदिष्-आदरीत, एकीयात् । उक्त० ५१७ ।

आदिकरः-आदगर, आद्री प्राथम्येन धृतधर्ममाचारादि-  
मन्वात्मकं करोति - तदर्थं प्रणयकत्वेन प्रणयस्तीत्येवमील  
आदिकरः । सम० ३ । प्रथमतया प्रवर्तनशीलः । व्य०  
द्वि० ३८५ अ ।

आदिगारमंडलगं-आदिकरमण्डलम् । भाव० १४६ ।

आदिश्वो-आदित्यः । जीवा० ३२१ । सूर्यवत्परः । सूर्य० ।  
१२ ।

आदिष्ट-आदिष्टः, विशेषितः । भग० ४७ ।

आदिष्टा-एहीता । नि० चू० प्र० २०७ आ ।

आदित्यमस्त-अत्रिचन्द्रोरात्रिणि रात्रिन्दिवस्य चादं, दक्षि-  
णायनस्योत्तरायणस्य वा षष्ठभागमानः । वृ० प्र० १८६ आ ।  
आदित्ययथा-भरतपुत्रनाम । व्य० द्वि० १२९ आ ।

आदिमा भाषा - आवदयकादयः स्वहृताङ्गं यावद् ये  
आयमग्र्यास्तेषु ये पदार्था अभिषेचरते । वृ० प्र० १२८ आ ।

आदित्यरथः-वालिमुश्रीवपिता विद्याधरः । प्रश्न० ८९ ।

आदियर्ण - गृहर्णं । नि० चू० प्र० १३४ अ । पिबंतस्त ।  
नि० चू० तृ० ६५ आ ।

आदियणत्रा-आदानम्, ग्रहणम् । भाव० ६१४ ।

आदियणा-आदानम्, परचनस्य ग्रहणं, मुनीयाधर्मद्वारस्य  
पदद्वयं नाम । प्रश्न० ४३ ।

आदिह्यप्ते । जीवा० १४० ।

आदीअदिष्टभावे - आद्री-आधदयकादिमात्रेषु वर्तमाना  
अदृष्टा भावा गेन सः । वृ० प्र० १२६ आ ।

आदेज्ज-आदिवा, दर्शनपथयुगात् सती पुनः पुनरागत्य  
गीया । जं० प्र० १११ । आदेश, रम्यः । प्रश्न० ८३ ।

आदेज्जनाम-आदिनाम, सहुदयवजस्य स्येष्टते आणते वा  
तसर्वं लोकं प्रमाणीकरोति दर्शनममन्तरमेव च जनेऽभ्यु-  
त्थानादि ममाचरति तम् । प्रश्न० ४७१ ।

आदेधधचनता-मकलजनप्राध्यायकता । उक्त० ३१ ।

आदेनाकपाय-वैतथहुनमृदिनिष्ठाकारः । भाव० ३९० ।

आदेयातः । नेरी ७० ।

आदेशिकं-अथगावृद्व्यादेशम् । वृ० प्र० ८३ अ ।  
आदेशं-उद्विष्टं । नि० चू० प्र० २३० आ । विशेषं प्रति-  
नियतश्चत्वारमकम् । उक्त० ६७३ ।

आदेशतिगं-आदेशतिकम्, मतमिबम् । पिण्ड० १० ।

आदेशद्वन्द्वसुद्धिः - आदेशद्वन्द्वसुद्धिः, द्वन्द्वसुद्धिभेदः ।  
दश० २११ ।

आदेशफलं-आदेशफलम् । भाव० ३४३ ।

आदेशा-पाहुणा । नि० चू० प्र० १११ अ । प्रापूर्णाका ।  
वृ० प्र० ८५ आ ।

आदेशे - आदेशः, आविरयते गरिमन्नागते सम्भ्रमेण परि-  
जनस्य प्राप्तमदानादिन्यायारे तः, प्रापूर्णाकाः । सूत्र० ३०० ।

आदेशो-आदेशः, प्रकारः । जीवा० ५३ । मुष्णएतो । नि०  
चू० प्र० ७१ अ । अनुता । व्य० द्वि० ३४६ अ । नया-  
न्तरविकल्पः । व्य० द्वि० ३५४ आ ।

आद्यशब्द - तर्कानेयादिप्रतिपादनः । नि० चू० प्र०  
२२५ अ ।

आग्रहणम्-उच्छलरुण्णकलम् । दश० १७४ । पिण्ड० ३५ ।

आधरिसितो-आधरितः । भाव० ३७१ ।

आधत्त-आधत्तम्, ग्रहणकं मुक्तम् । वृ० द्वि० १२० अ ।

आधरिसेहिति-आधरिष्यति । भाव० १०४ ।

आधाकरिमप-आधाय-आश्रित्य साधून् कर्म-सचेतन-  
स्यचेतनीकरणलक्षणा अचेतनस्य वा पाकलक्षणा क्रिया यत्र  
भलावै तदाधाकर्म तदेवाधाकर्मिकम् । टाणा० ४६० ।

आधायणं-जाल वा महा समागे मता । नि० चू० तृ०  
७३ अ ।

आधिः-अनन्तीडा । भग० ४ ।

आधिदैविकम्-देवादिसत्कं दु खम् । उक्त० २६६ ।

आधिभौतिकम्-अन्यमृतसत्कं दु खम् । उक्त० २६६ ।

आधूय - भर्मायका, जलिनं तशाहत्याहृष्टं । जं० प्र०  
२३० ।

आधूयारुहकम्-हरितभेद । आचा० ५५ ।

आध्यात्मिकम्-अवशरिष्यं, आत्मसत्कं दु खम् । उक्त०  
२६६ । आत्मनि क्रियमाणम् । आचा० ४६६ ।

आजगारिकम् - अजगारेतु-आयमिषुषु भवमानगारिक-  
मनुष्ठानम् । उक्त० ३३९ ।

आनन्द-धृतगामाधिक्यकामे रक्षणः । भाव० ३४० ।

**आनन्दपुरम्**—स्यलपत्तने नगरविशेष । वृ० प्र० १८१ आ । जितारिराज्ञ राजधानी । वृ० तु० १०७ आ । नगरविशेष । वृ० प्र० १४६ अ, ४ आ । वृ० द्वि० २६६ अ ।

**आनन्दविजयः**—आचार्यनामविशेष । जं० प्र० ५४५ ।

**आनन्दद्विमलः**—आचार्यनामविशेष । जं० प्र० ५४३ ।

**आनुगामिकः**—आ-समन्तादनुगच्छतीत्येवंशीलमातुगामिक, अनुगमः प्रयोजनं यस्य सः । प्रज्ञा० ५३९ । अनुगच्छति साध्याभावे न भवति यो धूमविहेतुः सोऽनुगामी ततो जातमानुगामिक, अनुमानं, तदुपो व्यवसाय । टाणा १५१ ।

**आनुपूर्वी**—यथासङ्गम् । प्रज्ञा० ५०३ । कूर्परलाहृतमोः त्रिकाकारेण यथाक्रमं द्वित्रितय समयप्रमाणेन विग्रहण भवान्तरोत्पत्तिस्थानं गच्छतो जीवस्मानुप्रेणिनियता गमनपरिपाटी । प्रज्ञा० ४७३ । अन्तर्गती गत्यन्तरमानुपूर्व्या प्रापणसामर्थ्ये, शरीराश्रौपाह्वानो विनिवेशकमनियामक वा क्रमे । तस्वा० ८-१२ ।

**अनुक्रमः**—अनुपरिपाटी । अनु० ५१ ।

**आपणवीथी**—आपणवीथि, रथ्याविशेष । जं० प्र० ४१३ । आपणवीथि । भग० ४७६ ।

**आपन्नपरिहारः**—मासिक वा द्विमासिक वा यावत् पण्मासिक वा प्रायश्चित्तं । वृ० प्र० ४५ आ ।

**आपाकः**—भाण्डपचनस्थानम् । टाणा० ४१९ ।

**आपागपत्ते**—आपाकप्राप्तम्, ईश्वर पाकामिसुमीभूतम् । प्रज्ञा० ४५९ ।

**आपाण्डु**—आ-ईश्वरप्रवभाजः, पाण्डु । उक्त० ६८९ ।

**आपीडः**—शेखरक । जीवा० २७२ । आमेलक-शेखरक । जीवा० २०७, ३९१ ।

**आपुच्छणा**—आ-रुच्छनमापृच्छ, विहारभूमिगमनादिप्रयोजनेषु शुरो कार्या, समाचार्या दृष्टमेद । भाव० २५९ । आपृच्छना । ओष० १५१ । भग० ९२० । स्वकार्यप्रदत्तावापृच्छनम् । वृ० प्र० २२२ अ । विहारभूमिगमनादिप्रयोजनेषु शुरो पृच्छा । टाणा० ४२९ ।

**आपूपिकः** । ऋषी १६५ ।

**आपूरितः**—आपूर्यमाणम्, परिपूरिते पवने भूयो जलेन श्रियमाणम् । श्रीवा० ३०८ ।

**आपूरियं**—आपूर्ितम्, व्याप्ते, मत्तं, वाहितम् । विशेषे १५० ।

**आप्त**—अप्त, ज्ञानदर्शनचारित्राणि येनाप्तानि स, रागद्वेषप्रदीण, इष्टा, शोष्ये श्रेषि विषये ये आमा । वृ० प्र० २८९ आ ।

**आप्तप्रज्ञादा**—सिद्धान्तादिभ्रवणतो गृहीतामाप्ता वा इह-परलोकयो सहोषरूपतया द्विता-प्रज्ञाम्—आत्मनोऽप्येषां वा बुद्धिं कुतर्क्याकुलीकरणतो दन्ति यः यः । उक्त० ४३५ ।

**आप्तोति**—आत्मवशता नयति । प्रज्ञा० ३६३ ।

**आप्रच्छना**—भदन्त । करोमीदमित्येवं शुरोः प्रच्छनमाप्रच्छना । अनु० १०३ । राम० १५८ ।

**आप्फोडिङ्गण**—आस्त्रोद्य । भाव० १९८ ।

**आयजूसेओ**—आयदस्वेद । भाव० ५१५ ।

**आयद्धो**—आयद्ध, आरुध्य । भाव० ५१५ ।

**आयाहा**—आयाषा, ईषदाषा । भग० २१८ । जं० प्र० १२४ । जन्मजरामरणसुतिपासादिका आयाषा । टाणा० ४८८ ।

**आयाहाप**—अन्तरे कृन्वति शेष । सम० १६ ।

**आभंकर**—मन्दस्फुराकरत्वे त्रिसागरस्थितिकं विमानं । सम० ८ ।

**आभंकरपभंकरं**—आभंकरवत् । राम० ८ ।

**आभंकर**—आभङ्कर, सप्ततितमप्रहनाम । टाणा० ७९ । अष्टपठितममहनाम । जं० प्र० ५३५ ।

**आभट्टो**—आमापित, सल्लतः । भाव० २४१ ।

**आभरण**—आभरणानि, सुकुटादीनि । जं० प्र० १४५ ।

**आभरणचक्रेरी**—देवलङ्के प्रयोजकरणम् । जीवा० २३४ ।

**आभरणपिया** । नि० वृ० तु० ९ अ ।

**आभरणचासा**—आभरणवर्षा, आभरणवर्षणम् । भग० १९९ ।

**आभरणविचिन्ताणि**—आभरणविचित्राणि, गिरिविद्वकादिविभूयितानि । भावा० ३९४ । नि० वृ० प्र० २५५ अ ।

**आभरणविधी**—हारद्वन्द्वारादिया आभरणविधी । नि० वृ० प्र० २७६ आ । उपभोगविधिविशेष । उक्त० ३ ।

**आभरणसुट्टी**—आभरणसृष्टि । भग० १९९ ।

**आभरणपाणि**—आभरणानि, अङ्गपरिधेयानि । जं० प्र० २३१ । आभरणप्रधानानि । आचा० ३९४ । नि० वृ० प्र० २५५ अ ।

आभवंतितो-आभवंतिक -अथवाहार । व्य० दि० ३८१ भा ।

आभवति-स्यं भवति । आव० ८२१ ।

आभवं-आभावं, दैक्ष दैक्षिका वा । वृ० दि० ७० भा ।

आभा-आभा, आकार । प्रज्ञा० ८०१ छायायणै । सप० १४० । प्रतिभास । जीवा० ३११ । वणस्वरूपम् । जीवा० १०३ ।

आभागी-भोक्ता । आव० ८१५ ।

आभासद्-आभासयति, समन्तत सर्वांश्च दिक्षु अवभासयति । जीवा० ३१२ ।

आभासिआ-स्तेच्छविशेष । प्रज्ञा० ५५ ।

आभासित्-अभासित्-अभासित् । जपा० २२५ ।

आभासितो-आभासिक, अन्तरद्वीपविशेष । जीवा० १४५ ।

आभासियं-अभासिकम्-विवक्षितभाषामजानान । आव० ६१४ ।

आभासिय-आभासिक, स्तेच्छविशेष । प्रज्ञा० १४ ।

आभासियदीवे-अन्तरद्वीपनाम । ठाणा० २२५ ।

आभिशोग-आ-समन्तादाभिसुख्येन सुख्यन्ते-प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्ते इति आभियोग्या-शकलोकपालप्रेष्यकर्मकारिणो व्यन्तरविशेषा । जं० प्र० ७५ । आभियोग्यम्-कर्मकर भाव । दश० २४८ । आभियोगभावना-उत्पित्तभावन । उ० ७०७ । आभियोगभाषनाजित । ठाणा० २७४ ।

आभिशोगसेदीशो-आभियोग्या-शकलोकपालप्रेष्यकर्मकारिणो व्यन्तरविशेषास्तेषामावासाभूते श्रेण्यौ । जं० प्र० ७५ ।

आभिशोगिण-आभियोगिक आभियोगे-प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यमाणत्वे निवृत्ता । जीवा० २४३ ।

आभिशोगिय-आभियोगिक, वशीकरणाय मन्त्राभिसंस्कृतम् । आव० ६४२ ।

आभिशोग-आभियोग्यम्, वशीकरणादि द्रव्यतो द्रव्यस्य योगजनिते, भावतो विद्यामन्त्रादिजनितम्, बलात्कारो वा, प्रज्ञा० ३८ । आभियोग-वर्णनम् । वृ० वृ० १२२ भा ।

आभिशोहिशो-आभिशोहिक, अभिशोहेण निरुत्त, कायो रत्तम् । आव० ७८३ ।

आभियाम्का-विद्याविशेष । वृ० वृ० २०३ भा ।

आभियाम्-आपतितम् । प० ४-४२१ ।

आभियाम्-आपतितम् । ओप० २०४ ।

आभियोगिहिय-आभियोगिकम्, अभिसुखे-योग्यदेशावस्थितवस्त्वपेक्षया नियत-स्वस्त्वविषयपरिच्छेदकतयाऽवबोध-अवगमोऽभिनियोग, स एवाभिनियोगिकम् । उ० ५५७ । विद्ये० २२६ । अर्थाभिसुखे नियत-प्रतिनियत-स्वरूपो बोधो-बोधविशेष, अभिसुख्येऽस्माद् अस्मिन् वेति । प्रज्ञा० ५२६ । आभियोगिकम्-मतिज्ञानम् । भाष० १८ । आभिसुख्येन निश्चितत्वेनावबुध्यते-सर्वदेवते आत्मा तदिति, आभिनियोग, अवगमहादिज्ञान, अथवा आत्मा तेन प्रस्तुतज्ञानेन तदापरणक्षयोपसमेन वा वरणभूतेन धग्दि वस्त्वभिनियुष्यते, तस्माद् वा प्रकृतज्ञानात् अयोपत्त्यादाऽभिनियुष्यते, तस्मिन् वाऽभिहितत्वे, स्वोपसमे वा सत्यभिनियुष्यतेऽवगच्छतीत्यभिनियोगो ज्ञानम्, क्षयोपसमो वा, सो वा 'अभिनियुष्यति', अथवाऽभिनियुष्यते वस्त्वभिगच्छतीत्यभिनियोग, स एवाभिनियोगिकम् । विद्ये० ५३ । असीत्याभिसुख्ये नीति नैयत्ये, तदाभिसुख्ये-बलुष्योपदेशावस्थानापेक्षी नियत-इन्द्रियाण्याश्रित्य स्वस्त्वविषयापेक्षी बोध, अभिनियुष्यते आत्माना स । अभिनियुष्यते वस्त्वसौ इत्यभिनियोगे स एवाभिनियोगिकम् । अनु० २ ।

आभियोगिहियनाण-अर्थाभिसुखोऽविपर्ययरुपत्वात् नियतोऽमन्तारुपत्वाद्बोध-सर्वेदेन अभिनियोगे स एव स्वाधिके वस्तुयोपादानादाभिनियोगिकं ज्ञातिर्ज्ञायते वाऽनेनेति ज्ञानम् आभिनियोगिकं च तज्ज्ञानं चेति आभिनियोगिकज्ञानम्, इन्द्रियाभिद्रियमित्तो बोध इति । भय० ३४३ । इन्द्रियपक्षकमनोनिमित्तो बोध । अनु० २ । अर्थाभिसुखे निवृत्तो बोध, अभिनियोगे भव तेन वा निवृत्तं तन्मयं तत्प्रयो जनं वा, अथवा अभिनियुष्यते तत्, अथवा अभिनियुष्यतेऽनेनास्माद्वा अस्मिन् वा तत् तदापरणक्षयोपसम इति भावार्थं । आव० ७ । अभिनियोगिकम्, आत्मैव जाऽभिनिवोपोपयोगपरिणामान्वत्वाद् अभिनियुष्यते इति वा । आव० ७ ।

आभियोगिक-आभियोगभावनाभावितरवेनाभियोगिकत्वे पृथक्ना अभियोगवर्तित । भग० १९० ।

आभियोगिय-आभियोगिक, आभियोगजन-विद्यामन्त्रादिभिः परेषां वशीकरणदि नैवा ते । प्रज्ञा० ४०६ ।



**आभियोगी**—अभियोगा— विद्वारस्थानीयदेवविशेषास्तेषामिय माभियोगी । वृ० प्र० ११२ आ । आभियोग्या—आभिसुख्येन युज्यन्ते—प्रेष्यकर्मणि व्यापार्यन्त इत्याभियोग्या, विद्वार-स्थानीयदेवविशेषा । वृ० प्र० २१२ आ ।

**आभिसेधं**—आभियेधयम्, अभियेकयोग्य, राजपरिधयम् । ज० प्र० २१६ ।

**आभीरचिसओ**—आभीरविषय, देशनाम । आव० ४१२ । नि० चू० द्वि० १०२ आ ।

**आभोइत्ता**—आभोग्यिवा, ज्ञात्वा । दश० १७९ ।

**आभोईतो**—आभोगित । उक्त० १३३ ।

**आभोएउं**—आभोग्यिवा, उपदोगपूर्वकेनावधिना विज्ञाय । आष० १२८ ।

**आभोएति**—आभोग्यति । आव० १२४ ।

**आभोग**—आभोग, जानता योऽतिचार कृत । आष० ५६४ । अभिसन्धि । भग० २० । आलोचनमभिसन्धि । प्रज्ञा० ५०० । उपकरणम् । ओष० ३३ । उपयोग । वृ० द्वि० २११ आ । ठाणा० ५०५ । आभोगनमाभोग, उपयोगविशेष । आव० ६१९, ६२६ । विस्तार । विपा० ३९ ।

**आभोगण**—आभोगनम्, अर्थावप्रदसमनन्तरमेव सद्भूतार्थ विषयामिसुखमालोचनम् । १७६ ।

**आभोगणिव्वत्तिप**—यदा परस्वाराध सम्यगवबुद्धय कोप कारण च व्यवहारत पुद्यमवलम्ब्य नान्यथाऽस्य शिओ पत्रायते इति आभोग्य कोप विधत्ते तदा स कोप आभोगनिर्वृत्त । प्रज्ञा० २९१ । आभोगेन निर्वृत्त—उत्पादित आभोग निर्वृत्त आहारयामीतीच्छापूर्वं निर्मापित । प्रज्ञा० ५०० । **आभोगवउस**—आभोगवउस, य आभोगेन जानन् करोति स, बहुशस्य प्रथमो भेद । उक्त० २५६ । आभोग—साधुता मकृत्यमेतच्छरीरोपकरणविभूषणमित्येवं ज्ञान तत्प्रधानो यकु-श आभोगवउस । भग० ८९० । शरीरोपकरणभूषयो सखिन्त्यकारी । ठाणा० ३३७ ।

**आभोगिणी**—य परिजपिता सती मानस परिच्छेदसुपादयति सा । वृ० तृ० ३३ अ । जा विजा जविता मानस परिच्छे दसुपादयति सा । नि० चू० प्र० १७७ अ ।

**आमं** आमम् । दश० १७६ । अपरिणतम् । पिण्ड० ६५ । अतिशोचिकेति । वृ० प्र० २०१ अ, ५१ अ । आम णाम ऊं

अपोलिय अभिगणा ण पर्यंति, अण्णेष वा केणइ पगरिण न पक्क—णिज्जीव । नि० चू० द्वि० १५७ अ । असत्यपरिणय । दश० चू० ५१ । अनुमतार्थद्योतकमध्ययम् । वृ० द्वि० १६६ अ । सचित्त । दश० चू० ८६ । अपक्करसम् । प्रश्न० ६० । अनुमतौ सम्मतमेतद्वरमां सर्वमितिभाव । व्य० प्र० ७१ अ । अपक्क । व्य० द्वि० १०६ आ । जओ वेहि उगमादिदोसैहि केणमाणेहि चारित अविपक्क अपज्जत आम भवति तेण ते आम भण्णति, शब्दमात्रोच्चारणम् सारही भूत जो वरिससतायुपुरिसो वरिससत अतरे मरतो आमो भण्णति नि० चू० द्वि० १२६ अ । अपक्कम् । आव० १३० । स्वीकारेऽप्ययम् । आव० ६४ । आव० १९४ । आव० ४०८ । अशन्नोपहतम् । आचा० ३४८ । दश० २२९ । अजीर्णम् । दश० २७० । आमाम्—असिद्धा, सचेतनाम्, अपरिणत, अपक्काम् । दश० १८५ । अपरिशुद्धम् । आचा० १३१ ।

**आमडे**—आमलकम्, परिणामिकषा मत्तदशमोदाहरणम् । नदी १६५ । आमलकम्—आमलकम् । आव० ४३६ ।

**आमंतणी**—आमन्त्री, असत्याभूपाभावाया प्रथमो भेद । दश० २१० । हे देवदत्त ! इत्यादिरूपा भावा । प्रज्ञा० २५६ । हे देवदत्त ! इत्यादिका, असत्याभूपाभावा । भग० । ५०० ।

**आमंतयामो**—आमन्त्यावहे, पृच्छाव । उक्त० ३९८ ।

**आमतिओ**—आमन्त्रित, सम्भाषित, पृथो वा । उक्त० ३९२ ।

**आमतैयव्यो**—आपुच्छियव्यो । नि० चू० तृ० ९७ आ ।

**आमग**—अपक्कम् । भग० ६८४ ।

**आमगधि**—आमगन्धय, विधा । सम० १३६ ।

**आमज्जति**—अस्खिपतरामे सठवेति । नि० चू० प्र० १९० अ । हत्येण आमज्जति । नि० चू० प्र० १८७ आ ।

**आमज्जमाणो**—आमज्जयन्, सहृदस्त्रादिना शोधयन् । आचा० ३२३ ।

**आमज्जिज्ज**—सहृदासुज्यान् । आचा० ३३७ ।

**आमट्ट**—विपर्ययीकृतम्, परामट्ट । ओष० १९२ । आसट्टम्, तेज प्रवृत्तोरपणाय मन शिलादिना समन्तात्परामट्टम् । उक्त० ५२७ ।

- आमडागं-आमपत्रम्, अरुणिकतनुलीयकादि तथार्द्धप-  
क्रमपङ्कं वा । आचा० ३४८ ।
- आममहुरे-आममधुरम्, ईषममधुरम् । ठाणा० ११६ ।
- आमरणदोसो-आमरणदोषः, महदापद्रवतोऽपि स्वतो म-  
हदापद्रवतोऽपि च परे आमरणादसञ्जातात्प्रायः, अपि त्व-  
सञ्जातानुतापानुसयपर इति । आच० ५९० ।
- आमरणतदोसे-आमरणान्तदोषः-आमरणान्तमसञ्जातात्-  
तापस्य हिंसादिषु प्रवृत्तिः सैव दोषः । ठाणा० ११० ।
- आमर्यावधिः-ऋद्धिविशेषः । प्रश्ना० ४२४ ।
- आमलप-आमलकम् । आच० ८३१ । आमरकः, साम-  
रुयेन मारिः । ठाणा० ५०८ । फलविशेषः । पिण्ड० ३३ ।  
दश० १०० ।
- आमलकप्प-आमलकला, नगरीविशेषः । आच० ३१४,  
३१५, ७०७ । उक्त० १५९ । विशेष० १५० ।
- आमलग-आमलक, बहुबीजो वृक्षविशेषः । प्रश्ना० ३२ ।  
भग० ८०३ ।
- आमलग्ना-आमलकानि । अनु० ११२ ।
- आमलपाणयं-फलविशेषप्रक्षालनजलं । आचा० ३४७ ।
- आमाद्याधो-अमायातः, (अमारीपट्टः) । आच० ४०१ ।
- आमिस्र-आमिष-मांसः । उक्त० ६३४ । आमिषाद्-  
एदिहेतोरभिलषितविषयादेः । उक्त० ४०९ ।
- आमिस्रभोगगिद्ध-आमिषभोगवृद्धः, आमिषस्य-मांसा-  
दभोगः-अभ्यवहारस्तत्र गृहः । उक्त० ६३४ ।
- आमिस्रायस्ते-मांसायस्ते परिभ्रमणम् । ठाणा० २८८ ।
- आमुसंत-आमुशन्, स्त्रियम् । दश० १३७ । आचा०  
११ । आमुशन्, भगवत्पादारविन्दं भणितः करतलशुभा-  
दिना स्त्रियम् । ठाणा० ९ । उक्त० ८० ।
- आमुसिजा-आमर्षम्, सहृदयीवदा स्पर्शनम् । दश०  
१५१ ।
- आमे-आम, अविशेषिकोऽप्यहवदोषः । मूल० १४५ ।
- आमेड-आमेलः, आपीडः, शेरकः । जीवा० १५२ ।
- आमेडणा-आमेडना, विषयस्तीकरणम् । प्रश्ना० ५६ ।
- आमेड-आपीडः, शेरकः । प्रश्ना० ९६ । भग० ४५९ ।  
पुष्पशेरकः । औष० ५१ ।
- आमेलओ-आमेलकः, आपीडः, शेरकः । जीवा० ३६१ ।
- आपीडक-पुष्पोन्मिश्रो घालवगर्भीदोषः । उक्त० १४३ ।
- आमेलग-आमेलकः, आपीडकः, शेरकः । जीवा० ३७५ ।  
आपीडः, शेरकः । जं० प्र० ५३ । जीवा० २०७ ।
- आमेलय-आमेलकः, चूडा । औष० ६३ ।
- आमेलिय-आपीडिका, चूडा । भग० ३१८ ।
- आमो-असतोवहृतो । नि० चू० प्र० १९६ अ ।
- आमोअ-आमोदः, मानसे उत्सवः । आच० ७२१ ।  
आमोकः-कचवरपुत्रः । आचा० ४११ ।
- आमोषख-आमोक्षः, आमुरुच्यन्तेऽस्मिन्नित्यामोक्षं वाऽऽ-  
मोषः । आचा० ६ ।
- आमोडणं-हृत्पेहि आमोडणं । नि० चू० प्र० २४५ अ ।
- आमोडेति-सीमन्तयति । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।
- आमोद्-आन्धः । उक्त० ३६९ ।
- आमोषगो-आमोषकः । जीवा० २६८ ।
- आमोषगा-आमोषकाः, चीराः । ठाणा० ३१५ ।
- आमोसलि-आमर्षवर्तिपङ्गुधैमयो वा कुश्यादिपराभर्षव-  
यथा न भवति । उक्त० ५४१ ।
- आमोसहि-आमर्षोपधिः, तत्रामर्षमामर्षः-संस्पर्शनमि-  
त्यर्थः, स एवौपधिःस्वात्ताचामर्षोपधिः, क्वाचित्संस्पर्शना-  
प्रादेशे व्याप्यपनयनसमर्थौ सत्पि लब्धिमतोरभेदोपचारा-  
त्तापुत्रेवामर्षोपधिः । विशेष० ३७९ । आचा० १७८ ।
- आमर्षोपधिः । ठाणा० ३३२ । आमर्षणमामर्षः-संस्पर्श-  
नमित्यर्थः, स एवौपधिः । आच० ४७ । आमर्षमामर्षः-  
हस्तादिसंस्पर्शः । औष० ३८ ।
- आमोसे-आमर्षम् आमर्षः-अपुण्यं करेण स्पर्शनम् ।  
आच० ५७४ । आमोषा-आ-समन्तान्मुष्णन्ति-स्तन्वं  
सुवन्तीति । उक्त० ३१२ ।
- आम्नाय-गुणनं, वीपविशुद्धं परिवर्तनं हपादानं । तद्व्या०  
९-२५ ।
- आम्रसाळचनम्-आमलकलानगर्भो घनम् । विशेष०  
१५० ।
- आम्लखलिकायाम् । विशेष० ६०६ ।
- आम्लम्-चतुर्धरताम् । आच० ८५४ । अशिला । उक्त०  
६७७ ।
- आयं-तोषनिर्दिशय शीघ्रतया आयं मृत्युं शेषाकतया  
तामंति, ताप कथा कीर्ति । नि० चू० प्र० २५४ आ ।  
कर्नाधारव्युत्पन्नम् । मूल० १८९ । इष्टफलम् । भग० ५१ ।

**आर्यकं**-आतङ्क, आशुपाती रोग । आब० ७५९ । सद्यो पाती रोग । दश० २७३ । वृष्ट्रजीवनं दुःख । आचा० ७५ । आशुपाती श्लादि । ज० प्र० १२५ । भग० ४७१ । सद्योपातिध्याधि । भग० १२२ । नरकादि-दुःखम् । आचा० १६० । कृष्ट्रजीवितकारी, सद्योपाती स्पर्ध श्लादि । ठाणा० ११९ । शूलनिश्चयिकादि सद्यो पाती । ठाणा० १५० । व्याधि । भग० ६९० । आचिन्ति सपरिभ्रंशमिष्यापस्या तफयन्ति - वृष्ट्रजीवितमारामान वृन्ति इत्यातंका -सद्योपातिनो रोगविशेषः । उत० ३३८ । आतङ्क, सद्योपातिन । औप० ९६ । आब० ५८५ । ज्वरादि । पिण्ड० १७७ । आचा० २९७ । वृष्ट्रजीवित कारी ज्वरादि । भग० ७०२ । आतङ्क, आशुकारी व्याधिविशेष । दश० ५७ । रोग । उत० ४८६ । ज्वरादि । आब० ८४८ । औप० १९० । वृष्ट्रजीवितकारी । निपा० ४० । आशुजीवितापहारी श्लादिक । सूत्र० २९२ । आचा० २०५, ३३०, ३६२ ।

**आयकसंप्रयोग** - आतङ्कसंप्रयोग, आतङ्क-रोग तस्य योग । औप० ४३ ।

**आयगुल्ल**-पुरुषात्मसम्बन्धि आत्मारुगुल्लम् । अनु० १५६ । अरुगुल्लस्य प्रथमभेद । प्रज्ञा० २९९ ।

**आयचरणं** - गोमुत्त । नि० चू० तृ० १२७ अ । -य० प्र० १०४ आ ।

**आयचामि**-लिफामि, आसिचामि । उपा० ३२ ।

**आयतकारे** - आत्मनोऽन्तर्-अवसान भवस्य करोतीति आत्मान्तकर, धर्मदेशनासाधक प्रत्येकयुद्धादि । ठाणा० २१३ ।

**आयत्ति**-आगच्छन्ति, उत्पद्यन्ते । आब० १७९ ।

**आयतियमरणे**-यानि नारकायाद्युक्तनया कर्मदलिक न्य युष्क नियते घृतथ न पुनस्तावन्नुभूय मरिष्यतीति । सम० ३३ ।

**आयंती** आयान्ती । आब० ३०७ ।

**आयते**-आचान्त, नवानामपि श्रोतसां शुद्धीदकप्रक्षालनेन युहीताचमन । जीवा० २४३ । कृतपान । भग० १६४ ।

**आयदमे** - आरामदम, आत्मान दमयति-समन्त करोति शिक्षयति चेति । ठाणा० २१४ ।

**आर्ययिलं**-आयाम्लम्, ओदनमुल्मापादि । औप० ४० । आचाम्लम् । आब० ८५२ । शुद्धीदनादि । अनुत्त० ३ । सूर्रा । आब० ८५५ । पानकम् । औप० १३३ ।

**आर्ययिलपाउगं**-आचाम्लप्रायोग्यम्, ( पूरविहाणाणि ) । आब० ८५० ।

**आर्ययिलघहमाणं** आचाम्लवर्द्धमानम्, तपोविशेष । अन्त० ३२ ।

**आर्ययिलिष**-आचाम्लिक । ठाणा० २९८ ।

**आर्यभरे** - आत्मानं विभक्तिं पुष्पातीयात्मम्भक्ति । ठाणा० २४८ ।

**आर्यसं**-आदर्श, श्रुभादिमीशभरगम् । अनु० ४७ । दर्शनं । ज० प्र० ३९२ । आदर्श । ज० प्र० ५१० ।

**आर्यसंघरं**-आदर्शगृहम् । आब० १७० ।

**आर्यसंघरगं** - आदर्शगृहकम्, आदर्शमयिव गृहकम् । जीवा० २०० । ज० प्र० ४५ ।

**आर्यसमुहदीपे**-आदर्शमुहदीपे, अन्तर्दीपनाम । ठाणा० २२६ ।

**आर्यसमुहा** - आदर्शमुहनामा नवमीऽन्तर्दीपे । प्रज्ञा० ५० । जीवा० १४४ ।

**आर्यसलिवी**-ब्राह्मीलिपियस्यदर्शनेद । प्रज्ञा० ५६ ।

**आर्य**-आय, धुननाम । दश० १६ । लाभ । अनु० १५५ । आत्मा-शरीरम् । उत० ४१५ । जीवधित वा । उत० ५०४ । अतति-ततत गच्छति तानि तान्यभ्यवस्यशरयाना न्तराणीनि आत्मा-मन । उत० ३१४ ।

**आर्य**-आयति-अनागत, उत्तरकालम् । आब० ५०९ ।

**आर्यकाय** अनतकायविशेष । भग० ८०४ ।

**आर्यफखादि**-आर्यादि, कथय, विदय । भग० ११० ।

**आर्यगय**-आत्मनि गत आत्मगत, आत्मज्ञ इति । सूत्र० १२४ ।

**आर्यग्रेसप**-आत्मगवेषक, आत्मान-कर्मविगमा द्युद्ध-रूप गवेषयति-अन्वेषयते य स । आयगवेषक-आय-सम्यग्दर्शनादिलाभर्त्न गवेषयतीति । आयनगवेषक-मूत्र त्वाप्यतो वा-मोक्षस्त गवेषयतीति वा । उत० ४१५ ।

**आर्यगुप्ते** - आत्मा शरीरं तेन गुप्त आत्मगुप्त-न यत् सत करणचरणादिविज्ञेयं, गुप्ते-रहितो-पयमस्थानेभ्य आत्मा वेत्त स । उत० ४१५ ।

**आयजोगे**—आत्मयोगी, आत्मनो योगः—कुशलमनःप्रशुतिरूप  
आत्मयोगः, स यस्मास्ति स तथा, धर्मध्यानावस्थितः । सूत्र०  
३४२ ।

**आयतुं**—आत्मनोऽर्थं आत्मार्थः, स च ज्ञानदर्शनचारित्र्या-  
त्मकः, आत्मने हितं—प्रयोजनमात्मार्थं, चारित्र्यानुष्ठानमेव,  
आयतः—अपर्यवसानान्मोक्षः स एवार्थः । आयत्तः—मोक्षः,  
अर्थः—प्रयोजनं यस्य । आचा० ११० । आत्महितं । आचा०  
१०९ । ज्ञानादिरूपं स्वकार्यम् । वृ० द्वि० ७१ अ ।

**आयतुः**—आत्मार्थी, यो ह्यन्यमपयोभ्यो रक्षति सः, आत्म-  
वान् । सूत्र० ३४२ ।

**आयत्तार्णं**—आत्मज्ञानम्, वादादिव्यापारकाले किममुं प्रति-  
वादिनं जेतुं मम शक्तिरस्ति न वा ? इत्यालोचनम् । उक्त०  
३९ ।

**आयत्तली**—बद्धीविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।

**आयत्तणं**—आकीर्णम्, स्थानविशेषः । ओष० १५४ ।

**आयतंगुली**—एगापत्तिणी । नि० चू० प्र० २०८ अ ।

**आयतगुप्ते**—आत्मगुप्तः—सततोपयुक्तः । आचा० २७२ ।

**आयतजोगे**—आयतयोगः—सुप्रणिहितं मनोवाक्पायात्मकम् ।  
आचा० ३१४ । ज्ञानचतुष्टयेन सम्यग्योगप्रणिधानं । आचा०  
३१४ ।

**आयतर्णं**—आयतनम्, गुणानामाधयः, अहिंसायाः सप्त च-  
त्वारिंशत्तमं नाम । प्रश्न० ९९ । आविष्करणं कथनं, निर्णय-  
नं वा । सूत्र० १८१ । स्थानम् । ओष० २२२ । नि० चू०  
प्र० १९२ अ । देवकुलम् । नि० चू० द्वि० ६९ अ । जीपार्णं  
स्थानं । आचा० ३२९ । ज्ञानादित्रयम् । आचा० २०७ ।

**आयतणा**—आयतनानि—बन्धहेतवः । ठाणा० ४५१ ।

**आयतणार्हं**—आयतनादीनि, श्रेयसहितस्थानानि, वसतिग-  
तानि, संस्तारकगतानि च । आचा० ३७२ । देवकुलपार्थी-  
परकाः । आचा० ३६६ । कर्मोपादानानि । आचा०  
४०७ । उपभोगास्वदभूतानि । आचा० १२७ । कर्मोपादान-  
स्थानानि । आचा० ३५६ । वैपस्थानानि । आचा० ३८६ ।

**आयतरो**—तवबलिजो । नि० चू० तु० १२३ अ ।

**आयतसंज्ञाणं**—आयतसंस्थानम् । प्रज्ञा० १११ ।

**आयता**—क्षीर्णा । जीवा० १६४ ।

**आयती**—सन्ततिः । वृ० द्वि० २१३ अ ।

**आयतीहितं**—आगामिकालहितं, आत्मना हितं वा । दश०  
चू० १५७ ।

**आयते**—आयतः, संस्थानपथममेदः । प्रज्ञा० २४२ । भग०  
८५८ ।

**आयतो**—आयतः, मोक्षः । सूत्र० १७३ । मोक्षतो । दश०  
चू० ८८ ।

**आयत्तं**—आयतम्, सम्मिश्रम् । पिण्ड० ८१ । आधिनीह-  
तम् । आव० ३६६ ।

**आयत्ताप**—आत्मत्वाय—आत्मैयकम्मातुभवाय । आचा०  
२३३ ।

**आयपरद्विते**—आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मना वा परत्राक्रोशा-  
दिना प्रतिष्ठितो—जनित आत्मप्रतिष्ठितः । ठाणा० ९२ ।  
आत्मपरप्रेतेहिकामुष्मिकापायदर्शनादात्मविषयः । ठाणा०  
१९३ ।

**आयपतिष्ठिष**—आत्मप्रतिष्ठितः, आत्मन्येव प्रतिष्ठितः ।  
प्रज्ञा० २९० ।

**आयपचार्यं**—आत्मप्रवादे, सप्तमपूर्वम् । ठाणा० १९९ ।

**आयप्पचाय**—आत्मप्रवादे, यत्रात्मनः संसर्गमुक्ताशनेक-  
मेदभिन्नस्य प्रवदनम् । दश० १२ । आत्मानं—जीवमनेकथा  
नयमतभेदेन यत्प्रवदति तत् । नैदी २४१ ।

**आयप्पचायपुञ्जं**—आत्मप्रवादानाम् सप्तमपूर्वम् । सम०  
२६ । विशेषे ९४६ ।

**आयभाव**—आत्मभावः, स्वस्वरूपः । अनु० २२६ । जीव-  
सम्बन्धः । अनु० २२० । उत्थापशयनयमनभोजनादिरूप  
आत्मपरिणामविशेषः । भग० १४९ । अनादिभवभावस्तो  
मिथ्यात्वादिकः, विषयशुभ्रता वा । सूत्र० २४० ।

**आयभावचकणया**—आत्मभावचकणता, आत्मनावस्था-  
शस्तस्य बद्धनता—बन्धीकरणं प्रशस्तत्वोपदर्शनता । ठाणा०  
४२ ।

**आयभावचवंचणा**—आत्मभाववचनता, मायाप्रव्यभिचीक-  
यायाः प्रथमो मेदः । आव० ६९२ ।

**आयभाववचव्यया**—आत्मभाववचक्यता, अहंमानिता ।  
भग० १३९ ।

**आयमर्णं**—आचमनम्, निलेपनादि । ओष० १३७, १९०,  
१६२ । आशातनायाः दशममेदः । आव० ७२५ । गण्ड-

यादिकरणम् । उक्तं ३७० । निर्लपनम् । घृ० सू० २०४ आ ।  
 णिष्वण । नि० घृ० प्र० २२० आ । पुरीयोगगान्तरं शीघ्र  
 करणम् । पिण्ड० ११ । आचमनम् । टाण० ३३९ ।  
**आयमाणे**-आददानं, प्रतीमानं । सूयं० १२ ।  
**आयमेजा**-निर्लपनं चापाने एवमेव दुर्यात् । ओष० १२५ ।  
**आयय**-आयतम्, प्रचारितम्, दीर्घम् । भग० २३० ।  
 आयतं - मोक्षं, आयतम्-अत्यन्तम् । दश० २५८ ।  
 गाष्ट्रं, दीर्घं च । भग० ९३, ३३३ । मोक्षं । व्य०  
 दि० १९७ अ । आत्मा । आचा० १२२ । मोक्षं संयमो  
 वा । उक्तं ५८७ । संयतं । आचा० ३१४ । प्रयत्नवान् ।  
 भग० ९३ । दीर्घं सत्रेणालभयनात् मोक्षं । सूत्र० ७० ।  
**आययकणायत्त**-आयतकर्णायतम्, प्रयत्नवत्कर्णं याव-  
 दाष्टम् । भग० ९३ ।  
**आययचक्र** - आयतचक्र - दीर्घमैहिकसुगमिकापायादश  
 चक्र - ज्ञानं यस्य स । आचा० १३६ ।  
**आययद्वि**-आयतार्थिकं, मोक्षार्थं । दश० २५६ ।  
**आययद्विया**-आयतार्थिका, आयतो-मोक्षं समो वा स  
 एतार्थं प्रयोजनं विद्यते येषामिति । उक्तं ५८७ । आयत -  
 मोक्षस्तत्र सिद्धता आयतस्थिता उच्यतेविहारिणं संविगना  
 इत्यर्थं । व्य० दि० १९७ अ ।  
**आययद्वी**-आयतार्थं, मोक्षार्थं । दश० १८७ ।  
**आययण**-आयतनम् । आच० २११ । आदानम् । अत्०  
 २४ । गमनम् । गृहम् । जीवा० २७९ । स्थानम् । ज०  
 प्र० ७७ । दश० १९८ । अल-अभिविधीं समस्तपाया  
 ग्मेभ्य आत्मां आयस्यते-आनियम्यते यस्मिन् बुद्ध्या  
 सुगाने वा यत्नवान् क्रियते इत्यायतनं-ज्ञानादिनयम् ।  
 आचा० २०६ । उत्पत्तिस्थानम् । उक्तं ६२३ ।  
**आययत्तरे**-आयततरं, आयमनयोरतिशयेनायतं आयत  
 तरं । आचा० २९४ । यत्नेनाप्यवसितं । आचा० ३९३ ।  
**आययति**-आचरति, आसेवन्ते । दश० १९८ ।  
**आययतो**-आचरन्, व्यवहृत्, सुर्वं वा । उक्तं ६४ ।  
**आययकस्ता**-आत्मरक्षा, स्वात्मरक्षणा । भग० १९४ ।  
 अमरक्षा राज्ञाम् । टाण० ११७ ।  
**आययन्निवृत्त**-आत्मरक्षितं, आत्मा रक्षितो दुर्गनिहेतोरप  
 प्यानादरत्नेनेति । उक्तं ९९ । आययन्ति-आयो वा-  
 ज्ञानादिलोको रक्षितो-नेनेति । उक्तं ९९ । आत्मा रक्षितो

दुर्गनिपतनात् प्रातोऽनेनेति, रक्षिता आया-रक्ष्यदर्शना  
 दिग्भा योति । उक्तं ४१४ ।  
**आययणे**-आचरणम्, अनुष्ठानम् । उक्तं ५३३ ।  
**आययण्या**-आदर्शं, अनुष्ठानम् आचरणम् वा । भग०  
 ५७३ ।  
**आययणा**-आचरणं, विधिं, मर्यादां, हीमा च । आच०  
 ६३९ । तत्तियमन्नविष्णो । नि० घृ० प्र० १९८ अ ।  
 चर्या । घृ० सू० १२९ आ ।  
**आययि**-आचार्यं, शिष्यो, प्रोद्गाता । भग० ३१७ । औच०  
 ६२ । अनुयोगाचार्यं । उक्तं १७ । व्य० प्र० १३७ अ ।  
 अनुयोग्यत् । आचा० ३५३ । तपरिगृहीतपन्थो । नि०  
 घृ० प्र० १६ अ । आययि-आचार्यं -प्रतिबोधकप्रज्ञाजकादि  
 अनुयोगान्तायो वा । टाण० १४३, २४४ ।  
**आययियं**-आचरितम्, आगेति । आच० २९३ । आर्ष्यं -  
 आराद् यात पापकर्मभ्य इति । भग० ९० । आचरण  
 साचरितं तत्तक्रियाकलाप । उक्तं २६६ । आराग्रार्थं  
 रार्थयुक्तिभ्य इत्यार्यं-तर्षं तत् । उक्तं २६६ । आर्यम्-  
 आर्याणां कर्तव्यं आचार्यं वा, मुमुक्षुणा यदाचरणीयं मान  
 दर्शनचारित्रम् । सूत्र० १८४ । पापकर्मभ्य आरागतमि  
 ल्यार्यम् । टाण० ११९ ।  
**आययिय**-आचार्यं । प्रज्ञा० ३२७ । शिष्यी । ज० प्र०  
 २१२ । आहितमिष्याप्या मर्यादया वा स्वयं पत्रविधा  
 चारं चरत्याचरयति वा पदान्, आचर्यते वा, मुक्त्यर्थमि  
 रासेव्यत इति । उक्तं ३७ । आ-मर्यादया-तद्विषयनि-  
 यस्वया पश्यते-नेष्यते, जिनगामनाभोवत्तकनया तदा  
 काश्चिभिरिति, आचार-ज्ञानाचारादि, आ-मर्यादया वा  
 चारो विहार आचार तत्रय स्वयंकरणप्रभवात्प्रद्वेष्टनाद्य  
 साधु स, आ-इयत्-अपरिपूर्णा हेरिका ये ते तारा -  
 आचारा-चारकल्पा, सुष्पयुक्तिभागेनिष्पन्नविपुला जिनो  
 या शिष्यास्तेषु मो यथावच्छात्राभोवद्गततया । भग० ३ ।  
**आययियउच**-हाप - आचार्योपाध्याय, आचार्येण गते  
 पाध्याय । भग० २३२ । आचार्योपाध्याय । नि० घृ०  
 प्र० १९६ आ ।  
**आययियज्ञपत्र** देवविदेप । नि० घृ० प्र० ३४४ आ ।  
**आययियते** - आचार्यकम्-तद्गमयन्त्याह्वानत्वम् । व्य०  
 प्र० १६६ अ ।

**आयरियव्यं**—पडियव्यं । नि० चू० प्र० ५ आ ।

**आयवणाम**—आतपनाम-यदुदयात् जन्तुशरीराणि स्वरूपेणा-  
नुष्णान्यापि उष्णप्रकाशलक्षणमातपं कुर्वन्ति तदातपनाम,  
तद्विप्राकथ्य भानुमण्डलजलेषु पृथिवीकायिकेष्वेव न बहौ,  
प्रवचनेऽपि निषेधात्, सन्नोष्णत्वसुष्णरपर्शनामोदयात्, उत्कट-  
लोहितवर्णनामोदयाच्च प्रकाशव्यवम् । प्रश्ना० ४७३ ।

**आयरिया**—आचार्याः—प्राणानार्या वैयाः । उक्त० ४७५ ।  
व्य० प्र० १७१ अ ।

**आयरिसो**—आदर्शः । आचा० ५ ।

**आयरिणं**—आदर्शं, प्रयत्नेन । जै० प्र० १९२ ।

**आयरो**—आदरः, आद्रियते आदर्शं वा, परिग्रहस्याप्तं  
नाम । प्रश्न० ९२ । सम्भ्रमः । वृ० वृ० ११ अ ।

**आर्यं**—अन्न, पितामहः । व्य० प्र० १७१ अ । अनुगु-  
प्यौत्कारी । व्य० प्र० १४ अ ।

**आयह्यं**—गृहम् । पठ० ३३-६६ । परार्थीनताम् । पठ०  
२४-१५ ।

**आयवं**—आतपवात्, चतुर्विंशतितममुहूर्तनामविशेषः । सूर्य०  
१४६ । जै० प्र० ४५१ । रविकिम्बजनित उष्णप्रकाशः ।  
उक्त० ५६१ । आतपः, आ-समन्तात्पति सन्तापयति  
जगदिति । उक्त० ३८ । धर्म । उक्त० १२१ ।

**आयवत्तप**—आतपतप्तं पयः । प्रग० ६८० ।

**आयवत्तार्ह**—आतपश्राणि, छत्राणि । जै० प्र० ८१ ।

**आयवाह**—विश्वकारणात्मवादिनः । भाव० ८१६ ।

**आयवाह**—आत्मवादिनः, क्रियावादिविशेषः । सम० ११० ।  
'पुरुष एवेदं मि' मिलादि प्रतिपत्तुरिति । ठाणा० २६८ ।

**आयवाभा**—आतपाभा, सूर्यस्त ज्योतिषेन्द्रस्य द्वितीया  
अग्रमद्विधा । जीवा० ३८५ । सूर्यस्य परात्नाम । भग०  
५०५ ।

**आयवी**—आत्मवित्, आत्मानं श्वभ्रादिपत्तरक्षणद्वारेण  
वेतोति । आचा० १५४ ।

**आयवीरियं**—वीर्यस्य पथमभेदः । नि० चू० प्र० १९ अ ।

**आयसंचेयनिज्ज**—आत्मना संनेयन्ते—क्रियन्ते इति  
आत्मसंचेतनीया (धृम-पत्न-दुर्भन-श्लेषजन्त्या उप-  
सर्गाः) । ठाणा० २८० ।

**आयसंचेयतो**—आत्मसंचेतनीयः—आत्मनःवात्मनो तु सोरपा-  
दनम् । व्य० प्र० १९६ अ ।

**आयसा**—आत्मना । सूत्र० १०६ ।

**आयसी**—लोहमयी, दर्भमयी च । प्रश्न० १३ ।

**आयसंचेणिज्जा**—आत्मसंचेतनीया—आत्मना क्रियन्ते ये, उप-  
सर्गाः । भाव० ४०५ ।

**आयसरीरसंचेयणी**—आत्मशरीरसंचेयनी, संचेयनीकथायाः  
प्रथमोद्देशः । दश० ११२ ।

**आयसरीराणवकखिया**—स्वशरीरव्यतिकारिणी क्रिया ।  
ठाणा० ४३ ।

**आयसेण**—आत्मसेनः, जंबूद्वीपैरवते अश्वामवसतिर्णिपां  
चतुर्वर्तीर्षकृत । सम० १५९ ।

**आया**—आत्मा, जीवः । आचा० १६ । आत्मा । भग०  
१२२ । आत्मा, रूपं । मंडी २१२ । द्वादशशते आत्म-  
भेदनिरूपणार्थं दशमोद्देशकः । भग० ५५२ । अतति-  
सततमवगच्छति 'अत सातत्यगमन' इति वचनादतो,  
धातोर्गल्यर्थाद्गल्यर्थां च ज्ञानार्थत्वादनवरतं जानातीति  
निपातनादात्सा—जीवः उपयोगलक्षणत्वाद्दस्य सिद्धसंसार्यव-  
स्थाद्वयैऽप्युपयोगभावेन सततावबोधभावात्, अतति—सततं  
गच्छति स्वकीयान् ज्ञानादिपर्यायानिलाम्ना, संसार्यपेसया  
नानागतिषु सततपमनात् मुक्तापेक्षया च भूततद्भावात्वा-  
दात्मेति । ठाणा० १० ।

**आयाए**—आत्मविरापनादोषः । ओष० ७९ ।

**आयाणं**—आदानम्, ईप्सितार्थग्रहणम् । औप० १८ । अर्ग-  
लास्थानं वा । औप० १८ । दुष्प्रणिहितमिन्द्रियं । आचा०  
३०४ । कर्मादानम् । आचा० ३३७ । आदीयते—स्वीकि-  
यते प्राप्यते वा मोक्षो येन तद्, ज्ञानदर्शनचारित्र्ययम् ।  
सूत्र० ५२ । उगलगा । नि० चू० प्र० २२० आ । गलणं,  
जेय मरुतेय गंतुय दगमदियहरियादीणि वेप्यति सं दगमदियं ।  
दश० चू० ७८ । कुचादिग्रहणम्, सम्प्राप्तकामस्येकारुतो  
भेदः । दश० १९४ । आदानः—आदीयतेऽनेनेलादानो-  
मार्गः । दश० १६८ । इन्द्रियम्, वरणम् । भग० २८६ ।  
आदीयते—द्वारस्थानार्थं गृह्यत श्लाघानः । जै० प्र० १११ ।  
आदीयते—एषते आत्मश्रेयैः सद् अभियतेऽपुत्रकारं कर्म  
येन तदादानम्, हिंसायाश्चद्वारमग्रादवशापस्थानरूपं वा ।  
आचा० १७० । संयमानुष्ठानं । आचा० १२८ । कर्मो-  
पादानं । आचा० २४३, ३३० । आदीयते—सावयानुष्ठानेन  
स्वीक्रियते । आचा० १९३ । आदिः । व्य० प्र० ११८

आ। हितायाध्रवद्वारमष्टादशयापय्यानरुर्ष वा तस्त्वितेनि  
मित्तत्वारण्याया वा। आचा० १७१। आशीयत इति,  
धनधान्यादि। उत० २६५। आदीयत इति आदि -  
प्रथमम्। उत० ५७०। आशीयन्ते-गृणन्ते शब्दादयोऽप्यौ,  
एभिरिति आदानानि-इन्द्रियाणि। सू० प्र० २११ आ।  
आदीयते सद्विवैर्गृणत इति, चारित्रधर्म। उत० ३३८।  
आदीयते गृणतेऽर्थे अनेनेखादानम्-इन्द्रियम्। भग० २२४।  
आदान, आदयो रम्य। प्रथ० ८१। आशीयते-स्वीक्रियते  
आत्महितमनेनेति-सयम। उत० २२५। सम्प्रदर्शनसाल  
चारित्ररूपम्। सूत्र० ४५५।

**आयाणपत्रण** - आदीयते-प्रथममेव गृणत इत्यादान तद्य  
तत्पद आदानपद तेन आदानपदेन। आचा० १९६।

**आयाणपय** - आदानपदम्, शास्त्रस्याध्ययनेदेशसुदेधाङ्क  
पदम्। अनु० १४१।

**आयाणपरिसाडे** - आधानपरिसाटम्, गर्भाधानपरिसाटरूप  
मूलकर्मवृत्तीयभेदः। पिण्ड० १४२।

**आयाणभङ्गमत्तनिकखेवणासमिर्** - आदानभाण्डमात्र  
निक्षेपणसमिति, भाण्डमात्रे आदाननिक्षेपविषया समिति -  
सुन्दरचेष्टा। आच० ६१६। आदाने-ग्रहणे भाण्डमात्राया  
वस्त्रानुपकरणरूपपरिच्छदस्य, उपकरणस्य वा, भाण्डस्य-  
वस्त्रादर्थेन्मयभाजनस्य वा मानस्य च-पात्रविशेषस्य निक्षे  
पणाय-विमोचने ये समिता-सुप्रत्युपेक्षितादिक्रमेण सम्पक्  
प्रवृत्तस्ते। औप० ३५।

**आयाणरक्षी** - आदानरक्षी, आशीयते-स्वीक्रियते आत्म  
हितमनेनेखादान-सयमस्वरक्षी। उत० २२५।

**आयाणसो**-आदानश-आदेराशयः। सूत्र० ४२४।

**आयाणसोय** - आदानसोय, आदीयते - सावयानुगमेन  
स्वीक्रियत इति आदानम्-कर्मं ससारधीजभूत तस्य सो  
तामि-इन्द्रियविषया मित्रात्वाविरतिप्रमादकपाययोगो वा।  
आचा० १९२।

**आयाणसोयगद्विष** - ससारधीजभूतेन्द्रियविषय मिष्या  
त्वाद्विषद्व-अध्युपपन्न। आचा० १९३।

**आयाणिज्जं**-आदानीयम्-भूत। आचा० १२२। कर्म।  
आचा० २४२। आदानव्य भोगाङ्ग, आदानीय-कर्म  
आचा० १२२। प्राथ, आदयवचनस्य। आचा० १९१।

**आयाणी**-प्रविदेशान्नेऽजा मृगमरोमात्तो भवन्ति, तस्य  
धमनिष्यत्वानि आजकानि भवन्ति। आचा० ३९४।

**आयाणीय**-आदानीयम्, प्राणम्। आचा० ३८।

**आयाती**-आयानि, सर्भार्त्तम। टाण० ६०।

**आयापरिणामो** - आगम्य परिणाम। म्य० टि०  
४५० अ।

**आयाम** - अवशायनम्। आ३० ५४। ईर्ष्यम्। अनु०  
१८०, १७१। भग० ११९। टाण० ६९। आय० १८४।

अवभावणम्। औप० १३३। पिण्ड० १७३। आयाम।  
टाण० ३३९। अवतामन। नि० सू० प्र० ४७ आ।

आचाम्लम्। उत० ७०६। उद्यतम्। भग० २८९।

**आयामग**-आयामकम्, अवभावणम्। उत० ४१९।

**आयामणया**-आवर्षम्। भग० ९३।

**आयामते**-आयामकम्-अवभावणम्। टाण० १४७।

**आयामविषर्त्तभो** - आयामविषर्त्तम्। आच० १५०।

**आयामुत्तिषोदग**-अवभावणमुत्तिषोदकं च। टाण० ३३९।

**आयामे**-आयाम, ईर्ष्यम्। प्रजा० ४२७।

**आयामेति**-ददामि। भग० ६६३।

**आयामेत्ता**-आयामेन समाहृत्य। सूत्र० ३०९। आयम्य,  
आहृत्य। भग० ९३।

**आयामेत्या**-भोजितवान्। भग० ६६२।

**आयाय**-आनाय, स्वीकृतं चरित्वा। उत० १२८। अव  
गम्य। आचा० ३३९। गृहीत्वा मयैतदर्थं यतिनव्यमिति

निश्चितं बुद्धया मत्प्रभार्येतियावत्। उत० २६८। बुद्धया

गृहीत्वाऽभ्युपगम्य। उत० २५३। गृहीत्वा, अवगम्य।

आचा० ३३५। बुद्धया गृहीत्वा। उत० १०४।

**आयाट**-स्वरूपम्। औ० प्र० १८। मूलगुणादि। दश०  
२५६। लोचार्त्तानादि। दश० ११०। आङ्-मर्यागयो

चरण चारत्-मर्यात्या कालनियमादिऽक्षणया चार आचार

इति। आच० ४४८। चतुर्थमिभुक्ति। आय० ६१।

धृतज्ञानादिर्नियमयनुगम कालाव्ययनादि। भग० १२०।

व्यवहार। टाण० ६४। चारिनम्। उत० ५८३।

ज्ञानाचारादि। उत० ५८३।

**आयारकहा**-आचारोक्तेयम्, आचारो-लोचार्त्ताना-

दिस्तत्प्रकाशनेन आक्षेपणी। टाण० २१०।

**आयारकहा**। नि० सू० टि० ६५ अ।

**आचारकुसल**—ज्ञानाद्याचारेण कर्मबुद्धानां लावकः । ध्य० प्र० २३४ । आचारे ज्ञातव्ये—प्रयोकव्ये वा दक्षः, अभ्युत्थानासनप्रदानानुपहितान्तगुणानामाकरो वा । ध्य० प्र० २३६ ।

**आचारफल्नी**—आत्मरक्षी, आत्मानं रक्षलपयैभ्यः वृगतिगमनादिभ्य इत्येवंशीलः । उक्त० २२५ ।

**आचारगोचर**—आचारगोचरः, क्रियाकलापः । दश० १९१ । आचारः—मोक्षार्थमनुष्ठानविशेषस्तस्य गोचरः । आचा० २६६ ।

**आचारग्न**—चूलिका । आचा० ७ ।

**आचारस्तेज**—आचारस्तेजः, विनिष्ठाचारवगुल्यरूपः इति । दश० १९० ।

**आचारदर्शनम्**—आचारदर्शनम्, प्रत्युपेक्षणादिक्रियादर्शनम् । आव० ४४८ ।

**आचारदोषो**—आचारदोषः । आव० ६५४ ।

**आचारपकल्प**—आचारप्रकल्पः, आचरणं आचारो सो य पञ्चविहो—गणदंशणचरिततवशीरियायारो य, तस्त पकरिसेणं कल्पणा—सप्तभेदप्रहणोत्सर्पः । नि० सू० प्र० ४ आ । आचार—प्रथमार्तं तस्य प्रकल्पः—अध्ययनविशेषो निश्चीयमित्यपरोभिधानं, आचारस्य वा—साध्याचारस्य ज्ञानादिविषयस्य प्रकल्पो व्यवस्थापनमित्याचारप्रकल्पः । सम० ४८ । उक्त० ६१६ । (निशीथ ) आचार एव । आव० ६६० । प्रत्याख्यानपूर्वस्य विंशतितमं प्रामृतं । आचा० ३१९, ३२० । निशीथाध्ययनम् । ठाणा० ३३५ ।

**आचारपभासणं**—कालनियमाद्याचारव्याख्यानम् । आव० ४४८ ।

**आचारफल**—आचारफलम्, मुक्तिरक्षणम् । उक्त० ५८३ ।

**आचारभंडप**—आचारभाण्डम् । अनुत्त० १ ।

**आचारभंडग**—आचारभाण्डकं—पात्रकम् । ओष० १५३ ।

**आचारभाच**—विनिष्ठाचारः । दश० १९० ।

**आचारमंतरे**—आचारान्तरे । ओष० ७९३ ।

**आचारवं**—पंचविहं आचारं जो सुगद आयरद वा सम्मं सो । नि० सू० वृ० १२८ आ । ज्ञानादिपञ्चकाराचारवारं । ठाणा० ४२४, ४८४ ।

**आचारवंतं**—आचारवंतं, सुन्दरावंतं, आकारचित्रं वा । ओष० २ ।

**आचारसमाही**—आचारसमाधिः, चतुर्थं विनयसमाधिस्थानम् । दश० ३५५ ।

**आचारे**—आचारः । नि० सू० वृ० १४८ आ । ज्ञानादिविषयाऽऽज्ञेवा । ठाणा० ३२५ । आचार्याणां नमस्कारार्हत्वे तृतीयहेतुः, तानाचारवत् आचाराख्यापकाथ प्राप्य प्राणिन आचारपरिज्ञानानुष्ठानाय प्रभवन्ति । आव० ३८३ ।

**आचारो**—आचारः, साधुसामाचारी । प्रश्न० १२५ । आचार्यते अस्मिन्व्यत इत्याचारः । आचा० ५ । आचारः । ध्य० द्वि० ३९१ अ ।

**आयाचय**—आतापनाकारी । प्रश्न० १०७ ।

**आयाचगा**—अयुरनुमारविशेषः । भग० ६२० ।

**आयाचणा**—आतापनास्थानम् । आव० ३९१ ।

**आयाचादी**—आत्मवादी । आचा० २२ ।

**आयाचतं**—सदृशीपद्मा तापनमातापनम् । दश० १६३ ।

**आयाचितो**—आतापयन् । आव० ३७१ ।

**आयास्त**—पीडा । ओष० १५७ । लोहमयम् । भग० ३१९ । मन प्रवृत्तीना खेदः, परिग्रहस्य चतुर्विंशतितमं नाम । प्रश्न० ९२ ।

**आयासकर**—आदेशितः । आदेशः, आदेशत इति आदेशः । ध्य० द्वि० ३३६ आ ।

**आयाहिणंपयाहिणं**—आदक्षिणप्रदक्षिणं, आदक्षिणात्-दक्षिणहस्तादारभ्य प्रदक्षिण—परितो भ्राम्यतो दक्षिण एव ।

सूर्य० ६ । आव० १२४ । जं० प्र० १७ । भग० ११४ ।

**आयाहिण**—आदाहिणा, आदक्षिणाप्रदक्षिणा । आव० २३२ ।

**आयुःकर्मजुभूतिः**—स्थितिर्जीवनमिति । प्रज्ञा० १६९ ।

**आयुःक्षेमस्य**—जीवितस्य । आचा० २९१ । आयुष क्षेम—सम्यक्पालनं तस्य । आचा० २९० ।

**आयुर्वेदः**—वेदकशास्त्रम् । निषा० ७५ ।

**आयो**—लाभः । भग० ९ । गमनं, वेदनम् । ठाणा० ३४८ ।

**आयोगठाणं**—आयोगस्थानम्, मेलनस्थानम् । आव० ८२३ ।

**आयोगाद्दो**—आयपमार्गं सेतं । नि० सू० प्र० २४६ आ ।

**आयोधनस्थानम्**—अट्टारम् । उक्त० ३११ ।



आरं-आरः, संसारः । सू० प्र० ५१ अ, २०१ अ । इहभवः, इहस्थत्वम्, संसारो वा । सूत्र० ५६ । इहलोकालयं मनुष्यलोके वा । सूत्र० १५२ ।

आरंभ - आरम्भः, जीवोपपातः, उपद्रवणं, सामान्येन वाऽऽभवद्धारप्रवृत्तिः । भग० ३१ । आरभकसाष्टमी प्रतिमा । भाव० ६४६ । आरभ्य । भाव० ६८८ । सावधानुष्ठानम् । आचा० ७८ । जीवोपपातः । भग० ७३५ । पृथिव्याद्युप-मर्दनं । ठाण० १०८ । सावधकियानुष्ठानम् । आचा० १५६ । आरम्भणमारम्भः, शरीरधारणायामपानान्यवेषणा । आचा० २९० । प्राणिवधः । तत्त्वा० ६-९ । द्रव्योत्पादन-व्यापाराः । उच्य० ४५६ । पृथिव्याद्युपमर्दनम् । प्रज्ञा० ३३५ । जीवः, कृष्यादिव्यापारः, जीवानामुपद्रवणं वा । प्रश्न० ६ । नि० सू० प्र० ३३ आ । व्यापारः । प्रश्न० ६३ । हलदन्तालखननः । भाव० ८१८ ।

आरंभड-आरंभेते-पृथिव्यादीनुपद्रवयति । भग० १८३ ।

आरंभओ - आरम्भजः, आरम्भात्-हलदन्तालखननाच्चा-यते सः । भाव० ८१८ ।

आरंभकदा-आरंभकथा, छागतिस्तिरमहियाण्यकारिका हता अत्रेति प्रसंसनं द्वेषणं वा । भक्तकथायास्तृतीयोद्देशः । भाव० ५८१ । तित्तिरगुपयोगकथा । ठाण० २०९ ।

आरंभपरिणया-आरम्भः-पृथिव्याद्युपमर्दनलक्षणः परि-ज्ञातः-तथैव प्रत्याख्यातो येनासावारम्भप्रतिज्ञातः, अमनो-पासकाष्टमी प्रतिमा । सम० १९ ।

आरंभसमारंभो-आरंभसमारंभः, आरंभा-जीवास्तेषां समा-रंभ-उपमर्दनं, अथवा आरंभ-कृष्यादिव्यापारस्तेन समा-रंभो जीवोपमर्दनं, अथवा आरंभो-जीवानामुपद्रवणं तेन सह समारंभः, परिज्ञापनमिति वा, प्राणवधस्यैकादशपर्यायः । प्रश्न० ५ ।

आरंभिया- आरंभिकी, आरंभ-पृथिव्याद्युपमर्दनं स प्रयो-जर्न-कारणं यस्याः सा, सम्यग्दृष्टेः प्रथमक्रिया । प्रज्ञा० ३३४ । विशातिक्रियामध्ये प्रथमा । भाव० ६१२ । आर-म्भणमारम्भः तत्र भवा आरम्भिकी । ठाण० ४१ ।

आरंभित्व-आरंभकः चौरमाहकः । सू० द्वि० १०७ अ । आरंभिकः । ओष० ८९ ।

आरंभित्तमो-दंडवास्तिगो । नि० सू० तु० ३० अ ।

आरंभित्ततो-कोट्टवाक्ये । नि० सू० प्र० २६२ अ ।

आरंभित्तय - आरंभकः । उच्य० ११५ । दण्डनायकः । दण० १६६ । भाव० ६३३ । ओष० १०६ । आरंभित्त-णामप्युपरि स्थायिनो हिंसिका आरंभिकाः, पुररंभिकाः । व्य० प्र० १३५ अ ।

आरंभित्तयपुरिस्तो-आरंभयपुरुषः । भाव० ३५३ ।

आरंभित्तय - आराद्रतम्-आराद्वागस्थितमिन्द्रियगोचरमागत-मित्यर्थः । भग० ३१७ ।

आरंभित्तिकम् । उच्य० ३८२ ।

आरंभित्तन्ती-दन्तन्ती । नंदी १५४ ।

आरंभित्तं-संशयदन्तम् । ओष० ८१ ।

आरंभिता - आरंभिताः, कल्पोपगैसादशैमानिस्त्रेदः । प्रज्ञा० ६९ ।

आरंभित्तण-आरंभ्यः, तापसादिः । अत्रु० २८४ ।

आरंभित्तणगतणं-इयामाकादिनुगम् । सू० द्वि० ३२० अ ।

आरंभित्तणय-आरंभ्यकः, अरंभ्ये भवः, तीपिकविशेषः । सूत्र० ४२२ ।

आरंभित्तणकम्-लौकिकप्रयत्नम् । भाव० ४६५ ।

आरंभित्तः-अत्र इतो वा । उच्य० ५४० ।

आरंभित्तं-आरंभकम्, ईयद्रकम् । आचा० १२१ ।

आरंभित्तो-आरंभ्यः । विशेषे ९८१ ।

आरंभित्तालं-कजियं ( देसीभासाए ) । नि० सू० प्र० ४७ अ ।

आरंभित्तियद्धा-आरंभित्तियद्धा, गन्त्री । पिण्ड० १०२ ।

आरंभित्तिय-अरंभ्ये वसतीति आरंभ्यकः । सूत्र० ३१५ ।

आरंभित्तियके - आरंभदेशोद्भवान्, म्हेच्छविशेषान् । जं० प्र० २२० ।

आरंभित्तियदेशाज-आरंभ्यः । जं० प्र० १९१ ।

आरंभित्तियी-आरंभदेशवासिनी स्त्री । भग० ४६० ।

आरंभित्तियो-आरंभ्यः, चिन्तातदेतसास्ती म्हेच्छः । प्रश्न० १४ ।

आरंभित्तियन्ती-आरंभमाण, पट्टकायान् विनाशयन्ती । पिण्ड० १५७ ।

आरंभित्तियसोळः-त्रिदासो नाट्यविधिः । जीवा० २४७ ।

आरंभित्तियड - आरंभित्तम्, वृत्तविशेषः । जं० प्र० ४१२ ।

नि० सू० तु० १ अ । जहाभिहितत्रिपाणतो विवरीयं, अथवा

दुदिये अर्णमि वा दरपडिलेहंनि अर्ण आडवति । नि०

सू० प्र० १८१ आ । वितथकरणरुणा, त्वरितं सर्वमारभमा-णस्य, अर्द्धशुभेतिन एवैकत्र यदन्त्यान्यवत्प्रहणं सा । ठाण०

३६१। विपरीता प्रत्युपेक्षणा, आवुल बदन्यान्वबलमहण  
तदा। औप० १०९। सोत्साह सुमः। वेपामिदम्। ज०  
प्र० ४१७। अष्टाविंशतितमो नाव्यविधि। जीवा० २४७।  
ज० प्र० १४७।

**आर्यं** - आरतं, उपरतम्। सूत्र० १०५। अभिविधिना  
आसक्तं। प्रश्न० १३८।

**आरसिद्धं** - आरस्य, रुदित्वा। आव० २०४।

**आरसियं** - आरसितम्, शब्दितं। आप० २२७।

**आरा** - आरा, प्रवणदण्डान्तर्विनी लोहशलाका। प्रश्न०  
२२। कुशेवाणहस्तिवण्डा। नि० चू० द्वि० १८ अ।

**आराडो** - आराटी, आरसनम्। आव० ६७७।

**आरादण्डः** - प्रतोद। दश० २५०।

**आराम** - तत्र रमणीयतातिशयेन क्षीपुष्यभिमुनामि यत्र आर

मन्ति स विविधपुष्पजात्युपशोभित आराम। अनु० २४।

विविधपुष्पजात्युपशोभित। टाण० २१२। रति। आचा०

२२९। आराम - आरामन्ति यस्मिन्माधवीलतादिके दम्प-

त्यकीनि यं आराम। भग० २३८। आरामा - दम्पत्या-

दीभि येष्वारामन्ति ते। अनु० १४९। वाटिका। प्रश्न०

८। आरामन्ति - यस्मिन् माधवीलतागृहादौ दम्पत्यादीनि

कौडन्तीति। औप० ३। पुष्पस्थानवनम्। औप० ४३।

दम्पत्योर्नगरासन्नरातिस्थानम्। ज० प्र० ३८८। आगल्य

रमन्तेऽत्र माधवीलतागृहादिषु दम्पत्य इति स। जीवा०

२५८। दम्पतिरमणस्थानभूतमाधवीलतादिगृह्युक्तं। प्रश्न

१२७। दम्पतिरतिस्थानलतागृहोपेतवनविशेष। प्रश्न० ७३।

माधवीलतायुपेतो दम्पतिरमणाश्रयो वनविशेष। प्रश्न०

१२६।

**आरामाद्** - विविधशूलतोपशोभिता वृत्त्यादिमण्डलगृहेषु

क्षीणहिताना पुना रमणस्थानभूता। टाण० ८६।

**आरामाशार** - आराममश्रवर्षः रूहम्। औप० ६१। उद्यान

गृहम्। आचा० ३६५। आचा० ३०६।

**आरामिद्यो** - आरामिक। आव० ३९०।

**आराहृत्ता** - आराध्व, उत्तत्र ग्रहपगादिनाः हारेणायापयित्वा।

उत्त० ५७२। यथाबहुसर्गापवादबहुशलतया यावत्कीर्त्तं नद-

धमिषन्नेन। उत्त० ५७२।

**आराहृष** - आराधयति, प्रशुण्णीकरोति। दश० २८४।

आराधक - निरतिचारपालनाहृत्। उत्त० ५७८।

**आराहृओ** - आराधक, अविधाधक। औप० ११२।

**आराहृगा** - आराधका - आराधयन्ति - अतिकलतया निष्पा

दयन्ति सम्यग्दर्शनाधीनि इत्याराधका। उत्त० २३२।

आवर्जका। उत्त० ३६१।

**आराहृण** - आराधनम्, अखण्डकालकरणम्। भग० २९७।

**आराहृणा** - आराधना, सम्यगासेवना। उत्त० ५८६। अनु

ष्ठानम्। उत्त० ५९१। ज्ञानाशाराधनादिमका। उत्त० ५८२।

आवर्जनार्थम्। उत्त० ५९१। अखण्डकालस्य करणम्।

आव० ८४०। चरमकाले निर्यापिगहणा। दश० २६२।

मोक्षमार्गाखण्डना। आव० ५६२। आवर्यकस्य पर्याय।

विशे० ४१५। अष्टमशते दशमोद्देशक। भग० ३२८।

अखण्डकालकरणम्। उपा० १२। मोक्षाराधनाहेतुत्वात्।

अनु० ३१। निरतिचारज्ञानायासेता। टाण० ९८।

**आराहृणामरण्ते** - आराधनामरणान्ते, मरणकाले आर

धना, योगवत्कम्पे ह्यत्रिंशत्तमो योग। आव० ६६४।

**आराहृणी** - आराधनी, आराधयते - परलोकानीडया यथावद

निधीयते वस्त्वनया, द्रव्यभावभाषाभेद। दश० २०८।

**आराहा** - आरोहन्ति ते आराहा। नि० चू० प्र० १७७ अ।

**आराहिय** - आराधितम्, एभिरेव प्रचरि सम्युपनिष्ठा

नीता। टाण० ३८८। सफलीकृत। उत्त० २९८।

**आराहियचरणया** - आराधितचरणता, चरणप्रतिपरितप्तम

याकारभ्य मरणान्त याचबिरतिचारतया तस्य पालना।

भग० ६९५।

**आराहृद्** - आराधयति, साधयति। उत्त० ५८२।

**आरिष्य** - आर्या, आराद् याता सर्वहृद्यधर्मैश्च इत्यार्षा -

सवाराणवत वतिन क्षीणधतिक्मर्माता सवरोद्दविचर

वर्तिभावादि तीर्थकृत। आचा० ११५। ऋद्धिप्राप्ता

अर्हदादय, क्षेत्रजाल्याचार्या। सम० १३५। आर्य -

चारिर्नाहर्तः। आचा० १३१।

**आरिओ** - आर्य, आराद् याता सर्वहृद्यधर्मैश्च इति। सूत्र०

३३। आरायात सर्वहृद्यधर्मैश्च इति, मोक्षमार्गं सम्य

ग्दर्शनज्ञानचारिणमस्य। सूत्र० १७२।

**आरिष्यमी** - आर्य - प्रगुज न्यायोगपक्ष पश्यति तच्छ्रीलक्षेति

आर्यदर्शी - पृथग्दृष्टेः कस्यामासनादिसम्परिहित। आना०

१३१।

आरियपदेशिए-आर्यश्रेयसित-तीर्थवरप्रथित । आचा०  
२४७ ।

आरियपत्रे - आर्यपत्र - भुतविशेषितशैमुगीर । आचा०  
१११ ।

आरिया-आर्मा, आरक्षेयधर्मभ्यो याता - प्राप्ता उपादेय  
धर्मरिति । प्रज्ञा० ५५ ।

आरुग्ग-आरोग्य-सिद्धत्वम् । आच० ५०७ ।

आरुग्गबोहिल्लामो आरोग्यबोधिल्लाम, आरोग्यस्य भाव  
आरोग्य-सिद्धत्व, तदर्थं बोधिल्लाम - प्रत्ये जिनधर्मप्राप्ति ।  
आरोग्याय बोधिल्लाम । आच० ५०८ ।

आरुग्गिता छायाया नवममेद । सूर्य० १५ ।

आरुहय-आर्हतम् । आच० ४६५ ।

आरुहेत् । आचा० ३७५ ।

आरुह्यते-अध्यास्यते । उता० ५१० ।

आरुद्ध-आरुद्ध अर्थाविति । उता० ३४५ ।

आरुद्धे पाउयाहि-आरुद्ध पाउकुवो-काष्ठमयीपानतो,  
एषयाया नवमदायकनेप । पिण्ड० १५७ ।

आरुचणा-आरोपणा, यत्रैकरिमन्त्राययितोऽन्वद्व्यारोपते ।  
प्रज्ञा० १४५ । आचारपत्रकस्याष्टाविंशतितमो भेद । आच०  
६६० । पर्युत्तमे । विसे० ११५२ । पच्छिउत्त । नि० चू०  
प्र० २३९ आ ।

आरे-पकयभापकान्तमहानरका । ठाणा० ३६९ ।

आरेण-आरत, प्रत्युपनि । ओष० १४८ । आरान् । सूत्र०  
४२३ । समारभ्य । विसे० १२८ ।

आरोगसाला-अणाहवाला । नि० चू० द्वि० ३८ आ ।

आरोग-आरोग्य, रोगाभाव । आच० ३४१ । नीगेगता ।  
आच० ३४१ ।

आरोग्या-अरोगा -उत्तरादिचित्ता । ठाणा० २४७ ।

आरोचना - आरोपणा, आरोपणमेकाराधारावस्थिते पुन  
पुन आसेवनेन विचरतीवत्रायगिरिष्ठाध्यारोपणम् । ठाणा०  
२०० । प्ररुपणाया प्रथममेद । आच० ३८२ । पररुपणा  
वधारणम् । आच० ३८३ । प्रायश्चित्तम् । चू० प्र० ८५ आ ।

चडावना (मायाप्रत्ययमधिकप्रायश्चित्तम्) । ठाणा० ३२५ ।  
चडावना, अहवा न द्वावदि पुरिस किभागेण दाण सा  
आरोचना । नि० चू० चू० ८५ आ । आचाराऽस्याप्रतिमिति

तममध्ययनम् । उता० ६१७ ।

आरोचनाकसिणं-आरोपणाकृष्टम्, पष्पागिर्षं तप्त फल्ग  
भयवती वदन्मानस्यामिनस्तीर्थ आरोपणम्यामाणात् । द्य०  
प्र० ११८ आ ।

आरोचनापायच्छिउत्तं-प्रायश्चित्तमेद । द्य० प्र० ११ अ ।  
आरोहकः । उता० ४८ ।

आरोहणा - आरोपणा-प्रायश्चित्तविशेष । द्य० प्र०  
१०४ आ ।

आरोहपरिणाहयुत्तता-आरोहो-ऽर्ष्यं परिणहो-निम्न  
स्ताभ्यां तुल्याभ्यां युक्तता, शरीरगमनप्रथममेद । उता०  
३९ ।

आरोहा-महामात्रा । विपा० ४६ ।

आरोहो-उत्सोहो । नि० चू० प्र० २६६ आ । नातिरेपे माति  
हस्वता शरीरो-ऽभ्यो वा । सूत्र० प्र० ३०१ आ ।

आर्जिका-अजिजए, आयिछा, मातु गिनुर्ता मत्ता । द०  
२१६ ।

आर्जवम्-भावरोपवर्जनम् । तत्त्वा० ९-६ ।

आर्सा-ऽनु चित्त रागद्वेषोदयेन । आचा० १८३ ।

आर्द्धक-आर्द्धनगराधिपति । सूत्र० ३६ । त्रिदशतय  
धरणफलवान् । सूत्र० २१५ । सचित तश्शरीरम् । आच०  
८२८ ।

आर्द्धकुमार-प्रतिमादर्शनं दृष्टान्त । चू० प्र० १८५ अ ।  
सदाचारप्रयत्नवज्जात । सूत्र० ३८५ ।

आर्य-आरान्-मर्षद्वेषधर्मभ्योऽर्थां यात । ऋषी ४९ ।

आर्यकम्-हरितम् । द० १८५ ।

आर्यदृष्ट्या-अन्वष्टे, आचार्यनाम । विसे० १००० ।

आर्यरपुष्ट-विद्यायते दृष्टान्त । चू० तू० १-६ अ । विद्या  
सिद्धि, सिद्धमन्त्र । द० १०३ ।

आर्यगङ्ग-आचार्यनाम । विसे० १००० ।

आर्यमंगु-आचार्यनाम । चू० प्र० २४ अ ।

आर्यरक्षित-अन्वरक्षित्य, आचार्यनाम । विसे० १००५,  
१३०, १००२ ।

आर्यवचनम् - अज्जवचने, आर्याणा-तीवृत्ता वचनम्-  
अगम । उता० ५२६ ।

आर्यवज्ज-कर्णाभ्यां धुने दृष्टान्त । चू० प्र० ६३ अ ।

आर्यवैर-अज्जवैर, आचार्यनाम । विसे० १००९ ।

आर्यश्याम-आचार्यविशेष । प्रज्ञा० १००१ ।

आर्यसमुद्रः-आचार्यविशेषः । वृ० प्र० २४ अ ।  
 आर्यसुहृस्ती-आचार्यविशेषः । वृ० प्र० २४ आ ।  
 आर्या-अज्जा, प्रधानतरुणा । अतु० २६ । भिष्टुणी ।  
 ओष० २०८ ।

आर्यापादा-आचार्यनाम । विशेषे १५२ ।  
 आर्यासूत्रम्-अज्जासूत्रं, सूत्रमेदः । वृ० प्र० २०१ आ ।  
 आर्यिका-आजिका, मातुः पितृनां माता । दश० २१६ ।  
 आर्यैः-तीर्थकृद्भिः । आचा० २७४ । सकलदेवधर्मेषु दूरे  
 यातस्तीर्थकरादिभिराचार्यैर्वा । उक्त० २९३ ।

आलंकारिअर्भङ्ग-आलङ्कारिकभाण्डम्, आभरणवृत्तभाज-  
 नम् । ज० प्र० २५५ ।

आलंकारियं-आलङ्कारिकम्, अलङ्कारयोग्यं भाण्डम् ।  
 जीवा० २२६ ।

आलंछ-आलञ्जः, इत्यस्य बहुवचनप्रतिभिलोकं प्रतीकमेदः ।  
 प्रश्न० ५६ ।

आलंघ-आलम्ब्यः, प्रलम्ब्यः । भग० १७५ ।

आलंघण-आलम्बनम्, प्रपततां साधारणत्वानम् । भाव०  
 ५३४ । प्रवृत्तिनिमित्तं शुभमभ्यवसानम् । भाव० ५८६ ।  
 खानादि । उक्त० ५८७ । रज्ज्वादिबन्धप्रतीतिनिस्तारकरवा-  
 दालम्बनम् । भग० ७३८, ७३९ । आभरणणीयं गच्छतुदुष्-  
 कादि । ठाणा० १५४ ।

आलंघणवाहा-अलम्बनवाहाः, द्वयोः पार्श्वोरलम्बना-  
 धयभूताः गितयः । ज० प्र० २९३ ।

आलङ्घ्य-आलम्बितम्, आविष्टम् । भाव० १८५ । यथा-  
 स्थानं व्याप्तितम् । ज० प्र० १६० । प्रसा० १०१ ।

आलङ्घ्यमालम्बड-आगालितमालमुडम्, आगन्ति-  
 मानं मुहुः । यन्म हाः । भग० १७४ । आलम्बनमाल-  
 मुडुटः । आचा० ४२३ ।

आलर्ष-आलस्यः, आभयः । जीवा० २७९ । उक्त० ४५४ ।  
 ज० प्र० १८ । यथाः, शुभमाश्रिताः क्षीणशुभगुणकविश्रान्तिना  
 वा । भाव० ५२९ ।

आलम्बो-अधुनिमानस, वागदः । भाव० ८०० ।

आलपाल-दत्ताप । भाव० ६६९ ।

आलम्बिअ-आलम्बिता नगरीविशेषः, कौरव्य सप्यगवरा-  
 राज्यतनम् । भाव० १०९, २२१ ।

आलम्बिया-आलम्बिका, नगरीविशेषः । भग० ५५० ।  
 नगरीविशेषः । भग० ६७५ ।

आलय-आवासः । ओष० १५६ । आलयः । जीवा०  
 १७६ । ज० प्र० १२९ ।

आलयविद्याणं-आलयविज्ञानं-ज्ञानसंगतिः । सूत्र० २६ ।  
 आलयगुणोद्दि-आलयगुणैः, बहिश्चेष्टाभिः प्रतिलेखनादिभि-  
 र्पशमगुणेन च । वृ० प्र० ६२ अ ।

आलवन्ते-आलयन्, अलस्यं लपन् । अतु० १४२ । आल-  
 यति, आगिति ईष्यगति-वृत्तिः । उक्त० ५५ ।

आलविज्ज-इत्यलङ्कृता लपनमालपनम् । दश० २१६ ।  
 आलवित्तप-आलयनम्, सङ्घसम्भाषणम् । भाव० ८११ ।  
 आलपितुं-सङ्घसम्भाषितुम् । उपा० १३ ।

आलस्स-आलस्यम्, अनुयागस्वरूपम् । उक्त० १५१ । अतु-  
 त्साहामा । उक्त० ३४५ ।

आला-विद्युत्पारीमहतरिका । ठाणा० ३६१ ।

आलापति-आलययति । आश० १०० ।

आलानम्-रक्षितबन्धनस्तम्भम् । नंदी० १५३ ।

आलाप-आलापः, सङ्कल्पः । भग० २२३ । अलाप-  
 आल ईष्यस्यैवाशेषत्वपनम् । ठाणा० ४०७ ।

आलापयो-आलापकः । भाव० २६० ।

आलापयये-आलापनयये-आलाप्यये-आलीनं क्रियते  
 एभिःसालापानि रज्ज्वादीनि तैर्बन्धनरुणादीनाम् । भग०  
 ३९५, ३९८ ।

आलापो-बहुमान्जीहरिणो तरुमते णमोक्तागमनगण-  
 तितो मुग्धासालो भण्णो । नि० पू० प्र० २३७ आ ।

आलि-अवस्थापनिकोपः । जीवा० २०० ।

आलिग-आलिङ्ग, यो गार्धनेन मुरज्ज आभिरुप वाटी ।  
 ज० प्र० १०१ । मुरज्जो पापविरोधः । ज० प्र० २१ ।  
 धूम्रपो मुरज्ज । जीवा० १०५ ।

आलिगकस्सेट्टित-आभिरुपविधायः, आभिरुपविधाय चतु-  
 र्दशं कृतानम् । जीवा० १०४ ।

आलिगण-आभिरुपनम्, ईष्यपननम्, सङ्कल्पकाम्य  
 दत्तानो भेदः । दश० १९४ । दृष्टानम् । नि० पू० प्र०  
 २५६ आ ।

आलिङ्गणवट्टि-आलिङ्गनवर्ती, शरीरप्रमाणमुपधानेन वर्तते यत् । ज० प्र० २८५ । जीवा० २३२ । सूर्य० २९३ ।

आलिङ्गिणी - आलिङ्गिनी, अप्रतिरिखितदृश्यपत्रके चतुर्थो भेद । भाष० ६५२ ।

आलिङ्गणपुक्करे - आलिङ्गणपुष्करम्, सुरजमुखम् । भग० १४५ ।

आलिङ्गणी-पुष्टप्रमाण पार्श्वमुपधान । वृ० द्वि० २२० अ । जाणुकोप्परादिषु जा दिञ्जति सा । नि० चू० द्वि० ६१ अ ।

आलिङ्गिता - पुरिसिण्ठिषीस्तनादिषु सृष्टा । नि० चू० प्र० ११३ अ ।

आलिङ्गो-आलिङ्गण । जीवा० २६६ । आलिङ्ग, सुरजो वायविविशेष । जीवा० १८९ ।

आलिङ्गिण-सङ्घट्ट लिपि । नि० चू० द्वि० ७६ आ ।

आलिङ्गि-वनस्पतिविशेष । ज० प्र० ४५ । जीवा० २०० । खल । विशेषे ६११ । औषधविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।

आलिङ्गिज्जति-आलिङ्गयते । भाष० ८५७ ।

आलिङ्गि-आलिङ्गकम्, वनस्पतिविशेषस्तन्मय गृहकम् । जीवा० २०० ।

आलिङ्गिणालिङ्ग-आलिङ्गानालिङ्गम्, कृत्तिकर्मणि चतुर्भङ्ग भिन्न सप्तविंशतितमो दोष । भाष० ५४४ ।

आलिङ्गि-अभिधिधना ज्वलति । भग० १२१ । आदीप्त । अन्त० १७ । आलिङ्ग, नौवाहनोपकरण । भाषा० ३७८ ।

आलिङ्गि-आदिग्धा, शिलायां शिलामुपक्रे वा लम्बा । भग० ७६६ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गम्, कुण्डलकम् । अनु० १५१ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गम्, चण्डिका । ज० प्र० १२४ । चण्डिकाप्रकारा, चण्डिका । भग० २७४ । धान्यविशेष । भग० ८०२ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गम्, ठाणा० ३४४ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गि, विन्यस्यति । ज० प्र० १९२ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गि, ईपत्तसङ्घाऽऽजपत्त । भग० ३६५ ।

आलिङ्गि-अलिङ्गि, ईपत्तसङ्घाऽऽजपत्तम् । दश० १५२ ।

आलिङ्गि-आलिङ्गि भाकारकरीणं कृत्वा अन्तवर्ण-कादिभरणेन पूर्णानि कृत्वा । ज० प्र० १९२ ।

आलिङ्गि-आलीडम्, आकान्तम् । भाष० ७०४ । दक्षिणपादम मनो भूत कृत्वा वामपाद पश्चात्कृत्वापसारयति, अन्तरैर्द्वयोरपि पादयो पत्र पादा, लोकवर्षाहे प्रथम स्थानम् । भाष० ४६५ ।

यत्र दक्षिणं पादमग्रत कृत्वा वामपादं पृथक् सारयति, अन्तरैर्द्वयोरपि पादयो पत्र पदानि सम्भ्रान्तम् । ज० प्र० २०५ । दक्षिणमूर्धमप्रतो मुनि कृत्वा वाममूर्धं पश्चामुग

मपसारयति, अन्तरा च द्वयोरपि पादयो पत्र पत्रा ततो वामहस्तेन धनुर्गृहीत्वा दक्षिणहस्तेन प्रयत्नामाकरोति तत ।

व्य० प्र० ४६ आ । योधमस्थानं । आगा० ८९ । योध-स्थानम् । ठाणा० ३ । वाममूर्धं अग्रतो काठं दाहिणि द्वितो वामहस्तेन धनुर् गृह्णन् दाहिणे एव गच्छत । नि० चू० तृ० ९० अ ।

आलिङ्गिणी-ईमि लीणाणि । दश० चू० १२५ ।

आलिङ्गि-आलीन । जीवा० ३०३ । गुरुमाभिधा, मन्दीनो वा । भग० ८१ ।

आलिङ्गि-आदीपिक, गृहादिप्रदीपनकरारी । प्रज्ञा० ४६ ।

आलिङ्गि-व्याकुललोकाणां मोषणार्थं प्रामादिप्रदीपनम् । विषा० ३९ ।

आलिङ्गि-नि० चू० द्वि० १७० अ ।

आलिङ्गि-आलयन, प्रहणम् । भाष० ५६२ ।

आलिङ्गि-आलयम्, शिलाच्छन्नमलकर्मनचौर्याभिक्रियाकारी । आचा० १०२ ।

आलिङ्गि-अनन्तकायमेद । भग० ३०० । कन्द विशेष । उत० ६९१ । आलुकम् - साधारणवनस्पति कायिकमेद । जीवा० २७ । आलुका-कुण्डिना । अनुत्त० ५५ ।

आलुय-आलुकम्, कन्दविशेष । अनुत्त० ६ । प्रयोविशति तमशतकाद्योद्देशक । भग० ८०४ । आर्द्रकम् । भग० ८०४ ।

आलेखः-विक्रमम् । जीवा० १९९ ।

आलेखण-आलेपनम् । भाष० ६२३ । आचा० ३० ।

आलेहो-आलेख, चित्रम् । ज० प्र० ३२ ।

आलो-आल, अराक्यक्रियम् । भाष० ९४ ।

आलोभ-अवलोक, निर्युहकारिरूप । दश० १६६ । यहि - प्रथ्यानभाविनि शङ्खानुद्वय्यालकेन । ज० प्र० २६३ ।

आलोभ-आलोभकम्, आ(अव)लोकचलम्, अवलोकनमालो कदतरिर्धवल, दर्शनलात्पम् । भाष० ७८४ ।

आलोभणं-आलोभणम्, निरुपणम् । औष० ५२ । श्लोमि आख्यान । नि० चू० प्र० ३३४ अ । आलोकयन्ते दिशोऽ

स्मिन् रिपतैरिति । उक्तं ४५१ । आलोचनम्-पुननिवेद-  
नम् । टाणा० १३७ । प्रायन्तिउक्तमेदः । टाणा० २०० ।  
आलोभणा-आलोचना, आभिमुख्येन गुरोरारमदोषप्रकाश-  
नम् । भाव० ४६९ ।

आलोभभाषणं-आलोचभाजनम्, मक्षिकावपोहाय प्रका-  
शप्रधानं भाजनम् । दश० १८० ।

आलोइङ्ग-आलोचयेत्-प्रकाशयेत् । उक्तं ५४४ ।

आलोइञ्जा-आलोचयेत्-परयेत्-भ्रुयात् । आचा० ३२८ ।  
अवलोकयेत् । आचा० ३९६ ।

आलोइस्ता-आलोकित्वा, ईषद्दृष्टा । उक्तं ४२५ । समन्ता-  
द्दृष्टा । उक्तं ४२५ ।

आलोइत्तप-आलोचयितुम्, पुरवेऽपराभाभिषेदयितुमिति ।  
टाणा० ५६ ।

आलोइर्यं-आलोकितं-प्रत्युपेक्षितं । आचा० ४२८ ।

आलोइयपङ्क्ति-आलोचितप्रतिकान्तः, आलोचितं गुरुणा  
यदतिचारजातं तदप्रतिमान्तम्-अकरणविपरीकृतं येनाधवा-  
ऽऽलोचितधसावालोचनादानात्प्रतिकान्तं च मिष्यादुष्कृत-  
दानादालोचितप्रतिकान्तः । भग० १२८ ।

आलोइ-आलोक, दर्शनम् । भग० १९८ । दर्शनं, दृश्य-  
मानता । जीवा० ३९१ । आलोचयेत्-दत्तावधानो भवेत् ।  
आचा० ३४२ । चक्षुर्दर्शनपथे । ओप० १८३ ।

आलोइ-आलोचयति । भाष० ७२५ ।

आलोइञ्जा-आलोचनं-गुरुनिवेदनम् । टाणा० १३७ ।

आलोइस्तो-आलोयण । व्य० प्र० १०८ अ ।

आलोको-आलोक्यत इति आलोकः-स्थानदिगादिनिह-  
पणम् । ओप० १८१ । अतिरिपथरीपशिक्षादिदर्शनम् ।  
उक्तं ६३१ । सावकाशं सुकृत्वाऽऽयन्तरे स्वपन्ति । ओप०  
१०७ । आलोक्यन्ते दिशोऽस्मिन् द्विवैरिति । उक्तं ४५१ ।

आलोग-आलोकम्, सौरप्रकाशम् । ज० प्र० २२५ ।  
चोपलपारी । दश० सू० ७६ । समो भूभागः । ओप० १९३ ।  
आलोकनमालोको यावद्दृष्टिप्रसरः । ओप० २३ ।

आलोचनम्-प्रकाशनं प्रकाशनमाख्यानं प्रादुर्भूतम् ।  
तत्त्वा० ९-२२ ।

आलोचयति-गमयति प्रेक्षते च । भाव० ५३६ ।

आलोचयेत् । व्य० द्वि० ७१ अ ।

आलोच्यं-आलोकम् । ओप० ८४ । दृष्टिपथम् । औप०  
६९ । स्थानद्विक्रकासादिसप्तधाऽऽलोकम् । व्य० सू०  
१४० अ । प्रकाशः । भाव० ६४२ । आलोकस्थानं-गवाक्षा-  
दिकं । आचा० ३४१ ।

आलोचयणं-आलोचनम्, यथाएद्वीतमफगाननिवेदनम् ।  
प्रथ० १११ । आलोचना, प्रयोजनतो हस्तशताह्वर्गि-  
नागमनाशौ गुरोर्विकटना, मिष्यादुष्कृतं च । भाव० ७६४ ।  
एकादशी गुरोर्शातना । भाव० ७२५ । गुरोः पुरतो वचसा  
प्रकीर्णणम् । व्य० प्र० १४ अ । टाणा० २०० । अरु-  
वणं । व्य० द्वि० ३३५ अ । सुकृत् अनेकशः प्रलोक्यम् ।  
नि० सू० प्र० २२२ अ ।

आलोचयणा-आलोचना, आविति-सकलक्षोपाभिव्याख्या  
लोचना-आत्मदोषाणां गुरुपुरतः प्रकाशना । उक्तं ५७५ ।  
आलोचना । ओप० २२५ । योगसङ्ग्रहे प्रथमो योगः ।  
भाव० ६६३ । परस्त वागहं करे । नि० सू० सू०  
८५ अ । व्य० प्र० १०७ अ ।

आलोचयणाणुलोमं-आलोचनानुलोम्यम्, पूर्वं त्वयः  
आलोचयन्ते पश्चाद् गुरुवः । भाव० ७८१ ।

आलोचयणारिह-आलोचना-निवेदना तद्वक्षणं शुद्धिं यदहं-  
स्वतिचारजातं तदालोचनार्हम् । भग० १२० ।

आलोचयणं-आलोकभाजनम्, प्रकाशमुखे भाजने,  
अथवा आलोके-प्रकाशे नान्यकारे विपरीकित्वावालाशीनामनु-  
पलम्भान्, तथा भाजने-पाने, पानं विना जलादिसम्पतित-  
सत्त्वादर्शनादिति । प्रथ० ११२ ।

आलोचिअ-अलोपिक । दश० ४४ ।

आलोचिह-आलोचयति । भाव० ७१० ।

आवृत्ति-आचारप्रकल्पे प्रथमभूतरकृत्पस्य पञ्चममध्ययनम् ।  
प्रथ० १४५ । आचारस्य पञ्चममध्ययनम् । उक्तं ६९६ ।  
आचारोने प्रथमभूतरकृत्पस्य पंचममध्ययनम् । सम० ४४ ।  
आचा० १९६ । यावन्तः । आचा० १८५ । आचारप्र-  
ल्पस्य पञ्चमो भेदः । भाव० ६६० ।

आवृत्ती-लोकसारपरामिध, आचारावपंचमाध्ययनम् । टाणा०  
४४४ ।

आघई-आगच्छत्यापतति । उक्तं २८० ।

आघईसु दृढधम्मया-आपत्तु दृढधर्मता, योगसङ्ग्रहे  
तृतीयो योग । भाव० ६६४ ।

आवकघाते-यावत्कथा-यावज्जीवम् । ठाणा० २३६ ।  
 आवकहियं-यावत्कथिकम्, प्रवृत्त्याप्रतिपत्तिनालादारभ्या  
 प्राणोपरमात् तत्र भरतैरावतभाषिमभ्यद्वा विशतितीर्थकरतीर्था  
 न्तरगतानां विदेहतीर्थान्तरगतानां च साधूनामवसेयम् ।  
 प्रज्ञा० ६३ । सकृदुद्गीत यावज्जीवमपि भावनीयम् । आव०  
 ८३९ । यावज्जीविक व्रतादिलक्षणम् । आव० ५६३ ।  
 यावज्जीविक महाव्रतभक्तपरिज्ञादिरूपम् । ठाणा० ३८० ।  
 ये कल्पसाम्प्लनन्तरमव्यवधानेन जिनकल्प प्रतिपत्यन्ते  
 ते यावत्कथिका । प्रज्ञा० ६८ ।

आवज्जणं-आवर्जनम् । ओष० १६९ ।

आवज्जय-आवर्जक, आराधक । उक्त० ३६१ ।

आवज्जीकरणं - आवर्जीकरणम्, आवर्जित - अभिमुत्ती  
 कृत मोक्षगमन प्रत्यभिमुखीकृतस्य करणं-क्रिया शुभयोग  
 व्यापार । प्रज्ञा० ६०४ । आवर्जीकरणम्-अन्तर्गोर्हृत्तिक  
 उदीरणावल्किाया कर्मप्रक्षेपव्यापाररूपम् । ठाणा० ४४२ ।

आवट्ट-आवर्तं शङ्खसक । उक्त० ६०५ । ससार ।  
 आचा० ६२ ।

आवट्टोणी - आवर्तयोनि, आवर्तोपलक्षिता योनि ।  
 उक्त० १८३ ।

आवट्टणं-आवर्तनम्, परिभ्रमणम् । सूर्य० २०६ ।

आवट्टती-आवर्त्यते, पीजते-तु खभाभवति । सूत्र० १९० ।

आवट्टितो-आवर्त । आव० ९५ ।

आवट्टो-आवर्त, आवर्तयति-प्राणिने भ्रामयतीति । सूत्र०  
 ८६ । उक्त० १८३ । जीवा० २४३ ।

आवड्ड-आवर्त-मणीना लक्षण । जीवा० १८९ ।

आवड्ड-आपतति, भवति । ओष० ९० ।

आवड्डण-अभिघात, आपतन वा । वृ० द्वि० ७७ अ ।  
 प्रस्फोटनम् । ओष० १२२ । आभिडण । ओष० २०४ ।  
 पक्खलण । नि० चू० प्र० ४९ अ । आपतन-द्वाराणै  
 शिरसो घट्टनम् । वृ० प्र० २९५ अ ।

आवड्डणपड्डणादी-आवतनपतनादय । ओष० ९० ।

आवड्डण-उत्स्राविसु पक्खलणा । नि० चू० तृ० २१ अ ।

आवड्डिऊण-आपत्य । आव० १९६ ।

आवड्डिण - अवकोष्ठानि, अधस्तादामोष्ठानि । उक्त०  
 ३६७ ।

आवड्डिओ - आपतित । आव० ५७८ । आस्फाणित ।  
 आव० १९६ । आपतितम् । उक्त० १७० । आव० ३०० ।

आवड्डिया-आपतिनी, प्राप्ती । उक्त० ५३० ।

आवण-आपण, हट्ट । भग० २३८, १३६ । प्रश्न० ८ ।  
 वीथि । दश० १७६ । ज० प्र० १०७ । अतु० १५९ ।

आपण, फयस्थानम् । प्रश्न० १२७ ।

आवणवीहि-आपणवीथि, हट्टमार्ग, रथ्याविशेष । जीवा०  
 २४६ ।

आवणवाह-आवतनानि, आपतनानि वा उपभोगार्थमागम  
 नानि । ज० प्र० १२१ ।

आवणवण-आपणपरिहारिका । वृ० तृ० २० अ ।

आवणपरिहारो-आपणपरिहारिक, जो मारियं वा जाव  
 छम्मासियं वा पायच्छित्त आवण्णो तेण सो सपच्छिती  
 असुद्धो अ विमुद्धचरणेहिं साहृहिं परिहरिज्जति दद तेण  
 अहिकारो । नि० चू० तृ० ८९ अ ।

आवणसत्ता-आपणसत्त्वा, गर्भपत्ती । उक्त० ५३ ।

आवती - प्रतिसेवनापचमभेद । भग० ९१९ । आपर -  
 द्रव्यत प्रासुकद्रव्य तुलंभ क्षेत्रतोऽथप्रतिपक्षता काल्पो  
 दुर्भिक्ष भावतो म्लानत्व । ठाणा० ४८४ ।

आवतीगंगा - गगमाहागंगासाहीनगमास्युपमालोहितगगत  
 सत्तगुणा आवतीगंगा । भग० ६७४ ।

आवत्त - आवर्त, आवर्तनम्, प्रादग्भियेन परिभ्रमणम् ।

ज० प्र० १८७ । पोटनगमाररिथितिक महाशुक्रवमानम् ।

सम० ३२ । आवर्तक, पयसा भ्रम । ज० प्र० १११ ।

चिदुरसम्भानविशेष । ज० प्र० १८३ । मणीना लक्षणनि ।

ज० प्र० ३१ । महाविदेहे विजयनाम । ज० प्र० ३४६ ।

अप्राप्तम्-अशुद्धम्, आवर्तं अशुद्धिगवर्तन-परिभ्रमणम् ।

भग० १७८ । आवर्तिका । जीवा० २४४ ।

आवत्तकूडे - आवर्तकूटम्, नष्टिनकूट तृतीयकूटनाम ।  
 ज० प्र० ३४६ ।

आवत्तगा-एकहुरविभवदुत्पद । प्रज्ञा० ४५ ।

आवत्तणपेटिया-आवर्तनपीठिका, यनेन्द्रकीर्णिका । जीवा०

२०४ । यत्रन्द्रकीर्णो निवेगन । जीवा० ३-९ । यत्रे-

न्द्रकणो मन्त्रि । ज० प्र० ८८ । अग्रद्वारम् । नि० चू०

तृ० १९४ । आवर्तनम्-मङ्गलीमकनम् । ध्य० प्र० ०३ अ ।

**आवत्ता**—भावर्ता, प्रामविशेष । आव० २०६ । आवर्त्तय  
हुलजला नदी । वृ० वृ० १६२ आ । धातवीखडे तन्नाम  
महाविदेहगतो विजय । ठाणा० ८० ।

**आवत्ते**—आवर्त्त, विजयस्य नाम । ज० प्र० ३४६ । घोष  
व्यन्तरेन्द्रलोकपाल । ठाणा० १९८ ।

**आवत्तो**—आवर्त्त, एकसुरविशेष । प्रश्न० ७ । एकसुरश्च  
तुष्पद । जीवा० ३८ । नाट्यविशेष, प्रमदप्रमरिकादा  
नैर्नतनम् । ज० प्र० ४१४ । जीवा० २४६ ।

**आवपनम्**—लोहमय शकटोपकरणम् । पिण्ड० २२ ।

**आववहुले**—अन्वहुलम्, जलबहुल, रत्नप्रभापृथग्यास्तु  
तीयकाण्ड । जीवा० ८९ ।

**आवयं**—आवर्त्त, अहोकायमित्यादि सुरभोगा सुरचरणन्यस्त  
हस्तेशार स्थापनाहर्ष, सूत्राभिधानगभे कायचेष्टाविशेष ।  
आव० ५४२ ।

**आवयद्**—अतिपतति । आचा० २६५ ।

**आवरणं**—आवरणम्, स्फुरकादि । प्रश्न० १३ । आधियते  
आकाशमनेते, भवनप्रासादनगैरादि तल्लक्षणशास्त्रम् ।  
ठाणा० ४५१ । सत्राहं । प्रश्न० ४५ । कवचादि । उत०  
१४३ । आवर्ष ३४६ । कपाटौ वृ० द्वि० १११ अं ।  
कवच । भग० १४ । आपरणे—प्रच्छादनपटे । ज० प्र०  
२३६ । कवचादि । आचा० ६० । स्फुरककण्ठकादि ।  
भग० ३१८ । आलो मयादिपदार्थवचनस्वार्थेऽपमयादिवाऽऽ  
गणवन्तीत्यावरणा, ततश्च सर्वविरतिनिषेधार्थं एवाय वर्तते

। न देसविरतिनिषेधे स्वात्वावरणशब्द । आव० ७८ । श्लोकं  
सत्राह वा । ज० प्र० ३५१ । सत्राहं । ठाणा० ४५० ।

**आवरणप्रविमक्तिः**—अदमनाव्यभेद । ज० प्र० ४१६ ।

**आवरीरसणे**—पाणिगण उष्णोष्ण । नि० वृ० प्र० १०७ आ ।

**आवरेस्ता**—आवय—अवधम्य । भग० ५७६ ।

**आवर्जनम्**—आराधना । उत० ५९१ । आवर्षण ग-धो  
दशदिना । अतु० २६ ।

**आवर्तना**—आउट्टणा, आवर्त्तन, विवर्त्तनम् । वृ० प्र० ४७ आ ।

**आपल्लगनादिका**—निवापितोवा । आचा० १०४ ।

**आपल्लण**—आवर्त्तनम्, मोचन, अपगम गच्छत्यपगतान्तर  
कारणं एति । प्रश्न० २२ ।

**आपल्लिपपट्टितो**—आपत्रिगायत्रि, श्रेणिव्यवहिरवत् ।  
जीवा० १०५ ।

**आवलिा**—आवलिा—असख्यातसमयमाना । ठाणा०

८५ । आवलिका, श्रेणि । जीवा० १०५ । असख्येयसम

यसधातोपलक्षित काल । आव० ३१ । परंपरा । आव०

८५८ । असख्येयातसमयात्मिका । भग० २११ । वृत्त,

प्रवाह । ज० प्र० १६६ । तत्र या विच्छिन्ना एवति

भवति मण्डली सा आवलिका । व्य० द्वि० २१ अ ।

असख्येयपमयममुदायिका । सूर्ये० २९२ । वरा, प्रवाह ।

ज० प्र० ३५८ ।

**आवलिाडावगो**—आवलिकास्यापक आचार्यभास्वरपदम् ।  
आव० ३०७ ।

**आवलिापविट्ट**—आवलिकाप्रविट्टम्, यत्पूर्वादिषु चतसृषु  
विट्टु श्रेण्या व्यवस्थितम् । जीवा० ३५७ ।

**आवलिावाहिरं**—आवलिकावाह्यम्, यत्पुरावलिकाऽऽ  
विद्याना प्राक्गणप्रदेशे दुसुमप्रकर इव यतस्ततो विप्रकीर्णम् ।

जीवा० ३१७ ।

**आवली**—ह्यार । वृ० प्र० ४८ अ । पुद्गलाना दीर्घकाला  
श्रेणि । सूर्ये० १३० । आवली, पङ्क्ति । ओष० ८२ ।

**आवलिा**—आवलिा । विशेषे १३५५ ।

**आवलिो**—बलीवर्द । आव० ६६५ । उत० १९२ ।

**आवसत**—आवसत्, विवसत् । आचा० ११ । आलि-  
गुरुदशितमयादिवा वासना । उत० ८० । ठाणा० ९ ।

मया गुरुदले आसुतात् । सम० २ । आवसत्—सेपमान ।  
आचा० २१३ ।

**आवसह**—आवसय, आश्रय । उत० ६२६ । दश०  
२४५ । शेषभवनप्रकार । उत० ३८५ । आवसय, परि  
मानकस्यानम् । प्रश्न० १२६ । औप० ६१ । परिभाषक  
प्रय १ प्रश्न० ८१ । उट्टकाररं गुरुम् । सूर्ये० ३१५ ।

**आवसहिय**—आवसहिय, तीर्थकविशेष । सप्त० ४२३ ।

**आवसिया**—आवसियरी, अवस्यकस्ययोगनिर्णया । आव०  
२५९ ।

**आवस्यम्**—आवस्यकम्, अवस्यकस्य सयमव्यापारनि  
व्ययम् । आव० ११९ । वाविसादिशुभार्थम् । ओष०  
१४७ ।

**आवस्यम्**—आवस्यकम्, समन्तादावस्यककारकम् । अतु०  
११ । अवस्य कस्य आवस्यकं—वायिकाद्युभयस्यम् ।  
ओष० १४० । वाविसोवावसिदि । आप० ८७ । प्रीकमम् ।



ओष० १३, ५८। सामायिकादि पृष्ठव्ययनकलाप । अनु० ७। आवश्यकम्, ध्रमणादिभिरवश्य क्रियते इति, ज्ञानादिगुणा मोक्षो वा आ-समन्ताद् वश्य क्रियतेऽनेन इति, वा समन्ताद्द्रव्या इन्द्रियवपायादिभावदानो येषां ते तथा, तैरेव क्रियते यत् तत् । अनु० ३। आवसर्कं वा समप्र गुणप्रामाणासकं वा । अनु० ३१। दोषलागलक्षणमवतता दिकम् । आव० ५४५। गुणानां आ-समन्ताद्द्रव्यमात्मान करोति । अनु० १०। ध्रमणादिभिरहोराप्रमच्येऽवश्यकरणात् । विरो० ४१५। नियमत करणीयम् । आव० ५९४। अवश्यं कर्तव्यम्, सामायिकादिरूपम्, आ-समन्ताज्ज्ञानादिगुणै शून्य जीव वासयति, तैर्युक्त करोतीत्यावासक-सामायिकादिरूपम् । विरो० २। अद्रम् । आव० ४२६। मूल गुणोत्तरगुणानुष्ठानलक्षण । आव० २६७। आवसर्गादिकम् । आव० ५११। कायिका-युत्सर्गलक्षणम् । आव० १५२। सामायिकादिपृष्ठविधम् । ठाणा० ५१। अवश्य कर्तव्य भावश्यक, अथवा गुणानामावश्यमात्मान करोतीत्यावश्यक, यथा अन्त करोतीत्यन्तक, अथवा 'वस निवास' इति गुण शून्यमात्मानमावासयति गुणैरिस्त्वावासकम् । आव० ५१।

**आवस्यस्य** - अपाश्रय - आपाद । विरो ४१५। सस्या कायिधौलक्षणम् । वृ० द्वि० २६१ अ।

**आवस्यसाह** - आवश्यकानि, शरीरचितादेवात्तर्कनादीनि । व्य० प्र० १६९ अ।

**आवसिंसा** - आवश्यकी, वचिद्वहर्हिगमनकाये समुत्पन्ने षड्रयगन्ताव्यमितिभणनम् । वृ० प्र० २२२ अ। ज्ञाना वा अग्नयेनोपाध्याद् बहिरवश्यगमने समुपस्थितेऽवश्य-कर्तव्यमिदमतो गच्छअग्न्यहमित्येकं गुहं प्रति निवेदना । अनु० १०३।

**आवसिंसा** - चतुर्णां सामाचाठि । ठाणा० ४९९।

**आवसिंसया** - आवश्यकी, अवश्यकर्तव्यैधरणकरणयोगेनि र्गता । आव० ५४७। वृ० द्वि० २२४ अ।

**आघहो** - दारकपक्षिणामावह । व्य० द्वि० ३४२ आ।

**आघाप** - आपात, अन्यताऽप्यन्त आगमनात्मक । उत० ८६।

**आघाश्रो** - आपाक । विरो० ८७३। आपाकंतीर्ण-नूतना । विरो० ६३०।

**आघागसीसाओ** - आपाकशिरस । -सी० १७७।

**भावागो** - आपाक, प्राप् । भा० १०१।

**भावाडा** - आपाना इति नाम्ना किराता । ज० प्र० २३०।

**भावातभइते** - प्रथममीले दर्शनापापादिना भद्रकारी । ठाणा० १९७।

**भावाय** - आपात, तत्प्रथमतया संगर्ग । मग० ३२६।

**आभिमुत्पयेन** ममनाय । आव० ३२६। अभ्यागम । ओष० ११९।

**भावारि** - लघ्वापणम्, आर्यदम् । आव० ६७५।

**भावायकहा** - आवापकथा, इयद्द्रव्या शाकपृतादिशाश्रीप गुचा इत्यादि प्रदानं द्वेषणं वा, भक्कथाया प्रथममेद । आव० ५८१। शाकपृताहीन्येनावन्ति तरयां रगररातामुप गुज्यन्त इत्येवंपा कथा आवापकथा । ठाणा० २०९।

**भावास्त** - भावास, देवभासस्थानम् । ज० प्र० ३९७।

**आवश्यकम्** - प्रतिवमणम् । आव० ७८४। ओष० २००। प्रज्ञा० ६०६। निवाम । जीवा० १८०।

**आवासग** - भावासकम्, समन्ताद्वासयति गुणैरिति । अनु० ११। गुणशून्यमात्मानमावासयति गुणैरिति, गुणशान्तिव्य मात्मेन करोतीति भावार्थ । आव० ५१। प्राभातिकर्षेद्य लिकप्रतिवमणलक्षणे । व्य० द्वि० १८२ अ।

**आवासिस्व** - आवागित, स्थित । दस० १०७।

**आवासंति** - आवासयन्ति, वसन्ति । आव० ६५४।

**आवाह** - शरीरवज्जा पीडा । नि० चू० प्र० ३३५ अ।

**आवाह** - आवाह, निवाहात्पूर्वं साम्बूलदानोमव । ज० प्र० १२३। जीवा० २८१।

**आवाहर्ण** - आवाहनम्, यमनम् । प्रथ० २०।

**आवाहिओ** - आहृत । आव० ३६९, ३९३।

**आवाहो** - आवाह, अभिनवपरिणतस्य वधूवरम्यानयनम् । प्रथ० १३९। सुह निवस । नि० चू० द्वि० १२ आ। वध्वा वरपुहानयनम् । वृ० तृ० ४३ आ। आह्वयन्ते स्वपनास्ता म्बूलदानाय यत् स । जीवा० २८१।

**आविघ** - परिषेहि । आव० ९९।

**आवि** - आवि, जनमना प्रकाशयेद्य इतिवाचन् । उत० ५४।

**आविह** - अनुममयम्-प्रतिभणम् । मग० ६२५।

**आविहत्ता** - अवनम्य दद्यात् । व्य० द्वि०

**आविष्** - आपिब । उ० ३३९।

**आविद्धं**-परिहितम् । जं० प्र० १९०, २७८ । आलगितम् ।  
प्रश्ना० १०१ । व्याप्तम् । उक्त० ५४८ । समन्तासादितः ।  
उक्त० ४९५ । शिरस्यारोक्त्वेन आविद्धः । भग० १९३ ।

**आविद्धामो**-परिदम्भः । आच० ६५ ।

**आविर्भावः**-प्रकाशः, प्रकटत्वम् । विज्ञे० १०६२ ।

**आविलं**-आविलम्, सकालध्यामाकुलं वा । प्रश्न० ५३ ।  
अविमलमस्वच्छं प्रकृत्या । जीवा० ३०३ ।

**आविष्टलिंगं** । नदी ११ ।

**आविशामि**-आविशामि, निषेधे । विज्ञे० १२४५ ।

**आवी**-गंगामामी नदीविशेषः । ठाणा० ४७७ ।

**आवीर्चमरणे**-आ-समन्ताद्दीचय इव वीचयः-आयुर्देलिक-  
विच्युतिलक्षणाऽवस्था यस्मिन्स्तदानीचि, अथवा वीचिः-विच्छे-  
दस्तद्भावाद्दीचि, वीर्षत्वं तु प्राकृतवात्तदेवभूतं मरण-  
मावीचिमरणं-प्रतिक्षणमायुर्दिव्यविचक्षणलक्षणम् । सम० ३३ ।  
**आवीचिमरणं**-आशीचिमरणं, सम्यग्दशमरणेदे प्रथमः ।  
उक्त० २३० ।

**आवीचियमरणं**-आ-समन्ताद्दीचय-प्रतिसमयमनुभूय-  
मानानुभोऽनसपराखुर्बलिक्रेन्दयात्पूर्वपूर्वसुन्दैकिकविच्युतिलक्षणा-  
ऽवस्था यस्मिन् तदावीचिकं, अथवाऽवियसाना वीचिः-  
विच्छेदो यत्र तदवीचिकं अवीचिकमेवावीचिकं तत्र तन्मरणं  
चेत्यावीचिकमरणम् । भग० ६२४ ।

**आवीलए**-आङ् ईपदर्भे, ईपत्पीडयेद्-अविकृष्टेन तपसा शरी-

रकमापीडयेत्, एतच्च प्रथमप्रव्रज्याऽनसरे । आच० १९२ ।

**आवीलाविज्ञा**-आपीडनम्, सहृदीपदा पीडनम् । दश०  
१५३ ।

**आवेडे**-आपातुम्, भोक्तुम् । दश० २६ ।

**आवेडिओ**-एगदुतिभिर्सादितेषु, अहवा एगपतीए समता-  
टिएषु, आङ् मर्यादयाऽऽवेष्टितः । नि० चू० नृ० ४६ आ ।

**आवेडियं**-आवेष्टितम्, सहृदावेष्टितम् । ठाणा० ५०२ ।

**आवेडियपरिवेष्टिप**-आवेष्टितपरिवेष्टितः, गाढतरं सवे-  
ष्टितः । प्रश्ना० ३०६ ।

**आवेयणं**-आवेदयति, निवेदयति कालमित्यर्थं । ओष०  
२०४ ।

**आवेलिज्ज**-आपीडयेत्, गाढमवगाढयेत् । उक्त० ४७५ ।

**आवेसणं**-लोगसमवायक्षणं । नि० चू० द्वि० ६९ आ ।

आ-समन्ताद्विशन्ति यत्र नदावेयनम्-शून्यग्रहम् । आच०  
२७७ ।

**आशातनम्**-आ-समन्तात् शातयति मुक्तिमार्गाद् भ्रंशयति ।  
अनन्तानुभयभिरुपयोगवेदनम् । विज्ञे० २८३ ।

**आशाश्वराः**-दिग्गम्यराः । प्रश्ना० २० ।

**शाश्वतः** । ओष० ३२ ।

**आश्रयं गच्छामि**-नक्ति करोमीत्यर्थः । आच० ५७१ ।

**आश्रित्य**-प्रतीत्यि । जीवा० ५६ । उक्त० ६०२ ।

**आसं**-अदम्बम्, मनः । प्रश्ना० ६०० । आशा-भोगार्काशा ।  
आच० १२७ ।

**आसंकलनम्**-चयनम् । ठाणा० १७९ ।

**आसंतर**-अदन्तरः, वेगतरः, अजात्या षोडकः । दश०  
१९४ ।

**आसंदओ**-आसन्दकः । आच० ५५८ ।

**आसंदग**-कट्टमओ । वृ० द्वि० २११अ । कट्टमओ अङ्ग-  
सिरो । नि० चू० प्र० २०८ अ । पत्यङ्कः । आच० ३५८ ।

**आसंदयं**-आस्यन्दकम् । आच० ६९३ ।

**आसंदी**-मथिका । फिड० १०९ । उपवेदान्तयोश्चा  
मथिका । सूत्र० ११८ दश० २०४ । उपवेदान्तार्थम-  
नम् । दश० ११७ । आसन्विशेषः । सूत्र० १८२ । मयकः ।  
सूत्र० २७८ ।

**आसंसह्यं**-असंस्रयति, निःसंस्रयं मनःसंश्रितं वा । सूत्र०  
३१० ।

**आसंसपओगो**-निदानकरण । नि० चू० प्र० ३५ अ ।

**आसंसत्**-आसोत्ता-अप्राप्तप्रापयामित्वायः । आच० ११५ ।

**आस**-अधः, घात्कीकारिदेशोत्पन्नः, जाल्यः । दश० १९५ ।  
क्षेपः । आच० ३६४ ।

**आसह**-आस्ते । आच० ३९६ ।

**आसहत्तु**-आगियुम्, उपवेष्टुम् । दश० २०४ ।

**आसएण**-आश्रयतीति आश्रयः-धूमपलकादिः । अङ्०  
२१४ ।

**आसकण्णो**-अशुक्लः, समदशान्तराद्दीपः । जीवा० १४४ ।

**आसकण्णदीवे**-अन्तराद्दीपनामः । ठाणा० २२६ ।

**आसकण्ठा**-अशुक्लः, सप्तदशान्तराद्दीपः । प्रश्ना० ५० ।

**आसकरुणं**-आसमिकरावर्णं । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।

**आसकिसोरो**-अधकिशोरः । आच० ३७०, २६१ ।

आसफरंधसंज्ञिते-अधरन्धसंज्ञितम्, अधिनीनक्षत्रम्  
स्थान । सूर्य० १३० ।

आसफरंधसंज्ञितो-अधरन्धसंज्ञित, उभयोरपि पार्श्वयो  
पत्रनवतियोजनसहस्रपर्यन्तेऽनस्कन्धस्येतोस्ततया षोडश-  
योजनसहस्रप्रमाणेषुसवयो शिरायाभावात् । जीमा० ३२५ ।  
आससं-आस्यकम्, सुप्तम् । जीवा० ११९ । आस्यके,  
पिठारदिमुपे । टाणा० १४८ ।

आसग्गीव-अधमीव, त्रिष्टुष्टामुद्वेवशु । आव० १५९ ।  
महामाण्डलिकराजा आव० १७४ ।

आसचङ्गार-अश्वमगृह । आव० ३७० ।

आसज्ज-आसाय-अगीकृत्य । आचा० १५९ ।

आसण-आसनं, सिंहासनानि । प्रश्न० १९१ । आधारलक्ष  
णानि धर्मास्त्रियायीनी लोकाकाशानी, स्वस्वरूपाणि वा ।  
आव० ५९९ । पीठपत्रकादिकम् । आव० ६५४ । स्थानम् ।  
उत्त० १०९ । पीठकादि । आव० ७९५ । दश० २८१ ।  
अपवादग्रहीतं पीठकादि । दश० २३१ । दश० २२८ ।  
वतत्यादि । सूत्र० ६६ । कट्टमीडगादि । दश० ४० । ३२६ ।  
विग्रम् । प्रश्न० १३८ । प्रश्न० ८ । सिंहासनानि ।  
जीवा० ४०६ । आगन्दकादिविग्रहं, आस्यते-स्थीयतेऽ  
स्मिन्निति वाऽऽपन-क्षण्या । आचा० १३४ । उपवेश  
नम् । उत्त० ६०९ । अवस्थानम् । उत्त० ६२६ ।  
आसनं गोशेहिक्रोस्तुट्टुकामन्वीरासनानि । आचा० ३१७ ।  
पादसीठपुञ्जादि । उत्त० ४२३ । सिंहासनानि । उत्त०  
२६२ । पीठकादि । सम० ३८ । शकासीना सिंहासनम् ।  
टाणा० ११७ । आसन्दकादि । दश० २१८ । आचा० ६० ।  
भग० २३८ । आसग-आसनप्रदानं, सुवर्षीनां समागतानां  
पीठकागुपनयनम् । व्य० प्र० २३५ । आ ।

आसणभणुष्यदार्णं आसनानुदानम्, स्थानात्स्थानं कथा  
रणम् । दश० ३० ।

आसणभभिग्गहो-आननाभिग्रहं, तिष्ठत एवागननयन  
पूर्वकमुपविशतोऽप्रेतिभणनमिति । सम० ९५ । टाणा० ४०८ ।  
आसणगाणि पताणि पाशङ्करशरंरालोष्टागुपचितानि का  
ष्ठानि च हुर्दितानि । आचा० ३१० ।

आसणस्थ-आसनस्थं, निपकागतम् । आव० ५४१ ।

आसणदार्णं - आसनदानम्, पीठकागुपनयनम् । दश०  
२४१ । पीठा ददानम् । उत्त० ६०९ ।

आसणमणुष्यदार्णं-आगनानुदानम्, आगनस्य स्थाना  
न्तरसगारणम् । टाणा० ४०८ । सम० ९५ ।

आसणाणुष्यदार्णं - आगनानुदानं, गौर्ग्यमात्रियाग  
नस्य रसानान्तरसगारणम् । भग० ६३७ ।

आसणाभिग्गह-आगनाभिग्रहं - तिष्ठत एव गौर्ग्यस्यागना-  
नयनपूर्वकमुपविशतेनिभणनम् । भग० ६३१ । यत्र यत्रो  
पवेश्युमिच्छति तत्र तत्रागननयनम् । औप० ४२ । तिष्ठत  
एवादेरेणानयनपूर्वकमुपविशताऽत्रनिभणनम् । दश० ३० ।  
आसणैय-आशयानि । जे० प्र० ५३४ ।

आसतरगा-वेग । नि० चू० प्र० १४४ । आ ।

आसत्त-आगक, भूमि तप्त । जे० प्र० ७६ । आ-अवाह  
अधोभूमौ तप्त आगक, भूमि तप्त । प्रज्ञ० ८६ ।  
जीवा० १६० । जीवा० २७७ । भूमि गम्यद् । औप० ५१ ।

आसत्तमस्तुदामा-आगममान्यदामा । आव० १८४ ।

आसत्ती-आसति, पनाशारागत्र, परिग्रहस्यैकोनत्रिंशत्कं  
नाम । प्रश्न० ९३ ।

आसत्थ-नीपलक । भग० ८०३ । अयुयुमानैरदाग ।  
टाणा० ४८० । मनागाश्रमित । आप० ५२ । अननजित  
नेत्यश्रवितोय । सम० १५२ । आश्रय । आ० ३०० ।

आसन्दकम्-आगनम् । दश० २१८ । आचा० १३४ ।  
आसन्नं-समुत्तीनम् । निर० ८ ।

आसपुराओ-धातरीन्दे रिदिश्रियेय्य राजधानी । टाणा०  
८० ।

आसम-आश्रम, तापगादिस्थानम् । भग० ३६ । अनु०  
१४२ । सूत्र० ३०९ । तीर्थस्थानम् । आचा० ३२९ ।

आगा० २९४ । टाणा० ८६ । तापमात्रसंयोगलभित आ  
श्रय । आचा० २८५ । प्रथमतस्तापगादिभिराश्रयित पक्षा

दपरोऽपि लोचं तत्र गत्वा वसति । बु० प्र० १८१ । आ ।  
तापगात्रगादि, आ-गमन्तान् श्राम्यन्ति-तप कुर्वन्त्य  
स्मिन्निति । उत्त० ६०० । मत्तमहृगन्त्य । दश० २७९ ।

आश्रम, तापगादिनिवास । प्रश्न० ७२ । तापमात्रसंयो  
पलभित आश्रय । प्रज्ञा० ४८ । जीवा० ४०१ । जीवा०

२७९ । तापगात्रावाम । औप० ७४ ।

आसमडे-अश्रयत्त सनाश्रये । जीमा० १०६ ।

आसमपय-आश्रमपदम्, पार्श्वनाथरीक्षास्थानम् । आव०  
१३७ । आ-गमन्तान् श्राम्यन्ति-तप कुर्वन्त्यस्मिन्निति

धमः-तापतावसथादिस्तदुपसहितं परं-स्थानम् । उक्तं  
६०५ ।

**आसममारी**-मारीविशेषः । भग० १९० ।

**आसमरुवं**-आधमरुपम् । भग० १९३ ।

**आसमित्त**-अधमित्रः, क्रीडिन्मत्स्यः । विशेषे १६० ।  
आव० ३१६ । उक्तं १६३ । चतुर्थनिहवन्नाम । उक्तं  
४१० । यस्मात्सामुच्छेदा उत्पन्नाः । आव० ३११ ।

**आसमुहद्वीवे**-अंतरद्वीपमेदः । ठाणा० २२६ ।

**आसमुहा**-अधमुसनामा प्रयोदशान्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।  
जीवा० १४४ ।

**आसय**-आशयः, निदानम् । आव० ६१० ।

**आसयद्**-आस्वाद्यते-अभिलषति, आश्रयति वा । संम०  
५५ ।

**आसरयणे**-अशरत्नम् । ठाणा० ३९८ ।

**आसरह**-अश्ववहनीयो रथः । भग० ३२३ । अश्वरथः-निगु-  
कृतोभयपार्श्वद्वारमो रथ इत्यर्थः । जं० प्र० १९८ ।

**आसल**-आसलं, आस्वायम् । जीवा० ३२१ । जीवा०  
३०० । आस्वाद्यनीयः । जीवा० ३५१ ।

**आसव**-आसवः, मद्यम् । उक्तं ६१५ । पनादिवासकदध्य-  
मेदादनेक्यकरः । जीवा० २६५ । पुष्पप्रसवमद्यम् । उक्तं  
६५४ । आश्रवाः-उपादानहेतवो हिंसादयः । उक्तं ५९२ ।  
चन्द्रहासादिकम् । जीवा० १९८ । चन्द्रहासादिपरमासवम् ।  
जं० प्र० ४२ । नि० सू० प्र० ३५ । आश्रव-सूत्र-  
रत्नम् । भग० ८३ । आश्रवन्ति-प्रविशन्ति कस्मिंश्चित्-  
नीत्याश्रकः-कर्मवन्धहेतुरितिनामः, स, चेन्द्रिकायाःप्रविकि-  
यायोगरूपः । ठाणा० १८ । आश्रवं । प्रज्ञा० ५६ ।

**आसवा**-आश्रवाः-कर्मवन्धस्थानानि । आचा० १८१ ।  
पापोपादानस्थानानि । आचा० ४१३ । बन्धकाः ।  
आचा० १८२ । पनादिनिशेषेण स्मृतिरिक्त आसवः । प्रज्ञा०  
३६४ । आश्रवः-आ-समन्तात् शृणोति-शुश्रूषचनमाक्री-  
चनीति । उक्तं ४९ । कर्मवन्धहेतुमिच्छात्वादिः । आव०  
५९८ । आश्रवः-इन्द्रियजयादिरथः परमाश्रिसलः काय-  
वाहनोभ्यावारः । दृश० २०५ । जलप्रवेत्तस्यान्तम् । ध्य०  
५० १६० । पापोपादानहेतुरारम्भादिः । जीवा० १२८ ।  
श्रमाश्रमकर्मादानहेतुः । ठाणा० ४४६ ।

**आसवश्रो**-आधावकः, बन्धकः । विशेषे १०९३ ।

**आसवदार**-आधवदारम्, कर्मवन्धदारम् । आव० ८५१ ।  
आश्रवणं-जीवतदग्रे कर्मजलस्य संगलनमाश्रवः-कर्मनि-  
बन्धनमित्यर्थः, तस्य द्वाराणीव द्वाराणि-उपाया आधवदा-  
राणीति । ठाणा० ३१६ ।

**आसवपीतो**-पीतासवः । उक्तं २६३ ।

**आसवबुच्छेओ**-आधवव्यवच्छेदः-कर्मवन्धदारस्थपनेन  
संवरणेत्यर्थः । आव० ८५१ ।

**आसवार**-अश्ववारः, अश्वारुहपुरः । भग० ४८१ ।

**आसवसाय वसर्ण**-आसवसाय-विनाशाय व्यसर्णम्,  
तृतीयपार्श्वद्वारस्य पर्व्वित्वात्तिसर्णं नाम । प्रश्न० ४३ ।

**आसवस्यभोगे**-आशंसा-इच्छा तस्याः प्रयोगो-ध्यापारण  
करणे आशंसव वा प्रयोगो-व्यापारः आशंसाप्रयोगः । ठाणा०  
५११ ।

**आससा**-आशंसा । विशेषे १००८ । आव० ३२२ । अश्र-  
प्तप्रपंनम् । ठाणा० १४५ ।

**आससाप**-आशंसया, यदखन्तप्रवर्षणं भावि तदा स्थलेऽु  
फलावाप्तिरिच्छान्यथा तदा निम्नेषित्वेवमभिनापातिकया ।  
उक्तं ३६१ ।

**आससेण**-अश्रसेनः, पार्श्वजिगृप्ता । भग० १५२ । पंच-  
मचक्रिगृप्ता । सम० १५१ ।

**आसा**-अश्राः । आव० २६१ । आशा-इच्छाविशेषः ।  
प्रश्न० ९४ । औप० ४० ।

**आसाइजा**-आसात्तमे-हीदकेन, बाधयेत् । आचा० २५० ।

**आसापज्ञा**-आसादयेत्-परिमुञ्चति । आचा० ३९८ ।

**आसापमाणे**-आसादयन्, ईषवत्सादयन् । भग० १६३ ।  
आसादयेत्-संस्तुयेत् । आचा० ३८० ।

**आसाढ**-आपाढः, निक्षपनाम । विशेषे ६३४ । यस्मात्स्यजं  
उत्पन्नाः । आव० ३११ । तृतीयो निहवन् । ठाणा० ४१० ।

**आसाढग**-तृणमेदः । भग० ८०३ ।

**आसाढवकुलं**-आपाढवकुलं, आपाढकुलवधम् । आव०  
**आसाढभूर्ध्वे**-आपाढभृति-देशमापातेपध्यादिविपर्ययकणै  
दृष्टतिः । सप्त० ३२९ । दर्शनवतीपदभावनः । (सर०) ।  
भ्य० प्र० १९६ । अ ।

**आसुरत्तं**-आसुरत्वम्, श्लोषभावम् । दश० २३१ ।  
**आसुरत्तभाषणा**-आसुरत्वभाषणा । उक्त० ७०७ ।  
**आसुरत्तो**-कृद् । आच० ३८९ ।  
**आसुरिनामा**-कविलशिष्यः । भाव० १७१ ।  
**आसुरिपत्तं** । नि० चू० दि० ६० अ । -  
**आसुरियं**-असुरभावम् । प्रथ० १२१ । अविद्यमानसुर्याम् ।  
 उक्त० २७६ । अमुद्राणामियमासुरीया । उक्त० २७६ ।  
**आसुरी** - असुरा-भवनपवित्रविशेषास्तेषामियं आसुरी ।  
 वृ० प्र० २१२ आ ।  
**आसुरत्ते**-आसुरत्तः, आशु-शीघ्रं हृत्तः-कोपोदयादिमूढः  
 स्फुरितकोपविह्वो वा । भग० ३२२ । आशु-शीघ्रं हृत्तः-  
 श्लोकेन विमोहितो यः सः । आसुरोक्तः-आसुरं वा-असुर-  
 तत्त्वं कोपेन दारुणत्वात्कृत्-भणितं यस्य सः । विष्णु० ५३ ।  
 आसुरत्तः-शीघ्रं कोपविमूढवृद्धिः, स्फुरितकोपविह्वो वा ।  
 भग० १६७ । कृद् । आच० ६५, १५२, ७११ । आशु-  
 शीघ्रं हृत्तः-श्लोकेन विमोहितो यः स आशुहृत्तः, आसुरं वा-  
 असुरत्तत्त्वं कोपेन दारुणत्वात् उक्तं-भणितं यस्य स आसु-  
 रोक्तः । निर० ८ ।  
**आसुरे काए** - असुराणामयमासुरत्वम् - असुरसम्बन्धिनं,  
 चीयत इति वायस्त्वं, त्रिकायमित्यर्थः । उक्त० १८२ । अह-  
 रसम्बन्धिनो वाये असुरनिकाये इत्यर्थः । उक्त० २९६ ।  
**आसुर्यि**-आसुरिनिः, इत्यावा । सूत्र० १८० । केन घृतपाना-  
 दिना आहारविशेषेण रसायनक्रिया वा अयतः सन्, आ-  
 समन्ताच्छूनीभवति-चलवानुपजायते तत् । सूत्र० १८० ।  
**आसुर्यि**-आशुनितम्, ईपरस्थलीकृतम् । प्रथ० ४९ ।  
**आसुर्य**-आसुर्यम्, औपचाचितकम् । पिण्ड० १२० ।  
**आसेवणसिषखा** - आसेवनसिषा, श्रयुदेवणादिक्रियोप-  
 देसः । विज्ञे० ९ । उक्त० ५४५ । शिआद्वितीयभेदः ।  
 नदी २१० । सामाचारीद्विषयम् । वृ० प्र० ६४ अ । प्रत्यु-  
 पेक्षणादिक्रियाहोऽऽवायः । आच० ८३३ ।  
**आसेविद्यं**-स्तोकं आस्वादितं, अनास्वादितं वा । आच०  
 ३२५ ।  
**आसे**-जात्या आशुगमनशीलः अश्वः । जीवा० २८२ ।  
 मनः । प्रज्ञा० ८८ । य एकस्मिन् द्विप्राचीनपार्त् वक्ति  
 यथा अस्नतीत्यश्वः, आशु भावति न च प्राप्नोति । वृ०  
 प्र० ३४ अ । चतुष्पदविशेषः । प्रज्ञा० ४५ ।

**आसोकेता**-मध्यमप्रामर्ष्यमी मूर्च्छना । ठाणा० ३९३ ।  
**आसोद्वे**-अस्वत्यः । आच० ३४८ ।  
**आसोद्वे**-अस्वत्यः, बहुवीजवृक्षविशेषः । प्रज्ञा० ३२ ।  
**आसोद्वे**-अस्वत्यः । आच० ३४८ ।  
**आस्तिक्यम्**-सम्पत्काम्य पञ्चमलक्षणम् । आच० ५९१ ।  
**आस्थानमण्डपः** - उपस्थानगृहम् । भग० २०० । नदी  
 ६९ ।  
**आस्फोटनम्**-सङ्घटीपद्वा स्फोटनम् । दश० १५३ ।  
**आस्या**-यत्रास्यते यथासुखेन स्वाध्यायपूर्वकम् । औप० ६९ ।  
**आस्रपः**-मूत्रः । नं० प्र० ४९९ ।  
**आहंसु**-आहुः, उक्तवन्तः । भग० १८ । आख्यातवान् ।  
 प्रथ० २६ ।  
**आहृच्च** - आहृत्, कदाचिद् । भग० ३०५, २२ । उक्त०  
 १८८, ४८ । प्रज्ञा० ३३३ । वृ० वृ० ११४ आ । कदा-  
 चिद्विद् । आच० ५३० । सहा । नि० चू० दि० १२० अ ।  
 कदाचिद् साम्प्रतमित्यर्थः । भग० ४१ । उपेक्ष स्वतः एव,  
 अल्पं कदाचिद्वा । आच० ५५ । द्विक्रिया । आच० २७२ ।  
 उपेक्ष । आच० ३६२ । सहा । आच० ३२२, ३५५ ।  
 कदाचिद् अनन्यगत्या । वृ० प्र० ८ आ । आहृत्वा-आह-  
 ननं प्रहारः । भग० ६७३ ।  
**आहृच्च गंधा**-आहृतप्रण्या-अयुक्तादव्या । आच० २२२ ।  
**आहृच्च**-आहृत्, उपेक्ष । सूत्र० ३०० । छहीका । आच०  
 ३८७, ३४५ ।  
**आहृच्चो**-आहृत्तरः ( उपाधिः ) । आच० ३४१ ।  
**आहृच्च** - आहृतम्, इत्प्रामादेः साधर्म्यमानीतम् । प्रथ०  
 १५४ । साधर्म्यमसामानादि । दश० २०३ ।  
**आहृच्च**-आहृत्, समीकरोति । आच० ३८५ ।  
**आहृच्च**-सूत्रकृताये प्रयोदशाध्ययनम् । सम० ४२ ।  
**आहृच्च**-वशीकरणशीलः । आच० ६६२ ।  
**आहृच्च**-वधयन्ति । नि० चू० प्र० २७७ अ ।  
**आहृच्च** - आहृत्, लक्षयया लिखितम् । नं० प्र० २०२ ।  
 आख्यातकप्रतिबद्धं यथाऽयं तेन कुक् तद्गीतम् । ठाणा०  
 ४२१ । आहृत्, आख्यातकप्रतिबद्धम् । सूर्ये० २६७ । जीवा०  
 १६२ । आच० २९८ । आख्यातकप्रतिबद्धं, आहृच्च  
 वा । औप० ७४ ।  
**आहृच्च**-आख्यातकप्रतिबद्धानि । राज० १६ ।

**आहारणं**—आ-अभिविधिना हियते—प्रतीती नीयते अप्रतीती उपोऽग्नेनेति । ठाणा० २५४ । साध्यताधानान्वयव्यतिरेक प्रदर्शनं दृग्गन्तो वा । आच० ६२ ।

**आहारणतद्देशे**—आहारणतद्देश, आहारणार्थस्य द्वेषस्तद्देश सासाधुपचारादाहारणं चेति प्राहृतत्वादाहारणशब्दस्य पूर्वनिपाते आहारणतद्देश इति यत्र दृग्गन्तार्थदेशेनैव दार्ष्टान्तिकार्थस्योपनयनम् क्रियते तत् । ठाणा० २५४ ।

**आहारणतद्देशे**—आहारणतद्देश, आहारणस्य सम्बन्धी साक्षात्प्रसन्नसम्पत्तौ वा दोषस्तद्देश सा चासी धर्म्म धर्म्मिण उपचारादाहारणं चेति आहारणस्य दोषो यस्मिन्स्तथा यत्साध्यविकृत्ववादिदोषदुष्ट तद्देशादहारणं । ठाणा० २५४ ।

**आहारणा**—घोरयति घोरणं करोति । ओष० ५८ । ज्ञानविशेष । ठाणा० २५३ । उदाहारणम् । दश० ३५ ।

**आहारे**—आहारयेत्—व्यवस्थापयेत् । आच० २९२ ।  
**आहृद्वज्जो**—आयवैगी आयवैगामिनानां सद्योऽनर्थकारिणी विद्या । सूत्र० ३१९ ।

**आहा**—आधा । भग० १०२ । साधूनां मनसाधानम् साधुनाधिष्ठ । प्रश्न० १२७ । आपानम्, साधुनिमित्तं चेतय प्रणिधानम् । पिण्ड० ३५ । अधस्तात् । नि० चू० प्र० २९४ आ । आधीयतेऽप्यामिति । पिण्ड० ३६ ।

**आहाकम्म**—आधाकम्म, आधाय—निमित्तत्वेनाधिस्य पूर्वोक्तमप्रकारमपि कर्म च्यते, शब्दस्पर्शरसरूपगन्धादिक । कर्मनिमित्तभूता मनोज्ञेतरसन्दादय एवाधाकम्मं । आच० १८ । आधान आधाकरणं तदुप-उचितं कर्म । यथाकर्म वा तदाद्यं लानुरूपचेष्टितं वा । उक्त० १८२ । साधुप्रणिधानेन यत्चेतनमचेतनं क्रियते अचेतनं वा पच्यते चैतनं वा यदादिकं च्युयते वा ब्रह्मादिकं तदाधाकर्म । भग० १०२ । प्रथम उद्गमदोष । आधानं आधाया तथा आधया कर्म-याकादिक्रिया, आधाय—साधु चेतसि प्रणिधाय यत् क्रियते भक्तादिक्रिया । पिण्ड० ३४ । चतुर्थशबलदोष । प्रश्न० १८४ । सम० ३९ ।

**आहाकम्मिय**—आधाकर्म, दोषविशेष । आच० ३२९ ।

**आहाकम्मिहि**—आधाकर्मणि, आधान-आधाकरणं आत्मनेतिगम्यते, तदुपलक्षितानि कर्मायाधाकर्माणि, तै-स्वस्तकर्मणि । उक्त० २४७ ।

**आहाण** आधानम्, विधानम् । विशेषे ८४० ।

**आहार**—आहार, भोजनम्, जीवनम् । प्रश्न० १०६ । मनसा तथाविधं पुद्गललोपादानस्य । भग० ८६ । प्रयोद्देशात्तकैपचमोद्देशक । भग० ५९६ । अर्थापिगतितममाहाराप्रतिपादकवादाहार । प्रज्ञा० ६ ।

**आहारस्य**—आहारकम्, चतुर्दशपूर्विदा कर्माद्यन्तौ योग्यत्वेनाहियत इति । प्रज्ञा० २६८ । तथाविधकार्यापत्तौ चतुर्दशपूर्विदा योग्यत्वेनाहियत इति । ठाणा० ३९५ । चतुर्दशपूर्विदा तीर्थस्पर्शातिदर्शनादिद्वयतथाविधप्रयोक्तृत्वोत्पत्तौ सत्यां विशिष्टलक्षिवशादाहियते—निर्गम्यते इति । जीव० १४ । प्रज्ञा० ४०९ । तथाविधप्रयोक्तृत्वे चतुर्दशपूर्विदा यदाहियते एष्यते तत् । आहियते—एष्यते भेदत्रिनसमीपे सूक्ष्मजीवाद्य पदार्थां अग्नेनेति वा । अनु० १०६ । आहारयति—आहारं यद्वातीति । नदी ९० ।

**आहारस्यणा**—आहारिण्या । दश० १८ ।

**आहारस्य**—आहारकम्, कृतीयं शरीरम् । प्रज्ञा० ४६९ ।

**आहारस्यमोयमणाम**—आहारकाज्ञोपात्रनाम, उपात्रनाम । प्रज्ञा० ४७० ।

**आहारस्य**—आहारकत्वं, आहारकशरीरकरणं । ठाणा० ३३० ।

**आहारस्यबंधण**—आहारकबन्धनम्, बन्धननाम । प्रज्ञा० ४७० ।

**आहारस्यमो**—आहारस्य, प्रज्ञापनाया अर्थापिगतितमाहारपदोक्तमूष्यदति । भग० १०९ ।

**आहारस्यसाधयणाम**—आहारकमहातमाम, यदुद्भवत्वादाहारकशरीररचनास्तुकारिसंस्थातरुणा जायते तदाहारकमहातनाम । प्रज्ञा० ४७० ।

**आहारस्यसमुद्घात**—आहारकसमुद्घात, आहारे प्राग्भागे समुद्घात । जया० १७ ।

**आहारट्ट**—आहारार्थं, आहारप्रयोजनमाहारापिलम् । भग० ९० । आहाररक्षणं प्रयोजनं, आहाराभित्तयो वा । प्रज्ञा० ५०० ।

**आहारट्टि**—आहारार्थं, आहारमर्षयते—प्रार्थयते इत्येदंस्ती, अर्थे वा—प्रयोजनमसास्त्रीलक्ष्मीं, आहारेण—भोजनेन अर्थां आहारार्थं, आहारस्य—भोजनस्य चाऽर्थं आहारार्थं । भग० २० ।

**आहारपञ्चमखण**—आहारप्रत्याख्यानम्, अनेपणीयभक्त-  
पाननिराकरणरूपम् । उतम् ५८८ ।

**आहारपदे**—प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमपदम् । प्रज्ञा० २५ ।  
नदी १०५ ।

**आहारपयाई**—आहारपदानि, आहारग्रहणविषयकानि पदा-  
नि । जं० प्र० ४६१ ।

**आहारपरिष्णा**—आहारपरिष्णा, सूत्रकृतादि द्वितीयश्रुतस्वये  
तृतीयाध्ययनम् । भाव० ६५८ । ठाणा० ३८४ । उतम्  
६१६ ।

**आहारपर्याप्तिः**—यया शक्त्या करणभूतया भुक्तामाहारं खल-  
रसरूपतया करोति सा । बृ० प्र० १८४ आ । शरीरेन्द्रियवाह्य-  
मन्त्राणापानयोग्यदलिकद्रव्याहरणक्रियापरिसमाप्तिः । तस्या०  
८-१२ ।

**आहारपोसहे**—आहारपौषधः, आहारनिमित्तं पौषधः,  
आहारनिमित्तं धर्मपूर्णं यवेति भावना । भाव० ८३५ ।

**आहारसञ्ज्ञा**—आहारसञ्ज्ञा, आहाराभिलाषः—छुद्देदनी-  
योदयप्रभव आरमपरिणामः । भाव० ५८० ।

**आहारसञ्ज्ञा**—आहारसञ्ज्ञा, छुद्देदनीयोदयाद्य या कवला-  
याहारार्थं तथाविषयपुद्गलोपादानक्रिया सा । प्रज्ञा० २२२ ।  
छुद्देदनीयोदयात्कायलिकायाहारार्थं पुद्गल्योपादानक्रियैव  
सञ्ज्ञायतेऽनया तदुक्तान्याहारमञ्ज्ञा । भग० ३१४ ।  
आहाराभिलाषः—छुद्देदनीयप्रभवः खलु आरमपरिणामवि-  
शेषः । जीम० १५१ ।

**आहारस्वै**—आलोडज्जभाषं जो समेदं स्वयं अवधारति सो ।  
नि० चू० तृ० १२८ आ । अलोचिततापराधानां अवधारणा-  
नाम् । भग० ९२० ।

**आहाराश्रयिणाय**—रत्नैः—ज्ञानादिभिर्भयवहरतीति राति-  
कः—बृहस्पययो यो यो रातिकवे यथापारितकं तद्भावस्तथा  
तथा यथापारितकतया—यथाज्येष्ठ । ठाणा० ३०१ ।

**आहारकहेस**—आहारोदेवः, प्रज्ञापनाष्टाविंशतितमपदस्यो-  
द्देशकः । भग० २० ।

**आहारैति**—विद्योवादापेक्षया सामान्यादाख्यात्रिशेष्टशरीर-  
व्ययनमय एव कृतवान् । भग० ७६३ ।

**आहारे**—आहारः, चरमाचरमपदगतसूत्रम् । प्रज्ञा० २४६ ।  
आहारप्रतिपादकं प्रज्ञापनाया अष्टाविंशतितमं पदम् । प्रज्ञा०

६ । आधारः । भग० ७३८ । फलपत्रकिसालयमूलकन्द-  
स्वगादिनिर्वर्त्यः । आचा० ६० ।

**आहारेत्ताहृतो**—आहृतवान् । भाव० ३०८ ।

**आहारे भोग्या**—आहाराभोगता । प्रज्ञा० ५४३ ।

**आहारो**—आहारः, कृतादि एव च खं णासेति पाणे तत्र-  
खीरदामज्जादि एगंगिया तिस णासेति, आहारविचं च  
करेति खादमे एगंगिया फलमेसादि आहारविचं च करेति,  
शादमेऽपि मधुकाणिय सेवोव्यादिया एगंगिया खहे णासेति ।  
नि० चू० द्वि० ५० आ । मुक्कसतो जं किंचि वि भुञ्जेति सो  
सज्यो आहारो । नि० चू० द्वि० ५१ आ । आधार अभिय-  
स्येव सर्वकार्येषु लोकानामुपकारित्वात् । भग० ७३१ ।

**आहारोचक्षया**—आहारोपचयाः, आहारैणोपचयो येषां ते ।  
आचा० ३७५ ।

**आहार्यः**—अभिनयचतुर्थभेदः । जं० प्र० ४१४ । काहफल-  
पुस्तकृतिकाचर्मादिपठितप्रजननैर्बौध्दिवाच्यप्रदेशासेवनमित्य-  
र्थः । भाव० ८२५ । आहार्य अन्यकाररहितत्वं । सम०  
१४० ।

**आहालंदिद्या**—कल्पविशेषः । नि० चू० प्र० ३३८ आ ।  
आहावंति—आगच्छन्ति । बृ० द्वि० २१३ आ ।

**आहावणा**—आभावना, उद्देशः । पिण्ड० ११६ ।

**आहाविज्ञ**—आधावेत् । भाव० ६३३ ।

**आहासिया**—आभासिकनामद्वितीयान्तरद्वीपः । प्रज्ञा० ५० ।  
आहिडइहृ । ओष० ९६ ।

**आहिडओ**—आहिण्डकः, दूरदेशविहारकर्ता । भाव० ५३६ ।

**आहिडगा**—विहरता । नि० चू० प्र० ३१४ आ ।

**आहिडा**—सततं परिभ्रमणशैलाः । बृ० तृ० १८४ आ ।

**आहिडिओ**—आहिण्डकः, आहटकः । भाव० ४३२ ।

अगीतायः, चक्रस्तूपादिसंनप्रवृत्तः । ओष० ६० ।

**आहिडितो**—आहिण्डकः । उतम् १०८ ।

**आहिध**—परिधाति । भाव० ३६० ।

**आहिअग्नि**—आहितमिः, अग्निं यद्वीरा स्वयदे भ्यापनात् ।  
भाव० १६९ । ब्राह्मणः । दस० २५२ । कृतावस्थादि-  
मांभ्रगः । दस० २४५ । प्रतिपादितोऽनुष्ठितो वा । सूत्र०  
१७८ ।

**आहिप**—आहितः, जमितः । सूत्र० ६९ । प्रमितः, प्रमिधि  
यतः । सूत्र० ९९ ।

आहिज्जह-आपीयते, व्ययन्थाप्यते, आरुयायते वा । सूत्र०  
३३७ । सम्बन्धयते । सूत्र० ३०६ । आरुयायते । सम०  
११३ ।

आहितविशेषम्-आहितविशेषत्वं-वचनान्तरापेक्षया ढीकि  
तविशेषता । एकत्रिसप्तमवाणीगुण । सम० ६३ ।

आहितुण्डिङ्ग-आहितुण्डिक, गारुडिक । दस० ३७ ।

आहितो-आरुयात, कथित । सूत्र० ११ ।

आहित्य । जीवा० १९४ ।

आहित्य-आहितम् ढीनितम् । सूत्र० ७१ । आत्मनि व्य  
वर्धयते, आ-यमन्तात्, हित वा । सूत्र० ६८ । गृहीतम् ।  
आव० ३७० ।

आहित्यगी-वभणो । दश० चू० १३२ ।

आहित्यडमर-आहितडमरम्, वायुवृत्तविद्वरोऽधिकविद्वयो  
वा । औप० १२ ।

आहित्या-आरुयाता । टाणा० ३९७ ।

आहित्योग - आभियोगदेवेतूपत्वा आदेशवर्तिन । भग०  
१९८ ।

आहित्यण-आहित्यम्, अहितत्व-शत्रुभावम् । प्रथ० ३८ ।

आही-आधि, मन पीडा । प्रथ० ३५ ।

आहुह-आहुति, आनी धृतादिद्रव्यसंश्लेषण । दस० २४५ ।

आहुणिय-आहुणिक । सूर्य० २९४ । अप्राशीतो महतु  
पयमग्रहनाम । टाणा० ७८ । ज० प्र० ५३४ ।

आहुणिज्ज-आहुवनीय-मन्त्रदानभूतम् । औप० ५ ।

आहुणिय-आधूस । आव० १२३ ।

आहुस्स-आहोत, दातु । औप० ५ ।

आहुप्-सहत् । आचा० ४२१ ।

आहुतो-उत्पन्न । आव० ३४३ । लम, उत्पन्न । उत०  
१४८ ।

आहुय - आहृतम्-आधानमामन्त्रणे नित्य मद्गृहे पोष  
मात्रमर्षे प्राह्य इत्येरेदम्, कामैकरादाकारण वा मात्वर्यं  
स्थानांतरादवाञ्छानयनाय यत्र स, स्पर्शं वा । भग०  
२९३ । भग० २९४ ।

आहुडगो-मिण्ठ्व । नि० चू० द्वि० १३९ अ ।

आहुण-जमन्नगिहातो आणज्जति तं अहवा ज बहुगिहातो  
परगिह णज्जति तं । नि० चू० द्वि० २२ अ । यद्विवाहोत्तर  
वात्रे पधुवेतो वरगृहे भोजनं क्रियते । आवा० ३३४ ।

आहेति-आधाय, कृत्वा । उत० २४७ ।

आहेयथ - आपिपयम्, अपिपयिन्नम् । भग० १०४ ।  
अपिपते कर्म, रथा । ज० प्र० ६३ । जीता० ३१७, १६२ ।

आहेयणं-आज्ञेयम्, पुत्रोभादिक्कम् । प्रथ० ३८ ।

आहोपुरुषिका-आमशास्त्रयापिक्कम् । सूत्र० ३४० ।

आहोहिओ-आधोऽपिक्क, परमासंश्लेषस्तादृशोऽपिक्कनेन  
यो व्यक्तरति ग परिमितज्ञेप्रतिपद्यापिक्क । भग०  
६७ ।

आहोहिय-नियतज्ञेप्रतिपद्यापिक्क । सम० ९६ ।

आहोही-यप्रसरोऽपिक्कस्तेनि यथापि परमात्परोऽधो-  
वर्यवपियंय मोऽधोऽपिक्क । जग० ६१ ।

आहिका-पिशाच ननुयंमेद । प्रजा० ७० ।

आहियते-निर्वर्यते । जीवा० १४ ।

ड

इखिणिका-कण्ठ्णे पथिक्का चाउयन्ति । आव० १३० ।

इखिणी - विजाभिर्मतिषा पटिया कण्ठ्णे चान्तिउपि,  
तथ देवता वदिति कहन्म्य पणिणपणिं मभर्तान ग  
एव ईगणा भण्णति । नि० चू० द्वि० ८५ अ । भिन्दा ।  
सूत्र० ६१ ।

इगना-उत्तना, मग्ना । नदी १० ।

इगाल-अङ्गार, दग्नेग्नो विगतधूमज्जाल । आना० ४९ ।

चारित्र्यनमत्रारमिक्क य क्कति भोजनविपयरागाणि गो

ङ्गार । भग० २९१ । अङ्गारणमयमाङ्गार । दस० १६४ ।

ज्वालारहितोऽसि । दस० १०४, २३८ । मदासद्विग्न ।

भग० ५०५ । निउत्तितेधनम् । भग० २१३ । विगन

धूमज्जाला जाउक्क्यमान मरियाणि । जीवा० २८ ।

अङ्गार । आव० ४२०, ३१३ । रागो । नि० चू० गृ०

४ अ । ज्वालारहिना वदे, अमन्तृनीयमेद । गिग्ग०

१५० ।

इगाल्प - अङ्गारक, अणशक्तिमहाप्रदितेय । सूर्य०

२९४ । महाप्रदितेय । जे० प्र० ५३४ । टाणा० ७८ ।

इगालकहिप्पि ईद्वक्काम्पा लाहमयये । भग० ६९० ।

इगालकम्म - अङ्गारकम्म, अङ्गारकरणिकयत्तिया ।

आव० ८२९ ।

इगाल्दाहओ-अङ्गारतदह । आव० १५१ ।

इगाल्छ्म्या-अङ्गारगणिना भूता । भग० १६६ ।



ईंगालघडैसप - अङ्गारावर्तमर्, ज्योतिषविमानविशेष ।  
मग० ५०५ ।

ईंगालसोह्रियं-अक्षरैरिष पत्रम् । भग० ५११ । औप०  
९१ । निर० २६ ।

ईंगाला-अणिधणाणि ज्वाला । नि० पू० प्र० ५२ आ ।

ईगिभ-इक्षितम्, अन्यथा प्रक्षितक्षणम्, निष्ठीवनादिलक्ष-  
णम् । दश० २५२ । नयनादिचेष्टया । ज० प्र० २२३ ।

ईगिणि-इक्षिणी, भनशनविशेष । आव० ६७० ।

ईगिणिमरणे-इक्षिणीमरणम्, प्रतिनियतदेश एव चेष्टयते  
ऽस्यामनशनक्रियायाम्, सप्तदशमरणे षोडश । सम० ३३ ।  
इक्षिते प्रदेशे मरण इक्षितमरणम् । आवा० २६२ । " ईगि-  
यदेसमि सय चउध्विहाहारचायानिष्पन्नं । उव्यतणाइसुत  
नऽण्येण उ ईगिणीमरणे " । टाणा० ९६ । यावत्कथि कानशन  
द्वितीयभेद । टाणा० ३६४ ।

ईगिणी-इक्षिणीमरणम्, मरणस्य षोडशो भेद । उत० २३० ।

इक्षिणी, इक्षयते-प्रतिनियतप्रदेश एव चेष्टते अस्यामनशन  
क्रियायामिति । उत० २३५ । सम० ३५ । विशे० १० ।

ईगितं-सुक्ष्मबुद्धियम्यचेष्टा । टाणा० ४ । सुक्ष्मचेष्टाविशेष ।  
वृ० प्र० ४३ अ ।

इगिनीमरणं - उक्तन्यायत प्रतिपद्य द्रुहस्थण्डिलस्थाता  
एकाक्येव हृत्तचतुर्विधाहारप्रत्याख्यानस्तत्स्थण्डिलस्थान्तप्रष्टा  
यात उष्णमुष्णाच्च छाया स्वय सकामति । उत० ६०२ ।  
नियतप्रदेशस्थासित्वेऽज्ञानादित्याग । आव० ५६३ ।

ईगियं-इक्षितम्, ज्ञानविशेष । आव० ७२४ । नयनादि  
चेष्टाविशेष । निर० ८ । ज्ञाता० ४१ । निपुणमतिगम्य  
प्रक्षितिनिर्गतसूचकभीषदूभूशिर कम्पादि । उत० ४४ ।  
अभगगादि । उत० ६२६ ।

ईगियपत्थियं-चेष्टितप्राथित । ( मर० ) ।

इगियमरणं-इक्षितमरणम्, इक्षिते प्रदेशे मरणम् । दश०  
७७ ।

ईगियागारकुसलो-इगिताकारकुसुम । आव० ५६ ।

इगियागारसंपन्ने-इगिताकारसम्पन्न, इक्षित-निपुणमति  
गम्य प्रक्षितिनिर्गतसूचक, आकार-स्थूलधीस्येण प्रस्थापति  
भावाभिप्यञ्जने दिशतलोकनादि, इन्द्रे इगिताकारी, ती  
अर्धोद्गुह्यनी सम्पन्न प्रक्षेपण जानानीनि । उत० ४६ ।

इगिताकारसम्पन्न - इगिताकाराभ्यां गुणगतभावपरिज्ञानो  
योगेन सम्पन्न -सुत्त । उत० ४६ ।

इग्यते-प्रतिनियतदेश एव चेष्टयते । सम० ३५ ।

इत-आयान्तम् । उत० ३२५, १३९ ।

इती-एति-आगच्छन्ति । औष० ७८ ।

इतो-आयात्, आगच्छन् । दश० ३७ । आय० ८८१ ।  
वृ० वृ० १७९ अ ।

इदं-एकोनविंशतिसागरोपमस्थितिकं विमानम् । सम० ३७ ।

इदं-इन्द्र, सप्तमदिनस्य सैदान्तिकं नाम । सूर्य० १४५ ।

इन्द्रो-पूर्वैकसैदान्तिकनाम । टाणा० १३३ ।

इदकादिया-त्रीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ । त्रीन्द्रियजन्तु  
विशेष । जीवा० ३२ ।

इदकील-इन्द्रकील, गोपुरे कीलविशेष । जीवा० ३५९,  
२०४ । गोपुरकपाट्युगसन्धिनिवेशस्थानम् । ज० प्र० ४८ ।

गोपुरावयवविशेष । औप० ३ । गोपुरकपाट्युगसन्धिनिवे  
शस्थानम् । भग० १७५ । पुरमध्यस्थम् । वी० १५० ।

इदकुम्भ-सुम्भानामिन्द्र विजयदेवाभिषेककुम्भ । ज० प्र०  
५० ।

इदकुम्भसमाणो - इन्द्रकुम्भसमान, महाकुम्भप्रमाणकुम्भ  
सदृश । जीवा० ३६० ।

इदकुमारिया-इन्द्रकुमारिका । आव० ४३४ ।

इदकेतु-इन्द्रकेतु, लेशमहनीयो ध्वजविशेष । उत० ३०२ ।

इदकेतु-इन्द्रकेतु, रश्मिनियन्त्रिते वेन्द्रयष्टि । प्रथ० १३४ ।

इदखील-इन्द्रकील । आव० ८१७ ।

इदगाइ-त्रीन्द्रियजीवविशेष । उत० ६२५ ।

इदगाइ-इन्द्रगह, इन्द्रपताहेतु । भग० १९८ ।

इदगोवप-इन्द्रगोपक, प्राग्द्रव्यमयमयभावी कीर्तिविशेष ।  
प्रज्ञा० ३६१ ।

इदगोवया-इन्द्रगोपक, त्रीन्द्रियजन्तुविशेष । जीवा० ३९ ।  
त्रीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।

इदगोवसमाह्वय-त्रीं द्वयजीवभेद । उत० ६९५ ।

इदगोवेइ-इन्द्रगोपक, प्राग् कालभावी कीर्तिविशेष । वै०  
प्र० ३४ । आना० ३७६ ।

इदगहो-इन्द्रगह । जीवा० २८ ।

इदग्नी-इन्द्राग्नि, महद्विशेष । टाणा० ७९ । व० प्र० ५३१ ।  
इन्द्रजसा-इन्द्रजसा, प्रप्रारणजसो । उत० ३७४ ।

**इन्द्रियनिगहो** - इन्द्रियनिग्रहः, इन्द्रियाणां - श्रोतादीनां निग्रहः - इष्टेतरं चन्द्रादिषु रागद्वेषाकरणं, पथेतेऽनगराणाम् । आव० १६० ।

**इन्द्रियपञ्चकखे** - इन्द्रिय-श्रोत्रादि तन्निमित्तं-सदकारिकारणं यस्मिन्निग्रहस्तद्वर्णिकं चन्द्ररूपरसगन्धस्पर्शविवयज्ञान-मिन्द्रियप्रत्यक्षम् । अणु० २११ ।

**इन्द्रियपञ्चत्ति**-इन्द्रियपर्याप्तिः-यया धातुरूपतया परिणमित्यादाहारदिन्द्रियशरीरगोचरव्युत्पत्त्याद्यैकद्विद्वयादीन्द्रियरूपतया परिणम्य स्पर्शादिविवयपरिभानसमर्थो भवति सा । अणु० १८५ आ ।

**इन्द्रियपण्डिपुष्पो**-नोविगदिदियो । नि० अ० १० २६६ आ ।

**इन्द्रियबलं**-इन्द्रियबलम्, चक्षुरादीन्द्रियाणां बलं-स्वस्वविषयग्रहणपाठयम् । जीवा० २६८ ।

**इन्द्रियमुञ्जा**-न जितेन्द्रियाः । नि० अ० द्वि० ३७ आ ।

**इन्द्रियलज्जी**-इन्द्रियलज्जिः, यथेन्द्रियशक्तिः । उत० १४५ । इन्द्रियाणाम्-स्पर्शादीनां मतिज्ञानावरणक्षयोपशमसम्भूतानामेकेन्द्रियादिजातिनामकर्मोद्यनियमितक्रमाणां पर्याप्तकनामकर्मोदितायर्थादिदानां द्रव्यभावरूपाणां लज्जिरारमनीतीन्द्रियलज्जिः । भग० ३५० ।

**इन्द्रियलाघवं** - इन्द्रियलाघवं, इन्द्रियाणि तस्य घशे वर्तते । अणु० द्वि० १०२ आ ।

**इन्द्रियाई**-इन्द्रियाणि-नयननासिकादीनि । उत० ४२५ ।

**इन्द्रियाईर्णं**-इन्द्रियादीनाम्, पृथ्व्यायेकेन्द्रियाणाम् । विशेष० २६० ।

**इन्द्रियाणि**-इन्द्रियाणि-नयननाशावेवादीनि । सम० १६ ।

**इन्द्रियर-**इन्द्रियरः । अणु० ३३१ ।

**इन्दुचरवर्द्धिसर्गं**-एकोनविंशतिरागरोपमस्थितिक विमानम् । सम० ३७ ।

**इन्दुयसु**-इन्दुयसुः, ब्रह्मराजराज्ञी । उत० ३७७ ।

**इन्द्र**-इन्द्रः । आण० २९२ । मत्तनाथप्रथमनिगमः । सम० १५२ ।

**इन्द्रो**-इन्द्रः, अधिपतिः । प्रज्ञा० १०५ । इन्द्रान्-इन्द्र-आत्मा । प्रज्ञा० २८५ । जीवा० १६ । इन्द्रान्-इन्द्रः, सर्वोपलब्धिभोगपरमैश्वर्यमन्वन्माज्जीवः । आव० २९८ । जीव-सर्वविवयोपलब्धिभोगलक्षणपरमैश्वर्ययोगात् । आण०

३३४ । परमैश्वर्ययोगात्प्रमुनंदात् । आण० १९८ । भवन्पासाशधिपाः । तत्त्वा० ४-४ ।

**इन्द्रोक्तं**-एमेनदिगतिमागरोपमस्थितिकं विमानम् । सम० ३७ ।

**इंधणपल्लिआमं**-जटा कोदयपल्लालेणं अंधगादि कलाणि वेदेना पाविजनेति आदिःगह्णेणं मालिपल्लालेण वितत्य जे ण पत्ता कल्य ते इंधणपल्लियामं भण्णति । नि० अ० द्वि० १५२ आ ।

**इंधणपल्लियामं**-इंधणपल्लियामं-कोदयपल्लाकारिणा वेदविस्वा पाठ्यानि फलानि । अ० प्र० १४२ आ ।

**इंधणसाला**-जय तणाकरिसभारा अचरंति । नि० अ० तृ० २१ आ । तुणकरीयकचवरस्थानम् । अ० द्वि० १७५ आ ।

**इइकट्टु**-इतिट्टुवा, मिथिल । जं० प्र० ३८६ । इतिट्टुवा-यस्मात् कारणात् । अनु० १६ ।

**इइकम्मं**-इतिकम्मं, इति-सांसारिकं दुःखं कर्म-अष्टप्रकारकर्मकृतम् । आण० १४५ ।

**इइहास्स**-इतिहास्स-पुराणम् । औप० ६३ । भग० ११२ । वि० २३ ।

**इइ**-देशीवचनम् । विशेष० १३१४ ।

**इइर्द्ध**-कठिनं तुणविशेषः । अ० तृ० ५२ आ । इंडणसर्द्धो तुणविशेषम् । प्रज्ञ० १२८ । तुणविशेषः । भग० ८०३ ।

**इइडडासो**-इइडडासः । उत० २८६ ।

**इइडा**-लाड्रेसे यणस्मतिभेगो । नि० अ० प्र० १३४ आ । वनस्मतिविशेषः । सूत्र० ३०७ ।

**इइमिअ**-एककम्-परस्परम् । उत० ३८२ ।

**इइर्द्ध**-राष्ट्रकट्टुविशेषः । विवा० ३९ ।

**इइकास्सालेकारं** - एकास्सालेकाराः, स्वरप्राधृतकथितालेकाराः । जं० प्र० ३९ ।

**इइक्खाग**-इइक्खागुं, तुल्यविशेषः । आव० १७९ ।

**इइक्खागकुलो**-इइक्खागुकुलः, तुल्यविकल्प । नि० अ० प्र० २९० अं । आव० १०९ ।

**इइक्खागभूमि**-इइक्खालुभूमिः, श्रवणभजनभूमिः । आव० १६० ।

**इइक्खागा**-इइक्खागुः, नासेयवंधावाः । भग० ४८१ । औप० ५८ । तुल्यमेदविशेषः । प्रज्ञा० ५६ । प्रथमप्राज्ञापतिवशात् । आण० ३५८ । श्रवणभर्त्सामिवादिनाः । आण० ३२७ ।

इन्द्र-ग्रीडधनरम् । भग० ३१३ । गन्त्या सम्पन्नि ।  
आय० १६६, १६७ ।

इन्द्रग-इन्द्र-महर् पित्रम् । रा० १४१ ।

इन्द्रिकादि-पर्युपितरुणीकृता अम्लरसा भवन्ति, आर  
नालस्थिताप्रत्यदिवा । टाण० २२० ।

इन्द्रि-ऋद्धि-आगर्षोष्यादि । दश० १०३ । भवनपरिवा  
रादिना । ज० प्र० ६२ । उत० ३५० । आय० १७८ ।  
टाण० १३२ ।

इन्द्रिपत्ता-ऋद्धिपत्ता आर्या । प्रज्ञा० ५५ । ऋद्धिपत्ता-  
आर्यप्रथममेद, अर्हदादय । सम० १३५ ।

इन्द्रिम-इस्मरो । नि० चू० द्वि० १६६ आ ।

इन्द्रिमत्-ऋद्धिमत्-विस्मयनीयवर्णदिसम्पत्तिमत । उत०  
४७३ ।

इन्द्रिसिय-इन्दिग्या । भग० ४८१ ।

इन्द्रो-ऋद्धि । प्रज्ञा० ४७४ । इस्परिया । नि० चू० प्र०  
१३ आ । आत्मशक्तिरूपा । प्रज्ञा० ४६७ । भवनपरिवारादिका ।  
चौवा० २१७ । विमवैश्वर्ये । जीवा० २८० । विमानपरि  
वारादिना । सूर्य० २५८ । टाण० ११६ । अेषधिरिशेव ।  
उत० ४८० । जनकादिममुदाय । उत० २८४ । आम  
पौष्यादि । आचा० १७८ । विमानवस्त्रभूषणाणि । उपा०  
२६ । सीनानाथदानादिका विभूति । उत० ४६५ । धाव  
व्यपकरणदिसम्पदागर्षोष्यादिरूपा । उत० ६६८ ।

इन्द्रोत्तरव - ऋद्धिगौरवम्, ऋद्धया-नरेन्द्रादिपुत्र्याचार्या  
शिक्षामिलापकप्रथया गौरव-ऋद्धिप्राप्त्याभिमानाशक्ति  
सम्प्राधान्यद्वारेण मनोऽनुभवभावगौरवम् । आय० ५७९ ।  
ऋद्धया-नरेन्द्रादिपुत्र्यालक्षयया आचार्यात्वादिलक्षणया या  
अभिमानादिद्वारेण गौरवम् ऋद्धिप्राप्त्याभिमानाशक्त्यर्थना  
द्वारेणात्मनोऽनुभवभावो भावगौरवम् । टाण० १७३ ।

इष्ण-अयम्, अनन्तरीकृतत्वेन प्रत्यक्षः । भग० ३८१ ।

इष्णो-इद, वक्ष्यमाणतया प्रत्यक्षानन्तम् । प्रश्न० २ । नम ।  
५७० ६-६३ ।

इष्णोमेव एमेव । प्रज्ञा० ६०० ।

इषिह-इदानीम् । आय० २७३ ।

इत् - रिषत् । २६९ ।

इत्तर - मामा-वमापु-भ्यो विसिञ्जत । आचा० २४३ ।

ग्यातर । ध्य० द्वि० २७६ अ । अन्तप्रान्त कुल ।  
आचा० २४३ ।

इत्ता-ज्ञाता । आचा० २८६ ।

इत्ति-इति-प्रवृत्ति । टाण० ३४३ । उपदर्शने । सूर्य०  
२८६ । प्रज्ञा० २५५ । परिसमाप्ती एवमर्थे वा । उत०  
६७ । उपप्रदर्शनार्थे । विशे० १५३ । एवप्रगारार्थे ।  
टाण० ५०३ । पूर्ववद्वान्तपरामर्शक । आचा० १४५ ।  
इत्तिसदो वा अर्थे । नि० चू० द्वि० १३७ अ । आमतने परि  
समाप्ती एव उपदर्शने वा । दश० चू० ६३ । हेती ।  
आचा० १०० । उपप्रदर्शने । उत० ५७० । दश० ७६ ।  
आचर्य । उत० ५६१ । प्रत्येक पर्याप्तिरूपनिर्देशार्थे ।  
उत० ८ । आचये । आव० २८ । प्रश्यातगुणानुवाद  
नार्थे । भग० ६७ । एवप्रकार । टाण० ३५४ ।

इत्तिकर्तृत्वर-इत्तिकर्त्तव्य । आव० २१३ । इत्तिकर्त्तव्यता-  
आदर्शनक्षेत्रे संपूर्णकर्त्तव्यतार्थे । आचा० ५१ ।

इत्तर-इत्तरम्-अल्पकालीनम् । विशे० २४ । स्वल्प । नि०  
चू० प्र० १८९ अ । परिमितकालम् । दश० २६ । चतुर्षदि  
पन्मासाग्नमिद तीर्थमाश्रित्य । टाण० ३६४ । पादपोषण  
मनापेक्षया नियतदेशप्रचाराभ्युपगमादिद्विहितमरणम् । आचा०  
२८५ ।

इत्तरक-इत्तरकम्, स्वल्पकाल, नियतकालावधिक । उत०  
६०० ।

इत्तरकालिकं-प्रथमपश्चिमतीर्थकरतीर्थेष्वनारोपितमतस्य इव  
रकालिकम् । टाण० ३२३ । अल्पकालिकम् । भग० ९०९ ।

इत्तरा-इत्तरा, ये कल्पसमाप्तेनन्तर तमेव कल्प ग छ वा  
समुपयास्यन्ति ते इत्तरा । प्रज्ञा० ६८ । स्वल्पकालभावनी ।  
अनु० १३ । प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्ती ये भूय स्थविरकल्प  
प्रतिपद्यन्ते ते । वृ० प्र० २२७ आ ।

इत्तरिय - अल्पकालीन । भग० ९२१ । नि० चू० प्र०  
२३९ अ ।

इत्तरिय इत्तरम्-स्वल्पकालभावनी । आव० ८३८ । उत्तर  
गुणप्रत्याख्यानम् । आव० ८०४ । अल्पकालिक इवसिक्वणि  
प्रतिक्रमणमेव । आव० ५६३ ।

इत्तरिय दिवं-इत्तरं दिशम् आचार्यशिक्षणम् । ध्य० द्वि०  
२०० अ ।

**इत्तरिय** - इत्तरं, भरतैरावतेषु प्रथमपथिमतीर्थकरतीर्थ-  
प्वनारोपितमहाप्रतस्थै शैक्षकस्य विज्ञेयम् । प्रज्ञा० ६३ ।  
अयनशीलम् - स्वल्पकालमार्गी । उग० ३३५ । इत्तराः -  
प्रस्तुतकल्पपरिसमाप्ती ये भूयः स्थविरकल्पं प्रतिपद्यन्ते  
ते । दृ० प्र० २३७ अ ।

**इत्तरियतयो** - इत्तरतपः स्वल्पकालं अनशनरूपं तपः ।  
उग० ६०० ।

**इत्तरियपरिग्रहियामगणे** - तत्रैत्तरकालपरिग्रहीता काल-  
शब्दलोपादित् इत्तरपरिग्रहीतागमनम्, आदीप्रदानेन किय-  
न्तमपि कालं दिवसमासादिकं स्ववशोक्रुताया गमनं-मैथुना-  
सेवनम् । भाष० ८२५ ।

**इत्तरिउग्गहो** - एकस्मानिद्वेद्वृष्टिताणं कीतमण्डा इत्तरिओ  
उगहो भवति । नि० चू० प्र० २३९ आ ।

**इत्तरिये** - इत्तरं, स्वल्पकालिकं देवसिकरानिकादि । ठाणा०  
३०० । नि० चू० प्र० ३५४ आ ।

**इत्थंथं** - इत्थं तिष्ठतीति इत्थंस्थं । प्रज्ञा० १०९ । नारका-  
दियपदेशधीने वनीसंस्थानादि तत् । दश० २५८ ।

**इत्थत्तं** - अनेन प्रकारेण्यं तद्भाव इत्थत्वं, मनुष्यादित्वम् ।  
गण० १११ ।

**इत्थत्थं** - इत्थत्थं, एतमर्थम् - अनेकरास्तिर्यन्तरानानारकग-  
निगमनलक्षणम् । गण० १११ ।

**इत्थिकहा** - स्त्रीरया - स्त्रीणां स्त्रीषु वा कथा, विकथायाधनुर्ध-  
मेद । ठाणा० २०९ । दश० ११४ ।

**इत्थियोसए** - स्त्रीयं षोषयतीति स्त्रीयोसः, अनुष्ठानविशेषः ।  
सूत्र० १११ ।

**इत्थियरयो** - स्त्रीरत्नम्, नक्षत्रसंज्ञः पञ्चमं पथेन्द्रियरत्नम् ।  
ठाणा० २९८ ।

**इत्थिलिंगं** - स्त्रीलिङ्गम्, स्त्रीव्यस्योपलक्षणमित्यर्थः । प्रज्ञा०  
३०१ ।

**इत्थिवउ** - स्त्रीवाक्, स्त्रीलिङ्गप्रतिपादिना भाषा । प्रज्ञा०  
२४९ ।

**इत्थिवेप** - स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुमांसं प्रत्यभिलापः । प्रज्ञा०  
४६८ ।

**इत्थिवेदो** - अंनो अणुमय दाहो अणुवसेतो वि पट्टिज-  
माप दिवर्षनो कुकुअगिममणो इत्थिवेगो । नि० चू० डि०  
३१ अ ।

**इत्थिवेय** - स्त्रीवेदः, स्त्रियाः पुंस्यभिलापः । जीवा० १८ ।  
**इत्थिसंसग्गी** - अन्वत्ताद्गणज्ज्ञावादि । दश० चू० १२७ ।

**इत्थिसंसत्तो** - स्त्रीसंसक्तः - स्त्रीसम्बन्धः । प्रज्ञ० १३८ ।

**इत्थिसागारिण** - स्त्रीजनः । नि० चू० दृ० १० अ ।  
**इत्थिसागारियं** । नि० चू० डि० ३४ अ ।

**इत्थी** - स्त्री, पुरुषोत्तमवासुदेवलिदानकारणम् । भाव० १६३ ।  
**इत्थीउ** - स्त्रियः, अष्टमः पत्नीपदः । भाष० ६५६ ।

**इत्थीणुंसियार** - इत्थिवेगो वि से ननुंसकवेदमपि वेदेति ।  
नि० चू० डि० २५ आ ।

**इत्थीनामतोत्तं** - स्त्रीनामगोत्रम् । भाव० १२० ।  
**इत्थीपणहाइ** - स्त्री उपलक्षणमेतत् पुरुषो वा प्रतीति प्रत्येदतो  
मिथुनरश्मं समारभते इत्यर्थः । ग्य० डि० १९५ आ ।

**इत्थीपण्णिणा** - स्त्रीपरीक्षाभवनम्, सूत्रकृतात्रे प्रथमश्रुतस्क-  
न्वे चतुर्थमध्ययनम् । तम० ३१ ।

**इत्थीपसुविचिञ्चिअं** - स्त्रीपशुविनाजितमित्येकपक्षणे तज्जातीय-  
मक्षणम् स्त्रीपशुपण्डकविषयितं लयापालोकमादिरितम् ।  
दश० २३७ ।

**इत्थीरुयं** - अणामरणा इत्थीरुवं भणति । नि० चू० प्र०  
७७ अ ।

**इत्थीविग्गह** - स्त्रीविग्रहः, स्त्रीतरीरम् । दश० २३७ ।  
**इत्थीविपरियासो** - स्त्रिया विषयां स्त्रीविषयानं - अमङ्गल-  
सेवनम् । भाष० ५७५ ।

**इत्थीवेदे** - स्त्रीवेदः, स्त्रियं यथाविरिपनस्वभावतस्तत्संबन्धवि-  
पाकतथ वेदयति - नापथतीति, वैशिकादिकं स्त्रीस्वभावाविभा-  
वके शास्त्रमिति । सूत्र० ११२ ।

**इत्थु** - मन्त्रादिदधनकादि तद्विद्वम् । अनु० १०१ ।  
**इत्थं** - विपं । नि० चू० प्र० ३६ अ ।

**इत्थकूप** - उदंतम वृषविशेषः । भाष० ८७७ ।  
**इत्थजालम्** - उदकम् । दश० २५४ ।

**इत्थनील** - रत्नविशेषः । जीवा० २३ । भाव० १८९,  
२५९ । प्रज्ञा० ९१ ।

**इत्थियगोचरा** - विषयाः । भाव० ५८४ ।  
**इत्थियदुष्प्रणिहितकायिका** - आशेन्द्रियः - श्रोतादिभिर्दुष्प्र-  
णिहितस्य इष्टानिदिविषयप्राप्तौ मन्त्रात्स्वहर्षिर्देवद्वारेणापवर्ग-  
मार्गं पति दुर्घ्यवैरिवनस्य विद्या । भाव० ६११ ।

इन्द्रियाधीनप्रहः—स्पर्शनशीन्द्रियाणां ये स्पर्शादयो अर्थाः  
तेषां अर्थप्रहः—सामान्यमात्रज्ञानं । इंद्री १७४ ।

इन्द्रधने—गोमती अभ्यते । औप० १२९ ।

इन्द्रम—इन्द्रमर्हतीति इन्द्र्यः । वृ० प्र० १९९ अ । यद्ब्रह्म-  
निचयान्तरितो हस्त्यपि न हृदयते । इमो—हस्ती तदप्रमाणं  
द्रव्यमर्हतीति निरुक्तादिभ्यः । त्र० प्र० १२२ । हस्तिप्रमा-  
णद्रव्यनिरासिपतिः । औप० २७ । अर्थवान् । ठाणा० ४६३ ।  
यद्ब्रह्मनिचयान्तरितो महेशो न हृदयते । औप० ५८ ।  
इन्द्रमर्हतीतीभ्याः — यद्ब्रह्मरूपान्तरित उच्छ्रितकप्रलिका-  
दण्डो हस्ती न हृदयते ते । ठाणा० ३५८ । महाधनाः ।  
भग० ४६३ । धनवान् । प्रज्ञा० ३३० । इमो—हस्ती  
तदप्रमाणं द्रव्यमर्हतीतीभ्यः । यत्सकृत्पुञ्जीकृतहिरण्यरत्नादि-  
द्रव्येणान्तरितो हस्त्यपि न हृदयते सोऽधिकतरद्रव्यो वा  
इन्द्र्य इत्यर्थः । जीया० २८० । अनु० २३ । यावतो  
द्रव्यस्योत्क्रेणान्तरितो हस्ती न हृदयते तावद् द्रव्यपतयः ।  
प्रश्न० ९६ ।

इन्द्रजाति — मातृपक्षविवृदा इन्द्रजाइ । नि० चू० प्र०  
२९० अ । निशिष्टा जातयः । ठाणा० ३५८ ।

इन्द्रपि—इन्द्रपि, इन्द्रियैकदेशिद्वन्द्वः । आचा० ६५ ।

इन्द्रसु—इन्द्रसु । आचा० ३२६ ।

इय—इतः, आपर्वात् अत्य । प्रज्ञा० ११२ । आगतः । (सर०) ।

इयणिह—इत इदानीम् । ठाणा० १४३ ।

इयपट्टा—इतिपट्टाः—प्रधानाः, यामिनः । उपा० ४६ ।

इयर्—इतर्, रजोहरणनिपया औपद्रष्टिकं कार्पासिकं और्णिकं  
वा नीरं, सार्धं वा । औप० २३ । इतश्चाच्छेन रजोहर-  
णनिपद्यते । औप० २३ ।

इयरेयर—इतरेतः, इतरेतरसंयोगः । उपा० २३ ।

इरिमायह—इरण्मोर्वा, पथि इर्वा इर्वापथं—गमनागमनम् ।  
औप० ३७ ।

इरिमायहिय—ऐर्वापथिकः, केवलयोगप्रत्ययः कर्मबन्धः,  
धियास्थाने प्रयोदत्तं क्रियास्थानम् । गम० २५ ।

इरितासमिती—शिवकर्मणःसुगमोत्तरदिन्द्रिय अणुमादिणो  
संज्ञकोपररुणुणावर्णमिषा जा गमनविदिया ता । नि०  
प्र० १६ अ ।

इरिमिदिर—लःमीसन्दिग्धम्, लक्ष्मणार्थे, प्रभूतलक्ष्मी इम् ।  
दत्त० ५८ ।

इरिया—इरण्मोर्वा—गतिपरिणामः । उपा० ५१४ । वर्तनी ।  
उप० मा० गा० ३६० । इर्वा—आचारप्रकल्पस्य द्वादशो  
नेदः । आव० ६६० । इर्वा—गमनम् । भग० ३२३ । इर-  
ण्मोर्वा—गमनमित्यर्थः । आचा० ३७४ । इर्वा—आचारप्रक-  
ल्पस्य द्वितीयप्रत्ययस्य तृतीयमध्ययनम् । प्रश्न० १४६ ।  
इर्वा—गमनं, इर्वाकार्यं कर्म । आव० २६५ । इर्वा—गमनम् ।  
भग० १०६ ।

इरियाइ—इर्वादि, संयमविषया विराधना । औप० ८० ।

इरियामि—इरे—गच्छामि गोचरचर्यादिविधिति । उपा० ४४५ ।

इरियावह— इर्वा—गमनं, तरङ्गधानः पन्था इर्वापथः ।  
आव० ५७६ ।

इरियावहकिरिया— इर्वापथिक्रिया, या उपशान्तमोहादा-  
रभ्य संयोगिकेवलिनं यावदिति । सूत्र० ३०४ ।

इरियावहियं—ऐर्वापथिकी, इर्वा—गमनं तद्विषयः पन्था-  
मार्गस्तत्र भवा, केवलकाययोगप्रत्ययः कर्मबन्धः इत्यर्थः ।  
भग० १०६ । इरण्मोर्वा—गतिस्तस्याः पन्था यदाश्रिता  
सा भवति तस्मिन् भवमभ्याम्मादित्वाद्भक्ति ऐर्वापथिक,  
पथिस्यद्विपठ्चैर्वापथिकम् । उपा० ५९५ ।

इरियावहिया— इर्वापथिक्रिया, क्रियायाश्चयोदशो नेदः ।  
आव० ६४८ । इर्वापथिकी—दिशतिक्रियामये विवक्ति-  
तमा । आव० ६१२ । ऐर्वापथिकी—गमनप्रधानः पन्थाः  
इर्वापथस्तत्र भवा । आव० ५७३ । इर्वापथिकी—संज्ञकण-  
क्रिया । वृ० तु० २७ अ ।

इरियासमिह— इर्वापथिकीः— निरवचप्रतिरूपा । प्रश्न०  
१४३ । इर्वापथिकीः—आपश्यकाथेय सगमार्थे सर्वतो युग-  
मात्रनिरीक्षणयुक्तस्य शनैर्व्यस्तपदा गतिः । तत्रावा ९-५ ।

इरियासमिह—इरणं—गमनमोर्वा तस्य समितो—दत्तावधान-  
पुरतो युगमात्रभूषागन्तरदृष्टिगामीत्यर्थः । आचा० ४२८ ।  
इला—दिनधते चतुर्षुवृत्तः । ठाणा० ७१ । पानेन्द्र्य मदि-  
धानाम । भग० ५०४ ।

इलाइपुत्त—गर्भपेवः । ( सर० ) ।

इलादेवया— इलादेवता, इलादेवेनगमदेवता । आव०  
३२५ ।

इलादेवी—पथिमरुचयवाहनध्या इन्द्रियाती । आव० १२३ ।  
पुण्यपन्थाः—गमनमध्ययनम् । नि० १४ । पन्थात्तरपथ-  
वागन्ध्या प्रथमादिपुमार्थमदृष्टिः । त्र० प्र० ३९१ ।

**इहलोगासंस्पर्शभोगे** - इहलोकसमाप्रयोग, इहलोक - मनुष्यलोकस्वामिप्राप्तसा-भगिन्प्रयोग । आव० ८३९ ।  
**इहलोगो**-इहलोक, मनुष्यलोक । आव० ८४० ।  
**इहलोगभयं** - इहलोकभय-मनुष्यादिमजातीयादन्यस्मान्मनुष्यादेरेव भयम् । आव० ६४५ ।  
**इहलोगसंवेयणी**-इहलोकसवेजनी, सवेजनीकथायास्तृतीयो भेद । दश० १११ ।  
**इहेहे**-विष्णुमिधान तम्भरम्ब्यापनार्थं, यदि वा इहेति लोके इहेत्वस्मिन् भृत्यौ । उक्त० ४०९ ।

ई

**ईइ**-ईति, गृहृणिकारिण्या । जीवा० १८८ । ज० प्र० २९ ।  
**ईति** - दुरितविशेष । भग० ८ । धान्याद्युपद्रवकारिणाल भयूपकादि । ज० प्र० ६६ ।  
**ईती**-ईति - धान्याद्युपद्रवकारी प्रचुरमूपकादिप्राणिगण । सम० ६१ ।

**ईप्सितप्रतीप्सित**-व्यवहारविशेष । विप्र० ६२४ ।  
**ईयिद्यु**-ईयांविद्युद्धपथम् । ढाणा० ३६० ।  
**ईरिया**-गमन । ढाणा० ३४३ । ईरणमीर्या-गतिपरिणाम । उक्त० ५२४ ।

**ईरियावहिया**-ऐर्यावधिकीरिया, योगमात्रज कर्मवन्ध । आव० ६१२ । ईर्या-गमन तत्प्रधान पन्था-मार्ग ईर्या पथस्तत्र भवमैर्यापरिधि-केवलयोगप्रलय कर्म । भग० ३८५ । आव० ६४८, ६४९ ।

**ईरियावहियाकिरिया** - ईर्यापविक्रिया-युपुशान्तमोहा डेरैकविषकर्मवन्धनमिति । ढाणा० ३१६ ।

**ईरियासमिह**-ईर्यासमिति, ईर्याया समिति, ईर्याविपये एसीभावेन चेष्टनम् । आव० ६१५ । रथगकन्यानवाहना मान्तेडु मागेंडु सूर्यरदिमशतावितेडु प्रासुकविक्रितेडु पयिडु युगमाप्रदरिणा भूत्वा गमनागमन कर्तव्यम् । आव० ६१५ ।

**ईर्याप्रथय**-ईरणमीर्या-गमनं तेन जनितम् । सूत्र० १२ ।

**ईर्याप्रथमाता**-योगव्ययमप्राप्ता । तद्वशा० ९-४८ ।

**ईर्याविनुद्धि**-ईर्या-गमन तस्या विमुद्धियुगमानिहितरदि तम् । ढाणा० ३६० ।

**ईरियागतिः**-गतिविशेष । प्रज्ञा० १५१ । - षी० १५३ ।

**ईली**-कन्यालविशेष । प्रज्ञा० ६८ ।

**ईश्वरकारणिकः**-कियावादिद्वितीयविकल्प । सम० ११० ।  
**ईश्वरकारणितः**-कियावादिद्वितीयविकल्प । ढाणा० २६८ ।

**ईश्वरपुत्रः**-इभ्याना पुत्र ईश्वरपुत्र । नदी २५८ ।

**ईश्वरयात्रिनः** । आव० ८१६ ।

**ईपन्कुटिला**-गुण्डलीभूता । ज० प्र० ११३ ।

**ईषा**-गायत्रिशेष । ज० प्र० ५५ । राज० १३ ।

**ईसक्खो**-ईशाख्य, ईशमैथमैमात्मन ख्याति भन्तर्गत पथ्यतया ख्यापयति-प्रथयति य स । जीवा० २१७ ।

**ईसत्थ**-इपुशाखम्, धनुवद । आव० १२९ । प्रज्ञा० ९७ । धनुवदगदि-धनुर्वेदादि । नि० चू० तू० १० आ ।

**ईसत्थसत्थरहचरियाकुसलो** - इन्ध्रशरहरथचर्याकुसल । उक्त० २१४ ।

**ईसर**-ईश्वर, भोगिकादि अणिमाद्यथविधैर्धर्मयुक्तो वा । ज० प्र० १२२ । लवणे लभरपातालकलश । ढाणा० ४८०, २२६ । प्रचुरमाल्यादि । अन्त० १६ । स्नानिमात्र ।

जीवा० ३६५ । सुवराजादि भोगिनी वा । प्रज्ञा० ९६ । भोगिनादि, अणिमाद्यथविधैर्धर्मयुक्तो वा । जीवा० २८० ।

वृ० तू० २५५ आ । सुवराज, अणिमाद्यथैर्धर्मयुक्त । औप० ५८ । प्रज्ञा० ३३०, ३२७ । महेश्वर । प्रज्ञा० ३३ । प्रवान, प्रभु, स्वामी । आव० ५०३ । भूतवादि

व्यन्तरेन्द्र । प्रज्ञा० ९८ । 'ईम ईथर्ये' ऐश्वर्येण युक्त ईश्वर, सो य गामभोलियादि । नि० चू० प्र० २७० आ ।

गृहस्वामी । आचा० ४०३, ३७० । द्रव्यपति । उक्त० ३५३ । सुवराजो माण्डलिकोऽप्राप्तो वा, अणिमाद्यथविधैर्धर्मयुक्त ईश्वर । ढाणा० ४६३ । सुवराज सामान्यमाण्डलि

वोऽमाल्य । अतु० २३ । सुवराज । भग० ३१८ । सुवराजादय । भग० ४६३ । औप० १४ । सुवराजा ।

राज० १२१ ।

**ईसरस्स**-पातालकलश । सम० ८७ ।  
**ईसरा**-ईश्वरा, सुवराजा, अणिमाद्यैर्धर्मयुक्ता । ज० प्र० १५० ।

**ईसरिय** ऐश्वर्यं, मन्थ्य दश स्थानम् । आव० ६४६ ।  
**ईसरी**-ईश्वर्यं, भोगिपारके धारिणाविशेष । आव० ३०४ ।

**ईसा**-ईसा, पितापुत्रमात्रेन्द्रमत्ताभ्यन्तर्गता पथी । जीवा० १७१ । ईशरी लाहालागमदिर्धर्मो आद्य पथी । ढाणा०

१२५। ईर्ष्या-प्रतिपक्षाभ्युद्योगलम्भजनितो मर्यपरिदोष ।  
आय० ६११।

ईसाण-ईशान-ईशानावर्तमकाभिधप्रिमानोपलक्षित द्विती-  
यस्त्वय । अनु० १२।

ईसाणवडिसय-ईशानावर्तक, ईशानरूपमायेऽवर्तमक ।  
जीवा० ३९१।

ईसाणवडिसय-ईशानकल्पेन्द्रविमान । भग० २०३।

ईसाणा-ईशानदेवलोमनिवातिन ईशाना, द्वितीयो देवलोम ।  
प्रज्ञा० ६१। पूर्वोत्तरदिशेणनाम । ठाणा० १३३।

ईसाणी-पूर्वोत्तरदिशेणनाम । भग० ४९३। ईशानी ईशा-  
नयेण, पूर्वोत्तरमध्यवर्तिदिक् । आय० २१५।

ईसाणे-द्वितीयस्त्वेन्द्र । ठाणा० ८५। अहोरात्रस्यैकादश  
मुहूर्तनाम । सूर्य० १४६। एकादशमुहूर्तनाम । ज० प्र०  
४९१। देवलोमविशेष । आय० ११५।

ईसि-ईपत्, मनाक् । जीवा० १८१।

ईसि ओट्टुवलचिणी-ईपट्टोवालम्बिनी, ईपत्-मनाक् तत  
रम्परमास्वात्तया सतिस्त्वेवाप्रतो गच्छति ओट्टुवलम्ब्यते-  
रपतीत्येवशीला । प्रज्ञा० ३६४।

ईमि ओणयकाओ-ईपदवनतकाय । आय० २१६।

ईसि तैयच्छिकरणी-ईपत्प्राभाक्षिरणी, ईपत्-मनाक् तामि  
अक्षिणी त्रियंते अनयेति । प्रज्ञा० ३६४।

ईसिपम्भारगओ-ईपत्प्राग्भारगत-ईपदवनतकाय ।  
आय० २१६।

ईसि चोच्छेदकडुई-ईपद्व्युच्छेदकडुमा, ईपत्-मनाक्  
पानव्य-छेद मति तत ऊर्ध्व कटुका एकाद्रिद्वयमपर्वत  
उपलक्ष्यमाणतिचकीर्षेति । प्रज्ञा० ३६४। जीवा ३५१।

ईसि-ईपत्, मनाक । प्रज्ञा० ९१। आय० ८५७। ईपत्प्रा-  
ग्भारानाम । प्रज्ञा० १०७। मिदशिलानाम । रत्नप्रभाक्षेपक्षया  
हस्वत्वाद् ईपत् । ठाणा० ४४०। सम० २०।

ईसिणि-सरस्वतणी-त्वक् । नि० च० १००। ६३ आ।

ईसिपंचहस्सफखरुधारणद्धा-अयोगिगालमान । उत०  
५७७। ईपतिनि-स्वल्प प्रयत्नापेक्षया पदानां हस्वाक्षारण  
अऽउकल्लइत्येरूपाणामुच्चरणमुचारो भागं तस्याद्वा-कालो  
यावता ते उच्चार्यन्त । उत० ५९६।

तिपम्भार-ईपत्प्राग्भार, ईपत्प्राग्भारव्युत्पद्यत्तत्ता अन्ते  
विंति । अनु० १२। मिदशिलानाम, प्राग्भारस हस्व

त्पावीप-प्रयभार । ठाणा० ४४०। सम० २०। गिननिम्भ ।  
आय० ६००।

ईसी ओट्टुवलचिणी-ईपट्टोवालम्बिनी, ईपत् ओपत्प्रा-  
ग्भार-तत परमनिष्ठप्राग्भारद्विगुणरगोपारारा शक्ति  
पत्त प्रयाति । जीवा० ३५१।

ईसी तैयच्छिकरणी-ईपत्प्राभाक्षिरणी, त्रिभिधेयगण ता  
वरणी । जीवा० ३५१।

ईसीपम्भारगए-ईपत्प्राग्भारगत । आय० ९४८।

ईसीपम्भार-ईपत्प्राग्भार, मिदभूमि । आय० ४४२।  
अप्रभूमि, अन्त्याभूमि । आय० ६००। पञ्चवर्गशि  
योजनलक्षायामनिष्कम्भप्रमाणा शुद्धशक्तिर्गणया मिद-  
शिला । प्रज्ञा० २२८। ईपत् अपो रत्नप्रभाक्षेपक्षया प्राग्भार -  
अन्त्यादिलक्षणे यस्या सा । ठाणा० २५१। मिदशिला ।

प्रज्ञा० १०७। ईपत्-अप्यो योजनप्राग्भारव्यपप्रचरारा-  
रिशाक्षिपत्पम्भार प्राग्भार पुद्गलनिचयो यस्या सा ।  
ठाणा० १२५।

ईसेणिआ ईमिनिजा । ज० प्र० १९१।

ईसुइ-ईहते-पर्यालोचयति । आय० २६।

ईसुते-पूर्वपरारविरोधेन पर्यालोचयति । नदी २५०।

ईसु - अन्वयमपर्वतद्रव्यधारायाभिमुन एव योष ।  
विदो १७०। मद्भारदोषलोचने । भग० ३४४। मद्-  
र्थाभिमुना ज्ञानचेष्टा । भग० ६३३। 'ईहचयायाम्' ईहममो-  
सतामन्वदिना व्यतिरेकिणं चाऽर्थानां पर्यालोचना । रिदो  
२-६। तितरे । सम० ११५। अवपहातुम्बकालमवा-  
यात्पूर्वं सङ्गुतार्थविदोयोपादानाभिमुनोऽमद्भुतार्थपरि-  
पगिल्ला-  
यामिमुल-प्रायोऽप मयुस्त्वादय दृष्ट दि-च्छधर्मा न्यपन्ते  
न सरकश्रानिष्टुतादय शास्त्रिदिशच्छधर्मा इत्येवमप्यो मनि-  
विशेष । नदी १६८। ईहनर्माहा-मदर्थपर्यायिगेनान्म् ।  
नदी १८६। ईहनर्माहा-मनामपर्यायामन्यनिर्ण व्यतिरे-  
काणं च पर्यालोचना । आय० १८। तदार्थानां-  
निष्पालोचनम् । आय० ९। ईहनर्माहा-मद्भुतार्थपर्यायिगे-  
नहया चय । प्रज्ञा० ३१०। नदी १६८। विमिदमिपमु-  
ताम्येष्वेव मद्भुतार्थेचनानिमुना मति चय । अर्ण०  
९९। मद्भुतार्थेचनानिमा । दृग् १०६। अवपहा-  
तार्थेचनो-छेपानुगमने । निष्पतिरेपविजिज्ञा । तरणा०

१ - १५ । अवप्रहार्यगतासद्भूतसद्भूतविशेषालोचनम् ।  
राज० १३० ।

ईशामिग-ईशामिग - ब्रुक । भग० ४७८ । ज० प्र० ४३ ।  
जीवा० १९९ । नाख्यविधिविशेष । जीवा० २४६ । ज०  
प्र० ४१५ । आठव्य पशु । आचा० ४२३ ।

ईशामिय-ईशामिग-ब्रुका । राज० २८ ।

उ

उच्छं-उच्छ-भक्त । ओष० १५४ । अन्यान्यवेद्यत स्व-  
रूप स्वल्पमामीलनात् । उक्त० ६६७ । जुगुप्सनीय, गह्वरम् ।  
सूत्र० १०८ । भैश्यम् । सूत्र० ७४ । अल्पाल्पम् । प्रश्न०  
१११ । छादनायुक्तखण्डोपरहित । आचा० ३६८ । अज्ञात  
पिण्डोच्छस्यकरवादिनि साधोदपमानम् । दश० १८ ।  
एपणीय । आचा० ३७६ । उच्छद्ये-अल्पाल्पतया गृह्यत  
'इति, भक्तपानादि । ठाणा० २१३ ।

उच्छविती - उच्छगती-कणयाचनवृत्ति । आव० ७०५ ।  
व्य० द्वि० ३५९ अ ।

उच्छविही-कणयाचनवृत्ति । आव० ७०५ ।

उज्जण-अवम(स)नुअण । दश० चू० ६९ ।

उज्जण-उज्जनम् । उत्सेवनम् । दश० २२८, १२४ ।

उजायणा-चापिष्टगोनस नामविशेष । ठाणा० ३९० ।

उज्जला-उरिमन्वेत् । दश० १५४ ।

उज्जभ-उज्जभ, पिण्डक । ओष० २९ ।

उज्जम-उज्जम्, म्णिलम् । दश० १५६ ।

उज्जसं-उज्जेष । ठाणा० ५२५ ।

उज्जया-मन्थय । नि० चू० प्र० २४५ आ ।

उज्जि-मुद्राम् । व्य० द्वि० १६७ आ ।

उज्जिका-मुद्रा । ब्र० प्र० ३३ अ ।

उज्जभ-उज्जम्-म्यानम् । दश० १७० । ब्र० प्र० २०२ अ ।

उज्जेरगा । नि० चू० द्वि० १२५ आ ।

उज्जेरय-वदका । आव० ६८० ।

उज्जेर उज्जेर । प्रश्न० ८ ।

उज्जेर-उज्जेर-मुगम् । अनु० २९ ।

उज्जेर - उज्जेर-मुगम् । ओष० १२६ । आव० ६४१ ।

उज्जेर १०९ । नि० चू० द्वि० २२ अ ।

उज्जेरय-मुगम् दशमदिशस्यकरम् । अनु० २९ ।

उज्जेरय-अटोलिया, यत्रश्रुतिरिति । सू० प्र० १०१ अ ।

उज्जेर-उज्जेर, बहुविज इत्यक्षविशेष । प्रशा० ३३ । भग०  
८०३ । चतुर्थभवनवासिनेवस्य उक्ष । ठाणा० ४८७ ।  
उज्जेर । व्य० द्वि० ३६७ अ । गिहेलुको । नि० चू० द्वि०  
८३ आ ।

उज्जेरदत्त-उज्जेरदत्त, दु खविपाके सप्तमभयनम् । विपा०  
७८ । पाठलखण्डनगरे सागरदत्तसार्थवाहसुत । विपा०  
७४ । जक्षविशेष । विपा० ७४ ।

उज्जेरमधु-चूर्णविशेष । आचा० ३४८ ।

उज्जेरवच्च-उज्जेरवच्च फला जल्य गिरिउडे उच्चविजति त  
उज्जेरवच्च भणति । नि० चू० प्र० १९२ आ ।

उज्जेरिय-उज्जेरविशेष । भग० ८०३ ।

उज्जेरो-उज्जेरदत्त, सार्थवाहसुत, दु खविपाकाना सप्त-  
मभयनम् । विपा० ३५ ।

उ-उपयोगकरणे । आव० ४४९ ।

उअसं-उतीर्णम् । नि० चू० प्र० ३४९ आ ।

उअरदत्ते-उदरदान्त-येन वा ते । वा इतिशील । दश०  
२३३ ।

उआहणित्ता-उपाहृत, समीपमानीय । दश० ५९ ।

उइति-उइति उद्य यान्ति । उक्त० ४८६ ।

उइओक्ष उचितोद्य, सिद्धी वायासर्गफलमिति द्रष्टव्यं  
राजा । आव० ८०० ।

उइज्जति-उदीर्ये ते, उदेसावसमं नीयन्ते । आठ० ५६८ ।

उइणणा-अवतीर्णा । उक्त० ३०० ।

उइर्य-उदीर्य-निपासापस । आचा० १५१ ।

उइर्य-उदीर्य-प्रवर्तकम् । प्रश्न० ८६ ।

उइर्यय-उदीर्यति-अग्नात् वातात् जलमपि नोत्-प्रापन्त्येन  
प्रेरयति । जीवा० ३७७ ।

उउ-उत । नि० चू० प्र० ३४८ अ । ऋतु । भग० ५४३ ।

ऋतु-रक्तहृष, शान्तप्रतिज्ञो वा । रक्तऋतुऋतुग । ठाणा०  
३१३ ।

उउयद-ऋतुयद उच्यते क्षीतकाल उगवाऋतु । ओष०  
११८ । ऋतुयद । आव० १८९ । क्षीतोद्यकालयो । ओष०  
२०५ । क्षीतोद्यकालो मित्रिणी चैव भण्यते । ओष०  
१११ ।

उउयदपीढफलम् - य पक्ष्वाभ्यगरे पीडकलवादीनां  
यननानि मुद्रा प्रयुगेभानां न कोनेन या या निरा



बन्धुतसस्तरार सोऽवदपीठकलक तम् । व्य० प्र० १६४ अ ।  
 जो य पक्खस्म पीडपडिमाडियाण बधे मोगु पडिलेहण ण  
 वरेति सो घणओ उडवदपीठकलगे अथवा णिअवणिय  
 सथारा णिउत्थारियसथारगे य उडवदपीठकलगे भण्णति ।  
 नि० चू० द्वि० ११ अ ।

उडयद्वोगहो-श्रतुवदावग्रह । नि० चू० प्र० २३९ अ ।

उडपरियद्-श्रतुपरिवर्त्त - श्रतवन्तरम् । आचा० ३२७ ।

उडय-श्रतुन - कालोचित । प्रश्न० १६० ।

उडसन्धी-श्रतुसन्धि - श्रतो पर्यवसानम् । आचा० ३२७ ।

उड-श्रतु, मापद्वयमान । भण० २११ । श्रतु । आचा०  
 ३२७ ।

उडसंचकउरे-श्रतुवचो-कोकप्रतिदा वसन्तादय तदुभय  
 द्वारहेतु सवत्तर श्रतुनवत्तर, तृतीयप्रमाणसवत्तर ।  
 अ० प्र० ४८७ ।

उपरट्टे-शिल्ले चतुर्भेदे । अनु० १४९ ।

उकट्टणं-गाढतरम् । नि० चू० प्र० ११५ अ ।

उकञ्चण - ऊर्ध्वं कचनमुत्कचन-हीणगुणस्य गुणोत्कर्षप्रति  
 यादनम् । उकोचा । राज० ११५ ।

उकञ्चणदीप-ऊर्ध्वदण्डप्रत । भण० ५४८ ।

उकञ्चणया-उकञ्चनता-सुधवचनप्रशस्य समीपवर्तिविद  
 र्थवितरक्षाये क्षणमव्यापारतयाऽवस्थानम् । औप० ८१ ।  
 सुधवचनवगतस्य समीपवर्तिविदार्थवितरक्षणार्थं क्षणमव्या  
 पारतया अवस्थानम् । राज० २९ ।

उकंठो-उकन्ठ, आयु ध्येय श्रुत । उक्त० ४२० । उकंठ -  
 स्वगणनयनेन क्रिय । उक्त० ४१० ।

उकविधो-नैशादिक्खवाविरवचड । आचा० ३६१ ।

उक-उकण । व्य० द्वि० २४१ अ । गननाम । दण० १५४ ।

उकइयकरण सिन्धण, तुणण । नि० चू० प्र० १२४ अ ।

उकच्चिउय-आधिमाणा प्रयोदशमेनेपथी एसादणी । औप०  
 ८०९ ।

उकच्चिउया-कउटाए समीर उवककठ, त छादयतीति । नि०  
 चू० प्र० १८० अ ।

उकच्चिय-उडयत । नि० चू० प्र० १९ अ ।

उकड-उरकट्टे-उपेतम् । अ० प्र० ४०५ । कुट्टनम् । भाव०  
 ५८२ । प्रतुर । आच० ७७४ ।

उकड्डुआ - उरकट्टुकानि, यथाप्यातमनिगिष्ठाणि । ज० प्र०  
 १७० ।

उकड्डुआसणिय-उडुडुमानन-पीडादी पुताण्णनेनोपवेगन-  
 हयमभिग्रहतो यस्सालि म । टाण० २९८ ।

उकड्डुग-अपर्यंक, यो गेहाद्ग्रहण निष्ठासयति, चीगर  
 वा आकार्य परण्हाणि मोपयति, यौगुणप्रदो या । प्रश्न०  
 ४७ ।

उकड्डियं-उरकदितम्-उत्पागितम् । पिण्ड० ११६ ।

उकट्ठणं-उरकधनं-स्वतोऽपनयनम् । प्रश्न० २४ ।

उकड-उडिम, पथानुपूर्वोभवनम् । विदो० १६ । उकडम ।  
 विदो० १७४ ।

उकडमणणाभोगाकरिया-उकडमणणाभोगाकरिया, उड  
 नत्तवनपावनासमीक्ष्यगमनगमनादिक्रिया । भाव० ६१५ ।

उकडं-उरक-क्षेत्रगवादि प्रति अविद्यमानगजमेयद्वयम् ।  
 विषा० ६३ ।

उकरियामेदे-उरकट्टिकामेद -इदमस्य पत्रममेद । प्रज्ञा०  
 २६७ ।

उकरिसियखग्गो-आकुण्णत्त । भाव० ५५४ ।

उकल्ले निज्जिउं-उकडमवित्तम् । भाव० २२० ।

उकल्लयेह - अवरगमयति । भाव० ४०६ । उद्वयानि ।  
 नि० चू० द्वि० ५२ आ ।

उकल्लंयेति- उकडयेति । नि० चू० प्र० ११८ अ ।

उकल्ल-उरकल -ऊर्ध्वं घने तलाया यत्तम् । प्रश्न० २७ । उरकल -  
 प्रदेगवित्तम्, नैमित्तिकविशेष । आचा० ३५९ । नैमित्तिक ।  
 आचा० ३५९ । श्रीद्विजनीवमेद । उक्त० ६५७ ।

उकल्लति-उरकलति उन्नुत्तति । उक्त० १२४ ।

उकल्ल-उरकण, उरकला या । टाण० ३४३ ।

उकल्लिया-उरकलिया-उत्पुनर समुदाय । औप० ५७ ।

भण० ४६३ । श्रीद्विजजन्तुविशेष । औप० ३० । उमाह ।

सूय० २९६ । उत्पुनर समुदाय । भण० ११० ।

उकल्लियाभड-चक्रगोलियाभडय । दण० चू० १२१ ।

उकल्लियावाउ - उरकल्लिकावान, आदरवायुकायमेद ।  
 आचा० ७४ ।

उकल्लियावाए-उरकल्लिकामि प्रमुत्तराभि सम्मिधो को  
 वात उरकल्लिकावान । प्रज्ञा० ३० । औप० २४ ।

उष्कलियावाया—उष्कलिकावातः, उष्कलिकाभिर्णो पाणि  
सः । भग० १९६ । ये स्थिता स्थित्वा पुनर्वान्ति । उत०  
६९४ ।

उष्कस—उष्कर्यः—औषधम् । दश० १८९ ।

उष्कसणं—उदगतेषु प्रेरणं । नि० चू० वृ० ६३ आ ।

उष्कसार्द्र—उष्कपायी—प्रचलकपायी । उत० ४२० ।

उष्कसाहिजा । आचा० ३७८ ।

उष्कसिस्तमि—लघु सद्परशकललगनत उष्कर्षिष्यामि ।  
आचा० २४४ ।

उष्कसे—उष्कयन्—उत्तामयेत् । आचा० २९३ ।

उष्करस—उष्कर्षन्तीत्युष्कर्याः—उष्कर्षवन्तः, उष्कृष्टसङ्घापाः,  
परमानन्ताः । टाणा० ३५ ।

उष्का—उष्का—सुडुली । जीवा० २९ । ये मूलाग्निने विद्युत्  
विद्युत्प्रामिकाणाः प्रवर्षन्ति ते । जीवा० १२४ । महदेवतः  
प्रकाशकारिणो, रेखारहितो विस्फुल्लिङ्गः प्रभाकरो वा । आव०  
७५२ । वीषिका । नदी ८४ । सुडुली । आव० ५६६ । निप-  
तन् रेखासुक्ष्मे ज्योतिषिष्यतः । औष० २०५ । स्वदेहवर्णा  
रेखां पुष्पन्ती या पतति सा रेखाविरहिता वा उष्क्योतं पुष्पन्ती  
पतति सा । आव० ७३५ । गगनाभिष्कवा । जं० प्र०  
५२ । सुडुली । प्रज्ञा० २९ । पगासविरहितो य, महंतरेहा  
पदा । नि० चू० वृ० ७५ आ । सदेहवर्णं रेहं करंती जा  
पड् सा उष्का, रेहविरहिता वा उष्कोर्णं करंती पड्ती मा  
वि उष्का । नि० चू० वृ० ७० अ । अभिषिष्यताः । टाणा०  
४२० । आकाशजा । टाणा० ४७६ ।

उष्कापडणं—उष्कापातनम्, उष्कापातः । आय० ७३५ ।

उष्कापाय—उष्कापातः—व्योम्नि संसृष्टतज्वलननिपतन-  
रूपः । जीवा० २८३ ।

उष्कापाय—उष्कापातः, सरेतः सौद्र्योतो या तारकस्येव  
पातः । भग० १९६ ।

उष्कामयन्ति—उष्कामयन्ति—अपनयति । दश० ८६ ।

उष्कामुद्दीये—अन्तरहीपनाम । टाणा० २६६ ।

उष्कामुदा—उष्कामुगनामैव विगनितमोऽन्तरहीपः । प्रज्ञा०  
५० । अन्तरहीपविधेयः । जीवा० १४४ ।

उष्कारियमेय—उष्कारिणमेदः, एष्टप्रीजानामिषयो मेदः ।  
भग० २२४ ।

उष्कालिप—उष्कालिकं—कालवेलावर्जं पथ्यते तदूर्ध्वं कालि-  
कावित्युष्कालिकं—दशकालिकादि । टाणा० ५२ । कालवेला-  
वर्जं पथ्यते तद् । नदी २०४ ।

उष्कापाते—उष्का—आकाशजा तस्याः पातः उष्कापातः ।  
टाणा० ४७६ । व्योमसम्मूर्च्छितज्वलनपतनरूपः प्रसिद्ध  
एव । अनु० १२१ ।

उष्कासे—उष्कर्षणं, उष्कान्तं वा । भग० ५७२ ।

उष्ककृष्णा—सुशार्पयनम् । वृ० वृ० २५ अ । उष्को-  
र्षणा—सुशब्दना । आव० ५६ ।

उष्ककृष्ट—उष्कृष्टं—उष्कृष्टिनादः, आनन्दमहाभक्तिः । प्रज्ञा०  
४९ । प्रधानां कर्षणनिषेधाद्वा । भग० ५४४ । उष्कृष्टि—

आनन्दभक्तिः । जं० प्र० २०० । उष्कृष्टिः—आनन्दमहाभक्तिः ।  
भग० ११५ । उष्कृष्टः—उष्कर्षवती । भग० १६७ । उष्कृ-  
ष्टम्—कालिश्याल्युष्कपुष्पकलादीनां दक्षकृतानि अक्षयसङ्घानि  
चिञ्चिकादिप्रसमुदायो वा उष्कृष्टकण्डितः । दश० १७० ।  
शौद्रियकर्मणिगरीणि उपकले सुष्कभन्ति । दश० चू० १७६ ।

उष्ककृष्कलपलो—उष्कृष्कलपलः । आव० १०३ ।

उष्ककृष्टस—उष्कृष्टसः—प्रचुररमोपेय । पिण्ड० १४९ ।

उष्ककृष्टि—उष्कृष्टिः—आनन्दमहाभक्तिः । औष० ५९ । राज०  
१२२ ।

उष्ककृष्टितीक्ष्णनादो—उष्कृष्टिगिहनादः । आव० १४५ ।

उष्ककृष्टी—उष्कृष्टिः । आव० ४३३ । उष्कर्षणम् । सु०  
२८१ ।

उष्ककृष्णं—उष्कर्षणं—भुषसुर्कार्ये पालीरूपम् । मम० १३७ ।

उष्ककृष्णतरा—उष्कीर्णनराः, उष्कीर्णमन्त्रं यानां सात-  
परिस्थाना ताः । जीवा० १५५ ।

उष्ककृष्ण—उष्कर्षणं—गुणितः । प्रज्ञा० ५९ । उष्कीर्णमि-  
र्यणं, अतीवदयकम् । जं० प्र० ७६ । आर्कीर्णं । प्रज्ञा०  
२५ । प्रज्ञा० ५६१ । औष० ५४ ।

उष्ककृष्णं—उष्कीर्णनम्, गामाभ्येन सद्भदनम् । आव०  
६०४ । सद्भदनम् । विरो० ४४२ ।

उष्ककृष्णा—उष्कीर्णना, शक्येन—परया भग० ग मः उदना ।  
आव० ४६२ ।

उष्ककृष्णा—उष्कीर्णिगा—वधिनः । मृ० २०६ ।

उष्ककृष्णं—अतीवदयकम् । दश० ८६ ।

उत्फिक्रंश्रंखर-उत्फिक्रंश्रंखरं यामां गतपरिगाणां ता उत्फी-  
शान्तरा । प्रज्ञा० ८५ ।

उत्फिक्रंश्र-उत्फिक्रंश्र-मिलाडिपु नामवादि । दश० ८९ ।

उत्फिक्रणगाह-फलमाचककपर्दकादिभिक्रणानि । सू० डि०  
१५५ अ ।

उत्फिक्रिज्जमाण-धुरिकादिभिः कोष्ठादिपुदानां कोष्ठादिद्व-  
व्याणां वा उत्फीयमाण । जीवा० १९२ । उत्फीयमाण-  
धुरिकादिभिः कोष्ठादिपुदानां कोष्ठादिद्वव्याणां वा उत्फियमान ।  
जं० प्र० ३६ ।

उत्फिकलंतो-उत्फिकलन् । भाव० २०७ ।

उत्फकीरमाण-उत्फिरन्-वेधनकेन मन्धादिभिश्च । अनु०  
२२३ ।

उत्फकुंचणं-उत्फकुंच, ऊर्ध्वं शलाकारोपणार्थं वृषतम् । सूत्र०  
३०९ ।

उत्फकुञ्जिय-ऊर्ध्वसायमुत्फम् । आवा० ३४४ ।

उत्फकुट्टे । आवा० ३४२ ।

उत्फकुट्टहृत्थो - उत्फकुट्ट-मचितरणस्मृतिपत्तहृत्फलानि वा  
उत्फले सुम्भति, तेहि हृत्थो लिप्तो एव । नि० सू० प्र०  
३८ अ ।

उत्फकुट्टि-उत्फुट्टि-हृत्थविशेषेति । आवा० २३१ ।

उत्फकुट्टिकलयलो-उत्फुट्टिकलयल । आवा० १७५ ।

उत्फकुट्टिसीहणार्थं-उत्फुट्टि सिहनाद, हृत्थविशेषेति ।  
निरुक्ति । आवा० २३१ ।

उत्फकुट्टी-पुकारकरणे । नि० सू० सू० ६१ आ ।

उत्फकुट्टो-मचित्तवणस्मृतिपत्तहृत्फलानि वा उत्फले सुम्भति ।  
नि० सू० प्र० ३८ अ ।

उत्फकुड-उत्फुट्टकामन । आवा० ६४८ । टाण० २९९ ।

उत्फकुडुधुम्-उत्फुट्टकम्, यथास्थाननिविष्टम् । भग० ३०८ ।  
आप० १०७ । मुक्तासन । उत० ५५ । आधारे पुना  
लग्नम्पम् । भग० १२५ । आवा० ४२४ ।

उत्फकुडुयासण-उत्फुट्टकामनम्, वायुश्रेणमेदः । दश० २८ ।

उत्फकुडुती - उत्फकुडु-आगतानामपुनः पादाभ्यामवस्थित  
उत्फकुडुस्तम्प या ता । टाण० ३०३ ।

उत्फकुडुयाभाणवत्ये-उत्फुट्टक मन् भाजनवक्रानि-मोक्ष  
कारीने पलुपेसयेत्, यतो दक्षमनुपेक्षण उत्फुट्टेव कल्प्यात् ।  
आप० ११७ ।

उत्फकुडुयासणिय - वायुश्रेणमेदः । भग० १२१ । वायु-  
श्रेणविनीयमेदः । टाण० ३९७ ।

उत्फकुडुह-उत्फुट्टे-ऊर्ध्वं गच्छति । उत० ५५१ ।

उत्फकुडुडिका-वृत्ताभ्यन्तरोपणार्थमिदम् । उत० ३५५ ।

उत्फकुडुडिया-उत्फुट्टक । भाव० १९४ ।

उत्फकुडुय-उत्फुट्टिन-वृत्ताभ्यन्तरोपणम् । प्रभा० २० ।

उत्फकुडुयिणं - उत्फुट्टिनं - अर्थकमहाभ्यन्तरोपणम् । प्रभा०  
१६० ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्टयति-गन्तव्यार्थोपणयति वृत्तादवा-न्याय-  
मतिप्रवाहतादुर्वं यन् उत्फुट्टम् । द्वितीयार्थमर्थकम्  
पद्यन् नाम । प्रभा० २६ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उत्फकुडुले-उत्फुट्ट-गमूहः । औप० ११०, ११६, २११ ।

उक्कोसतिसामासे-उक्कटवृष्णासः-उक्कटा वृद्धमासयोः-  
 उक्कटापाठोर्मस्मिन् काले सः । ओष० २१० ।  
 उक्कोससंधरणं-उक्कटं सस्तरथं-निक्षायमवतीर्णास्ततः  
 पर्याप्त हिंदिला यावत् तृतीयपौरुष्या आदौ स्वाध्याय-  
 प्रश्नापनवेला तावत् सशिवर्षते एतद्, अथवा तृतीयपौ-  
 रुष्या आदौ स्वाध्यायप्रश्नापनवेलायावत् सशिवर्षते एतद् ।  
 व्य० द्वि० १६३ आ ।  
 उक्कोसा - उत्कर्ष - प्रकर्ष - तद्योगादुत्कर्षा उत्कर्षतीति वा  
 उत्कर्षा-उक्कथा । ठाणा० १३९ ।  
 उक्कोसेषं । अतु० १६३ ।  
 उक्कले-उक्ष-मन्थनयो-विषयविषयीभावलक्षणः । नदी ७१ ।  
 सम्बन्धन-अन्यजनकभावलक्षणम् । ठाणा० ५० ।  
 उक्कलेदं-उक्कन्दम् । आष० १७५ । अवस्कन्दः । आष०  
 ३०० ।  
 उक्कलेधो-अवस्कन्दः, छलेन पावकलमर्दनम् । प्रश्न० ३८ ।  
 उक्कलेपिर-उरकण्ठितः । (सं०) ।  
 उक्कलेदुमन्त्रा - देशीपदं, पुन.पुन.अध्यापे । व्य० प्र०  
 ६५ आ ।  
 उक्कलेणिहिति-उरगनीः । आय० २२६ ।  
 उक्कले-स्थानविशेषः । नि० चू० द्वि० ८३ आ ।  
 उक्कलेडि-उत्पा-स्फाली । पिण्ड० ८४ ।  
 उक्कलेधो-मेवितः । मर० ।  
 उक्कलेत्त-उत्क्षिप्तं, वेगविशेषः । जं० प्र० ४११ । उल्पा-  
 दितम् । त्रिपा० ४७ । आजनयनम् । ओष० ८८ ।  
 उक्कलेत्तचरक-उत्क्षिप्त-स्वयमेवजनय पाकभाजनादुद्धृतं  
 तदर्थमग्निमहदग्निशेषाच्चरति-तदुद्यवेदनाय गच्छतीति उत्क्षि-  
 प्तचरकः । ठाणा० २९८ ।  
 उक्कलेत्तचरगा-निर्दोषभाजनेदविशेषः । नि० चू० नू० १२ आ ।  
 उक्कलेत्तचरगो-उत्क्षिप्तचरक-उत्क्षिप्तं-पाकपिण्डराहुद-  
 प्तमेव चरति-मवेगमति यः सः । प्रश्न० १-६ ।  
 उक्कलेत्तचरगा - ज्ञातायां प्रथममाध्ययनम् । आष० ६५३ ।  
 प्रश्न० प्रथमं ज्ञानम् । उल्पा० ६१४ ।  
 उक्कलेत्तचरण-यथाज्ञे प्रथमज्ञानः । मम० ३६ । ज्ञातायां  
 प्रथममाध्ययनम् । आष० ६५३ ।  
 उक्कलेत्तचरणिकलेत्तचरगा - निर्दोषभाजनेदविशेषः । नि०  
 चू० नू० १२ आ ।

उक्कलेत्तचरगा - उत्क्षिप्तपूर्वा-वेपाम्नादौ दर्शिता यथा-  
 ५५५ वस्तु यूयमिति । आषा० ३६५ ।  
 उक्कलेत्तय-उत्क्षिप्तं-प्रथमतः समारभ्यमाणम् । जीवा०  
 २४७ ।  
 उक्कलेत्तविशेषो-उत्क्षिप्तविशेषः । आष० ८५४ ।  
 उक्कलेत्ता-उत्क्षिप्ता-निष्काः । जं० प्र० २२१ ।  
 उक्कलेत्ताय-उत्क्षिप्तकं-प्रथमतः समारभ्यमाणम् । जीवा०  
 १९४ ।  
 उक्कलेत्तो-उत्क्षिप्ता-कृतः स्थापितः । आष० ४३३ ।  
 उक्कलेत्तविया-उत्क्षिप्ता । आष० ३७० ।  
 उक्कलेत्तु-वनस्पतिविशेषः । भग० ८०१ ।  
 उक्कलेत्तनिययथा - उक्कलेत्तनिययिता, विषयस्तथा । वृ०  
 द्वि० ३५५ आ ।  
 उक्कलेत्तव-उत्क्षेप-द्वेषोत्पादनम् । व्य० प्र० २३२ आ ।  
 उक्कलेत्तवो-उत्क्षेपः-प्रारम्भवाक्यम् । निरय० २३ ।  
 उक्कलेत्तवग-उत्क्षेपक-वैरादलादिमयो मुष्टिप्रादण्डमन्थनभग ।  
 भग० ४६८ । शिवावासात्क्षेपकः । व्य० प्र० २३२ आ ।  
 उक्कलेत्तवण-उत्क्षेपकः-वैरादलादिमयो मुष्टिप्रायो टण्डमन्थ-  
 भागः । ज्ञाता० ४८ ।  
 उक्कलेत्तो - उत्क्षेप-प्रस्तावना । त्रिपा० ५५ । क्षेपम् ।  
 ओष० ११० ।  
 उक्कलेत्तो-परिधानवशैरुत्प्रेयाः । वृ० प्र० १७७ अ । परिधानं,  
 वत्यस्म अक्षिप्तचरकए उक्कलेत्तवणो पाणिद्विज उक्कलेत्त  
 भवति । नि० चू० द्वि० १५४ आ ।  
 उक्कलेत्तोरभरणं । नि० चू० प्र० २९० अ ।  
 उक्कलेत्त-उदगाया । प्रश्न० ८ ।  
 उक्कलेत्तिय-पुष्टिकाकारः । नि० चू० द्वि० १ आ ।  
 उक्कलेत्तो-उदगली । आष० ८५५ ।  
 उक्कलेत्तो-स्फाली । भग० ३२६ ।  
 उक्कलेत्तो-निगमयो । नि० चू० प्र० ७७ अ ।  
 उक्कलेत्तगतो-योनिद्वाररक्षणार्थं कथम् । ओष० ३-५ ।  
 उक्कलेत्त-उपयु-अप्युपयु । मर्म० ४ । भग० १२ । ज्ञाता० ९ ।  
 उक्कलेत्त-उपयु-शक्तिपुष्टयेन शक्तिर्या जायते । आषा० ८ ।  
 आदिदेशावभाषिणाऽऽध्यायनेन जायते । भग० ११५ ।  
 आरक्षकः । आष० १७८ । आदिदेशेन य आरक्षकत्वेन  
 निवृत्तमर्दनतय । अथ० २६ । गुभाप्ययमापयत् ।

आ० ८०० । आरक्षिकाः । आचा० ३०७ । आदिगजेनाऽऽ  
रक्षकत्वेन ये व्यवस्थापितास्तद्वश्य । टाणा० ३५८ । भग  
वतो नाभियम्य राज्यकाले ये आरक्षका आसन् । टाणा०  
११४ । आरक्षकादय । उत० ४१८ । आदिदेवैरारक्षन्त्ये  
नियुक्तास्तद्वश्य । भग० ४८१ ।

उगमकुले-उदगुत्तम् । आ० १०५ ।

उगमच्छ-उदगत्य-मेने तत्रोदगमन कृता । भग० २०७ ।

उगमतया-उप्रतया-अप्रध्यानशानादिवान् । सूर्य० ४ ।  
अष्मादि । टाणा० २३३ । उम-उत्कटं दारुणं वा कर्मस  
यूत् प्रति तप-अनशानादि । उत० ३६५ ।

उगमवित्ति-उगते आदिषुचे वित्ती जस्य सो, आदिष  
मुत्तीए जस्य वित्ती सो उगमवित्ती । नि० सू० प्र० ३०८ आ ।

उगमतेय-उप्रतेजा-तीव्रप्रभाव, तीव्रत्विय । प्रथ० १०७ ।

उगमपुत्तो-उप्रपुत्र, क्षत्रियविशेषजन्ततीय । सूत्र० २३६ ।

उगम-उदगम षोडशविध आधाकर्मादिशेष । प्रथ० १५५ ।

आधाकर्मादिशेषविशेष । आच० ५०६ । उदगमनमुदगम -  
पिण्डदे प्रभव । टाणा० १५९ ।

उगमम्-आगच्छति । आच० ४२२ ।

उगमकोडी-उदगमकोटि-उदगमनोपस्था । पिण्ड०  
१९७ ।

उगमित्तं-उदगमितम् । आच० ८५१ ।

उगमोषघाते-उदगमोषघात-उदगमगंधराधाकर्मादिभि  
षोडशप्रकारैर्भक्षयानोपकरणालयानामशुद्धता । टाणा० ३२० ।

उगमय-उदगत-निष्काशित । औप० ८८ । ऊर्ध्वं गता

उदगता-उदगवर्धिता । ज्ञाता० १४ । व्यूना । ज्ञाता०

२३ । उदगता-सरिथता । ज० प्र० ७१ । निारण ।

भग० ४७८ । उपरिवित्तिनी । ज० प्र० २९२ ।

उगमयमुत्ती-सूर्यादुगमात् परं प्रतिप्रथावप्रहाद् यति  
प्रचारकच्छरीरत्वात् । सू० तृ० १०५ अ । मूर्ति-शरीरं  
त जस्य प्रतिप्रथावप्रहाद् उचिते आह-उरुगतिनिमित्त प्रगारं  
करोति सो । नि० सू० प्र० ३०८ आ ।

उगमयवित्ति-उगमय इति वा उदभोति, वर्गने वृत्ति,  
उगमयए मूलि जस्य वित्ती सो । नि० सू० प्र० ३०९ आ ।

उगमवर्ह-उप्रवती, रात्रित्तिधनाम । ज० प्र० ४९१ ।

उगमवती-उप्रवती, रात्रित्तिधनाम । सूर्य० १४८ ।

उगमिसं-उर्ध्वरविपम् । भग० ६७२ ।

उगमिस्वा-उमं विपं वेगं ते उपरिषा । प्रजा० ४६ ।  
उर परिगर्परिगण । जीरा० ३९ ।

उगमसेण-उप्रमेन, द्वारिकाया गता । आच० १४ । मृग  
विशेष । सू० प्र० ३० अ । मयुगदृष्टानि, कंसपिता । उत०  
४९० । राजमुण्य । अन्न० २ ।

उगमर्ह-योनिद्वारं तदवयवमिति । सू० द्वि० २५१ आ ।

उगमह-अप्रह । औप० १५० । भर्मशामनम् । दग०

१६७ । अह-रूपं सामान्य कृद्गतीनि । विशेषे १६० ।

आधय । विषा० ३३ । जोगिदुवाग्म्य सामश्री मंजा

उगह इति । नि० सू० प्र० १७५ आ । उर

प्रहम्-अवष्टम्भम् । औप० १५४ । एनद्रहम् । औप०

१७१ । प्रथमपरिच्छेदन अंगेपरिशेषनिरुपेभानिर्देश्यस्या

देवप्रहणम् । टाणा० ५१ । अवष्टयते-श्यामिना स्त्रीनिपते

य गोऽवप्रह । भग० ७०० । सामान्यार्थम्य-असोपविने

परिच्छेदनामवप्रह । भग० ३४४ । अवप्रह-अभ्यक्षय

परिच्छेद । प्रजा० ३११ । अवप्रहणम् । मुन्द्रा एन दृ

वधारणम् । उत० १४५ । अवप्रह-परिग्रह । मृप्र०

१०५ । अविचिन्तानोपम्य सामान्यरूपम्यानिर्देश्यस्य स्या

देवप्रहणमवप्रह । राज० १३० । पटिगमो । नि० सू०

द्वि० ११६ अ । अवप्रह-आभवनव्यवहार । व्य० द्वि०

९३ अ । अवप्रहणमावप्रह-अनिर्देश्यसामान्यमात्ररूपार्थ

प्रहणम् । नदी १६८ । आवाग । निर्य० २ । अवप्रहण-

मन्त्रच्यमानस्य शब्दादिभ्यस्त्यार्थस्याव्यक्तस्य परिच्छेद ।

नदी १६८ ।

उगमहजायणे-अप्रहयाया-वसतिम्याम्यनुज्ञा । आ०

६५८ ।

उगमहणंतय-योनिद्वारमार्थं यथम् । सू० द्वि० २५१ आ ।

उगमहणमेधाधी-अवप्रमेधाधी, मुद्रार्थगहणदृष्टान्तान् ।

सू० प्र० १०५ आ ।

उगमहपडिमा-अवष्टयन द्रव्यप्रयोग-वगतिम्य-प्रतिमा-

अभिप्रहा अवमहप्रतिमा । टाणा० ३८७ । आतागम्य

षोडशमध्ययनम् । उत० ६१७ । आचा० ४०३ । मम०

४४ । आचारप्रक्रमे द्वितीयधृतदृष्टयस्य मन्त्रमध्ययनम् ।

प्रथ० १५५ । आचारप्रक्रमस्य षोडशो मेद । आच० ६०१ ।

उगमहिमा-अवहृतीता-पमशी पिण्डेयग । आ० १०० ।

**उगग्रहिए**—अवग्रहीत-परिवेगणार्थमुपाटित । ठाणा० ४६५ ।  
**उगग्रहिये**—अवग्रहीतम् । भाष० २८८ । बद्ध । भाग०  
 ४५९ । अवग्रह्याति—आदति हस्तेन दायस्तद् । ठाणा०  
 १४८ । अवग्रहीता—भोजनकारे शरावादिद्रव्यहृतमेव भोज  
 नपात प्रकृतो गृह्यत । ठाणा० ३८६ । यद् अवग्रह्याति  
 यत्र सहरति यत्र आसने प्रक्षिपति । ध्व० द्वि० ३५४ अ ।  
 परिवेनार्थमुपाटितम् । औष० ३७ । अवग्रहोऽस्यास्तीति  
 अवग्रहिक्र-वपतिपीठकलादिक । औषग्रहिक्र-दण्डवादिक-  
 सुपधिजातम् । औष० ३७ ।  
**उगग्रहियप्**—अवग्रहीतक-बद्ध । राज० ४४ ।  
**उगग्रहिया**—अ परिवेगणे परिवेगणाए परस्म कडुदुत्तादिणा  
 उगग्रहिय आणियति युत भवति, तेण य त पडिमिद त  
 तदुक्खिखं चेत्त साधुस देति एण उगग्रहिया ) ति०  
 चू० लू० १२ अ ।  
**उगगा**—आरक्षिका । वृ० द्वि० १५१ आ । कुलार्थप्रथमभेद ।  
 प्रजा० ५६ । खचविशेष । ज० प्र० ११८ । आग्नेया  
 यथापिता । राज० १२१ । प्रमुणा आरक्षस्त्वेन नियु  
 चास्ते उगा । ज० प्र० १४९ ।  
**उगगाढो**—प्रपुण । चू० प्र० २९७ अ ।  
**उगगादो**—उद्गिरण उगगाली । ति० चू० प्र० ३१५ अ ।  
**उगगाद्विद्रासो**—दासविशेष । ति० चू० द्वि० ४० अ ।  
**उगगालो**—उद्गालयेत्-भ्रमनिष्ठोवन इत्यति । औष० १८६ ।  
**उगगालो**—उद्गिरण उगगाली । ति० चू० प्र० ३१५ अ ।  
**उगगाहिक्रणं**—उद्ग्राह्य । भाष० ३९९ ।  
**उगगाहियण**—उद्ग्राहितेन-पात्रवन्धनेन पात्रकेण । औष०  
 १२२ ।  
**उगगाहितं**—उद्ग्राहितम्-गृहीतम् । भाष० ६१८ । उरिक्षम,  
 उपकरणम् । औष० ७७ ।  
**उगगाहिमं**—अवगाहिम पञ्चानं रण्डरापाति । प्रथ० १६३ ।  
**उगगाहियं**—उद्ग्राहितं-गृहीत पात्रकम् । औष० १४९ ।  
**उगगाह्ये**—उद्ग्राहयति-महद्वितेनारते । औष० १८४ ।  
**उगगाह्ये**—उद्ग्राह्य-सयन्त्रियिवा । औष० ७४ ।  
**उगगाहिक्रण**—उद्ग्राह्य । उत० १०० ।  
**उगगारिक्रण**—उद्ग्राह्य । भाष० ७०८ ।  
**उगगुडिया**—उद्ग्राहितम् । भाष० ३०८ ।

**उगगोवणा**—उद्गोवणम्-विदक्षितस्य पदार्थस्य अन्नप्रकाश  
 विधीर्षा । विण्ड० २९ ।  
**उगगोवेति**—उपाएति । ति० चू० प्र० २३४ अ ।  
**उगगडयं**—अनुवर्षणम्, अनुकरणम् । भाष० ५११ ।  
**उगगाह्ये**—उद्ग्राह्ये—उद्ग्राहित, विनञ्जितं विनाशयिष्यन्मात्र  
 त्वेनोपचारात् । ठाणा० ५०२ ।  
**उगगाहम**—उद्ग्राहितम्—उद्ग्रातो-भागपातस्तेन निर्गम्य,  
 लघु । ठाणा० १६३ ।  
**उगगाड**—उद्ग्रा—अदत्तार्गलमीपत्स्थिति वा । भाष० ५७५ ।  
**उगगाडकवाडउगगाडणा**—उद्ग्राह्यपादोद्ग्राह्या, उद्  
 ग्राह्यम्—अदत्तार्गलमीपत्स्थिति वा कपाट तस्योद्ग्राह्य-सुनरा  
 प्रेरणम् तदेव । ध्यानवत्सदाकरनघट्टना । भाष० ५७५ ।  
**उगगाडणकवाड**—उद्ग्राह्यपाट—अनर्गलतरपाट । भाष०  
 १६६ ।  
**उगगाडाय पोतिसिय**—उद्ग्राह्यौदक्याम् । भाष० ८३८ ।  
**उगगाडितो**—उद्ग्राहित । भाष० ३१७, ३१८ ।  
**उगगाडिया**—उद्ग्राह्यात् । भाष० २९२ ।  
**उगगात**—उद्ग्रात मासपात । ठाणा० १६३, ३१५ ।  
 लघुस्वरलक्षण । ठाणा० ३११ ।  
**उगगातिते**—उद्ग्रात-भागपातो यत्रास्ति तदुद्ग्रातिक, एति  
 लार्थः । ठाणा० ३२५ ।  
**उगगाय**—आचार्यस्य पदविशिनितमन्त्रययनम् । उत०  
 ११७ । आचार्यकल्पस्य पद्विदिततमी भेद । भाष०  
 ६६७ ।  
**उगगायह**—लघुनि । चू० प्र० १४५ अ ।  
**उगगोसणाट्टणीया**—उद्गोषणाम्बानीया । भाष० ३८५ ।  
**उगगतेजा**—आधाकर्मण एव अभोजनताया पदाति । ति०  
 ७१ ।  
**उगगसेन**—भागराजा, राजीमया पिता । दश० ९५ ।  
**उगगसेनतनय**—नभ मेनुजमार । विश० ६१० ।  
**उगगरिमा** । ति० चू० प्र० १०५ आ ।  
**उगगोसेहि** । ति० चू० प्र० ३४४ अ ।  
**उचित**—जित आश्रयात् । भाष० ५९४ ।  
**उच्चूल्यालय**—अथ त्रियय उचित शरस्य उपवृत्तं वा  
 शाक्यम् । ति० ७० ।  
**उच्च**—उच्च-पुण्य । भाष० १६५ ।

**उद्योग**-उद्योगः-दन्तरामः । प्रजा० ३६० । उद्योगो-  
 दन्तराम । ज० प्र० ३३ ।  
**उद्योग**-उद्योगो-दन्तरामः । राज० ३२ ।  
**उद्योगिय**-सगातिं । ( तं० ) ।  
**उद्योग्य**-उद्योग्य-उद्योगो-सदानामोत्कर्षणप्रवणरुद्ध-  
 अभिप्रायो यस्य सः । प्रथ० ३१ ।  
**उद्योग्या**-उद्योग्या-दिद्विजनेन । अप्रतिहारिरुतया । शृ० डि०  
 २१९ अ ।  
**उद्योग्याभयानो**-तुमे मम-एत्तिचरं कालं कम्मं वायव्यं  
 जं जं अहं भणामि, एत्तिचरं तेग धणं दाहामिति । ति०  
 शृ० दि० ४४ ।  
**उद्योग्य**-उद्योग्यं । जं० प्र० ३० । अनु० १७१ । उद्योग्य-  
 उद्योग्यं । जं० प्र० ३२१ । उद्योग्यः । टाणा० ६९ । ऊर्ध्व-  
 रिपतस्यैकमपरं नियतवित्तस्यान्यत् गुणोद्धितरूपम् । टाणा०  
 ३६ ।  
**उद्योग्याया**-उद्योग्याया, छायायाः पयो भेदः । सुव्यं० ५५ ।  
**उद्योग्याभयानो**-उद्योग्याभयानो-मूष्यन्तलियमे कृत्वा यो  
 नियतं यथावपरं कम्मं कार्यते सः । टाणा० २०३ ।  
**उद्योग्यविभागो**-उद्योग्यविभागः उद्योग्यः । उद्योग्यं ३०३ ।  
 उद्योग्यविभागः । आब० ७१९ ।  
**उद्योग्या**-सुधिरता । पिण्ड० १०० ।  
**उद्योग्यधे**-उद्योग्यः-ऊर्ध्वं चयने-राश्रीकरण तद्रूपो मन्थ  
 उद्योग्यन्थः । भग० ३१५ ।  
**उद्योग्येति** । ति० शृ० प्र० २०७ आ ।  
**उद्योग्यो**-उद्योग्यः । आब० ३८५ । आब० ३१७ ।  
**उद्योग्य**-ऊर्ध्वं चिता, उपरिदिशतयेन वा । उद्योग्यं ११० ।  
**उद्योग्यो**-उद्योग्यो-आगतः । ओष० १७७ । ति० शृ० प्र०  
 १८८ अ ।  
**उद्योग्यो**-उद्योग्यो-यद्दुदयवशाद्गतमजानिउलबलतपोर्य-  
 श्वधुतगरास्रापुष्यानामनप्रदानाञ्जलिद्वयहादिमन्त्रभयस्तत् ।  
 प्रजा० ४७५ । मानसशास्त्रं । आभा० ११६ ।  
**उद्योग्यो**-उद्योग्यो-उद्योग्यो-लक्ष्म्यादिशिवेऽपि पूजयन्त्या  
 गोत्रं-बुलमस्येते । उद्योग्यं १८८ ।  
**उद्योग्ये**-उद्योग्ये-विशः । भग० ८७ । मजा । शृ० प्र०  
 ३०६ अ । मण्डा । ति० शृ० प्र० १८३ आ । सुरीय । आब०  
 ५६५, ६१६, ७८१ । उद्योग्यं ५१७ । मम० ११ । ज०

प्र० १८८ । टाणा० ३४३ । शरीरगद्गु-प्रायश्चित्तव्यवहारे-  
 अयति चरतीति वा उद्योग्यः-विशः । आभा० ४०० ।  
**पुरीयगिग्रापणम्** । उद्योग्यं ३५७ । मृदुमैषः । मृदु पुरीयगु  
 र्गमं कुर्यात्ति, अद्योग्यः पुरीयगममये कुर्यात्ति वा ।  
 ओष० ५६ ।  
**उद्योग्यभूमि**-उद्योग्यभूमि-पुरीयभूमिः । भाव० ७८४ ।  
 उद्योग्यप्रशक्तिविमलैश्च, मन्तव्यत्तत्तया कुर्यात्तमेदः ।  
 टाणा० ३८७ ।  
**उद्योग्याभय**-ऊर्ध्वमुद्योग्यभूमिः । आभा० ३११ । उद्योग्य-  
 लयिताम्-अपनेतारम् । आभा० १६९ ।  
**उद्योग्याभयि**-उद्योग्यभयि-उद्योग्यि । ओष० १७७ ।  
**उद्योग्याभय**-उद्योग्यभय-उद्योग्यभयः । आभा० ३७४ ।  
**उद्योग्याभय**-उद्योग्यभय-अद्योग्यभयः । टाणा० ३४७ ।  
**उद्योग्याभय**-उद्योग्यभय-उद्योग्यभयं नाम मीं पुर्वेत्तु, क्षवर्त्तु नाम  
 पुर्वेत्तु । आभा० ३६३ । शोभनामोभयम् । शोभा० १६६ ।  
 उद्योग्यभयम् । दम० १६६ । अनुगुलप्रार्थनम्, अद्योग्यभय  
 वा । भग० १८१ ।  
**उद्योग्याभय**-अनुगुलप्रार्थना, अद्योग्यभयः । अद्योग्यं १८८ ।  
 उद्योग्यभय-गुलपयो नानाभयः वा । मृत्त० २०३ ।  
 ऊर्ध्वं चिता उद्योग्या, शीतातपनियारतव्यादिगुणं शयाननग-  
 परिस्थितयेन वा उद्योग्या, तद्विपरीतास्तवया, अद्योग्येऽपि  
 उद्योग्या, माताप्रशारा वा । उद्योग्यं ११० । शोभनामो-  
 भयभेदेन नानाप्रशारा । दम० १८४ । अद्योग्यभयः ।  
 भग० ६८३ । ज्ञाना० २०० ।  
**उद्योग्याभयार्**-उद्योग्याभयानि-विद्युत्तारिषुप्रथमं नानाविधानि  
 उद्योग्यतानि वा शेषवतयेषवा महाप्रदानि । उद्योग्यं ३६३ ।  
**उद्योग्य**-उद्योग्यं, उद्योग्यकारणं, पादभयैः पादभयम् । ज०  
 प्र० ३६५ ।  
**उद्योग्यभय**-उद्योग्यभयम् । पिण्ड० ११० ।  
**उद्योग्य**-संज्ञाभयभयानेतिष्ठे । शृ० प्र० २१७ अ ।  
**उद्योग्य**-उद्योग्यभय-भयम् । दम० १०४ ।  
**उद्योग्य**-उद्योग्य-उद्योग्यम् । आब० ८११ ।  
**उद्योग्यभय**-उद्योग्यभयम् । आब० १७० ।  
**उद्योग्यभय**-अद्योग्यं, उद्योग्यभयः । आब० १४३ ।  
**उद्योग्यभय**-अद्योग्यं-उद्योग्यभयं मुग्धाभयं । अद्योग्यं ६३ ।

उच्यंती-उचिचन्वती-अवचये कुर्वती । दश० ४१ ।  
 उच्येःश्रवा-सुरवेन्द्रवाहनं हयः । जं० प्र० २३५ ।  
 उच्योदय-उच्योदयः, ब्रह्मदत्तस्य प्रधानः प्रथमः प्रामाद ।  
 उत० ३८५ ।  
 उच्योलपहि-उच्युलकैः, छंशभिः चुलकैः । आच० ६७८ ।  
 उच्छंग-उत्सङ्गः-पृष्ठदेशः । जं० प्र० २६५ । पृष्ठदेशः ।  
 औप० ७१ । भग० ४८० ।  
 उच्छण्णं-उच्छिन्नम्, क्षीणम् । आच० ६७०, ६७१ ।  
 उच्छद्यति-बोल करोति । औप० १५३ ।  
 उच्छन्नं-अपशब्द-विरुपं छन्नं-स्वदोषाणां परशुणानां वाऽऽ-  
 वरणसंपच्छन्नं । उत्पत्तं, न्यूनत्वं वा, द्वितीयाधर्मद्वारस्य  
 चतुर्दशं नाम । प्रश्न० २६ ।  
 उच्छन्नानी - उच्छन्नानी-यावत्शक्तिरुच्छान्नित्तानी ।  
 प्रश्न० ४६१ ।  
 उच्छयं-उच्छयं-व्यस्तम् । आच० १८४ ।  
 उच्छलन्त-उच्छलन्तः-उद्वलन्तः । प्रश्न० ६३ ।  
 उच्छ(स्थ)ल-उत्-उत्तानि स्थलानि-धूम्युच्छयंरूपाण्युच्छ-  
 (स्थ)लानि । भग० ३०३ ।  
 उच्छलिभो-उच्छलितः-निर्गतः । आच० ४०२ ।  
 उच्छयो-उत्सवः-शम्भेस्तवादिः । प्रश्न० १५५ । इन्द्रोत्स-  
 वादिः । प्रश्न० १४० ।  
 उच्छहया-उत्सहन्-अर्थोद्यमवान् । दश० २५३ ।  
 उच्छा-तुच्छा, रिक्ता । (गणित०) ।  
 उच्छाहमो-उत्साहितः । आच० ३९८ ।  
 उच्छापह-आग्राहयति । आच० ६२४ ।  
 उच्छाडणं । नि० सू० प्र० १११ अ ।  
 उच्छायणयाप-उच्छादनतादि, गर्विताचित्तनदगापम्भे-  
 र्छादनाय । भग० ६८४ ।  
 उच्छाह-उत्साहः-वीर्यं । भग० ११८ ।  
 उच्छिपक-अपचिपक-चौरिभिः । प्रश्न० ४७ ।  
 उच्छिपणं - उच्छिपणं-जलमापानमाग्नाहीनायाः कर्मणम् ।  
 प्रश्न० २२ ।  
 उच्छिपणं । नि० सू० द्वि० १०४ अ ।  
 उच्छिपणोत्साहारं-उच्छिपणोत्साहारम्, उच्छिपणोत्साहार-  
 नत्साविभेदपदं वक्ष्ये ११ । भग० २०० ।

उच्छिन्नसामिय-उच्छिन्नस्वामिकम्, नि सत्ताकर्मभूतस्वामि-  
 कम् । भग० २०० ।  
 उच्छिन्नसेउय-उच्छिन्नमेतुम् लक्षकमयिदम् । भग० २०० ।  
 उच्छिन्ना-निर्गुणताका । उपाण० २९४ ।  
 उच्छु-उच्छु । दश० २२६ । आच० ८५४ ।  
 उच्छुकिभो-सुसुप्तितः । सू० द्वि० २५५ अ ।  
 उच्छुखण्ड-उच्छुखण्डः । दश० ११६ ।  
 उच्छुगंडिय-उच्छुगण्डियं-नपक्वेषुसकलम् । आंचा० ३५४ ।  
 उच्छुघर-उच्छुघरम् । व्य० द्वि० ३१९ अ । आच० ३०१ ।  
 नि० सू० द्वि० १०९ अ । विभे० १००० ।  
 उच्छुजंतं-उच्छुयन्तम् । आच० ८२१ ।  
 उच्छुद्धो-उन्मत्तः । विभे० ५१५ ।  
 उच्छुर्कं-विक्षिप्तम् । औप० १५० । परिलक्षं । सू० द्वि०  
 १३३ अ । रोमाघ्रातं । सू० सू० २३ अ ।  
 उच्छुभ-आधिक्येन भिष, प्रवेद्येत्थं । प्रश्न० २० ।  
 उच्छुभह-विक्षिप्तयेत्थं । भग० ६८५ ।  
 उच्छुभेरयो-अपनीतत्यगिष्ठुयच्छेका । आच० ३४८ ।  
 उच्छुहर-अवष्टनानि, निष्पतीलयं । ज्ञात० ६८ ।  
 उच्छुद्धं-उज्जित सरकारगत्यागात् । सू० ५ । उज्ज-  
 तम् । भग० १२ । राज० ५७ । गिा० ३४ । औप०  
 ८४ । जं० प्र० १६ ।  
 उच्छुद्ध-निःसृतः । सू० १२ । अक्षिप्त-अर्गताभाना-  
 तिष्ठासितः । श्रीवा० २७९ । रत्नानाकवशिरो-विष्ठा-  
 तितः । जं० प्र० १११ । प्रश्न० ८१ ।  
 उच्छुद्धसरीरे-उच्छुद्धसरीरः-उच्छिन्नमिर्गितं तस्मैवा-  
 र्त्वागात् शरीरे येन सः । भग० १३ ।  
 उच्छुद्धार्-हृदितानि । सू० प्र० ५० अ ।  
 उच्छुर्नं । औप० २१६ ।  
 उच्छुनायस्था-विनष्टास्थि । श्रीवा० १०७ ।  
 उच्छुर्-अक्षम् । औप० १४८ ।  
 उच्छुरिया-मूलवृत्ता । सू० द्वि० ३५६ अ ।  
 उच्छुया-उच्छुया नाम वस्त्रं कर्तुतामस्य तत्राश्चक्षेः  
 मंगायतम् । व्य० द्वि० ७ अ ।  
 उच्छुर्दिह-उच्छुर्दिहति । आच० ११९ ।  
 उच्छुर्दिहयेदधर्षणं-उच्छुर्दिहयेदधर्षणं तत्राश्चक्षेः  
 तत्राश्चक्षेः तत्राश्चक्षेः तत्राश्चक्षेः



निमीरियाए तिबिहेणं एयं उच्छ्रोभवंदणयं । नि० चू० द्वि० १३ अ ।

उच्छ्रोभो-आलः, कल्ङ्क । आच० ४०१ ।

उच्छ्रोळणं - एषसि धोषण उच्छ्रोळण । नि० चू० द्वि० ११८ आ । तेषादिणा फामुगभफामुण देसे उच्छ्रोळणं । नि० चू० द्वि० ८९ अ । उच्छ्रोळनं-अयतनया शीतोदकादिना हस्तपादादिप्रक्षालनम् । सूत्र० १८३ ।

उच्छ्रोळणा-उच्छ्रोळना-पुरीषमुग्ध्य प्रभुतेन पयसा क्षालनम् । ओष० ५५ । ओष० १०० । एषसि उच्छ्रोळणा । नि० चू० प्र० १८८ अ ।

उच्छ्रोळणाषहोअ-उच्छ्रोळनया - उदकायतनया प्रस्येण धावति-पादादिशुद्धिं करोति य स उत्सोळनाप्रयात्री । दश० १६० ।

उच्छ्रोळिति-प्रक्षालयन्ति । गणि० ।

उच्छ्रोलेद्-अभतो मुखा चपेया ददाति । भग० १७५ ।

उच्छ्रोलेज्ज-ईपद् उच्छ्रोळनं विख्यात् । आच० ३६३ । सहृदुदकेन प्रक्षालनं कर्वात् । आच० ३४२ ।

उच्छ्रोलेति-सहृदुदकेन प्रक्षालनम् । नि० चू० प्र० ११६ आ ।

उज्जु-कञ्ज-साधारहित संयमवान वा । दश० १६० ।

उज्जुगं-दृष्टिवाचे मृत्रमेद । सम० १०८ ।

उज्जुमह-कञ्जुमति, कञ्जनी-प्रायो षादिमामान्यमात्रवा हिणी मति । विद्यो० ३८० ।

उज्जुवालिभा-कञ्जुनालिभा, वीरस्य केरलोत्पत्तिम्भानम् । आच० १३९ ।

उज्ज-आर्षपादुदशोतयतीति उद्दशोत । ऋत्त० ३८ ।

उज्जमंतो-मृष्टपरगुणेयु विमुक्तो विविचो । नि० चू० द्वि० ०५ अ ।

उज्जम-उद्यम-गथाशक्ति अनुष्ठानम् । आच० १५० । अनालम्बम् । औष० ४८ ।

उज्जममाणो-उज्जुज्ज-उद्यम वृषेत् । आच० १३४ ।

उज्जयनी-नगरीविशेष । नंदी १७५ ।

उज्जयन्त-पर्यनविशेष । ज० प्र० १६८ । क्रीडापर्यनविशेष । भग० ३०६ । ईशतकम् । उत० ४९२ । अइममल वास्त-यनगरम् । व्य० द्वि० ३५७ अ ।

उज्जयिनी-चण्डप्रशोताज्जयानी । प्रथ० ९० । नगरीविशेष ।

आच० २४८ । सू० सू० २१८ आ । विसे० ४९६ । गुणात्म्य पिशूदना नगरी । विसे० ४०९ ।

उज्जयिनीराजपुत्र-उज्जयिनीया राजपुत्र । आच० २४८ ।

उज्जरा-प्रवाहा । आच० ६२० ।

उज्जल-उज्ज्वल-विपक्षदेशेनाप्यकलित । भग० ४८६, २३१ । निर्मल । जीवा० २२७ । ज्ञाता० २०१ । बद्धि-श्रेतवर्ण । ज० प्र० ५०८ । उज्ज्वलम्-मगतेप्रवर्तितम् । प्रथ० १५१ । शुद्धम् । जीवा० १८८ ।

उज्जला-उज्ज्वला । आच० १९० । विपक्षदेशेनाप्यकलितम् । प्रथ० १७ । उज्ज-प्राबल्येन मत्तिनशीला अल्पसमुपास्या-दाथ । चू० द्वि० ४० अ ।

उज्जा-ऊर्गा-बलम् । व्य० प्र० १४४ आ ।

उज्जाण-जत्र्य लोको उज्जाणियाए वचति । जेवा ईमि णगरसम उवईत् ठिय तं । नि० चू० प्र० २६५ अ । पुष्पात्मिद-श्वसतुलादी उत्सवादी बहुजनभोग्यम् । प्रथ० १०७ । ऊर्ध्वं यानमस्तिगिति उद्यानम्-उद्दम् । आच० ७९७ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्यत्ववादी बहुजनोपभोग्यम् । जीवा० २५८ । आच० १९७ । ऊर्ध्वं यानमुद्यानं-मार्गशोभतो भाग, उद्दृष्ट इत्यर्थे । सूत्र० ८८ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्यबहुजनभोग्यवन्विशेष । प्रथ० ७३ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्यमुद्यावादी बहुजनभोग्यम् । प्रथ० १२७ । औष० ३ । क्रीडापर्यनानाया प्रयोचनाभावेनोर्ध्वावलम्बितयानवाहनायाप्रयभूतं तदुत्पन्नम् । ज० प्र० ३८८ । पुष्पादिसौपेतादिमृगश्वसतुलाय-क्यम् । औष० ४९१ । जनक्रीडाप्यनम् । दश० २१८ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्य, उत्सवादी बहुजनभोग्यम् । भग० २३८ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्यमुद्यावादी बहुजनोपभोग्यम् । राज० ११२ । ऊर्ध्वं विलम्बितानि प्रयोजनभावात् यानानि यत्र तदुद्यान-नयगाहप्रयागश्ववर्ती यानवाहनरीडागृहाया श्वसतुल्यत्वे । राज० २३ । चम्पकनापुष्पनीभितमिति । टाण० ३१० । औद्यानिकया निर्मये जने यत्र भुक्ते । व्य० द्वि० ३६० अ । यथाभ्युद्यादिमृगश्वसतुविभगा सन्निहितानायाहाहामदोयवादिषु क्रीडापर्यनानि उद्यानि यत्र तत्चम्पकदिनदृक्कटमण्डितम् । अनु० २४ । परपुष्पकल्लयायोपमवग्भोपभोग्येति, विपक्ष-विशेषतमानथ बहुजनो यत्र भोग्यार्थे यातीति । मन्० ११७ । पुष्पादिमृगश्वसतुल्यानि उत्सवादी वृत्-

जनपरिभोग्यानि । अनु० १५९ । पुष्पादिमद्भुक्तम् ।  
भग० ४८३ । आरामः-क्रीडावनं वा । उक्त० ४५९ ।

उच्चाणगिहाणि-उद्यानगृहाणि । टाण० ८६ ।

उच्चाणानि-उद्यानानि-पत्रपुष्पफल्गुलायोपगादिशोपशोभि-  
तानि बहुजनस्य विविधवेषरुच्योक्तमानस्य भोजनार्थं यानं-  
गमनं येषु । टाण० ८६ ।

उच्चाणियलेणाद्-उद्यानगतजनानामुपकारिकगृहाणि नगर-  
प्रदेशगृहाणि वा । भग० ६१७ ।

उच्चाणिया-उद्यानिका । आव० ६७९ ।

उच्चाणियागत्रो-उद्यानिकागतः । आव० ४०२ ।

उच्चाणियागमणं-उद्यानिकागमनं । आव० ४५३ ।

उच्चाणोत्ति-प्रतिलोमगामिनीत्यर्थः । नि० चू० प्र० ४४ अ ।

उच्चाळतं-उज्ज्वालनम्-व्यजनादिभिर्मुद्गपादानम् । दश०  
१५४ ।

उच्चाळओ-उज्ज्वालकः । नि० चू० प्र० ५० अ ।

उच्चाळेह-उज्ज्वालयत, वीपयत । जं० प्र० १६२ ।

उज्जितगिरि-उज्जयन्तगिरिः, पर्वतविशेषः । आचा० ४३८ ।  
दंरी ६० ।

उज्जिओ-वलयान् । वृ० द्वि० १९५ अ ।

उज्जितं-ऊजितम् । आव० ३०४ ।

उज्जीघाचिया-उज्जीघिता । आव० ५५९ ।

उज्जीघितेघाशीघाद् । दंरी १६० ।

उज्जु-नामं सज्जो वा । दश० चू० ५२ । श्रजोः-ज्ञानदर्शन-  
चारिप्राप्त्यस्य मोक्षमार्गम्यानुष्ठानाद्वृत्तिलः, यथाकस्मिन्प-

दार्थस्वरूपपरिच्छेदान्ना, सर्वोपाधिमुद्रोऽवकः । आचा० १५४ ।  
श्रजुः-भवृत्तिलः । आचा० ४२ । अवकः, अविपरीतस्य-

भारः । टाण० १८३ । अवकः । उक्त० ५९० । गृहामि-  
मुरः । ओप० १५६ । यत्तमानमतीतानागतवक्त्ररित्यागाद्

वस्त्वग्निल, यत्रविषयवादाभिमुख वा । आव० २८४ ।  
अतीतानागतपरवीयपरिहरकमाश्रय वस्तु । अनु० १८ ।

उज्जुभ-श्रजुभ-मावागहितः । नि० १४७ । अमिमुगः ।  
दश० १८४ ।

उज्जुभ्रायता - श्रजुभ्रागवायता येन श्रजुव्ययता यया  
जीवाद्यय ऊर्ध्वलोकादेशरभोलोकादी श्रजुतया याति । भव०  
८६६ । श्रजुश्री-ममसा मा नावावायता च-दीर्घा श्रजुश-  
यता । टाण० ४०५ ।

उज्जुकडे-श्रजुकृतः-श्रजुः-संयमस्तरप्रधानं श्रजु वा-माया-  
त्यागतः कृतम्-अनुष्ठानं यस्य सः । उक्त० ४१४ ।

उज्जुग-श्रजुम् । आव० ३८४ । दक्षिणहस्तः । ओप०  
१७५ ।

उज्जुजङ्घ-श्रजुवध प्राज्ञकृतया जडाथ तत एव दुष्प्रतिपा-  
यतया श्रजुजडाः । उक्त० ५०२ ।

उज्जुतमिधे-यत् चिर्मटादिक विदार्य कर्षकालिरुषाः पेर्य-  
कृतं तद् श्रजुकमिधम् । वृ० प्र० १७५ अ ।

उज्जुते - श्रजुकः-अवकः, उद्यतो वा-अनलमः । प्रश्न०  
१५७ ।

उज्जुत्तो-उद्युक्तः । ओप० १६० ।

उज्जुदंसी - श्रजुदशी-श्रजुमोक्षं प्रति श्रजुत्वावसंयमत्वं  
पश्यत्युपादेयतयेति श्रजुदशी-संयमप्रतिबद्धः । दश० ११८ ।

उज्जुपद्म-श्रजुपद्मः । टाण० २०२ ।

उज्जुभूर्य-श्रजुभूर्य-प्रयुगीभूतम् । उक्त० १८५ ।

उज्जुमह-श्रजुमतिः-मार्गमहतवृत्तुडिः । दश० १६० ।

उज्जुमई - श्रजुश्री-सामान्यप्राहिणी मतिरस्य स । दंरी  
१०९, १०८ । श्रजुश्री-सामान्यतो मनोमात्रप्राहिणी मतिः-  
मनःपर्यायज्ञानं येषां ते । ओप० २८ ।

उज्जुया-श्रजुका-न वका । जीवा० २७१ ।

उज्जुयालिया-श्रजुवालिका, वीरस्य केवलोत्पत्तियानम् ।  
आव० २२७ ।

उज्जुसंधिसखेहयं-उज्जुसंधिसंयतेत्याओ वा ममजमसं  
पवेनेति । नि० चू० द्वि० ८६ अ ।

उज्जुसुभ-श्रजु-अतीताऽनागतपरिहारण परवीयपरिहारण  
वाऽवृत्तिल वस्तु स्ययतीति श्रजुसुभः । विने० ३१ ।

श्रजुसुभ - श्रजु - वर्तमानमतीतानागतवक्त्रपरित्यागाद्  
वस्त्वग्निलं तत्सुप्रथित-ममयतीति । श्रजुसुभ-श्रजु-वक्त्रा-  
पर्यायदाभिमुख भूतं-ज्ञानमर्थयेति । आव० २८४ । श्रजु-

अवकं भूतमस्य लोऽप्यश्रजुसुभ, श्रजु-अवकं यस्तु मय-  
यतीति श्रजुसुभः । विने० ९७७ । टाण० १९२ ।

उज्जुसुने - श्रजु-वक्त्रपर्यायदाभिमुख भूतं-ज्ञानं यस्यागी  
श्रजुसुभः, श्रजु वा-वर्तमानमतीतानागतवक्त्रपरित्यागाद्भूतं  
सुप्रथित-ममयति इति श्रजुसुभः । टाण० ३९० । श्रजु-

वक्त्रपर्यायदाभिमुख भूतं-ज्ञानं यस्यागी । टाण० ३९१ ।  
श्रजु-वक्त्रमभिमुखे भूतं-भूतज्ञानं वरदंती । टाण० १९२ ।

ऋतु - अर्धं श्रुतमस्मैति । अतु० २६५ । स्वर्गीयं संवत्स-  
रं च यन्तु नान्यदित्युत्पन्नमपरः । ऋतु वा-अतीतानाग-  
तव्यपरिहानाद्दृष्टार्थान् वस्तु सृजयति-समयतीति ऋतुमुच्यते ।  
शाखा० १५२ ।

उज्जुसुर्यं-ऋतुसूत्रं-नययती भेदः । प्रस्ता० ३२७ । ऋतु-  
अतीतानागतव्यपारिहारेण प्राञ्जल वस्तु सृजयति-अभ्युपगच्छ-  
तीति ऋतुमुच्यते । अतु० १०८ ।

उज्जुसेद्वीपसे - ऋतुश्रेणिश्राप्तः-ऋतु - अवस्था श्रेणि -  
आशास्यप्रदेशसंपत्तिश्चा श्राप्तः । अनुप्रणियगतः । उत० ५९७ ।

उज्जुहिता-प्रयत्नः । उत० ५५१ ।

उज्जु-ऋतु - यति, यतिरेव परमायत्नः ऋतुः । आचा०  
१०६ ।

उज्जुहिता-गामीओ उज्जुहिताओ अडविदुतीओ उज्जुहि-  
ज्जति अह्वा गोमसदि उज्जुहिता । नि० चू० द्वि० ७१ अ ।  
उज्जैत-रैवत्व । वृ० द्वि० १०६अ । उज्जयन्त-परित-  
शेष । आच० ८२७ । परदारगमने परितशेष । आच०  
८२३ ।

उज्जैणय-उज्जयिनीक । आच० ६३६ ।

उज्जैणा-उपयोजना-सघड्मा । वृ० द्वि० १४६ अ ।

उज्जैणि-उज्जयिनी, गुरतिप्रहविषये पुरी । आच० ८१३ ।  
सर्वकामविरक्तताविषये नगरी । आच० ७१८ । अज्ञानोदा-  
हारेण पशोराजधानी । आच० १९९९ । मालवदेशे नगरी ।  
वरा० ५७ । मिल्पमिद्धप्रधान्ते पुरी । आच० ४१० ।  
शायदप्रदेशादहारेण नगरीविशेष । आच० ५७७ । भद्रशुभ  
स्थिरनिर्वाहमण्यवधानम् । आच० ३०२ ।

उज्जैणिगामो-जीजयिन्य । आच० ६४ ।

उज्जैणिया-उज्जयिनी । आच० २१० ।

उज्जैणी-उज्जयिनी, लवणबोधादहारेण नगरी । आच० ७२१ ।  
शुभविषये पुरी । आच० ८१९ । दिनयज्ञान्ते पुरी ।  
आच० ७०८ । मिषकर्मविषये नगरी । आच० ४०९ ।  
म्लिङ्गीकरोदाहारेण नगरी । ददा० १०३ । योग्यमहोदय-  
श्रियोपयानदशान्ते नगरी । आच० ६६८ । पितृगणराज-  
धानी । उत० २१३, १९० । अत्यातिशयदशान्ते नगरी ।  
आच० ४१५ । भद्रशुभताचार्यवधानम् । आच० ७९२ । नग-  
रविशेष । वृ० प्र० १९१ अ, १९० आ । योग्यमहोदय-  
दशान्ते नगरी । आच० ६६७ । प्रथमे आलोचनायोगे नगरी ।  
आच० ६६८ । योग्यमहोदये आगम्य दृष्टपरमदशान्ते नग-  
रीविशेष । आच० ६६३ । दृष्टिमिदगाथापठितान्ते नग-  
री । उत० ८५ । देवदत्तागणिसारागननगरी । उत० २१८ ।  
उज्जयिनी-नगरीविशेष । उत० ९९, २९४, १०७, ८१ ।  
प्रयोननराजधानी । उत० ९६ । वैश्वदेवनीके भागगा-  
म्यस्थानम् । वृ० प्र० १७१ आ । वृ० प्र० ३९ अ । नगरी-  
विशेष । नि० चू० प्र० २६३ अ । नि० चू० द्वि० ७३  
आ । वृ० प्र० १९१ आ । वृ० द्वि० २६७ अ । पालवा-  
चार्यविहारमूनि । नि० चू० प्र० ३३९ आ । वृ० प्र०  
४७ अ । वृ० वृ० १२९ अ ।

उज्जैणीनयरी-अवन्तीजनपदे नगरी । उत० ४९ ।  
उज्जैणीसायमसुतो - उज्जयिनीसायमसुत - उज्जयिनी  
धायकसुत । उत० २९४ ।  
उज्जोभ-उद्द्योत-प्रभावम् । जीवा० २६७ । अनुष्ण-  
प्रसाध । जं० प्र० ४३३ । सौम्यमानता । जीवा० ३९९ ।  
उद्योत-चान्द्रप्रकाशम् । जं० प्र० २२९ ।  
उज्जोइति-उद्द्योतयन्ति । भग० ३२७ ।  
उज्जोपद्-उद्द्योतयति-वृक्ष प्रकाशयति । भग० ३८ ।  
उज्जोपमाण-उद्योतयन् । जीवा० ५० ।  
उज्जोभो-उद्योत-रत्नादिप्रसाध । उत० ५६१ ।  
उज्जोयमरे - उद्योत - सेवकालोकेन तत्पुत्रैरुपयजन-  
शीलेन वा सर्वेभ्योऽप्रकाशकरणीयैः । आच० ४९४ ।  
उज्जोयणमि-यदुदयाज्जन्तुपरीगण्यनुष्णप्रसाधकरूपमुद्यो-  
तयन्ति यथा यतिदेशोत्पत्तिविषयप्रकाशप्रसारितामात्मन्दी-  
पयस्वत्तद्द्योतयन्ति । प्रस्ता० ४७८ ।

उज्जोयण-सायिण पमर्ण । नि० चू० प्र० १०७ अ ।  
उज्जोयित्ति-उद्योतयन्ति । सूर्य० ६३ । उद्द्योतयन्त-नग-  
प्रकाशयत । जं० प्र० ४६१ ।

उज्जोयमाण-उद्योतयमान रक्ष्यस्त्वर्गमनतः शाखा०  
४२१ ।  
उज्जोयण-उज्जयिनी, सायमम् । आच० ६६८ ।  
उज्जोयिता-शययन्त । अतु० १३१ ।  
उज्जोयिता-निष्कृत । आच० ७०८ ।  
उज्जोयिता-पवनप्रेरिता उदरकणिका । वृ० द्वि०  
२९ आ ।

उज्ज्वलखणी-दृगवातो सीतभरो सा य उज्ज्वलणी भणति ।  
नि० च० प्र० २३२ आ ।

उज्ज्वलणं-बहिन्यन । विदो० १०२१ ।

उज्ज्वलनं-परिवाटः । आच० ५७६ ।

उज्ज्वलज्जी-उद्घाटनम् । आच० ६६५ ।

उज्ज्वल्यारैमि-उपकरोमि । घृ० प्र० ४६ आ ।

उज्ज्वर-अवहारः-पर्यन्तद्रादुदकस्यापःपतनम् । भग० २३८ ।  
प्रवाहः । (तं०) । उज्ज्वरः-प्रवाहः । नदी ४७ । गिरि-  
तद्रादुदकस्यापःपतनाति । जं० प्र० ६६ । गिरिध्वम्भमां  
प्रवशाः । प्रजा० ७२ । निज्ज्वरः । ज्ञाता० २६ ।

उज्ज्वररवो-निर्जराम्बुः । ज्ञाता० १६३ ।

उज्ज्वा-उज्ज्वा-उपयोगपुरस्मरं ध्यानकर्तारः । विदो० १२२९ ।

अयोध्या, मगरराजधानी । आच० १६१ । अजितनाथ-  
जन्मभूमिः । आच० १६० । उ इत्येवदक्षरं उपयोगकरणे  
वर्तते, उज इति चेदं ध्यानस्य भवति निर्देशे, ततश्च प्राकृ-  
तशैल्या उज्ज्वा, उपयोगपुरस्मरं ध्यानकर्तार इत्यर्थः ।  
आच० ४४९ । अनस्तनाथजन्मभूमिः । आच० १६० ।

उज्ज्वाहो-विरूपः । घृ० दि० २४१ अ ।

उज्ज्वाहर्ग-उग्रप्या । घृ० दि० २२९ आ ।

उज्ज्वाहर्तं-विरूपः । घृ० दि० २२९ आ ।

उज्ज्वातो-उपाध्यायः । उग्र० १९९ ।

उज्ज्वादि-उज्ज्वाः । आच० २१७ ।

उज्ज्वाभा-उज्ज्वला-गदिवेद्यज्ञस्या । मृद० १२ ।

उज्ज्वाणिका-वारिष्ठापनिशा । घृ० तृ० १०३अ । घृ० दि०  
२४० आ ।

उज्ज्वाते-छादि, धामग । पिण्ड० १९९ ।

उज्ज्वातक-रिजयमर्षिभण्डुद । टाणा० ५०७ । दृगविरा-  
धानी द्रिगयमर्षयणम् । टाणा० ५०७ ।

उज्ज्वात्तय - उज्ज्वातुं-नर्षयत् देवादिभ्योऽपानेन । ज्ञाणा०  
११६ ।

उज्ज्वाय-उज्ज्वल-उज्ज्वलापमां, गान्धो निर्देशणम् । आच०  
५०० । उज्ज्वलापमां । आच० ५६८ ।

उज्ज्वलय-उज्ज्वलक-गमहाविजयमिदग भौतक्षो मृदः ।  
विदा० ४६ । गार्ग्यसहस्रम्, अन्वहरणम् दृगविराजम् ।  
द्विग्वयमर्षयणम् । विदा० १५ ।

उज्ज्वलमो-उज्ज्वा-उज्ज्वा । अच० ६३१ ।

उज्ज्वलयधम्मा-चतुर्थी धर्मैषणा । आच० २७७ । यन्नि-  
स्सागहं भोजनजातमन्ये च द्विपदादगो नापशाङ्गन्ति  
तद्वैल्लकं वा शूद्रत इति, सप्तमी पिण्डैषणा । टाणा०  
३८७ । आच० ५६८, ५७२ ।

उज्ज्वलयधमिय-उज्ज्वलधर्मि-उज्ज्वल-परिस्साग. म एष  
धर्मः-पर्यायो यस्याति तत् । अन्त० ३ । उज्ज्वलधर्मि-  
मत्तमी पिण्डैषणा । आच० ३५७ । जं अतनादिभे गिदी  
उज्ज्वलकामो साहृ य उवट्टिनो तै तस्स देति ण य तं शेद  
अणो दुपदादि अभिलसति एसा उज्ज्वलयधमिया । नि० घृ०  
तृ० १२ अ । नि० घृ० दि० १६३ आ ।

उज्ज्वलयधम्मो-उज्ज्वलमेव धर्मः-एवभावो यस्य तद् उज्ज्व  
तधर्म-परिस्सागहम् । घृ० प्र० ९७आ ।

उट्ट-उट्टः । प्रज्ञा० २५२ । उट्टः-द्विबुधबुधपरिवेधः ।  
प्रज्ञा० ४५ । जीवा० ३८ । म्हेच्छविधोः । प्रज्ञा० ७५ ।

उट्टण-आवर्तनम्-भक्तीभवनम् । ध्य० प्र० २०३ आ ।

उट्टयामा-उट्टः । आच० ४१८ ।

उट्टिय-उट्टयामिदम् औरिद्रुक्म् । भनु० ३५ । उट्टिवा-  
बृहन्मन्मयभाण्टम् । उपा० ४ ।

उट्टिते-उट्टलोममयम् । टाणा० ३३८ ।

उट्टितो-उट्टवगिओ । नि० घृ० प्र० १७८ आ ।

उट्टिये-उट्टरोमम् उट्टिये । नि० घृ० प्र० १७६ आ ।

उट्टिया-उट्टिवा-महाभूम्यो भाजनविशेषः । अच०  
१०६ । मृगयो महाभाजनविशेषः । उपा० २११ । मृग-  
महाभाजनविशेषः । उपा० ४० । उट्टियुज्ज्वलम् । नि०  
घृ० तृ० ७५ अ, ९१ अ ।

उट्टियासमणा-उट्टिवा-महाभूम्यो भाजनविशेषः  
प्रतिशे ये भाज्यनि-मपश्यन्तीति उट्टिवासमणा । अच०  
१०६ ।

उट्टु-ओष्ठ-कम् । ओप० २११ ।

उट्टुमिया-अषट्-प-भाज्यः । भाजा० ३१३ ।

उट्टुण-उट्टिया । घृ० दि० ७९ अ ।

उट्टुपेवि-उट्टवगि । ज्ञाणा० ९० ।

उट्टा-उपा-वापशोऽपैभनम् । अच० ६३ । उट्टवर्णम् ।  
मृद० ६ । भग० १०१ । उट्टा । दृग० १९३ ।

उट्टा(द्वा)-उट्टा-उपकर्षिणः । मृद० १९३ ।

**उद्गाय**-उत्थाय-उद्योगविहारं प्रतिपद्य सुबालङ्कारं परित्यज्य पञ्चमुष्टिकं लोचं विधायैवेन देवदुष्प्रेन्द्रशिष्येन युक्तं कृत सामायिकप्रतिज्ञं आभिर्भूतमन पर्यायज्ञानोऽप्रप्रारकर्मक्षयार्थं तीर्थप्रवर्तनार्थं चोत्थाय । आचा० ३०१ । उत्थान उत्था-ऊर्ध्वं वर्तनं । राज० ५८ ।

**उद्गाण**-उत्थानम्-उदवसतनम् । नदी २०७ । प्रथमसुदृगमनम् । उत० ३५१ । जन्म । भग० ६६१ । चेष्टाविशेष । ठाणा० । २३ । उत्थानम् । पिण्ड० ७१ । ऊर्ध्वोर्भवतनम् । भग० ३११ । सूर्य० २८६ । अथवायं गुरुं प्रत्यभिमुखगमनम् । सूर्य० २९६ । देहचेष्टाविशेष । प्रजा० ४६३ । ऊर्ध्वं भ्रमनम् । ज० प्र० १३० । उत्पत्ति । ज्ञाता० १८९ ।

**उद्गाणपरियाणियं**-परिमान-विविधव्यतिकरपरिमानं तदेव पारियाणिक-चरितं उत्थानात्-जन्मन आरभ्य पारियाणिकं उत्थानपारियाणिकम् । भग० ६६० ।

**उद्गाणपरियाणिक्यं**-उत्थानपर्यापन्निकम् । आच० ६५ ।

**उद्गाणसुप**-उत्थानधुर्य-उडमन तदेत धृतमुत्थानधुतम् । नदी २०७ । -

**उद्गाय**-उत्थाय-अभ्युपगम्य । आचा० ३८ । सर्वं मावद्य कर्म न मया कर्तव्यमित्येव प्रतिज्ञामन्तरमारभ्य । आदाय-गृहीत्वा । आचा० १४० ।

**उद्गावणा**-उन्नेव ठावणा उत-प्रावयेन वा द्वावणा उद्गावणा । नि० चू० द्वि० ४७ अ ।

**उद्गावणागहणं**-उपस्थापनाया हस्तिदन्तोक्षताकारहस्तादिभिर्बद्धं रजोहरणादिग्रहणं । चू० द्वि० २८६ अ ।

**उद्दिभ-**उद्युक्त । ओष० २२० । उरिथ-उडमित । ओष० २९ । वधत । ओष० २२० ।

**उद्दिप्र**-उरिथ-ज्ञानदर्शनचारिप्रयोगवात् । आचा० १७६ । उत-प्रावयेन स्थित उरिथ । आचा० २४८ ।

**उद्दिथ**-उरिथ-सयमोयोगवात् । आचा० २२४ । ऋ० । नि० चू० प्र० २०८ आ । ईश्वरीभतम् । पिण्ड० १२३ ।

**उद्दी**-अण । आच० ६२४ ।

**उद्दुभह**-अदृष्टव्यन-निःश्री०गत् । भग० ९८० ।

**उद्दुह**-उत्थाय-विद्युद्धय । भग० १२० ।

**उद्दुमि**-आयामि-आगच्छामि । भा० ९८१ ।

**उद्दुग्मि**-प्रपिदिशेप । चू० प्र० २८६ अ ।

**उद्दुप**-उडन-तापमाधमगृहम् । निरय० २६ ।

**उडओ**-ओटन-तापमाधम । उत० ११४ ।

**उडय**-उडन-तापमाधम । जीवा० १०५ । कोटिने । नि० चू० द्वि० ७७ आ । पण्डुटी । आव० १८९ ।

**उडयसंठिया**-उडनसंथिता-तापसाधमसंथिता । भाव-लिकावागम्य दशमं स्थानम् । जीवा० १०४ ।

**उडुकरिसि**-प्रपिदिशेप । नि० चू० द्वि० ६८ आ ।

**उडुडुग**-उडुडन-अनहाम्य । नि० चू० तृ० ५० अ ।

**उडु**-प्रतु । नि० चू० प्र० २३९ अ । उडुप-तर्कणाप-तुम्बकादि । पिण्ड० १०२ ।

**उडुक**-तप्त । चिदो ३५३ ।

**उडुकल्लाणिआ**-प्रतुक्ल्याणिका, प्रतुतु पदस्वपि कन्याणिका - प्रतुनिरतीतरपरीत्वेन मयस्पर्शा अथवाऽऽमृत कन्यात्वेन सदा कन्याणकारिण्य । ऋ० प्र० २६३ ।

**उडुपं**-नी । आचा० ४१ ।

**उडुधद्वियं**-प्रतुतुदम्-शीतोष्णकाशयोर्मायिकयम् । आचा० ३६५ ।

**उडुधई**-उडुपति-उडना-नक्षत्राणा पति-प्रयु म । ऋ० ३५१ ।

**उडुविमान**-सौषमे प्रथम प्रस्तुत । ठाणा० २५१ ।

**उडु**-कालविशेष । भग० ८८८ । ऋतव-द्विमानमाना । ठाणा० ८६ । नक्षत्र । उत० ३५१ ।

**उडुसंघच्छरे**-ऋतुसंघच्छरे, कर्मसंघच्छरे, मयनसंघच्छरे । सूर्य० १०८ । मरिचम् सवत्सरे श्रेणि क्षाताभि दृष्यभिकानि परिपूर्णान्यहोरात्राणां भवति एष ऋतुमन्सर, ऋतवो लोचप्रमिता वयन्तादय तत्प्रधानमन्सर ऋतवन्सर । सूर्य० १६९ ।

**उडु**-उडुप । चू० द्वि० ६१ आ ।

**उडुचकादि**-उडुचट्टकादि । ओष० ८९ ।

**उडुचगा**-उडनका-याचका । चू० प्र० ८६ आ ।

**उडुचय**-उडुचका-उडुचकारतान् उडुन्ति, आर्यापुत्रान् कर्णापाटनेन पट्टिया तथैवोचमन्ति इत्यर्थ । चू० द्वि० ६० आ ।

**उडुचये**-उडुधियाआ । नि० चू० प्र० १५१ अ ।

**उडुडग**-ऊर्ध्वोत्तुण्ड । ओष० ९० ।

**उडुति**-उडवम्भापयन्ति । भाव० ११० ।

उडुवालम.—कोटपालकः। आव० २०४। आरक्षकः।  
 आव० २०४।  
 उडुवा-पललं। नि० चू० द्वि० ६१ अ।  
 उडुच्छे-उडुपोषिते। नि० चू० द्वि० १३२ अ।  
 उडुणकं-प्रर्वचः। नि० चू० तृ० २६ आ।  
 उडु(इ)ति। नि० चू० प्र० २३२ आ।  
 उडुमरं-उत्पाणं। नि० चू० प्र० १९४ आ।  
 उडुमादी-चित्तिखणतो उडुमादी। नि० चू० द्वि० ४४ आ।  
 उडुहणं-व्यखणनयोर्द्विभोरनवस्थाप्यः। घृ० प्र० ३०८ अ।  
 उडुह-उपपातः। ओष० ८९। प्रवचनहीला। ओष०  
 ४८। विना। पिण्ड० १०९। लपवादः। आव० ८००।  
 उपपातः। ओष० १४९। आव० १९५।  
 उडुहितो-निर्मलितः। उत० १३९।  
 उडुओ-अवतारितः। आव० ३९६।  
 उडुयाओ-अवतारिता। दश० ५७।  
 उडुयं-उडुगारितम्। आव० ७७९।  
 उडुयरो-यः समुद्रान् सज्ञां वा व्युत्पन्नं चपलतया  
 हस्तादीन्यपि लेपयति। घृ० प्र० २७६ अ।  
 उडुयालेउं-मथितुम्-मन्यन् वक्तुम्। दश० ६०।  
 उडुति-छोति। नि० चू० प्र० २९० अ।  
 उडुह-धरय। नि० चू० प्र० २३७ अ।  
 उडु-चमनं। नि० चू० प्र० ३१५ आ। नि० चू० ५८ अ।  
 घृ० प्र० ७५ अ। णीए समुद्रे वा वेलापाणियस्स प्रति-  
 वृल उडुं। नि० चू० तृ० ६३ आ।  
 उडुउञ्जत्त-ऊर्ध्वस्थितस्यैकमपरं, तिर्यक्स्थितम्यान्वत्, गुणो-  
 षतिरुपं, मत्रेनरापोहेनोर्ध्वदिशन् यडुबल तद्दार्थोचत्वम्।  
 ठाणा० ३९।  
 उडुकपरेसु-ऊर्ध्वं कल्पेपु-ऊर्ध्वं कल्पेपरिषर्त्तुं प्रवेयकादि-  
 निमानकेपु कल्पेपु-सौधमादियु, ऊर्ध्वं वा उपरिक्त्वत्यन्ते  
 विशिष्टपुष्पभाजामवदिवतिविपयतयेति सौधमादयो प्रवेयका-  
 न्यथ-सर्वेऽपि कल्पा एव तेषु। उत० १८६।  
 उडुजाणू-शुद्धयुधिष्मत्सनायनात् औपमहिकमिषयाभावात्  
 उरकद्वयानम् सन्नपरिश्यते ऊर्ध्वं जानुनी यम् न ऊर्ध्वं जानुः।  
 माता० २।  
 उडु-ऊर्ध्व-क्रीकः। ओष०-१९८। सुगोपरिदिशन्। उत०

२६८। अनाच्छादितमालग्रहम्। ठाणा० १५७। ऊर्ध्वं।  
 नंदी १५४।  
 उडुकवाडे-ऊर्ध्वमपि लोकान्तं स्पृष्टे ते अघोऽपि च लोकान्तं  
 स्पृष्टे ते ऊर्ध्वकपाटे। प्रज्ञा० ७५।  
 उडुकाएहि-ऊर्ध्वकायैः-त्रौघैः कावैर्वैक्रियैः। सूत्र० १३७।  
 उडुगो। ठाणा० १५८।  
 उडुघट्टणा-ऊर्ध्वघट्टना-मुसलीद्वितीयमेदः। ऊर्ध्वं वृद्धिका-  
 दिपट्टलानि घट्टयति। ओष० १०९।  
 उडुचरा-ऊर्ध्वचरा-शुभ्रादयः। आचा० २९१।  
 उडुठाण-ऊर्ध्वस्थानम्-कायोत्सर्गादि। उत० ६९९।  
 कायोत्सर्गं, ऊर्ध्वतया स्थानम्-अवस्थानं पुष्टयस्य ऊर्ध्व-  
 स्थानम्। ठाणा० ३।  
 उडुत्ता-मुळयता। भग० २५४। ऊर्ध्वता-लघुपरिणामता।  
 प्रज्ञा० ५०४। भग० २३।  
 उडुमंतो-उदमन्-अधस्तनमध्यमत्रिभागगतवातसङ्क्षोभ-  
 वशाजलमूर्ध्वमुक्तिपन्। जीवा० ३०८।  
 उडुरेणु-ऊर्ध्वरेणु-ऊर्ध्वोपस्थिर्यक्चलनधर्मोपलभ्यो रेणुः।  
 भग० २७७।  
 उडुरेणु-ऊर्ध्वरेणु-स्त्रंतः परतो वा ऊर्ध्वोपरिर्न्यक्चलनधर्मा  
 रेणुः। अनु० १६३।  
 उडुदलोप-तिर्यग्लोकस्योपरिष्ठादूर्ध्वलोकः। प्रज्ञा० १४४।  
 उडुदलोपतिरियलोप-ऊर्ध्वलोकस्य यदधस्तनमाकाशप्र-  
 देशप्रतरं यच्च तिर्यग्लोकस्य सर्वोपरितनमाकाशप्रदेशप्रतरमेव  
 ऊर्ध्वलोकनिर्णयलोकः। प्रज्ञा० १४४।  
 उडुलोपपरं-ऊर्ध्वलोकप्रतरं-तिर्यग्लोकस्य चोपरि यदेक-  
 प्रादेशिवमाकाशप्रतरं तत्। प्रज्ञा० १४४।  
 उडुवाए-ऊर्ध्वमुदगच्छन् यो वाति वातः स ऊर्ध्व-  
 वातः। औवा० ६६। ऊर्ध्वमुदगच्छन् यो वाति वातः  
 स ऊर्ध्ववातः। प्रज्ञा० ३०।  
 उडुयियडं-मालरहितं छापरहितं परं पार्श्वतः वृष्णपुङ्गवं  
 तद्दूर्ध्वविवृणं भवति। सू० द्वि० १८९ अ।  
 उडुवेइया-ऊर्ध्ववेदिका, यत्र जान्नीदपरि हस्तौ हृत्वा  
 प्रतिगिन्यते ता। औष० ११०।  
 उडुदस्तासो-ऊर्ध्वस्थासो। आव० ६२९।  
 उडु-ऊर्ध्व-चमनम्। घृ० प्र० ७५ अ।  
 उडुई-ऊर्ध्वदि-ऊर्ध्वदिशोप। औष०-११९।

उद्दिष्टा-ऊर्ध्वकृता । आब० २२३ ।  
 उद्दोषवधगा-ऊर्ध्वलोकस्तनोपपन्नकाः-उरपत्ता ऊर्ध्वोप-  
 पन्नकाः । ठाणा० ५७ । सीधर्मादिभ्यो द्वादशभ्यः कल्पेभ्य  
 ऊर्ध्वमुपपत्ताः ऊर्ध्वोपपत्ताः । जीवा० ३४६ ।  
 उणादि-उष्णप्रभृतिप्रत्ययान्तं पदम् । प्रश्न० ११७ ।  
 उण्युत्ता-स्थिता । आब० २७२ ।  
 उण्डा-पिण्डी । ज्ञाता० ९१ ।  
 उण्णय-उच्छिन्नं नतं-पूर्वप्रवृत्तं नमनमभिमानादुन्नतम्,  
 उच्छिन्नो वा नयो-नीतिरभिमानादेवोन्नयो नयामाव इत्यर्थः ।  
 भग० ५७२ ।  
 उण्णानं । नि० सू० प्र० १२४ अ ।  
 उण्णमणी-उच्चाभिनी-विद्याविशेषः । दश० ४१ ।  
 उण्णय-उन्नतः-प्रधानजातिकः । आब० २४० ।  
 उण्णयविसालकुलवंसा-उन्नताः प्रधानजातिवत्वात् वि-  
 शालाः-पितामहपितृव्याद्यनेकसमाकुलाः कुलान्येव वंशाः-  
 अन्वया देशं ते उन्नतविशालकुलवंशाः । आब० २४० ।  
 उण्णया-उन्नतानि-गुणवन्ति, उच्चानि । औप० ३ ।  
 उण्णयासणं-उन्नतासर्नं-उच्चासनम् । जीवा० २०० ।  
 उण्णारो-उर्णाकं, ग्रामविशेषः । आब० २११ ।  
 उण्णाय-अविलोममयम् । ठाणा० ३३८ । उर्णाया इदम्  
 और्णिकम् । अनु० ३५ ।  
 उण्णायं-ऊरणो रोमसु उण्णायं । नि० सू० प्र० १२६ अ ।  
 उण्णोज्जं-उपनेयम् । दश० ८६ ।  
 उण्हं-उणं, उण्णरूपः । सूर्य० १७२ । उपति-दहति जन्तु-  
 मिति उण्णम् । उत० ३८ । चतुर्थः परीपहः । आब०  
 ६५६ । उण्णा-परमः । ठाणा० ३४५ ।  
 उण्हकालो-उण्णकालः-प्रीष्मः । औष० २१२ ।  
 उण्हयं-उण्णम् । आब० ८५८ ।  
 उण्हधणं-उण्णापनम्-उण्णीकरणम् । पिण्ड० ८२ ।  
 उण्हा-उण्णा । आब० ३८९ ।  
 उण्होदय-उण्णोदकं-स्वभाषत एव क्वचिज्जर्जरादायुष्ण-  
 परिणामम् । जीवा० २५ ।  
 उण्होदय-उण्णोदकः । आब० ८५५ ।  
 उण्होल्ला-पुष्टेयिा । आष० २१७ ।  
 उत्-प्राथम्येन, अपुनर्भवम्पतया वा । प्रज्ञा० ११२ ।  
 प्राथम्ये । प्रज्ञा० ५५९ ।

उत्कम्पनदीपाः-ऊर्ध्वदण्डवन्तः । ज्ञाता० ४४ ।  
 उत्करिफामेदः-समुरीयमाणप्रत्यक्षस्येति । ठाणा० ४५५ ।  
 उत्कर्षण । ठाणा० २१२ । आचा० २७७ ।  
 उत्कुट्टित-चिचनकादिः । भ्य० प्र० २८ अ ।  
 उत्कुरट्टिकादि-आसनविशेषः । औष० ४१ । तुपरादयादि ।  
 औष० ४१ ।  
 उत्क्षिप्तचरका-उत्क्षिप्तं-पाकपिठरात् पूर्वमेव दायवेनो-  
 द्धत्तं तयो चरन्ति-गवेययन्ति ते । सू० प्र० २५७ आ ।  
 उत्क्षिप्यते । औष० २१५ ।  
 उत्तइया-उत्तेजिता-अधिकं शीपिता । दश० ११५ ।  
 उत्तर्षा-उत्तृणम्-उद्गततृणम् । प्रश्न० १४ ।  
 उत्तर्णा-शीर्षत्रि(शृ)णा । नि० सू० प्र० ३३६ अ ।  
 उत्तर्णाणि-उत्तृणानि-ऊर्ध्वोभूतानि तृणानि शीर्षाणिनिपा-  
 वत् तानि यत्र मार्गं भवन्ति । सू० द्वि० ७९ आ ।  
 उत्तक्षणमवस्था - उत्तप्तकनकवर्णाः - ईषद्रक्षवर्णाः ।  
 प्रज्ञा० ९५ ।  
 उत्तम-उत्तमो गिरिपु उ सर्वतोऽप्यधिकममुन्नतवत्, मेरोध-  
 तुर्दरो नाम । जं० प्र० ३७५ । गिरीणामुत्तम इति उत्तमः ।  
 मन्दरस्य चतुर्दश नाम । सूर्य० ७८ । सिप्यात्वमोहनीय-  
 ज्ञानावरणचारित्र्यमोहादित्रिविधतममः उन्मुक्ता इति उत्तमाः ।  
 आब० ५०८ । उपरिवर्ति । देवलोकाद्यपेक्षया प्रधानम् ।  
 उत० ३१९ । ऊर्ध्वै तमनः-अज्ञानायततथा, अज्ञानरहित  
 इत्यर्थः । ज्ञाता० ७६ ।  
 उत्तमकट्ट-उत्तमकाष्ठा-प्रवृष्टावस्था । जं० प्र० ९८ । उत्तम-  
 काष्ठा-परमकाष्ठा, उत्तमावस्था परमकष्टो वा । भग० ३०५ ।  
 उत्तमकट्टपत्त-उत्तमकाष्ठापत्त-परमप्रकृष्टपत्त । सूर्य०  
 ११ ।  
 उत्तमकट्टपत्ता - परमकाष्ठापत्ता, उत्तमान्स्थाना मता,  
 परमकष्टपत्ता वा । भग० ३०५ ।  
 उत्तमदृ - अनगनाय । (आउ०) । उत्तमार्थं-अनगनम् ।  
 औष० १४ । उत्तमः-प्रधानोऽर्थः-प्रयोजनं स उत्तमार्थः-  
 मोक्षः । उत० ३५३ । पर्यन्तमयाराधनाभ्यः । उत०  
 ४७९ । मोक्षः । उत० ५२३ ।  
 उत्तमदृकार्थमि-उत्तमार्थकाले-अनगनाफले । औष० २२७  
 उत्तमदृग्येस्य-उत्तमार्थगवेयकः-उत्तमः-प्रधानोऽर्थः-प्रज्ञो-

जन उत्तमार्थं, स च मोक्ष एव ते भवेयति-अन्वेषयतीति । उक्तं ३५३ ।

**उत्तमद्वयपत्ता** - उत्तमार्थप्राप्ता, उत्तमान् तत्कालपेक्षयो लक्ष्यानर्थान्-आयुष्यकापीन् प्राप्ता उत्तमार्थप्राप्ता, उत्तमकाशा प्राप्ता वा-प्रकृष्टावस्थां गता । भग० २७७ ।

**उत्तमसाहवेहिं**-उत्तमसाधुभिः । पञ्च १-१० ।

**उत्तमा**-उत्तमा-प्रधाना, ऊर्ध्वं वा तमस इति उत्तमस । भाव० ५०७ । एणमद्रस्य तृतीयाप्रमहिषी । भग० ५०४ । ठाणा० २०४ । प्रथमरात्रिनाम । सूर्य० १४७ । ज० प्र० ४९१ ।

**उत्तमार्धम्**-पराधं, महार्धं वा । दश० २२१ ।

**उत्तमुत्तम**-उत्तमोत्तम-अतिशयप्रधानम् । उक्तं ३१९ ।

**उत्तमेणं**-ऊर्ध्वं तमस-अज्ञानायत्तत् तथा तेन ज्ञानयुक्तेन । उत्तमपुरुषासेवितत्वाद्दोषमेन । भग० १२० ।

**उत्तर्यते**-उत्तुद्यमान-ऊर्ध्वं व्यध्यमानम् । विपा० ७४ ।

**उत्तर**-वास्तकपकवली । नि० चू० प्र० ३५३ आ ।

**उत्तरग**-उत्तराग्न । जीवा० ३५९ । उत्तरग्न-द्वारस्थोपरिति योग्यवर्धित्य काष्ठम् । जीवा० २०४ । ज० प्र० ४८ ।

**उत्तर**-उत्तरत-उत्तरदिग्दर्शां सर्वेभ्या भरतादिवर्षेभ्य इति, मेरुनाम । ज० प्र० ३७६ । ऐरावते द्वाविंशतितमतीर्थकर । मम० १५४ । अप्रवर्ती । त्रिणादिसकलभावेऽनुबद्धनीय । ज० प्र० ४६२ । भवभारणीयशरीरापेक्षया कार्योपात्तकालपेक्षया चोत्तरफलभावि । ज० प्र० ४०२ । कार्यम् । मञ्ज० २८७ ।

**उत्तरभतरदीर्घा** - उत्तरर्मा दक्षिण यऽन्तरदीर्घा । भग० ४९२ ।

**उत्तरउत्तरा**-उत्तरोत्तरविमानवासिन, उत्तरो वा उपरितनम्यानवर्ती, उत्तर-प्रधाना येषु ते उत्तमोत्तम । उक्तं १८७ ।

**उत्तरकसुरज**-उत्तरकसुरज-तनुद्राणविशेष । विपा० ४५ ।

**उत्तरकसुहृद्य** उत्तरकसुहृद्य-तनुद्राणविशेष । विपा० ४५ ।

**उत्तरकरण** - मूलतः स्वर्गेषु उपपन्नस्य पुनश्चरकालविवेकाभावात्तमकं करणम् । मम० १९४ । औदारिकवैकल्याहारौ तेषमकामणयोन्मत्तमम्भवान्द्रोणात्तनामैवापन्नग्यामि । मम० १९७ ।

**उत्तरकिरियं**-उत्तरकियम्-उत्तरा-उत्तरशरीराश्रया क्रिया-गतिरुक्षणया यत्र गमने तदुत्तरकियम् । भग० २१७ ।

**उत्तरकुरा**-उत्तरपूर्वसिक्करपर्यन्तस्य बधिमामायामीनानदेन्द्रस्य रामाराश्या राजधानी । जीवा० ३६५ । ठाणा० २३१ । नेमनायशिक्षिकानाम । सम० १५१ । उत्तरकुण्ड । भाव० ११६ । मेरोर्जम्बुद्वीपगत उत्तरत उत्तरपुरनामा विदेह । ज० प्र० ३१० ।

**उत्तरकुरु**-कुरुविशेष । जीवा० २६६ । वापीनाम । ज० प्र० ३७० । नेमनायस्य शिक्षिका । उक्तं ४९२ । साकेतनगरे उद्यानम् । विपा० ९५ । भाव० ११५ । क्षेत्रविशेष । ठाणा० ५८ । अकर्मभूमिविशेष । प्रशा० ५० ।

**उत्तरकु रुकुडे**-उत्तरकु रुकुडेवृक्ष । ज० प्र० ३३७ ।

**उत्तरकु रुकुडे**-उत्तरपुरो महाद्रह । ठाणा० ३३६ । उत्तरकु रुकुडे द्रहविशेष । ज० प्र० ३३० ।

**उत्तरकु रुकुडव्या** उत्तरपुररुकुडव्याता । भग० २७९ ।

**उत्तरकु रुकुड**-उत्तरकु रुकुड । पञ्च ३१-६ ।

**उत्तरकु रुकुड**-उत्तरकु रुकुड-गणधामनपर्वते चतुर्थकुण्ड । ज० प्र० ३१३ ।

**उत्तरकूलग**-गङ्गाया उत्तरकूलं एव वास्तव्यम् । भग० ५१९ । औप० ९० ।

**उत्तरकूला**-उत्तरकूलगा-गङ्गात्तरकूलवारतव्यास्तापना । निरय० ९५ ।

**उत्तरखत्तियकुडपुर**-नगरविशेष । आचा० ४२१ ।

**उत्तरगंधारा**-उत्तरगान्धारा-गान्धारस्वरस्य पञ्चमीमूर्धना । जीवा० १९३ । गान्धारप्रामस्य पञ्चमी मूर्धना । ठाणा० ३९३ ।

**उत्तरगजभो**-उत्तरगजभ-वातविशेष । भाव० ३८७ ।

**उत्तरगुण**-उत्तरगुण, पीरुगुण्णिमापैकामनकोपवासादितया रूप । विशेषे १०१६ ।

**उत्तरगुणनिमित्त** - पुण्यवायोभ्याकारवनि द्रव्याणि । भाव० २७३ ।

**उत्तरगुणनिर्घत्तित** - यस्तु गणनेत्रकर्मदिध्वाभिमिनम । वृ० प्र० १४३ अ ।

**उत्तरगुणपद्यकृष्ण** - उत्तरगुणप्रतापव्यानम् । भाव० ४९१ ।



उत्तरगुणलक्षि - उत्तरगुणाः-पिण्डविद्युद्वाद्ययस्तेषु चेद्  
प्रथमाद्यो गृह्यते ततश्च उत्तरगुणलक्षि-तथोक्तम् ।  
अथ० ७५५ ।

उत्तरगुणा-उदाविधप्रत्याख्यानरूपाः । अथ० ८९४ । नि०  
५० डि० १६६ अ । मूलगुणापेक्षया न्यायायाचीन । उत्त०  
५३६ ।

उत्तरगुणे-उत्तरगुणविपर्य-श्रीतकृतादि । आच० ३२५ ।  
उत्तरसूलियं-उत्तरसूडम्, यद् मन्दर्न इत्या पद्यान्महता  
शब्देन मन्तकेन बन्द इति भणति, कृतिवर्मेणि एकेन वि-  
गतमो गुणः । आच० ५४४ ।

उत्तरजम्ब-उत्तराश्वः-उत्तराश्वयनम् । तृतीया नियुक्तिः ।  
आच० ६१ ।

उत्तरजम्बयणा-उत्तराश्वयनानि । आच० ७५५ ।

उत्तरजम्बयणाई - उत्तराश्वयनानि-गर्वाण्यपि चाश्वयनानि  
प्रदानान्येव तथाऽश्वयन्नेर रुद्रयोगश्वयनप्रदत्ताश्वयन्वेन  
प्रतिदत्तानि । नैरी २०६ ।

उत्तरजम्बाप-उत्तराश्यायाः-उत्तराः-प्रदाना अर्थायन्त इत्य-  
श्याया-अश्वयनानि तत उत्तराश तै अश्यायाश्च । उत्त०  
७१२ ।

उत्तरहृभरदकूड - उत्तरार्द्धभरतनाम्नो देवस्य निवास-  
भूतं कूटं उत्तरार्द्धभरतकूटम् । जं० प्र० ७३ ।

उत्तरणं-निरंतरं । नि० सू० डि० ७७ अ । एकाए चेव अपो  
य गच्छा मे उत्तरणं । नि० सू० डि० ७७ आ । तुंबोडुपादिभि-  
नीचजितैर्देव उमीर्यते तद् उत्तरणम् । सू० सू० १६१ अ ।  
जय तरंनो जले संप्रेक्षति तै मन्थं उत्तरणं भवति । नि०  
सू० डि० ७८ आ ।

उत्तरहारिता-उत्तराहारिका । टाका० ४०८ ।

उत्तरज्जे-उत्तरार्द्ध-उत्तरभागे । जं० प्र० ४८२ ।

उत्तरपओगकरणं-उत्तरप्रयोगकरणं, श्रीचण्डीमकरप्रतिपत्ति-  
भेदः । आच० ८५८ ।

उत्तरपट्टो-उत्तरपट्टः । ओष० २१७ । उत्तरपट्टः । ओष०  
८३ ।

उत्तरपट्ट्याहृतं-गव्यामतिदक्षणे द्वितीये भेदः । अच०  
२८१ ।

उत्तरपरिकर्मकियते-उद्विभियते । आच० ७६५ ।

उत्तरपासो-उत्तरपार्श्वः । जीषा० २०४, ३५० ।

उत्तरपुरच्छिमिहामो-उत्तरपूर्व, उत्तरपूर्वमा स्थिति ।  
जीषा० १४४ ।

उत्तरपुरच्छिमे-श्रीतरपूर्वः, उत्तरपूर्वको स्थितिभग-  
ईगानयोगः । सू० २१ ।

उत्तरपुररिगमेहे-उत्तरपूर्व, ईगाने रोगे इत्यर्थ । सू०  
२१ ।

उत्तरपुट्या-ईगानयोगः । आच० ६३० ।

उत्तरफगुणी-उत्तरफागुणी, इत्योत्तरा । आच० २५५ ।

उत्तरथलिहसहृगणे-गतविशेषः । टाका० ४५१ ।

उत्तरभद्रपद्माः-श्रीशरदाः । सू० ११४ ।

उत्तरमंदा-उत्तरमन्दाकिता मान्यारस्वरात्मनीया मान्यमी  
मूर्तना । जं० प्र० ३८ । मान्यमन्दास्य प्रथमा मूर्तना ।  
टाका० ३९३ । मान्यमन्दास्य सप्तमी मूर्तना । जीषा०  
१९३ ।

उत्तरमहूर-वर्णिविशेष । नि० सू० ड० २१० अ ।

उत्तरयाप-उत्तरयादः-उत्तरयाद । आच० २४३ ।

उत्तरवेउत्थिये-उत्तरवैशियम् । प्रजा० २५८ ।

उत्तरवेउत्थियं-उत्तरवैशियम्, उत्तरमुत्तरकासभविनम्भ  
विनम्भभाविच्छमियं, वैशुकिं वैशुकिं तैव विवृणं  
वैशुकिम् । विविष्टवम् विविष्टाम्भाम्भुच्छुम्भाम्भुच्छुम्भाम्भु-  
मीनीनतु वृत्तमापुन्येन जनिनमतिमनोहारिरामनीयवम् । अथ०  
प्र० १९५ आ । उत्तरवैशियम्-वैशुकियाऽपैशुकीयकात्-  
भावि वैशियम् । अथ० ७२ ।

उत्तरवेउत्थियया-उत्तरवैशिया, मद्रप्रदभोगकानं स्वयमा-  
धियं वा विद्यते सा । अनु० १६३ ।

उत्तरसत्तासुभो-उत्तरसत्तासुभः, उत्तरपैशुम्भवात्भेदः ।  
आच० ३६६ ।

उत्तरसादा - उत्तरपादा, -अकर्मित जन्मनशयम् । आच०  
२५५ ।

उत्तरसाला - अपविगार्थमद्वेको हयसाला वा साला  
उत्तरसाला । नि० सू० प्र० २६० अ ।

उत्तरा-उत्तरमपुरा । आच० ६८८ । उत्तराकाला । आच०  
१०५ । उत्तराभाद्रपदा-उत्तराभाद्रपदी "उत्तराभाद्र" । सू०  
१३० । उत्तराभाद्रपदी, उत्तराभाद्र, उत्तरभाद्रपदा । जं०  
प्र० ५०२ । उत्तरमपुरा । आच० ३५६ । श्रीद्विगित-

भूतेर्भेगिनी । आव० ३२४ । शिवभूतेर्भेगिनी । विशेषे  
१०२२ । मध्यमप्रामस्य तृतीया मूर्छा । ठाणा० ३९३ ।

उत्तरार्धयम् ] भग० २६८ ।

उत्तरार्धये-देशविशेषः । नि० चू० तृ० ४४ अ ।

उत्तरावक्रमणं-उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं-अन्तरणं यस्माद्  
उत्तरापक्रमणम्-उत्तराभिमुखं पूर्वं तु पूर्वाभिमुखमाधीदिति ।  
भग० ४७७ । उत्तरस्यां दिश्यपक्रमणं-अन्तरणं यस्मात्पु-  
त्तरापक्रमणं-उत्तराभिमुखम् । ज्ञाता० ५६ ।

उत्तरावह-उत्तरापथः, उत्तरदिग्निर्भागः । आव० ९९ ।  
नि० चू० प्र० ९६ आ । उत्तरदिग्माता देशाः । विशेषे ६२४ ।  
उत्तरदिग्मन्वन्धी देशः । आव० ८३०, २९५ । वृ०  
द्वि० २२७ अ । नि० चू० प्र० ९६ अ ।

उत्तरासंग-उत्तरासङ्गः, वक्षसि निर्दिष्टस्तारितव्यविशेषः ।  
जं० प्र० १८७ । उत्तरीयस्य देहे न्यासविशेषः । भग०  
१३८ ।

उत्तासणगं-उत्तासणकं-भयस्वरम् । ज्ञाता० १३३ ।

उत्तरासमा-मध्यमप्रामस्य चतुर्थी मूर्छना । ठाणा० ३९३ ।

उत्तरासाढा-उत्तरापादानां-उत्तरापादावर्षन्तानां नक्षत्रा-  
णाम् । सूर्ये ११४ ।

उत्तरासाढाणकखत्ते-उत्तरापादानक्षत्रम् । सूर्ये १३० ।

उत्तररिक्त-उत्तरीयुं-लघुपितृम् । ठाणा० ३०५ ।

उत्तररिज-उत्तरीयम्-उत्तरासङ्गः । जं० प्र० १८९ । भग०  
३१९ । वसनविशेषः । भग० ४६८ । उपरिकायाच्छादनम् ।  
ज्ञाता० २७ ।

उत्तररिजयं-उत्तरीयकं-उपरितनवसनम् । उपा० ५० ।

उत्तरीकरणं-उत्तरकरणं पुनः संस्कारद्वारेणोपरिकरणम्  
च्यते, उत्तरं च तत्करणं च द्युत्तरकरणं, अनुत्तरमुत्तरं  
क्रियत इत्युत्तरीकरणम् । आव० ७७५ ।

उत्तरीयं-प्रावरणं प्रच्छदपटीत्यर्थः । उत्तरीयं पुनर्यत्र तद्  
परि प्रतीर्यते । वृ० प्र० ९८ अ ।

उत्तरोट्टोमा-दाडियाओ । नि० चू० प्र० १९० अ ।

उत्तरो-उत्तरप्रद्वान्नां सप्ततसम्पत्तिद्विगदणं । नि० चू०  
प्र० ६३ अ ।

उत्ताणग-उत्तानः । आव० ६४८ । उत्तानकाः-ऊर्ध्वमुख-  
आयिनः । जं० प्र० २३९ ।

उत्ताणतो-उत्तानकः । उपा० २४४ ।

उत्ताणयं-उत्तानकं-उत्तानीकृतम् । प्रजा० १०७ । उत्तान-  
कम्-ऊर्ध्वमुखम् । उपा० ६८५ । भग० १२५ ।

उत्ताणसेज्यम् । निरव० ३४ ।

उत्ताणा-उत्ताना । ठाणा० २९९ ।

उत्तानं-स्पष्टम् । प्रजा० ५९९ । प्रतलम् । ठाणा० २७८ ।  
स्वच्छतयोपलभ्यमध्यस्वरूपत्वम् । ठाणा० २७८ ।

उत्तानीकृतं । सूर्ये ३६ ।

उत्तारंती-अवतारयन्ती । आव० ६७६ ।

उत्तारी-उत्तारः-अपस्नादन्तरणम् । जीवा० २६९ ।  
जलमध्याद्बहिर्विनिर्गमनम् । जीवा० १९७ ।

उत्ताल-उत्-प्रायाल्यार्थे इत्यतितालमस्थानतालं वा । ठाणा०  
३९६ । अनु० १३२ । उत्-प्राबल्येन अतितालं अस्थान-  
तालं वा । जं० प्र० ४० । जीवा० १९४ ।

उत्तालिजंताणं-आलपनम् । राज० ४६ ।

उत्तासणओ-उद्देगजनकः । ठाणा० ४६९ ।

उत्तासणयं-उत्तासणिका-स्मरणे शप्युद्देगजनिवा । भग०  
१७५ ।

उत्तासिया-उत्तासिता-आस्फालिता । भग० १५४ ।

उत्तिग-उत्तिगः-पिपीलिकासन्तानकः । आचा० २८५ ।

तुगागः । आचा० ३२२ । रज्जुम् । आचा० ३७९ ।

उदगं इत्यादिना पिहेति । नि० चू० तृ० ६३ अ । क्रिटिका-

नगरम् । दश० १७५ । सर्वच्छत्रादिः । दश० २२९ ।

गर्भभाकृतिजीवविशेषः, कीटिकानगरं वा । आ३० ५०३ ।

कीटियजातो । नि० चू० प्र० २५५ आ । कीटवर्णगर्भो

उत्तिगो, फरगर्भो वा । नि० चू० द्वि० ८३ अ । कीटिकान-

गरम् । वृ० तृ० १६६ आ । छिद्रं । नि० चू० तृ० ६३ आ ।

कीटियानगर्यं । दश० चू० ८० ।

उत्तिगसुधुम-उत्तिगसुधुमं-कीटिकानगरम् । दश० २३० ।

उत्तिणो-उत्तिणं-अवतीर्णः । ओप० २० ।

उत्तिन्न-अवतीर्णः । दश० १९५ ।

उत्तिमं-उत्तमम्-श्रेष्ठम् । आव० ४८७ ।

उत्तिमट्टो-उत्तमार्थं-अनसतनम् । वृ० द्वि० १०० अ । उग-

मार्थं-कालार्थं । आव० ६२६ । भक्तवत्याल्लयनम् ।

आव० ५६३ ।

उत्ती-उत्तकः, दृक्करणम् । आव० ४६४ ।

उत्तुअणा-उत्तेजना । वृ० द्वि० ७२ आ ।

उत्सृज- (वेणी) गन्धे । व्य० प्र० २१० आ ।  
 उत्सृया-उत्प्रेषिता । वृ० तु० २७ आ ।  
 उत्सृडियाह-राज्यादि । आव० ५५५ ।  
 उत्सृपियं-उत्प्रेषितं-स्नेहितम् । प्रथ० । ५९ ।  
 उत्सेह-विन्दुः । पिण्ड० १० ।  
 उत्सेत्ता-अपवर्त्य । आव० ६२४ ।  
 उत्थरंत-आस्तुष्यन्-आच्छादयन् । प्रथ० ४७ ।  
 उत्थरमाणी-अभिभवन् । आव० ५६७ ।  
 उत्थल - उज्ज्वलानि-स्थलादि धूर्तुच्छ्रयस्थानि । जं० प्र० १६८ ।  
 उत्थल्लं । औष० १९२ ।  
 उत्थान-उत्थानं-मूलोत्पत्तिम् । उक्त० ४७५ ।  
 उत्थाण-अतिसारः । व्य० द्वि० २७४ अ ।  
 उत्थिय-युष्मं-सह्यान्तरं, तीक्ष्णतरुमिलयः । उपा० १३ ।  
 उत्थितवाद्-उत्थितरतद्वाद् । आचा० २०३ ।  
 उत्थिय-उत्थियः-वृष्टिकः । भग० ३२४ ।  
 उत्थुमण-अवस्तोभनम्, अनिष्टोपसन्नतये निष्ठीवनेन युक्त-  
 रणम् । वृ० प्र० २१५ अ ।  
 उत्पला-हस्तिलागपुरे भीमस्य भार्या । ठाणा० ५०७ ।  
 उत्पलिनीकन्द-पद्मनीकन्दः । प्रज्ञा० ३७ ।  
 उत्पातनिपातप्रसक्तसंकुचितप्रसारितरेकरचित-  
 भ्रान्तसम्भ्रान्तः-एकत्रिंशत्तमो नाव्यविधिः । जीवा० २४० ।  
 उत्पादपूर्व-प्रथमपूर्वनाम । उक्त० ३८२ ।  
 उत्पादसभा-उत्पादभवनविमानभाविनीसभा । प्रथ० १३५ ।  
 उत्पादिताच्छिन्नकौतूहलं-स्वविषये श्लोण्यां जलितम-  
 विच्छिन्न कौतुक येन तत्तथा । पञ्चविंशतितमो वचनान्तिशयः ।  
 सम० ६३ ।  
 उत्प्रासनं । उक्त० ४३४ ।  
 उत्प्रासयेत्-आचा० १२९ ।  
 उत्प्रासयचनं । नि० वृ० प्र० १०८ आ ।  
 उत्प्रास्यमान-उन्नतमाना-गर्वाभ्यांनो महता चारिप्रमोहेन  
 युजति ससारमोहेन बोधत इति । आचा० २१६ ।  
 उत्प्लुत-भीतः । ज्ञाता० १६१ ।  
 उत्प्लुत्य-पुद्गल गत्या । मूर्धे० ४७ ।  
 उत्प्ललय-अनुकानीदे । औष० ६८ ।

उत्सर्गसमितिः-म्यङ्गिहले स्याद्वरजहमज्जनुयगिते निरीक्ष्य  
 प्रमुञ्च च मृगपुरीषादीनामुत्सर्गः । तरया० ९-५ ।  
 उत्सर्गसूत्रं । वृ० प्र० ५१ आ ।  
 उत्सर्गापिवाद्सूत्रं । वृ० प्र० ५१ आ ।  
 उत्सर्पण-पियाविरोपः । आचा० ३६४ ।  
 उत्सादितं । उक्त० ६५ ।  
 उत्साहः-सुशार्थपरावर्तनायामभियोगः । वृ० प्र० ११३ आ ।  
 उत्सिकं-काञ्चिकस्य मीवीरिणीतो यद् निष्काशनं तत् । वृ०  
 प्र० २७५ अ ।  
 उत्सिका । उक्त० ३१९ ।  
 उत्सूर वेलातिममः । पिण्ड० ७१ । विरो० ६३७ ।  
 उत्सृजति-मुगति, निद्यजति । विद्वे० २०९ ।  
 उत्सृ(च्छ्र)तम्-प्रासादादि । आव० ८२६ ।  
 उत्सृष्टम्-उत्सर्जनम्-स्वागः । आचा० ३६२ ।  
 उत्सेधयहुलं-उत्सेधाख्यो नामेरधस्तनो देहभागो गृह्यते,  
 ततः सह आदिना-नामेरधस्तनभागेन यथोक्तप्रमाणल-  
 क्षणेन वर्तत इति नादि, उत्सेधयहुलमिति भावः । जीवा०  
 ४२ ।  
 उदक-उदको-येनोदकमुदयते । जं० प्र० १०१ । जीवा०  
 २६६ ।  
 उदंक्षमम्-अरघटपटीनिवहादिभिक्षुनेचनम् । उक्त० ५९९ ।  
 पिण्ड० १५३ ।  
 उदंत-सरीरवट्टमाणी, वला । नि० वृ० तु० १३३ अ ।  
 उदन्तः-वृणान्तः । आव० ६९२ ।  
 उदंतवाहगो-उदन्तवाहकः, वृणान्तवाहकः । आव० ५३६ ।  
 उदंतवाहतो-उदन्तवाहकः-दूतः । उक्त० १०८ ।  
 उद्वह-उद्वयः-धर्मणां विपाकः स एवैदधिक-क्रियामार्गं,  
 उद्वेन निष्पन्नः औदधिकः । भग० ६४९, ७२२ । औद-  
 विकः-ज्ञानावरणादीनामथानां प्रकृतीनामारमीयात्मीयस्वरु-  
 पेण विपाकतोऽनुभवनमुद्वयः स एव, यथोक्तेन योद्वेन  
 निष्पन्नः । अनु० ११४ ।  
 उद्वहं-उद्वयः-अनुकमोदिनस्यैवेति । भग० ५९३ । अनुक-  
 मगतानामुद्वयः । भग० ९७३ ।  
 उद्वह-उद्वहः, यद् विन्दुमहितं भाजनादि गलद्विन्दु-  
 रिति । औष० १७० । स्पष्टोपलभ्यमानजलस्यैव, अध्व-

यस्यक्षितातुर्थमेद । पिण्ड० १४\* । उन्वेनाद्रि । अनु०  
१६०॥ गउदमिदु । आचा० ३४६, ३७९ ।

उद० उग्रह्लादि-उदकाद्रिदि । भाव० ५२ ।

उदप-पर्वगवनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३३ । उदय । ओष०  
११३ । उदक-अन्ययुधिक् । भग० ३२३ । पेडालपुत्रो  
निर्मन्थ । सूत्र० ४०९ । षष्ठ आजीविकोपासक । भग०  
३६९ । जलहृत्वनस्पतिविशेष । प्रज्ञा० ३१, ३३ ।  
जम्बूद्वीपभरते आगामिसप्तमतीर्थकर । सम० १५३ ।  
तृतीयतीर्थहृत्पूर्वभवनाम । सम० १५४ । उदय-जीवयतो  
लेद्यानिपरिणाम, षडप्रदानाभिमुख्यरक्षणं कम । उत०  
३५ । उदय-विपाकवेदनानुभवस्वरूप । पिण्ड० ४१ । उदक ।  
प्रथ० २० । निर्मन्थविशेष । सूत्र० ४०७ ।

उदपचरा-उदकचरा-उदक चरन्तीति उदकचरा-पुतरक  
च्छदनकलोत्पन्नकनसा मस्यकच्छपादय । आचा० २३८ ।  
उदक-नरकविशेष । जावा० २६ । जलहृत्मेद । आचा०  
५७ ।

उदकगृहम्-उदकभवनम् । आचा० ३४१, २३८ ।  
उदकप्रतिष्ठापनमात्रक-उपकरणधावनोदकप्रक्षेपस्थानम् ।  
आचा० ३४१ ।  
उदकरज-उदकरेणुसमूह । औप० ४७ । जावा० १९१ ।  
उदकाद्रि-मिदुसहित । चू० प्र० २८२ आ ।

उदग-उदक । सूत्र० ३०७ । अगतवगण्ड । दश० चू०  
१२० । नि० चू० द्वि० ७९ अ । उदकम्-अनन्तवनस्पति  
विशेष । दश० २२९ । नगरपरिखाजलम् । जाता० १० ।  
जलाधयमानम् । भग० ९२ । जनपदसत्ये पय उद  
कान्तिपत्रिय । दश० २०८ । सुबुद्धलोपमासत ह्यन्वष्टरा  
नमुपभोक्तव्यम् । माधोरस्पमानम् । दश० १९ । शिरापा  
नीयम् । दश० १५३ ।

उदगगम्भे-उदकगम्भे-कागान्तरेण जलप्रवर्षणहत । भग०  
१३३ ।

उदगजोगिया-उदकस्य यानय-परिणामकारणभूता उद  
कयोनि त एवोदकयोनिना-उदकजननस्थभावा । ठाणा०  
१४२ ।

उदगगाप-षष्ठाङ्ग द्वादश ज्ञातम् । उत० ६१४ । उदक-  
नगरपरिखाजलं तद्वैव चात-उदाहरण उदकजातम् । पाता०

१० । सम० ३९ । प्राताया द्वादशमध्ययनम् । भाष०  
९५३ ।

उदगतीर-उदगामाराता तस्य शिञ्जति उदगं त उदगतीरं  
दूरिणि णजति उदगं तम्हा ण होइ त उदगतीरं, तो ऊधिय  
णरीपूरेण अकमति त उदगतीरं अहवा जहि ठिएहिं  
जल बीमति अहवा णरीए नमीण उदगतीर अहवा जहि  
ठितो जलद्विणए सिचति सिधुंगारिणा तं जन्तीरं, अहवा  
जावतिय विविभो फुसति अहवा चावतित जलेण फू त  
उदगतीरं । नि० चू० तू० १६ आ ।

उदगताभा-गीतमगोशात्तरमेद । ठाणा० ३९० ।

उदगदोणी-उदगदोणी वा अरहृत्स भवति नीए उक्कि  
धरीओ पाणिं पाडंति । अहवा धरंणए कट्टमया  
अपोदएम देसेसु कीरइ तस्य मणुस्सा ष्ठावात । दश० चू०  
११० । जलभाचनं यत्र तप्तं लोहं शीतलीकरणाय क्षिप्यते ।  
भग० ६९७ । उदकद्रोणि-अरहृत्जलधारिका । दश०  
२१८ आ ।

उदगपउरो-उदकप्रचुर-देशविशेष गिन्धुविषयवर । चू०  
तू० १३८ आ ।

उदगपडण-उदकपननम् । भाव० २७३ ।

उदगविन्दु उदकविन्दु । अनु० १६१ ।

उदगभाविया-जा उरुके छट्टपुब्बा मा । नि० चू० प्र०  
४६ अ ।

उदगभासो-उदकभास-सिक्कमुजगेद्रस्यावामपवत ।  
जावा० ३११ ।

उदगमच्छ-उदकमस्य-दन्द्रधनु खण्डम् । भग० १९६ ।  
दन्द्रधनु खण्डम् । जीवा० २८३ । दन्द्रधनु खण्डति ।  
अनु० १९१ ।

उदगमाला-उदकमाला-ममपानीयोपरिभूता माला ।  
जीवा० ३९४ । उदकशिखा केल्यर्थ । ठाणा० ४८० ।

उदगधलणी । नि० चू० प्र० २४ अ ।

उदगवारसमान-उदकवारकतमान-रुषुपादीयपत्रममा  
नम् । जीवा० १२२ ।

उदगवस्त-उदकवस्त-उदकवि-नेम य अवगाप निष्ठदित्यर्थ ।  
अनु० १६१ ।

उदग्ग-उदग्ग-उदगतपयवगाधेन उत्तरारं वृद्धिमान् । भग०  
१२४ । उदग्गं ममुत्पन्नसिग् ह्यर्थ प्रधानं बहि । जीवा०

३४३। उदप्रः-उचः। ज्ञाता० ६६। उदप्रः-तीव्रः।  
ज्ञाता० ७६।  
उद्दृष्टे-रत्नप्रभायां अपमान्तमहानरकः। ठाण० ३६५।  
उदतण-उदयणं-उदयगामि, प्रवृत्तमानं। ठाण० ३४२।  
उदत्त-तुदन्तम् भूमिस्तोत्तनशरुविशेषः। आव० ८२९।  
उदातः-उज्जतभाववान्। भग० १२५।  
उदधि-जलनिचयः। ठाण० १७७।  
उदधिघनं। जीवा० १९१।  
उदपानं-वृषः। वृ० प्र० १८३ अ।  
उदपील - उदकोपीलः-तटागादिषु जलसमूहः। भग०  
१९९।  
उदमेया-उदकोद्मेदः-गिरितटादिभ्यो जलोद्भवः। भग०  
१९९।  
उदय-उदीरणावलिग्रगततत्पुद्गलोद्भूतसामर्थ्यता। आव०  
७७। आचामः। भग० १८७। पनाका। भग० १८७।  
पैतालपुत्रः। पाश्चिमिनिशिष्यः। ठाण० ४५७। भाविष्या।  
नि० चू० प्र० २६४ आ।  
उदयद्वी-उदयार्थी, सामार्थी। सूत्र० ३९४।  
उदयण-उदयनः-वीणावत्सराजः। उत० १४२।  
उदयणकुमारं-उदयनकुमारं, मृगावतीपुत्रः। आव० ६७।  
उदयणमाया- उदयनमाता, भावप्रतिक्रमणदृष्टान्ते मृगा-  
वती आर्या। आव० ४८५।  
उदयनिष्पन्ने-औदयिकभावस्य द्वितीयमेदः। भग० ७२२।  
उदयपहो-उदकपयः, लोकानां जलानयनमार्गः। आव०  
६४०।  
उदयभासे-बेलन्धरनागराजसभावासः। ठाण० २२६।  
उदयघर्लं-उदकघर्लं भाविरेणुसन्तापोपशान्तये। आव०  
३३०।  
उदयघासित्वं-समुदयः, समुदायो वा। प्रश्न० ६३।  
उदयास्ताम्बरं-तापक्षेत्रम्। जं० प्र० ४४२। प्रकारक्षेत्रं,  
तापक्षेत्रम्। जं० प्र० ४५५।  
उदरं। आचा० ३८।  
उदरपोष्यं-उदरामसनम्। आष० ६६।  
उदरवलिमंसं - उदरवलिमंसं, उदरोपरि वा बलयाकारा  
मांशरेखा तस्या मांसं। आव० ६७८।

उदरि-वा-पितादिममुद्यमधोदरं तदस्यास्तीत्युदरी। आचा०  
२३५। उदरी-जलोदरी। प्रश्न० १६१।  
उदवाहा-उदकवाहाः-अपकृष्टान्यल्पान्मुदकवदनानि। भग०  
१९९।  
उदसि-उदसिन्। नि० चू० प्र० ६ अ।  
उदहिकुमारः-उदधितुमारः-बहगस्याशोपपातवचननिर्देश-  
वर्तिनो देवाः। भग० १९९। भुवनपतिदिविशेषः।  
प्रश्ना० ६९।  
उदहिकुमारीभो - उदधिक्षमार्गः - बहगस्याशोपपातवचन-  
निर्देशवर्तिन्यो देव्यः। भग० १९९।  
उदहिनामाणं - उदधिनान्नाम्-आर्यमुद्रान्नाम्। आष०  
२६२।  
उदहीसरिसनामाणं - उदधिः-समुद्रस्तेन सटक्-सटरी  
नाम-अभिधानमेवामुदधिसहग्नमानि-सागरोपमाणि स्रज्ज  
६४७।  
उदाइ-उदायी-कृणिकराज्ञो हस्ती। भग० ३१७। वृष-  
विशेषः। आव० ६८७। भग० ६७३, ६७५।  
उदाइजा। भग० १८३।  
उदाइमारक-साधुवैषधारकः। नि० चू० प्र० २९३ आ।  
उदाइमारय - भ्रमणवैषधारको विनयस्तनुनिः। नि० चू०  
तृ० २३ आ।  
उदाइयाए-असिवं उदाइयाए अभिरुतः। नि० चू० प्र०  
९७ अ।  
उदासं-उदासतं-उच्चैरुत्तता। द्वितीयो वचनातिशयः। सम०  
६३।  
उदायण - वीतमयराजः। भग० ६१८। नि० चू० द्वि०  
१४५ अ। शतानीकराजपुत्रः। विषा० ६८। भग० ५५६।  
अन्तिमराजर्षिः। ठाण० ४३०। उदायनः-विगतद्वारे  
वीतमयनगराधिपतिः। आव० ५३७। आव० २९८।  
सौवीरराजवृषभो राजा। उत० ४४८। प्रद्योतराज्ये गान्ध-  
र्वत्रियाप्रधानः। आव० ६७३। त्रिदर्मकनगराधिपतिः।  
प्रश्न० ८९। अन्तिमराजर्षिः। वृ० प्र० १६६ अ।  
उदायितकुमारो - उदायितुमारः-यथावतीपुत्रः। आव०  
६८३।  
उदायिनृपः - यः कृत्रिमसाधुभिर्मारितः। सूत्र० २५०।  
आष० ५२९। सूत्र० ३६५। आचा० ९१।

उदायिन्पमारक - ध्रमणवेषधारको मुनिः । मृ० प्र० २०४ अ । वि० १२५५ । ठाणा० १८५ ।  
 उदायिमारको - उदायिमारकः - ध्रमणवेषधारको मुनिः । नि० मृ० दि० ३९ अ, ४१ अ ।  
 उदायी - कृष्णकराजस्य हस्तिराजः । भग० ७२० । कोष्ण-कपुत्रः । ठाणा० ४५६ ।  
 उदार - उदारं - उद्रुद्रम् । जं० प्र० २०३ । उदारत्वं - अभि-धेयायस्यतुच्छत्वं गुम्फगुणविशेषो वा । द्वाविंशतितमो वचना-तिशयः । सम० ६३ । शोभनं । ठाणा० २३३ । प्रधा-नम् । प्रज्ञा० २६९ । ठाणा० २९५ । तीर्थकरणघरशा-रीरापेक्षया श्रेयशरीरेभ्यः प्रधानं, सातिरेकयोःनसहस्रमा-नत्वाच्छ्रेयशरीरेभ्यो महाप्रमाणं वा । अनु० १९६ । औदार्यवान् । भग० १२५ ।  
 उदाला - उदाराः - महान्तः । उत० ४१९ ।  
 उदाहृ - भाग्या । नि० मृ० तृ० ४९ आ ।  
 उदाहरण - चरितकल्पितमेदम् । आ० ५९७ । कथनम् । उत० ३०२ । उदाहरणम् - साध्यसाधनान्वयस्यतिरेकप्रदर्श-नमुदाहरणं, दृष्टान्तः । दश० ३३ ।  
 उदाहरे - उदाहरेत् - उदाहृतवान् । उत० २४१ ।  
 उदाहृ - उताहो निपातो विकल्पार्थः । भग० १७ । भग० २३७ । उक्तवान् । आ० १२८ । आहो धिन् । उपा० ३८ ।  
 उदिप - उदितः - उदयं प्राप्तः, स्थित इत्यर्थः । जं० प्र० ५२८ ।  
 उदिओदय - उदितोदयः, कायोत्सर्गदृष्टान्ते राजा । आ० ७९९ । पारिणामिकीशुद्धी पुरिमतालपुरे राजा । आ० ४३० । उदितोदितः - पुरिमतालनगराधिपतिः । विषा० ५८ । श्रीकान्तापतिः । मं० १९९ ।  
 उदिक्वत्ते - प्रतीक्ष्यमाणः । मृ० तृ० ११६ आ ।  
 उदिर्ण - उदीर्णम् - पीहितम् । आ० ८६३ । विषाकोदय-मागतम् । प्रज्ञा० ४०३ ।  
 उदिर्ण - उदीर्णम् - रपत् उदीर्णाकरणेन बोदितम् । भग० ९० ।  
 उदिप्रमोह - उदीर्णमोहः - उत्पद्येदमोहनीयः । भग० २२३ ।  
 उदीर्णावाहणं - उदगेन उदीचीनं प्राग्नेयं प्राचीनं उदीचीनं च तदुदीच्या आगन्तवात् प्राचीनं च तदुदीच्याः प्रयासतवात् उदीचीनप्राचीनम् - दिग्दर्शनं क्षेत्रदिग्पेक्षया पूर्वोत्तरदिगित्यर्थः ।

भग० २०७ । उदीचीनं च तदुदीच्या आगन्तवात् प्राचीनं च प्राच्याः प्रयासतवात् । जं० प्र० ४८० ।  
 उदीर्णावाह - यः उदीच्या दिशः समागच्छति वातः स उदी-चीनवातः । जीवा० २९ । यः उदीच्या दिशः समागच्छति वातः, स उदीचीनवातः । प्रज्ञा० ३० ।  
 उदीर - उदीरिसु उदयप्राप्ते दलिके अनुदितस्तात् आ-कृष्य करणेन वेदिनपन्तः । टाणा० २८९ । उदीरितवन्तः - अभ्यवसायवशेनानुदीर्णोदयप्रवेशनतः । ठाणा० १७९ ।  
 उदीरइ - उदीरयति - प्राक्कलेन प्रेरयति, पदार्थान्तरं प्रतिपा-दयति वा । भग० १८३ ।  
 उदीरण - अनुदयप्राप्तस्य करणेनाकृष्योदये प्रक्षेपणमिति । ठाणा० १०१, १९५ । उदीरणम् - अनुदितस्य करणविशे-यादुदयप्रवेशनम् । भग० ५३ । उदीरणाकरणवशातः कर्म-पुद्गलानामनुदयप्राप्तानामुदयावल्लिङ्गायां प्रवेशनम् । प्रज्ञा० २९२ । करणेनाकृष्य दलिकस्योदये दानम् । ठाणा० ४१७ ।  
 उदीरणा - अप्राप्तसमये उदयप्रापणं तैव उदीरणा । जं० प्र० १६८ । अप्राप्तकालफलानां कर्मणामुदये प्रवेशनम् । ठाणा० २२१ ।  
 उदीरणाभिव्यं - उदीरणाभिविकम् - तत्र भविष्यतीति भवा-तैव भविका, उदीरणा भविका यस्येति, उदीरणायां वा भग० - योग्यमुदीरणाभिव्यमिति । भग० ५८ ।  
 उदीरिय - उदीरणम् - स्थिरस्य सतः प्रेरणम् । भग० १८ । उदीरणा - उदीरणा नाम अनुदयप्राप्तं विरेणाऽऽगामिना कालेन यदेदितव्यं कर्मदलिकं तस्य विनिष्ठाव्यवसायलक्षणेन कर-णेनाकृष्योदये प्रक्षेपणं । भग० १५ ।  
 उदीरिय - उद - प्राक्कलेनिरितं - प्रेरितं उदीरितं । जीवा० १९१ ।  
 उदीरिया - उदीरिता - स्वभावतोऽनुदितान् पुद्गलानुदय-प्राप्ते कर्मदलिके करणविशेषेण प्रशिष्य यान् वेदयते । भग० २४ । उदीरिता - उदयमुपनीता, वेदिता । भग० १८५ ।  
 उदीरितं - उदीरयन्तं - वसवन्तरं प्रेरयन्तम् । ठाणा० ३८५ ।  
 उदीरिइ - उदीरयति - भग्नित्, प्रवर्तयति । ठाणा० ११७ ।  
 उदुम्बर - द्वितीयं महाउष्टम् । प्रध० १५१ । महाउष्टविशेषः । आ० २१५ । कर्मविषाव्याप्तमभ्ययनम् । ठाणा० ५०८ । व्यापशक्तिरेव । आ० ८२८ ।  
 उदुम्बरदक्ष - सागरद्वारार्थवाहस्तः । ठाणा० ५०८ ।

उदुहसेजा-रथेत । नि० सू० द्वि० ४९ आ ।  
 उदुसुह-ऋतुसुह, ऋतुसुभं वा-कालोचितम् । प्रश्न० १४१ ।  
 उदू, उद्दू-द्विमासप्रमाणकालविशेष ऋतु । ठाणा० ३६९ ।  
 उदूखल-काष्ठनिमित्त खण्डनोपयोगि शालम् । भग० २१३ ।  
 आचा० ३४४ ।  
 उदूकढी-पाहनियतो । नि० सू० प्र० १८४ अ ।  
 उदो-उद-म्लेच्छविशेष । चिलातदेशनिवासी । प्रश्न० १४ ।  
 उद्गमनप्रथिमकि-चन्द्रसूर्ययोश्च उद्गमन-उदयन तत्प्रथि-  
 भक्ती-रचना तादृशिनयनं यथा उदये सूर्यचन्द्रयोर्मण्डल-  
 मर्णं प्राच्या चारुण प्रकाशस्तथा यथाभिनीयते तदुद्ग-  
 मनप्रथिमकित । पद्ये नाट्यविधि । ज० प्र० ४१६ ।  
 उद्गीर्णं नामतम् । उक्त० ३३९ ।  
 उद्ग्राहित-मेष्टितम् । ऋ० १५९ ।  
 उद्घाटित-प्रकाशित, प्रकटित । ठाणा० ४१२ ।  
 उद्घाटितश्च-प्रथमो विनिय । प्रज्ञा० ४२५ ।  
 उद्देष्टका-उद्देष्टका । शृ० द्वि० ६० आ ।  
 उद्दङ्गा-ऊर्ध्वं कृतं दण्डा ये सञ्चरन्ति । भग० ५१९ ।  
 उद्दण्डपुर-नगरनाम । भग० ६७५ ।  
 उद्दडा ऊर्ध्वं कृतदण्डा ये सञ्चरन्ति । निरय० २५ ।  
 उद्दुको-जनोपहास्य । शृ० द्वि० २४२ अ ।  
 उद्दस-त्रीन्द्रियजीवमेद । उक्त० ६९५ ।  
 उद्दसगा-त्रीन्द्रियविशेष । प्रज्ञा० ४२ ।  
 उद्दसे-उद्दस । भाव० २१७ ।  
 उद्दप मारणतिष्ठ-उद्दये मारणात्मिके वेदनोदये मारणा-  
 न्तिकेऽपि न शोभं कार्य । योगसमूहे एकोनविंशतमो योग ।  
 भाव० ६६४ ।  
 उद्दहर-सुभिक्ष । नि० सू० प्र० ८९ आ सुभिक्ष । नि०  
 सू० प्र० ३१५ अ । ऊर्ध्वं दरे ते ददा ऊर्ध्वं यत्र पूर्वन्ते  
 तद्दुर्ध्वदरम् । शृ० द्वि० १०० अ । दुविधा दर-वग्गादरा  
 य पोद्दरा य, ते ऊर्ध्वं पूरति जत्य त उद्दरं-सुभिक्ष ।  
 नि० सू० प्र० २२६ अ ।  
 उद्दघण-उत्थान-नास । शृ० द्वि० ७९ अ ।  
 उद्दघण - अपद्रावणम्-अतिपातविर्जिता पीडा । पिण्ड०  
 ३७ ।  
 उद्दघणकर - मारणात्मिकवेदनाकारि धनहरणगुणद्रवकारि  
 वा । औप० ४२ ।

उद्दघणया-कृपादाधारणता । भाग० ६३ । विजाए सप्ये  
 अन्यत्र नीयते । नि० सू० प्र० ३३५ अ ।  
 उद्दघणा-उपद्रवणमपद्रवण वा । प्राणवधस्य नवम पर्याय ।  
 प्रश्न० ५ ।  
 उद्दघातितगणे-गणविशेष । ठाणा० ४५१ ।  
 उद्दघिया-अवद्राविता - उत्प्रासिता । भाव० ५७४ ।  
 मारिता । भग० ७६६ ।  
 उद्दघेति - अपद्रावयति-जीविताद् व्यपरोपयति । प्रज्ञा०  
 ५९३ ।  
 उद्दघेउ-अपद्राव्य । उक्त० २७७ ।  
 उद्दघेह-विनाशयत । उपा० ४९ ।  
 उद्दघेहिह - अपद्रावयिष्यति-उपद्रवार करिष्यति । भग०  
 ६९१ ।  
 उद्दहाता-शोभमाना । ज्ञाता० २७ ।  
 उद्दहा उद्दाति-रचयति । भग० ६३ । उद्दाति-जलरसोपरि  
 वर्तते । भग० १८४ । अपद्रवति-म्रियते । भग० १११ ।  
 उद्दहाभा-उपद्राविका, उपद्रवकारिणी । औप० १७ । उप-  
 द्रोत्री । औप० १५ ।  
 उद्दहात्ता-अपहृत्य-मृत्वा । भग० १११ । अपद्राय-मृत्वा ।  
 ठाणा० ४७१ । अपद्राय-मृत्वा । जीवा० २६३ । ज०  
 प्र० ४२५ ।  
 उद्दहाण-उदाण, वैषम्यम् । भाव० ४३७ ।  
 उद्दहाणग-यतकम् । भाव० ७०० ।  
 उद्दहाणमन्त्राय-अपद्रागमनुष्ठा, भगवते परित्यक्ता । नि०  
 सू० प्र० १०९ आ ।  
 उद्दहाणि - उद्दा -सि-सुविषये मरस्यान्त-सूदनचर्मनिष्पन्नानि  
 उद्दाणि । आचा० ३९४ ।  
 उद्दहाम - उद्दहाम - चरणनिपातशोषोपमं निरपेक्षत्वाद् द्रुत  
 चारी । अनु० २६ ।  
 उद्दहामिया-उद्दामिता-अपनीनचम्पना, प्रलम्बिता । विपा०  
 ४५ ।  
 उद्दहयति-अपशान्ति-प्रपौर्विसुच्यन्ते । उपा० ७१७ ।  
 उद्दहयण वीतमयणपरे राया । नि० सू० प्र० ३४६ आ ।  
 उद्दाल - अवदाल, विदलनं, पादादिगच्छे अधोगमनम् ।  
 विदलनम् । जीवा० २३२ । राज० ९१ ।  
 उद्दालक-एकोऽर्द्धपि हृद्यविशेष । जीवा० १४५ ।

उद्दाला-उद्दालाः, हुमविशेषः । जं० प्र० १८१ ।  
 उद्दालिशो-उद्दालितः-बलादुद्गीतः । आच० ७१७ । अप-  
 हतः । उत० ३०१ ।  
 उद्दावणया-उत्पासनम् । भग० १८४ ।  
 उद्दायो - उदावः-स्थानान्तरेष्वध्याप्यसहकामितः । जीवा०  
 ३५५ ।  
 उद्दाह-प्रकृते दाहः । ठाणा० ५०८ ।  
 उद्दिष्वाहि-प्रतीक्षस्व । नि० चू० प्र० ३२२ अ ।  
 उद्दिष्ट-भावदधिकः पात्रोपेदनः धमगान्-साभूत उद्दिश्य  
 दुर्मिक्षापगमादी यद्भिधावितरणं तदीदैनिकमुद्दिष्टम् । ५४०  
 १५३ । उद्दिष्टम्-स्वाभ्येक निष्पन्नसनादिकं शिक्षाचरणं  
 दानाय यद् पृथङ्कल्पितं तत् । पिण्ड० ७७ । उद्दिष्टपुरुवेग  
 आभासंति । नि० चू० द्वि० १६३ अ । भावति । नि० चू०  
 द्वि० १६३ आ । वक्ष्यणायाः प्रथमो भेदः । आचा० २७७ ।  
 उद्दिष्टा-अमावास्या । भग० १३५ ।  
 उद्दिष्टभादेसं-समगा निगमं सक्त तावसा गेह्य आजीव  
 एतेषु उद्दिष्टभादेसं भणति । नि० चू० प्र० २३० आ ।  
 उद्दिष्टभक्तं-उद्दिष्टभक्तं-दानाय परिकल्पितं यद्द्रव्यपानादिकं  
 तद् । द्रव्य० ३९९ ।  
 उद्दिष्टभनपरिष्णाप्य - उद्दिष्टं-तमेव धावकमुद्दिश्य कृतं  
 भक्तं-ओदनदि उद्दिष्टभक्तं तत्परिष्णाप्येनासापुद्दिष्टभक्त-  
 परिष्णातः, धमगोपासकस्य दशमी प्रतिमा । सम० १९ ।  
 उद्दिष्टवज्रप्य-उद्दिष्टवर्जकः, धावकस्य दशमी प्रतिमा । आन०  
 ६४६ ।  
 उद्दिष्टसभादेसं-गिरगेषा-साह । नि० चू० प्र० २३० आ ।  
 उद्दिष्टा-उद्दिष्टा-यस्याः स्थापनायाः उत्कृष्टा आरोपणा ज्ञानु-  
 मिथा सा ईरितता । व्य० प्र० ७५ आ । अमावास्या ।  
 जीवा० ३०५ । ठाणा० २३७ । राज० १२३ । उपदिष्टा ।  
 औप० १०० । विषा० ९३ । कथिताः । उत० २२९ ।  
 उद्दिष्टाभो-उद्दिष्टा-सामान्यतोऽभिहितः । ठाणा० ३०८ ।  
 उद्दिष्टो-उद्दिष्टः-प्रतिपादितः । द्रव्य० १७६ ।  
 उद्दिष्टा-प्रवृत्तितः । दृ० द्वि० ६१ आ ।  
 उद्दिष्टं । दृ० प्र० ६३ अ ।  
 उद्दिष्टसि-उत्कर्षपञ्चे इत्यर्थः । नि० चू० प्र० २९१ आ ।  
 उद्दिष्टिययस्यं-गुरुसमक्षं उद्दिष्टं-प्रतिष्ठातं वक्षं उद्दिष्टयस्यम् ।  
 दृ० प्र० ९७ आ ।

उद्दिष्ट-उद्दिष्ट, उद्दिष्टति । आचा० ३२५ ।  
 उद्दिष्टसपविभस्यगती-उद्दिष्टप्रविभक्तगतिः-प्रविभक्तं प्रति-  
 नियतमाचार्यादिकमुद्दिष्टय यत्प्राप्तं गच्छति सा । विद्यायो-  
 गतेन्द्रशोदशो भेदः । प्रज्ञा० ३२७ ।  
 उद्दिष्टसामि-वाचयामि । विशेषे १२९५ ।  
 उद्दिष्टं-सुषुप्तम्, ( देशो ) । दृ० द्वि० १०५ अ । नि०  
 चू० प्र० २२७ अ ।  
 उद्दिष्टसेस-जं लुं गेहि अल्पगुडा बाहि गिणीतं तं गौं  
 सेसं छद्दिवं । नि० चू० द्वि० २० आ ।  
 उद्दिष्ट-उद्दिष्ट-अध्ययनेकदेशभूतम् । दश० ७ । उद्दिष्टं  
 उद्दिष्ट-वस्तुनः सामान्याभिधानं । विशेषे ६३९ । वाच-  
 नास्यप्रदानम् । व्य० प्र० २६ अ । उद्दिष्टयते इति उप-  
 देशः, मद्गतकर्मव्यादेवाः । नारकादिव्यपदेशः उच्चावचगोना-  
 दिव्यपदेशो वा । आचा० १२४ । शुद्धचनविशेषः । अतु०  
 ४ । यावदधिक्यादिप्रणिधानम् । पिण्ड० ३५ । उद्दिष्टानसु-  
 ददेश-सामान्याभिधानरूपः । अतु० २५७ । उद्दिष्टकः-  
 द्वीसमुद्रोद्देशकावयवविशेषः । भग० ७६९ । अध्वयनार्थ-  
 देशाभिधाया अध्वयनविभागः । भग० ५ । सामान्याभि-  
 धानमध्ययनम् । आच० १०४ । शुरोः सामान्याभिधायि  
 वचनम् । उत० ७३ । उद्दिष्टो अभिनवस्त । नि० चू०  
 प्र० २२३ आ । वाचयामीति शुद्धप्रतिज्ञारूपः उद्दिष्टः । विशेषे  
 १२९६ । अविशेषो उद्दिष्टो । नि० चू० द्वि० १०८ अ ।  
 क्षेत्रकालविनागः । दृ० द्वि० २६९ अ ।  
 उद्दिष्टग-उद्दिष्टकः-श्रीन्द्रियजन्तुविशेषः । जीवा० ३२ ।  
 उद्दिष्टगणतेयासी-उद्दिष्टगणतेयासी । ठाणा० २४० ।  
 उद्दिष्टगकाला-उद्दिष्टगकाला-उद्दिष्टशावसराः श्रुतोपचार-  
 रूपाः । सम० ४६ ।  
 उद्दिष्टगपारिय-उद्दिष्टगनाचार्यं, आचार्यविशेषः । दश०  
 ३१ ।  
 उद्दिष्टगपारिय-उद्दिष्टगणम्-अज्ञादेः पठनेऽधिकारिकरणं  
 तत्र तेन वाऽऽचार्यः-गुरुः-उद्दिष्टगनाचार्यः । ठाणा० २४० ।  
 उद्दिष्टिय-उद्दिष्टिय कृतम् अंदिशिकम्-उद्दिष्टकृतकर्मार्थ-  
 भेदम् । दश० १७४ ।  
 उद्दिष्टिअचरिमतिग-उद्दिष्टाचरमतिगम्, अंदिष्टियस्य  
 पान्दहभयनिर्भयविषयम् । दश० १६७ ।



उद्गाह्या-उद्गाविताः । उत० १०० । वीगेन प्रमृताः । उत० ३६४ ।

उद्गाह्या-उद्गाविताः सक्षय्यताः । उत० १७९ ।

उद्गायमाणो-उत्तिष्ठन् । प्रश्न० ६२ । उद्गावमाणः-प्र-  
वेमानः । ज्ञाता० ५० ।

उद्गारपलिओवमे- तस्य चक्षुषमाणस्वरूपवात्प्रमाणं तस्य-  
। ष्टानां वा तद्द्वारेण द्वीपसमुद्राणां वा प्रतिसमसमुद्ररण-  
अधोद्वारणमपहरणमुद्गारः तद्विषये तत्प्रधानं वा पत्न्योपम-  
मुद्गारपत्न्योपमम् । अतु० १८० ।

उद्गाघर्षण-कार्ष्ण्य निष्पादनम् । व्य० प्र० १७२ अ ।

उद्दिअ-उद्गतः-देशाच्चिचोक्तः । ज० प्र० २७७ ।

उद्दिथ-उद्गता-निष्काशनम् । टाणा० ४६३ ।

उद्दी-उद्दिः । ज० प्र० ४५४ । 'भेलितु पण्डियाओ चलणे  
विन्धारिऊण वाहिरओ । उअस्समं एमो वाहिरउद्दी सुणे-  
वक्खे ॥ अंउट्टे भेलिउं विन्धारिय पण्डियाओ वाहिं हु । उअ-  
न्ममं एमो भणिओ अदिअतरदिदि ॥' आद० ७९८ ।

उद्दीमुहकलंबुआपुष्कसंडिता- ऊर्ध्वमुखकलम्बुक्पुष्प-  
सुरिभता-ऊर्ध्वमुखस्य कलम्बुकापुष्पस्यैव-नालिकापुष्पस्यैव  
संस्थानं-संस्थानं यस्याः सा । सर्व० ६७ ।

उद्दभ-उत्तस्ततो विप्रसृतः । ज० प्र० ५१ । जीवा०  
१६०, २०६ ।

उद्दताप-उद्दतया-दर्प्यातिशयेन । भग० ५२७ ।

उद्दम्ममाण-उत्पाद्यमानम् । औप० ४७ ।

उद्दय-उद्गतः-उद्भूतः । औप० ५ । इतस्ततो विप्रसृतः ।  
सर्व० २१३ । उद्भूतः । भग० ५४० । उद्भूता-वायुता ।  
ज्ञाता० ८० ।

उद्दुयाप-उद्दतया-वल्गवीनामुद्दतत्वेन, उद्दतया वा  
सदृश्या । भग० १६७ ।

उद्दुव्वमाण-उत्पाद्यमानम् । औप० ४५ ।

उद्दुसियं-रोमायितम् । उद्दुयितम् । नि० सू० प्र० २१५ अ ।

उद्दय-उद्गतः । आद० ५२० ।

उद्दलिता-मरुत्वा । नि० सू० प्र० ३२४ अ ।

उद्दिज्जत्यं-सम्पुष्टंभवम् । टाणा० ११४ ।

उद्दामक-उत्पन्नदिहारी । व्य० प्र० १६८ अ ।

उद्दामकभिक्षाचर्या- चरिप्रामिषु भिक्षार्थं-पर्यटनम् ।  
सू० प्र० २०६ आ ।

उद्यतकं-उत्पिष्टम् । प्रश्न० १५४ । पामिच्चं, भिक्षाशेषः ।  
आ चा० ३२९ ।

उद्यतविहारेण मामरुपादिना । उत० ५८७ ।

उद्यानि-प्रतिश्रीतीयामिनी सा । व्य० प्र० २५ आ ।

उद्युक्तः-परायणः । आद० ५८७ ।

उद्गाः-मिन्धुविषये मत्स्यान्तस्सुमचर्मनिष्पन्नानि । आचा०  
३९४ ।

उद्गाणि-मिन्धुविषये मत्स्यास्तस्सुमचर्मनिष्पन्नानि । आचा०  
३९४ ।

उद्दत्तनं-निष्कमणम् । आचा० ६९ । द्विकवटिर्द्विकरण-  
स्वरूपम् । भग० २५ ।

उद्दत्तनकरणं-करणविशेषः । भग० २४, ९० ।

उद्दत्त्यं-निष्कम्य । आद० १७७ ।

उद्दत्तं-शय्यम् । उत० १०९ ।

उद्दसितवृहं-शय्यागारम् । उत० ६६५ ।

उद्दालयन्-आलोडयन् । दम० १८ ।

उद्द-और्णिकः । टाणा० ३३८ ।

उद्दप-उद्गतः । मम० ७१ ।

उद्दतमणे-उद्गतमणः-प्रकृत्वा औदार्यादियुक्तमना । टाणा०  
१८३ ।

उद्दतरूवे-सम्पानावयवादिमीन्द्रयाद् उद्दतरूपः । टाणा०  
१८३ ।

उद्दतायसे-उत्तनः-उत्पिष्टतः ग चागावत्सुभेति उत्तना-  
वर्तः । टाणा० २८८ ।

उद्दय-उद्गतं-अङ्गुलिपर्याणि । औप० १७३ । शुण्वनि-  
उचाणि च । ज्ञाता० ३ ।

उद्दयनं-सुप्तावविशेषः । ज० प्र० ११६ ।

उद्दयमाणे-उद्गतमानः, उद्गतो मानोऽत्येव्युत्तमानः, उद्गतं  
वाऽऽत्मानं मन्व्यन इति । आचा० २१५ ।

उद्गाईओ । नि० सू० प्र० ११२ अ ।

उद्गात-महाविदेहे नगरवर्तिप । निरु० ८० ।

उद्गासओ-ऊर्गामयः । आद० ४१८ ।

उद्गामिजने-उद्गाम्यते ऊर्ध्वमुत्क्षिप्यते । जीवा० ३०७ ।

उन्नामिज्जर(ए) - उन्नामिज् - उरिखणः, प्रतिदि यत् इति-  
 यावत् । अनु० १४३ ।  
 उन्निद्रीकृतं - औपितम् । जीवा० २७१ ।  
 उन्निव - औषिकम् । टाणा० ३३० ।  
 उन्मज्ञजटा - भवीविशेषः । टाणा० ७१ ।  
 उन्माधितः । आर० १५६ ।  
 उपकारिका - राजधानीस्यायितस्त्रप्रसादावनमहासीनां पी-  
 टिता । जीवा० ०२२ ।  
 उपकार्यिकाकारिका - राजासुरासाम्यकारिका । न० प्र०  
 ३२१ । जीवा० ०२० ।  
 उपगतशुद्धार्थ - उपगतशुद्धार्थ - उत्कृष्टयोगाशान्तापता ।  
 चतुर्विंशतितमो घचनानिश्रयः । सम० ६३ ।  
 उपगृह्णन् - परिव्रजन् । नि० चू० प्र० २५६ आ ।  
 उपघस्तरं - निर्द्धमन् । ओष० १२३ ।  
 उपचयद्वयमन्दः - य परिस्थान्तरशरीरतया गमनादि  
 व्यापारं चतुं न गच्छति । चू० प्र० ११२ अ ।  
 उपचयभाष्यमन्दः - यो बुद्धेरपचयेन यत्प्रवृत्तं कार्यं चतुं  
 नोत्सकते । घृ० प्र० ११३ अ ।  
 उपचारोपेतं - उपचारोपेतत्वं - अग्राम्नात् । मृतीषो बलनाति-  
 त्तय । सम० ६३ ।  
 उपचियमंस्तो - वलियमरोते । नि० चू० प्र० २६६ आ ।  
 उपदशना - जम्बूद्वीपनीलवर्णपर्वते नवमङ्क । टाणा०  
 ७३ ।  
 उपदिष्टा - महाकल्याणकमन्वन्धितया पुण्यतिथिवेन प्र-  
 क्ख्याता, तथा पौरुमातीषु च निरुत्पत्ति चतुर्मासकति  
 थिष्ठिरार्थं । सूत्र० ४०८ ।  
 उपदेशः - युक्तम् पथाय । विश० ४१६ ।  
 उपधानकं - द्रव्योपधानम् । भाव० ६६८ । विष्णुशेषा ।  
 निष्णोषणा, तपनीयमन्वो मण्डोपशानका । नीला० ०३१ ।  
 उपनीतरागं - सुपनीतरागत्वं - मालकोभादिप्रामाण्यमुक्तता ।  
 मस्यो बन्धनार्तिशय । मस० ८२ ।  
 उपपत्तिः । भग० १० ।  
 उपगृह्यन् - अनुमोदयत् । ज्ञाता० १८ ।  
 उपयोगपरिचोमः - अग्रनासिवाहनान्नात्वा बहुसाधयत्वात्  
 वचनमपवावधानमपि परिमाणम् । तन्वा० ७-१६ ।

उपमानं - एषान् । भाष० १३ । युगार्थिशायासम्  
 समानार्थोपमाने मंगममिदम्बन्धनानुभवानाम् । टाणा०  
 ०६० ।  
 उपयुक्तद्वयसद्वयक - यदुत्पुण्य - अत्यवदां इत्यं सत् -  
 ममाप्राप्तय प्रयति तत् । भाषा० १०६ ।  
 उपरतकापिर्वा - अन्नममंभवत्प्रोपत्तया गावदयेते.ने  
 निप्रतम्य मिया । कायिदीकियागाम्नीयो मेः । भाष०  
 ६११ ।  
 उपरितनसुहृत्प्रतरा - अत्र निर्गुणोक्तमपत्तित्तः ही  
 ल्युत्तनुप्रमाणम् सुहृत्प्रतरादाश्व यादृशं नत् गोव-  
 न्यतानि तावन्मा स्तन्मनायां वृषिणां ते प्रया मे तत्प-  
 रितनसुहृत्प्रतरा । नेरी ११० ।  
 उपरिमाण - उपरितया । भाष० ६४१ ।  
 उपर्यविश्रम्भः । भाषा० १०६ ।  
 उपलिपति - पदसमुत्पत्त्या त्तिकाशकस्य च मंगमादिना  
 रत्नं भ्रमन्ति । भाषा० ११० ।  
 उपयस्तु - उपयगाय कर्तुम् । विष्णु० १६३ ।  
 उपयैतो - उपायत्तन, आयत्तद । भाष० ४३४ ।  
 उपयाननिष्पद्य - उपयान्तोष इत्यादि उपायानवत्प्रम  
 आत्मपरिणाम इति भावना । टाणा० ३७८ ।  
 उपयान्ता - प्रदेरतीड्यवेदनात् कयाया । टाणा० ५ ।  
 उपधा - द्वेष । इय० प्र० ३ अ ।  
 उपसंघ - उपायस्य - उपसंघाति - प्रातिः । भग० १०४ ।  
 उपसंघदालोचना - भाषोपनाया द्वितीयो मेद । इय० प्र०  
 ४८ आ ।  
 उपसङ्घात - भविष्णुपस्तुपद्मान । नेरी १३१ ।  
 उपसर्ध - उपस्यतम् । इय० द्वि० २२० आ ।  
 उपसुधापनं - पुनर्निर्माणं पुनश्चत् पुनर्नरोपणम् । तन्वा०  
 १-०३ ।  
 उपस्थापयितुं - अन्वयान्नाकरणे । इय० द्वि० २१० अ ।  
 उपसृष्टाति - चक्राणि प्रशालयति । भाष० ४३४ ।  
 उपहित - भोजनमपने नैकिन भाषमिति भाष । टाणा०  
 १४८ ।  
 उपादानकारणं - मृदादि । टाणा० ४१ ।  
 उपाधिः - उपापानमुपाधि - दक्षिणः । भग० ४ ।  
 उपाया - व्याख्यानादि । भाषा० ८० ।

**उपायोपेयभावलक्षणः**—वचनरूपापन्नं प्रकरणमुपायः तस्य ।

रिज्ञानं नोपेयम् । प्रज्ञा० २१

**उपादेभाग**—पोषचतुर्धभागः । आचा० ३२६ ।

**उपालम्भ**—उपाालम्भः शिमेयस्यविहितविशेषित्वं । ज्ञाता० ७७ ।

**उपालक**—निर्व्यूहः, रवाक्षः । व्य० प्र० १३३ अ ।

**उपैति**—करोति । आचा० २१७ ।

**उपोद्घातनिर्युक्तिः**—निर्युक्तिमेदः । टाणा० ६ ।

**उप्पइयं**—उत्पत्तिकं—उद्भूतम् । उत्प० ११९ ।

**उप्पज्जंते**—उत्पद्यन्ते, एतदभावात् स्फातिमद्भवन्ति । ज० प्र० २५६ ।

**उप्पज्जमाणकालं**—उत्पद्यमानकालं—आश्रयमादादरभ्योत्पन्नयन्तसमयं यावदुत्पद्यमानत्पदेषुत्वाद् वतमानभविष्यत्कालविषयं द्रव्यम् । भग० १८ ।

**उप्पडा**—श्रीन्द्रियविशेषः । प्रज्ञा० ४२ ।

**उप्पण**—उत्पन्न—विधिना प्राप्तम् । दश० १८१ ।

**उप्पणमिस्सिया**—उत्पन्नमिधित्वा—उत्पन्ना मिधित्वा अनुत्पन्नं सह सहस्यया पूरणार्थं यत्र सा । सत्यामुपाभावात् प्रथमो मेदः । प्रज्ञा० २५६ ।

**उप्पत्ति**—उत्पत्ति—निदानम् । व्य० प्र० ११ अ ।

**उप्पत्तिअं**—पर्वतिधमन्तरेणकारिमकं भोज्यम् । वृ० डि० १९२ अ ।

**उप्पत्तिआ**—उत्पत्तिरेव न शास्त्राभ्यासकर्मपरिशीलनादिकं प्रयोजनं—कारणं यस्याः सा औत्पत्तिकी । नदी १४४ ।

**उप्पत्तिकसाय**—द्रव्यादिवाहात् क्षयायभवत् तदेव क्षयाय-मितिगत्वात् उत्पत्तिकसायः । आच० ३९० । शरीरंगधि-क्षेत्रवास्तुव्याख्यादयो यद्वाश्रित्य सेवासुदृति । आचा० ११ ।

**उप्पत्तिया**—औत्पत्तिकी—उत्पत्तिरेव प्रयोजनं यस्याः सा, बुद्धिविशेषः । आच० ४१४ । उत्पत्तिकी—अदृष्टाधुताननु-भूतविषयाश्चस्माद्भवन्तीनां । राज० ११६ ।

**उप्पत्ती**—उत्पत्तिकरः स्वस्वल्पनाशित्पत्तिमित्वात् उत्पत्तिवदिति । आच० ४६१ । आरंभमानम् । टाणा० २८५१ नामा-

न्यते या न विशेषतः । टाणा० ४४९ ।

**उप्पन्न**—उत्पन्नविषया—सत्यामुपाभावात्मेदः । दश० ३०९ ।

**उप्पन्नसिस्से**—उत्पन्नविषयं मिश्रं—मत्स्यमुपा उत्पन्नमिषं तदेवोत्पन्नमिषकम् । टाणा० ४६९ ।

**उप्पयंते**—भूतानुत्पद्यन्ते । ज्ञाता० ४६ ।

**उप्पयनिषयं**—उत्पातः—आकाशे उत्पन्नं निपात—तस्माद-वपतनं उत्पातपूर्वं निपातो यस्मिन् तदुत्पातनिपातम् ।

दिव्यनाट्यविधिः । ज० प्र० ४१३ ।

**उप्पराउ**—उपरितः—उपरिष्ठात् । दश० ३८ ।

**उप्परामुहो**—उपरिसुखं । भाव० १८१ ।

**उप्पराहुत्तो**—उपरिभूतः । भाव० ५०२ ।

**उप्पलं**—उत्पल—नीलोत्पलादि । आचा० ३४८ । चतुरशीति-

रत्नकाश्रयतसहस्राणि । जीवा० ३४५ । गर्दभकम् ।

राज० ८ । जीवा० १७७ । उत्पलकुष्ठं, नीलोत्पलं वा ।

जीवा० २७७ । उत्पलं प्रज्ञा० ३७ । जलहृदयविशेषः ।

प्रज्ञा० २३ । कालविशेषः । भग० २७५ । उत्पलं—चतु-

रशीत्या लक्षैरुत्पलैः । अनु० १०० । उत्पलार्धं—एक-

दशमते प्रथम उद्देशकं । भग० ५११ । कालविशेषः । भग०

८८८ । भग० २१० । कालविशेषः । सूयं ९१ । नीलो-

त्पलमुत्पलकुष्ठं वा । सम० ६१ । औप० १६ । आरण्यकम्पे

विमानविशेषः । सम० ३८ । उत्पलकुष्ठं—गन्धद्रव्यविशेषः ।

ज्ञाता० १२९ । उत्पलं—नीलोत्पलादि । दश० १८५ ।

उत्पलं—कुष्ठम् । ज० प्र० ११७ ।

**उत्पलंग**—उत्पलाङ्गं—चतुरशीतिहस्तकशतसहस्राणि । जीवा०

३४५ । कालविशेषः । टाणा० ८६ । उत्पलाङ्गं, कालवि-

शेषः । सूयं ९१ । भग० ८८८ । उत्पलाङ्गं चतुरशीत्या

लक्षैर्हस्तकैः । अनु० १०० ।

**उत्पलसुम्मा**—उत्पलसुम्मा, पुष्करिणीनाम । ज० प्र० ३३५,

३६० ।

**उत्पलनालं**—उत्पलनाल—उत्पलं—नीलोत्पलादि नालं—तस्यै-

वाधारः । आचा० ३४८ ।

**उत्पलपउमोपसोभिता**—उत्पलपयोपसोभिता । भाव०

८९८ ।

**उत्पलवेडिया**—उत्पलवेडानि निरुक्तविशेषान् प्राकृत्या

भिक्षवित्त-नेया सन्ति ते उत्पलवेडिकाः । औप० १०६ ।

**उत्पलयं**—उत्पलयं—वर्कभकम् । जीवा० १८३ ।

**उत्पलहृदयथा**—उत्पलहृदयजलजमुससम्पत्तिविशेषः । ज०

प्र० ४४ । उत्पलहृदयजलजमुससम्पत्तिविशेषः । राज० ८ ।

**उत्पलहृदयथ**—उत्पलहृदयकः—उत्पलहृदयजलजमुससम्पत्ति-

विशेषः । जीवा० १९१ ।

उष्णला-पिशाचन्द्रकालस्य स्तूतीधाममहिषी । ठाणा० २०४ ।  
 पुष्परिणीविशेषः । जं० प्र० ३६० ।  
 उष्णलार्द्र-गर्भकानि ईषणीकानि वा । जं० प्र० २६ ।  
 उष्णलावय-उत्पलावयति । दश० २०५ ।  
 उष्णलुज्जला-उत्पलोज्ज्वला, पुष्परिणीनाम । जं० प्र० ३३५,  
 ३६० ।  
 उष्णलुद्देश्य-उत्पलोद्देशक-एकादशशते प्रथमः । भग०  
 १६६ ।  
 उष्णह-उत्पथ-उन्मार्ग । उत० ५४८ । परममयः । ठाणा०  
 २४१ ।  
 उष्णा-उत्पाद । ठाणा० १९ ।  
 उष्णाद्रभो-उत्पातः । भाष० २९८ ।  
 उष्णादृक्षा-उत्पादयितुं-सम्पादनाय, अथवाऽनुपचानां भोगा-  
 नानुत्पादयिता-उत्पादकः । ठाणा० २६४ । सम्पादनशीलः ।  
 ठाणा० ३८६ ।  
 उष्णाद्व्या-उत्पाता-अनिष्टसूचका रश्मिरुष्णादयस्नडेनु-  
 का येऽन्यथास्ते औत्पातिकाः । सम० ६२ ।  
 उष्णाप-उत्पातं-सहजश्मिरुष्णादिलक्षणेऽपानफलनिष्पन्न-  
 निमित्तशास्त्रम् । सम० ४९ । उत्पादः । भाष० ६६२ ।  
 उष्णापति-उत्-प्राप्त्येव पाठयति । नि० सू० प्र०  
 २५२ आ ।  
 उष्णाएमाणे-उत्पादयन् । उत० १५७ ।  
 उष्णात्रो-उत्पाद-उत्पत्तिरेतुभूत-क्रियालक्षण । विशेषे  
 २४१ ।  
 उष्णात्तै-उत्पाद-सहजश्मिरुष्णादिः । ठाणा० ४२७ ।  
 उष्णाप्य-उत्पातपूर्व-प्रथमपूर्वनाम । ठाणा० ४८४ । उत्पात-  
 प्रकृतिविकारो रक्तग्रन्थादि । प्रथ० १०९ । उत्पातदिरिदा-  
 हादिकम् । अनु० २१६ । उत्पाद-यतो नानुत्पन्नं वस्तु  
 लक्ष्यते अतोऽयमपि वस्तुलक्षणम् । भाष० २८९ । उत्पा-  
 तं-सहजश्मिरुष्णादिकम् । भाष० ६६० । उत्पातं-वपि  
 हस्तितादि । सूत्र० ३१८ । प्रथमपूर्वम् । नदी ५२ । ठाणा०  
 १९९ ।  
 उष्णाप्यम-उत्पादक-ने भूमि निरत्वा समुत्तिष्ठन्ति ते । व्य०  
 द्वि० २८८ आ ।  
 उष्णाप्यम-उत्पादना-सम्पादनं, गृहस्थादिपण्डितैश्चार्जन-  
 मिलनं । ठाणा० १५९ ।

उष्णाप्यम-उत्पादना-भाष्यादिका बोधशक्तिः । प्रथ० १५५ ।  
 भाष्यादिलक्षणदोषविशेषः । भाष० ५७६ ।  
 उष्णाप्यमोषघाते-उत्पादना-उत्पादनादौ, उत्पात-  
 अशुद्धता उत्पादनोपघातः । ठाणा० ३२० ।  
 उष्णाप्यमव्यय-उत्पातपूर्वतः । सम० ३३१ । त्रिवेम्बोदपान-  
 नाय यत्रागत्योत्पत्तति स् । भग० १४४ ।  
 उष्णाप्यमव्ययमा-उत्पातपूर्वताः-यत्रागत्य बहवः स्वार्थमपि-  
 मानवानिभो वेदानिका देवा देव्यथ त्रिवेम्बोदपानमिर्त-  
 वैक्रियशरीरमारचयन्ति । राज० ७९ ।  
 उष्णाप्यमव्ययमा-यत्रागत्य बहवो व्यन्तरदेवा देव्यथ विधि-  
 प्रतीडानिमित्तं वैक्रियशरीरमारचयन्ति । जं० प्र० ४४ ।  
 जीवा० १९९ ।  
 उष्णाप्यमुष्यं-उत्पादपूर्वम्, तस्य मन्वदव्ययार्णं पत्रवाग य  
 उष्णाप्यमगीकांते पण्यवणा क्वा । नदी २४१ । यत्रोष्णाद-  
 माश्रित्य द्रव्यपूर्वाणाम् प्रकृषणा कृता तद् । सम० २६ ।  
 उष्णाप्या-त्रीन्द्रियविशेषः । प्रगा० ४२ ।  
 उष्णाल-प्रहरणकोमविशेषः । जीवा० २३२ । प्रहरणकोऽ-  
 प्रहणस्थानम् । राज० ९३ । मत्तवारणम् । जीवा० २७५ ।  
 उष्णालसंदिग्धो-उष्णालसंदिग्ध-मत्तवारणसंदिग्धः । जीवा०  
 २७५ ।  
 उष्णासितो-उत्प्रासित-अमृतितः । भाष० १०१ ।  
 उष्णासिध्या-हृदिता । नि० सू० प्र० ६९ आ ।  
 उष्णि-उपरि । भग० ८२ । ठाणा० ४३२ ।  
 उष्णिजल-उष्णिजल-आहुलकम् । राज० ५२ ।  
 उष्णिकुण्ड-श्यामसुक्तम् । जं० प्र० ४० । श्यामसुक्तं, स्वरि-  
 तम् । ठाणा० ३९६ । अनु० १३० । आवृत्त नोपमूर्तं  
 बोध्यते । श्यामसुक्तं वा । जीवा० १९४ । भीती । ज्ञाता०  
 १६१ ।  
 उष्णितृणाय-उत्प्रेदनकै-हुद्दोनोत्प्रेदना । उत० ८ ।  
 उष्णितृणा-उत्-प्राप्त्येव पिट्टा उत्प्रेदना । उत० ८ ।  
 उष्णितृथे-श्यामसुक्तम् ।  
 उष्णितृथं-उत्प्रेयन्तः-आमादयन्तः । प्रथ० ६३ ।  
 उष्णितृथं-मुहुःशुद्ध-श्वसनम् । व्य० द्वि० ५३ आ ।  
 उष्णितृथं-मुहुःश्वसनम् । व्य० द्वि० ५३ आ ।  
 उष्णिलणा-उत्प्रेदनं-प्राणादीनां प्लावनम् । व्य० द्वि०  
 १० आ ।

उप्पील-उत्पील.-समूहः । प्रश्न० ५० ।  
 उप्पीलङ्-उत्पीलयति-प्राक्त्वेन वाधते । शीघ्र० ३२६ ।  
 उप्पीलिय-उत्पीडिता प्रत्ययारोपणेन, चाहौ वद्धा । भग० १९३ ।  
 गाढीकृता । राज० ११८ । भग० ३१७ । ज्ञाना० २२१ ।  
 शीघ्र० २५९ । उत्पीडितः-गाढं वद्धः । प्रश्न० ४७ । उत्पी-  
 डिता-गुणसारणेन कृतावपीडा, चाहौ वद्धा वा । भग०  
 ३१८ । कृतप्रत्ययारोपणा । विपा० ४७ । आरोपितप्रत्ययाः ।  
 औप० ७१ । आशान्ता युगेन । ज्ञाता० ८५ ।  
 उप्पीसेजा । भग० ७६६ ।  
 उप्पुया-उत्प्लुता-उत्सुका । प्रश्न० ५२ ।  
 उप्पूर-उत्पूर्-प्राचुर्यम् । प्रश्न० ४३ । जलप्लव् । प्रश्न०  
 ७६ ।  
 उपपेक्खेज्ज-उपेक्षयते । भाव० ६४० ।  
 उपफन्दति-उत्स्पन्दते-प्रविशति । उत० ३५५ ।  
 उपफंसणं । औप० १५५ ।  
 उपफणिसु-साधुर्थे वाताय दत्तवन्तः । आचा० ३४३ ।  
 उपफसणा-अप्यायस्पर्शने अस्सट्ठचरितं लयणोत्तारणम् ।  
 वृ० द्वि० ६१ आ ।  
 उपफालगा-उत्प्रासवम् । उत० ६५६ ।  
 उपफिड्ड-मण्डकवाप्लवते । उत० ५५१ ।  
 उपफुल्लं-विगणिएदि इत्थीमारीरं रयणादि वा ण निज्जाइ-  
 यव्यं । दत्त० चू० ७७ । उत्फुल्लं-विमसितलोपनम् ।  
 दत्त० १६८ । निष्पुणः । नि० चू० प्र० २०१ आ ।  
 उपफेणओफेणीयं-सक्कोपोप्पारवने यथा भवति । विपा०  
 ८३ ।  
 उपफेस-मुद्रम् । औप० ३५ । सिरावेदनम् । आचा०  
 १८० । प्रमा० ८७ ।  
 उपफेसि-शिरोपेष्टने, शेरगक इत्यर्थे । टाण० ३०४ ।  
 उपफोसं-उत्प्राशनं छेदनम् । वृ० प्र० २८५ आ ।  
 उपफोसणं-कियाविशेषः । नि० चू० द्वि० १६६ आ ।  
 उपफोसणा-जलगुग्गुला । नि० चू० द्वि० १३ आ ।  
 उपफोसेज्ज-उत्थेरा । नि० चू० प्र० १८६ आ ।  
 उपफुतो-निष्पुणः । औप० ९७ ।  
 उपफतो-अववट । भाव० २९९ ।  
 उपफततो-उद्बटः । भाव० ४५९ ।  
 उपफुटा-उत्पता । भाव० ६०१ ।

उप्पुहु-अन्तःप्रवेशितम् । अनुगत० ७१ ।  
 उप्पुमुनिवुहुयं-उन्मन्ननिमग्नत्वम् । प्रश्न० ६३ ।  
 उप्पमं-तव । उत० १४७ ।  
 उप्पमंडो-अश्वत्थरतिपालादि । वृ० वृ० २२५ आ ।  
 उप्पमजिय-उद्भिद्य । उत० १९२ ।  
 उप्पमहु-अभ्यायितम् । पिण्ड० ९० ।  
 उप्पमड-उद्भूत-विकरालम् । जं० प्र० १७० । अनुगतं ७१ ।  
 भग० ३०८ । रपटम् । भग० ३०८ ।  
 उप्पमा-उत्-प्राक्त्वेन ध्रमयति उद्भूताः-भिक्षाचरा । ध्य०  
 प्र० १५३ आ ।  
 उप्पमे-उद्भूते-यायात् । आचा० २९१ ।  
 उप्पभव-उद्भवः-सम्भवः । ज्ञाता० ५० । सम्भूतिः । भग०  
 ४७० ।  
 उप्पमवणं-निध्वावणं । नि० चू० प्र० ५२ आ ।  
 उप्पमवेति-उच्छ्रयति । भाव० ३४२ ।  
 उप्पमातो-निगण्णो । नि० चू० प्र० ३५ आ ।  
 उप्पमाम-भिक्षाचरप्रामः । ध्य० प्र० २५० आ ।  
 उप्पमामइला-उद्भ्रामिला-स्वैरिणी । ध्य० द्वि० ३१ आ ।  
 उप्पमामओ-उद्भ्रामवः, जारः । पिण्ड० १२३ । पारदा-  
 रिकः । औप० ९२ । वृ० वृ० ४८ आ ।  
 उप्पामगी-भिकरायरिया । नि० चू० प्र० ७७ आ । नि०  
 चू० प्र० ३६ आ । पारदारिकाः । औप० ७५ । वृ० द्वि०  
 २६ आ । पारदारिगो । नि० चू० प्र० १०७ आ । सगा-  
 टगो । नि० चू० द्वि० ९४ आ ।  
 उप्पामजितोय - उद्भामवतियोगः-प्रामः । ध्य० प्र०  
 १५३ आ ।  
 उप्पामिगा-उद्भामिका कुलटा । ध्य० द्वि० १५० आ । उद्भामि-  
 मिता-मनोपुमिष्टान्ते धेनुधामपराजितमामगायाः भाव०  
 ५७८ । अगती । दत्त० ५७ ।  
 उप्पामिउजंति-अप्राउजन्ते । वृ० वृ० ११७ आ ।  
 उप्पामिया - पृथीला । वृ० द्वि० २६७ आ । उद्भामिग-  
 र्द्वैरिणी । भाव० ४२१ ।  
 उप्पामे-निधमामरिये मद्यमि । नि० चू० प्र० ११२ आ ।  
 भिक्षाभ्रमणम् । टाण० ३६६ ।  
 उप्पामयण-उद्भारणे - मट्टिकवाप्लवणं कृत्वात् । वृ०  
 वृ० ९३ आ । परिभारः । औप० १४८ ।

उच्चायणा—उद्गायना—उपशेना । भग० ४८९ । उच्चोपगानि ।  
शाता० १७७ । उद्भायना । दश० ४४ । प्रकाशनम् ।  
मं० ५३ । अपघ्राजना । उत० १६९ ।

उच्चिगा—उच्चिरो—भूमिमेदाज्जाता उच्चिजाः—राशनकाश्यः ।  
शा० ३८६ ।

उच्चिज्ज । नि० सू० प्र० ३३५ आ ।

उच्चिज्ज - उद्भवेया - यस्तुलद्रभृतिशाकमजिवा । पिण्ड०  
१६८ । उच्चिभिय भुपं जाता उच्चिजा गजनकादिः । प्रश्न०  
९० ।

उच्चिज्जमाण—उच्चिमार्ग—उद्गायमानम् । जीवा० १९१ ।

उच्चिप्र—उच्चिदने उच्चिर्ल साधुभ्यो घृतादिशाननिमित्तं वृषुषा-  
सुंगम्य गोमयादिभ्योपितस्योद्घाटनं तस्योत्तरेवमपि घृतादि  
उच्चिषम् । द्वादश उद्भवमदोष । पिण्ड० ३६ ।

उच्चिमय—उच्चिदनेमुद्रित उच्चिज्जम येनां से उच्चिजाः—पतक-  
सकरीशारिच्छबाद्यः । दश० १४३ । उच्चिज्ज—लवणाक-  
राशुषकम् । आचा० ३५५ ।

उच्चुतिया—आभ्युदयिरी, देवतापरिष्ठीता गोशीर्षवन्दन-  
मयी मीरी । आव० ९७ ।

उच्चूयाधेउ । दश० सू० ८० ।

उच्चैति—उच्च्युवन्ति । आव० ३४२ । ऊर्ध्वगन्ति । उत-  
१८७ ।

उच्चैश्म—उच्चैस्य—मासुदादि । अत्रामुम् । दश० १९८ ।

उच्चो—उच्चयत—उच्चो—शिरोऽन्तपाशान्ताकाशिय । शाता०  
१५ ।

उच्चयं—उच्चयं—संयमार्गमहत्त्वं धावकोपयोगि । दश०  
१५८ । सोषाघसाउण, संज्ञासातनकरण, यस्य सक्त्रोदाह-  
रणम् । आव० ४६२ ।

उच्चयभागा—उच्चयभागा—चन्द्रयोगजनः—उच्चयभागाभ्यां  
पूर्वतः पश्चात्पक्षयोर्भयन्ते—भुजयन्ते यानि तानि उच्चय-  
भागानि, चन्द्रस्य पूर्वतः पृष्ठतश्च भोगमुपगच्छन्तीत्यर्थः ।  
शा० ३६८ । उच्चयभागानि—उच्चयं—दिवसानी तस्य  
दिवसस्य रात्रिधैत्यं, चन्द्रयोगमादिप्रतिष्ठय भागो येषां  
तानि । सू० १०४ ।

उच्चयभो—उच्चयतः, उच्चयो—वार्धयोः । सू० २९३ ।

उच्चयकपिय—उच्चयकल्पिक—यो द्वापयि सुधाभीं पुण्यद-  
महीनुं ममपं । सू० प्र० ६३ अ ।

उच्चयकाला—दिया रागो य । नि० सू० सू० ३१आ ।

उच्चयकिककम्म—उच्चयकिकर्म—गन्दम् । भोष० ३३ ।

उच्चयजं—गुणनिष्पन्नं, सामयज्यद्वय । पिण्ड० ४ ।

उच्चयतरो—सं व तां वरंते भागिकाऽनेकावर्षं करेति  
सालदित्तमो एव उच्चयतरो । नि० सू० सू० १२३ अ ।

उच्चयनिसोदो—उच्चयनिसेव, महापारिगादग्र्यं, यस्य मू-  
णोदाहरणम् । भा० ४६२ ।

उच्चयपंता—उच्चयप्रज्ञा—अमदिका, अगोमनेत्यर्थः । भोष-  
१५ ।

उच्चयपुद्गिने—उच्चयप्रतिष्ठितः—आमपरिष्णयः । शा०  
१९३ ।

उच्चयपदव्याहृतं—मार्गागनितक्षणे भेदः । आव० २८३ ।

उच्चयपदाज्याहृतं—गत्यागनितक्षणे भेदः । भा० २८१ ।

उच्चयभयिप—उच्चयभरिकं—उच्चयलक्षणयोगिनोः यन्मुग-  
नितया वर्णते तदुच्चयभरिकम् । भग० ३३ ।

उच्चयाप्रया—पगविधाचरपरिज्ञानकरयोगननुर्वादिनाऽग्र्य-  
याकरगलक्षणया मुद्रप्रानीकृत्यलक्षणभयिपेक्षमपर्याग्या-  
योभयविरागयेत्यर्थः । मय० ११३ ।

उच्चयान्तिकः । तम० ४२ ।

उच्चयण—अवर्धयणपोषणम् । सू० द्वि० ३२३ आ ।

उच्चयायणसगोत्ते—पुण्यलक्षणय गोषम् । सू० १०० ।

उमा—प्रयोतराज्याभ्यामुच्चयिन्वां गन्तव्य । भा० ९८८ ।  
द्विपुत्रामुदेवमाता । भा० १९२ । तम० १५० ।

उमाय—भगिनः पगिन्दको वा । सू० ९० ।

उमार्ण—रोग स्वयशपरपक्षयोरेषु तानि तथा । आचा०  
३३६ ।

उमाध्यतिकर । आचा० १४६ ।

उच्चमर्ग—तिर उच्चयतेऽनेनेति वीचमज्यम्, कर्दूरं वा मार्ग-  
मुच्चमर्गं, सर्वथा अरुणप्रमित्यर्थः । आचा० २३४ । अत्र-  
यवरणम् । आचा० २०३ । उच्चमर्गः । आव० ७७८ ।  
मार्गादूर्ध्वं, क्षायोपगमिकमाकाशेनीदिकिमावहक्यं ।  
आव० ५७१ ।

उच्चमर्गो—अद्विपद्विग मच्छति भदवा अर्धेण चैव । नि०  
सू० प्र० ३१५ ।

उच्चमगाजला—उच्चमर्गं जलं यन्मं मा उच्चमिज्जलोत्तं ।  
प्र० २३० ।

**उम्भगदेशणाय**—उन्मार्गदेशनया—मम्यदर्शनादिरूपभाव-  
मार्गातिक्रान्तधर्मप्रथनेन । ठाणा० २७५ ।

**उम्भगनिम्भगो**—उन्मप्रनिममं—ऊर्ध्वार्धोजलयमनम् ।  
प्रश्न० ६३ ।

**उम्भजगा**—उन्मजनमात्रेण ये स्नान्ति । तापसविशेषाः ।  
निराम० २५ । भग० ५१९ ।

**उम्भजगो**—उन्मजकाः—उन्मजनमात्रेण यः स्नान्ति । औप०  
९० ।

**उम्भजगिमज्जिय**—उन्मप्रनिममिका—उत्पततिपता । ठाणा०  
१९१ ।

**उम्भजति**—स्पृशति । नि० चू० प्र० ११५ अ ।

**उम्भजा**—उन्मजनमुन्मजा—नरकतिर्यगतिनिर्गमनात्मिका ।  
उत्त० २८० ।

**उम्भजजला**—रम्यक्विजये महानदी । जं० प्र० ३५२ ।  
नवीविशेषः । ठाणा० ८० ।

**उम्भजा**—मनयोन्माद्युक्ताः, विटाः । वृ० डि० १३८ आ ।

**उम्भत्तिषा**—उन्मत्ताः । आव० ४०० ।

**उम्भत्तो**—उत्—प्राबल्येन मते उन्मते, दरमत्तो वा उन्मत्तो ।  
नि० चू० प्र० २७६ आ ।

**उम्भरीय**—उन्मरीयः—प्रकृत्युम्भरं रूपको दातव्य द्रव्येन लक्षणः ।  
वृ० तृ० ५१ अ ।

**उम्भाओ**—उन्मादः—क्षिप्तचिन्तादिकः । आव० ७५९ ।

**उम्भाणे**—उन्माने—तुलारोपितस्यार्द्धभारप्रमाणता । प्रश्न० ७४ ।  
जं० प्र० २५२ । ठाणा० ४६१ । खण्डयुडादि परिमम् ।

ठाणा० ४४९ । तुलाकपादि तद्विषयम् । ठाणा० ४४९ ।  
नाराचादिः । आचा० ४१३ । तुलाकपादि । ठाणा० १९८ ।

तुलारूपम् । भग० ५४४ । कर्षणलादि मण्डयुडादिद्रव्यमा-  
नहेतुः । जं० प्र० २२७ । अर्द्धभारमानता । भग० ११९ ।  
अर्द्धभारप्रमाणता । ज्ञाता० ११ ।

**उम्भानुसो**—जड तुलाए आरोविओ अद्भारं तुलति तो  
उम्भानुसो । नि० चू० तृ० ६१ अ । पुरिमो तुलारोविओ

अद्भारं तुलमाणो उम्भानुसो । नि० चू० डि० ८५ आ ।  
उम्भान्णा—उन्मानानि—मुलायाः कर्षणीनि । ठाणा० ८६ ।

**उम्भाद्**—चतुर्दशशते द्वितीय उर्ध्वाः । उन्मानार्थाभिप्रायकत्वा-  
दुन्मादो द्वितीयः । भग० ९३० ।

**उम्भाय**—उन्मादः—नष्टचित्तया आलजालभाषणम् । असं-  
प्राप्तकाममेदः । दश० १९४ । चित्तविभ्रमः । ठाणा० १५० ।

महाभिध्यात्वलक्षणः तीर्थकरादीनामवर्णं वदतो मत्तयेव  
तीर्थकरायवर्णवदनकुपितप्रवचनदेवतातो—वा यत् । ठाणा०

३६० । सप्रहावम् । ठाणा० ३६० । प्रहो मुदिविप्लवः ।  
ठाणा० ४७ ।

**उम्भिमालिणीओ**—नदीविशेषः । ठाणा० ८० ।

**उम्भिह्वजंते**—उन्मील्यमाने । आव० ६३ ।

**उम्भी**—उन्मैयः—महाकलौलाः । भग० ७११ । उर्मिः—  
संशयः । औप० ५७ । विविः, तरङ्गः । आव० ६०१ ।

उर्मिः—संशयः । भग० ४६३ । कलौलाः । ठाणा० ५०१ ।  
सम्बाधः, तरङ्गः, कलौलाकारो वा जलसमुदायः । भग०

११५ ।

**उम्भीलिभा**—उन्मिपितलोचनाः । जं० प्र० ५४, ७९ ।  
बहिष्कृता । जं० प्र० ३९७, ५४ ।

**उम्भीलिय**—उन्मीलिते—बहिष्कृतम् । सूर्य० २६४ । मत्ता०  
९१ । जीवा० २०९ ।

**उम्भीसं**—उन्मिप्र—शकलीभूतम् । आचा० ३२१ । आगामु-  
कनरसवलिनें मत्कुटादि । आचा० ३२२ । एश्विह्वलः ।

ओप० १९९ । पुष्पादिपमिध्रमम्, सप्तम एषणादोषः ।  
पिण्ड० १४७ ।

**उम्भुओ**—उन्मुक्तः—प्राबल्येन मुक्तः, प्रथग्भूतः । आर० ५०८ ।  
**उम्भुगा**—उन्मगा—नदीविशेषः । आव० १५० ।

**उम्भुय**—औत्सुक्यः । प्रश्न० ७३ ।

**उम्भुलणा सरीराओ**—उन्मलना सरीरात्, निष्कारानं  
जीवस्य देहादिति । प्राणवयस्य द्वितीयः पश्चात् । प्रश्न० ५ ।

**उम्हु**—उन्मा—परितापः । वृ० डि० १९४ अ ।

**उयट्टी**—कटी, जहा । उत० ११८ ।

**उयत्ति**—तेयरेरणो । नि० चू० प्र० ३०१ आ ।

**उयत्तिया**—अपनय । आचा० ३४६ ।

**उयरं**—जलोपरं । नि० चू० प्र० ५८ आ ।

**उयहा**—पृथा । आव० २७२ ।

**उययिया**—विशुद्धे परिर्कामितम् । शक० १३ ।

**नयथेति**—एतद्दृष्टे तद मसुरेताप्यते इत्यर्थः । भग० डि०  
४५२ अ ।  
**उयारं**—उपहारः । ( मदायः ) ।

शाना चण्डधारभट्टरुपाध्रपणत । उत० ४३६ । तथानिध  
निमित्तत कर्त्रभूमिकागुल्फणे गतीपतिक्रमणे वा । उत०  
५१९ ।

उल्लंछेद्-विगतलोपान्त रगोति । ज्ञाता० ८८ ।

उल्लंछे-उल्लङ्घल । आ० ३८६ ।

उल्लंछता-सुद्गालका । नि० चू० प्र० ३०६ आ ।

उल्लंछणा-उल्लघना । दश० चू० ७७ ।

उल्लंछा-सुद्गोलका । दृ० द्वि० २७१ आ ।

उल्लंघन-उल्लम्बन-वृक्षशाखादायुद्धन्धनम् । सम० १२६ ।

उल्लंघियगा - अवलम्बितका - रज्ज्वा यद्वा गतीदाववता  
रिता । औप० ८७ ।

उल्ल-भार्द्र । औप० १८८ । उत० ५३० । भग० ४२२ ।

भार्द्रा द्विमितसकलचौरैरितियावत् । उत० ४९३ ।

उल्लग-भार्द्र । आव० ६-१ ।

उल्लगजाति-नौरपगसज्जना । नि० चू० प्र० १०४ आ ।

उल्लच्छणा-अपवर्तना, अपहरणा । प्रश्न० ५६ ।

उल्लघन-भौतदनभार्द्राङ्कुर्योपयुज्यते उल्लगम् । पिण्ड० १६८ ।  
औप० १४६ ।

उल्लणिग्या-स्नानजलाद्देशरीस्य जल्लपगयक्षम् । उपा० ४ ।

उल्लेस्ता-अवलाद-उताये । आव० २९१ ।

उल्लपडसाडभो-भार्द्रपःशाटक । आव० २११ ।

उल्लपडसाडभो-भार्द्रशाटिकापड । आव० ६८७ ।

उल्लपडसाडया-स्नाने नोरे वृत्रान्धिके-उतगोयपरिधानवले ।  
ज्ञाता० ८४ ।

उल्लक्षिया-चलिता । दृ० द्वि० १४९ आ ।

उल्लयद्-उत्-शयत्येनासम्बद्धभाषितादिरूपेण लपति-यत्किं  
लपति । उत० ३४४ ।

उल्लयितं-उल्लप्यम् । आव० ३३३ ।

उल्लयिष्य-उल्लपिनम्-सम्बन्धभाषितादि । उत० ४२८ ।

उल्लपेत-उदापयन् । आव० ६९२ ।

उल्लपेति-आलापयन्ति । ( गणि० ) ।

उल्लपेद्-उल्लपति । आव० २१६ ।

उल्लपेयव्यो-विध्यापोषेत्य । आव० ३८४ ।

उल्लहिज्जति-उल्लिख्यमाना । आव० २०० ।

उल्ला-विता । नि० चू० प्र० ४६ आ । भार्द्र । आव० ६२२ ।

उल्लाटा-प्रसावर्त । व्य० प्र० १६७ आ ।

उल्लालेमाणे-उल्लालयन्-सादयन् । ज० प्र० ३०७ ।

उल्लाव - उदाव - बवनम् । उत० ३३४ । काष्ठावणनम् ।

ठागा० ४७७ । पाष्ठावणनम् । ज्ञाता० ५७ । भग० ४७८ ।

प्रतिवचनम् । औप० ५३ । उगापम् । आव० २२३ ।

पाकार्यनम् । औप० ५७ ।

उल्लावितो-उगापयन् । उत० ८५ ।

उल्लिचद्-उल्लिखति-आरपति । पिण्ड० ११८ ।

उल्लिचण-उल्लिखिषायनम् । नि० चू० प्र० २७७ आ ।

उल्लिचाविज्जिह्विनि । औप० २३ ।

उल्लिड-उल्लिखित । उत० ४०० ।

उल्लिय-भार्द्र । आ० ६२१ ।

उल्लिह्वैद्-बुम्बयति-आस्थापयति । आव० ६८० ।

उल्लो - पनक । ठागा० ४३० । पणगो । नि० चू० प्र०  
५५ आ । पाआ । दश० चू० ८० ।

उल्लोण-अहास । ( मर० ) ।

उल्लोना-उपलीना-प्रच्छन्ना । आचा० ३७१ ।

उल्लोराद् । औप० १३७ ।

उल्लुका-जनपदा नगोवशेषथ । विश० ९९७ । नगीत  
शेष । विशे० ६२७ ।

उल्लुकातीर-उल्लुकानशा तमपि नगरविशेष । धूमिग्र  
कारामतत्वात् खेमुच्यते । विशे० ६२७ ।

उल्लुगं-अवरणम्-भरणम् । प्रश्न० २२ ।

उल्लुगतीर - उल्लुगतीर-उल्लुकानगमतीर नगरविशेष ।  
उत० १६५ ।

उल्लुगा - उल्लुवा-नवीविशेष । उत० १६५ । आव०  
३९७ ।

उल्लुगातीर - उल्लुगातीरम् । पञ्चमिह्वानपतिस्थानम् ।  
विशे० ६३४ । आव० ३१२, ३१७ ।

उल्लुगमेगी-मलानाती । आव० ३९४ ।

उल्लुगिह-शिम्यो । नि० चू० द्वि० १४६ आ ।

उल्लुगनीरे - उल्लुगतीर-उल्लुकानशास्तीर नगरविशेष ।  
भग० ७०५ ।

उल्लुह् । औप० १०८ ।

उल्लेति-भार्द्रयति । आव० १०१ ।

उल्लोभ-उगैक-उपगिभाग । ज० प्र० ३२१ ।



उल्लोहभा-उलोहयमित्त्व उल्लोह च मेडिरादिना वृज्यानिवृ  
धवलनम् । ज० प्र० ७६ ।  
उल्लोहस्य-मेडिरादिना वृज्याना धवलनम् । भग० ५८० ।  
वृज्याना मालम्ब्य च मेडिरादिभिः समुपकरणम् । जीवा०  
१६० । गज० ३६ । मम० १३८ । वृज्यामालाना मेडि-  
रादिभिः समुपकरणम् । औप० ५ । वृज्याना मालम्ब्य  
च मेडिरादिभिः समुपकरणम् । जीवा० २७७ । प्रज्ञा० ८६ ।  
उल्लोह-उल्लोह, उल्लोहः । भग० ६४१ । उपरिभाग ।  
ज० प्र० ८९, ४०० । जीवा० २०५ । उल्लोह-नन्दो-  
दय । मय० २९३ । उल्लोह-उपगित्तनभाग । जीवा०  
१०९, ३६० ।  
उल्लोह-उल्लोह-उपरिभाग । मम० ५४० । उद्देश ।  
मम० ६९१ । देशोद्देश । वृ० प्र० २५० आ ।  
उल्लोहयोगे-उल्लोहयम् । आग० १०४ ।  
उल्लोलिया-मल्लुष्टिम् । गुम्फा । आग० ६८० ।  
उल्लोहोद्-उल्लोहयत् । आचा० ४२३ ।  
उल्लेखिज्जन्तो-निर्घोषित । आग० ३८४ ।  
उर्गता-उपाज्ञानि । निष्कारिपट्टाधिप्रवचनपर । प्रपन्था ।  
भग० ११४ । निष्कारिपट्टाध्यात्मन्युपाणि । अनु० ३२ ।  
उर्वगार्हा-उपाज्ञानि-अज्ञावयवभेदान्यङ्गन्याग्नि । प्रज्ञा०  
४६९ ।  
उच-उप-सार्मीयार्थ । प्रज्ञा० ४ । दश० १४५ । भग०  
३७ । उपमेतिरवाग्द्वेषति इत्यन्ते । उत० २३५ । सहृदये,  
अन्तर्वचन । आच० ८७८ । अन्वयिष्य पुन पुन ।  
उत० ६४४ ।  
उचद्भ-उपचिन्ता, उचत्तौ, औपचिन्तौ, उचिनौ, अवपचिन्तौ,  
कमेण हीयमानोपचयी । ज० प्र० ११२ ।  
उचद्भ-उद्भिक्षा । नि० वृ० प्र० ७७ आ ।  
उचद्भजा-अवपचनेन, आगच्छेत् । आचा० ३६५ ।  
उचद्भस्तद्-उपचिन्तये-धोतुभावपेक्षया सामीप्येन कथ्यते ।  
दश० ११० ।  
उचद्भस्तद्करो-क्रियावापगे । नि० वृ० प्र० २६६ अ ।  
उचद्भ-उपयुक्त-अनन्वयित । दश० १०६ । अवहित ।  
मम० ८९ । गमोवापगमयो । नि० वृ० प्र० ४७७ । उप-  
युक्त-अभिप्रेक्षणम् । भग० १५५ । व्यापृत, निज गत ।  
मम० १०४ । अभ्यासदत्तम् । आचा० १७६ ।

उचद्भस्त-उपदेश-आदेश । व्य० प्र० १० आ । गुम्फा-  
ऽनुजात । औप० १५१ । हिताहितप्रगतिप्रत्युपदेश-  
नायुपदेश । अनु० ३८ । अन्यतरङ्गियाया प्रवर्तनेच्छो-  
त्पादनं उपदेश । वचनविभक्तौद्वितीयो भेद । अनु० १३४ ।  
यथा आत्मा न कथ्यत इत्यादिपिय । दश० १२० ।  
उपदेश-गुरादिना वस्तुत्वस्वरथनम् । प्रज्ञा० ५८ । धृतस्य  
पर्याय । विज्ञे० ८३ । उचनम् । आच० ६०४, २६० ।

उचद्भस्तद्भूमूलं-उपदेशद्वयमूल-यच्चिक्लिमसो गेगदति-  
घानममथे मूलमुपदिशत्यानुगयेति । आचा० ८८ ।

उचद्भस्तद्-उपदेशो-गुरादिना वस्तुत्वस्वरथनं तेन रवि-  
जिनप्रणीततरवामिलापर्यायस्य स उपदेशमिति । प्रज्ञा०  
५८ ।

उचद्भस्तिया-उप-सार्मीयेन देविना उपदेशिता । आग०  
६७ ।

उचद्भोग-उपयोग-स्वस्वविषये लब्धयुक्तारोपान्मन परि-  
च्छेदव्यापार । जीवा० १६ । उपयोजनमुपयोग-विषयित-  
कर्मणि मननोऽभिविद्येति । मदी १६४ । ज्ञान, मरिचिदं,  
प्रत्यय । विशेषे ३६ । सासाराताकारभेद चैतन्यम् । दश०  
३३४ । शीघ्रस्य चोत्क्रपो व्यापार । अनु० १६ । अरहित  
त्वम् । उत० ५६१ । भावेन्द्रियस्य द्वितीयो भेद । मम० ८७ ।  
मति । आच० ११६ । उपयोग-लक्ष्यनिमित्त आत्मनो  
मनस्मान्निवृत्त्याद् अर्थग्रहण प्रति व्यापार । आचा० १०४ ।  
उपयोग-आत्मन धृतपरिणाम । विज्ञे० २१७ । चैतना-  
विशेष । भग० १४९ । चैतन्य माकारान्ताकारभेदम् ।  
भग० १४८ । उपयोगवस्तुमुपयोग-परिचिते कर्मणि मननो  
ऽभिविद्येति । आच० ४०६ । विद्यास्तुमुचनम् । दश०  
८६ । धातुस्त्वदभिसुपता । आच० ३४९ । मानवापानता ।  
औप० ४८ । स्वा-यायाद्युपयुक्तता । उत० १६० । स्वस्व  
विषये लब्धयुक्तारोपान्मनो व्यापार प्रविधानम् । प्रज्ञा०  
२९४ । प्रजापताया लक्ष्येनद्रिणतम पदम् । प्रज्ञा० ६ ।  
उपयोजन उपयोग भावे घञ्, यदा उपयुज्यते-वस्तुपति-  
च्छेद प्रति व्यापार्यते जीवोऽभेतेत्युपयोग, 'तुनामि घ' इति  
करणे घञ्-यतो यो ऋपो जीवस्य तद्व्यभूतो व्यापार । प्रज्ञा०  
५२६ । दश० १०८ ।

उचक्रपिया-उपगमिता । उत० ३८७ ।

**उचकरण-उपकरण-अह्लादानाख्य ।** बृ० वृ० १८अ । उपकरण-मलानाद्यवस्थायांमन्येनोपरकरणम् । प्रश्न० ११९ । उपधि । परिग्रहस्य पचदश नाम । प्रश्न० १२ । अङ्गम् । भग० २२४ ।

**उचकरणप्रणिधाने-उपकरणस्य लौकिकलोकोत्तररूपस्य वस्त्र-पात्रादेः सयमासयमोपकाराय प्रणिधान-प्रयोग उपकरण प्रणिधानम् ।** ठाण० १९६ ।

**उचकरणसंघरे-उपकरणसंघर-संप्रतिनियताकल्पनीयवस्त्राद्यवग्रहणरूपोऽथवा विप्रतीर्णस्य वस्त्राद्युपकरणस्य संघरणम् ।** ठाण० ४७३ ।

**उचकरिसु-अवकीर्णन्त ।** आचा० ३११ ।

**उचकरिज-उपकुर्गात्-डौकयेत् ।** आचा० ३५१ ।

**उचकरेउ-उपकरोतु ।** उपा० १५ ।

**उचकरणे-उपकरणे ।** वृ० द्वि० २८१ अ ।

**उचकुलं-कुलस्य समीप उपकुलम् ।** ज० प्र० ५०६ ।

**उचकुला-उपकुलानि ।** सूर्य० १११ ।

**उचकोसा-कोशाया लघ्वी भगिनी उपकोसा ।** आच० ९९५ । आव० ४२५ ।

**उचक्रम-उपक्रमण-आयु पुद्गलानां स्वर्तनं समुपरिधन तत् ।** आचा० २९१ । उपक्रमणमुपक्रम, उपक्रम्यतेऽनेनास्मादेरिमिति वीपक्रम-व्याचिख्यामितशास्त्रस्य समीपानयनम् । आचा० ३ । उपक्रमण उपक्रम-दीर्घात्तमा विन्यां स्थिते स्वरपालताऽऽपादनम् । उत० ३२१ ।

उपेति-सामीपेन क्रमण उपक्रम-दूरस्थस्य समीपापादनम् । ओर्थ० १ । उपायेन परिज्ञानम् । ठाण० १५५ । उपाय पूर्वक आरम्भ । ठाण० १५८ । प्रकृतादिभेदेन पुद्गलानां परिगमनसमर्थ जीववीर्यम् । ठाण० २०१ । अभिप्रेतार्थ सामीप्यानयनलक्षण । आच० २५७ । कालगमनम् । वृ० द्वि० २३० अ । नाश । (आड०) । उप-सामीप्य 'क्रमुपा द्विक्षेपे' उपक्रमण दूरस्थस्य शास्त्रादिवस्तुनस्तैस्तै प्रतिपादनप्रकारे समीपीकरण न्यासदेशानयन निक्षेपयोग्यतास्वरूपमित्युपक्रम । विशेष० ४३० । कर्मवेदनोपाय । भग० ६५ । स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समीपानयनम् । प्रज्ञा० ५५७ । उपक्रम-दूरस्थस्य वस्तुनस्तैस्तै प्रतिपादनप्रकारे समीपमानीय निक्षेपयोग्यताकरण, उपक्रम्यते-निक्षेपयोग्य क्रियतेऽनेन गुरुवायोगेनेति, उपक्रम्यते

ऽस्मिन् शिष्यधरणभावे मतीति, उपक्रम्यतेऽस्माद्विनीतविनेय विनयादिति वा । अनु० ४५ । विशेष० ४३० । उपक्रमज मुपक्रम इति भावमाधन व्याचिख्यामितशास्त्रस्य समीपानयनेन निक्षेपात्मरूपाय, उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवायोगेने-मुपक्रम इति चरणसाधन, उपक्रम्यतेऽस्मिन्मिति वा शिष्यधरणभावे मतीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधन, उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनेयविनयादित्युपक्रम इत्यपादानसाधन इति । ज० प्र० ५ । उपक्रम्यते-क्रियतेऽनेन उपक्रम-क्रमगो बहद्वोदीरितत्वात् । परिगमनहेतुर्जीवस्य यत्किं विशयो योऽन्धत्तं चरणमिति रूप, व-धनादीनामात्मम् । ठाण० २०१ । वस्तुपरिक्रमरूप । ठाण० २०१ । अश्रुसहास्य निर्गमणम् । भग० ७१० । आनुपूर्व्यादि । गम० ११५ । निरक्षिन्नु उपक्रमण उपक्रम इति भावसाधन, शास्त्रस्य न्यासदेशसमीपीकरणसाधन, उपक्रम्यते वाऽनेन गुरुवायोगेनेत्युपक्रम इति चरणसाधन, उपक्रम्यतेऽस्मिन्मिति वा शिष्यधरणभावे समीत्युपक्रम इत्यधिकरणसाधन, उपक्रम्यतेऽस्मादिति वा विनीतविनेयादित्युपक्रम इत्यपादान इति । ठाण० ४ । कर्मोदीरणत्वरणम् । ठाण० ०९ ।

**उचक्रमकाल-उपक्रमकाल-अभिप्रेताधनामीप्यानयनलक्षण ।** विशेष० ८३७ । अभिप्रेतार्थसमीप्यानयनलक्षणं सामानाचार्योपक्रमेदेभिन्न । दश० ९ ।

**उचक्रमिओ-औपक्रमिक-एण्टकभासात्परिज्ञाऽपातवेदनीया दयापादक ।** सूत्र० ७८ ।

**उचक्रमिया-उपक्रमणमुपक्रम-स्वयमेव समीपे भवनमुदीरणाकरणेन वा समापानयन तेन निर्ज्ञता औपक्रमिकी ।** प्रज्ञा० ५५७ । औपक्रमिकी । मम० १४६ । प्रज्ञा० ५५४ । उपक्रमेण-कर्मोदीरणकारणेन निर्ज्ञता तत्र वा भवा औपक्रमिकी-उचरातीतारादिजन्या । ठाण० ८९ । कर्मवेदनापाय स्त्रत्र भवा औपक्रमिकी स्वयमुदीरणीयश्रीदीरणाकरणेन चान्यमुपमीनस्य कर्मगोऽनुभव । मम० ६५ । स्वयमुदीरणीयश्रीदीरणाकरणेन चोदयमुपमीनस्य वेद्यस्यानुभवान् औपक्रमिका । भग० ४९७ ।

**उचक्रम-उपक्रम्य-आगत्य ।** सूत्र० ३१६ ।

**उचकर्य-उपकृत-निदुकात् ।** जीवा० २६८ ।

**उचक्रेस्त-उपक्रेता-कृषिपात्रुपायव्यागिज्यायुपगनायुगना परिज्ञतजनगर्हिता श्रीनोणध्रमादया घृतपत्रगचि-ताद**

गध । दश० २७३ । उपश्रेयः-उपगतशोभादिः । भग० १०५ ।  
**उषस्त्र** - उपश्रुतं - उपसर्गमात्रम् । ऋ० १५ ।  
 उपसर्गमुपसृष्टं-पाकः । ढाणा० २२० । उपसर्गमात्रादि-  
 संज्ञकम् । उत० ३६० ।  
**उषस्त्रडणसाला**-महाशमी । नि० चू० प्र० २७२ आ ।  
**उषस्त्रडण्डा**-त्रहा चणयादीना उपसर्गविशेषेण निरुज्जति  
 ते कर्मण्युवा त उपसर्गविशेषा भण्णति । नि० चू० डि०  
 १२५ अ ।  
**उषस्त्रडियं** । ओप १६० ।  
**उषस्त्रडुति**-उपसृष्टेति । आष० २९१ ।  
**उषस्त्रडे**-उपसृष्टानि-विशुक्लानि । ज० प्र० १०५ ।  
**उषस्त्रडेउ**-उपसर्गोत्-गोचरम् । उपा० १५ ।  
**उषस्त्रडेजा**-तदनादि पचेत् । आषा० ३५१ ।  
**उषस्त्ररो**-सर्वादि । नि० चू० प्र० ३५६ अ । उपस-  
 रणम् । (मर०) । उपसर्गतेऽनेनेति उपसर्ग - द्विरूपानि ।  
 ढाणा० २२० ।  
**उषस**-सर्वा । वृ० डि० ३१ अ ।  
**उषसओ**-उपगतः । आष० ६०० । शमीप्येन कर्मविशेष  
 लक्षणो प्राप्तः । आष० ३६६ ।  
**उषसछया**-वकरा । नि० चू० प्र० २५५ अ ।  
**उषगत**-उपगतः । आष० ३०८ । उपगत-आश्रितः ।  
 उत० १७८ ।  
**उषगमं**-उपगत्यति-माश्रयेत् प्राप्नोति । उत० २३५ ।  
**उषगमण**-उपगमनं-अवस्थानम् । सम० ३५ । अस्पन्द  
 तयाऽवस्थानम् । भग० १२० ।  
**उषगयं**-उपगत-समीप्येनात्मनि शब्दादिज्ञानं परिणतम् ।  
 नदी १८० । मृतम् । ऋ० १३४ । उपगतं-ज्ञानम् ।  
 आष० ६१० ।  
**उषगरण**-शैलपट्टकं रजोहरणं नैपयादयोर्नै सुगवचिका  
 उपलक्षणवादीशिकमीशिकी च कर्णी । वृ० प्र० २९५ अ ।  
 वंशकं रजोहरणं च । वृ० प्र० ७१ आ । उपकरण-ओपसर्ग-  
 षम् । प्रथ० १५६ । उपकरणं-उपसर्गः । आष० ५६८ ।  
 आचरणप्रहरणारिकम् । भग० ५४ । सौहीकडुसुकादि ।  
 भग० ३३८ । कडुदारिकम् । भग० ३२२ । व्यञ्जनकटक-

करलरार्ग्योः । आषा० ६० । उपसर्गोऽपि उपसर्गम् ।  
 ओप० २७७ । वयादि । भग० ७०० । परमंशरिगिगयज्जहेतुः ।  
 उत० ३५८ । अनेकविधे कर्तारिदृश्यादिकम् । अनु० १५६ ।  
 रजोहरणपट्टकादि । ओप० १२५ । इत्येतिद्वयम् द्वितीयो मेघः ।  
 भग० ८७ । ढाणा० २३ । गच्छन्तीवाया चाकविशेषोर्वा  
 यज्ञधाम्यानीवा रव्युत्तरपुद्गुलतममृता मकाऽव्ययग-  
 निरुक्तिमयाः प्रातिविशेषः । जी० १६ । इत्युत्तरागत-  
 मन्वरादि । आषा० १०० । औपसर्गिकम् । उत० ३५८ ।  
**उषगरणपडिया** - उपसर्गप्रतिज्ञा-उपसर्गाभिन्तः समा-  
 गच्छेत् । आषा० ३८८ ।  
**उषगरणसंज्ञमे**-उपकरणस्य-महागुणवर्षादिपरिहारः,  
 पुस्तकव्यवृत्तनस्यमात्रपरिहारो वा । ढाणा० २३३ ।  
**उषगरयं(घषप)**-अपसर्गम् । आष० ६६६ ।  
**उषससिद्धाणं**-उपसर्गस्य, गर्ममागतः । मृत० १०३ ।  
**उषसहिओ**-उपसर्ग-उपसर्गः । आष० ७६८ । उपस-  
 र्गः । आष० ७९३ ।  
**उषसा**-उपसा-ज्ञाना । ढाणा० ७० । उपसर्गप्रति-उपस-  
 र्गः । निरुक्तया तत्पण्ययो वर्धते । जी० ३६० ।  
**उषसाहरण**-उपसर्गस्य-उपसर्गस्य विभक्तयोऽनुकूलम् च  
 प्रतिपादयानुपकारं वर्धते तद् । आषा० ३१८ ।  
**उषसागियलेणाह** - औपसर्गिकव्ययानि-उपसागिरीश-  
 न्यानि । भग० ६१३ ।  
**उषसागिया**-शास्त्रानीशानिभ्यःशास्त्रादाकर्तव्यानि उपस-  
 र्गः । उपसर्गानीति उपसर्ग-शास्त्रानीशानिभ्यःशास्त्रा-  
 दाकर्तव्यानीना पीठिका । जी० २२० । पीठिका । ग०  
 ८१ ।  
**उषसिद्धह**-उपसर्ग-उपसर्ग-उपसर्गः । भग० २१९ ।  
**उषसिद्धि** - उपसर्ग-परिणतम् । मधुप्रसक्तस्य गच्छे  
 मेघः । दश० १५४ ।  
**उषसो**-अव्ययस्य मापु । वृ० प्र० २१० अ । मृतः  
 मृगो वा । नि० चू० प्र० ८८ अ ।  
**उषसो**-उपसर्ग-गर्मभूतम् । आष० ४०३ ।  
**उषसुच्छया**-साधनेः । मृत० २५ ।  
**उषसाह**-उपसर्ग-विशेषाभिन्तः ज्ञानादिषु संज्ञानुसर्ग-  
 रणम् । व्य० प्र० १३२ अ । उपसर्गः । ऋ० २७ ।  
 उपसर्गानीति उपसर्गः । ओप० २०३ । शिवाणं भग-

- उच्चिष**—उपशोभित—सुत । ज० प्र० २९२ । उच्चिष—  
ममूह । ज्ञाता० ९८ ।
- उच्चिषो**—उपमित—स्त्रियेत । प्रज्ञा० ८६ । जीवा०  
२७७, १६० ।
- उच्चिषजानि**—निषेकरचनत निराचनतो या उपनीयन्ते ।  
भग० २१३ ।
- उच्चिषद्विज्ञा**—उपतिष्ठन्—विनयेन मंत्रेण । दृश० २४२ ।
- उच्चिष**—उपयिनवन्त—परिपोषणत । टाणा० १७९ ।  
उपचयनं—चिनस्यावाधाकाल मुमुक्षा ज्ञानावरणीयादितया  
निषेक । टाणा० १४५ । परियोजणम् । टाणा० २१७ ।
- उच्चिषाद्**—प्रदेशस्थोपेक्षया निराचनोपेक्षया वेति ।  
भग० १०२ ।
- उच्चिषिणसु**—उपचितवन्त । टाणा० २८९ ।
- उच्चिष**—उपचित—नेजितम् । प्रज्ञा० ९१ । उपचिन—परि  
कर्मितम् । राज० ३७ । जीवा० २३० । मुक्कम् । जीवा०  
२०४ । मासलम् । जीवा० २७१ । समानजातीयप्रवृत्त्यन्त  
रदलिकमङ्कनेनोपचय नीत । प्रज्ञा० ४०९ । सुत ।  
ज० प्र० ८२ । परिश्रमितम् । भग० ५४० । विभिः  
परिकर्मितम् । राज० ९३ । उपचय—पौन पुन्येन प्रदेशे  
नुभागादेशेर्धनम् । भग० ५३ । औपचयिर—उपचयनिर्गत  
औपचिको वा—उचिन । प्रज्ञा० ८१ । निरेणित । औप०  
५ । बहुश प्रदेशामौप्येन शरीरे चित्ता एवेति । भग०  
२४ । युक्त । ज० प्र० ४८ ।
- उचचीयद्**—उपचायते—उपचयमायति । जीवा० ३२०,  
३०६ । उपचयमुपनच्छति । जीवा० ४०० ।
- उचच्छमो**—रम्भो । नि० चू० प्र० २११ अ ।
- उचच्छुभे** । आश० १८० ।
- उचजाइय**—उपशोभिते देशनाराधने भव औपशोभितक ।  
टाणा० ५१६ ।
- उचजीवद्**—उपजीवति—अनुभवति । भग० ११२ ।
- उचजीवति**—उपजीवति—जीवनाथमाप्रयते । ४५० प्र०  
१६३ आ ।
- उचजीविभो**—उपजीवित । टाणा० ३७० ।
- उचजेमणा**—रत्ननी । नि० चू० प्र० ३४५ आ ।
- उचजोइया**—उपशोभित समीपे येन उपउपशोभितम् त्वेते
- पद्योतिथ्या—अग्निर्मापान्नौ महानग्निः कल्पितो वा ।  
उत० ३६४ ।
- उचज्जाप**—उपाध्याय । प्रज्ञा० ३२७ । अध्याप । भा०  
३१३ ।
- उचज्जाभो**—उपयोगपूर्व पापरिवर्जनतो ध्यानागृहणेन  
रमाभ्यपयनीति उपायाय । भा० ४४९ ।
- उचज्जाय**—उपाध्याय—उप—समीपमागत्य अधीयते—पठयते  
कस्य स, उप अधि—आधिक्येन गम्यते स, उप अधि—  
आधिक्येन स्मर्यते मूनो जिनप्रवचनं यस्मात् स, उपाधि—  
मन्त्रिभिरेतेन तत्र वा भाव—लाभ धुनस्य कस्य, उपा-  
धीनो—निरीक्षणतो आयो—लाभ यस्मात् स, उपाधिरेत-  
मन्त्रिधिरेत आधे—दृष्टफलं देवजनितरतेन आयान्ता—उप-  
दाना समस्तदेवकृतुताय कस्य, आधीना—मन पीडानां  
आयो—लाभ आय्याय, अधिया—उपुदीनां आयोऽप्याय,  
दुःखानं वाऽप्याय, उपहत आय्यायो वा अध्यायो  
येन स । भग० ३ । सूत्रज्ञाता । टाणा० २७९ ।  
आचार्योचरवितय स्वाध्याय वा आचार्यादिषु तस्माद्-  
पा शीयते मद्ग्रहोपग्रहासुग्रहाधे वा । तत्रा० ९—२४ । उप-  
गम्योपेत् यतो येभ्योऽधीयते पठति निरायास्त उपाध्याया,  
यच्च यस्मादुप—समीपे गव—धापते निध्यमायापयन्ति तत  
उपाध्याया, यस्माच्च स्वपरहितम्भोपायव्यायका उपायनि  
न्तकास्ततन् उपाध्याया । विभे० १२३० । मृदापयद्-  
भयविद् ज्ञानदर्शनचारित्रेणुक्तता—उपयुक्तताम्भ्या निध्याया  
मूनवाचनापठानाग्निपाठका एतासां भवन्ति । व्य० प्र०  
१७१ आ ।
- उचट्टागा** । नि० चू० प्र० २३० आ ।
- उचट्टाणं**—गह्वर उचट्टण । नि० चू० प्र० १९० आ ।
- उचट्टित्त**—उद्धृत्—तन्परित्यागेनान्यत्र गत्वा । उत० २९६ ।
- उचट्टिय**—उपस्थापित । भा० २८८ ।
- उचट्टुवेति**—उपस्थापयति, उपट्टीकयति, प्राप्नोतीकगेति । ५०  
प्र० २४४ ।
- उचट्टाद्**—उत्तप्रते । भा० ३१८ ।
- उचट्टापज्ञा**—उपतिष्ठन्, उपस्थानम्—परलोकनियाम्भुव-  
गम उच्योतिरर्थे । भग० ६४ ।
- उचट्टार्थं**—गोयादिटाण, नि० चू० डि० ५० अ । उपस्थापेन—  
धर्मचरणानामोपयेन वर्णते इति उपस्थान । आचा० २२३ ।

उद्यट्टाणगिह - उपस्थानगृहं - आस्थानमण्डपः । ठाणा० २९८ । भय० २०० ।

उद्यट्टाणसाला - उपस्थानसाला - आस्थानसभा । औप० २३ । आस्थानमाला । आव० ३०० । उपवेशनमण्डपः । निरय० ८ । आस्थानमण्डपः । निरय० १० । जं० प्र० १८५ ।

उद्यट्टाणा - मासद्वयं चतुर्मासद्वयं चावर्जयित्वा पुनस्तत्रैव वसनामुपस्थापिते । ठाणा० ३२१ ।

उद्यट्टाणया - उपस्थापना - महाप्रतारोपणरूपा । उत्त० ५६८ । उप - सामीप्येन गर्वेशवस्थानलक्षणेन तिष्ठन्त्यस्यामिति उपस्थापना - शय्या । दश० द्वि० १०४ अ ।

उद्यट्टाणयाण गृहणं - तत्रोपस्थापनायां विधीयमानायां दृशितान्तोक्षताभारहस्तादिभिर्घट्ट रजोहरणादि यष्टते तद् उपस्थापनाग्रहणम् । घृ० द्वि० २५६ अ ।

उद्यट्टाणयायस्ति - उत्थापनयाचार्यः । ठाणा० २३३ ।

उद्यट्टाविय गृहणं - उत्स्थापितस्य - छेदोपस्थापनीयचारिणं प्रापितस्य यद् उपशेपरिणं परिभोगो वा तद् उपस्थापितग्रहणम् । घृ० द्वि० २८६ अ ।

उद्यट्टापिस्तप - उत्थापयितुं - महाप्रतेषु ध्यवस्थापयितुम् । ठाणा० ५७ ।

उद्यट्टिभ - उपरिधने - उद्यतम् । औप० १०६ ।

उद्यट्टिण - उपस्थिते - प्रयुक्तम् । भाष० ५४१ । दीक्षितः । घृ० द्वि० २६४ अ । अत्यन्ताभययि । भय० १०० ।

उद्यट्टिना - दृग्गृह्णा । नि० घृ० द्वि० ९४ अ ।

उद्यट्टिनाभो - भोगोपलभनः । नि० घृ० द्वि० ४० अ ।

उद्यट्टिय - उपरिधयितः । भाष० ५५९ । उपरिधनः - उद्यतः । तन्० ६१७ । प्रत्यागर्हीतम् । उत० ६६८ ।

उद्यजयं - उपनयनं - कदाप्यहणं तदनं धर्मोपशान्तिमितं वा गायत्र्यशान्ति मयनम् । भाष० ३२९ ।

उद्यजयणं - कलाग्रहणम् । भय० ५४५ । उपनयनं - शासनात् नरः पदहणम् । प्रभा० ३१ ।

उद्यजिकिरविट्टं - उपनिवेशः । भाष० ५५५ ।

उद्यजिघाय - उपनिषासः - उपनिषत् । ठाणा० ४३ ।

उद्यजिविट्टं - उपनिषत् - उपनिषत् । भाष० १९९ ।

उद्यजिदि - उपनिषत् - उपनिषत् । भाष० १९९ ।

उद्यजिदि - उपनिषत् - उपनिषत् । भाष० १९९ ।

उद्यणीभ - उपनीतः - नियोजितः । ठाणा० २५९ । उपसंहा-  
रोपनवयुक्तमुपनीतम् । अनु० १३३ । उपनयोपसंहृतमुप-  
नीतम् । अनु० २६२ । उपसंहारयुक्तम् । ठाणा० ३६५ ।  
प्रापितम् । ठाणा० ४५४ । नियमितं, योजितम् । ठाणा०  
२५९ ।

उद्यणीय - उपनीतं - योजितम् । जं० प्र० १०५ ।

उद्यणीते - उपनीतं - प्रापितं, दशमो विशेषः । ठाणा० ४९२ ।

उद्यणीय - उपनीतं - योजितम् । औष० २६८ । उपनयो-  
पसंहृतम् । भाष० २७३ । विनीतं, हीनितं, शयनेन परि-  
तृप्तं वा । औष० ३९ । प्रापितः । आचा० ७८ ।

उद्यणीयभयनीयवचनं - उपनीतापनीयवचनं - कथितं  
युगः प्रत्यासः कथितयुगः । आचा० ३८७ ।

उद्यणीयवयवणं - उपनीतवचनं - प्रयोगान्वयनम् । भाषा०  
३८७ । प्रभा० २६७ । युगोपनयनरूपम् । प्रभा० १९८ ।

उद्यणीयाद्यणीयवयवणं - उपनीतापनीयवचनं - यत्प्रत्यय  
निन्दति । प्रभा० २६७ । यत्रैवं मुक्तमुपनीय युगात्प्रभय-  
नीयते तत् । प्रभा० १९८ ।

उद्यणो - उपनयनि, प्राप्ताधिकरोति । जं० प्र० १०४ ।

उद्यवणं - प्रोक्षितं । नि० घृ० प्र० २७६ अ ।

उद्यवणतथ - उपनयनं - उपकल्पितम् । दश० १७१ ।

उद्यवणतथ - माषपूर्णादिमिमांसे । नि० घृ० प्र० ११६ अ ।

उद्यतस्तो - उपनयतः - आपवर्जतापः । प्रभा० १९ ।

उद्यतेमणे - उपरिधयत इति उपदेशनं - उपदेशकियाया व्याख्य-  
मुपस्थापनादयम् द्विधाया यद् व्याख्ये तद् धर्मैतत् ।  
द्वितीया वचननिमित्तः । ठाणा० ४२८ ।

उद्यतेस्तर्क - उपदेशः - उपदेशितः स्वयं तेन स्फुरितोप-  
देशयिः । ठाणा० ५०३ । उत० ५६३ ।

उद्यत्तयन्त्रिय - चतुर्धयनितः । घृ० ३८३ ।

उद्यत्तिया - अत्रयनितः । भाषा० ४८ ।

उद्यत्तय - उपनयनं - उपनयनितः । भय० १२, १५१ ।

उद्यत्तय - भयः । नि० घृ० ९० अ ।

उद्यत्तया - उपनयनं - उपनयनितः । भाष० ३३ ।

उद्यत्तयिण्य - उपनयनं - उपनयनितः । भाष० ३३ ।

उद्यत्तयिण्य - उपनयनं - उपनयनितः । भाष० ३३ ।

**उवत्थिप**—अभ्युपगत । ज्ञाता० २२० ।  
**उवत्थिया**—उपस्थिता—उपनता । सम० १८ ।  
**उवदंस्**—उपदर्शनम् । आच० ७२६ ।  
**उवदंस्नणकूड**—उपदर्शनकूट, उपदर्शननामकं कूटम् । जं० प्र० ३७७ ।  
**उवदंस्तिजंति**—उपदर्श्यन्ते—निगमनेन शिष्यबुद्धौ नि शब्दं व्यवस्थाप्यन्ते । नंदी २१२ । उपदर्श्यन्ते उपनयनिगमनाभ्यां गच्छन्नायमिप्रायतो वा । सम० १०९ ।  
**उवदंसिया**—उप—सामीप्येन यथा ध्रौवृणा क्षत्रिते यथाप स्थितवस्तुतत्त्वावबोधो भवति तथा स्फुटवचनैरिच्छर्थं, दर्शिता—श्रवणगोचर नीता उपदिष्टा । प्रज्ञा० ४ ।  
**उवदंसोह**—सकलनययुक्तिभि उपदर्शयति । भग० ७११ ।  
 ठाणा० ५०३ । उपदर्शयति—प्रमाशयति । भग० १४९ ।  
**उवदिद्वाभाधमूलं**—उपदेष्टृभावमूलं—उपदेष्टा—यै कर्मभि प्राणिनो मूलदेनेन्यद्यन्ते । आचा० ८८ ।  
**उवद्वा**—उपद्वा राजचौर्वादिहृता । भग० ४६९ ।  
**उवद्वाद्**—उपद्वायति—उपद्वं करोति । ठाणा० ३०५ ।  
**उवद्वाद्**—उपद्वायथ—मारयथ । भग० ३१८ ।  
**उवधाणं**—उपदधातीत्युपधानं—तप । दश० १०४ ।  
**उवधायपडगो**—पडगस्य बीयो मेओ । नि० चू० द्वि० ३१ अ ।  
**उवधारणया**—पार्यतेऽनेनेति धारण, उप—सामीप्येन धारण उपधारण—व्यञ्जनावग्रहेऽपि द्वितीयादिममथेपु प्रतिममयपूर्वा-पूर्वगन्दादिपुद्गलादानपुरस्सर प्राक्तनप्राक्तनसमयश्रुति-शब्दादिपुद्गलधारणपरिणाम तद्भाव उपधारणता । नंदी १७४ । उपधारणता—अविकृतिसृष्टित्वावनाविषय करणम् । ठाणा० ४४१ ।  
**उवधारियं**—उपधारितं—अवधारितम् । भग० १०१ ।  
**उवनद्**—उपनन्द । आच० २०१ ।  
**उवनगरग्रामं**—उपनगरग्राम । आच० ३०१ ।  
**उवनिक्खिसे**—उपनिक्षिप्तं—व्यवस्थापित । आचा० ३४४ ।  
**उवनिग्गय**—उपनिर्गतं—निम्नतरविनिर्गत । राज० ६ ।  
**उवनिहिते**—उपनिधीयत इति उपनिधि—प्रत्यामन्न यथा-स्थितिदानीतं तेन चरति तद्ग्रहणव्यर्थं द्रव्योपनिधिम्, उपनिहितमेव वा यस्य ग्रहणविषयमयाऽस्ति स प्रप्रदरा-

कृतिगणत्वेन मत्त्वर्थायाण्यन्ये औपनिहित इति । ठाणा० २९८ ।

**उवनिहिय**—उपनिधिना—प्रत्यासत्त्या चरति—प्रत्यामन्नमेव गृह्णाति यं स औपनिधिकः । प्रथ० १०६ ।

**उवनिही**—उपनिधि—प्रत्यामत्ति । प्रथ० १०६ ।

**उवन्नास**—उपन्यसनं उपन्यासा । दस० ३५ ।

**उवन्नासोवणप**—वादिना अभिमतार्थमाधानाय कृते यस्तु-पन्यासे तद्विषयनाय यः प्रतिवादिना निरुद्धार्थोपनयः कियते पर्यस्तुभोगोपन्यासे वा य उतरोपनयः स उपन्या-सोपनय । ठाणा० २५४ ।

**उवप्पयाण**—उपप्रदानं—अभिमतार्थदानम् । निवा० ६५ । उप-प्रदानम् । दश० १०९ ।

**उवप्पूहियं**—उपचूहितं—ममयितं, अनुमतं वा । आच० ५३९ ।

**उवभोग**—उपभुज्यत इति उपभोग—महद्भोगोऽक्षनपानादि, अन्तर्भाग, आहारादि वा । आच० ८२८ । सहृद्भोगम् । भग० २९७ । आच० ८३० । पुन पुनभुज्यत इति उप-भोग—वल्लालहारादि । प्रज्ञा० ४७५ । पहाणवत्थाभरणमंथ-मत्ताणुलेवणभूवणवामतवोलादि । नि० चू० तृ० १ आ । धार-णमुपभोग । आच० ३२५ । उपभोग—पीन पुन्येन चोप-भोजनमुपभोग । भग० ३५० ।

**उवभोगंतराप**—उपभोगान्तरायः—यदुदयवशात् मत्स्यपि विनिष्टवन्नालङ्कारादिमभवेऽस्मति च प्रत्याख्यानपरिणमे वराभ्ये वा केयलकार्ण्यास्रोत्सहते भोक्तुं तत् । प्रज्ञा० ४७५ ।

**उवम**—उपमीयतेऽनेन दार्ष्टान्तिकोऽर्थ इत्युपमानम् । दश० ३४ ।

**उवमा** उपमा—माहृयम् । उत० २७९ । दृष्टान्त । घृ० प्र० १६८ आ । माहृयोपदर्शनरूपा । उत० २७२ । उपमा-दोष—हीनापिकोपमानाभिधानं, अष्टाविंशतितमः सूत्रोप । आच० ३७४ । उपमा । प्रज्ञा० ३६४ । यायविशेष । जीवा० २७८ । उपेत्युपभोगपूर्वकं मेति ज्ञानं, उपमा-सम्प्रधारणा । उत० २२४ ।

**उवमाणं**—उपमानं—दृष्टान्त । औप० १७ ।

**उवमादोसो**—उपमादोष—यत्र हीनोपमा कियते । सूत्रस्य द्वान्ति-शब्दोऽष्टाविंशतितमो दोष । अनु० २६२ ।

**उवयंति**—अवतन्ति—अवतन्ति । आचा० ३६६ ।

उवलिपिज्ञ-उवलिम्पनम् । आचा० १३० ।  
 उवलिप्ता-जातिहुंमिनामेओ । नि० चू० द्वि० ४३आ ।  
 उवलेहा-सुवृष्टा । उच० १९२ ।  
 उवलेयण-उपलेयने छगणादिना । अनु० २६ । छगल-  
 गडियाए दिवण । नि० चू० प्र० २३१अ ।  
 उवलेयणकप्रोवयारो-वृत्तौपलेयनोपचार । आच० ४१६ ।  
 उवलिप्यंती-उपलीयन्ते-आध्रप्रति । द्य० द्वि० २७८आ ।  
 उवलिप्तामि-उपालयिष्ये-व्यख्यामि । आचा० ४०६ ।  
 उवपञ्जति-उपपद्यते । जीरा० ११० ।  
 उवपञ्जिऊण-उपगुण्य-उपसोम दत्त्वा । ओष० ११६ ।  
 उवपञ्जा-उपवाधा-राजादिवशभा । औपवाधा-राजादि  
 यशमाना समकरा इति । द्वा० २४८ ।  
 उवपणो-उपपन्न । जीरा० ९७ ।  
 उवपत्तारो-वचनव्यखयादुपपत्ता भवति उति । टाण० ४२० ।  
 उवपत्तो-उपपन्न-आश्रित । मू० २८१ ।  
 उववाहण-उपपात-प्रादुर्भावो जन्मान्तरसंक्रान्तिः, उप  
 पाते भव औपपातिक । आचा० १२ । उपपादुक -  
 भगवत्तरसंक्रान्तिभारु । आचा० १० ।  
 उववाह्य-उपपातेन निर्गम औपपातिक - भवाद्भवान्तर  
 मार्गमि । सूत्र० २० । उपवाच्यते-सूच्यते स्म यत्तत् उप  
 वाचिन-श्रेयित वस्तु । ज्ञाता० ८८ ।  
 उववाह्या-उपपाताज्जाता उपपातजा भधवा उपपाते  
 भया औपपातिका-देवा नारनाथ । द्वा० १८१ ।  
 उववाह्य-उपपात - उपपाताभिमुत्पन्नेनापान्तरात्मनिर्गमे  
 तर्ष । भग० १६३ । देवचम्प । टाण० ४१९ । तादृकागु  
 पातार्थे, द्वाद्वाशते धर्षोद्देशक । भग० ५९६ । उपपात -  
 प्रादुर्भाव । प्रज्ञा० ३२८ ।  
 उववापर्य-उपपातसमुपात, बादपृथ्वीकाधिराना पर्या  
 पनाश यदन्तरसुके स्थान तरणालाभिमुत्पन्नमिति भाव  
 नैरोपातेन, उपपातसंज्ञित्व । प्रज्ञा० ७३ ।  
 उववात-उपपाते-नारकदेवानां उच्ये । टाण० ४६२ ।  
 उपपात-गमनमात्रम् । टाण० ३३६ ।  
 उववातसभा-उपपातसभा-व्यख्यासुवपद्यते गा । टाण०  
 ३९० ।  
 उववातो-व्यवपन्न । नि० चू० प्र० २४१अ ।

उववायं-उपपाते-उच्ये । आचा० १६३ । भगवत्पृथ  
 स्थानकपरिमिसुखम् । भग० १४३ । उपपातेन निर्ग  
 म औपपातिकम् । आच० ७३१ । उप-गर्भोपे पवन-उपा  
 न उपपात दशपानविषयोऽप्युपातेन । उच्ये ४४ । उप  
 पात-मेवा । भग० १९८ ।  
 उववायगर्ह-उपपातय-उपादाय समनंसा उपपातार्था ।  
 भग० ३८१ ।  
 उववायगती-उपपात एव गति उपपातगति । गति-  
 प्रपातस्य चतुर्थो मेर । प्रज्ञा० ३२६ ।  
 उववायसभा-विदायतनस्योत्तरपूर्वस्य सभा उपपातसभा ।  
 तीका० २३६ ।  
 उववास-उपवाचन, अभिप्रायपरिष्कारम् । टाण० १२६ ।  
 उववृह-उपवृष्टि-समानधार्मिकाणां सदुपगुणप्रदानेन तद्-  
 शक्तिपरम् । द्वा० १०२ । उपवृष्टिसमुपवृष्टा-द्वैतवादि  
 गुणान्तिना मुक्तवचनमो सुयं सुयं च भासाधामि  
 द्विवादिवाचिनासुदुपगुणपरिवर्धने गा । उच० ७९७ ।  
 समानधार्मिकाणां सदुपगुणप्रदानेन तद्वादिशब्दम् । प्रज्ञा०  
 ५६ ।  
 उपवृह-उपवृष्टे-समर्थयति । द्वा० ४४ ।  
 उपवेओ - उपपेत उति एवमव्यवचनगुणोपपेत । टाण०  
 ४२१ ।  
 उपवेय - उपपेत -पुण । जीरा० २७४ । भग० ११९ ।  
 उप अय इत उति अन्वयस्य स्थाने शक्यपरिदर्शनम्  
 पपेत -पुण । ज्ञाता० ११ ।  
 उपसंक्रमित्ता-उपसङ्गम्य । मू० ११ ।  
 उपसंक्रमित्तु-उपसङ्गम्य आगन्तीभूय । आचा० ३३१ ।  
 उपसङ्गम्य-उपेय । आचा० २७१ ।  
 उपसंवा-उपसन्वा-सम्यग्वासरिषवाधैरिज्ञानम् । मू०  
 २१४ ।  
 उपसर्ग-उपसर्ग-अनादुलम् । ओष० १५६ । यत् एषं  
 गतायामनुपसर्गं पर्यते तद् । विष्कम्भितौदसुपसर्गनिर्ग  
 हसर्गं च । विद्मे २८६ । किञ्चिन्निध्यान्वपुपातसर्गोद  
 स्यस्वरूपतया परिवाह विविदिमध्यान्वपुपातेन । वृ-  
 २० २१आ । रागद्वेषावर्षोपसर्ग उपसर्ग । आचा०  
 १०० । स्यात्प्राज्ञानां गीत्यस्य राग । अनु० १२० ।  
 अन्वर्षया उपसर्ग । भग० ४९० । विष्कम्भितो

दयमपनीतमिध्यास्वभाव च । विष्कम्भितोदयमित्यर्थः ।  
 ठाणा० ४८ । उपशान्त-न सर्वथाऽभावमापन्नं, निष्कामि  
 ताद्यस्वोद्रेकरहितं वा । प्रज्ञा० ४०३ । औप० ३५ ।  
 ज० प्र० १४६ । ज० प्र० ३८९ । जम्बूद्वीपैरवते तीर्थं  
 करनाम । सम० १५३ । पवजापरिणत । नि० चू० दि०  
 २८अ । उपशान्त-उपरत । दश० २०६ । सूत्र० ४१५ ।  
 अपगतसन्देहं सृष्ट इति । सूत्र० ४०९ । अनुदयावस्था ।  
 प्रज्ञा० २९१ ।

**उचसंतकसातो** उपशान्तकपाय । उक्त० २५७ ।

**उचसंतजीवी** - अन्तर्दृश्यपेक्षया उपशान्तजीवी । प्रश्न०  
 १०६ ।

**उचसंतमोह** - उपशान्तमोह - अनुत्कटवेदमोहनीय । भग०  
 २२३ । श्रेणिपरिसमाप्तावन्तमुहूर्त्तं माचदुपशांतवीतराग ।  
 भूतभ्रामर्यैकादश गुणस्थानम् । भाव० ६१० ।

**उचसंतमोहनिजो** - उपशान्तमोहनीय - उपशान्त-अनु  
 दय प्राप्त मोहनीय दर्शनमोहनीय यस्यासौ । उक्त० ३०६ ।

**उचसंपजहण** - उचसंपदत्त उपसम्पद् - अयंरूपप्रतिपत्ति,  
 सा च हान च स्वरूपपरिखण उपसम्पद्धानम् । उक्त० ४७० ।

**उचसंपजह** - उपसम्पद्यते । भाव० ८२५ ।

**उचसंपज्जणा** - उपसम्पद्य । दश० १०५ ।

**उचसंपज्जमागतिति** - उपसंपन्नमानगति - यदन्यमुपसम्पद्य-  
 आश्रित्य तद्वदग्नेन गमनम् । विहायोगनेस्तृतीयो मेद ।  
 प्रज्ञा० ३२७ ।

**उचसंपज्जसेणियपरिकम्मे** - पथम परिकर्म । सम० १२८ ।

**उचसंपज्जिज्ञा** - उपसम्पद्य-सामीप्येनाहीत्यर्थः । दश० १५० ।

**उचसंपज्ज** - उपसम्पन्न-निष्कामोद्रेकितम् । सूत्र० ४१५ ।

**उचसंपया** - उपसंपत् - सामीप्येनाद्रीकरणं यदेतदुत्पन्नतम् ।  
 दश० २०३ । सामाचार्या दशमो मेद । उपसम्पत् - इतो  
 भवतीत्योऽहमित्यनुपगम । ठाणा ४९९ । उपसम्पत् । भाव०  
 २५९ । सामाचार्या दशमो मेद । उपसम्पत् - ज्ञानादि  
 निमित्तमाचार्यन्तराध्ययणम् । भग० ९२० । उपसंपल्लिह्य  
 संपत् - ज्ञानार्थं भवतीत्योऽहमित्यनुपगम । ठाणा १४० ।  
 त्वरीयाऽहमित्येत् धुनायर्थमन्यरीयसत्तानुपगम । अनु०  
 १०३ । उपसंपत्त उपसम्पत् - अन्यरूपप्रतिपत्ति । उक्त०  
 ४१० ।

**उचसंहार** - उपसहार - उपनय । दश० २२ । वृ० तृ०  
 १३६भा ।

**उचसग्ग** - उपमृज्यते - धातुमपीषे नियुज्यते इति उपसर्ग ।  
 प्रश्न० ११७ । बाधाविशेषा । ठाणा० २८० । राजादि  
 जनित । भोष० १९० । उप-सामीप्येन मर्जमम्,  
 उपमृज्यतेऽनेनेति वा करणमाधन, उपसृज्यतेऽसाविति  
 वा कर्ममाधन । भाव० ४४४ । प्रव्रज्याप्रवृत्ते निवारणम् ।  
 पिण्ड० १३९ । देवादिहृतोपदवा । ठाणा० ५२३ ।  
 राजस्वजनादिहृतो देवमनुष्यातिर्यथहृतो वा । पिण्ड० १७० ।  
 उप-सामीप्येन सृज्यते तिर्यग्मनुष्यामरं कर्मवशेनोत्तमाना  
 क्रियत इति उपसर्ग । उक्त० १०९ । उपसर्ग - उप  
 सर्जन, धर्मश्रवणम् । दिव्यादय । भग० १०१ ।

**उचसग्गपरिणणा** - उपसर्गपरिज्ञा, सूत्रकृताज्ञायधृतस्कन्धे  
 तृतीयमध्ययनम् । भाव० ६५१ । उक्त० ६१४ ।

**उचसग्गपरिज्ञा** - सूत्रकृताज्ञे तृतीयमध्ययनम् । सम० ३११ ।

**उचसग्गसहो** - उपसर्गसह । भाव० ६४८ ।

**उचसत्तो** - उपसर्ग - गाढमागम । उक्त० ६३२ ।

**उचसमंति** - उपशाम्यन्ति - सर्वतर्क्याविवृत्तवर्णानिर्वृत्तान्ते,  
 सर्वतर्क्यातविवृत्तमुपसहरन्तीति भावः । राज० २३ ।

**उचसम** - उपशाममिति औपशामिकम् । विपाकोदयत्वस्मरण  
 लक्षण । दश० ४३ । उपशाम विपाकोदयत्वस्मरणलक्षण ।  
 नदी ७७ । क्रोधाद्युदयाभावे भवति । आवा० १५० ।  
 शान्तिरूप । दश० २३४ । पञ्चदशदिवसनाम । ज० प्र०  
 ४९० । सूत्र० १४७ । क्षाद्योपशामिक । सूत्र० ६ । विंशति  
 तमो मुहूर्तनाम । ज० प्र० ४९१ । मध्यस्थपरिणाम ।  
 भाव० ४९१ । उदीप्यते इति अनुदरीयस्य चन्द्रशक्र  
 प्रदेशतथानुभवनम् । सर्वथैव विष्कम्भितोदयत्वमित्यर्थः ।  
 भग० ५९ । गमा । दश० चू० १२४ । उदयानिरोधोदय  
 प्राप्तापत्तीकरणम् । दश० २३४ ।

**उचसमणा** - उपशमना - उदयोरीरणाभिधानिकाचनारण  
 नामाभ्यत्येन कर्मणोऽवस्थापनम् । ठाणा० ८२१ ।

**उचसमविवेयसंर** - उपशमविवेकमर्गम्, विलानस्य प  
 रंश । भाव० ३७१ ।

**उचसमिण** उपशम - उदीप्यते कर्मणोऽनुदरीयस्य विष्क  
 म्भितोदयत्वं त तर्कपरामिक् शिवामात्र उपशमेन वा



निर्गत औपशामिक-सम्प्रदाशनादि । भग० ६४९ । औप-  
गमिक - उपयमनमुपशम - कर्मणोऽनुदायाधीगावस्था भस्म-  
पटलावच्छासामिभ्र, स गव, तल वा निर्जन । अनु०  
११४ ।

**उवसामिभ** - उपशमित - भस्मच्छामिकरूपता प्रापितम् ।  
आव० ७५ ।

**उवसानेमाण** - धुद्र-यन्त्रराक्षिष्ठिन ममयप्रमिद्धविधिनोपशम  
यन्त इति । टाणा० ३५३

**उवसाहिजउत्ति** - पश्यताम् । नि० चू० प्र० ३४९आ ।

**उवसित** - उपाधित - अङ्गीकृत । वैयारुच्यकरवस्थिना प्रत्या  
मन्नतर । द्वेप । शिष्यप्रतीच्छत्रुलाशपेक्षा । भग० ३८५ ।

**उवस्सग** - उपाश्रय । प्रश्न० १२७ ।

**उवस्सओ** - उपाश्रय - वसति । प्रश्न० १२७ ।

**उवस्सग** - उपाश्रय - वसति । आष० १७३ ।

**उवस्सतमा** - उपाश्रया । वृ० द्वि० १८३अ ।

**उवस्सते** - उपाश्रय - नित्य । प्रश्न० १२८ ।

**उवस्सुय** - उपाश्रय वसति । औष० ६५, १७३ ।  
दश० २१८ । न० प्र० १२१ । उपाश्रय - गृहवतिगृहा  
दिम् । टाणा० ३१९ । वसतेर्गृहतिपरिहित, परेषामना  
शेषवत् इत्यर्थे । ज्ञाता० २०५ । उपाश्रया - उपा  
श्रीयन्ते-भजयन्ते शीतादिनागार्थं ये ते उपाश्रया - वस  
तय । टाणा० १५७ । पडिम्भयो । सर्वथ वा आसग ।  
दश० च० १११ ।

**उवस्सयमंक्लिसे** - द्वितीय सङ्घा । उपाश्रयो-वसतिस्तदु-  
विषय मङ्ग्रेण - अगमाधि उपाश्रयमङ्ग्रेण । टाणा०  
८८९ ।

**उवस्सित** - उपाधित - द्रुप । शिष्यवृत्ताशपेक्षा । टाणा०  
८९१ । द्वेप, शिष्यप्रतीच्छत्रुलाशपेक्षा । टाणा० ३१९ ।

**उवहडे** - उपहत - नोजनस्थाने गीरिते भक्तमिति भाव ।  
टाणा० १४८ ।

**उवहनो** - अविमुदा । नि० चू० द्वि० ११६अ ।

**उवहय** - उपहति । उता० १४५ । यनेम । नि० चू० वृ०  
८१आ ।

**उवहयपरिणामो** - उप-तपरिणाम । भाव० ५९३ ।

**उवहरत** - उपहरति - विनाशयति । ज्ञाता० १९२ ।

**उवहाण** - उपधान-तप । मू० ६९, ६९, ७५ । तप

श्रणम् । मू० २५१ । अनगनादिश्च तप । मू०  
५८ । आगमोपचाररूपमावास्मादि । उत० १२८ ।

गुणोपधमकारि । प्रश्न० १५७ । उच्छ्रीयस्मू । वृ० द्वि०  
२२०अ । उपधान-तरणम् । व्य० प्र० ५०आ । व्यगणम् । व्य०  
द्वि० १आ । प्रायश्चित्तम् । व्य० द्वि० १९५अ । सिहित-

शास्त्रोपचार । उत० ६५६ । तप । टाणा० ४४० ।  
उपधान-तप । सम० ५७ । टाणा० ६५, १९५ । उप

धीयते-उपहृयते धुतमनेनेति उपधान-धुतविषयस्तपउप  
चार । टाणा० १८१ । विधानम् । सम० १२७ ।

उपदयातीत्युपधान-उपकरोतीत्यर्थं । औष० १११ । अज्ञा-  
नज्ञानयवनादी यथायोग्यताचाम्भारितपोविशेष । उत० ३४७ ।

**उवहाणग** - पश्यान्पुष्प मिगवहाण । नि० चू० द्वि०  
६१अ । उपधानम् । टाणा० २३५ । उपधान-अपनि

लेखिनदूषणपथक द्वितीयो नेद । आव० ६५२ ।

**उवहाणपडिमा** - उपधान-तपस्तपतिमोपधानप्रतिमा, हा  
दथा निधुप्रतिमा एतादृशीपामकप्रतिमाश्चेत्येवम् । टाणा०  
६५ । सम १६ ।

**उवहाणवीरिय** - उपधान-तपस्तपनीयं यम स उपधान  
वीर्य - तपस्यनिगृहितबलवीर्यं । मू० ६५ ।

**उवहाणसुय** - उपधानधुत - आचाराङ्गस्थापमन्वयनम् ।  
उत० ६१६ । सम० ४४ । उपधानधुतं, आचारप्रकल्पे

प्रथमधुनस्कन्धम्यापमन्वयनम् । आव० ६६० । प्रश्न०  
१४१ ।

**उवहार** - उपहार । आव० १९० । वलि । आव० ६९८ ।

**उवहारा** - बलिमादाया । नि० चू० प्र० २६५अ ।

**उवहारियं** - अवधारित-निर्णीतम् । आव० ६३७ ।

**उवहि** - उपदयातीति उपधि - उप - सामीप्येन सयम धार  
यति गोपयति चेत्यर्थं । स च पात्रादिश्च । औष० १२ ।

उपतरणम् । उत० ५८८ । वर्षाकृपादि । उत०  
३५० । उपकाणमाभरणदिद्र-यनो, भावनस्तु छम्पदि

बनहमा नरक उपधीयते । उत० ४६३ । उपधि - मस्ता  
रकादि । आष० ८० । रजोहरणादि । टाणा० ३१७ ।

उपधीयते-सदृश्यत इति उपधि । आचा० १८० । आग-  
मोक्त दह्यादि । दश० ११९ । पात्रनियोगादि । व्य० प्र०  
२३७अ । उपधि - वखादि । प्रश्न० १२४ । उप  
धीयते-शीर्यते दुर्गति प्रत्यागमा देनामातुपधि - नाया, अष्ट

प्रकार वा कर्म । सूत्र० ६८ । उपकरणम् । भाव० ५६८ ।  
 प्रशा० २९१ । प्रश्न० ३९ । उपदधातीति उपधि । ओष०  
 २०७ । माया । प्रश्न० २८ । औषिण । प्रश्न० १५६ ।  
 माया । सूत्र० १०३ । उपदधातीति उपधि - उप-सामी  
 प्येन सयम वारयति पोषयति चेति पानादिरूप । ओष० १२ ।  
 भाव० ६६१ । उपधीयते वेनासावुपधि - चयनीयसमीप  
 नामनहेतुभाव । भग० ५७२ । उपधि - उपकरणम् । पिण्ड०  
 १२ । कषाय । दश० ७६ । उचकरण । नि० चू० प्र० ६४ आ ।  
 उचहिसमुद्धं - उपधिना - मायया अशुद्धं - सान्य उपधयुद्ध,  
 अपमदारस्यैनेन त्रिसप्त नाम । प्रश्न० २६ ।  
 उचहिए - उपधिक - मायित्वेन प्रच्छन्नचारी । ज्ञाता० ८१ ।  
 उपहित - प्रविष्ट - प्राप्त । भग० १०० । उपहितानि - गुरो  
 राहारायर्थं हौकितानि । विशे० ४४० ।  
 उचहिसौ - अधिकज्ञानायर्थं सन् गुरुषु बहुमानपर । व्य०  
 प्र० २३६ अ ।  
 उचहिय - उपहित - क्षिप्त । विशे० ९४३ । औपधिक -  
 मायाचारी । प्रश्न० ३० ।  
 उचहिसक्वित्से - प्रथमतः केश । उपधीयते - उपप्रभ्यते  
 सयम सयमरीर वा येन स उपधि - वलादिस्तद्विषय सङ्  
 क्लेश - असमाधि । टाणा० ४८९ ।  
 उचहिसभाग - उपधे समो ग उपधिसमो ग । व्य० द्वि०  
 ११९ आ ।  
 उचही - उचधि - परवचनाभिप्राय । वृ० तृ० ४६ आ । नि०  
 चू० प्र० २८९ आ ।  
 उचाह - उचावकप्रधाना विद्या । विशे० ९८२ ।  
 उचाहकम् - उचातिप्रश्न - सम्बन्ध परिहृत्य । आचा० ३५६ ।  
 उचाहणावित्तम् - उपानायमित्तु सदायमित्तुम् । वृ० तृ०  
 ११४ आ । उपादापयितु प्राद्वित्मित्तुर्थे । ज्ञाता० १७७ ।  
 उचाहणावित्ता - उपादापय - प्रापय । भग० २९२ ।  
 उचाहणित्ता - उपनीय - अतिवाह्य । आचा० ३६५ ।  
 उचाहति - उपयाचते । भाव० ४०४ ।  
 उचाह्य - उपादित - उपभुक्तम् । आचा० १०८ ।  
 उचाह्यसेसेण - उपादित - उपभुक्तम्, तस्य शेषमुपभुक्तसेपम् ।  
 आचा० १०८ ।  
 उचाए - उपाय - अद्रनिहतत्राभकारणम् । ज्ञाता० ३४ ।  
 उचायो - अवपात । गते । आचा० ३३८ । उपाय ।

भाव० ४१४ ।

उचागच्छति - पविगति । नि० चू० प्र० २३० आ ।  
 उचागच्छिजा - उपागच्छेयु - अतिथयो भवेयु आचा० ४०३ ।  
 उचागमण - उपागमन - स्थानम् । आचा० ३७५ ।  
 उचात - अवपात । सेवा । टाणा० १२९, ५१६ । ज्ञाता० ४ ।  
 उचातिणा - नयति । नि० चू० द्वि० २२ आ ।  
 उचातिय । नि० चू० द्वि० १४४ अ ।  
 उचानिया - उपयाचितम् । नि० चू० प्र० ३५१ आ ।  
 उचाते - उपाय - उपेय प्रति पुरुष-व्यापारादिका साधनसाम्यो  
 स यत्र द्रव्यादावुपेये अस्तीति धीयते यथैतुपु द्रव्याणि  
 विरुपेयु साधनीये-वस्तुपुपाय, उपादेयता वाऽस्य यन्नामि  
 धीयते तदाहरणमुपाय । आहारस्य द्वितीयो भेद । टाणा०  
 २५३ ।  
 उचातो - आणानिर्देश । दश० चू० १३९ ।  
 उचादान - उपादान - आय, हेतु । विशे० ५४३ ।  
 उचादिपावेचा - उपादाय - रहित्वा, आकम्प्य । सूत्र० २३४ ।  
 उचादीयमाण - उपाधीयन्ते - कर्मणा कथ्यते । आचा० ७८ ।  
 उचाय - खाद्य । दश० चू० ७८ । उपाय - उदाहरणस्य  
 द्वितीयो भेद । ३५ । एकात्मसुखमणानिर्लक्षण । दश०  
 ४४० । उप साम्येन (आय) लक्षितवस्तुनोऽविरलताभ  
 हेतुत्वाद्वास्तुतो लाभ एवोपाय - अभिलाषतवस्तुवकापत्ये-यापा  
 रावशेष । दश० ४० । उचानेनहेतु । वृत्त० ६३१ ।  
 उचायकारी - उपायकारी - सुत्रोपदेशप्रवर्तक । सूत्र० २३४ ।  
 उचायकरिया - उपायकरिया - यद्द्रव्यं येनोपायेन नियते सा ।  
 सूत्र० ३०४ ।  
 उचायणं - अवपातयतो प्रवातोऽवृथेत । व्य० प्र० २९ अ ।  
 उचाययं - अवपातवान् - बन्दनशील, निक-वर्ती वा । दश०  
 २५३ ।  
 उचारियालेणे - चमरचषावलीचघाभिधानाराजधाम्योर्मथ  
 भागे तद्भवचयोर्म्योन्नताऽवतरत्प्रायः पीठरूपे अवतारिकत  
 यने । मय० ३१ ।  
 उचालंभ - उपात्मभन उपात्मो - अक्षय-तरणानुवात्मनमेव स  
 यनामिधीयते स । आहरणतद्वेश द्वितीयो भेद । टाणा०  
 २५३ । उचालम्भ - इयमेवानोचित्विद्युत्पत्तयेनादानगर्भा ।  
 टाणा० १७५ । सपिपायसिभारूप उचायम्भ । वृ० प्र०  
 १५० आ । मानुनयोपदेशस्थानम् । व्य० प्र० ११४ अ ।

उपालम्भं उपालम्भ - भंगमैव विचित्र भ्रान्तम् । दशा० ४६ ।

उवाहियद्-उवाहीयते । आचा० ३६५ ।

उवासंतर-अवकाशान्तर-आकाशविशेष, अवकाशरूपान्तराल वा । भग० ७७ ।

उवासंतराति । टाणा० ८६ ।

उवासतरे-द्वयोरन्तरमवकाशान्तरम् । भग० ७७२ । टाणा० ४३२ ।

उवासग-उपासक-धायक । आव० ६४६ । नि० चू० द्वि० २०अ । सम० ११९ । साधु चेत् वा पोषह उवागतो उवासगो भवति । नि० चू० द्वि० १२१आ । उवासतो-सेवन्ते यतीनि-युपासना-श्रवका । उत० ६१३ ।

उवासगद्दा-उपासकाना-श्रमगोपासकाना सम्बन्धिनोऽसुखानस्य प्रतिपादिना दशा-दशाभ्ययनरूपा उपासकद्दा । उपा० १ । दशा० ४७ ।

उवासणा-उपासना-नामितकर्म । आव० १२९ ।

उवासमाणा-रात्रिजागरणसुषुप्तासना विधाना । टाणा० ३५३ ।

उवास्य-उपासक । दश० ४७ ।

उवाहण-उपासन् । आव० ३०५, ३४१ ।

उवाही-उपासीयते - व्यपदिश्यते केनियुपाधि - विशेषण स उपाधि । आचा० १५६ ।

उविचा-उपेक्ष स्वरूपस्या । उत० ३९१ ।

उविहो-अवग्रह । आव० ३५१ ।

उधिय परिक्रमिन् । ज्ञाता० २३ ।

उवीलगो-आलोचय गृह्यत नो मधुरादिवयणपभंगं दि तदा भगद् तदा सम्म आलाएति सो उवीलगो । नि० चू० ए० १२८आ ।

उवीलण-निश्चयम् । नि० चू० प्र० १४२अ । अवपीडना, कन्धनशिक्षा । ज्ञाता० २३२ ।

उवीलेमाणे-उषपीलयन्-वाधयन् । विगा० ३९ ।

उवेक्षज्ञा-उपेक्षेत-अवधीर्येन् । उत० ११७ ।

उवेक्षेय-यो-उपेक्षितव्य । आव० ६४१ ।

उवेक्ष-उपेक्ष, आकृष्टिकया । चू० द्वि० १३९आ ।

उवेक्षमाण-उपेक्षमाण-अनुर्वर । आचा० १५६ । परी पशोपमवर्तन् महानां दद्यानिद्विपयेषु वेपेक्षमाणो मायस्थ

नवगम्बमान । आचा० ४३० । उपेक्षमाण-अवगच्छन् । आचा० ७१२ । परालोचयन् । आचा० २२४ ।

उपेहा-उपेक्षा-उप-सामीप्येक्षा, अवधीरणया वर्तते । शेष० ११४ ।

उपेहे-उपेक्षेत-औदासीन्येन परयेत् । उत० ९१ ।

उवहृत्तो-अवपतन् । आव० ७०३ ।

उवहृद्-उवृत्तयति-प्रक्षिततैलापनयन करोति । जं० प्र० ३९४ ।

उवहृदृण-उवृत्तन-तत्प्रथमतया वामपार्श्वेन सुपास्य दक्षिणपार्श्वेन वर्तनम् । आव० ५७४ । अववर्तना । विशेषे० १००६ । उवर्तना-सारकसिद्धयेर्द्वयो निर्गम । आव० ५३३ । उवर्तन-लोटनम् । पिण्ड० १६४ । पञ्चापनयनरक्षणम् । दशा० ११७ ।

उव्वहृदृण-उवृत्तनार्थ-उवृत्तननिमित्तम् । दशा० २०६ ।

उवहृदृये-उवृत्तक-चूर्णफिडम् । जं० प्र० ३९४ ।

उवहृ-उवृत्ता । ज्ञाता० ३१७ ।

उवहृत्ताणि-उवृत्तितानि । आव० ९८ ।

उव्वहृत्ता-उवृत्तितानि-ध्यायिता । पिण्ड० १२३ ।

उव्वहृत्ति-एकसि उव्वहृत्ति । नि० चू० प्र० ११६आ ।

उव्वहृ-उवृत्त । आव० १७३ ।

उव्वणवेसो-उव्वणवेप । ओष० १४६ ।

उव्वणो उव्वणित । म्व० द्वि० २०३आ ।

उव्वणतो-उव्वणतयन् । आव० ३१३ । ओष० ८४ ।

उव्वण-उवृत्तनम्-मार्गवरावर्तन । हू० तू० १२९आ ।

उव्वणयस्य पास्यिकण । नि० चू० प्र० २११अ । उव्व-तते-यतो व्रजस्ततो याति । ओष० ४७ ।

उव्वण-परावर्तणायुव्वणसारणा वायव्या । नि० चू० प्र० ६०अ ।

उव्वणमाणे-अपवर्तयन् । आचा० ३४३ ।

उव्वण-ज पाश्चिमादिदिशि ज तं । नि० चू० प्र० २२५आ । उव्वण-तेवेव अगनिनिश्चयत ओयतेज्य एगपासेन देति । दश० चू० ८० ।

उव्वण-उवृत्तय । आव० ३५८ ।

उव्वण-अतिप्रसङ्गम् । म्व० द्वि० ४२१आ ।

उव्वण-हू० द्वि० ६२अ ।

उव्वण-अपवर्तयन् । आव० ६२२ । नि० चू० प्र० १७७अ ।

उच्चरति-उच्चरति । आच० ८५९ ।  
 उच्चरयं-अपहरकम् । आच० ५६९ ।  
 उच्चरिअ-उद्वरितं । गदधिअ जानम् । ओष० १८८ ।  
 अतिरिक्तम् । ओष० १८६ ।  
 उच्चरियं-उच्चरितम् । पिण्ड ७९ । अगनादे शेषभाग ।  
 आच० ८५९ ।  
 उच्चरो-उद्वर-धर्मोपताप । वृ० द्वि० २९३अ ।  
 उच्चलणं-उद्वचलनं, अभ्यङ्गनम् । वृ० द्वि० २९९अ ।  
 उच्चलणेहि-उद्वचेलनानि-देहोपलेपनविशेषा । शाता० १८३ ।  
 उच्चरसिप-उद्वचसित-उत्थित । ओष० ४९ ।  
 उच्चसिय-उद्वचस्य (उद्वुष्य) । आच० ७१ ।  
 उच्चवाओ-ध्रान्त । नि० वृ० प्र० १६०अ ।  
 उच्चवाण-उद्ववानं-किञ्चित्सस्तिग्ध । ओष० १७१ ।  
 उच्चवाता-परिध्रान्त । वृ० द्वि० ८०आ । व्य० द्वि० १५७अ ।  
 उच्चवाया-उद्ववाता-अतीवपरिध्रान्ता । वृ० प्र० २४३आ ।  
 परिध्रान्ताः । व्य० द्वि० २०३आ ।  
 उच्चवालना-उद्ववालना, निष्कायना । वृ० द्वि० २५०अ ।  
 उच्चवासिअ-उद्ववामित-शोषित । ओष० १७४ ।  
 उच्चवासेह-उपहसति । आच० ६६९ ।  
 उच्चिगम्-उद्विगम-विकल्प । भग० १६६ । सजातभय ।  
 विषा० ४३ । उद्विगता-अथ पुनननिन सार्द्धं मुद्विगामहे  
 इत्यपुन करणाशयवन्त । जं० प्र० २३९ । उद्विगवान् । प्रभ०  
 ५२ ।  
 उच्चिद्ध-उद्विद्धं-ऊर्ध्वम् । औष० ३ । उद्विद्ध-उण्डम् ।  
 शाता० २ । ऊर्ध्वगत । जं० प्र० १६४ । उच्चा । आच०  
 १८४ । उच्चिता, उच्चैस्त्वेन वा । अनु० १५८ । उद्विद्ध-  
 अव्यर्थमुच्च । औष० ९ । उच्च । राज० ५ ।  
 उच्चिहंताई-उत्पतन्ति । शाता० २३२ ।  
 उच्चिहृद्-ऊर्ध्वं विजहाति, ऊर्ध्वं क्षिपति । भग० २३० । उद्वि  
 जहाति-ऊर्ध्वं क्षिपति । शाता० १६८ ।  
 उच्चिहृति-उत्पादेति । नि० वृ० प्र० २५६आ ।  
 उच्चिहृामि-नयामि । शाता० १३९ ।  
 उच्चिहृिय-उद्वचूय-उद्वेर्ष्य । भग० ६२८ ।  
 उच्चील्लय-अपव्रीडय-लज्जापनोदरो यथा पर मुखमालोच  
 यतीति । टाण० ४८६ ।  
 उच्चील्लयं-अपवर्णनम् । उ० प्र० मा० गा० ७७ ।

उच्चिहृामि-उच्चेष्यामि । नि वृ० प्र० २०१अ ।  
 उच्चवेपग-उद्वेगक-इष्टविशेषादिजन्य उद्वेग, उद्वेजकी वा  
 लोभोद्वेगकारी चौरादिवा । भग० १९८ ।  
 उच्चवेपण-उद्वेजन-चलनम् । भग० ४७१ ।  
 उच्चवेपणओ-उद्वेजनक-चित्तविल्लवकारी, उद्वेगकर । प्रध०  
 ५ ।  
 उच्चवेपणयं-उद्वेगकृत् । महाव० ।  
 उच्चवेला-उद्वेला । आच० ५१४ ।  
 उच्चवेलियं-उद्वेलित, उत्सारितम् । वृ० द्वि० २५५आ ।  
 उच्चवेलेति-उद्वेलयति । आच० १८९ ।  
 उच्चवेलेउं-उद्वेलयितु, उद्वेप्रयितुम् । वृ० द्वि० २५७अ ।  
 उच्चवेह-उद्वेह । अनु० १०१ । जीवा० ३२२ । उच्चवेहम् ।  
 ३२५, ३४३, २२७ । राज० ९१ । जं० प्र० २८४ ।  
 सम० ९७ । टाण० ५२५ । वाहल्यम् । जं० प्र०  
 ३२७ । मुवि प्रवेश । टाण० ६९ । भूमातवम् । जं०  
 प्र० २८२ । भूमाववगाह । टाण० ४७९ । भूमिप्रवेश ।  
 जं० प्र० ७२ ।  
 उच्चवेहलिया-वनस्पतिविशेष । भग० ८०४ ।  
 उच्चण-स्पर्शस्याधो भेद । प्रजा० ४७३ ।  
 उच्चणरूपा-शोनिभेद । आच० २४ ।  
 उच्च-अवस्थाया । विशे० १०२९ ।  
 उच्चकण-रंधियपुंवरस उत्सकण करेज । नि० वृ० प्र० १४२आ ।  
 उच्चकविउ-उत्प्लव्य, अध प्राप्य । आच० ६२१ ।  
 उच्चको-उत्कण्ठ । नि० वृ० वृ० ३६अ ।  
 उच्चमार-मत्स्यविशेष । पशा० ८४ ।  
 उच्चडा-उत्सता-उच्चा । जं० प्र० ४६ ।  
 उच्चण-उच्च-प्रतिशूल । टाण० ४४४ ।  
 उच्चणं-लोअयपरिमोय उच्चण भण्यइ । नि० वृ० द्वि०  
 १५९अ ।  
 उच्चणहसण्हिआओ-अतिशयेन प्रावयेन च अङ्गमङ्गिण  
 का उच्चङ्गणदिगका । अनु० १६३ ।  
 उच्चभ-ऊपभ, पपदना कुलकरनाम । जं० प्र० १३० ।  
 भरतचविपिता । आच० १६० । सम० १५२ । प्रथम-  
 भूषणविधिविशेष । जीवा० २६९ । मद्गदलपम्या सिलाया  
 पिता । उ० प्र० ३७९ । समप्रसयममारोद्ववहनाद प्रथम ।  
 आग्निनि । आच० ५०० । मद्गदायगम् प्रविष्टव

७० प्र० १०७। पट । सम० १४९। परिविष्टनपट्ट । टाणा०  
 ३५७ । प्रज्ञा० ४७२ ।  
**उसभकण्डो**-श्रपभरण्ड-श्रपभरण्डप्रमाणो रत्नविशेष ।  
 जीवा० २३४ ।  
**उसभकूड**-श्रपभरुट, जम्बूद्वीपे उत्तरार्द्धभारते पर्वत ।  
 ज० प्र० ८७। आव० १५१ ।  
**उसभज्झया**-श्रपभध्वजा-श्रपभविहोपिता ध्वजा । जीवा०  
 २१५ ।  
**उसभनाराय**-श्रपभनाराय-यत्पुन कीर्तिभारहित सहनन  
 तत् । प्रज्ञा० ४७२ ।  
**उसभभदत्त**-नामविशेष । भग० ६२०, ५३३, ५४९, ५५६,  
 ५५७। आचा० ४२९। नवमसते त्रयत्रिगतमोहसकेऽभि  
 क्षित । भग० ४७५। श्रपभदत्त इषुकारनगरे गोधापति ।  
 विवा० ९५। जम्बूस्वामि पिता । नि० चू० दि० २९आ ।  
**उसभपुरं**-श्रपभपुर, द्वितीयनिहकोत्पत्तिस्थानम् । विशेषे  
 ९३४ । धनाचहराजधानी । विवा० ९४ । राजशुभ्रवा  
 पनाम । आव० ३१५ । नगरविशेष । उत० १०४ ।  
 गजगृहम् । टाणा० ४१४ । जीवश्रेष्ठप्रप्रपरिनिहकोपति  
 स्थानम् । आव० ३१२ ।  
**उसभसिरि**-श्रीश्रपभ । सम० १०६ ।  
**उसभसेण**-मुनिसुव्रतजिनस्य भिक्षादाता । सम० १५१ ।  
 श्रपभस्वामिन श्रपभगणपर । सम० १५२ । वृ० प्र०  
 २०४अ । श्रपभमेन-भरतपुत्र । आव० १४९ ।  
**उसभा**-श्रपभा-शाश्वतप्रथमप्रतिमानाम । जीवा० २२८ ।  
**उसचियं**-उरगामिय । नि० चू० प्र० २९४अ ।  
**उसह**-श्रपभ, सयममारोद्धहनाद्यभ द्वा श्रपभ, श्रपभो वा  
 इति सम्भार, तत्र श्रपभ द्वा श्रपभ इति वा, श्रपेण  
 भोति वा श्रपभ । व० प्र० १३५ ।  
**उसहकूडपभाई**-श्रपभरुटप्रमाण, श्रपभरुटकाराणि ।  
 तं० प्र० ८८ ।  
**उसहकूडे**-श्रपभरुट । ज० प्र० २५० ।  
**उसहघ्राया**-श्रपभरुटाया-घ्रायाया पणतमोने । प्रज्ञा०  
 ३७७ ।  
**उसहपुरं**-श्रपभपुरं-नगरविशेष । उत० १०५ ।  
**उसा**-त्रेने । नि० चू० दि० ८३अ ।  
**उनिण**-नातिने तं चैव चयम्यजीव, एवमि धोयण । नि०

चू० दि० ११८आ । निदाघादितापामरम् । उत० ८० ।  
 उष्ण-धर्म । टाणा० २८७। आहारपाकारिकारणं यद्यथा  
 धनुगत । अनु० ११०। उष्णो मार्दवपाकृष्ट । टाणा० २६।  
 उष्ण-अग्रमुक्तम् । दश० २०६ ।  
**उसिणपरितावे**-उष्णपरिताप-उष्ण-उष्णस्पर्शपद भूशि-  
 लादि तेन परिताप । उत० ८९ ।  
**उसिणधूप**-अस्वाभावित्रमौष्य प्राप्त । भग० १७५ ।  
**उसिणोदप**-उष्णोदक-स्वभावत एव क्वचिर्निर्गतादातुष्ण-  
 पारंणामम् । बाद्राप्वायमेद । प्रज्ञा० २८ ।  
**उसिणोद्ग**-उष्णोद्ग-क्वचित्तोदकम् । दश० २२८ । उद  
 श्रपनिदण्डम् । पिण्ड० १७ ।  
**उसिणोद्गवियडेण**-उष्णोदकवियडेन- उष्णोदनेनाप्रामुने  
 नाग्निदण्डोद्गतेन पथाद्वा सचितीभूतेन । आचा० ३४७ ।  
**उसिय**-उत्सतानि-लम्बमानानि । राज० ६४ ।  
**उसीर**-उसीरं-वीरणीमूलम् । ज्ञाता० २३२। जीवा० १९१।  
 राज० ३४ । मूलविशेष । जीवा० १३६। ओशीरं-वीरणी  
 मूलम् । प्रज्ञा० १६२ ।  
**उसीसद्वयणं**-सीमस्य सर्भीय उवमीश, सीमस्य वा उक्त्वमर्ग  
 उमीस द्वयण-जिनमेतो । नि० चू० प्र० २४७अ ।  
**उसु**-इषु-भग० ९३, २३०। शरपत्रकलादिषु  
 दाय । आव० २३० ।  
**उसुअ** इषु-इषुकारामाभरण, तिलक वा । पिण्ड० १२४ ।  
**उसुआर**-इषुकार-राजपुत्रविशेष । उत० ३९४ ।  
**उसुआरपुर**-इषुकारपुरं-नगरविशेष । उत० ३७५ ।  
**उसुकारिज्जं**-इषुकारीश-उत्तराययने चतुःशमभयनम् ।  
 उत० ३९३ ।  
**उसुकाल**-उक्कल, उक्कल । नि० चू० दि० ८३आ।  
**उसुमारपध्वय**-पर्वतविशेष । टाणा० ८० ।  
**उसुत्तियल्लयं**-लेण वा कट्टाद सचालेति त गविष उर्यात्  
 यत्थ । नि० चू० प्र० ११६आ ।  
**उसुदसरीरो**-मलपकियसरीरो उमदसरीरो भवति । नि०  
 चू० दि० ६५अ ।  
**उसुमट्टिता**-इदिया पुणो महियाण मह उट्टिज्जति णम् ।  
 नि० चू० वृ० ६४अ ।  
**उसुयार**-इषुकार-नगरविशेष, श्रपभदत्तनाशापत्तिस्थानम् ।  
 विवा० ९५ । इषुकारपुरवृत्ति । उत० ३९५ ।

उसुवारपुरं-दुकारपुरं, कुरुजनपदेनगरं, दुकाराराजधानी ।  
उत्त० ३९५ ।

उसुयारिजं-उत्तरायण्यने चतुर्दशमश्वयनम् । सम० ६४ ।

उसु-दुयुः-शरः । सिद्धिगमने हृष्टान्तः । आव० ४४२ ।  
तिलगो । नि० चू० द्वि० ९५अ ।

उसुयालं-उदुखलम् । आचा० ३९७ ।

उस्ते-उयः-पांशुक्षारः । दश० १७० ।

उस्सओ-उच्छ्रयः भावोन्नतत्वम् । अहिमायाः पथचत्वारिं-  
शतम् नाम । प्रश्न० ९९ ।

उस्सकई-उत्त्वष्कते-तदाकारभावमात्रधारणतन्त्रप्रतिबिम्ब-  
मात्रधारणतो वोत्सपतीत्यर्थः, कृष्णलेखातो हि नीललेखा  
विशुद्धा ततस्त्वदाकारभावं तत्रप्रतिबिम्बमात्रं वा दधाना मती  
मनाद् विशुद्धा भवतीत्युत्सर्पतीति । प्रज्ञा० ३७२ ।

उस्सकण-उत्त्वष्कणं-परतः करणम् । पिण्ड० ९१ ।

उस्सगनिवाइयाण-उत्सर्गपातिनामुत्सर्गणं सयममनुपाले-  
यतां यासाम् । द्य० द्वि० ४२९अ ।

उस्सगो-उत्सर्ग-उपयोगः । ओष० १५५ । परिष्ठापनम् ।  
ओष० १३८ । कोयोत्सर्गः । आव० ७८२ । उवओर्गं,  
काउत्सगो । नि० चू० द्वि० १६४अ । पट्टणकहा । नि०  
चू० प्र० २४०अ । कारणनिरपेक्षं सामान्यस्वरूपम् । चू०  
नृ० ९७आ ।

उस्सणणं-लोभमपरिभोगं उत्सर्णं भणइ । नि० चू० द्वि०  
१५९अ । उत्सर्णं एकान्तेनैव अलक्षणयुक्ता बोद्धि सरिरमित्यर्थः ।  
नि० चू० द्वि० ८५आ । उत्सर्ज-बाहुल्यतः । औप० ८६ ।  
उत्सर्ज-अनुपरतम् । आय० ५९० ।

उस्सणणदोस-उत्सर्जदोषः-अनुपरतं बाहुल्येन प्रवर्तते इति ।  
आय० ५९० ।

उस्सणणपय-उत्सर्जपदे-प्रभूतपदे । द्य० प्र० ९३अ ।

उस्सणणा-अपमन्नाः-पइ द्व निममाः । प्रश्न० ९९ ।

उस्सणणो-बहुतरगुणावराही । नि० चू० द्वि० ९०आ ।

उस्सणहसणिह्वा-उत्तरप्रमाणापेक्षया उद्-प्राबल्येन शृङ्ग-  
शृङ्गिका उत्सर्जशृङ्गिका । जै० प्र० ९४ ।

उस्सणहसणिह्या-व्यायहारिकरपरमाणुद्वयलानां ममु-  
दायाः-द्वयादिमसुदायास्तेषां समितयो-मिलनानि तासां समा-  
यमः-परिणामबशादेदीभवन् मसुदयममितिसमागमस्तेन या  
परिणाममाधेति गम्यते, मा एकाऽस्त्यन्तं शृङ्गा शृङ्गाशृङ्गा

मेव शृङ्गशृङ्गिका उद्-प्राबल्येन शृङ्गशृङ्गिका उत्स-  
र्जशृङ्गिका । भग० २७५ ।

उस्सर्ज-प्रायदाः । आव० ५६८ । अविहृदं । नि० चू० द्वि०  
७०अ ।

उस्सर्जकयाहोरो-प्रायदोऽहुताहारः । आव० ५६८ ।

उस्सर्जिअ-उत्सर्पिता वस्तुसर्पणेन । जं० प्र० १०२ ।

उस्सर्जिणी-सागरोपमाणां दशभेदीश्रेष्ठ एव दुष्पमदुष्पमा-  
शरकक्रमेणैकोत्सर्जिणी । जीवा० ३४५ । उत्सर्पति-वर्षते  
आरकापेक्षया वर्षयति (वा) क्रमेणानुरादीन् भावानित्युत्सर्जिणी ।

जं० प्र० ८९ । उत्सर्जिणी-दशसागरोपमकोटाश्रेष्ठिमाना ।

अनु० १०० । ठाणा० ८६ । उत्सर्पति-वर्द्धतेऽरकापेक्षया

उत्सर्पयति वा भावानानुष्कादीन् वर्द्धयतीति । ठाणा० २७ ।

उत्सस्य-यस्मिंश्च सत्युर्ध्वं ध्रुयति जालादिना दर्पाभातः पुरुष

उत्तानीभवति सः उच्छ्रायः-मानः । सूत्र० १८० ।

उत्सरति-उत्सर्पति । आव० ३०३ ।

उत्सविच्चा-उद्बृहन्नाणि काळणः । दश० चू० ८० ।

उत्सविद्या-सत्यायोरचावचरैर्विधम्भजनैरालापिविधम्भे  
पातयित्वा । सूत्र० १०६ ।

उत्सा-अवशया-त्रेहः । अर्क्यायमेदः । प्रज्ञा० २८ ।

रजन्यां युद्धेहः पतति । आचा० ४० ।

उत्साग-यत्तिविशेषणं क्रियते । उप० मा० मा० ४०० ।

उत्सायिन्दुपिबुगो-अवशयायविन्दुः । आय० ८४५ ।

उत्सारिता-उत्सारिता-यमीपमगता । आय० ८४१ ।

उत्सासनाम-उच्छ्वासनाम-युद्धदयवशादात्मन उच्छ्वासा-  
निःश्वासलविहृषणजायते तत् । उच्छ्वासनिःश्वासयोग्युद्गल-  
प्रहणमोक्षविषया लब्धिरुपजायते तत् । प्रज्ञा० ४७३ ।

उत्सासविसा-उच्छ्वासे विषं देया ते उच्छ्वासाविषाः ।  
प्रज्ञा० ४६ ।

उत्सासा-उच्छ्वासाः-सुरादिना वायुपहणम् । भग० ८७० ।

उत्सासो-उच्छ्वासाः । आव० ८४५ ।

उत्साहो-उत्साहः-ध्रुवणविषये मनस उच्छ्वासाविशेषः । सूर्य०  
२९६ ।

उत्सिंचद्-उत्सर्जप्रति, त्रिप्रति । आव० ६७४ ।

उत्सिंचणा-उद्ग्राहणम् । आय० ४२४ ।

उत्सिंचण-उत्सर्जं सेचनं उत्सर्जनं-वृषादिः कोशादिनीके  
पणम् । आचा० ४२ । हनीं यागम्य प्राबल्येन पूरणम् । आचा०

७४, ३७९ ।

**उद्दिष्टचणाय**-उत्तरोचनेन-अरघट्टघृष्टनिवहादिभिरदचनेन ।

उत्त० ५९९ ।

**उद्दिष्टचमाणे**-उत्तिषन्-आक्षिपन् । आचा० ३४३ ।**उद्दिष्टचिया**-उत्तिमन्थ-अतिश्रुतादुज्ज्वानभयेन ततो वा प्रा  
नायं तीमनावीनि दद्यात् । दस० १७५ ।**उद्दिष्टउद्दिष्टो**-उच्छिद्रतोच्छिद्र । आव० ७७९ ।**उद्दिष्टोदय**-उच्छिद्रतोदक - ऊर्ध्वगदिगमजल । भग०  
७८९ ।**उद्दिष्टा**-उत्तगृह-प्रबलतया सर्वायु दिक्षु प्रवृत्ता । प्रज्ञा० ९९ ।**उद्दिष्टं**-उत्तिषं-अल्पं जलाभिषेचनम् । प्रश्न० १२७ ।**उद्दिष्टश्च**-अशिवश्च-वह्न्युदक्योगेनानापदितविक्रान्तरम् ।

दश० १८५ । उत्तिषश्च-सुशेरकादि । वृ० प्र० २६७ आ ।

**उद्दिष्टय**-उत्तन-प्रत्यासम् । मृत० ४०८ । उच्छिद्रत् उक्तम् ।

सं० २६२ । उत्तता, उच्छिद्रयेवोच्छिद्र-उत्तरोत्तरसयमस्था

नावाप्या तासुच्छितामिव कृत्वा वा । उक्त० ३४१ । उत्तन -

अपगत । ज्ञाता० १०९ ।

**उद्दिष्टयनिसप्रभो**-ऊसृगनिपण । आव० ७७२ ।**उद्दिष्टयपद्भाग**-उच्छिद्रतपताकम् । आव० ७७३ ।**उद्दिष्टयफलिह**-उच्छिद्र स्फुटित्विच स्फुटित्वि-अन्त करण  
यस्य न । ज्ञाता० १०९ ।**उद्दीष्टेत्ता**-उ दी०य । आव० ४२१ ।**उद्दीष्टु**-उद्दीष्टु सा-अविग्रमानशुद्धग्रहणम् । विपा० ६३ ।

उद्दीष्टु सा-सुकलुप्ता । भग० ५४४ । ज्ञाता० ४० ।

**उद्दीष्टु**-उत्सुन । आव० ३०१ ।**उद्दीष्टु**-युगादेवेन । नि० वृ० टि० २३आ । ऊर्ध्वमूत्राकुस्रम्,  
मृदास । आव० ५७१ । आव० ७७८ ।**उद्दीष्टु**-उत्सुन । ज्ञाता० १६१ ।**उद्दीष्टु**-अकाल । नि० वृ० नू० १३६आ । ओष० ९८ ।**उद्दीष्टु**-उत्सुन । आव० ८४३ ।**उद्दीष्टु**-उत्सुनीभूतम् । आव० ८५२ ।**उद्दीष्टु**-नातिका परबलपातार्थमुपरिच्छादितगर्भा वा ।

उत्त० ३११ ।

**उद्दीष्टु**-पिण्डोत्वेदनार्थमुदकम् । आचा० ३४६ । मरहट्टनिगए उद्दीष्टा वीषगा भीमोद्रेणे पुञ्जति, अहया पिष्टम्न  
उद्दीष्टानामस्य दैष्ट्या अ पापिय न । नि० वृ० तु० ६०अ ।**उद्दीष्टु**-उद्दीष्टु पुढविकायनायण आउपायस्य

भरेता मीमा अहदिजति सुहं मे वधेग उद्दीष्टजति, तादे

पिष्टुपयण रोहस्य भरेता ताहे तीमे थालीए जलभरियाए

उपरि उन्निजति ताहे अहोछिद्रेण ते नि ओसिजति हेडाहुण वा

उन्निजति तथ ज आम त उद्दीष्टमाम भणति । नि०

वृ० टि० १२५ अ ।

**उद्दीष्टु**-उद्दीष्टेन निर्गमं उद्दीष्टेन-येन वीथादिपिण्ड मु

राद्यं उद्दीष्टे तत् । ठाणा० १४७ ।

**उद्दीष्टु**-उद्दीष्टु-अद्दीष्टु द्वितीयो मेद । प्रज्ञा० २९९ ।

अनन्ताया सुस्यपरमाणुपुद्गलानामित्यादिभेदोपपद्यते वृदि-

मथन तस्माज्जातं तदं । उद्दीष्टो-नारवादिभरीराणांमुष्यस्य

तस्वरूपनिष्पत्त्यर्थमद्दीष्टुमुक्तेः । अनु० १५६, १६० ।

**उद्दीष्टु**-उद्दीष्ट-उद्दीष्टम् । नम० ११४ । उद्दीष्ट-शिरा

रम् । जीवा० २०४, ३६० । सर्वाप्रम् । जीवा० २०५ ।

उद्दीष्ट-शिराम् । राज० ६२ ।

**उद्दीष्टु**-उद्दीष्टु-उद्दीष्टु-सर्वाप्रपरिच्छिन्ना । जीवा०

३२३ ।

**उद्दीष्टु**-उद्दीष्ट-अयोधवा । व्य० प्र० १६८अ ।**उद्दीष्टु**-पेदिद्यमादिमु आरभितं ओआरति, अथवा वाये

उच्च करेज्जा उच्चिचयउत्पायत तद्दद् गृह्णाति, वाय उद्दी

कृत्वा गृह्णाति उष्णमिय इत्यर्थे । नि० वृ० तु० ५९ अ ।

**उद्दीष्टु**-अपहसति । आर० २१९ ।

(ऊ)

**ऊखा**-ऊष्मी । प्रश्न० १७ ।**ऊर्ण**-ऊर्ण-वर्षादिभिर्ज्ञानम् । मृदोपविशोप । आव० ३७४ ।

मृदु व्यञ्जनाभिलाषावयवैरमपुष्पं वन्दते, हृत्किमेणि

अप्रादिशतिततो दोप । आव० ५४४ ।

**ऊर्णसयभागो**-ऊर्णसतभाग -शतभागोऽपि न पूर्वत

इत्यर्थे । आव० ५२२ ।

**ऊर्णोअरिआ**-ऊर्णोदरस्य भाव ऊर्णोदरता । दश० २७ ।**ऊर्णोरिया**-अथमस्य-ऊर्णोदरस्य करणमयमोदरिका ।

भग० ९२१ ।

**ऊर्ण**-अक्षरपदाभिरेव हीनमृतम् । हेतुप्रान्ताभ्यामेव हीन

मृतम् । अनु० २९१ ।

**ऊर्णरिया** । नि० वृ० प्र० ६१ आ ।**ऊर्णय**-ऊर्णिका । आव० ६२३ ।

ऊरुणिया-ऊरुणिया । आव० ६२३ ।  
 ऊरुणी-अविला । पिण्ड० ७१ ।  
 ऊरु । आचा० ३८ ।  
 ऊरुगं-ऊरु । ओष० १२५ ।  
 ऊरुघंट्टा-जह्वाषण्ड । ज्ञाता० २३९ ।  
 ऊरुयाल-ऊरुदार-ऊरुयो-जह्वायोर्दारी-दारणं ज्ञालो वा  
 ज्ञालन य स । प्रश्न० ५७ ।  
 ऊरुयावल-ऊरुयोरवालन ऊरुवावल । प्रश्न० ५७ ।  
 ऊर्ध्वलोक-सुभलोक । ज० प्र० २४९ ।  
 ऊर्ध्ववेदिका-यत्र जानुनोपरि हस्तौ कृत्वा प्रत्युपेक्षते । वेदि  
 नाया प्रथमभेद । टाणा० ३६२ ।  
 ऊर्ध्वस्थितः । आचा० २५४ ।  
 ऊर्ध्वोपविष्टा । पिण्ड० १०५ ।  
 ऊल्लेऊण-आर्दीकर्तुं, जलेन भेतुम् । विशेष० ६२७ ।  
 ऊस-उभो-यद्गसादूपर क्षेत्रम् । प्रज्ञा० २७ । ऊपरादिक्षेत्रोद्-  
 भवो ल्वणिससम्भिन्नो रजोविशेष । पिण्ड० ८ । क्षारसृ-  
 तिका । उत० ६८९ । ओष-क्षारसृतिका । आचा०  
 ३४२ । अवदयाय । ओष० १३० ।  
 ऊसङ्क-उत्सृज, उच्च । जीवा० २०० ।  
 ऊसदं-उच्छ्रित वर्णादिगुणोपेत । आचा० ३३९ । उत्सृज-  
 ऋद्धिमाकुलम् । दशा० १८६ । वर्णगन्धरसस्पर्शोपपेतम् ।  
 आव० ७०६ । उच्छ्रित वर्णगन्धागुपेतम् । आचा० ३९० ।  
 उत्सृजम् । व्य० द्वि० १८९ अ । उच्च । दशा० चू०  
 ८७ ।  
 ऊसस्त-उत्सक्त-उपरिलम्बन । ज० प्र० ७६ । ऊर्ध्वं मत्त  
 उत्सक्त-उल्लोचतले उपरिसंबद्ध । प्रज्ञा० ७६ । जीवा १६०,  
 २२७ ।  
 ऊसभूमि-विधुविषये भूमि । नि० चू० प्र० १६१ अ ।  
 ऊसरण-उत्सरण-आरोहणम् । विशेष० ५३८ ।  
 ऊसरदेस-ऊपरदेस । आव० ८३९ ।  
 ऊसविष्ट-उत्सर्प्य-ऊमिन्निकऊणोत्थं, ऊर्ध्वोक्थित वा ।  
 भग० ९३ ।  
 ऊसविय-उच्छ्रितानि । भग० ५४१ । उच्छ्रितं-ऊर्ध्वोच्छ्रितम् ।  
 ज्ञाना० १३९ ।  
 ऊसवेह-उच्छ्रुत करोति । भग० १७५ ।  
 ऊसयो-जगत् सामन्तभक्तविमेषो नञ्जइ गो उगयो । नि० चू०

द्वि० १६० अ । जगत् न च उवमाहिज्जति जगो य अलन्विय  
 विभूमितो उज्जगणादिम मित्तादिजगपरिवृत्तो खञ्जनेज्जाटिणा  
 उपललति । नि० चू० वृ० १४ आ । उम्पव-शमोत्पवादि ।  
 आ० १२९ ।

ऊससंति-उच्छ्रवसन्ति-नाशक्रिया कुर्वन्ति । प्रज्ञा० २१९ ।  
 ऊससिन्ध-उच्छ्रवसितं-उच्छ्र-ऊर्ध्वं प्रबल वा ध्वमितम् ।  
 आव० ७७९ ।

ऊससिय-उच्छ्रवसनमुच्छ्रवमितम् । अनक्षरधृतभेद । विशेष०  
 २७४ । उच्छ्रवसिता-उच्छ्रिष्ठा । उत० ४८१ ।

ऊससियरोमकृयो-उच्छ्रवसितरोमकृप-उच्छ्रवसिता रवो  
 च्छ्रवसिता-उच्छ्रिष्ठा रोमकृपा-रोमरन्ध्राणि यस्यासौ । उत०  
 ४८१ ।

ऊसासनीसासे-उच्छ्रवासेन युक्तो नि श्याम उच्छ्रवामनि  
 श्यास-प्राण । जै० प्र० ९० ।

ऊसासपद्-उच्छ्रवामपद, प्रज्ञापनाया मत्तमं पदम् ।  
 भग० १९ ।

ऊसासा-यावद्भि समथै पादो वृत्तस्य नीयते तावत्तम  
 मया उच्छ्रवासा । टाणा० ३९३ । उच्छ्रवासा । प्रज्ञा०  
 २४६ । सट्स्थेया आवलिका उच्छ्रवासा । जीवा० ३४४ ।  
 प्रज्ञापनाया सत्तम पदम् । प्रज्ञा० ६ । सट्स्थेया आवलिका  
 उच्छ्रवाम-अन्तर्मुखा पवन । जै० प्र० ९० ।

ऊसासेहि-उच्छ्रवासाय-मारय । आव० ८१९

ऊसिअ-उच्छ्रितानि-लम्बमानानि । ज० प्र० ५० । प्रबल-  
 तया सर्वासु दिक्षु प्रसृता उत्सृता । ज० प्र० ५३ । जीवा०  
 १७५ । उच्छ्रितं-उत्सृजम् । न० प्र० ५२२ ।

ऊसिअ-उच्छ्रितं-लम्बमानम् । जीवा० ३६१ ।

ऊसिओदयं-उच्छ्रित-ऊर्ध्वं उदय-आयामो यत्र गमने तद्दु-  
 निष्ठतोदयं, ऊर्ध्वं तात्रमित्यर्थं । भग० १८७ ।

ऊसिता-उच्छ्रिता-प्रबलतया सर्वासु दिक्षु प्रसृता । जीवा०  
 ३७९ । सर्वं २६३ ।

ऊसितोद्ग-उच्छ्रितोद्ग-उच्छ्रितमुद्ग यस्मिन् ग ।  
 जीवा० ३२१ ।

ऊसित्तो-उपसिक्त, अपरयोपरादनगामर्शविरल, निर्धन ।  
 वृ० वृ० ९७आ । णो नस्म अवर्ध उपपञ्चति तिष्ठीभो गो ।  
 नि० चू० द्वि० ३१अ ।



**जसिय**-उच्छ्रित-ऊर्ध्वीकृतम् । अण० ५५१ । उच्छ्रितः-  
ऊर्ध्वीकृतः, उरगतो वा-अपगतः । राज० १२३ । उच्छ्रित-ऊर्ध्व  
नीतम् । ज्ञाता० १९ । उर्युता-प्रवृत्तया रावीमु दिक्षु  
प्रमुता । सम० १३९ । उर्युतः-ऊर्ध्वीकृतः । जीवा० २५९  
उर्युतः । आव० ७०२ । उर्युत-लम्बमानम् । धीवा० २०५ ।  
उच्छ्रितम्-उन्नतम् । ऊर्ध्वीकृत, अपगतः, अपनीतः । अण०  
११५ । मंरी ४६ । उच्छ्रुत-ऊर्ध्वीम् । अण० १८७ ।

**जसियपङ्कानं**-उच्छ्रितपताकम् । आव० ३०० ।

**जसियफलद्व**-उच्छ्रितरक्षिकाः-उच्छ्रितसुन्नतं रक्षिकमिव  
रक्षिकं चित्तं येषां ते । मीमीन्द्रप्रवचनावाप्या परिदृष्टमानता  
इत्यर्थः । उच्छ्रितः-अर्गलास्थानादपनीयोर्ध्वीकृतो न तिर-  
धीनः कपाटस्थाङ्गाणादपनीत इत्यर्थः परिधः-अर्गला येषां ते  
उच्छ्रितपरिधाः, उच्छ्रित-गृहद्वारादपगतः परिधो येषां ते  
उच्छ्रितपरिधाः । अण० १३५ । उच्छ्रित रक्षारक्षिकम् रक्षा-  
दिक-अन्न-करणं यस्य सः । राज० १२३ ।

**जसिरं**-जीवाप्रवस्थानमित्यर्थः । नि० सू० द्वि० ६० भा ।

**जसीसयं**-उर्ध्वीकृतम् । आव० १२४ ।

**जसूरं**-वेलातिक्रमः । ओष० १६२ ।

**जसूरयो**-उत्सृज् । आव० १०३ ।

**जह**-सम्भक्त्यदायैविशेषास्तिता-यवनाय ऊदरतर्क-एषमं  
वैतस्यात् । आचा० २३० ।

**जहा**-बुद्धिः । दश० १२९ । औषमात्रसज्ञा । वितो २८१ ।  
स्वतर्कबुद्धिः । आव० ३२६ । स्ववितर्कप्रियका । उण०  
१८१ ।

**जहिय**-ऊहित-ज्ञातः । आव० ७२१ ।

अ

**अक्षा**-अच्छा । जीवा० २८ ।

**अक्षुप्रहृष्टे**-मन्वमजिन्यतीना विमेषणम् । आव० ७९ ।

**अक्षुप्रकञ्जदत्थे** । आव० ७९ ।

**अक्षुधेप्रिप्रतिपद्य**-यो भवोपवाहिकर्मजालं अपयिन्वाऽम्भु  
मादपत्या गिद्धवतीतः । आव० ४४१ ।

**अक्षुस्त्र**-गाधप्रतापानामभिधानपरिज्ञानम् । तस्या०  
१-३५ ।

**अक्षुषी**-अस्यामेकं दिशमभिएणोपाधवाइ निर्गतः प्रास्तेनैव  
पथा समथेगिभ्यवधिनस्यवक्षुषी भिक्षा परिग्रमन् तावत् ।

यामि वाक्पश्चौ चरमष्टदं, ततो मिशामश्रुक्तेवापवर्तने-  
ऽपि प्रास्तेनैव गथा प्रतिविकर्तने सा क्षुषी । सू० प्र०  
२५७ भा ।

**अक्षुषी**-पापम् । प्रथ० ७ ।

**अक्षुषी**-अक्षुष-कर्म तदज्ञा । भाष० ५९५ ।

**अक्षुषी**-दुर्ग, कीदृशम् । टाणा० १८८ । दु.सम् । भाष०  
५८४ । कीदृशः । अण० ५६० । दु.पवर्णमापणी ।  
उण० ६०९ ।

**अक्षुषदायप्रहृष्ट**-अप्रहृष्ट द्वितीयो नेदः । अण० २३ ।

**अक्षुषमास**-कर्ममामः, न त्रिजिद्वयप्रमासः । सू० प्र०  
१८६ भा ।

**अक्षुषसंपरसट**-साधनसंवासरः । टाणा० ३४५ ।

**अक्षुषा**-मन्यारिभिर्भुङ्क्षुपगता । ज्ञाता० ११ ।

**अक्षुषमः**-प्रयनतीर्थकः । ज्ञाता० १२५ ।

**अक्षुषममङ्गलप्रथिमक्ति**-एवाद्दतो माश्रयिषि । जीवा०  
२४६ ।

**अक्षुषमदृश**-संज्ञालक्षणेप्रमादप्रयिषेयः । भाष० १०८ ।

**अक्षुषमस्यामी**-प्रयनतीर्थकः । अण० द्वि० २ भा ।

**अक्षुषिते**-नोपगतं नीतः । अण० द्वि० २२४ भा ।

**अक्षुषियादिका**-अक्षुषीमेद्विधेयः । प्रजा० ७० ।

वृ

**वृती**-आगच्छती । सू० द्वि० ११७ भा ।

**वृत्तो**-आगच्छत । भाष० ८७० ।

**वृत्तयो**-आगच्छत । भाष० ११६ ।

**वृ**-वाक्यालेखनं । अणु० १७६ । अलहारे । अण० १०५ ।

**वृ**-वाक्यालहारे । अण० ८७० । आमन्त्रणार्थः, अलहारा-  
शोडश । अण० ३३१ ।

**वृत्तु**-जातवन्तोऽनुभूतवन्तः । अण० ७७६ ।

**वृत्तना**-अनेन । सू० द्वि० ११७ भा ।

**वृत्त**-दयनी । आव० ५१३ ।

**वृत्तका**-आयवर्णवर्णः । टाणा० ३८७ ।

**वृत्तवृत्त**-अप्रहोहनिन्दोदयः । सम० १३५ ।

**वृत्तवृत्तवाले**-एकस्वो विरिष्ये नदानीं वाक्पश्चोक्तौ नत्त-  
नम् । सू० प्र० २१५ ।

एकतोषक्रद्विधातोषक्रएकतश्चक्रवालद्विधातश्चक्रया  
 'लचक्राद्वैचक्रयालाभिनथात्मक -धनुर्था नाट्यविधि ।  
 जीवा० २४६ । ज० प्र० ४१५ ।  
 एकतोषक्र-एततोषक्र नाम मठानां एकस्या दिशि धनुर्वा  
 मारक्षेण्या नर्तनम् । ज० प्र० ४१५ ।  
 एकतोषेदिका एक जानु बाहोरन्तरे कृतेति । ठाणा०  
 ३६२ ।  
 एकत्तद्यियक्तं-एकत्ववितर्कम् । भाव० ३२७ । -  
 एकत्ववितर्कमविव्यारं - शूक्रभ्यानद्वितीयभेद । भाव०  
 ६०३ ।  
 एकधार्-शालविशेष । दशा० २०१ ।  
 एकभधिक-तन एरिमन् भवे तस्मिन्नेवातिकान्ते भावी ।  
 एकभधिक-योऽन्तर एव भवे इन्द्रतयोः प्रसृत इति । ठाणा०  
 १०३ ।  
 एकभार्थ-एकवचनम् । उक्त० ५८० ।  
 एकमुखं । ओष० ९९ ।  
 एकल्लुओ-एकाकी । भाव० ३०६ ।  
 एकल्लुआदिक-एकवचक । ओष० ४३ ।  
 एकविहारप्रतिमा-पद्मभौ प्रतिमा । सम० ९६ ।  
 एकस्वीकृतं-न एकस्वमनेकरव अनेकस्वमेकस्वमिव कृत  
 मेकरस्वीकृतम् । भावा० ६३ ।  
 एका-एरा-अष्टा सन्नाशश्चत्वाव सर्वादित्वम् । ज० प्र०  
 १३१ ।  
 एषाए-एक । व्य० डि० ४१७ अ ।  
 एका त-एक एषाहमिलन्तो-निधय । उक्त० ३०७ ।  
 एकान्तरः-अन्तरसमय । भाव० १४ ।  
 एकान्तवित्-एकान्तेन विदितघमरस्वभावतया मौनीन्द्र  
 भव शासन तस्थ नाम्यदिशेवं वेतोति । सूत्र० २६५ ।  
 एकायतन - एक-अद्वितीय आयतन-ज्ञानादिनयम् ।  
 भावा० २०७ ।  
 एकापलि.-भूयगविधिविशेष । जीवा० २६८ ।  
 एकापली-विविधमणिकृता एतस्वरिका । ज० प्र० १०५ ।  
 विविधमणिका । ज्ञाता० ४३ । कनकावल्याभिनयोर्व्यर्थ ।  
 औष० ३० ।  
 एकाशीतिपद्वास्तुन्यासः । ज० प्र० २०८ ।  
 एकिका-प्रवचनम् । भावा० ४०९ ।

एकई-एकीकृत्य-योगपथेन । ओष० १११ ।  
 एकगमा-एकगमा -तुल्योभिलाषा । ठाणा० ५८ ।  
 एकगमे-एकगम -पद्भ्योऽप्यन्तेऽप्य एव घाठ । अन्त० ४ ।  
 एकठे-पर्वगविशेष । प्रज्ञा० ३३ ।  
 एकमुहा-जेति एरुओ ऋत्वाय मूहा ते एकतोमूहा । नि०  
 चू० प्र० १६१ अ ।  
 एकल्लुओ-एकाकी । भाव० १९३ ।  
 एकचारिआ । ओष० ९७ ।  
 एकस्तंकलितवद्धा-एकशृङ्खलावद्धा । भाव० ६३ ।  
 एकसर-सहैव । भाव० ३६७ ।  
 एकस्ति-एकश । भाव० ८१३ ।  
 एकसेल-एकशैल -वक्षस्कारपर्वत । ज० प्र० ३४५ ।  
 एकानिया-एकानिनी । भाव० ५६० ।  
 एकारसी-एकादशी तिथि । ज्ञाता० १५३ ।  
 एकानिजा-अनन्तविशेष । नि० चू० प्र० ३०४ अ ।  
 एगमिओ घघातिमाघघानिमो एगमिओ भवति । नि० चू०  
 द्वि० ७९ अ ।  
 एगमियं-एकारिकं तज्जातदक्षिकं सदसिकाकम्बलीखण्ट  
 निष्पादितम् । ओष० २१४ । य एकेन फलकादिना कृत ।  
 चू० चू० १६२ अ । एकारिक-तज्जातदक्षिकं न या हयादि  
 लब्धनिष्पन्नम् । चू० द्वि० २२९ अ ।  
 एगंत-एकान्त-विजनम् । ज्ञाता० ८८ । नियम । उक्त०  
 २४१ । ए -अद्वितीय , कर्मगामन्तो यस्मिन्किति, मोक्ष ।  
 उक्त० ३०७ । एकनिधय । भग० २९० । एका त-  
 अनुपघातक स्थानम् । दशा० १५६ । निधय । उक्त०  
 ५८७ । इतरव्यातप्रपरिहाराम्बम् । उक्त० ६२२ । मोक्ष ।  
 दशा० १६५ । विजनम् । भाव० ३२३ । योजनमण्डला  
 दन्त्यत्र । ज० प्र० ३८८ ।  
 एगंतचारिया-एकान्तचर्या-द्रव्यज्ञेनकालभावेध्वस्यप्रदता ।  
 दशा० १५१ ।  
 एगंतदिष्टी-एगन्तरहि - एकोऽन्तो-निधयो यस्या सा  
 तथा, सा चार्तो रति , अनन्यास्तिहा । उक्त० ५५७ । एग  
 न्तरहि -एगन्तेन तस्वेषु-जीवादिषु पदार्थेषु रतिर्ह्यस्यामी ।  
 सूत्र० २३४ । एकोऽन्तो-निधयो यस्या सा एकावता सा  
 रति -बुद्धिर्भस्मिन् एगन्तरहिः । ज्ञाता० ५१ । एगन्त-मा

दामेवेदं मयेत्येवमेव निधया दृष्टिर्यस्य सः । ज्ञाता० ८० ।  
 एकान्तेन निधया जीवादितस्त्वेव दृष्टिः-सम्पद्यदर्शनं यस्य  
 स एकान्तदृष्टिः-निष्प्रकम्पमयकम्पः । सूत्र० १६१ ।

**पंगतद्विष्टीप**-एरोऽन्तो-निधयो यस्यः सा एकान्ता सा  
 दृष्टिः-बुद्धिधरिभिर्भिन्नैश्च प्रवचने-चारित्र्यपालने प्रति तदेकान्त-  
 दृष्टिकम् । एकान्ता-एकनिधया दृष्टिः-दृक् यस्य स एकान्त-  
 दृष्टिकः । ज्ञाता० ५१ ।

**पंगतधारा**-एकप्रान्ते-वस्तुभागेऽपहृतव्यलक्षणे धारा-परो-  
 पताप्रधानश्रुतिलक्षणा यस्य स एकधारा । ज्ञाता० ८० ।  
 एकान्तधारा-तीक्ष्णधारा । उक्त० ३२७ । एकान्तो-एकवि-  
 भागाश्रया धारा यस्य सा एकान्तधारा । ज्ञाता० ५१ ।

**पंगतपंडिप**-एकान्तपण्डितः-साधुः । भग० ९१ ।

**पंगतवाल**-एकान्तवालः-निध्यादृष्टिः अविरोतो वा । भग०  
 ९० ।

**पंगतमेत**-एक इत्येवमन्तो-निधयः यत्रागावेकान्त एक  
 इत्यर्थः अतस्त्वमन्तं भूभागम् । भग० २९० ।

**पंगतमोणेण**-एकान्तमीनेन-संघमेन करणभूतेन । सूत्र० २३९ ।

**पंगतूर**-एकान्तरोऽन्ततरसमयः । तद्वि० २०९ । एतन्तर-  
 एकेन चतुर्थलक्षणेन तपसाऽन्तरे-ध्यवधानं गरिमस्तन्  
 उक्त० ७०६ ।

**पग**-एकः-असहायो रागद्वेषादिगहभाषविरहितो गीतमादि-  
 लिख्यः । उक्त० २४१ । तथाविधतीर्थररनामकर्मोदयादनु-  
 त्ताराणांविभूतिरद्वितीयः, तीर्थकरः । पातिकर्मनादित्यरहितः ।  
 उक्त० २४१ । एकत्र । ओप० ३३ । अनहायः । ठाणा० ३५ ।

तत्र प्रदेशार्थतया अवच्छयात्प्रदेशोऽपि जीवो ह्यव्याप्यतया एकः,  
 अथवा प्रतिक्षयं पूर्वैश्वभावक्षयापरवर्षणोपादायोगेनानन्त-  
 मेरोऽपि कालत्रयानुगामिवैतन्यमात्रापेक्षया एकः, अथवा  
 प्रतिस्तनानं वैतन्यभेदेनानन्तत्वेऽप्यत्यन्तानं संप्रहृत  
 याश्रितसामान्यरूपापेक्षयैरुक्तम् इति । सम० ५ ।

मोक्षोऽशेषमलकलरुद्विधात् संयमो वा रागद्वेषरहितत्वम् ।  
 आचा० २१२ । पूर्वैश्वर्यः उक्तोत्तरकल्पः, आचाः, पूर्व-  
 वानातो वा । प्रस्ता० २६५ । धर्ममहायविप्रमुक्तः अन्त्या-  
 वानातो वा । दर्शनं १८८ । उद्रेकावस्थावर्तिनेकेन  
 गारुडिद्विधो वा ।

गुणेन स्वर्गाख्येनोपलक्षितः इति एकः-वायुः । आचा० ७५ ।  
 एकान्ति, अंतहायः । ठाणा० १९० । आन्तरध्यवकतत्तामादि-  
 सहायविकोमान् अद्वितीयः तथाविधपदालादिमहायविक्रान् ।

ज्ञाता० ३४ । सदतः । ज्ञाता० ५७ । एकः-रागद्वेषरहित-  
 तथा ओजाः, यद्विचारिगुणं संसारचक्रवाले पर्यवन्नमुमान्  
 स्वरुनमुपद्रु गफलभाक्त्वेनैकस्यैव परलोकागमनतया सदैक्यं  
 एव भवति । सूत्र० २६५ । समानः । राज० ४९ । मोक्षः  
 संयमो वा । सूत्र० २३५ ।

**पगइओ**-एकदा कदाचिद् एकत्रो वा । आना० ३३० ।

**पगइया**-एककाः, एके केचनेत्यर्थः । भग० ३९ ।

**पगइयाणं**-एकेषां, न तु सर्वेषाम् । भग० १२९ ।

**पगइओ**-एकः कश्चिदेकस्मिन् वा । आचां० ३३० ।

**पगउ**-एकस्मिन् देशे । ज्ञाता० । ९३ ।

**पगओ**-एकनः । ज्ञाता० ७० । एकः स एव एककः, एके  
 वा प्रतिमाप्रतिपत्त्यादौ मन्त्रतीत्येकम् । एकं वा कर्मेसाहि-  
 ल्यविगमतो मोक्षं मन्त्रति-तरशासियोगानुष्ठानप्रवृत्तयोर्नीत्ये-  
 कः । उक्त० १०८ ।

**पगओखहा**-एकस्यां दिश्यद्गुशाकारा । ठाणा० ४०७ । यथा  
 जीवः पुद्गलो वा नाञ्चा वामपार्श्वेऽस्तां प्रविष्टंस्तस्यैव  
 गत्वा पुनस्तद्वामपार्श्वोदावुत्पद्यते सा एकनःसा, एकस्यां  
 दिशि वामादिपार्श्वलक्षणायां सस्य-आकाशस्य लोकैनासी  
 ध्यतिरिक्तलक्षणस्य भावविति । भग० ८६६ ।

**पगओजण्णोवइयकिच्चग** । भग० १९० ।

**पगओवका**-एकन-एकस्यां दिशि बद्धा-वना मुक्तौवका ।  
 भग० ८६६ ।

**पगओवसा**-द्वीन्द्रियजीवविशेषाः । प्रस्ता० ४११ ।

**पगखम्भ**-एकसम्भ-एक-सम्भो यस्मिन् स-प्रसादः ।  
 दस० ४१ ।

**पगवुर**-प्रतिपदेकः सुतो वेदा ते एकसुता-अप्रायसः ।  
 जीवा० ३८ । प्रतिपदेक सुतो-शरो वेदा ते एकसुता-  
 अप्रायसः । प्रस्ता० ४१ । ए. सुतो-चरये वेदानुभववर्ष-  
 दिशोऽग्नेते वेदा ते एकसुता-हयादव । उक्त० ६९९ ।

**पगवय**-पगविकि-तत्रम् । द्य० द्वि० ८१ भा ।

**पगगुण**-पगगुणः एकेन गुणो-गुणने-ताडने यस्य सं-एक-  
 गुणः । ठाणा० ३५ ।

**पगगुणकाल**-ए. -उर्वत्रपगो गुण-अंशस्तेन कालः  
 परमात्मादिरेद्रगुणकालः-सर्वत्रपगुणः । भनु० १११ ।

**पगग**-पगसम्भ-एकसम्भरसाध्यापिततो भावः पगार्थ-  
 ध्यानम् । उक्त० ६३१ ।

**पद्मगच्छित** - एकाप्रविता - एकाप्रलंबनः । दश० ५७ ।  
**पद्मगच्छितो** - एकाप्रमनाः - अवहितचित्तः । उता० ५९९ ।  
**पद्मगच्छित** - एकप्रहणेन - एकशब्देन । भग० १४५ ।  
**पद्मगच्छितगहिया** - एकप्रहणगह्रीता - एकप्रहणेन - एकशब्देन -  
 पर्नास्तिकाय इत्येवंलक्षणो यद्गीता ये ते तथा, एकश-  
 ष्वाभिषेया इत्यर्थः । भग० १४५ ।  
**पद्मचरा** - एकचरा - एकाकिनः । आचा० ३०८ ।  
**पद्मचक्रवृ** - अतिशयवधुतज्ञानदिवाङ्मनितो विवक्षित इति  
 एकचक्रुः, चक्षुरिन्द्रियापेक्षया । एकं चक्षुरस्येति । ठाण०  
 १७३ ।  
**पद्मचक्रवृ विणिहय** - एकचक्षुर्विनिहत - एकं चक्षुर्वि-  
 निहतं यस्य सः । प्रश्न० २५ ।  
**पद्मचरिया** - एकचर्या - एकाकिविहारप्रतिमाऽभ्युपगमः ।  
 आचा० २४३ ।  
**पद्मचरोर** - एकचौरः - य एकाकी सन् हरति सः । प्रश्न० ४६ ।  
**पद्मचरा** - एकाचर्या - अद्वितीयपूज्याः संयमानुष्ठाने वा अमरुशी  
 अर्वा - शरीरं येषां ते एकाचर्याः । उता० २५ ।  
**पद्मच्छत्र** - एकच्छत्रा एकं छत्रं - नृपतिचिह्नमस्माभिमिति, अवि-  
 धमानद्वितीयवृषतिः । उता० ४४८ ।  
**पद्मजंबू** - उल्लुक्तरी वैश्वविशेषः । भग० ७०५ ।  
**पद्मजडी** - एकजडी - एकाशीतितमो प्रहः । उ० प्र० ५३५ ।  
 ष्यशीतितमो प्रहः । ठाण० ७९ ।  
**पद्मजं** - एकजम् - एकनकगतया सप्रभार्यः । आचा० ३३० ।  
**पद्मज्** - एकजम् - एकजम् । आच० ७१० । एकार्थ - अतन्व  
 विषयं एकप्रयोजनं वा । भग० १७ ।  
**पद्मजाममुहुत्सेहि** - मुहुर्त्तं वपटिभागाभ्याम् । सूर्य० १२ ।  
**पद्मजाम्** - एकजाम् - यथा अङ्गोपाङ्गत्वापितं तेन तथाव-  
 न्धितेनैव समुद्रदृश्यम् । आच० ८५३ ।  
**पद्मजि** - एकजिर्गं । नि० च० प्र० ५६ आ ।  
**पद्मजिभाषुओ** - एकधासावर्षध - अभिषेयो जीवादिः स  
 येषामल त एकाधिक - द्वाव्वास्मैरनुयोगालक्षणमित्यर्थः ।  
 ठाण० ४८१ ।  
**पद्मजि** - एकधासावर्षध - अभिषेयः एकार्थं स यस्यान्ति स  
 एकार्थिषः, एकार्थवाचक इत्यर्थः । ठाण० ४९२ ।  
**पद्मजिभाषुओ** - सुहृत्तं वपटिभागाभ्याम् । सूर्य० १२ ।

**पद्मजिभाषुओ** - एकवपटिभागान् । सूर्य० २५ ।  
**पद्मजिया** - एकमस्यिकं फलमध्ये येषां ते । भग० ८०४ ।  
 एकमस्यिकं - फलमध्ये भोजं येषां ते एवादिपकाः । भग०  
 ३६४ । एकास्थिका - नौः । विपा० ८० । ज्ञाता० ३२७ ।  
 फलं फलं प्रति एकमस्यिकं येषां ते एकास्थिकाः । प्रज्ञा० ३१ ।  
**पद्मजाम्** - एकस्थानम् । आच० ८५३ । एकः सहाटकः ।  
 ओष० ९९ ।  
**पद्मजाम्** - एकनाशा पश्चिमचक्रवास्तव्या पद्ममी दिक्-  
 मारीमहापरिका । जं० प्र० ३९१ ।  
**पद्मजाम्** - एकनासनपरिमहेण । सय० ७३ ।  
**पद्मजाम्** - एकना - काथन । जीवा० १९८ ।  
**पद्मतो** - एकतः - एकस्मिन् स्थाने । सय० प्र० १७४ अ ।  
**पद्मतोनिहसहस्रं** - एकतो - रक्ष्य एकस्मिन् पार्श्वे यो  
 नितरां सहते शक्यपृष्ठे वा समारोपितं भारनिति निषधो-  
 बलोवर्द्धस्तस्मैव निरपितं - संस्थानं अस्याः सा एकतोनिषध-  
 कोर्यता । सूर्य० ७१ ।  
**पद्मतोर्वका** - एकतोर्वका एकस्यां दिशि वर्का । ठाण० ४०७ ।  
**पद्मतोवसा** - एकतोवर्ता - द्वीन्द्रियतीव्रविशेषः । जीवा० ३११ ।  
**पद्मतोवेति** - एगलीया । नि० च० प्र० १२७ अ ।  
**पद्मत** - एकता, यैकता - निरालम्बनत्वम् । भग० ९२४ ।  
 एकत्वं - अमेद । ठाण० १९१ ।  
**पद्मतवियक्ते** - एकत्वेन - अमेदे - शपादादिपयोषाणामन्यतमै-  
 कार्थावाल्गव्यनतवैलभो वितर्क - पूर्ववत्प्रतापयो व्यसन-  
 हपोऽर्थरूपो वा यस्य तदेकत्ववितर्कम् । ठाण० १९१ ।  
**पद्मत्कीकरण** - एकत्वकरणं - एकाम्बुविधानम् । ज्ञाता० ८६ ।  
**पद्मत्था** - एकार्था - एकं च ते अपाभिमिति एकार्थाः, एकैषा-  
 न्ति न सर्वेषां निमित्तानां वक्तुमशक्यत्वात् । जीवाद्वा ।  
 नम० ११३ ।  
**पद्मत्ति** - एकया दिशा पूर्वतरलक्षणया । ज्ञाता० ४५ ।  
**पद्मत्तुवारा** - एकद्वारा - एकप्रवेशनिर्गममार्गा । ज्ञाता० १३८ ।  
**पद्मत्तु** - एकवर्षि - बद्धलक्ष । प्रश्न० १५८ ।  
**पद्मत्तुच्छेय** - मर्वथा जत् - प्रायत्वेन छेदे - विनाश एका-  
 न्नोच्छेद - निरन्वयो नाश इत्यर्थः । दश० ४० ।  
**पद्मत्तुव** - एकपक्ष, एकः पक्षो ब्राह्मणलक्षणो यस्य तद् ।  
 उता० ३६० ।

**एगपकम्बी**-एरुपक्षि - एकरावन, एककुलवर्ती । व्य० प्र०

२१० अ । एरुपक्षि अर्धपुत्र । व्य० प्र० २१३ अ ।

गुरुश्रुता श्रुता गुरुगुरुश्रुतपत्नी समानकृत्य समानधुतो वा ।

ब० नृ० १३६ आ ।

**एगपस्त्री**-एकपत्नी । भाव० १० ।

**एगपयेलोमाहं**-एगपदेवावगाहम्-जीवापेभया कम्पद्वया

पेभया च ये एके प्रदेमास्तेष्ववगाहम् । भग० २३ ।

**एगभयिय**-एकभयि - नोआगमत प्रत्ययस्य प्रथम

प्रकार, य एकेन भयैतानन्तरं द्विमेप्रपस्थते । न्य० १० ।

**एगभायणो**-समपंचि । नि० चू० नृ० ६० अ ।

**एगभाय**-एगो भाव -मासास्त्रिभयविपर्ययात् स्वाभाविक

सुवस्वणो यस्यासावेकभाव । भग० ६४० । मध्यम्यना ।

आय० ११३ ।

**एगभूर**-एकभूत एक एव-आत्मोपम । टाणा० २१ । एकत्व

प्रस । भग० ६४० ।

**एगमद्वे**-एगमद्वय नाम शस्त्र निवेदाय सर्वसि दिक्षु विदिक्षु

य नाम्नि मोक्षयन्तो प्राप्नो नगरं वा नोमिदंमद्वये ।

भ्य० टि० -१६ अ ।

**एगमणा**-एक दणतान्तशकत जीवाजीवविभक्त्यादयगतत्वेन मन

चित येषां ते एकमनस -धृद्धानवन्त । उता ६०१ ।

**एगमणो**-एगमना एकामचिता । आय० ७४० ।

**एगमना** एगम् एकत्र प्रस्तुते वस्तुन्यभिनिविष्टेन मनो

वस्थानी एगमना । न्य० ५९९ ।

**एगमेग**-एगम् । स्य० २३ ।

**एगयओ**-एक एगकस्ययथा । भग० १०४ । एकत्वं

एगभय, सयुज्येवथ । भग० ७७६ । एकत्वं टाणा०

३१४ ।

**एगयद** - एकत्वं, अन्वयतम् । आय० ३३ । एकत्वं

अनुकूल । आचा० ४०२ ।

**एगरादियाग**-डादनी एगराजमावति । ज्ञान० ३३ ।

**एगरादया**-एगरात्रिक -अपान्तगले वनाम लज गाकुलायी

प्रतुगारागदिलामेडसि प्रतिबन्धमवुयैता इरणमन्तरेग भर्तक

गजमव वस्तन्थ नाधरुमि यरुपैणाभिप्रक्ष्य । व्य० प्र०

१३० आ । एगरात्रिका । उता ५३१ । आय० २१२ ।

**एगराद्याभिकमुपडिमा** - रात्रिणाणा डादनी मिच्छर

विमा । मम० ११ ।

**एगराई**-एगरात्रिणी । भाव० ६१८ ।

**एगराय** एग रात्रियेत्र तत्र एगरात्र । एग रात्रि यावत्

तत । उता ११० ।

**एगल्लेभिष** य एग प्रधान त्रिग्यमात्मना लभते युक्तानि

दोषाम्वाचार्यस्य समर्थयति, न एकलाभेन चरणीय एव

लभित । व्य० प्र० २३२ भा ।

**एगल्लु**-एगल्लिन । टाणा० ६१० ।

**एगल्लुविहार**-एगल्लिविहार । अ ३० ३६५ ।

**एगल्लुद**-एगल्लुद एककी । व्य० प्र० २०१ अ ।

**एगल्लुद**-एगमेगत्मान परश्रवगामिन वैतीति एगल्लु, न

मे एगल्लु दु गयन्तिनाणसगी महायोऽग्नी गेमेरुवित् । एग-

न्तदिद् वा एग भ्नेन रिगिनमगारस्वभाउतया मीनीन्तमेव

प्रायन न य नाग्यति येर वृत्तित्पिफानवित्, एग मोक्ष

मयमा वा त वैतीति । मृत्त० ५६० ।

**एगल्लिह** एकत्रय । त्रिसे० ३९६ ।

**एगल्लिविहाणा** एकन विधना प्रकारेण चक्राल्लभ

णत विज्ञान स्वरूपस्य जग्य यथा त एकविधविधाना ।

भग० २८० ।

**एगसरा** - एगल्लिह एगसरा एग । नि० चू० प्र० २०६ आ ।

एग सन्तीश पयात्तणी क्यामित्तीण एगसरा या इज्जति ।

नि० चू० प्र० १७३ आ ।

**एगसाडियउत्तरासगकरण** एग शास्त्रा यगिनमन्तथा,

तत्र एगसरासगकरण एव उत्तरियस्य स्वागविधाय । ज्ञान०

४ ।

**एगसाल्य** एकशास्त्रम् । ज्ञान० २६९ ।

**एगसिन्ध** एगसिन्धु यरुमेव एकत्र मुयगते तत । त्त०

६६ ।

**एगसिल्लुडे** एकरीत्युत्त एगसिन्धुवभस्कारद्वयाम । न०

प्र० ३६७ ।

**एगसिल्ले** । ज्ञान० ४६० ।

**एगसिल्ले** । एगसिन्धु भातकामण्यपिमापंश्वमन्दुपर्वतस्ये

स्वनामन्यात वभस्कारपर्वते । टाणा० ८० । एकरीत्ये वभू

द्राण-यमन्तुपर्वतमयापंश्वे स्वनामन्यात वभस्कारपर्वते ।

टाणा० ८०६ ।

एगसा एग-अडिनीया । अ ३० ६१० ।

पद्मगारो-एकाकारः एकस्वरूपः । जीवा १४३ ।

पद्मगानिसमुद्दिशगा-वे न मण्डल्युपजीविनः । ओष० ८७ ।

पद्मगिओ-एकाक्षी । आष० ५५८ ।

पद्मगणुष्वेहा-एकस्य-एकक्रियो असहायस्यायुप्रेक्षा-भावना  
एकासुप्रेक्षा । ठाणा० १९० ।

पद्मगभिमुहा-एकं भगवन्तं अभिमुखं येषां ते एकामि-  
मुखाः । ज्ञाता० ४५ ।

पद्मगभोगो-एगो योगो भणति । नि० चू० प्र० ४७ अ ।

पद्मगोस्रा-त्रिभिर्गुणैर्भिवर्गं यद्गृह्येत्तन्मं तदेकस्यै  
गुणैति सा, मन्वे गृह्येत्वा हस्ताभ्यां वल्लं पृथक् त्रिभाग-  
वशेषं यावन्नयति द्वाभ्यां वा पार्श्वोभ्यां यावद् प्रहणा ।  
ओष० ११० । एकामर्शनं एकामर्शा । उत० ५४१ ।

पद्मगाय-एकविनः । सूत्र० १८० ।

पद्मगालंभी-एकलामी-यः प्रधानः शिष्यः तमेकं यो न  
ददाति भवशेषांस्तु सर्वानपि प्रवृत्तितान् गुरुणां प्रयच्छति ।  
येषामेक एव सामो-यथा यदि भक्तं लभन्ते ततो बहूना-  
दीनि न, यथा कस्यादीनि लभन्ते तर्हि न भक्तमपि,  
एकमेव लभन्ते इत्येवंगीता एकलामिनः । व्य० प्र०  
२३२ आ ।

पद्मगवलि-तपविशेषः । आषा० ४२३ । एकगवली-नानामणिक-  
मयी माला । क्षीप० ५५ । विचित्रमणिका । ज्ञाता० ४३ ।  
विचित्रमणिकमयी । भग० ४७७ ।

पद्मगवलिस्तिष्ठते-एकवक्रिसरितः-भनुराभातक्षत्रसंस्थानम् ।  
सूत्रं १३० ।

पद्मगवली-एकवलिष्ठा-जपन्ययुष्मापञ्चदश्यातकसमयानां मनु-  
दायः । जीवा० ३४४ । विचित्रमणिकमयी । भग० ४५९ ।

पद्मगावाती-एकवाती-तत्रैक एवाग्न्यादिरर्थं इत्येवं वदतीति ।  
ठाणा० ४२५ ।

पद्मगसर्ष-एकसर्षं नाम सङ्गुणपरिपुतावाक्येन भोजनम् ।  
आष० ८५३ ।

पद्मगहं-पद्मगहं एकमहर्षावत् । जीवा० १०९ । दिने दिने गवा-  
नोदयति, एकान्तवर्ति वा । सू० सू० १४२ आ । पद्मगहं-अभ-  
वताप्यम् । व्य० द्वि० ३०६ अ ।

पद्मगहृषे-एका हृषा-हनने-प्रहारो यत्र जीविन्यव्यपरोपयो  
नदेतादह्यम् । भग० ३०३ । एका एव आदत्या-आदनं

प्रहारो यत्र भस्मीकरणे तदेकाहह्यम् । भग० ६७० ।  
एकं भारतं, एकेन घातेनेति भावः । राज० १३४ ।

पद्मगहृजातगा-एकहृजाता एकदिशमोक्षपाताः । आष० ११६ ।

पद्मगहृगारिगा-एस्मिन् सप्त्यातरं पिण्डादायधिकृतशेषे-  
नालोचिते एव यानि शेषशेषसमुत्थितानि प्रायश्चित्तानि तानि  
एकाधिकारिकाणि, एकाधिकारे भवानि एकाधिकारिकाणि ।  
व्य० प्र० ३० अ ।

पद्मगहृय-एवन्विशेषः । भग० १९७ ।

पद्मगुह्या-एगोहृकः-अन्तरहीपविशेषः । जीवा० १४४ ।

पद्मगुह्या । ठाणा० २२५ ।

पद्मगुरुयदीवे-अन्तरहीरे प्रथमः । ठाणा० २०५ ।

पद्मगमर्ष-एके भवार । ज्ञाता० ११० ।

पद्मगोद्वर्ग-एकोदकं, सर्वोत्तमोदकलावितम् । जीवा० ३२६ ।

पद्मगुह्या-अन्तरहीपविशेषः । प्रज्ञा० ५० ।

पद्मगिरेण-इयता । ओष० ६५ ।

पद्मग एजनीति एजः-चायुः कल्पनशीलत्वात् । आषा० ७५ ।

पद्मगजत-आधानन्तागच्छन्तम् । उत० २५८ । आधानन्तम् ।  
आष० ३८७ ।

पद्मग-एयान्तं-समापच्छेताम् । सू० सू० १४१ अ ।

पद्मगमार्ण-इयत्, आगच्छत् । जं० प्र० २३३ । प्रत्यागच्छत् ।  
जाना० १३२ । एज्यमानं-कर्मयमानम् । जीवा० १८१ ।

पद्मग-आगच्छेत् । सू० द्वि० १८७ अ ।

पद्मगारुढो-एडकारुडः । आर्ष० ४१७ ।

पद्मगि-एडयन्ति-अपत्यन्ति । जं० प्र० ३८८ ।

पद्मगि-छर्षति, तीरे प्रक्षिपति । जं० प्र० २३० ।

पद्मगि-अपनयति । भग० ६९५ ।

पद्मगि-छर्षति । ज्ञाना० ६९ ।

पद्मगि स्नायुः । प्रश्न० ८० । हरिणी । जं० प्र० ११० ।

पद्मगि २७० । एष्य-स्नायवः । जं० प्र० ११० ।

पद्मगीयारा-एगी-हरिणी मृगप्रहणार्थं चारयन्ति-प्रापयन्ति  
ने ते । प्रश्न० १४ ।

पद्मगजग-गोनात्परापरमित्यन्वयम् । भग० ९७४ ।

पद्मग-एनम्-एकम् । प्रश्न० १९ ।

पद्मगहृ-एर्ष-पुद्गलनाथपरापरपरिणामलक्षणार्थम् । ज्ञाना०  
१७७ ।

पक्षेध-एतदेवमित्यर्थ । भग० ४५५ ।  
 पक्षाहो-अधुना । भाव० ३१९ ।  
 पक्षिभो-एतावत् । भाष० ४२० ।  
 पक्षिल्लयं-एतावत् । भाव० ५५५ ।  
 पक्षियपरिक्लेशो-ईश्वरपीडाया । भाव० ८२६ ।  
 पक्षो-एतु । उक्त० १४२ । इत - अदिकडेतरादिगन्धात्  
 गङ्गायान । ज्ञाता० १३० ।  
 पक्ष्य-अन, इह । दश० १९९ ।  
 पक्ष्य - अशोकवर्षादपक्ष्य यदधोऽग्र्येव सवन्धनीय ।  
 ज्ञाता० ६ ।  
 पक्षोद्यरथ-अरिमुत्सयमे भगवद्बन्ध वि वा उर-तामीत्येन  
 रत व्यवहित । भाचा० १६२ ।  
 पक्षो-एतावत् । भाष० ३४१ ।  
 पक्षे एव अनेन प्रकारेण एते-वेऽधिकृता प्रत्यक्षेण वा  
 परिश्रमन्तो हसन्ते । दश० ६८ ।  
 पक्षे-एतावत्, एतावत्प्रमाणम् । त्वयं ११३ ।  
 पक्षर्त-एवमान, कम्पमानम् । ठाणा० ३८५ ।  
 पक्ष्यता-आगच्छत् । भाव० २९१ ।  
 पक्ष्य एते कम्पते । भग० १८३ ।  
 पक्ष्यकम्पे-एतद्व्यापार एतदेव वा कम्प-कमनीय नश्य  
 म । विभा० ४० ।  
 पक्ष्यगो-एतावत् - आकषित । भाव० ७७३ ।  
 पक्ष्यगुहेसप - पञ्चगोहेसक - भगवतीम्पनस्य पञ्चमगतकस्य  
 गणतमोदेन । भग० २४६ ।  
 पक्ष्यविज्ञे-पूर्व विद्या-विज्ञान यस्य स एतद्विद्य । विभा०  
 ४० ।  
 पक्ष्यसामायारो - एतन्नामाचार - एतज्जीनक्य । विभा०  
 ४० ।  
 पक्ष्यारूच - एतदेव - वेद्यमार्गम् । भग० ३२२ । एतद्वत्  
 एतदेव रूप-स्वरूप यस्य स । ज० प्र० ३२३ ।  
 पक्ष्यायति पक्ष्यायन् । भाचा० २३ ।  
 पक्ष्य-हडकित । श्रु० द्वि० ११३ अ । एतद्विशेषे । प्रश्ना० ३३ ।  
 पक्ष्य - भाचा० १९५ ।  
 पक्ष्यद्वय दृढद्वयित । श्रु० द्वि० १०६ आ ।  
 पक्ष्यकटुसमिद्धिया - पक्ष्यकटुका-पक्ष्यकटुकायुक्तया ।  
 आता० ७६ ।

पक्ष्यवीषाण-उत्क्रियामे । प्रश्ना० २६६ ।  
 पक्ष्यमिजिया-पक्ष्यमिका-एतत्प्रमाणम् । भग० २९० ।  
 पक्ष्यग-पक्ष्य-गुन्द्रा भद्रसुप्तक ह्यर्थे । श्रु० प्र० २०२ अ ।  
 पक्ष्यय-रिषत - सैन्यविशेषे । ठाणा० ६८ । रिषत ।  
 सूर्य० ३२ । रिषत - कर्मभूमिविशेषे । प्रश्ना० ७५ ।  
 पक्ष्यतीणदी-नदीविशेषे । नि० पू० द्वि० ७९ अ ।  
 पक्ष्यय-रिषत - दासगज । प्रश्ना० १२५ । इन्द्रहरीत् ।  
 ठाणा० ३०२ । भाष० ३५९ । गुन्द्राविशेषे । प्रश्ना० ३९ ।  
 पक्ष्ययद्दी-द्रव्यविशेषे । ठाणा० ३२१ ।  
 पक्ष्यती-नदीविशेषे । ठाणा० ४०७ । कुपात्रानगर्वा गर्मले  
 नदी । श्रु० तृ० १६१ आ ।  
 पक्ष्यय - रिषत - उपाचार्यवर्गिनभरतकेयप्रतिष्ठापकस्यवि  
 शेषे । ज० प्र० ३३० ।  
 पक्ष्य - अविशेषे । भग० ८०२ ।  
 पक्ष्य एतक - उग्र । प्रश्ना० ३७ ।  
 पक्ष्य - ऊरुगज । अनु० १२९ ।  
 पक्ष्यकच्छं-पक्ष्यार्थ - योग्यकच्छेऽश्विनीयधानश्राने पुरं,  
 यत्पूर्वं दशार्णपुरं नाम नगरमार्गान्, यत्र गजाभयदाभिष  
 पर्वतस्तत् । भाव० ६६८ ।  
 पक्ष्यगच्छा - गजकाक्ष - कायोपय दृष्टान्त । भाव० ८०० ।  
 पक्ष्यार्थ - प्राप्तविशेषे । उक्त० ८७ ।  
 पक्ष्यगमूओ - भाषमाग एतक इव प्रमुषते एतकगुण ।  
 भाव० ६२८ ।  
 पक्ष्यग - एतक द्विचरचतुष्पदविशेषे । जीवा० ३८ ।  
 पक्ष्यते एतक - और्गर्क । प्रश्ना० २९३ ।  
 पक्ष्यभय - एतक्युक्त - अत्राभाषानुकारित्वम् । दश० १९० ।  
 पक्ष्यभो - एतक्युते भासद् एतयो जहा बुधुद्वयनि एवं तत्र  
 मूओ भाषान् । नि० पू० द्वि० ३६ आ ।  
 पक्ष्य - एतक ऊरुगजम् । उक्त० ७७३ ।  
 पक्ष्यवालु - विर्मन्विशेषम् । प्रश्ना० ३७ ।  
 पक्ष्य - एतकविशेषे । ज० प्र० ३५ । जीवा० १३६, १९९ ।  
 पक्ष्यपाडल - एतापाडल - पाडलविशेषे । ज्ञाता० ३३१ ।  
 पक्ष्यपुडाय - गन्धर्वविशेषे । ज्ञाता० ३३० ।  
 पक्ष्यारस - एतक्यय - मुष्णिपत्तविशेषम् । प्रश्ना० १६३ ।  
 पक्ष्यालुकी - पक्ष्यारसोपे । भाचा० ७५ ।

एलायञ्चसगोत्त-इलापतेरपय एलापय, एगपयेन सह गोत्रेण वर्तते य स एलापयसगोत्र । नदी ८९ ।

एलायञ्चा-गोत्रविशेष । टाणा० ३९० । एत्रपत्या-रात्रे वृत्तीयं नाम । मूयं० १४३ ।

एलावालुमी-वर्णविशेष । प्रजा० ३२ ।

एलासमुग्रय-एलासमुग्रम् । जीवा० २३४ ।

एलिका-नृपप्रतिधियो जीवविशेष । आचा० १५ ।

एलिफखं-देशोऽभिहितार्थाभिज्ञ । उत० २८२ ।

एलिया-एटका । भाव० ८५४ ।

एलिसय-उग्दा एताइसम् । वृ० द्वि० २८७ अ ।

एलुप-एलुर-देहली । १० प्र० ४८ ।

एलुकारालुङ्क-तिडम् । दस० १८० ।

एलुक-उम्पर, देहली । वृ० प्र० २५७ आ ।

एलुग-देहली । आचा० १२२ ।

एलुगा-एलुका-देहस्थ । रात्र० ६१ । जीवा० २०१ ३०० ।

एत्र-एत्र प्रकारचतस्रस्र । दस० १३६ । प्रकारवा चक्र । भाष० ५ । उग्रमार्थे । उत० २२४ । प्रकारथ । प्रजा० २०१ । इत्यकृत्वाय । ज्ञाता० १३३ ।

एत्र भाया एत्रमात्मा-एत्रस्य । नदी २१२ ।

एत्रं चतुर्षु - पूर्वार्धविन्दु-द्वैतुत्तल्लुत्तुत्तुत्तु क्षेत्रविशेषेण । चतुर्विधस्य पयाय । न० प्र० ३१२ ।

एव भागा - एवभागानि-वैयमाणप्रकारभागानि । मूयं० १०४ ।

एवभूतो-एवभूत, यथाभूतो मय विशेषयति । भाव० २८४ । य एवमेतरेष्वेते चणकियादिक प्रकारस्वमेव भूतोऽस्य अतिरथाऽशिते एवमेतरेष्वेते नामिद क्रियां कुर्यात्तु एवभूतम् । अमु० २६६ ।

एवभूत-एवमिति तथामुन माया पटादिस्था नाशये र्देवमन्युगममय एवभूतो मय । टाणा० १०३ । अद नयस्य मूर्त्तया मद । उत० ७३ । य एवमेतरेष्वेते पटादि यादिक प्रकारस्वमिदमर्थैव वरुणोऽ-युगमात्तवै भूत - एव एवभूत । अमु० २६६ । यथ नयस्य एते एवभा भूत मय एवभूतयथा भूतोऽस्य त एवभा एवभूत । टाणा० ३०० ।

एवभूय एवमेव नयस्य मेव । मय० १३८ । एवभूत- मयवित्तम् । प्रजा० ३२३ ।

एवंमहालियं-इतिमहतीम् । ज्ञाता० ६२ ।

एवंमहालिया-एवावन्ति महान्ति । जीवा० ३९९ ।

एव - एवकार-कर्मप्रदर्शनार्थं । भाव० १० । समुच्चये ।

टाणा० ५०४ । एव-अवधारणे भिन्नकर्मथ । उत०

२९४ । इति गाय लङ्कारमात्रे । विभे० १३८० । पूर्णार्थे ।

भाव० ११० । एवम्-अनन्तरोत्तरकारेण । उत० २८० ।

कर्मण्यमन्तिनादनर्थं । ओष० २ । एवकार-परिमाणे ।

प्रजा० १९० । एवत्तद-अविशङ्क्यार्थं । मय० प्र० २१३ आ ।

एवत्तु-एवावत् । भाव० ४३० ।

एवमेव - एवमेवेतत् बहुवचि प्रतिपादिते तत्तथैवैतत् । ज्ञाता० ४७ ।

एवमेव-विश्वरूपमणिशब्दादिबन्धेव । उत० ४०९ ।

एवमेव-उपनयवचनमिति । ज्ञाता० ९६ ।

एव एव-एवमेवो-गर्भेणम् । उत० ५१४ ।

एवणायामसमित्ति-विशतिसमममाभिधानम् । प्रजा० १४४ ।

एवणासमिति-धर्मसाधनानामाध्वस्य रोदुगमोपादनं एवणेवप्रभवम् । तत्रा० ९-५ ।

एवणीय-प्रायुम् । भग० १११ ।

एवयति-प्रयति, प्रयाचयति । विश० ४१८ ।

एवणा एवणा-अभिलाष । वि०ट० २ । एवमेवो-गर्भेणो ते करोतीति चिह्न तत् स्त्रील्लेख भावे युष्टि एवणा । उत० १४ । एवणा स्यमावविश्वामिदं एवणा । टाणा० १०९ । अतिशयिण्येण । भाव० २६६ । गर्भेण । प्रजा० १०८ । अनुत्त० ३ । विश्वामिदं । भग० २०४ ।

एवणासमिद-एवणा-गर्भेणामिदं सहादिसंज्ञाया तस्यां समिति एवणासमिति, गोत्रगतैव मुनिना मय युयुत्सवत नवक शिशुमुष्टं मयम् । भाव० ६१६ ।

एवणाऽसमिद-एवणाऽसमित, काश्चिदर्थं न वरिहरति । विशतिसमममाभिधानम् । भाव० ९० ।

एवणासमिति - मुन्युत्सवत एवणासमिदं मय युयुत्सवत नवक शिशुमुष्टं । वि० वृ० प्र० १७ अ ।

एवणाऽसमिते-भावात् न वरिहरति । विशतिसमममाभिधानम् । मय० ३७३ ।

एवणसिद्ध एवण-गर्भे षते युयुत्सव शिशु एवणासमिदं सिद्धं एवणासमिदं-एवणम् । टाणा० १०८, ३१३ । एवण-शिशुमुष्टं । मय० ३७३ ।



एसणोवघाते-एषणया तस्रोपेन्द्रशभि द्वात्रिंशदिति तस्यो  
 पवत् -अस्त्वयता । ठाण० ३०० ।  
 एसि-एषणीय-उद्भृत् । णिण्ड० १०८ ।  
 एषिआ गोत्र । आषा० ३३३ ।  
 एसिजा-एषयेत्-पर्ययतिउरया कुर्वात् । उत० ४६ ।  
 एसिये-एषणीय-आधारमार्गानेपरहितम् । आषा० ३३१ ।  
 एषणीय-गणेषणाविशुद्धया गणवितम् । भग० २९३ ।  
 एसिया-गणितु शीलमेवानिति एषिका-मृगदुष्पना हरित  
 तापनाश्च मामहेनोर्मुयान् हस्तिनश्च एषन्ति, ये चान्ने पाल  
 णिड का नावाविधेरुवायैर्भक्ष्यमेपन्तान्यानि वा विषययाध  
 नानि ते । सूत्र० १७७ ।  
 एषु-एष्याम । ओष० ७० ।  
 एषुहुम-एतावसुम् । प्रशा० ६०१ । जीवा० ३७५ ।  
 एसे-एष्यति-आगमिष्यति । णिण्ड० १६७ ।  
 एस्सा-एष्या-भविष्यन्त । आष० ६८७ ।  
 एस्सुहुमो-एतसुम् । औष० १०३ ।  
 एहता-एष्यन्त-अनुभवन्त । उष० २४६ ।  
 एहति-एष्यते-प्रार्थेति । उत० ३३४ ।  
 एहा-एषा-समिधोयकभिरग्नि प्रज्वालयेत् । उत० ३०२ ।  
 एषा-समिध, काष्ठानि । आषा० ३०९ ।  
 एहामो-एष्याम । ओष० ६५ ।  
 एहि-अथोकात्कि । इवानीम् । नि० चू० टि० १०९ अ ।  
 एहिअगुणा-एदिकगुणा-इहलोकगुणा अक्षयामादय ।  
 ओष० १९ ।  
 एहिइ-एष्यति । उषा० ४० ।  
 ऐ  
 ऐर्यापथिक-केवलयोगप्रत्यय कर्मवचन । प्रथ० १४३ ।  
 ऐरावणापद्मम् । ठाणा० ४९९ ।  
 ऐरावती-शिलागिणि वर्गपरे इयम कृत् । ठाणा० ७२ ।  
 ऐरावतीया-आप्रियेण । जीवा० ६० ।  
 ओ  
 ओअ-आज मालमाडरम्भम् । औष० ३३ ।  
 ओअस्त्री-आजस्त्री-आत्मना वीरथिक । ज० प्र० २१९ ।  
 ओअट्टण-उद्गतम् । गाढतत्सुदुर्गतयति । वृ० लु० ७१ अ ।  
 ओअधिअ-परिक्रमिषुम् । ज० प्र० ५५ ।  
 ओअधिआ-आगेपिनानि । ज० प्र० २९० ।

ओअवेदि-साधय अस्मदाहाप्रवर्तनेनास्मद्विद्यान् कुट्ट । ज० प्र०  
 ११८ ।  
 ओआलित्तं-द्रवितम् । आष० ३५० ।  
 ओइधर-उत्तारयति । पठ० ३४-१५ ।  
 ओइणोसुं-उत्तिण्णु-अवनीर्गणु विवन्त्सपिण्हिणु नये  
 निधत् प्रयाति । आष० ३२ ।  
 ओए-ओज-तैजसम् । सूत्र० ३४३ । एक-अमहाय  
 । सूत्र० १०८ । निपम, प्रथमतृतीयपञ्चमसमा । णिण्ड० १६९ ।  
 एके रागादिविह्वलान् । आषा० २५६ । एकोऽशेषमलकलङ्का  
 इवति । आषा० २३१ ।  
 ओओ-ओज-आरोहान्क्रियुक्ता । वृ० प्र० ३०९ आ ।  
 ओकच्छिद्य । ओष० ३०९ ।  
 ओकसर्ण-पकनस्यो परिहस्तसम् । वृ० लु० २२९ अ ।  
 ओकुरडो-उत्तुह-उष्णातानगर्वा चोपांतर उपाष्याय  
 विक्षेप । आष० ४६५ ।  
 ओगसण-नाशनम् । महाप्र० ।  
 ओगाढ-अवदीर्णा अत्रगाढा वा प्रत्येमाताम् । ठाण० ३९९ ।  
 आत्मश्लेष्ने सह एकश्लेष्णस्योपि अयगाढम् । प्रशा० ७०२ ।  
 भग० २१ । शेलीभाय गत । भग० ८३ । अर्द्धभूत । नि० चू०  
 प्र० ३२४ अ । मायुत्तयामभीभूत । ठाणा० १९० ।  
 ओगाढरुइ-अगाढनमवगाढ-द्वादशाहावगाहो विस्तारा  
 णिमस्तेन हचि, अथवा ओगाढ-साधुप्रयासभीभूतस्तेस्य  
 साधुपदेशाद् रचिरयगाहकचि । मग० ९२६ ।  
 ओगाढरुती-अयगाहनमवगाढ-द्वादशमावगाहो विस्त-  
 राधिगम इति सम्भाव्यते तेन हचि, अथवा ओगाढत्त-  
 साधुपदेशामभीभूतस्तेस्य साधुपदेश इति । ठाण० १९० ।  
 ओगाढा-अविष । शशा० १३७ ।  
 ओमालीफलर्ग-आर्षक(प्रयक)पत्नीनामावया समागन  
 चकषुष्टादिश्रम । वृ० टि० १०७ आ ।  
 ओमास-पडिहमगास्तेमा । नि० चू० प्र० ८३ अ । अत्र  
 काश-स्थानम् । आष० ५३५ । मां । आष० ६७८ ।  
 ओमाहती-अवगाहन्ती-आगच्छन्ती । आष० ३३२ ।  
 ओमाहणगा-ययस्य द्रव्यस्याधस्तादवगाढ सन्वगाहनाप्रम् ।  
 आषा० ३१८ ।  
 ओमाहणनामनिहत्ताउप- अवगाहननामनिघण्टाय-  
 अवगाहते यस्या जीव साऽवगाहना-शरीरमोक्षिकादि  
 तस्य-नाम औशरिकशरीरनामवन् तेन मह निघण्टाय  
 । प्रशा० २९० ।

ओगाहणवर्गणाओ-अवगाहना एतेभ्यः भाषाद्वयस्या  
 धारभूता अमहत्त्वेयप्रदेशात्मकक्षेत्रविभागरूपारतागामवगा  
 हनाना वर्गणा-समुदाया अवगाहनवर्गणा । प्रज्ञा० २६१ ।  
 ओगाहणसंडाण-प्रतापनायामेकविंशतितमपदम् । भग० ३९९  
 ४९५, ८४२ । अवगाहनस्थानम् । प्रज्ञापनाया ऋक्विंशतितम  
 पदम् । प्रज्ञा० ६ ।  
 ओगाहणसेगियापरिक्रम्ये परिक्रम चतुर्थादि । भग० १२८ ।  
 ओगाहणा-अवगाहना-तनु, तदाधारभूतं वा क्षेत्रम् ।  
 भग० ७१ । नियतपरिमाणक्षेत्राद्यमाहिरवम् । भग० २३६ ।  
 पङ्कतीवनिकायाना पादसङ्घट्टनम् । पिण्ड० १६१ । अव-  
 गाहन्तेऽस्वामवस्थावामिति अवगाहना-स्वावस्थैव । आध०  
 ४४४ । प्रज्ञा० १०८ । अवग्रहण-परि-उद्य । प्रज्ञा० ३०९  
 अवगाहन्ते क्षेत्र यस्या स्थिता जन्तव साऽवगाहना-तनुमि-  
 ल्यर्थे । नदी ९१ । अवगाहते यस्या जीव सा अवगाहना  
 शरीर औदारिकादि । प्रज्ञा० २१८ । ज्ञाता० २५० ।  
 ओगाहिर्म-आग्निं जे क्षिण्य षाणा पयतिते चलवलेति,  
 तेज ते चलवले ओगाहिर्म भणति । नि० चू० प्र० १९७ अ ।  
 ओगाहिर्मगं-पञ्चाक्षम् । बृ० प्र० ३१२ आ । अवगाहिर्म  
 । आध० ८५४ ।  
 ओगाहिर्मतो-अवगाहक । उक्त० १९८ ।  
 ओगाहिमाह-अवगाहिमादि-पञ्चाक्षमण्डकप्रभृति ।  
 पिण्ड० १५२ ।  
 ओगाहे-आगच्छति । आध० १०४ । अवगाह -शरीरोच्छ्रय ।  
 प्रज्ञा० १८१ ।  
 ओगाहेज्ञा-अवगाहंत-आशयेत । भग० २३३ ।  
 ओगाहेत्ता-प्रविश्य । सू० ८८ ।  
 ओगाहो-पतद्ग्रह । बृ० द्वि० २५० आ ।  
 ओगिञ्छय-अवशुभ-अशिय । आचा० ४०३ ।  
 ओगिपहृषयाते-अवग्रहणतायैमनोविपश्चकारणाय ।  
 टाणा० ४४१ ।  
 ओगुद्धि-निना, निन्दाम् । पठ० ५६-१५ ।  
 ओगुद्धिया-मत्रदिधेदिहा । बृ० प्र० २७८ आ ।  
 ओगोपहृषया-अवशुभतेऽनेनति अवग्रहण, करणेऽनट्, प्रथम  
 ममयप्रविपश्च-दादिपुद्गगादानपारिणम, तत्प्रभावोऽवग्रहणता ।  
 नदी १७४ ।

ओगाह-अवधारण अवग्रह । आध० ३४१ ।  
 ओघ-ओघिक, अष्टभक्तमप्रष्टात्रितितो भाषोपसर्ग । सू० ७७८  
 ओघ-सामान्यम् । आध० २५८, ४५८, ४८० । रिशो०  
 ८४२ ४५० ।  
 ओघजीवितं नारकावकेशेपितायुर्भव्यमान सामान्य जीवितम्  
 टाणा० ७ ।  
 ओघनिष्पन्नः-ओघ-सामान्यमभ्यनदिर्भ्रुताभिधान तेन  
 निष्पन्न । अनु० २९१ । सामान्यशास्त्रनिष्पन्न । आध० ५८ ।  
 ओघनिष्पन्ननिक्षेपः । उणा० ६ ।  
 ओघरूपा-सामाचार्यविशेष । उक्त० ५४७ ।  
 ओघसामाचारी-सामाचार्या प्रथममेद । व्य० प्र० १९ आ ।  
 ओघनिसुक्ति । आध० ११ ।  
 ओघसामाचार्युपक्रमकाल-सामाचार्युपक्रमकालस्य  
 प्रथमो मेद । आध० ११ ।  
 ओघस्तरा । ज० प्र० ४०७ ।  
 ओघा-गन्तुवा निगिह्यमाणा । व्य० प्र० १३० अ ।  
 ओघादिञ्ज-उत्पाद्यते-वाच त्रियते । आध० ६९७ ।  
 ओघादिसेण-सामान्यत । भग० ८२३ ।  
 ओघाययण-आघायतनानि यानि प्रवाहते एव पूज्य  
 स्थानानि तडागजलप्रवेशोपमाया वा । आवा० ४११ ।  
 ओघारि-अपचारि-वीषनरभान्यसोष्णकारविशेष । अनु० १५१  
 ओघिया-अगोरिता । जीवा० १९९ ।  
 ओचूल-अवचूला-प्रलम्बमुच्छा । ज० प्र० २६५ । प्रलम्ब  
 मान्युठ । औप० ७० । भग० ४८० । ज० प्र० ५३० ।  
 ओचूलग-अवचूलर-अपोमुखावत, मुकलावतम् ।  
 ज० प्र० २४७ ।  
 ओच्छगं-वहन, आलिखनम् । आध० ६८२ ।  
 ओच्छयपरिच्छन्न-अवच्छयपरिच्छन्न - अन्ततमाच्छा  
 न्ति । वीवा० १८८ ।  
 ओच्छयिय-अवच्छादितम् । ज्ञाता० २८ ।  
 ओच्छाहय-आच्छादित-निरद्ध । प्रथ० १३४ । अवच्छा  
 दित । ज्ञाता० २८ ।  
 ओच्छाहिओ-उत्साहित-उत्साहित । पिण्ड० १३४ ।  
 ओज-ओज-उत्तम् । प्रथ० ११६ । आहारादि । भग० २० ।

ओषध्पिंडितो-अवधदपिण्डिकः । उक्त० २१५ ।  
 ओयारं-अवद्वारम् । भाष० ३४९ ।  
 ओयोलेंड-उद्बुद्धयितुम् । भाष० १९५ ।  
 ओभाषणा-उवहावणा-परिभवः । ओष० १३१ । अण-  
 भाषना-लाषणम् । चू० प्र० २५९ अ ।  
 ओभासंति-अवभासयन्ति-सप्रकाशा भवन्ति । भग० ३२७ ।  
 अवभासयन्ति । सूर्य० ६३ ।  
 ओभासंते-अवभासयन् । ईपदुद्द्योतयन् । जं० प्र० ४६१ ।  
 ओभास-अवभासः-प्रभा । ज्ञाता० ४ । अवभासः, प्रभा-  
 विनिर्गमः । प्रज्ञा० ८० । प्रतिभाविनिर्गमः । जीवा० १०७ ।  
 पद्मपठितमो प्रहः । जं० प्र० ५३५ । सतपथिनमो महामह-  
 विशेपः । टाणा० ७९ ।  
 ओभासद्-अवभासते । आभिर्भवति, प्राप्यते इति ।  
 सूत्र० २१४ । अवभासयति-प्रकाशयति । सूर्य० ६ ।  
 ओभासणता । नि० चू० प्र० २४५ अ ।  
 ओभासिज्ज-अवभाषते-दातारं याचेत् । आचा० ३४० ।  
 ओभासिजा-अवभाषते-याचेत् । आचा० ३५१ ।  
 ओभासितं-अवभाषितं-याचितं याचनं वा । वृ० द्वि० १४२ अ ।  
 ओभासी-अवभासने-प्रतिभाति, अवभाषते-याचत इत्येवं-  
 शीलोऽवभासी । टाणा० २०७ ।  
 ओभासेई-अवभासयति-ईपदुद्काशयति । भग० ७८ ।  
 ओभुग्ग-अवभुग्नं-वक्रम् । ज्ञाता० १३८ ।  
 ओमंघ-पायमवाङ्मुखम् । वृ० प्र० १०७ अ ।  
 ओमंघिये-अधोमुखीकृतम् । विपा० ४९ । निरय० ६ ।  
 तासा० २२ । अणदुसुखम् । वृ० वृ० ११८ अ । टाणा० २११ ।  
 ओम-पालः । ओष० १५१ । लघुपयसिः । ओष० १८५ ।  
 अवं-दुर्मिक्षम् । ओष० ११, १८, ६३ । पिण्ड० ७५ । आव०  
 ५३६ । न्यूनम् । आव० १३० । दुर्मिक्षम् । नि० चू० प्र०  
 १८३ अ । नि० चू० प्र० ५४ आ । अवमानि-असाराणि ।  
 उक्त० ३५९ । अवमारिनकः । वृ० द्वि० १९ अ । दुर्मिक्षम् ।  
 वृ० प्र० १९८ आ । अवमं-हीनम् । आचा० १६४ । उर्ण ।  
 दश० चू० १६२ । ऊनम् । उक्त० ६०४ । अवमा-न्यूनता ।  
 उक्त० ५३७ । पयसिलघुः । ओष० १५० । अवमम् ।  
 न्यूनम् । दश० २७२ ।

ओमचरभो-ओमति-अवमसुरलक्षणत्वाद्वमीदार्यं चरन्-  
 आसेवते अवमचरकः-न्यूनत्वानेचकः । उक्त० ६०६ ।  
 ओमचेलेपि-अवमचेलिकः, अमारवक्रधारी । आचा० ३९७ ।  
 ओमच्छगारयहरणं-उन्मस्तकरजोहरणम् । आव० ६३८ ।  
 ओमजायणं-अवमजायनं, पुण्यगोत्रविशेषः । जं० प्र० ५०० ।  
 ओमत्तं-अवमत्तं-ऊनता । भग० ७४२ । अवमता-हीन-  
 त्वम् । प्रज्ञा० ३०३ ।  
 ओमतिथि-अ-उद्घाटनरतकः, प्रच्छन्न इति । ओष० १५ ।  
 ओमतिथिय-ओमतिथतः, अधोमुखीकृतः । ओष० १४३ ।  
 ओमद्विया-उन्मद्विका-चहुमर्दनकारिका । भग० ५४८ ।  
 ओमया-पराजयः, पथाप्रचनम् । वृ० द्वि० ७१ अ ।  
 ओमरत्तं-अहोरात्रम् । ओष० ११६ । अवमा-हीना  
 रात्रिरवमरात्रो-दिनक्षयः । टाणा० ३६९ ।  
 ओमराइणिओ-अवमारिनिकः । ओष० १५० ।  
 ओमराइणिय-अवमारिनिकः । भाष० ७९३ ।  
 ओमरायणिको-अवमारिनिकः । वीष० १९२ ।  
 ओमार्ण-प्रवेतः । उक्त० ५५२ । अवमानम् । वृ० चू० १९० अ ।  
 सवसिद्य । नि० चू० प्र० २०५ आ । अवमानानि-क्षेत्रादीनां  
 प्रमाणानि हस्तादीनि । टाणा० ८६ । अवमानं-स्वपक्षपरपक्ष-  
 प्राभुल्यं स्त्रीकावहुमानादि । दश० २८० ।  
 ओमानं-अवमानं-अवमम् । वृ० प्र० २९० आ ।  
 ओमुयं-उत्सुकम् । ओष० ११२ ।  
 ओमोअं-अवमोचकः, आभरणम् । जं० प्र० १८८ । अत-  
 सुच्यते-परिधीयते यस्मोऽवमोचकः-आभरणम् । जं० प्र० १८८ ।  
 ओमोअर-अवमं-न्यूनसुदरं-अउमरत्तयासावकमोदररत्तयाव-  
 अवमोदर्यं-न्यूनोदरता । उक्त० ६०४ । अत्पाहाराद्ययम् ।  
 उक्त० ६०४ ।  
 ओमोदरिता-दुग्धिवक्त्रं । नि० चू० प्र० ७५ अ ।  
 ओमोदरिप-अवमोदरिका, प्रमंघमिणारमेदाद् च । अवमोद-  
 रिकः-साधुः । भग० २९३ ।  
 ओमोयं-अवमुच्यते-परिधीयते यः मोऽवमोच-आभरणम्  
 । भग० ५४३ ।  
 ओमोयरण-अवमं च तदुदरं चावमोदरं तरमाहरोल्लंघं  
 णिच त्रुडि चावमोदरं, अवमोदरकरणम् । उक्त० ६०४ ।

ओमोरिय-अथमौदर्य-बुद्धिभ्रम । आध० ६२६ । अथम-  
मूनमुदरं-जठरमन्वाभावमौदरस्तदभाष अवमौदर्य-न्यू-  
मौदरता । उक्त० ६०४ ।

ओमोरिया-अथम ऊनमुदरं-जठरं अथमौदरं तस्य करण  
मवमौदरिता । टाण० ३६४ । अथम-ऊनमुदरं-जठरं  
यस्य स, अथम चौदरं अथमौदरं तद्भावोऽवमौदरता, अथ  
मौदरस्य वा करणमवमौदरिका । टाण० १४८ ।

ओमिमालिणी-ओमिमालिनी-नदीविशेष । जै० प्र० ३५७ ।  
ओय-रसम् । (त०)

ओयंसी-ओजस्विन-मानसावप्रभयुक्ता । भग० १२६ ।  
ओज-मानसोऽप्रभुभस्त्वह्ना धो जस्वी । राज० ११८ ।  
निरय० २ । शाता० ७ । ओजस्विन-मानसबलोपतत्वात्  
। सम० ११६ ।

ओय-ओज-आहारग्रहणे प्रथमो भेद । टाण० ९३ । ओज-  
-आर्तवम् । टाण० १५४ । ओज-प्रकाश । सूर्य० ७ ।  
विषय । सूर्य० १५६ । उपनिषदेषु आहारयोग्यवृद्धस्तमृदुषु  
प्रजा० ५१० ।

ओयद्-पद्मलि । विश० ३७४ ।  
ओयर्ण-ओदन । सूर्य० २९३ । घृ० । प्रभ० १५३ ।  
घृ० । ओय० १३३ । ओदन-वाद्रवीदनादि । आचा०  
३१३ ।

ओयत्तण-व्याघात । पिण्ड० १६२ ।  
ओयत्तति-परावर्तते । दश० १०८ ।  
ओयन्ने-ज्ञावाया सप्तदशमवयनम् । आध० ६५३ ।  
ओयपपत्त-विषयमनक्यप्रदेश । भग० ८६१ ।

ओयर्ह-अवतरत । आध० ३५३ ।  
ओयरिञ्जा-ओदरिञ्जानाम-यत्र गता तत्र रूपकात्मिका प्र-  
क्षिप्य समुद्रिणन्ति, समुद्रशानन्तरं भूयोऽप्यपतो गच्छन्ति  
। घृ० द्वि० १२५५ ।

ओयरिया-ओदरिका-उदररत्नकविता । ओप० ७१ ।  
ओयवृष साधनम् । उ० प्र० ०४८ ।  
ओयविर्भ-अल्पसागारिक-धावक, खेदहृत् । ओप० ५१ ।  
ओयविष्य-प्रवायिते । व्य० द्वि० १७४भा ।

ओयविय-सुरैकमितम् । सूर्य० २९३ । तेजितम् । जीवा०  
१६४ । विशिष्ट परिकर्मितम् । जीवा० २३२ । परिकर्मितम् ।

जीवा० ०३२ । परिमितम् । प्रभ० ८१ ।  
ओयविषा-पुत्रता । घृ० घृ० ५८७ ।  
ओयवेद्-उपैति । भाव० १५० ।  
ओयसंठिति-ओजस्य-प्रसारण्य मरिचिभि-अवस्थापनम् ।  
सूर्य० ७९ ।

ओया-ओज-प्रवाह । सूर्य० ७९ ।  
ओयाप-उपायात-उपागत । भग० ३१९ । सम्पन्न ।  
निरय० ६ । उपायात-उपागत । शात्र० १६७ ।  
ओजया-दाहापनयवादिप्रकाशरत्नकारता । शात्र० १७० ।  
ओयापेत्ति-अनुश्रोतोमासिनी, पानीयानुमासिनी । नि-  
चू० प्र० ४६भा ।

ओयारिया-अनारिता । आध० ६८० । अनारिका ।  
आध० ३०० ।

ओयारो-अनार-जलमध्यप्रवेगनम् । जीव० ११७ ।  
ओयाहारे-ओज-उष्णितेन आहारयोग्यवृद्धस्तमृदुषु,  
ओज आहाग येषु त ओजआहाग । प्रजा० ५१० । संपन्न  
कामनेन च शरीरेणीदागिकादिदशरीराणिपेतैर्भिषेग य य  
आहार स तत्राऽपि आजाहार, औदारिकादिगण-  
पर्याय्या एवा-नकोऽपिन्द्रियानवाप्तयामन पर्याप्तिमि-  
पर्याप्तं च शरीरेणाहार्यत ओजाहार । गण० ३४३ ।

ओयो-सप्तमी । नि० चू० प्र० १७७भा ।  
ओरघ्न-ओरघ्न-उत्तराधयनेषु मन्त्रमन्त्रयनम् । उक्त० ११  
ओरस-आन्तर । भग० ६३१ ।  
ओरस्स-उर्गा मर्ष-ओरघ्न-परिचरम् । सूर्य० १६६ ।  
ओरस्सवली-महापुरुषता । घृ० घृ० १७०भा ।

ओराल-निस्तरण, ममयपरिभाषया मायाविषयान्वापुत्र  
वदम् । प्रज्ञा० २६६ । मायाविषयमाव्यायक्यम् । टाण०  
२१५ । उदार-अचक्षुतम् । सूर्य० २९४ । उदार-प्रजाप ।

मीम । औप० ८४ । आरा-आपारद्विगतया प्रपानम् ।  
भग० १२५ । उदारः-प्रधान । भग० १२ । मीम-अपानक ।  
जात्रा० ७ । उदारकार । राज० ११६ । मीम, उमापि

विशेषगतिविद्युत्पन्नकण्ठत पार्श्वस्थनाभ्यन्तरेणामयानक ।  
उ० प्र० १६ । भग० १३ । सूर्य० ५१ । उदार । मीमा० ३३० ।  
एरेन्द्रियपेक्षया प्राय स्थाना इतिप्रपान्य इति । ग० ६०३ ।

ओरालतसा-उसल्वं तेओवागुध्वधि प्रसिद्धं अतस्त्वद्व्य-  
वच्छेदेन हीन्द्रयाधिशितपस्थयीओरालप्रहणम् । ठाणा० २३५।  
ओराला तसा-ओदारिकत्रसाः-स्थूरत्रसाः । जीवा० २८ ।  
ओरालवषणकित्सहा-उदारवर्णनीतिशब्दाः । आव०  
२९३ ।  
ओगलसरीरे-उदारसरीरे । उत० ३२५ ।  
ओरालाई-मनोहराणि । ठाणा० २९४ । उदारानि-आर्शेता-  
दोपरहिततयोदारचित्तुष्णानि । ठाणा० २४७ ।  
ओरालिय-उदार-प्रधानं, विकारवत्, उरल-विरलप्रदेशं न  
तु पन, ओरालं-समयपरिभाषया मानास्थिसनाय्याश्वबद्धं  
तदेव शरीरं, उदारमेव औदारिकम् । प्रज्ञा० २६८ ।  
ओरालिय-ओदारिकम् । प्रज्ञा० ४६९ । उदारमेव-प्रधानमेव  
वृद्धेव वा औदारिकम् । जीवा० १४ । उदार-प्रधानं  
उदारमेव औदारिकम् । ठाणा० २९५ ।  
ओरालियसरीरनाम-बुद्धसादौदारिकशरीरप्रयोग्यान् पु-  
द्गलानादाय औदारिकशरीररूपतया परिणमयति परिणमय  
च जीवप्रदेशी सह परस्परानुगमनरूपतया सम्पन्वयति तदौ-  
दारिकशरीरनाम । प्रज्ञा० ४६९ ।  
ओरालियशरीरा-ओदारिकशरीरा । आव० ७९९ ।  
ओरुहह-अवतरति । आव० १८९ ।  
ओरोह-अवरोधं, अन्त पुरम् । उत० ३०७ । अलेपुरं ।  
नि० सू० प्र० ८०अ । विपा० ८२ । अवरोध-प्रतोलिद्वारे-  
ष्ववान्तरशकारः । ओष० ३ । प्रतौलीद्वारेष्वन्त शकारः ।  
राज० ३ । अवरोधः-अन्त पुरम् । उत० १२० ।  
अवरोधः । अण० ३५९ । प्रतौलीद्वारेष्ववान्तरशकारः ।  
ज्ञाता० २ ।  
ओलेडुति-उलङ्घयति । ज्ञाता० ९२ ।  
ओलेडेह-उलङ्घयति । दत्त० ९९ । आव० ३५० ।  
ओलेय-अवलम्बं-अवलम्बनस्थानम् । जे० प्र० ५२९ ।  
ओलेयणदीय-शुद्धलाघुद्वीप । मण० ५४७ ।  
ओलेवितो-अवलम्बितः । उत० १२५ ।  
ओलेरओ-अवलम्बितः । आव० २९७ ।  
ओलेरय-अवलम्बितं-गोपितम् । उत० १९६ ।  
ओलेरु-उगलवयति । आव० २९७ ।  
ओलेगिडे-अवलम्बितम् । उत० ३०० ।

ओलगगय-अवलम्बितः । आव० १७६ ।  
ओलगगति-अवलम्बित-अनुमरति । उत० ८७ ।  
ओलगगयमणूसो-अवलम्बकमनुष्यः । आव० ९२ ।  
ओलगगा-सेवा । परिचर्या । दत्त० ९७ । जीर्णं । ज्ञाता०  
२८ ।  
ओलगगाय-अवलम्बनया । आव० ९० ।  
ओलगगिडे-अवलम्बितम् । आव० ७१६ ।  
ओलगगिऊं-अवलम्बितम् । दत्त० ९७ ।  
ओलगगिजामि-अवलम्बितम् । आव० ३५६ ।  
ओलगगिता-सिन्धुमारब्धा । आव० ८१८ ।  
ओलगगय-अवलम्बितम् । आव० ४०१ ।  
ओलिति-अवलीयन्ते-प्रलागच्छन्ति । विशे० ८५२ ।  
ओलिकापातः । ओष० २०७ ।  
ओलिस्त-अवलम्बितः । मण० २७४ । आव० ५५९ ।  
ओलिस्ता-द्वारदेशे विधानेन सह गोमयादिना अथलिताः  
। ठाणा० १२४ ।  
ओलिहति । नि० सू० प्र० १९०अ  
ओलुगसरीरा-भग्नदेहाः । विपा० ४९ । निरय० ९ ।  
अवहगमिव-जीर्णनिव शरीरं यस्याः सा, अवरणा वा चेतना  
अवहगशरीरा । ज्ञाता० २८ ।  
ओलुगा-अवहगना-सममनोयुति । विपा० ४९ । निरय० ९।  
दीर्णः । आव० ७१६ । जीर्णं । ज्ञाता० ३३ ।  
ओलुहति-अवरोधति । आव० १८९ ।  
ओलेति-परिभ्रमति । आव० २७४ ।  
ओलेस्ता-आर्द्रिवा । आव० २०९ ।  
ओलेयणं-अवलम्बनम् । आव० २२४, ३७८ ।  
ओलेयणगाय-अवलम्बनगतम् । उत० ९३ ।  
ओलेयणद्विभो-अवलम्बनस्थितः । आव० १७५ ।  
ओलेयणे । नि० सू० प्र० ११७अ ।  
ओल्यां-पनवे वा भाग्यनुदत्तमुदरयोर्कारण एव ओल्याम् ।  
ठाणा० ३२८ ।  
ओलुं-वामं । नि० सू० प्र० ९०अ ।  
ओलु । नि० सू० प्र० १२१अ ।  
ओषध्या-श्रीशिवश्रीः । दत्त० ४२ ।

**ओघकर्मिय**—उपम्व्यतेऽनेनायुरित्युपक्रमो ज्वरातीक्षारादिस्तत्र भवा या सा औपम्विकी । टाणा० २७ ।  
**ओघस्त्रुडित**—उपस्कृतम् । भाव० ३५३ ।  
**ओघग्गहिओ** औपग्रहिक । उग्रग्रहित—गच्छमाहारणो । ओप० १२ ।  
**ओघज्झण**—प्रवाहे वहन । वृ० वृ० २२९अ ।  
**ओघट्टणा**—वालना पश्चादानयनम् । वृ० द्वि० ८५आ ।  
**ओघणिहिए**—उपनिहिती यथा कथञ्चित् प्रत्यासक्तीभूर्तं तेन चरति य म औपनिहितीत्, उपनिधिना वा चरतीति स औपनिधिक । औप० ३९ ।  
**ओरतिउं**—अवपतितु—जेतुम् । दश० ५० ।  
**ओघत्तिया** अपवर्त्ये—अभिनिक्षिप्तेन भात्तनेनान्वये वा दद्यात् । दश० १७५ ।  
**ओघमिप**—उपमया निर्गुप्तमौपमिर्, उपमानमन्तरेण यत्काल प्रमाणमनतिशायिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिर्म् । ज० प्र० १२ । उपमया निर्गुप्तमौपमिर्, उपमानमन्तरेण यत्कालप्रमाणमनतिशायिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिर्म् । अनु० १८१ ।  
**ओपमिय**—उपमया निर्गुप्त औपमिर्म्, उपमान तरेण यत् कालप्रमाणमनतिशायिना ग्रहीतु न शक्यते तदौपमिर्म् । भग० १७६ ।  
**ओपम्य**—औपम्य—उपमा । उत० ३२१ । उपमानमुपमा सैवौपम्य—सदृश । टाणा० २६२ ।  
**ओपम्यसञ्चा**—औपम्यसत्त्या—पर्याप्तिरुक्त्याभाषया दशमो भेद । प्रज्ञा० २१६ । उपमैवौपम्य तेन सत्य औपम्यसत्यम् । सत्याभाषया दशमो भेद । टाणा० ४८९ । औपम्यमत्य नाम समुद्रवत्तटाग । सत्याभाषया दशमो भेद । दश० २०९ । उपमीयते—मन्त्रात्तथा गृह्यते वस्त्वनयेयुपमा सैव औपम्यम् । भग० २२२ । उपमानमुपमा सैवौपम्य अनन गम्येन सदृशोऽग्नौ गौरिति सादृश्यप्रतिपत्तिरुपमा । टाणा० २५४ ।  
**ओघयद्**—उत्पतति—ऊर्ध्वं गच्छति । भा० १३९ ।  
**ओघयण**—अवपदन—प्रोद्धनकम् । ज्ञाता० ४१ ।  
**ओघयमार्ण**—अवपतनो—व्योमार्णयादवतरति । ज्ञाता० ४६ ।  
 अत्रपतन् । ज्ञाता० १६६ ।

**ओघयारिअणिय** । औपचारिअणिय—विनयस्य द्वितीयो भेद । दश० ३१ ।  
**ओघरणं**—अववरकम् । भाव० ५६० ।  
**ओघरिऊण**—अवतीर्थ । उत० ११९ ।  
**ओघसमिए** क्मोपशमेन निर्गुप्त औपशमिर् नमोनुदयलक्षण । सूत्र० २३० ।  
**ओघहिप**—औपधिर्—उपधिना—छयना चरती—औपधिक । उत० ६५६ ।  
**ओघहिया**—औपधिका—मायाप्रयोजना—रूपायप्रलया, उपकरणप्रयोजना वा । औप० १०७ ।  
**ओघाणिस्तप**—उपादातु—ग्रहीतु, प्रवेष्टुम् । टाणा० १५७ ।  
**ओघाह्य**—उपयाचितम् । विपा० ७७ । याचितस्य—प्राथितस्य प्राप्तेरपरि देवैभ्यो देयम् । उत० १३८ । उपयाचितम् । भाव० ७०९ ।  
**ओघाई**—ओलावयप्रधाना विद्या । भाव० ३१९ ।  
**ओघाय**—उपाये—सुदुपरभाषणदौ भव औपया, उपपतनमुपपात—समीपभवन तत्र भव औपपात—सुदसन्तारास्तरण विधामपादिह्यलम् । उत० ५८ । विप्रम् ( मर० ) अवपात—निर्देश । सूत्र० २४२ । अवपात—प्रपातस्थान, यत्र चलन् जन सप्रकाशेऽपि पतति । ज० प्र० १२४ । अवपात—गर्तादिरूपम् । दश० १६४ । अवपात—गर्ताविशेष । प्रश्न० २२ ।  
**ओघायकारी**—उपपातकारी—आचार्यनिर्देशकारी, यथोपदेश क्रियामु प्रगत सूत्रोपदेशप्रवर्तक । सूत्र० २३४ । अवपातो—निर्देशस्तारार्थवपातकारी—यचननिर्देशकारी सदा भाज्ञा विधायी । सूत्र० २४२ ।  
**ओघासो**—अवकाश । दश० ५८ ।  
**ओघाही** विशेषेण उपाधीयत इति वोपाधि । भाचा० १७४ ।  
**ओघिअ**—आपिन—परिकर्मितम् । भग० ४७८ । ओपित—उज्ज्वलित । ज० प्र० २००, ४६ ।  
**ओघिय**—परिर्णमितम् । औप० २४, ६६ । राज० ४८ । उज्ज्वलित । ज्ञाता० २२२ । ओपित—परिकर्मितम् । प्रश्न० ७६ । ज्ञाता० १९ ।  
**ओघियाव**—आरोपिता । ज० प्र० ४१ ।  
**ओवील**—अवपीड—क्षुरं, उपपीडा वा वेदना । विपा० ७२ ।

ओवीलप-अभयोदयति विलङ्गीकरोति यो लज्जया सम्य-  
गनालोचयन्त सर्वे यथा सम्यगालोचयति तथा करोतील-  
पवीडकः । टाणा० ४४ ।

ओष्वत्तिऊण-अपवर्त्य । ओष० २१ ।

ओष्विगममणो-उडिप्रमनोः । आव० २२० ।

ओष्ठः-दन्तच्छदः । आचा० ३० ।

ओस्-अवश्यायः, शरत्कालभावी श्लक्ष्णवर्षः । उक्त० ३३४ ।

क्षणजलम् । टाणा० ८७ । अवश्यायः-त्रैतः । दश० १५१ ।

अवश्यायः-क्षरदादिषु प्रमानिकसूक्ष्मवर्षः । उक्त० ६९१ ।

ओसक्कइत्ता-उष्वध्वय-उत्सव्य लब्धवावमरतगोत्सुकीभूय ।

अवष्वध्वय-अपमत्याविसरलाभाय कालहरणं कृत्वा यो

विपीयते न तथा । टाणा० ३६५ । अवमर्ष्य, प्राप्य वा ।

आव० १९ ।

ओसकण-रन्धनवेला । ओष० १४८ । अवष्वध्वणम्,

विवक्षितविध्वंसनादिवालस्य ह्रासकरणम्, अर्वाकूरणम् ।

वृ० प्र० २६१आ । अवष्वध्वणं-स्योगप्रवृत्तनियतकालव-

धेत्वाहरणम् । पिण्ड० ९१ ।

ओसक्रिय-प्रज्वालय । आचा० ३४५ ।

ओसधिकया-अवसर्त्य, अनिद्राहमहादुःसुकान्दुःसुमायैल्यर्थः ।

दश० १०५ ।

ओसट्ट-उम्युन-उपयतिभ्यो नियतः । दश० २१९ ।

एगमितं । नि० चू० द्वि० १८आ ।

ओसण्ण-चिरायणं अपरिभोगद्वयं । नि० चू० प्र० १९३अ ।

ओमणं-बाहुल्यम् । प्रज्ञा० ५०३ । बाहुल्येन । भग० ३०८ ।

अवसज्ञा-प्रान्ता । भग० ५०२ । ओ यो वा संज्ञो

तस्मि गणो ओमणो । नि० चू० प्र० २१७अ ।

ओसण्णद्धो-अपसन्नदः । उत्सन्नदः । आव० ७१२ ।

ओसत्तमहुदामा । आचा० ४२३ ।

ओसुत्तो-उरसफः-उपरिबंधः । ओष० ५ । ज्ञाता० ४ ।

ओसुत्पी-वण्णाइफला अंवादिमा । नि० चू० द्वि० १५७अ ।

ओसुत्पीओ । टाणा० ८० ।

ओसन्न-उरसधं-प्रयेग । विशे० ९२६ । अवसन्नः-विवक्षिता-

नुशानालतः, आकुर्यकृदवाप्यायप्रयुषेक्षणप्यानादीनाममम-

यादीत्यर्थः । ज्ञाना० ११३ । बाहुल्यलक्ष्यम् । भग० २१ ।

प्रायः । भग० ३०९ । प्रतेः प्रातुयं बाहुल्यं, बाहुल्ये-

नानुपरतत्वेन । टाणा० १८९ । प्रायसः । आव० २८५ ।

उरसगणं-प्रातुयं । प्रश्न० २२ । अवसन्नः-सामाचार्याभिव-

नेऽवसन्नवत् अवसन्नः । आव० ५७ । एकान्तः । वृ० प्र०

११आ ।

ओसन्नकारणं-बाहुल्यं, वाङ्मकारणम् । प्रज्ञा० २२३ ।

बाहुल्यकारणम् । प्रज्ञा० ५०३ ।

ओसन्नदोसे-बाहुल्येनानुपरतत्वेन दोषो हिंसादीनां चतुर्णा-

मन्यतर ओसन्नदोषः । टाणा० १८९ ।

ओसन्नया-पगभवः । उष० मा० गा० ३०० ।

ओसन्नविहारी-अवमत्तानां विहारो बहूनि दिनानि यावत्तथा

वर्तनं अस्यास्तीति अवसन्नविहारी । ज्ञाता० १११ ।

ओसत्पिणि-अवसर्पति हीयमानारक्तयाऽवसर्पयति वा-अभे-

णायु शरीरादिभावान् हापयतीत्यवसर्पिणी । जै० प्र० ८९ ।

दशमोटीकोट्यः सागरोपमणां सुपमसुपमादरकवमेय अव-

सर्पिणी । जीवा० ३८५ ।

ओसत्पिणी-अवसर्पति-प्रतिसमयं कालप्रमाणं जन्तूनां

वा शरीरायुःप्रमाणादिकमपेक्ष्य ह्यनमनुभवन्त्यवसर्पयति अव-

सर्पिण्यः, दश सगरोपमकोटिकोटीपरिमाणः । उक्त० ६९७ ।

अवसर्पिणी-अवसर्पति हीयमानारक्तया अवसर्पयति वा-

ऽऽयुष्करतीरादिभावात् हापयतीति, सागरोपमकोटीकोटीदशक-

प्रमाणः कालविशेषः । टाणा० २७ । अवसर्पिणी-दश-

सागरोपमकोटीकोटिमाना । अनु० ९९ । कालविशेषः । आव०

१२०, भग० ८८८ । दशसागरोपमकोटीकोट्यः प्रमाणाः ।

टाणा० ८६ ।

ओसमणं-द्वयवसणम् । वृ० द्वि० ७७आ ।

ओसरद्-अपसर्पति । उक्त० ५३ । अपसरति । उक्त० ३०२ ।

आव० ६४०, ३५९ ।

ओसरणं-महान् साधूनामेकप्रमीलनम् । वृ० वृ० २१८आ ।

गमवसरणम् । वृ० प्र० २७७आ । चउ० । श्यास्यानधवणादि ।

वृ० द्वि० २५२आ । अवसरणं-नापुनमुदायः । पिण्ड० ९२ ।

ओसरणा-आर्थिकाणामुपकरणविशेषः । ओष० २०९ ।

ओसरिऊण-अपवर्त्य । आव० २९९ ।

ओसरिओ-अमृतः । आव० ४०५ ।

ओसरिस्ता-अपवर्त्य । आव० ९१३ । द्युयय्य । आउ० ।

ओसरे-अवसर्पति । भाष० ६१८ ।

ओसवर्ण-प्रथमनम् । नि० च० प्र० २०७ अ ।  
 ओसह-ओषवः । अन्तद्वययुज्यते । ओष० १३४ । एवा-  
 ङ्गम् । प्रथ० १५३ । महात्मिकनष्टतादि । भग० ३२६ । केव-  
 लहरीतक्यादि, अन्तद्वययोगि वा । पिण्ड० १९ । एकद्रव्यरूपम् ।  
 विषा० ४१ । ज्ञाता० १८१ । त्रिकटुकानि । ज्ञाता० १३६ ।  
 आव० ११५ । उक्त० १४२ । हरितक्यादि । ओष० ६८ ।  
 एलायचूर्णगादि । नि० च० प्र० ७६अ । बहुद्रव्यसमुदायः ।  
 नि० च० प्र० १४४आ । एकद्रव्याश्रयं, त्रिफलानि । ओष० १०० ।  
 ओसहङ्गम्-ओषधाङ्गम् । ओषधकारणम् । उक्त० १४२ ।  
 ओसहजुक्ति-ओषधयुक्ति-ओषधारीनां-अयुक्तुं कुमासीनां  
 सञ्जिकाराजिकादीनां च युक्ति-योजनं समपिपमविभाग-  
 नीतिर्या । उक्त० ३० ।  
 ओसहाइ-ओषधादि-अयुक्तुं कुमादि सञ्जिकाराजिकादि च ।  
 उक्त० ३० ।  
 ओसहि-ओषधयः, फलपानान्ताः, ते च शान्त्यादयः । प्रज्ञा०  
 ३० । औषधि-शान्त्यादि । भग० ३०६ । आचा० ३० ।  
 ओसहित्पत्ता-सर्वरोगापहारिविधातपधरणप्रभवो लक्ष्मिविशेषः ।  
 प्रथ० १०५ ।  
 ओसही-ओषधि-जयापिजयद्विष्टव्यादयः । उक्त० ४५० ।  
 फलपानान्ताः । उक्त० ६९२ । औषधी राजधानीनाम् ।  
 ज० प्र० ३४७ । औषधि-फलपानान्ताः, शान्त्यादि ।  
 जीया० २६ ।  
 ओसहीओ-ओषधयः, शान्त्यादिकाः । ज० प्र० १६८ ।  
 शास्त्रिमातियाओ । नि० च० प्र० १५०आ ।  
 ओसही तिष्णा-ओषधिवृत्तानि-शान्त्यादीनि । उक्त० ६९२ ।  
 ओसा-अवश्याय-जलविशेषः । आव० ५७३ । जेदः । जीवा०  
 २५ । स्थानविशेषः । उक्त० ३७५ । रात्रिजलम् । भग०  
 ६९४ ।  
 ओसारिय-अवसारिते-अवलंबितम् । भग० ३१८ । ज्ञाता०  
 २२१ । प्रलम्बीकृता । ज्ञाता० २३९ ।  
 ओसारिजा-अपसारयेत्-पाटयेत् । अउ० १७६ ।  
 ओसावणि । नि० च० प्र० ७६अ ।  
 ओसारियव्यो-परित्यागः । नि० च० प्र० ३४०अ ।  
 ओसास्त्रिभ-आवश्यकम् । वृ० द्वि० २१७आ ।  
 ओसिचं-अवसिक्तं, आर्तकृतम् । आचा० ३२१ ।  
 ओसीरं-ओसीरं-वीरणीमूलम् । प्रथ० १६३ । चन्द्रनम् ।

उक्त० १४२ । एसीरं-वीरणी मूलम् । ज० प्र० ३५ ।  
 वीरणीमूलम् । ज्ञाता० २३२ ।  
 ओसीरपुड-पुष्पजातिविशेषः । ज्ञाता० २३२ ।  
 ओसीसं-उत्पीर्यम् । आव० ४५३ ।  
 ओसीसओ-उत्पीर्यकः । आव० ३५४ ।  
 ओसीसा-सीमस्या गनीरं वरनीमं । नि० च० प्र० २४७अ ।  
 ओस्रो-उत्सृज्यः । आव० ४५६ ।  
 ओसोद्यणि-अस्वादिनीम् । आव० ३७१ ।  
 ओस्सट्टो-उत्साहः । नि० च० प्र० २८४आ ।  
 ओस्ससं-बाहुभ्येन-अनुपगतत्वेन । भग० ९२६ ।  
 ओस्सारेह-उत्सारयंत-पारयत । उक्त० १७८ ।  
 ओहंजलिया-चतुरिन्द्रियजन्तुविशेषः । जीया० ३२ । प्रथ०  
 ४२ ।  
 ओह-ओषोषधि-उपशेषः प्रथमो भेदः यो निर्यमेन दृश्यते ।  
 ओष० २०८ । मन्त्रेणः । नि० च० प्र० १७९अ । ओष-  
 प्रसाह । जीया० २०७ । सामान्यं, मन्त्रपृथग्विभागान्तर-  
 भावरूप । सिष्ट० ७७३ । प्रसाह । उक्त० २४१ । ज० प्र० ५३,  
 ११७ । ओष-सामान्यं धुनानिधानम् । दश० १५ । भरीष,  
 समार, अष्टप्रकारं कर्म वा । सूत्र० २९ । अनिच्छेद,  
 अविश्रुतित्वम् । प्रथ० ८२ । सुमारगमुद्र । सूत्र० १४५ ।  
 प्राहृणाविरिच्छम् । प्रथ० ७४ । सामान्यम् । पिण्ड०  
 १४७ । सामान्य । आव० ३३६ । प्रपत्नी । जीया० ७७३ ।  
 सामान्यम् । ज० प्र० ७ । उत्सृज्यो-नष्टमवर्णं काठियसुप्तं  
 आचरति त मवर्णं ओहो भग्ननि । वेदिया निरीहयेत्तन ।  
 नि० च० प्र० ९७आ । सुने सुप्तं ज उत्सृज्यमद्विगमं न ओहो,  
 जो पुण अविगिद्रा आपनी गो ओहो । नि० च० प्र० १४५आ ।  
 सामान्यमध्ययनादि नाम । ठागा० ५ । ओष-उत्सृज्यो-  
 लक्ष्यमानं सुमारगमुद्र । दश० ७५५ । मन्त्रेणः । ओष०  
 ८८ ।  
 ओहजीव-ओषकीर, मन्त्रकीरम्य प्रथमो भेदः । दश० १२१ ।  
 ओहङ्क-प्रार्थनम् । ओष० ६७ । यावित । नि० च० प्र०  
 १६५ अ ।  
 ओहनिष्कण-ओषनिष्कणः । दिज्ञेयभेदः । दश० १५ ।  
 अज्ञाययनादिशामान्याभिधानस्यानः । आचा० ३ ।  
 ओहयले-ओषवल । अक्षयः-उत्सृज्य । औष० ७८ ।



ओह्य-उपहृतः-विनाशितः । जं० प्र० २७७ । राज्यापहरा-  
उपहृताः । ठाण० ४६३ । विनाशनेनोपहृता । ज्ञाता०  
५६१ ।

ओह्यमणसंकल्प-उपहृतः-ध्वस्तो मनसः संकल्पो दर्पहर्षा-  
दिप्रमनो विकल्पो यस्य सः । भग० १८० । ज्ञाता० २९१ ।  
उपहृतमनःसङ्कल्पः । आव० ६८२ ।

ओह्यहय-उपहृतः । आव० ६५० ।

ओहरति-उपहरति-विनाशयति । ज्ञाता० १९२ ।

ओहरिण-विनाशयति । ज्ञाता० १९० ।

ओहरितभारो-उत्तारितभारः । ओष० २२७ ।

ओहरिय-आग्निकायोपरि व्यसंस्थित पिठस्कादिकमाहारभा-  
जनमपटुत्य । आच० ३४५ । तिरश्चीनो भूत्वा ।  
आच० ३४४ । पार्थिवो भूत्वा । उप० मा० गा० ४९९ ।

ओहसंभोग-ओषसंभोगः, उपध्यादिद्वयप्रकारः । व्य०  
डि० ११९भा ।

ओहसण्णा-मतिज्ञानायावरणक्षयोपशमाच्छब्दादर्शभोचरा  
सामान्यावबोधप्रक्रियैव सञ्जायतेऽनवैशेष्यज्ञा । ठाण० ५०५ ।

ओहसण्णा-ओषसञ्ज्ञा-मतिज्ञानावरणक्षयोपशमानाच्छब्दा-  
दर्शभोचरा सामान्यावबोधप्रक्रिया, दर्शनेनोपयोग इति, सामान्य-  
प्रवृत्तियैवा चक्ष्मा दृशयारोहणं वा । प्रज्ञा० २२२ । मति-  
ज्ञानावरणक्षयोपशमानाच्छब्दादर्शभोचरा सामान्यावबोधप्रक्रियैव  
सञ्जायते यस्त्वनयति औषसञ्ज्ञाः दर्शनेनोपयोगः । सामान्य-  
प्रवृत्तिरोचयज्ञा । भग० ३४४ ।

ओहसामायारी-ओषसामाचारी-सामान्येन संज्ञेयतः साधु-  
समाचारामिधानरूपा । विशेषे ८४२ ।

ओहसिर्य-अवधर्षणमवधर्षितं भूत्वादिना निम्नजनम् ।  
जीवा० २११ ।

ओहदस्वरा-ओषस्वरा-चमरेन्द्रस्य षण्णा । जं० प्र० ४०७ ।  
ओषेन-प्रवाहणे स्वरो यासां ता ओषस्वरा । जीवा० १०५ ।

ओहा-अपभ्रान्ता । सू० प्र० ९९भा ।

ओहाह्या-उदाविताः । आव० १६ ।

ओहाडणी-अवधादिनी-आच्छादनरेतुङ्गन्धोपरिस्थम्यमान-  
महाप्रमाणकिलियस्थानीया । जीवा० १८० । जं० प्र० २१ ।

ओहाडिअ-अवधाटित-आच्छादितः । जं० प्र० ७३ ।

ओहाडिधो-आपाटी । आव० २०५ । निष्प्रामितः । आव०  
३५८ ।

ओहाडियं-स्वगतम् । आव० ८८८ । स्फेदितम् । आव० २०५ ।  
ओहाडिया-उग्रायिता । आय० ५१४ । अपस्फेयिता ।  
आव० ३६८ ।

ओहाडेइ-आच्छाद्यति । आव० ३७० ।

ओहाडेति । दश० सू० ८८ ।

ओहाण-उवयोगी । नि० सू० छि० ५८भा । विहारो, धावणेन  
स्त्रियो धावणेन वा । नि० सू० छि० ३५ अ । अवधानम्-अप-  
सरणम् । दश० २७१ । अवधावमानाः । ओष० ६९ ।  
अवधानम् । ठाण० २११ ।

ओहाणपेदी-विद्ये अक्षमाणो रातो समाहिपरिद्वन्मलकखेण  
ओहावेज्जा । नि० सू० प्र० १९४अ ।

ओहाणुपेदी-अवधावनानुपेदी । दश० १४ ।

ओहासेजा-उपहन्त्यात् । ठाण० ३२८ ।

ओहामिप-अपभ्रजितः । आव० ६६५ ।

ओहामिओ-अपभ्रजितः, हीलितः । आव० ६९५ । अप-  
भ्रजितः, तिरस्कृतः । ओष० ५३ ।

ओहामिउज्जइ-अवधाप्यते । आव० २१५ ।

ओहार-अधो जले नावो नेता मत्स्याविशेष । घृ० तु० १११भा  
जलजन्तुविशेष । प्रश्न० ५१ । वृच्छवः । पिण्ड० १०२ ।  
मच्छो । नि० सू० छि० ७८भा ।

ओहारपिस्ता-अवधारयिता-अद्विनस्याप्यर्थस्य नि शङ्कितस्यै-  
वमेवायमित्येवं श्रुता, अवधारयिता-परशुणानामपहारकारी ।  
सम० ३८ ।

ओहारसंखड्ड । नि० सू० छि० १०७ अ ।

ओहारिणी-अवधारणी-अवधारणादिप्रका । उक्त० ५६ ।

अवधारयिते-अवधारण्यतेऽर्थोऽनयति अवधारणी-अवबोधधीज-  
भृता । प्रज्ञा० २४६-२४७ । राकिया । दश० सू० १४० ।

अवधारणी-अवबोधधीजभृता । भग० १४२ ।

ओहारिते-अवहृत्-गृहीतम् । आव० ८५९ ।

ओहारमानीओ-धीजवन्धः । जीवा० २१३ ।

ओहार्यत-अवधाकन्ते, अवधर्षयन्ति । ओष० ६२ ।

ओहार्यइ-अवधाकति । उक्त० १३३ ।

ओहार्यणं-अपभ्रजनं, अपभ्रानं, निष्प्रदा वा । पिण्ड० १४० ।

अवधावन-पार्श्वेधादिविहारोपशमम् । सू० छि० १६३भा ।

दिगादिबहुसुद्धा समवम् । व्य० प्र० २४९अ । अपभ्रान्त-  
काण्डना । आव० ५३७ । अपभ्रान्तना । आव० २१९, १६५ ।

मलना । ओष० ९३ । गृहस्थीयवचनम् । वृ० वृ० १४४ अ ।  
अपभ्रान्तना । उक्त० १९२ । परिभ्रव । ओष० १४८ । हीलना ।  
ओष० ७४ ।

ओहाधिअ-अवधावित -अपघृत । दश० २४७ ।

ओहाधिविउकामो अवधावितुकाम । उभिष्मन्वितुकाम । उक्त०  
१३१ ।

ओहावेज्जा-अवधावेत् । व्य० प्र० १६६ आ ।

ओहासणं-सम्यपरिभाषया विशिष्टद्रव्ययाचनम् । आय०  
५७६ ।

ओहासणभिक्षा-ओहासणभिक्षा-विशिष्टद्रव्ययाचन स  
म्यपरिभाषया ओहासणं तत्प्रधाना या भिक्षा । भाव० ५७६ ।

ओहासिअ-ओमासिअ-पायित । ओष० ७७० । सूत्र० ३८६ ।

ओहिंजलिपा-चतुर्दिग्भ्योऽवधे । उक्त० ६९६ ।

ओहि-अवधि -अवधीयतेऽनेनास्मादरिभन्वेति । उक्त० ३४७ ।

रुचिमर्षादा, कर्त्तनिरपेयो बोधहृत् । उक्त० ४४८ ।

अवधीयतेऽनेनेति, अवधीयत इति, अघोऽघोविस्तृत परि-  
च्छिद्यते मर्षादा वेति, अवधीयतेऽस्माद् अरिमन् वा,

अवधानं वा विषयपरिच्छेदनम् । भाव० ८ । मध्ये । ओष० २०८ ।

अघोऽघो विस्तृतविषयवेदकम् । पारच्छद । मर्षादा । उक्त०  
५५७ । अत्र-अघोऽघो विस्तृत वस्तु धीयते-परिच्छिद्यतेऽने

नेत्यवधि, अथवा अवधिमर्षादा रूपिष्वेव द्वयेषु परिच्छेद

कतया प्रवृत्तिरूपा तदुपलब्धे ज्ञानमप्यवधि, यदा अवधान

-आत्मनोऽर्षवशात्करण-यापारोऽवधि । नदी६५ । अवधि -

अवशब्दोऽथ शब्दार्थ, ततश्चाथ इत्यधस्तादावधिति अघोऽघो

विस्तृतविषयवेदकतयेऽवधि, औगाधिको डि, यदा 'अधे

स्य एव धानं धातुनामनेकार्थंवात् परिच्छेदोऽवधि, 'उप

सर्गं यो हि'रिति (पा ३-३-८२) ङि, अधस्तावधि -

मर्षादा रूपिष्वेव द्वयेषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपेण

तदुपलब्धे ज्ञानमप्यवधि । तृतीयं ज्ञानम् । उक्त० ५५७ ।

औषिक -विशेषगरहित । प्रज्ञा० ३४३ ।

ओहिदं सणं-अवधिदर्शन अवधिरैव दर्शनं-रूपिसामान्यग्रह-  
णम् । जीवा० १८ ।

ओहिमरणं-अवधिमरणं सप्तदशमरणमेवेद्वितीय । उक्त० २३० ।

पञ्चविधमरणे द्वितीय । भग० ६२४ । अवधि -मर्षादा तेन

मरणं अवधिमरणं, यानि हि नारकदिभवनविषयनतयाऽऽयु-  
यमैरहितानि-वस्तुभ्यः सिपते यदि पुनस्ताम्येरावस्तुभ्यः मरिष्यति

तदा तत् । सम० ३३ ।

ओहिर्यं-औषियम् । ओष० ७१७, १९९ । औषियम्-निर्वि-  
शेषं नरवम् । भग० ४१ ।

ओहियमस्त्रं-प्रथममात्रकम् । नि० वृ० १३० आ ।

ओहिया-औषिरी-निर्वर्त्य । जीवा० ५९ ।

ओही-अवधि -प्रज्ञापनायाश्चक्रित्तम पदम् । प्रज्ञा० ६ ।

अत्र-अधो विस्तृत वस्तु धीयते परिच्छिद्यतेऽनेनेति अवधि

मर्षादा वा रूपिष्वेव द्वयेषु परिच्छेदकतया प्रवृत्तिरूपा

तदुपलब्धे ज्ञानमप्यवधि । प्रज्ञा० ५९७ ।

ओहीपदं-प्रज्ञापनाया प्रवृत्तिगतमे पदम् । भग० ७१९ ।

ओहीरमाणी-प्रचल्यमाना । भग० ५४० । वारंवारं

इवजिदा गच्छन्तीत्यर्थ । ज्ञाता० १५ ।

ओहुष्-अवधुत उर्ध्वपित । वृ० ङि० ६१ अ ।

ओहो-ओधमरण सामान्यत सर्वधाणिना प्राणपरिसमाप्तम

वम् । उक्त० १३० ।

ओहोणं-ओषेण-संक्षेपेण । ओष० ८८ ।

ओहोवधी-ओह-संक्षेपः, स्तोत्रः, लिङ्कारक, अवश्यं-

प्राणः । उपधेमेदः । नि० वृ० प्र० १७९ अ ।

ओहोवही-ओषोपधि-उपधेमेदः । उक्त० ५३७ । ओषोपधि-

निलमेव यो गृह्यते ओषोपधि । ओष० २०८ ।

औदारिक-चक्रिकम् । ओष० ९० । उपादानात्प्रयुति अत्र

समयमुदच्छति वर्धते जीयते दीयते । तत्त्वा० २-४९ ।

औदारिकयन्त्रं-यदुदयवशाद् औदारिकपुद्गलानां गृही

तानां गृहमाणानां च परस्परं तैत्तसाद्युद्गलैश्च सह

सम्बन्ध उपजायते तत् । प्रज्ञा० ४४० ।

औदारिकसहातनाम-यदुदयवशाद् औदारिकशरीररचनाऽनु-

कारिसह्यातना जायते तत् । प्रज्ञा० ४४० ।

औदारिकाहोपान्ननाम-यदुदयवशाद् औदारिकशरीररत्नेन प-

रिणताना पुद्गलानामशोषाद्भिन्नापपरिणतिरुपजायते तत् ।

प्रज्ञा० ४४० ।

औदार्यं दक्षिण्यम् । ज० प्र० १८४ ।

औद्देशिक-दातव्यं गृहो मेद । प्रश्न० १४४ । आषाकम् ।

सूत्र० १९१ ।

औद्भूतिकी-द्वितीयमेरीनाम । विशेषे ६१९ ।

औपसगिक-पदस्य तृतीयो मेद । भाव० ३७९ । परीति

औपसगिकम् । श्रुत० ११३ ।

औत्कर्म्यं-मतविशेष । उक्त० ३३०

इति प्रथमो विभागः समाप्तः ।

भागमवाचनादातु - बहुश्रुत-युगप्रधानसदृश - देवसूत्रपागच्छसामाचारि-  
सरक्षणकटिवद्ध-श्रेष्ठिदेवचन्द्रलालभाईजैनपुस्तकोद्धार-  
श्रीजैनानन्दपुस्तकालयाद्यने संस्थासंस्थापक  
अनेकग्रन्थप्रणेत् - धीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर-  
( सिद्धक्षेत्र )श्रीवर्धमानजैनताम्रपत्रागममंदिर  
( सूर्यपुर )संस्थापक-आगमोद्धारक-ध्यानस्थस्वर्गत-

चाप्रैधीआनेन्दमागरखरीधरसङ्कलितः

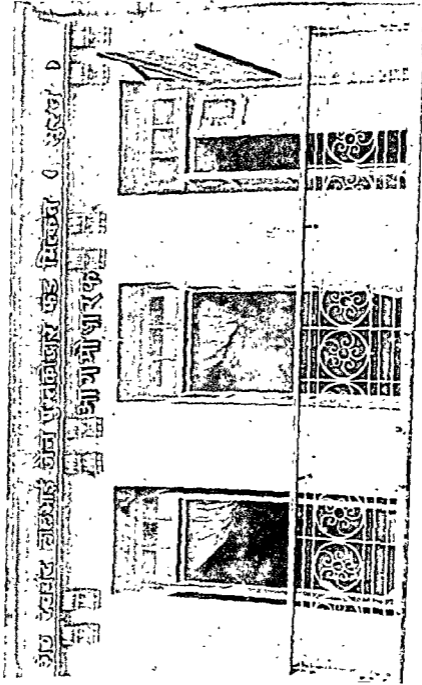
## श्रीअल्पपरिचितसैद्धान्तिकशब्दकोषः

(समस्तस्वरस्वरूपः प्रथमो विभागः)

श्रेष्ठि देवचन्द्रलालभाई-जैनपुस्तकोद्धारे ग्रन्थाङ्क १०१ ॥

# आ मकान

शेठ देवचंद लालभाई जैन पुस्तकोदर फंडनी कायमी रकमथी खरीदवामों आवेषुं छे.  
 रु-१,१०,०००. एक लाख दूरा हजार.



कालवादीथी नें १६६ आ मकान छे. तेषां भौखतथीए शयानी रिजय वेसिंण कु. पहिले माटे-  
 एल. वशिनाथ बेकर वीजे मोटे- जादवजा मेमजी गंधी ना बनें छे.

श्री १००० देवयं देव लालभाई, जैन पुरतकोषारि संकुटना

दालभां भगता नवीन, अर्थो.

अंथांक नं.

१०१	अल्प परिचित सिद्धान्तकशब्दकोष (विभाग पहिलो सं'पुष्प २२२) प्रेरक-आचार्य आणंदभागरसरिष्ठ	१-०-०
१०२	आयक धर्म पंचाराकयुष्पी	२-०-०
१०३	दशवैशालिक लघुवृत्ति सुभूतिसाधुसरि	३-०-०
८५	आवस्यकसूत्र मलप्रगिति नीन्ने, भाग	२-८-०
८६	लोकप्रकाश मूल मोथो विभाग प्र	१-०-०
८७	भारतेश्वर भाटुणाल वृत्ति द्वितीय विभाग सं'पुष्प	२-०-०
८८	प्रगभरनिप्रकरण अहहगच्छीय श्री हरिभाद्रसरि-कृत विवरणु समेत	१-४-०
८९	अध्यात्मकटपद्रुम रत्नचंद्रगण्डि वर्धनविश्वयुष्पी कृत टीका युक्त	३-०-०
९०	गौतमीय कान्य उपयद्रगण्डिकृत	१-८-०
९१	सटीक वैराज्यसतकादि अर्थपंचकम	१-०-०
९२	अभिधानचिंतामणी काश	४-०-०

अंथांक नं.

९३	जैन कुमारसं'ल्प	२-८-०
९४	मिह्रहेमशब्दाभुशासन लालहृत्तययुष्पी नवपाद अययुष्पीकार श्रीमह अमरचंद्र	५-०-०
९५	वीतरागतोर अययुष्पी विवरणु अने भाषांतर समेत	१-८-०
९६	पंचप्रतिकमणु विधि मंडित	१-४-०
९९	अमणुसूत्रादि अययुष्पी	१-०-०
१००	वदन प्रतिप्रमणु अययुष्पी	१-८-०
१०४	उत्तराध्ययन अययुष्पी	प्रसभां
१०५	पिंडनियुक्ति अययुष्पी	११
१०६	आह्वयिधि	११
१०७	नांदि अययुष्पी	११
१०८	सूयगांग हीपीका	११
११०	ज्युष्पीप युष्पी	११
१११	चंद्रप्रज्ञेती	११

आगमोद्घय समिति प्रकाशित

अंथांक नं.

४५	भक्तनाभर स्तोत्र पादपूर्तिउप कान्य प्रथमविभाग टीका भाषांतर	३-०-०
४७	पंचमंत्रद टीका मंड	२-८-०
५०	अवसमास प्रकरणागतक	१-८-०
५१	शुक्ति शुक्तिशतिका मयित्र शोभनभुनिकृत मरुत	८-०-०
५२	शुक्ति शुक्तिशतिका मयित्र कवि धनपानुत अं'द्रशुक्ति	१-०-०
५३	शुक्तिशुक्तिशतिका मयित्र पारपभट्टासरिहत भाषांतर युक्त	१-०-०
५४	भक्तनाभर स्तोत्र पादपूर्तिउप कान्य धीन्ने विभाग टीका भाषांतर	३-८-०

अंथांक नं.

५५	नं'द्वारि गाथाव'कारादि सुतो (मपनसूत्र) विश्वानुकुम	२-०-०
५६	आवस्यक मलयगिहृत टीका युक्त पूर्वलाग	४-०-०
५७	लोकप्रकाश प्रथमविभाग, द्वयलोक १ यी ११ भाषांतर	३-८-०
५९	शुक्तिशतिका गिनानंद शुक्ति मेघविश्वयुष्पी भाषांतर समेत	१-०-०
६०	आवस्यक मययगिरितहन टीका युक्त धीन्ने भाग	२-८-०
६१	लोकप्रकाश द्वितीय विभाग क्षेत्रलोक सर्ग १० यी २०	३-८-०